



Gheebat Ki Tabah Kariyan (Gujarati)

ईजाने सुन्नत जिल्ह 2 का अके भाष

गीबत के उर्री अडकाम सीभना इर्ज है.

गीबत की तबाह कारियां

ईस किताब में गीबत वगैरा की 1800 से अर्धद मिसालें भी शामिल हैं

गीबत अके नजर में
26

ना बालिग की गीबत
52

गीबत करने वाले से
पीछा छुड़ाने का तरीका 214

गीबत की 12 जर्धज सूरतें
238

अडिरी अख्शी सोडबतों में भी
गीबतों का मरज 261

गीबत से बचने का
अनोभा तरीका 264

40 डिकायात
301

गीबत के बारे में
सुवाल जवाब 438

शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, जालिये दा'पते घरसामी, हजरत अक्लामा मौलाना अबू गिवाल

मुहम्मद सल्लास अतार कद्री र-गवी دائم التعمیر العالمیہ

مکتبۃ الدینہ
(دعوتِ اسلامی)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, भानिये द्वा'वते इस्लामी, हजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-उवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ लीजिये
ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अद्लाल हज्रत ! हम पर इल्मी हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल करमा ! ओ अ-उमत और बुजुर्गी वाले. (المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार हुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मजिदरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

“गीबत की तबाह कारियां”

येह किताब (गीबत की तबाह कारियां)

शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, भानिये द्वा'वते इस्लामी हजरत अद्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-उवी जियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उई ज़बान में
तहरीर करमाई है.

मजलिसे तराजिम (द्वा'वते इस्लामी) ने इस किताब को गुजराती रस्मुल पत
में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया है. इस
में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (ब जरीअअे मक्तूब,
ई-मैथल या SMS) मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (द्वा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,

अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے مومن پر ایک بار دھڑکے پاક پڑا اے اللہ تعالیٰ اس پر دس رحمتوں سے نوازے گا۔ (مسلم)

ગીબત કે ઝરૂરી અહકામ સીખના ફર્જ હૈ

ગીબત કી તબાહ કારિયાં

મુઅલ્લિફ :

શૈખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

નાશિર

મક-ત-બતુલ મદીના અહમદ આબાદ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- नाम किताब : गीबत की तबाह कारियां
 मुअल्लिफ़ : शैबे तरीकत अभीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हजरते अल्लामा
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि र-जवी
 साले इशाअत : मुहर्म्मल हराम 1434 सि.हि.
 नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अहमद आबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुप्तलिफ़ शाभें :

- मुम्बई : 19,20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने,
 मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
 देहली : 421, मटिया महेल, उर्दू बाजार, जामेअ मस्जिद, देहली
 फ़ोन : 011-23284560
 नागपुर : मस्जिद गरीब नवाज के सामने सैफ़ी नगर रोड मोमिनपुरा नागपुर
 फ़ोन : 09373110621
 अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 इलाहे दारैन मस्जिद. नाला बाजार, स्टेशन रोड, अजमेर
 डेहरआबाद : पानी की टांकी, मुगल पुरा, डेहरआबाद फ़ोन : 040-24572786
 हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास,
 कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

E-mail: translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

म-दनी इस्तिज़ा : किसी और को येह किताब छापने की इजाजत नहीं है.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

कुछ घस किताब के बारे में.....

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहत्तशम
 एलम या'नी "طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ : عَشْرًا" ने ईशाद ईरमाया : "سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ١ ص ١٤٦ حديث ٢٢٤" यहाँ
 का हासिल करना हर मुसल्मान पर ईर्ज है." स्कूल कोलेज की दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्के ज़री दीनी एलम मुराद है. लिहाजा सब
 से पहले बुन्यादी अकाईद का सीखना ईर्ज है, एस के बा'द नमाज के इराईज व
 शराईत व मुफ़्सिदात, इर र-मजानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी पर ईर्ज होने की
 सूरत में रोज़ों के ज़री मसाईल, जिस पर ज़कात ईर्ज हो उस के लिये ज़कात के ज़री
 मसाईल, एसी तरह उज ईर्ज होने की सूरत में उज के, निहाल करना याहे तो एस के,
 ताजिर को भरीदो इरोप्त के, नोकरी करने वाले को नोकरी के, नोकर रभने वाले को
 एजारे के, وَعَلَى هَذَا الْقِيَاسِ (या'नी और एसी पर क़ियास करते हुअे) हर मुसल्मान
 आकिल व बालिग मर्द व औरत पर एस की मौजूदा हालत के मुताबिक मस्अले सीखना
 ईर्ज ऐन है. एसी तरह हर अक के लिये मसाईले हलाल व हराम भी सीखना ईर्ज
 है. नीज मसाईले कलब (बातिनी मसाईल) या'नी इराईजे कलबिया (बातिनी इराईज)
 म-सलन आजिजी व एप्लास और तवककुल वगैरहा और एन को हासिल करने का
 तरीका और बातिनी गुनाह म-सलन तकब्बुर, रियाकारी, उसद वगैरहा और एन
 का एलाज सीखना हर मुसल्मान पर अहम इराईज से है. (तफ़्सील के लिये देपिये इतावा
 र-अविय्या, जि. 23, स. 623, 624) मोहलिक़ात या'नी हलाक़त में डालने वाली चीज़ों जैसा
 के जूट, गीबत, युगली, बोहतान वगैरा के बारे में ज़री मा'लूमात हासिल करना भी
 ईर्ज है ताके एन गुनाहों से बचा जा सके एस जिम्न में गीबत की तबाह कारियां आप के
 हाथ में है, एस में गीबत के मु-तअख्लिक़ सदहा मिसालों समेत तफ़्सीली जभ के बा'ज
 दीगर मोहलिक़ात के बारे में एजमाली (या'नी मुप्तसरन) बयान है. मैं ने तो दर अस्ल
 अपने अक मत्बूआ मक्तूब "गीबत की तबाह कारियां" के तभरीज शुदा नुसखे की नोके
 पलक संवारने का इरादा किया था ताके कुछ तरमीम व एजाफ़ा कर के मज़ीद बेहतर तरीके
 पर एस को तब्अ करवाया जा सके, मगर इर जेहन बना के क्यूं न भूब तफ़्सीलात से
 मुजय्यन कर के एस को इँजाने सुन्नत जिल्द 2 का अक बाब बना दिया जाअे. एस

सिक्सिले में दा'वते ईस्लामी के उ-लमा पर मब्नी मजलिस अल मदीनतुल ईस्मिय्या से ईस्तिआनत की, ईस के ईस्लामी भाईयों ने दस्त गीरी इरमाई और उन्हों ने मुझे आयात व रिवायात व हिकायात पर मब्नी बहुत सारा मवाद इराडम कर दिया. गीबत की बे शुमार मिसालें भी मुझे मेईल कीं. दा'वते ईस्लामी की मजलिसे दारुल ईफ्ता के मुफ्ती साहिब ने निहायत गहरी हिल यस्पी ली, ईस किताब को बिल ईस्तीआब या'नी अज ईब्तिदा ता ईन्तिहा पढा, और अपनी उम्दा रलनुमाई के जरीअे मुफ्ती तब्दीलियां इरमाई ईस किताब को ईल्मी जामा पढना दिया. हकीकत तो येह है के मेरी येह किताब बडके हर किताब व तमाम रसाईल का तरतुब उ-लमाअे अहले सुन्नत (كَتَرَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى) के कदमों की धूल का सदका है वरना मन आनम के मन दानम (या'नी में जैसा हूं खुद ही जानता हूं)

या रब्बे मुस्तई! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ! “गीबत की तबाह कारियां” के मुआविनीन उ-लमाअे दीन और साथ देने वाले तमाम ईस्लामी भाईयों को जजाअे पैर अता इरमा, मेरी ईप्लास से कत्अन आरी ईस काविश को मुज्लिसीन के तुकैल कबूल इरमा और ईसे नाईअे मुस्लिमीन बना. मुज गुनाहगारों के सरदार, अतारे ખताकार को और ईअाने सुन्नत जिल्द 2 के ईस बाब “गीबत की तबाह कारियां” मुकम्मल तौर पर पढने या सुनने वाले और वालियों को गीबत की तबाह कारियों से बया और बे हिसाब बज्श कर जन्नतुल इरदौस में अपने म-दनी मडबूब वल्ली एल्ले त्आली एल्ले व्आले व्आल्ले के पडोस में बसा. अै खुदाअे रब्बुल ईज्जत एज्जल ताजदारे रिसालत की सारी उम्मत की गीबत से हिक्जत और सन्नी की मगिइरत इरमा.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तालिबे गमे मदीना व
बकीअ व मगिइरत व
बे हिसाब जन्नतुल
इरदौस में आका का पडोस



14 र-मजानुल मुबारक 1430 सि.हि.
05 सितम्बर 2009 सि.ई.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“या अल्लाह ! ईजाने सुन्नत आम हो जाये” के तेरस हुर्र की निरबत से घस किताब को पढने की 23 नियतें

इरमाने मुस्तफ़ा मुसल्मान की नियत उस के
अमल से बेहतर है. (المعجم الكبير للطبرانی حديث ٥٩٤٢ ج ٦ ص ١٨٥)

दो म-दनी इल : ﴿1﴾ बिगैर अख़री नियत के किसी भी अ-मले पैर का सवाब नहीं मिलता.

﴿2﴾ जितनी अख़री नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा.

﴿1﴾ हर बार हफ़ व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज व ﴿4﴾ तस्मिया से आगाज कर्गा (ईसी सफ़हे पर उपर दी हुई दो² अ-रबी ईबारात पढ लेने से यारो⁴ नियतों पर अमल हो जायेगा) ﴿5﴾ रिजाये ईलाही एरुज के लिये ईस किताब का अवल ता आभिर मुता-लआ कर्गा ﴿6﴾ उत्तल वस्अ ईस का आ वुजू और ﴿7﴾ किब्ला इ मुता-लआ कर्गा ﴿8﴾ कुरआनी आयात और ﴿9﴾ अहादीसे मुबा-रका की जियारत कर्गा ﴿10﴾ जहां जहां “अल्लाह” का नामे पाक आयेगा वहां एरुज और ﴿11﴾ जहां जहां “सरकार” का ईस्मे मुबारक आयेगा वहां صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढ़ेगा ﴿12﴾ शर-ई मसाईल सीभूंगा ﴿13﴾ अगर कोई बात समज न आई तो उ-लमा से पूछ लूंगा ﴿14﴾ इअरते सुफ़यान बिन उयैना उरुमा के ईस कौल “عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِيلُ الرَّحْمَةِ” या’नी नेक लोगों के जिक के वक्त रहमत नाजिल होती है.” (हिल्यतुल औलिया, जि. 7, स. 335, रकम : 10750) पर अमल करते हुये जिके सालिहीन की अ-र-कते लूटेंगा ﴿15﴾ (अपने जाती नुस्बे पर) इन्दज़्ज़रत आस आस मकामात पर अन्दर लाईन कर्गा ﴿16﴾ (अपने जाती नुस्बे पर) “याद दाशत” वाले सफ़हे पर ज़री निकत लिभूंगा ﴿17﴾ किताब मुकम्मल पढने के लिये अ नियते हुसूले ईल्मे दीन रोजाना यन्द स-ईलात पढ कर ईल्मे दीन हासिल करने के सवाब का इकदार अनूंगा ﴿18﴾ दूसरों को येह किताब पढने की तरगीब दिलाउंगा ﴿19﴾ ईस इदीसे पाक तहादुआतु या’नी अक दूसरे को तोहफा दो आपस में महबबत बढेगी. (موطأ امام مالك ج ٢ ص ٤٠٧ رقم ١٧٣١) पर अमल की नियत से (अक या इस्बे तौफ़ीक ता’दाद में) येह किताब खरीद कर दूसरों को तोहफतन दूंगा ﴿20﴾ जिन को दूंगा उत्तल ईम्कान उन्हे येह इदफ़ भी दूंगा के आप ईतने दिन (म-सलन 25) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ लीजिये ﴿21﴾ जो नहीं जानते उन्हे सिखाउंगा ﴿22﴾ ईस किताब के मुता-लआ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल कर्गा ﴿23﴾ किताबत वगैरा में शर-ई ग-लती मिली तो नाशरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ कर्गा (नाशरीन व मुसन्निफ़ वगैरा को किताबों की अग्लात सिई जबानी बताना आस मुईद नहीं होता)

ઉન્વાન	સંક્રંહ	ઉન્વાન	સંક્રંહ
દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત	25	صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	38
અક્સરિયત ગીબત કી લપેટ મેં હે	25	કયા ગીબત સે રોઝા ટૂટ જાતા હૈ ?	38
ગીબત કી તબાહ કારિયાં એક નઝર મેં	26	ખૌલતે પાની ઓર આગ કે દરમિયાન ઘૌંડને વાલા	39
મ-દની હિકાયત	27	ખૌફે ગુનાહ હો તો ઐસા !	39
ગીબત હરામ હોને કી હિકમત	28	તૂને અપને ભાઈ કા ગોશત ખાયા હૈ	40
ગીબત કે મુતઅલ્લિક એક એ'તિરાઝ કા જવાબ	29	બૈઠક સે ઉઠ કર જાને વાલે કી ગીબત કી 16 મિસાલે	41
ગીબત વ બોહતાન કા ફર્ક	29	મુંહ સે ગોશત નિકલા	41
ગીબત કી તા'રીફ બહારે શરીઅત મેં	30	ઓરતો મેં કી જાને વાલી ગીબતો કી 23 મિસાલે	42
ગીબત કી તા'રીફ અઝ ઇબને જૌઝી	30	شَلَّيْنَاكَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	42
ગીબત કયા હૈ ?	31	દીદાર નસીબ હો ગયા	42
મેં અલાકે કા નામી ગિરામી બદ મઆશ થા	32	તુમ ને અભી અભી ગોશત ખાયા હૈ	44
ઈન્ફિરાદી કોશિશ કી બ-ર-કત સે રાહે જન્નત મિલ ગઈ	34	મુદાર ખોર જહન્નમી	45
હર કલિમે કે બદલે એક સાલ કી ઇબાદત કા સવાબ	34	મુદાર કા ગોશત ખાના આસાન નહીં	45
અક્સર ઘર મૈદાને જંગ બને હુએ હૈં	35	જહન્નમી બન્દર વ ખિન્ઝીર	46
સીનોં સે લટકે હુએ લોગ	35	ચાર નસીહતેં	46
તાંબે કે નાખુન	35	ગીબત ઇમાન કે લિયે નુક્સાન દેહ હૈ	46
ઓરતેં ઝિયાદા ગીબતેં કરતી હૈં	36	કુફ પર મરને વાલે કે અઝાબે કબ્ર કી કેફિયત	47
પહલૂઓ સે ગોશત કાટ કર ખિલાને કા અઝાબ	36	જહન્નમ મેં હમેશા રહને કી લઝા ખૌઝ કેફિયત	47
ક્રિયામત મેં મુદા ભાઈ કા ગોશત ખિલાયા જાએગા	36	નફલી ઇબાદત ન કરને વાલે સે નફરત કરના કેસા?	49
ઝબાન જલને સે મહફૂઝ રહેગી	37	મુસ્તહબ્બાત વ નવાફિલ મેં ગીબત કી 9 મિસાલે	50
નમાઝ વ રોઝે કી નૂરાનિયત ગઈ	38	ગીબત કે અન્દાઝ	50

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
ईन्डिराटी कोशिश सवाब का आसान जरीआ है	79	ईमां की बहार आई कैजाने मदीना में	96
जल्नम का जाना और लिबास मिलेगा	80	गीबत करने वाले की दुआ कबूल नहीं होती	97
दोज़ाब की आग के अंगारे जायेगा	80	जन्नत की जमानत	98
जल्नम की गिजा और मश्रूब	81	जन्नत में आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोसी	98
बे ज़ा अतिराजात करने वाले	82	जन्नत की 22 जलकियां	98
भुद याडे हराम जाते हों मगर.....	82	दूरें पाने का अमल	101
दूसरे की आंभ का तिन्का तो नज़र आता है मगर...	83	मुसल्मानों की आबड़ वगैरा दूसरे मुसल्मान पर हराम है	101
ऐसे काम न करो के लोग गीबत करें	83	तकब्बुर किसे कहते हैं	102
म-दनी येनल पर म-दनी मुजाकरा सुनने की म-दनी बहार	86	किसी को हकारत से मत देखो	102
बहार में चार गीबतें	87	मुसल्मान कौन ? मुहाजिर कौन ?	103
आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सहाबा से मलुबत	88	ईशारे से तकलीफ देना भी जाईज नहीं	104
तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी मलुबत	89	दिल छिला देने वाली पारिश	104
पीर की नज़र से मुरीद को गिराने की कोशिश करने वालों को तम्भीह	90	जशने विलादत की ब-र-कत से किस्मत भुल गई	105
“बड़ों” को भी याहिये “छोटों” से गीबत न सुनें	91	चरागां देभ कर काफ़िर ने ईस्लाम कबूल कर लिया	106
युगुल पोर कभी सय्या नहीं हो सकता	92	जशने विलादत का चरागां	107
सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज़ का तर्जे अमल	93	अक हज़ार शम्में	107
तुम मेरे पास तीन बुराईयां ले कर आओ	93	हकीकी मुफ़िलस	108
मलुबतों के योरों से बचो	94	आह ! कियामत के रोज़ क्या होगा !!	108
जुदा होने तक डालते जिहाद में	94	मैंने अपनी ईज़्जत लोगों पर स-दका की	110
म-दनी येनल की बहौलत मौत से 17 दिन कबूल ईमान मिल गया	95	पेशगी मुआह़ करने वाले की मग़्फ़िरत हो गई	110
मरने से कबूल कोई सुधरता है तो कोई बिगडता है	95	ईमामे मज़्लूम की अपनी ईज़्जत के मु-तअद्विक सपावत	110

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
(1) मुआफ़ करने की अजीमुश्शान इज़ीलत	111	गेहूँ का दाना तोड़ने का उपरवी नुकसान	124
(2) जन्नत पाने के तीन उ नुस्खे	111	जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये कहे	125
म-दनी वसियतें	112	“कुलों ने मेरी गीबत क्री” येह जान कर गुस्से न हों	125
मैं ने इत्यास काटिरी को मुआफ़ किया	113	गीबत करने वाले को समझने का एक नया अन्दाज़	126
कर्ज प्वालों से म-दनी इस्तिजा	113	अल्लाहु ज़ुब्रार جَزَّوَجَزَّ क्री फुफ़या तदबीर का शिकार	127
दिल का दर्द दूर हो गया	114	सामने कुछ पीछे कुछ	127
दिल का भातिनी मरज बाईसे हलाकत है	115	निफ़ाक से नफ़रत	127
दिल का सियाह नुक़ता	115	आज कल निफ़ाक का अन्दाज़	128
नसीहत का असर न होने की वजह	115	गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम	129
जबान का गलत इस्ति'माल कब्र में ईसा सकता है	116	ताईब को शरमिन्दा किया तो फुद गुनाह में ईस गया	129
कब्र में आका क्यूं नहीं आ सकते !	117	दरपत लगा रखा हूं	129
पुल सिरात पर रोक दिया जाओगा	117	जन्नत में चार दरपत लगेगे	131
पुल सिरात से गुजरने वालों के मुप्तलिफ़ अन्दाज़	118	80 बरस के गुनाह मुआफ़	123
किसी की तकलीफ़ देख कर फुश न हों	119	बिस्मिल्लाह की जिये कलना मन्मूअ है	130
किसी की मुसीबत पर फुश होने की भिसालें	119	बिस्मिल्लाह कलना कब कुफ़ है	131
तीन काम नहीं कर सकते तो यूं कर लो	120	कब ज़िकुल्लाह جَزَّوَجَزَّ करना गुनाह है !	131
मुसल्मान की इज़्जत बुजुर्गों की नजर में	120	इस्तिफ़ाल के लिये अल्लाह अल्लाह की सदाअंजुलन्द करना	131
हुन्या ज़हान की दौलत अक तरफ़ और गीबत अक तरफ़	121	अपनी नेकियां तुम्हें क्यूं दूं ?	132
“हरनया” के दर्द का भातिमा	122	गीबत गोया नेकियां ईकने की मशीन है	132
भीमारी की इज़ीलत	123	कत्बी गीबत नहीं की	132
अक तिन्डे ने जन्नत से रोक दिया	124	जो जियादा बोवता है वोह जियादा ग-लतियां करता है	133

ઉન્વાન	સંક્રંહા	ઉન્વાન	સંક્રંહા
દીવાને હો જાઓ	133	“મૌલવી લોગ ક્યા જાનતે હૈં” કહના કેસા ?	143
જન્નત કે મહલ્લાત હાસિલ કરને કા નુસ્ખા	133	“દીન પર અમલ કો મૌલવિયોં ને મુશ્કિલ બના દિયા હૈ” કહના કેસા ?	144
ગીબત કી બદબૂ	134	મૌલવિયોં વાલા અન્દાઝ	144
હર બાલ કે બદલે એક એક નૂર	135	“આલિમ સારે ઝાલિમ” કહને કા હુકમે શર-ઈ	144
દર્સ દેને વાલોં કે લિયે દુઆએ અત્તાર	136	આલિમે દીન કો હકારત સે મુલ્લા કહના	144
તન્હા દર્સ દેને કી બ-ર-કત	136	“મૌલવી બનોગે તો ભૂકે મરોગે” કહના	145
મકબૂલિયત કા મદાર કિલ્લત વ કસરત પર નહીં	137	તૌહીને ઉ-લમા કે મુ-તઅલ્લિક 10 પૈરે	145
સિર્ફ એક ફર્દ ને તસ્દીક કી	137	કાશ મૈં દરખ્ત હોતા !	146
950 સાલ મૈં સિર્ફ 80 આદમી ઈમાન લાએ	138	કાશ મુઝે ઝબ્હ કર દિયા જાતા	147
ગીબત ગુનાહે કબીરા હૈ	138	આહ મેરે ગુનાહ ! !	147
આલિમ કે બારે મૈં એહતિયાત કી હિકાયત	138	તા’લીમે કુરઆન કે દો ફઝાઈલ	148
અચ્છા ગુમાન ઈબાદત હૈ	139	ગુસ્તાખે રસૂલ કા અન્જામ	149
આલિમ કી ગીબત કરને વાલા રહમત સે માયૂસ	139	ગર્મિયોં મૈં રોઝા આસાન મગર યુપ રહના મુશ્કિલ	150
દોઝખ કે કુત્તે કાટૈંગે	139	જિગર કા કેન્સર ઠીક હો ગયા	151
રાત કે સન્નાટે મૈં કુત્તા હમ્લા આવર હો તો...	140	કોઈ મરઝ લા ઈલાજ નહીં	152
ઉ-લમા કી ગીબત કી 15 મિસાલૈં	140	કેન્સર કે દો ઈલાજ	153
આલિમ કી તૌહીન કબ ફુફ્ હૈ ઓર કબ નહીં	141	ગીબત કે મુખ્તલિફ તરીકે	153
ઉ-લમા કી તૌહીન કે બારે મૈં ચન્દ સુવાલ જવાબ	141	મોમિનોં પર તીન એહસાન કરો !	153
આલિમે બે અમલ કી તૌહીન	141	મુસલ્માન કી ભલાઈ બયાન કરને વાલોં કે લિયે ફિરિશ્તોં કી દુઆ	153
જાહિલ કો આલિમ સે બેહતર જાનના કેસા ?	143	મીઠે બોલ કી મીઠી હિકાયત	154
તાલિબે ઈલ્મે દીન કો ફૂંઝૈં કા મેંડક કહના	143	મીઠી ઝબાન	155

ઉન્વાન	સંક્રંહા	ઉન્વાન	સંક્રંહા
ઝિકો દુઆ કે અન્દાઝ પર ગીબત	156	સિયાસી તબ્સરોં કી બૈઠકે	170
ક્રિયામત કા હોશરુબા મન્ઝર	157	ફિરિશ્તે લા'નત કરતે હૈં	170
લોગ મુતા-લબે કર રહે હોંગે	159	અખ્બારી ખબરોં કા હાલ બે હાલ	170
ઈસ્લાહ કા હસીન અન્દાઝ	160	કુત્તોં કી તરહ કાટતે ઓર નોચતે હોંગે !	171
હાજી મુશ્તાક સુનહરી જાલિયોં કે રૂબરૂ	160	દુઆએ કુનૂત પઢને વાલા અપના વા'દા નિભાએ	172
મુકદ્દર વાલોં કે સૌદે	161	નેકી કી દા'વત દેને કે લિયે ફાસિકોં કે પાસ જાના જઈઝ હૈ	173
દીદારે મુસ્તફા કા વઝીફા	162	હજજાજ બિન યૂસુફ કી ગીબત સે ભી પરહેઝ	173
ગીબત નેકિયોં કો જલા દેતી હૈ	163	તીન ઉયૂબ કી નુહૂસત કી ઈબ્રતનાક હિકાયત	174
મેરી નેકિયાં કહાં ગઈ ?	163	નઝ્ઝા મેં કુફ્ર બકને કા શર-ઈ મસ્અલા	175
ક્રિયામત મેં એક એક લફઝ કા હિસાબ હોગા	164	અકસર ખતાઓં ઝબાન સે હોતી હૈં	175
જિસ કી ગીબત કી જાએ વોહ ફાએદે મેં....	165	રોઝાના સુબહ આ'ઝાઝબાન કી ખુશામદ કરતે હૈં	175
મેરી માં મેરી નેકિયોં કી ઝિયાદા હકદાર હૈ	165	જો દિલ મેં હોતા હૈ વોહી ઝબાન પર આતા હૈ	176
માં કે પૂરે હુકૂક અદા નહીં કિયે જા સકતે	165	ઝબાન કી બે એહતિયાતી કી આફતોં	176
આધે ગુનાહ મુઆફ	166	હમેશા કી રિઝા વ નારાઝી	176
સારી રાત કી ઈબાદત ઓર ગીબત	166	પહલે તોલો ફિર મુંહ સે બોલો	177
100 બરસ કી નફલી ઈબાદત ઓર એક ગીબત	166	કુફ્રલે મદીના લગાને હી મેં આફિયત હૈ	177
હાજત રવાઈ ઓર બીમાર પુર્સી કી ફઝીલત	167	દિલ કી સખ્તી કા અન્જામ	177
જન્નત કે દો જોરે	168	બક બક કી આદત કુફ્ર મેં ડાલ સકતી હૈ	178
ગીબત સુનના ભી હરામ હૈ	168	ગીબત કરને વાલા કાબિલે રહ્મ હૈ	178
ગીબત મેં શિર્કત કે તમામ અન્દાઝ ગુનાહ હૈં	169	“બહુત સોતા હૈ” કહના ગીબત હૈ	179
બાદશાહ કી સડી હુઈ લાશ	169	ગીબત સુનને વાલા ભી ગીબત કરને મેં શરીક હૈ	179

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
भाने और बोलने से मु-तअद्विक गीबत की 12 मिसालें	179	गस्साल मुर्दे की बुराई भयान न करे	193
पीछे से ईशारतन “ठिगना” कलना गीबत है	180	मरने के बाद बुलन्द आवाज से कलिमा पढा !	193
किसी के इतिहास और भयान करना बड़े भौंफ की बात है	180	मरे हुए काफिर की गीबत	193
किसी को “कमजोर है” कलना !	181	6 मुर्दों की सन्सनी भैज छिकायात	194
किसी की कमजोरी के इज्हार की गीबत की 9 मिसालें	181	﴿1﴾ आग का कुरता	194
किसी के मा'यूब मरज का तजकिरा करना	182	सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कुछ छुपा हुआ नहीं	194
लूले लंगड़े की गीबत	182	﴿2﴾ बे दीन की गरदन में सांप	195
लिबास की जामी बताना भी गीबत है	182	﴿3﴾ गरदन में सांप लिपटा हुआ था	195
लिबास के मु-तअद्विक गीबत की 24 मिसालें	183	सलाबा के डक में फुदा से उरो !	196
जूअे के कारोबार से तौबा	184	सलाबा के किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का	196
जूआ हुराम है	184	निहायत अदब कीजिये	
जूआ भेलना गुनाह है	185	﴿4﴾ कब्र में भयानक काला सांप	197
जूआ शैतानी काम है	185	धोकेबाजी जहन्नम से है	197
जूआ में जता हुआ माल हुराम है	186	मिलावट वाला माल बेचने का जहज तरीका	198
गोया भिन्जीर के पून और गोशत में हाथ उभोया	187	﴿5﴾ परिन्दे ने डे की तो उस में से ईन्सान	199
जूअे की दा'वत देने वाला कफ़ारे में स-दका करे	187	निकल पडा !	
जूआ की ता'रीफ़	188	ईबने मुल्जिम ने मौला अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ	220
जूअे की 6 सूरतें	188	को क्यूं शहीद किया ?	
जूअे से तौबा का तरीका	190	﴿6﴾ डौज पर उलटा लटका हुआ आदमी	201
इत शुदा की बुराई करना भी गीबत है	191	काबील के सियाह कारनामे	201
“कुलां ने फुदकुशी कर ली” यह कलना गीबत है	192	दर्स में शिर्कत मेरी ईस्लाह का सबब बन गई	202
		कब्र की रोशनी	203
		कब्रें जग-मगा रही होंगी	204
		दा'वत में गीबत की छिकायत	204

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
किसी को सुस्त वगैरा कहनेके मु-तअल्लिक 19 भिसाले	205	गला घोंटने का अजाब	219
दोनों जहां की जिल्लत	206	घर जा कर नेकी की द्वा'वत देते	220
अल्लाह की दी हुई ईज्जत कौन छीन सकता है !	207	“गुनाह उठा लिये” की वजाहत	220
आका صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने प्वाब में इरमाया	208	रहमत पलट जाती है	221
मस्जिद त्मरो ईजतिमाअ भरलभा !	209	अजाबे कब्र के तीन छिस्से	221
दाढी के मु-तअल्लिक अेक ईभ्रतनाक प्वाब	209	कुत्तों की शकल में उठेंगे	221
आका صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मडभत की निशानी सजा लीजिये	210	गोश्त की छोटी सी बोटी	222
सूद से बडा गुनाह कौन सा है ?	210	हर बात पर साल त्मर की ईबाहत का सवाब	222
मुसल्मान की ईज्जत पर हाथ डालना सूद से बडा गुनाह है	211	आशिकाने रसूल के भीठे बोल की ब-रकात	223
मुसल्मान की ईज्जत की छिफाजत का सवाब	212	कब्र का त्मयानक तसव्वुर	224
गीबत से रोकने के यार इजाईल	213	त्मात्मी ने जादू करवा दिया है	225
गीबत करने वाले के सामने ता'रीफ	214	अगर घर से सूईयों वाला पुतला भर आमद हो जाये तो !	226
गीबत करने वाले से पीछा छुडाने का तरीका	214	जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे गलत हो सकते हैं ?	226
गीबत करने वाले को ईशारे से नही ज्मबान से रोकिये	215	अगर तकयेके नीचे से ता'वीज निकल आये तो ?	227
उ-लमा को अवाम न टोकें	215	मुंह की बढबू के भा वुजूद शराबी न कडा जाये	227
आलिम को टोकनेके मु-तअल्लिक इरमाने आ'ला हजरत	216	शर-ई सुभूत किसे कहते हैं	228
जिस को सलामती की दुआ दी उसी की गीबत !!!	217	तूने योरी की	228
भौंफनाक हादिसा होते होते रह गया	217	... के मेरी आंभों ने देभने में ग-लती की	228
क्या पुदकुशी से जान छूट जाती है ?	218	तौबा और मुआफी का तरीका	229
आग में अजाब	219	द्राईवर की जान बच गई	230
उसी हथियार से अजाब	219	सुन्नतों त्मरे ईजतिमाअ में रहमतों का चुखूव होता है	230

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
जिक किसे कहते हैं ?	231	बद अकीदा शप्स की गीबत	243
पूरी कौम की गीबत का मस्अला	232	मन्हूस बद मज़्जबों की बात सुननी ही नहीं है	244
लंगडे की नककाली	232	बद मज़्जबों की बू	245
नाम लिये बिगैर गीबत करना	232	बद मज़्जबों के पास बैठना कैसा ?	2456
मुंह पर ली कल सकता हूं !	232	गैर मुस्लिम का कबूले ईस्लाम	246
बन्द अल्फाज में गीबत	233	25 गैर मुस्लिम कैदियों का कबूले ईस्लाम	247
कुछ कहुंगा तो गीबत हो जायेगी	233	गीबत पर उभारने वाली 16 चीजों का बयान	248
ऐब पोशी के लिये जूट ज़रूत होने की अक सूरत	233	गीबत से बयने का आसान तरीन विर्ट	249
भुद को जिल्दत पर पेश करना ज़रूत नहीं	234	गीबत का ईजमावी (या'नी मुप्तसर) ईलाज	250
दुआ के लिये दर-ज्वास्त देने का तरीका	235	मियां बीवी के कबूले ईस्लाम की ईमान अफरोज म-दनी बहार	252
तबीब को उयूब बयान करने का तरीका	236	मुस्कि का शोहर मुसल्मान हो गया निकाल का क्या बना ?	254
रुहानी ईलाज के बस्ते पर राजदारी का तरीका	236	बे अमल मुसल्मानों का किरदार कबूले ईस्लाम में रुकावट	255
कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जायेगा	237	गीबत के तफ़्सीली 10 ईलाज	257
डॉक्टरों और आमिलों वगैरा के लिये	238	तन्हा रहे या अख़ी सोलबत ईप्तिहार करे	257
गीबत की 12 ज़रूत सूरतें	238	नेक बन्दे की दुआ पर आमीन कहने की ब-र-कत	257
7) मलयान के लिये ज़रूत न गूंगा बहारा वगैरा कहना	239	जाती दोस्तियों में गीबतों से बयना दुश्वार है	258
जो भुद्लम भुद्ला बुराई करता हो उस की गीबत	240	झालतू बैठकों से दूर रहिये	259
10) बतौर अफ़सोस किसी की बुराई बयान करना	240	"वर्धम पास" करने की बैठक का नक़शा पेश करनी वाली हिक़ायत	259
बतौर अफ़सोस गीबत करने से बयने ही में आहियत है	241	भेलजोल का अह्ल कौन ?	260
काफ़िर और मुरतद की गीबत के अहकाम	242	ज़ाहिरि अख़ी सोलबतों में ली गीबतों का मरज़ !	261
बद मज़्जबों से हदीस व आयत न सुनी	243	हर आने वाला वक्त पिछले वक्त से बुरा है	261

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
हर हर इर्द गीबत गो नही	262	सुवारी के जानवर पर ला'नत मत करो	274
50 सिद्दीकीन का सवाब	262	जानवर को बुरा कलना	274
गीबत पोर से तो कुत्ता ही भला	263	मरे हुअे कुत्ते की बुराई से भी बचो	275
तो कुत्ता मुज जैसे सेंकडों से अख्श	263	भिन्जीर के दिये उम्दा किकरा इस्ति'माल इरमाया	275
हसन बसरी और अक गोशा नशीन	263	भिचडे को हलीम कलना	276
तन्हाई में भलाई ही भलाई है	264	जबान का तीर भता नहीं होता	276
गीबत से बचने का अनोखा तरीका	264	जबान का जम्भ तलवार के जम्भ से सप्त होता है	277
गैर मुस्लिम मुसल्मान हो गया	265	गीबत की आदत निकालने का बेहतरीन नुस्खा	277
यूहे भगाने के दिये बिल्ली न रफने का इमान अफरोज सबब	266	गीबत नेकियों की बरबादी और जलन्म	278
“भडास” निकालना गीबत में डाल सकता है	267	में दामिले का सबब बन गई तो !	
मुआफ़ करने वालों का बे हिसाब जन्त में दामिला	268	माल देने में बपील मगर नेकियां लुटाने में सपी !	278
बुरा कलने से बचने वाले का पुश अन्जाम	268	गुर्दे का दई दूर हो गया	279
गीबत के अजाबात याद कीजिये	269	मफ़लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी	280
गीबत का ताईब आभिर में जन्त में जायेगा	269	सिर्फ़ अपने औबों को देखिये	281
गुल मयायेगा, दोजभ में जायेगा	270	अपने औबों को याद करो	281
सोने का पहाड स-दका करने से भी पसन्दीदा	270	अपने औबों को जानने के बा वुजूद....	281
गीबत हो जाती तो भैरात करते	271	जो अपने औबों को जान लेता है	282
दो दिरहम की हिकायत	271	छुपी छुई बातों की टटोल मत करो !	282
मज़कूरा हिकायत की वजाहत	271	अदलाह اذع اذع औब पोशी इरमायेगा	282
अक युप सो सुभ	272	औब छुपाओ जन्त पाओ	283
परिन्दे की नेकी की दा'वत	273	जलन्म में यीभ रहे लोंगे !	283
		गीबत इमान में इसाद पैदा करती है	284

ઉન્વાન	સંક્રંહા	ઉન્વાન	સંક્રંહા
એક નૌ મુસ્લિમ કી દર્દનાક આપ બીતી	284	સભી ગીબત સે બચને કી તરકીબ કરે	300
ગીબત સે તૌબા કા તરીકા	290	દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત	301
બન્દે સે ભી મુઆફી માંગે	291	40 હિકાયાત	301
તૌબા કે બા'દ જિસ કી ગીબત કી થી ઉસ કો પતા ચલ ગયા તો ?	292	﴿1﴾ દો ગીબત કરને વાલિયો કી હિકાયાત	301
જિસ કી ગીબત કી ઉસ કો પતા ચલ ગયા... ફિર મર ગયા	292	صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	303
હાએ શામતે નફસ !	293	﴿2﴾ ગીબત સે બાઝ રખને કા હસીન અન્દાઝ	303
દુન્યા હી મેં મુઆફ કરવા લેને મેં આફિયત હૈ	294	﴿3﴾ રૂઈ વાલે ને ખિયાનત કી !	304
બોહતાન કી તા'રીફ	294	તાજિરો કી ગીબત કી 17 મિસાલે	305
બોહતાન સે તૌબા કા તરીકા	294	મુલાઝિમીન કી ગીબતો કી 18 મિસાલે	306
બોહતાન કા અઝાબ	295	દુકાનદારો કી આપસી ગીબત કી 10 મિસાલે	306
ગુનાહ કે ઈલ્લામ કા અઝાબ	295	﴿4﴾ મહૂમા અમ્મીજાન ને મ-દની કામ કરને કી ઈજાઝત દિલવાઈ	307
શકકી મિઝાજો કો તમ્બીહ	295	મ-દની કામ કી તડપ મરહબા !	308
ઔરત પર તોહમત લગાને કે સબબ હલાકત	296	صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	309
એક દૂસરે કો ગીબત સે બચાને કા તરીકા	296	﴿5﴾ ઈમામે આ'ઝમ કા અપને ગુસ્તાખ	309
કિસી કો કાલા કહના ભી ગીબત હૈ	297	કે સાથ હુસ્ને સુલૂક	310
બિગૈર શરમાએ ફૌરન તૌબા કર લેની ચાહિયે	297	ગુસ્સે પર કાબૂ કે ભી ક્યા ખૂબ ફઝાઈલ હૈ !	310
ગુનાહ હોતે હી ફૌરન તૌબા કરના વાજિબ હૈ	298	ક્યા ઈમામે આ'ઝમ ને હસન બસરી કી ગીબત કી ?	311
કિસી કી બાત ગીબત ન થી મગર આપ ને ગીબત કહ દી તો ?	298	﴿6﴾ ઈમામે આ'ઝમ اللهُ الرَّحْمَنُ اللهُ الرَّحِيمُ ને	311
ઝગડે સે બચને કી ફઝીલત	298	કભી દુશ્મન કી ભી ગીબત નહીં કી	312
اَسْتَغْفِرُالله کહને કી ફઝીલત	299	આધે અહલે ઝમીન સે ભી ઈમામે આ'ઝમ કી અક્લ ઝિયાદા	312
તૌબા કે તીન અરકાન હૈ	299	﴿7﴾ કબ્ર વાલે ગીબત નહીં કિયા કરતે	312
		﴿8﴾ હમ અબ સિર્ફ મ-દની ચેનલ દેખતે હૈ	313
	299	નમાઝ બુરાઈયો સે બચાતી હૈ	314

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
धृतिभासे न-बवी में भुशुक टहनी छिवाई	314	गीबत से रोकना कब वाजिब है	330
९ गीबत के सबब बरज्ज में कैद	316	हसद के मु-तअद्विक गीबत की सात मिसालें	331
१० छिजे की मडबत में इंसने की वजह	317	२१ मिनी सिनेमा घर बन्द कर दिया	332
कहीं गीबत तो नहीं ले डूबी !	317	२२ दोनों में से कौन बेहतर ?	333
११ नमाज दोहराओ	318	हकीकी मुत्तकी कौन ?	334
क्या गीबत से रोजा टूट जाता है ?	318	२३ अक बार की छुई गीबत के सबब	334
१२ अक छिजे की मगिरत की छिकायत	319	बेहोश हो गये	
१३ राना बढ मआश	320	बरोजे हशर ईट और धागे का मुता-लबा	335
याहे गुनाह आस्मान तक पछोंय गये हों	322	यालीस बरस से रो रहा हूं	335
१४ गीबत में लज्जत की वजह	323	२४ गीबत करने वाले का वकार जाता रहता है	336
नाम निहाद बयानक सुकून	323	२५ माजी की याद... दो नाबीना	336
१५ मरा हुवा भय्यर	324	नाबीना को यालीस कदम चलाने की इजीलत	337
१६ इन्सान नुमा कुतों का सालन	324	नाबीना को चलाने का तरीका	337
१७ अनोपी छींक	325	गुलाम आजाद करने की इजीलत	337
छींक की ब-र-कतें	325	२६ म-दनी येनल की ब-र-कत से	338
१८ अमरद के साथ मजाक करने वाले की गीबत	326	गीबत से परहेज	
किसी को "अमरद परस्त" कहना	326	२७ "वोह मुई की तरह सोया है" कहना	339
हुस्ने जन का जाम पीजिये	327	नइली कामों के मु-तअद्विक गीबत की	339
१९ दो अमरद पसन्द मुअज्जनों की बरबादी	327	14 मिसालें	
रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा	328	२८ बुराई करने वाले के साथ बलाई	340
अमरद को शइवत से देपना हराम है	329	की अनोपी छिकायत	
अमरद के साथ 70 शैतान	329	ईट का जवाब नायाब गोडर से	341
२० शैख सा'दी के उस्ताज ने क्या ખૂब टोका	330	हुस्ने सुलूक का नतीजा	341

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
«29» उम्मा आवर के साथ हैरत अंगेठ छुस्ने सुलूक	341	पडोसियों के बारे में गीबतों की 20 मिसालें	358
«30» द्यो गुदडियों वाला बद गुमान्नी भी गीबत है	342	मंगनी/शादी में गीबतों की 17 मिसालें	359
«31» पुर असरार हबशी	343	रिशवत से तौबा का तरीका	360
«32» हबशी ने जूँ डी दुआ मांगी....	344	सुसराली रिशतों की गीबतों की 22 मिसालें	361
«33» औलादे नरीना डो गध	345	भयके जा कर सुसराव के मु-तअल्लिक की	
जितनी नियतें जियादा सवाब भी जियादा	346	जाने वाली गीबतों की 17 मिसालें	361
«34» गीबत करने वाले को तोड़फा	347	मंगनी टूटने या तलाक होने पर की जाने	
गीबत करने वाले को दुआअे जैर से नवाजिये	347	वाली गीबतों की 37 मिसालें	362
«35» धत्र की शीशी का तोड़फा	348	घर की बात बाहर करने वाला कमजात होता है	363
«36» म-दनी मुन्ने की जान भय गध	348	जोड़ों की भीमारी भी गध और बे रोजगारी भी गध	364
«37» 15 सालह मरीजा की ईमान अफरोज सिद्धत या भी	349	मुर्दे को अख्ण पडोस द्यो	364
«38» लम्मा सियाह आदमी	350	गुलाब के फूल या अजूदहों के मुंड !	365
«39» अमरद बीनी वगैरा की हाथों हाथ गैभी सजाअें	352	दा'वतों में की जाने वाली गीबतों की 14 मिसालें	366
«40» लिफ्ट का पंजा	352	बेटे के बारे में गीबत की 16 मिसालें	366
अैब भयान करना गीबत है भी और नहीं भी	353	बाप के बारे में गीबत की 17 मिसालें	367
दुआअे अत्तार	354	मां की तरफ से बेटे की गीबत की 13 मिसालें	368
गीबत की मिसालें	355	घरों में उभूमन बोले जाने वाले गीबतों के	
दुइद शरीफ की फजीवत	356	अड्काज की 67 मिसालें	368
अेहयाउल उलूम से गीबत की ता'रीफ और मिसालें	356	जती मुआ-मलात के इजूल सुवालात की 15 मिसालें	369
आह ! हमारी जवान की बे अेहतियातियां ! ! !	356	पानदान के मु-तअल्लिक गीबत की 15 मिसालें	370
	357	परेशान हालों के मु-तअल्लिक गीबत की 21 मिसालें	371

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
भरीजों की गीबतों की 11 भिसालें	371	सेठ और मुलाजिम की अेक दूसरे के	
भरने वाले मुसल्मान की गीबत की 25 भिसालें	372	मु-तअद्लिक गीबतों की 8 भिसालें	384
डॉक्टर के बारे में गीबत की 17 भिसालें	372	मुफ्तविफ़ करीगरोके मु-तअद्लिक गीबतों की 14 भिसालें	384
डॉक्टरों की रलनुमाई के लिये	373	दफ़तरके आदिमके मु-तअद्लिक गीबतों की 20 भिसालें	385
दवा की कम्पनियों की तरफ़ से डॉक्टरों को रिशवत	374	भकान व साखिबे भकान की गीबत की 17 भिसालें	385
रिशवत किसे कलते हैं ?	374	किरायादरके बारेमें की जाने वाली गीबतों की 16 भिसालें	386
रिशवत की अेक सूरत	375	सियासी तब्सरों में की जाने वाली गीबत	
रिशवत लेने देने वाले पर ला'नत	375	की 35 भिसालें	386
अगर कम्पनी वाले डॉक्टर को तोड़फ़ा कल कर दें तो ?	375	हुजूल जुम्लों की 14 भिसालें	387
बिला ड़ाजत टेस्ट या दवा लिख देने का भियानत है	376	थोक अन्द गीबतों की यार भिसालें	388
रिशवत से तौबा का तरीका	376	अकर ईद पर किये जाने वाले हुजूल	
कअ्र का भयानक सियाल कुत्ता	376	सुवालात की 19 भिसालें	389
द्ऱाईवर की गीबत की 8 भिसालें	377	जूट पर भजबूर करने वाले सुवालात की 14 भिसालें	389
लम्बे रूट की बसों और भप्सूस डोटलें	378	सब से अतरनाक अबुल हुजूल	390
लुकमअे ड़राम की नुलूसत	378	ड़ोन पर की जाने वाली हुजूल आतों की 5 भिसालें	391
लुकमअे ड़लाल की ड़जीलत	379	ड़ोन करने के ड़वाले से गीबत की 13 भिसालें	391
सुवारी और सुवार की गीबत की 15 भिसालें	379	ड़ोन वुसूल कर के सवाब कमाईये	392
रेल्वे का सफ़र और मु-तवककअ 10 गीबतें	380	ड़िसी का ड़ोन आने की सूरत में गीबत की 17 भिसालें	393
अेक ड़ेरोईन्धी की आपबीती	380	ड़िसी का ड़ोन न आने की सूरत में गीबत की 9 भिसालें	393
भे'भार व भजदूर की मु-तवककअ गीबतों की 12 भिसालें	382	ड़िसी को ड़ोन करते देअ कर की जाने वाली	
ड़ोटल वाले की मु-तवककअ गीबत की 17 भिसालें	383	गीबतों की 11 भिसालें	394
ताजिरो के मु-तअद्लिक 26 गीबतें	383	SMS के ड़वाले से की जाने वाली गीबतों की 10 भिसालें	394

ઉત્ત્વાન	સફ્હા	ઉત્ત્વાન	સફ્હા
CHATTING કે હવાલે સે કી જાને વાલી ગીબતો કી 3 મિસાલે	395	ઈમામ વ ખતીબ કે બારે મેં કી જાને વાલી મુ-તવક્કઅ ગીબતો કી 37 મિસાલે	412
INTERNT કે હવાલે સે કી જાને વાલી ગીબતો કી 5 મિસાલે	395	મસ્જિદ ઇન્તિઝામિયા કે મુ-તઅલ્લિક કી જાને વાલી ગીબતો કી 15 મિસાલે	414
યોક દર્સ કી બહાર, આકા કા દીદાર દા'વતે ઇસ્લામી દુરુદો સલામ કે જામ પિલાતી હૈ	395 397	મઝહબી તબ્કે મેં કી જાને વાલી ગીબતો કી 68 મિસાલે	414
નૂરે મુસ્તફા કી જલ્વા સામાનિયાં	397	ગીબત કી મુ-તફરક 61 મિસાલે	416
દોસ્તો મેં કી જાને વાલી ગીબતો કી 92 મિસાલે	398	વક્ફ કે અજરોં કે મુ-તઅલ્લિક ગીબતો	417
મુસન્નિફ કે બારે મેં કી જાને વાલી ગીબતો કી 19 મિસાલે	399	કી 15 મિસાલે	417
વેબસાઈટ કે મુ-તઅલ્લિક મુ-તવક્કઅ 5 ગીબતો	400	બગલ મેં કેન્સર કે ગુદૂદ	417
ઈસ્તિન્જા ખાને કી લાઈન મેં ગીબત કી 8 મિસાલે	400	ત-લબા મેં કી જાને વાલી ગીબતો કી 26 મિસાલે	418
જિરમાનિયત મેં ગીબત કી 58 મિસાલે	401	અસાતિઝાએ કી ગીબતો કી 22 મિસાલે	419
ઈબાદાત કે બારે મેં ગીબત કી 20 મિસાલે	402	મ-દની માહોલ મેં કી જાને વાલી ગીબત	421
હાફિઝે કુરઆન કી ગીબતો કી 11 મિસાલે	402	કી 67 મિસાલે	421
સફરે હજ કે બારે મેં કી જાને વાલી 34 ગીબતો	403	મ-દની કાફિલે કે મુ-તઅલ્લિક કી જાને	423
હજ સે લૌટને વાલે સે ફૂઝલ સુવાલાત કી 13 મિસાલે	405	વાલી ગીબત કી 26 મિસાલે	423
ના'ત ખ્વાન કે બારે મેં ગીબત કે અલ્લાઝ કી 25 મિસાલે	406	મ-દની માહોલ સે રૂઠે હુએ કો મનાને	424
ના'ત ખ્વાની/જલ્સે યા ઈજતિમાઅ મેં હોને	406	કે ગીબતો ભરે અન્દાઝ કા ફર્જી ખાકા	424
વાલી ગીબતો કી 19 મિસાલે	406	અફસોસ ! હમેં બાત કરની હી નહીં આતી	425
લા ઉબાલી નૌ જવાન	407	ના જાઈઝ ગુફત-ગૂ જહન્નમ મેં ગિરાએગી	426
ગુનાહ કી દસ નુહૂસતે	409	પહલે ઈજતિમાઅ મેં આતા થા અબ નહીં	426
ના'ત ખ્વાનો કે માબૈન હોને વાલી ગીબતો કી 40 મિસાલે	410	આતા ઉસે સમઝાને કે મુ-તઅલ્લિક મુ-તવક્કઅ	426
ઈકો સાઉન્ડ વાલોં ઔર કેમેરા મેન કે	412	14 ગુનાહોં ભરે જુમ્લે ઔર ગીબતે	426
મુ-તઅલ્લિક ગીબતો કી 13 મિસાલે	412	બાત અમાનત હોને કા કરીના	428
મુબલ્લિગીન વ મુકર્રીરીન કે મુ-તઅલ્લિક	412	સુધરને કી જિદ્દો જહદ જારી રખિયે	428
ગીબતો કી 10 મિસાલે	412	તો ક્યા તૂતૌબા કો મા'મૂલી શૈ ખયાલ કરતા હૈ?	429

ઉન્વાન	સંક્રંહ	ઉન્વાન	સંક્રંહ
“મજલિસ” કે બારે મેં કી જાને વાલી ગીબતો કી 16 મિસાલે	430	ફતાવા ર-ઝવિયા મેં એક વસ્વાસી કી ગોશમાલી	447
મજલિસ બરાએ ઈજતિમાઅ ઓર મુતવકકઅ 11 ગીબતે	431	દા'વત મેં જાને કે લિયે અચ્છી અચ્છી	
સિનેમા ઘર કે માલિક કી તૌબા	432	નિચ્યતે કર લેની ચાહિએ	448
ઈજિતમાએ ઝિક મેં ગુનહગાર ભી બખ્શે જાતે હેં	433	સિર્ફ લોગો કે ડર સે ગુનાહ છોડને કા નુક્સાન	449
હારિસીન વ ખાદિમીન કે બારે મેં કી જાને		ગીબત સે બચને કી તરબિચ્યત કિસ તરહ	
વાલી ગીબતો કી 41 મિસાલે	435	હાસિલ હો ?	450
મ-દની ચેનલ કે મુતઅલ્લિક ગીબત કી 15 મિસાલે	436	હમારી અક્સરિચ્યત કોબાત કરના હી નહીં આતી	451
ગીબત કે બારે મેં સુવાલ જવાબ		ગીબત કે ઝરૂરી અહકામ સીખના ફર્જ હે.	452
ઓર દીગર અહમ મા'લૂમાત	438	ગીબત કરૂંગા ન સુનૂંગા	452
દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત	438	ક્યા શિકાયત સુન હી નહીં સકતે ?	453
ગીબત કે જાઈઝ ના જાઈઝ હોને કા કેસે પતા ચલે ?	440	તન્ઝીમી મસાઈલ કા હલ ઓર ગીબત	454
ક્યા ગીબત સુનતે હી સામને વાલે કો		ફિતને ફેલાને કી વઈદે	455
ગુનહગાર સમઝ લિયા જાએ	440	ફિતના જગાને વાલે પર લા'નત	456
જાઈઝ સમઝ કર સુન લે ફિર પતા ચલે કે ચેહ		ઈન્ફિરાદી કોશિશ કે ગલત અન્દાઝ કા ફર્જી મુકા-લમા	456
ના જાઈઝ ગીબત થી તો... ?	441	ઈન્ફિરાદી કોશિશ મ-દની કામો કી જાન હે	458
અવામ જાઈઝ વ ના જાઈઝ ગીબત મેં કેસે તમીઝ કરે ?	441	આપ નમાઝ પઢતે હેં યા નહીં ?	459
ઘર મેં ગીબત સે કિસ તરહ બચે ?	442	સુવાલાત કે બજાએ તરગીબાત સે કામ લીજિયે	460
દા'વતે ઈસ્લામી કો જાહિલો કા ટોલા કહના કેસા ?	443	વા'દા કરને કે અલ્ફાઝ.....	461
બહુત સારે મુસલમાનો કી ઇકઢી ઈઝા	443	“વા'દા નહીં ઈરાદા કર લીજિયે” કહલવાના કેસા ?	462
ઈજિતમાઈ દિલ આઝારિયો કે 12 જુઓ કી મિસાલે	444	“કોશિશ કરૂંગા” કહલવાના	462
સુવાલ કરને વાલે કે ભૂલને પર હંસના	445	ﷻ કહ કર ભી બાત કો નિભાઈયે	462
ઈસ કિતાબ કે બારે મેં વસ્વસા	445	બદ ગુમાની મત કીજિયે	463
બદ ગુમાની મત કીજિયે	447	હાં મેં સર હિલા દેના	463

ઉન્વાન	સંક્રંહા	ઉન્વાન	સંક્રંહા
વા'દા ખિલાફી મુનાફિક કી નિશાનિયો મેં સે હૈ	463	મુઆફ કરો મુઆફી પાઓ	481
વા'દા ખિલાફી કી વઈદાત પર મબ્ની ચાર રિવાયાત	464	મુઆફ કરને વાલોં કી બે હિસાબ મગ્ફિરત	481
ઝૂટા વા'દા કરના હરામ હૈ	464	કાતિલાના હમ્લે કી કોશિશ કરને વાલે	
વા'દા ખિલાફી કિસે કહતે હૈં ?	464	કો મુઆફ ફરમા દિયા	481
વા'દા પૂરા કરને કી નિચ્ચત ન હો મગર		ઝુલ્મ કરને વાલે કે લિયે દુઆએ હિદાયત	482
ઈત્તિફાકન પૂરા હો જાએ તો..	465	જાદૂ કરને વાલે સે દર ગુઝર	483
શર-ઈ કબાહત હો તો વા'દા પૂરા ન કરે	465	صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	483
મુફિતયે દા'વતે ઈસ્લામી કી જબ કબ્ર ખુલી	465	રોઝાના 70 બાર મુઆફ કરો	483
નિગરાન કી તબ્દીલી પર તશ્વીશ ન કિયા કરે	469	ગાલિયોં ભરે ખુતૂત પર આ'લા હઝરત	
હમં નિગરાન કા કુસૂર બતાયા જાએ	470	કા અફવો દર ગુઝર	484
તમામ ઓહદે દારાન કે લિયે લાઈકે તકલીદ મિસાલ	471	એક અહમ મ-દની વસિચ્ચત	485
ઝિમ્મેદારી સોંપને કે લિયે મા'લૂમાત	472	ફતાવા ર-ઝવિચ્ચા કે અહમ ઈકિતબાસાત	486
નેક કામોં મેં ગૈર હાઝિર રહને વાલોં કો પૂછના	473	જિસ ને તશખ્ખુસ તબ્દીલ કર લિયા !	487
ગીબત કે ખિલાફ એ'લાને જંગ	474	બુરા ચરચા કરના હરામ હૈ	488
અફવો દર ગુઝર કી ફઝીલત મઅ એક		દા'વતે ઈસ્લામી સે બિછડને વાલોં કે	
અહમ મ-દની વસિચ્ચત	478	લિયે ઈત્મામે હુજજત	489
દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત	478	અગર આપ દા'વતે ઈસ્લામી કે સાથ કામ	
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ		કરના નહીં ચાહતે તો...	489
મ-દની આકા કા અફવો દર ગુઝર	478	يا اهلللاه ! تَوَّجَّلْ !	490
હિસાબ મેં આસાની કે તીન અસ્બાબ	479	ગીબત કે ખિલાફ એ'લાને જંગ	491
જન્નત કા મહલ	479	મેં ને ઈલ્યાસ કાદિરી કો મુઆફ કિયા	492
મુઆફ કરને સે ઈઝ્ઝત બઢતી હૈ	480	કર્ઝ ખ્વાલોં સે મ-દની ઈલ્તિજા	493
મુઅઝ્ઝઝ કૌન ?	480	ગૂંગી બોલ ઉઠી !	494
જો મુઆફ નહીં કરતા ઉસે મુઆફ નહીં કિયા જાએગા	480	દર્સ કા તરીકા	495
દુન્યા વ આખિરત કે અફઝલ અખ્લાક	480	મઆખિઝો મરાજિઅ	501



इरमाने मुस्तफा सल्लि अलैहि व अलैहि सलाम : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جراني)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

गीबत की तबाह कारियां

शैतान बहुत रोकेगा मगर येह किताब पूरी पढ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

आप को मा'लूम हो जायेगा के शैतान क्यूं नहीं पढने दे रहा था !

दुरुद शरीफ़ की इगीबत : उजरते अल्लामा मजदुदीन ईरोज आबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي

से मन्कूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो :

تُوْمَ پَر اَءَكْ كَفْرِشْتَا تُوْمَ عَزَّوَجَلَّ تو بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
मुकर्रर इरमा देगा जो तुम को गीबत से बाज रभेगा. और जब मजलिस से उठो तो

कहो : الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص 278
تُوْمَ كَفْرِشْتَا لَوْغُوْمَ लोगो को तुम्हारी गीबत करने से बाज रभेगा.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अक्सरियत गीबत की लपेट में है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मां

भाप, भाई बहन, मियां बीवी, सास बहू, सुसर दामाद, नन्द भावज बटके

अहले पाना व पानदान नीज उस्ताद व शागिर्द, सेठ व नोकर, ताजिर व

गाहक, अइसर व मजदूर, मालदार व नादार, हाकिम व महकूम, हुन्यादार व

दीनदार, भूढा हो या जवान अल गरज तमाम दीनी और हुन्यवी शो'बों से

तअल्लुक रभने वाले मुसल्मानों की भारी अक्सरियत ईस वक्त गीबत की



इरमाने मुस्तफ़ा عيسى بن عليّ بن عبد الله بن عبد المطلب : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (हदीस)

भौंफ़नाक आइत की लपेट में है, अइसोस ! सह करोड अइसोस ! बे ज़ा बक बक की आदत के सबभ आज़ कल हमारी कोई मजलिस (बैठक) उभूमन गीबत से षाली नहीं होती.

गीबत की तबाह कारियां अेक नज़र में : बहुत सारे परहेज़ गार नज़र आने वाले लोग भी बिना तकल्लुफ़ गीबत सुनते, सुनाते, मुस्कुराते और ताईद में सर खिलाते नज़र आते हैं, यूँके गीबत बहुत ज़ियादा आम है इस लिये उभूमन किसी की इस तरफ़ तवज्जोह ही नहीं होती के गीबत करने वाला नेक परहेज़ गार नहीं बल्के इंसिक व गुनहगार और अज़ाबे नार का हकदार होता है. कुरआनो हदीस और अक्वाले बुतुगाने رحمّة الله عليهم से मुन्तभभ कर्दा गीबत की 20 तबाह कारियां पर अेक सर-सरी नज़र डालिये, शायद षाईफ़ीन के बदन में खुरखुरी की लहर दौड जाये !

जिगर थाम कर मुला-हज़ा इरमाईये : ❀ गीबत ईमान को काट कर रभ देती है

❀ गीबत भुरे षातिमे का सबभ है ❀ ब कसरत गीबत करने वाले की हुआ कबूल नहीं होती ❀ गीबत से नमाज़ रोज़े की नूरानिय्यत खली जाती है ❀ गीबत से

नेकियां भरबाद होती हैं ❀ गीबत नेकियां जला देती है ❀ गीबत करने वाला तौबा कर भी ले तभ भी सब से आषिर में जन्नत में दाखिल होग़ा, अल गरज़ गीबत

गुनाहे कबीरा, कर्ल हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ❀ गीबत जिना से सप्त तर है ❀ मुसल्मान की गीबत करने वाला सूद से भी बडे गुनाह में गिरिफ़्तार

है ❀ गीबत को अगर समुन्दर में डाल दिया जाये तो सारा समुन्दर बहबूदार हो जाये ❀ गीबत करने वाले को जहन्नम में मुदरि षाना पडेगा ❀ गीबत मुर्दा त्माई का गोशत षाने के मु-तरादिक है ❀ गीबत करने वाला अज़ाबे कभ्र में गिरिफ़्तार होग़ा !

❀ गीबत करने वाला तांबे के नाषुनों से अपने येहरे और सीने को बार बार छील रहा था ❀ गीबत करने वाले को उस के पहलूओं से गोशत काट काट कर षिलाया जा

रहा था ❀ गीबत करने वाला क़ियामत में कुत्ते की शकल में उठेगा ❀ गीबत करने वाला जहन्नम का बन्दर होग़ा ❀ गीबत करने वाले को दोज़भ में षुद अपना ही गोशत

षाना पडेगा ❀ गीबत करने वाला जहन्नम के षौलते हुअे पानी और आग के



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुभल और दस भरतबा शाम दुवदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

दरमियान भौत मांगता दौड रहा डोगा और उस से जहन्नमी भी बेजार होंगे
 ❁ गीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाओगा.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 تُوْبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ الله
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

म-दनी हिंकायत : सदरुल अफ़जिल हजरते अद्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي अजाईनुल ईरफ़ान सइहा 823 पर लिखते हैं : भीठे भीठे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब जिहाद के लिये रवाना होते या सइर इरमाते तो हर दो मालदार के साथ अक नादार मुसल्मान को कर देते के येह गरीब उन की षिदमत करे और वोह उस को षिलामें षिलामें ईस तरह हर अक का काम यलता रहे. ईसी तरह अक मौकअ पर हजरते सय्यिदुना सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ दो आदमियों के साथ किये गअे थे. अक रोज आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सो गअे और षाना तय्यार न कर सके तो उन दोनों ने उनहें षाना तलब करने के लिये बारगाहे रिसालत में भेजा. सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के “आदिमे मत्बअ” (या’नी भावर्यी षाने के आदिम) हजरते सय्यिदुना उसामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ थे. उन के पास षाना अत्म हो युका था लिहाजा उनहों ने कहा : मेरे पास कुछ नही. जब हजरते सय्यिदुना सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दोनों रु-इका को आ कर बताया तो उनहों ने कहा : “उसामा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने बुज्ल किया.” जब बारगाहे रिसालत में हाजिर हुअे तो सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (बि ईजने परवद गार عَزَّ وَجَلَّ गौब की अबर देते हुअे) इरमाया : “मैं तुम्हारे मुंड में गोशत की रंगत देअता हूं.” उनहों ने अर्ज किया : हम ने गोशत षाया ही नहीं. इरमाया : तुम ने गीबत की और जो मुसल्मान की गीबत करे उस ने मुसल्मान का गोशत षाया.

(तफ़ीर बग़ौ ज ६ व ११६)

अद्लाल रब्बुल ईबाद तबा-२-क व तआला ईशाद इरमाता है :



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (महारज़ान)

وَلَا يَعْتَبُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۖ أَيْحِبُّ
أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا
فَكَرِهْتُمُوهُ ۗ (ب ۲۶ الحجرات ۱۲)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और अेक दूसरे की गीबत न करो. क्या तुम में कोई पसन्द रभेगा के अपने मरे भाई का गोशत खाये ? तो येह तुम्हें गवारा न होग।

गीबत हराम होने की हिक्मत : डरते सय्यिदुना ईमाम अहमद बिन हजर

मक्की शाईई **नकल करते हैं :** किसी की बुराई बयान करने में ज्वाह कोई सख्या ही क्यूं न हो फिर भी उस की गीबत को हराम करार देने में हिक्मत मोमिन की ईज़त की हिफ़ाज़त में मुबा-लगा करना है और ईस में ईस बात की तरफ़ ईशारा है के ईन्सान की ईज़त व हुर्मत और ईस के हुक्क की बहुत ज़ियादा ताकीद है, नीज़ अदलाह **عَزَّ وَجَلَّ** ने ईस की ईज़त को गोशत और जून के साथ तशबीह दे कर मज़ीद पुप्ता व **मुअक्कद** कर दिया और ईस के साथ ही मुबा-लगा करते हुअे ईसे मुर्दा भाई का गोशत खाने के मु-तरादिक़ करार दिया युनान्चे पारह **26 सू-रतुल हुजुरात** आयत नम्बर 12 में ईशाई इरमाया : **أَيْحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۗ** (तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : क्या तुम में कोई पसन्द करेगा के अपने मरे भाई का गोशत खाये तो येह तुम्हें गवारा न होग।) ईज़त को गोशत से तशबीह देने की वजह येह है के ईन्सान की बे ईज़ती करने से वोड औसी ही तकलीफ़ महसूस करता है जैसा के उस का गोशत काट कर खाने से उस का बदन दर्द महसूस करता है बल्के ईस से भी ज़ियादा. क्यूंके अक्ल मन्द के नजदीक मुसल्मान की ईज़त की कीमत जून और गोशत से बढ कर है. समजदार आदमी जिस तरह लोगों का गोशत खाना अख़्ण नहीं समजता ईसी तरह उन की ईज़त पामाल करना ब द-र-जअे औला अख़्ण तसव्वुर नहीं करता क्यूंके येह अेक तकलीफ़ देह अम्र (या'नी मुआ-मला) है और फिर अपने भाई का गोशत खाने की ताकीद लगाने की वजह येह है के किसी के लिये अपने भाई का गोशत खाना तो बहुत दूर की बात है (मा'भूली सा) यबाना भी मुम्किन नहीं होता लेकिन दुश्मन का मुआ-मला ईस के बर अकस है. (الرّوایجُ عَنْ أَقْتِرَافِ الْكِبَائِرِ ج ۲ ص ۱۰)



इरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज़ो मुज़ पर रोज़े ज़ुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (अवामल)

गीबत के मु-तअत्विक अेक अे'तिराज़ का जवाब : एमाम अहमद बिन हज़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر ने गीबत के बारे में समझाने के लिये फ़ुद ही अे'तिराज़ वारिद किया और फ़ुद ही एस का जवाब एशरफ़ इरमाया है लिहाज़ा मुला-हाज़ा हो :

अे'तिराज़ : किसी के मुंह पर उस का अ़ैब बयान करना हराम है क्यूंके एस से उसे हाथो हाथ तकलीफ़ पड़ोयती है जब के ग़ैर मौजू-दगी में गीबत करने से उसे तकलीफ़ नहीं पड़ोयती क्यूंके उसे एस की एतिलाअ ही नहीं होती.

जवाब : एस का अेक जवाब येह है के (पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में एस लफ़्ज़) مَيِّنًا (या'नी मुद्दी) की कैद से येह अे'तिराज़ फ़ुद ब फ़ुद ખत्म हो ज़ता है वोह एस तरह के अपने मुद्दा त्माए का गोशत खाने से फ़ुद ख़ाअे खाने वाले को (ज़ाहिरन) कोए तकलीफ़ नहीं होती, हावां के येह एन्तिहाए घटिया और बुरा इ'ल है. ताहम वोह मुद्दा खान ले के मेरा गोशत ख़ाया ज़ रहा है तो उसे ज़र तकलीफ़ पड़ोये. एसी तरह किसी की ग़ैर मौजू-दगी में उस के अ़ैब बयान करना भी हराम है क्यूंके जिस की गीबत की ग़ैर अगर उसे एतिलाअ हो ख़ाअे तो उसे भी तकलीफ़ होगी.

(الرّوایجُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكِبَائِرِ ج ٢ ص ١٠)

गीबत व बोह्तान का इर्क : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार एस्तिफ़सार इरमाया : क्या तुम खानते हो गीबत क्या है? अर्ज़ की ग़ैर : अह्लाह एज़्ज़ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेहतर खानते हैं.

इरमाया : (गीबत येह है के) तुम अपने त्माए का एस तरह ज़िक़ करो जिसे वोह ना पसन्द करता है. अर्ज़ की ग़ैर : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो? इरमाया : ज़ो बात तुम कल रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की गीबत की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर बोह्तान बांधा.

(صحيح مُسَلِّم ص ١٣٩٧ حديث ٢٥٨٩)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان इरमाते हैं : गीबत सख्ये अ़ैब बयान करने को कहतें हैं और बोह्तान जूटे अ़ैब बयान करने को, गीबत होती है सय मगर है हराम. अकसर गावियां सख्यी होती हैं मगर हैं



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُؤَلَّجٌ پَر دُرِّدَةِ پَاك كِي كَسْرَت كَرُو بَشَك يَهَل تُوْمَحَارِي دِي يَه تَحَارَت
لَيْ. (ابويعلى)

બે હયાઈ વ હરામ, (મા'લૂમ હુવા કે) હર સય હલાલ નહીં હોતા. ખુલાસા યેહ હૈ કે ગીબત એક ગુનાહ હૈ બોહ્તાન દો ગુનાહ. (મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 6, સ. 456)

ગીબત કી તા'રીફ બહારે શરીઅત મેં : સદરુશશરીઅહ, બદરુતરીકહ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने गीबत क़ी त़ा'रीफ़ इस तरह बयान की है : किसी शप्स के पोशीदा औब को उस की बुराई करने के तौर पर जिक्र करना. (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 175)

ગીબત કી તા'રીફ અઝ ઇબ્ને જૌઝી : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો! અફસોસ કે આજ હમારી અક્સરિયત કો ગીબત કી તા'રીફ તક મા'લૂમ નહીં હાલાં કે ઇસ કે બારે મેં ઝરૂરી અહકામ જાનના ફર્ઝ ઉલૂમ મેં સે હે. દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 300 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “આંસૂઓ કા દરિયા” સફહા 256 પર હઝરતે અલ્લામા અબુલ ફરજ અબ્દુર્હમાન બિન જૌઝી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने अछादीसे मुबा-रका की रोशनी में गीबत की ज़ो त़ा'रीफ़ बयान फ़रमाई है, वोह येह है : तू अपने भाई को औसी चीज़ के ज़रीअे याद करे के अगर वोह सुन ले या येह बात उसे पछोये तो उसे ना गवार गुज़रे अगरये तू इस में सय्या हो ज़्वाह उस की ज़ात में कोई नक़स (ખામી) બયાન કરે યા ઉસ કી અક્લ મેં યા ઉસ કે કપડોં મેં યા ઉસ કે ફે'લ યા કૌલ મેં કોઈ કમી બયાન કરે યા ઉસ કે દીન યા ઉસ કે ઘર મેં કોઈ નકસ (ઐબ) બયાન કરે યા ઉસ કી સુવારી યા ઉસ કી ઔલાદ, ઉસ કે ગુલામ યા ઉસ કી કનીઝ મેં કોઈ ઐબ બયાન કરે યા ઉસ સે મુ-તઅલ્લિક (યા'ની તઅલ્લુક રખને વાલી) કિસી ભી શૈ કા (બુરાઈ કે સાથ) તઝકિરા કરે યહાં તક કે તેરા યેહ કહના કે ઉસ કી આસ્તીન યા દામન લમ્બા હૈ સબ ગીબત મેં દાખિલ હૈં.

(بَحْرُ الْأُمُوعِ ص ١٨٧)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरइद पढो के तुम्हारा दुरइद मुज तक पढीयेता है. (ग़ुरान)

गीबत क्या है ? : उजरते सय्यिदुना एमाम अहमद बिन हजर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَقْوَى नकल करते हैं : उ-लमाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : ए-न्सान के किसी जैसे औब का जिक करना जो उस में मौजूद हो गीबत कहलाता है, अब वोह औब याहे उस के दीन, दुन्या, जात, अप्लाक, माल, औलाद, बीवी, पादिम, गुलाम, एमामा, लिबास, उ-रकात व स-कनात, मुस्कुराहट, दीवानगी, तुर्श इई और फ़ुश इई वगैरा किसी भी औसी चीज में हो जो उस के मु-तअद्विक हो. जिस्मानियत में गीबत की मिसालें: अन्धा, लंगडा, गन्जा, ठिगना लम्बा, काला और जर्द वगैरा कहना. दीन में गीबत की मिसालें: फ़ासिक, योर, पाँन, जालिम, नमाज में सुस्ती करने वाला, और वालिदैन का ना फ़रमान वगैरा कहना. मज़ीद आगे यल कर नकल फ़रमाते हैं : कहा जाता है के “गीबत में भजूर की सी मिठास और शराब जैसी तेजी और सुरइ है.” अदलाह عَزَّوَجَلَّ इस आफ़त से हमारी डिफ़ाजत फ़रमाअे और हमारी तरफ़ से गीबत वालों के हुकूक (मइज अपने इजलो करम से) फ़ुद ही अदा फ़रमाअे कयूँके उस عَزَّوَجَلَّ के एलावा एन्हें कोई शुमार नहीं कर सकता.

(الرّوَا جُرْعِن اَقْتِرَافِ الْكِبَارِ ج ٢ ص ١٩)

गु-नहे गदा का हिसाब क्या वोह अगयें लाभ से हैं सिवा

मगर औ अइव्व तेरे अइव का तो हिसाब है न शुमार है

(अपने कलाम के इस मक्तअ के भिस्रअे उला में आ'ला उजरत एमाम अहमद रजा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने भूब एन्किसारी फ़रमाई है. लिहाजा “रजा” की जगह सगे मदीना غَفِي ने अपने गुनाहों के तसव्वुर से “गदा” लिखा है)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد



ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸੱਫ਼ੀ : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : ਜਿਸ ਨੇ ਮੁਝ ਪਰ ਫਸ ਮਰਤਭਾ ਦੁਰ੍ਹਏ ਪਾਕ ਪਠਾ ਅਵਲਾਫ਼ ਉਸ ਪਰ ਸੋ ਰਹਮਤੋਂ ਨਾਜ਼ਿਫ਼ ਫ਼ਰਮਾਤਾ ਏ. (ਪ੍ਰਾਨ)

ਮੈਂ ਅਲਾਫ਼ੇ ਕਾ ਨਾਮੀ ਗਿਰਾਮੀ ਭਫ਼ ਮਆਸ਼ ਥਾ ! : ਮੀਠੇ ਮੀਠੇ ਈਸਲਾਮੀ ਭਾਈਯੋ !

ਗੀਬਤ ਕੀ ਆਫ਼ਤ ਸੇ ਸਬ੍ਯੀ ਤੌਭਾ ਕੀਜ਼ਿਯੇ, ਝਭਾਨ ਕੀ ਫ਼ਿਫ਼ਾਝਤ ਕਾ ਝੇਫ਼ਨ ਭਨਾਈਯੇ, ਤੌਭਾ ਪਰ ਈਸਤਿਕਾਮਤ ਪਾਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ “ਫ਼ਾ’ਵਤੇ ਈਸਲਾਮੀ” ਕੇ ਮ-ਫ਼ਨੀ ਮਾਫ਼ੋਲ ਸੇ ਫ਼ਰ ਫ਼ਮ ਵਾਭਸਤਾ ਰਹਿਯੇ ਔਰ ਸੁਨਨਤੌਂ ਕੀ ਟਰਭਿਯਯਤ ਕੇ ਮ-ਫ਼ਨੀ ਕਾਫ਼ਿਲੌਂ ਕੇ ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ ਭਨਿਯੇ ਆਪ ਕੀ ਟਰਗੀਭ ਵ ਟਫ਼ਰੀਸ ਕੇ ਲਿਯੇ ਔਕ ਮ-ਫ਼ਨੀ ਭਫ਼ਾਰ ਪੇਸ਼ ਕੀ ਜਾਤੀ ਏ. ਔਕ ਮੁਭਵਲਿਗੇ ਫ਼ਾ’ਵਤੇ ਈਸਲਾਮੀ ਕਾ ਭਯਾਨ ਏ ਕੇ ਜੁਮਾਫ਼ਲ ਆਭਿਰਫ਼ 1429 ਸਿ.ਫ਼ਿ., ਜੂਨ 2008 ਈ. ਮੈਂ ਫ਼ਮਾਰਾ ਮ-ਫ਼ਨੀ ਕਾਫ਼ਿਲਾ ਔਕਾਫ਼ਾ (ਪੰਜਾਭ, ਪਾਕਿਸਤਾਨ) ਪਫ਼ੌਂਯਾ. ਵਫ਼ਾਂ ਪਰ ਔਕ ਭਾ ਰੀਸ਼ (ਯਾ’ਨੀ ਫ਼ਾਫ਼ੀ ਵਾਲੇ) ਉਮ੍ਰ ਰਸੀਫ਼ਾ ਈਸਲਾਮੀ ਭਾਈ ਸੇ ਮੇਰੀ ਮੁਲਾਕਾਤ ਫ਼ੁਈਫ਼.

ਉਨ ਕੇ ਸਰ ਪਰ ਸਭ੍ਯ ਸਭ੍ਯ ਈਮਾਮਾ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਅਪਨੇ ਜਵ੍ਯੇ ਲੁਟਾ ਰਫ਼ਾ ਥਾ. ਫ਼ੌਰਾਨੇ ਗੁਫ਼ਤ-ਗੂ ਉਨਫ਼ੌਂ ਨੇ ਈਨਕਿਸ਼ਾਫ਼ ਕ੍ਰਿਯਾ ਕੇ ਫ਼ਾ’ਵਤੇ ਈਸਲਾਮੀ ਕੇ ਮ-ਫ਼ਨੀ ਮਾਫ਼ੋਲ ਮੈਂ ਆਨੇ ਸੇ ਪਫ਼ਲੇ ਮੈਂ ਅਪਨੇ ਅਲਾਫ਼ੇ ਕਾ ਨਾਮੀ ਗਿਰਾਮੀ ਭਫ਼ ਮਆਸ਼ ਥਾ. ਮੈਂ ਸ਼ਰਾਭ ਕਾ ਔਸਾ ਰਸਿਯਾ ਥਾ ਕੇ ਜਭ ਕਫ਼ੀ ਜਾਤਾ ਤੋ ਸ਼ਰਾਭ ਕੇ ਕਨਸ਼ਟਰ ਮੇਰੀ ਗਾਫ਼ੀ ਮੈਂ ਧਰੇ ਫ਼ੋਤੇ. ਮੈਂ ਅਪਨੇ ਸਾਥ ਗਨ ਮੇਨ ਰਭਤਾ ਔਰ ਖੁਫ਼ ਭੀ ਮੁਸਵਲਫ਼ ਰਫ਼ਤਾ ਥਾ. ਮੇਰੇ ਕਾਲੇ ਕਰਤੂਤੌਂ ਕੀ ਵਜਫ਼ਲ ਸੇ ਲੋਗ ਮੁਝ ਸੇ ਈਸ ਕਫ਼ਰ ਨਫ਼ਰਤ ਕਰਤੇ ਕੇ ਮੇਰੇ ਕਰੀਭ ਸੇ ਗੁਝਰਨਾ ਪਸਨਫ਼ ਨ ਕਰਤੇ ਥੇ.

ਮੈਂ ਨੇ “ਮ-ਫ਼ਨੀ ਲਾਈਨ” ਕੈਸੇ ਈਫ਼ਤਿਯਾਰ ਕੀ, ਈਸ ਕੀ ਟਫ਼ਸੀਲ ਕੁਫ਼ ਯੂੰ ਫ਼ੇ ਕੇ ਫ਼ਮਾਰੇ ਅਲਾਫ਼ੇ ਮੈਂ ਨੇਕੀ ਕੀ ਫ਼ਾ’ਵਤ ਕੀ ਧੂਮੈਂ ਮਯਾਨੇ ਵਾਲੇ ਫ਼ਾ’ਵਤੇ ਈਸਲਾਮੀ ਕੇ ਮੁਭਵਲਿਗੀਨ ਮੁਝੇ ਭੀ ਨੇਕੀ ਕੀ ਫ਼ਾ’ਵਤ ਫ਼ੇਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਆਯਾ ਕਰਤੇ, ਮਗਰ ਮੈਂ ਗਫ਼ਲਤ ਕੀ ਗਫ਼ਰੀ ਵਾਫ਼ਿਯੌਂ ਮੈਂ ਗੁਮ ਥਾ ਈਸ ਲਿਯੇ ਉਨ ਕੀ ਫ਼ਾ’ਵਤ ਟਵਜ਼ਯੋਲ ਸੇ ਸੁਨਨੇ ਕੇ ਭਜਾਔ ਉਨ ਕਾ ਲਾਥ ਪਕਝ ਕਰ ਭੋਲਤਾ : “ਮੇਰੇ ਸਾਥ ਭੈਠ ਕਰ ਸ਼ਰਾਭ ਪਿਯੋ.” ਉਨ ਕੋ ਕਭੀ ਝਾਂਟਤਾ ਤੋ ਕਭੀ ਝਾਝਤਾ ਮਗਰ ਵੋਲ ਮੌਕਅ ਪਾ ਕਰ ਫ਼ਿਰ ਈਨਕਿਸ਼ਾਫ਼ੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੇ ਲਿਯੇ ਆ ਜਾਯਾ ਕਰਤੇ. ਯੂੰ ਔਕ ਟਵੀਲ ਅਸੈਂ ਵੋਲ ਮੁਝ ਪਰ ਈਨਕਿਸ਼ਾਫ਼ੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਤੇ ਰਫ਼ੇ ਔਰ ਮੈਂ ਸੁਨੀ ਅਨਸੁਨੀ ਕਰਤਾ ਰਫ਼ਾ. ਔਕ ਰੋਝ ਮੇਰੇ ਫ਼ਿਲ ਮੈਂ ਭਯਾਲ ਆਯਾ ਕੇ ਯੇਲ ਭੇਯਾਰੇ ਈਟਨੇ ਅਸੈਂ ਸੇ ਮੁਝ ਪਰ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ੋਂ ਕਰ ਰਫ਼ੇ ਫ਼ੈਂ ਕਯੂੰ ਨ ਆਜ ਈਨ ਕੀ ਭਾਤ ਟਵਜ਼ਯੋਲ ਸੇ ਸੁਨ ਲੀ ਜਾਔ ਫ਼ੇਘੂੰ ਤੋ ਸਫ਼ੀ ਆਭਿਰ ਯੇਲ ਕਫ਼ਤੇ ਕਯਾ ਫ਼ੈਂ ! ਅਭ ਕੀ ਭਾਰ ਈਸਲਾਮੀ ਭਾਈ “ਨੇਕੀ ਕੀ ਫ਼ਾ’ਵਤ” ਫ਼ੇਨੇ ਆਔ ਤੋ ਮੈਂ ਨੇ ਭਫ਼ੀ ਟਵਜ਼ਯੋਲ ਸੇ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (अहमदिया)

उन की दा'वत सुनी अल्लाह की शान के उन की दा'वत मेरे दिल में उतर गई और लब्बैक (या'नी मैं हाज़िर हूँ) कहते हुअे उन के साथ मस्जिद की तरफ़ चल दिया, ग़ालिबन होश संभालने के बा'द जिन्हेंगी में पहली बार मैं मस्जिद के अन्दर दाख़िल हुवा. आशिकाने रसूल की सोहबत और मस्जिद में होने वाले सुन्नतों त्मेरे बयान ने मेरे दिल की कैफ़ियत को बदल कर रख दिया. मैं ने ईस्लामी भाईयों के पास आना ज़ाना शुरुअ कर दिया और फिर सरकारे गौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيمِ के सिक्सिले में मुरीद बन गया. मुरीद तो क्या हुवा मेरे अन्दाज़ बदलते चले गअे. मैं ने सब गुनाहों से तौबा कर ली, शराब पीना छोड दी, नमाज़ी बन गया और येहरा सुन्नत के मुताबिक़ दाढी और सर ईमामा शरीफ़ से "सर सज़" हो गया. लोग मेरी ईस तब्दीली पर हैरान थे. बा'ज़ों को तो यकीन ही नहीं आ रहा था के ईस कदर बिगडा हुवा ईन्सान त्मला कैसे सुधर सकता है ! अेक रोज़ अज्जब युटकुला हुवा के दो अम्बारी नुमायन्दे मेरे करीब से गुज़रे तो अेक ने मेरी तरफ़ ईशारा कर के दूसरे को बताया येह वोही शप्स है ! मेरा तब्दील शुदा हुल्य़ा देख कर दूसरे को यकीन न आया और उस ने मुज से बा काईदा तस्दीक़ की, के क्या आप वाकेई "वोही" हैं ? मेरे हां करने पर वोह दम बभुद रह गया और कहने लगा के अपनी तब्दीली का राज़ बताईये हम अम्बार में आप की ज़बर छापेंगे. मगर मैं ने मन्अ कर दिया. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कतें हैं के मुज जैसा रुस्वाअे ज़माना ईन्सान त्मी सलातो सुन्नत की राह पर चलने लगा और मुआ-शरे का अेक बा ईज़ज़त ईद बन गया.

अल्लाह करम अैसा करे तुज पे ज़हां में

अै दा'वते ईस्लामी तेरी धूम मयी हो

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइरे पाक न पड़े. (१७)

घन्डिरादी कोशिश की ब-र-कत से राहे जन्नत मिल गइ : भीठे भीठे

ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने के ईप्लास व ईस्तिकामत के साथ की गइ ईन्डिरादी कोशिश की कैसी ब-र-कते नसीब हुई और बरबादिये आभिरत के रास्ते पर चलने वाले ईस्लामी भाई को जन्नत में ले जाने वाले रास्ते पर गामजन होने की तौफ़ीक मिल गइ. हर ईस्लामी भाई को याहिये के घबराअे और शरमाअे बिगैर हर तरह के ईस्लामी भाईयो को नेकी की दा'वत पेश किया करें, क्या अजब के आप के यन्द कलिमात किसी की दुन्या व आभिरत संवरने का सभब और आप के लिये सवाबे जारिया का जरीआ बन जाओ. नेकी की दा'वत के सवाब की तो क्या ही बात है !

हर कलिमे के बदले अेक साल की घबादत का सवाब : अेक बार हजरते

सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने बारगाहे भुदा वन्दी एउुजल में अर्ज की : या अल्लाह एउुजल जो अपने भाई को नेकी का हुकम करे और बुराई से रोके उस की जजा क्या है ? अल्लाह तबा-र-क व तआला ने ईशाद इरमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले अेक अेक साल की घबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सजा देने में मुजे हया आती है.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ६४)

मुजे तुम अैसी दो हिस्मत आका हूं सभ को नेकी की दा'वत आका

बना दो मुज को भी नेक भरलत नबिय्ये रहमत शफीअे उम्मत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरहे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ ह्योगे. (अहमद)

अकसर घर मैदाने जंग बने हुअे हैं : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! फ़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! गीबत ईन्तिहाई तबाह कार है, ईसी गीबत के बाईस आज अकसर घर मैदाने कारजार बने हुअे हैं, पानदानों और बिरादरियों में, महल्लों और बाजारों में, अवाम व जवास के अकसर तज्कों में बल्के सुन्नत की फ़िदमत का जजबा रफने वाले मु-तअद्विद अफ़राद के दरमियान भी ईसी गीबत के बाईस नईरत की मन्डूस दीवारें काईम हैं. आह ! मरने के बा'द नाजुक बदन गीबत का होलनाक अजाब कैसे बरदाश्त कर सकेगा ! सुनो ! सुनो !

सीनों से लटके हुअे लोग : सरवरे काअेनात, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्दि वस्समावात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईअ्रत निशान है : मे'राज की रात में ऐसी औरतों और मर्दों के पास से गुजरा जो अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे, तो मैं ने पूछा : ऐ जिअ्रईल ! येह कौन लोग हैं ? अर्ज की : येह मुंह पर ऐब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले हैं और इन के मु-तअद्विक अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ईशाई इरमाता है :

وَيُلِّ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٌ ①

(प ३० अहमदः १)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : पराबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे, पीठ पीछे बदी करे.

(شَعَبُ الْإِيمَانِ ج ٥ ص ٣٠٩ حديث ٦٧٥٠)

तांभे के नापुन : सरकारे द्यो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईअ्रत निशान है : मैं शबे मे'राज ऐसी कौम के पास से गुजरा जो अपने येहरो और सीनों को तांभे के नापुनों से नोय रहे थे. मैं ने पूछा : ऐ जिअ्रईल ! येह कौन लोग हैं ? कडा : येह लोगों का गोश्त भाते (या'नी गीबत करते) थे और उन की ईज्जत पराब करते थे.

(سُنَنِ ابْنِ أَبِي دَاوُدَ ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٨)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भाजिम्)

का गोशत भायेगा (या'नी गीबत करेगा) वोह (या'नी जिस की गीबत की थी) कियामत के दिन उस के करीब लाया जायेगा और उस से कडा जायेगा : “ईसे मुर्दा हालत में (बी) भा जिस तरह ईसे जिन्दा भाता था.” पस वोह उसे भायेगा और तेवरी यढा लेगा (या'नी मुंह बिगाडेगा) और (सप्त तकलीफ़ की वजह से) शोरो गुल भयायेगा.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٤٥٠ حديث ١٦٥٦)

जबान जलने से महकूज रहेगी : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गीबतों और गुनाहों बरी बातों से रिश्ता तोडिये और अल्वाह عَزَّوَجَلَّ की यादों, भीठे भीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना'तों से रिश्ता जोडिये पूब दुरदो सलाम के लिये जबान का इस्ति'माल कीजिये और पूब पूब तिलावते कुरआने पाक कीजिये और सवाब का ढेरो भजाना हासिल कीजिये. युना'ये “इहुल भयान” में येह उदीसे कुदसी है : जिस ने अक बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ को अल उम्ह शरीफ़ के साथ मिला कर (या'नी इस्ति'माल कीजिये) अत्मे सूरह तक) पढा तो तुम गवाह हो जाओ के मैं ने उसे बप्श दिया, उस की तमाम नेकियां कबूल इरमाई और उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये और उस की जबान को हरगिज न जलाडिगा और उस को अजाबे कब्र, अजाबे नार, अजाबे कियामत और बडे भौफ़ से नजात दूंगा. (तफ़सीररुह़ البیان ج ١ ص ٩) मिलाने का मज़ीद वाजेह तरीका मुला-हजा इरमा लीजिये : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ - مِلَّ - حَمْدُ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

रिहाई मुज को मिले काश ! नफ़सो शैतां से तेरे हबीब का देता हूँ वासिता या रब गुनाह बे अदद और जुर्म भी हें ला ता'दाह कर अफ़व सह न सकूंगा कोई सजा या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللّٰهِ ! اسْتَغْفِرُ اللّٰهَ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर ओक दुरुद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये ओक कीरात अज्ज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

नमाज व रोजे की नूरानियत गर्भ : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गीबत की तबाह कारियों में से येह भी है के इस की नुबूसत से ईबादत की नूरानियत रुपसत हो जाती है युनान्हे ओक बार का जिक्र है के दो रोज़ादार जब नमाजे जोहर या अस्र से इरिग हुअे तो (गैब जानने वाले) प्यारे प्यारे आका मक़की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : तुम दोनों वुजू करो और नमाज दोहराओ और रोज़ा पूरा करो और दूसरे दिन इस रोज़े की कज़ा करना. उन्हों ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह क़िस लिये हुवा ? इरमाया : तुम ने हुलां शप्स की गीबत की है. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٥ ص ٣٠٣ حديث ٦٧٢٩)

दो^२ इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गीबत ईबादत के हक में बड़ी तबाह कार है, इस जिम्न में दो इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हज़ा इरमाईये : «1» रोज़ा सिपर है, जब तक उसे इडा न हो. अर्ज़ की गर्भ : क़िस चीज़ से इडेगा ? ईशाद इरमाया : जूट या गीबत से.

«2» रोज़ा इस का नाम नही के पाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो येह है के लगव व बेडूदा बातों से बचा जाअे. (الْمُعْجَمُ الْآ وَسَطُ ج ٣ ص ٢٦٤ حديث ٤٥٣٦)

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٢ ص ٦٧ حديث ١٦١١)

क्या गीबत से रोज़ा टूट जाता है ? : गीबत से रोज़ा वगैरा ईबादत की नूरानियत यली जाती है. युनान्हे दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक़-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सइहा 984 पर सदरुशशरीअह, बहरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : अहतिलाम हुवा या गीबत की तो रोज़ा न गया (دُرِّمُخْتَارُ ج ٣ ص ٤٢١-٤٢٨) अगर्ये गीबत बहुत सप्त कभीरा (गुनाह) है. कुरआने मज्जद में गीबत करने की निस्बत इरमाया : “जैसे अपने मुर्दा भाई का गोशत पाना.” और हदीस में इरमाया : “गीबत जिना से भी सप्त तर है.” (الْمُعْجَمُ الْآ وَسَطُ ج ٥ ص ٦٣ حديث ٦٥٩٠)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिस्कार करते रहेंगे. (उर्हू)

नूरानिय्यत ज़ाती रहती है. सफ़हा 996 पर इरमाते हैं : जूट, युगली, गीबत, गाली देना, बेडूदा (या'नी बे हयाई की) बात, किसी को तकलीफ़ देना के येह यीजें वैसे ली ना ज़ाईज व हराम हैं रोजे में और ज़ियादा हराम और ईन की वजह से रोजे में कराहत आती है.

भौलते पानी और आग के दरमियान दौडने वाला : नबिय्ये आभिरुज़्ज़मान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इब्रत निशान है : यार तरह के जहन्नमी जो के हमीम और जहीम (या'नी भौलते पानी और आग) के दरमियान भागते फिरते वैल व सुभूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे. ईन में से अक शप्स वोह लोग के जो अपना गोशत भाता होगा. जहन्नमी कहेंगे : ईस बढ भप्त को क्या हुवा हमारी तकलीफ़ में इजाफ़ा किये देता है ? कहा जायेगा : येह "बढ भप्त" लोगों का गोशत भाता (या'नी गीबत करता) और युगली करता था. (ذَمُّ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٨٩ رقم ٤٩)

भौके गुनाह हो तो ऐसा ! : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! आह ! जहन्नम का भौइनाक अज़ाब !! गीबत व मा'सियत से कनारा कशी निहायत ही उररी है वरना सप्त सप्त सप्त मुसीबत का सामना हो सकता है. हमें अपने गुनाहों पर नदामत होनी और ईस की वजह से दहशत पानी याहिये. काश ! नसीब हो जाये ! ईस जिन्न में अक डिक्कयत पढिये और तडपिये : अक मर्तबा आबिदीन या'नी नेक बन्दों का अक काइला जिस में हज़रते सय्यिहुना अता وَحَمْدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ली मौजूद थे सफ़र पर यला, कस्ते इबादत के सबभ उन आबिदीन की आंभें अन्दर की तरफ़ हो गई थीं, पाउ सूज गये थे और ईतने कमजोर हो गये थे जैसे के भरभूजे के छिलके ! ऐसा महसूस होता था गोया अभी अभी कभ्रों से निकल कर आये हैं ! राह में अक आबिद बेहोश हो गये और बा वुजूद येह के वोह दिन सप्त सर्दी के थे उन के सर से ब सबभे दहशत पसीना टपकने लगा ! होश आने के बाद लोगों के इस्तिस्कार पर बताया : जब मैं ईस जगह से गुज़रा तो मुझे याद आया के कुलां रोज़ ईस मकाम पर मैं ने गुनाह किया था, ईस जयाल से मेरे दिल में हिसाबे आभिरत की दहशत तारी हो गई और मैं बेहोश हो गया.

(احياء العلوم ج ٤ ص ٢٢٩ مُلَخَّصًا)



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर एक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (مسلم)

किसी की आमियां देखें न मेरी आंभें और करे जवान न औभों का तजकिरा या रब तुलें न उशर में अतार के अमल मौला बिला हिसाब ही तू इस को बपशना या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तूने अपने भाई का गोशत पाया है : उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्उद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : हम बारगाडे रिसालत में हाजिर थे के अेक आदमी उठ कर यला गया. उस के जाने के बा'द अेक शप्स ने उस की गीबत की तो नबिये हाशिर, रसूले साबिरो शाकिर, मडबूबे रब्बे कादिर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुकम सादिर इरमाया : “बिलाल करो !” उस ने अर्ज की : किस वजह से बिलाल कइं में ने गोशत तो नहीं पाया ! तो ईशाद इरमाया : बेशक तूने अपने भाई का गोशत पाया (या'नी गीबत की) है.

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١٠ ص ١٠٢ حديث ١٠٠٩٢)

“गीबत बहुत बडा गुनाह है” के सोलह हुइइ की निरबत से बैठक से उठ कर जाने वाले की गीबत की 16 मिसालें

ईस हदीसे पाक से वोह लोग ईब्रत हासिल करें जे के अपनी मजलिस या'नी बैठक से उठ कर जाने वाले के बारे में ईस तरह की बातें कर के गीबतों का ईरतिकाब करते हैं म-सलन ❀ यार ! वोह गया, जान छूटी ❀ ईस ने बोर कर दिया था ❀ प्वाह म प्वाह बहस कर रहा था ❀ अपनी यलाअे जा रहा था ❀ किसी की नहीं सुनता था ❀ डेढ हुशयार है ❀ चिकनी करता है ❀ बात बात पर हा हा कर के हंसता था ❀ सीधे मुंह बात कहां कर रहा था ❀ जरा वायडा (या'नी लुय्या, टेढा) है



इरमाने मुस्तफा ﷺ : على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

❁ हां भई ऐसों से अल्लाह बयामे ❁ पेट का भी थोडा हलका है ❁ B.B.C है ❁ ढोल है ❁ तुम ने वोह बात जो उस के सामने की ना ईस का अब भूष उंका बजायेगा ❁ हां यार ! आयन्दा येह आये तो बात बदल दिया करो क्यूंके उस के पेट में कोई बात नहीं रहती वगैरा वगैरा.

तू गीबत की आदत छुडा या ईलाही
डो बेजार दिव तोइमतों युग्लियों से

बुरी बैठकों से बया या ईलाही
मुजे नेक बन्दा बना या ईलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ !
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुंह से गोश्त निकला : उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से किसी ने गीबत के बारे में (मा'लूमात के लिये) सुवाल किया तो उम्मुल मुअमिनीन ने इरमाया : अेक दईआ जुमुआ के रोज में सुबह के वक्त उठी, रसूलुल्लाह ﷺ नमाजे इज के लिये तशरीफ ले गये. ईतने में अन्सार की औरतों में से अेक पडोसन मेरे पास आई और कुछ मर्दों और औरतों की गीबत करने लगी, मैं भी गीबत में शरीक हुई और हम दोंनों हंसने लगीं. रसूलुल्लाह ﷺ सुबह की नमाज अदा कर के तशरीफ लाये तो उन की आवाज सुन कर हम दोंनों भामोश हो गईं. आप ने घर के दरवाजे में भडे हो कर अपनी यादरे मुबारक का कोना पकड कर अपनी नाक पर रख लिया और ईशाई इरमाया : उई ! जाओ तुम दोंनों के कर के पानी से (मुंह) साफ करो. मैं ने कै की तो मुंह से बहुत सा गोश्त निकला ! ईसी तरह दूसरी औरत ने भी गोश्त की कै की. मैं (या'नी सय्यि-दतुना उम्मेस-लमह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) ने रसूलुल्लाह ﷺ से गोश्त निकलने की वजह पूछी तो



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह अद अफ्त हो गया. (हॉन)

इरमाया : येह गोशत उस शप्स का है जिस की तुम ने गीबत की है. (تفسیر کُرْ مَنثور ج ۷ ص ۵۷۲)

“औरतें ढोऽभ में जियादा डोंगी” के तेईस दुरुई की निस्बत से औरतों में की जाने वाली गीबतों की 23 भिसालें

ईस हदीसे पाक को ईस्लामी अहनें बार बार सुनें और ईअत से सर धुनें ! अइसोस सट करोड अइसोस जब येह भिल कर बैठती हैं तो उमूमन गैर मौजूद ईस्लामी अहन की भैर नहीं रहती, इन की आपस में गीबत की 23 भिसालें कुछ ईस तरह हैं :

- ❁ वोह तलाकन (या'नी तलाडी) है
- ❁ उस की सवा गज की जभान है
- ❁ अपने भियां को कभी सुभ का सांस नहीं लेने दिया
- ❁ अपने भियां के सामने बहुत जभान यलाती है
- ❁ हां भई ! फिर भियां के हाथों पिटती भी है
- ❁ ज ! ज ! फिर भी ईस की नाक कहां है !
- ❁ लगता है तलाक लेगी तब सीधी बैठेगी
- ❁ उस ने अपनी अहू के नाक में दम कर रखा है
- ❁ अहू से नोकरानी की तरह काम करवाती है
- ❁ अरे भई ! अहू को अपने हाथ से मारती है
- ❁ अहू को रोटी कहां देती है !
- ❁ अहू बेयारी बीमार है तब भी आराम नहीं करने देती
- ❁ पडोसनों से लडती रहती है
- ❁ गिडगिडी बहुत है
- ❁ भियां के हाथ में दो पैसे आ गये हैं तो भिजाज आस्मान पर पडोंय गया है
- ❁ अय्यों पर यीभती बहुत है
- ❁ ऐसी कन्जूस है के यमडी ज़ाअे मगर दमडी न ज़ाअे
- ❁ ખाली गरीब बनती है काई सोना दबा रखा है
- ❁ अय्यी बहुत शरीफ़ है मगर ईस की मां की वजह से बेयारी की मंगनी टूटी है
- ❁ उअ्र काई हो गई है मगर ईस को कहां कोई लेता है
- ❁ बेटी जवान हो गई है मगर घर में नहीं बिठाती
- ❁ दो दो बेटियों की शादी की मगर पडोस में किसी को जूटे मुंह भी दा'वत न दी
- ❁ वोह तो सुसराल में जगड कर मयके आ बैठी है.

शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का दीदार नसीब हो गया : ईस्लामी अहनो ! गीबत से सय्यी तौबा कीजिये और जभान की खिफ़ाजत की तरकीब बनाईये ईस पर ईस्तिकामत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये. दा'वते



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरहे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें बेजता है. (स्)

ईस्लामी का म-दनी काम भी करती रहिये और दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइलों की मुसाफिरा बनने की सआदत भी हासिल इरमाती रहिये. (1) अगर कोई पूछे के म-दनी काइलों में क्या मिलता है? तो मैं कलूंगा के म-दनी काइलों में क्या नहीं मिलता! ईस म-दनी बहार को मुला-हजा इरमाईये और ईशके रसूल से लबरेज हिल का ईसला म-दनी बहार के ईप्तिताम पर दिये हुअे शे'र पर سُبْحَانَ اللَّهِ कड कर मोहरे तस्टीक लगा कर कीजिये. युनान्ये हैदरआबाद (बाबुल ईस्लाम सिन्ध) की अेक ईस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है के हमारे अलाके में दा'वते ईस्लामी की ईस्लामी बहनों का अेक म-दनी काइला तशरीफ लाया. दूसरे दिन अलाकाई दौरा बराअे नेकी की दा'वत के बा'द होने वाले सुन्नतों तरे बयान में मुजे भी शिकत की सआदत मिली, बयान के बा'द जब सलातो सलाम के येह अश्आर पढे गअे, "अै शह-शाहे मदीना الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ" तो जगती आंभों से देभा के शह-शाहे मदीना, सुइरे कलभो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इलों का हार पहने वहां तशरीफ ले आअे हैं. अपने गभ प्वार आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देभ कर मैं भुद पर काबू न रह सकी और मेरी आंभों से आंसूओं की जडी लग गई. फिर वोह ईमान अइरोज मन्जर मेरी निगाहों से ओजल हो गया यहां तक के ईजतिमाअ ईप्तिताम को पड़ोया.

मिल गअे वोह तो फिर कमी क्या है

दोनों आलम को पा लिया हम ने

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1) ईस्लामी बहनों के म-दनी काइले की हर मुसाफिरा के साथ उस के अय्यों के अब्बू या काबिले अे'तिमाद महरम का साथ होना लाजिमी है नीज जिम्मेदारान को अपनी मरजी से म-दनी काइले सकर करवाने की ईजाजत नहीं म-सलन पाकिस्तान की ईस्लामी बहनों के म-दनी काइले के लिये "ईस्लामी बहनों की मजलिस बराअे पाकिस्तान" की मन्जूरी जरूरी है.



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جئنا مكة فوجدنا مكة حراما على من يذبح فيها من غير اذن الله تعالى عليه وآله وسلم
 भूल गया. (جران)

तुम ने अभी अभी गोशत पाया है : अक बार सुलताने दौ जहान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने मकाने आलीशान में तशरीफ इरमा थे जब के अस्खाबे सुफ़्फ़ा मस्जिद में थे और हजरते सय्यिदुना जैद बिन साबित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उन्हें सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अहादीसे मुभा-रका सुना रहे थे, एतने में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में गोशत हाजिर किया गया. अस्खाबे सुफ़्फ़ा हजरते सय्यिदुना जैद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहने लगे के जाओ ! ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास जा कर अर्ज करो के हम ने कई दिनों से गोशत नहीं पाया ताके आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ हमें कुछ गोशत एनायत इरमा दें. जब हजरते सय्यिदुना जैद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ वहां से चले गये तो येह हजरात आपस में कहने लगे : हजरते सय्यिदुना जैद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी उसी तरह सरकारे कामेनात صَلَّى اللهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुलाकात करते हैं जिस तरह हम करते हैं फिर येह कैसे हमें अहादीसे मुभा-रका सुनाते हैं ! जब हजरते सय्यिदुना जैद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दरबार में हाजिर हुये और अस्खाबे सुफ़्फ़ा की दर-प्वास्त पेश की तो गैबदान आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने एर्शाद इरमाया : “जाओ उन से कछो के तुम ने अभी अभी गोशत पाया है !” आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने वापस आ कर उन्हें बताया तो वोह हजरात कसम भा कर कहने लगे के हम ने तो कई दिनों से गोशत नहीं पाया ! फिर हजरते सय्यिदुना जैद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सरकारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बिदमते बा अ-र-कत में हाजिर हुये और दोबारा अर्ज की तो फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने एर्शाद इरमाया : “उन्होंने ने अभी अभी गोशत पाया है !” वोह वापस हुये और अस्खाबे सुफ़्फ़ा को येही जवाब बता दिया. अब की बार वोह सब सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे गोहर बार में हाजिर हो गये. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने एर्शाद इरमाया : “तुम ने अभी अभी अपने भाई का गोशत पाया है और इस का असर तुम्हारे दांतों में मौजूद है, थूक कर देख लो गोशत की सुर्फी को.” उन्होंने ने ऐसा ही किया तो वहां भून ही भून था, सब ने तौबा की, अपनी बात से रुजूअ किया और हजरते सय्यिदुना जैद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (अबू)

मुआज़ी मांगी.

(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٦)

मुद्दरि जोर जहन्नमी : उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है के सरवरे कायेनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने मे'राज की रात जहन्नम में जैसे लोग देभे जो मुद्दरि जा रहे थे ! इस्तिफ़सार इरमाया (या'नी पूछा) : **अै जिब्रिहल !** येह कौन लोग हैं ? अर्ज की : येह वोह हैं जो लोगों का गोशत भाते (या'नी गीबत करते) थे. और अेक शप्स देभा जिस का रंग सुर्भ और आंभें इन्तिहाई नीली थीं तो पूछा : **अै जिब्रिहल !** येह कौन है ? अर्ज की : येह (उजरते सालेह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की) उांटनी की कुंयें (या'नी टांगें) काटने वाला है.

(مُسْنَدُ اِمَامِ اَحْمَدَ بِنِ حَنْبَلٍ ج ٥٠٣ حَدِيْثُ ٢٣٢٤)

मुद्दरि का गोशत जाना आसान नहीं : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! बजाहिर गीबत करना बहुत ही आसान लगता है, मगर याद रभिये ! जहन्नम में मुद्दरि का गोशत जाना कोई आसान बात नहीं, आज जिन्दगी में बकरे का ताजा कय्या गोशत कोई नहीं जा सकता, बल्के अगर पकाने में कसर रह जाती है, नमक मसा-लडा कम होता है या ठन्डा हो जाता है तो बसा अवकात जाने को ज़ नहीं करता तो ज़रा तसव्वुर कीजिये के कय्या गोशत और वोह भी ज़ब्ल शुदा नहीं मुद्दरि, फिर हलाल हैवान का नहीं मरे हुअे इन्सान का ! अैसा गोशत भला कौन जा सकता है ! मज़ीद इस रिवायत में जिस गहरे सुर्भ और नीले रंग के आदमी का जिक्र है : वोह कौमे समूद का सभ से परले द-रजे का शरीर और ખબીसुन्नइस शप्स "कदार बिन सालिफ़" था जिस ने उजरते सय्यिदुना सालेह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की मुकदस उांटनी की मुबारक टांगें काटी थीं.

मुजे गीबतों से बया या इलाही गुनाहों की आदत छुडा या इलाही

पअे मुशिदी दे मुआज़ी जुदाया न दोऊभ में मुज को जला या इलाही



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुर्दे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जहन्नमी बन्दर व पिन्गीर : गीबत की तबाहकारी तो देखिये के मशहूर वलियुल्लाह उजरते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم इरमाते हैं उमें येह बात पड़ोयी है के : गीबत करने वाला जहन्नम में बन्दर की शकल में बदल जायेगा, जूटा दोऊभ में कुत्ते की शकल में बदल जायेगा और हासिद जहन्नम में सुवर की शकल में बदल जायेगा. (تنبيه المغتربين ص 194)

यार⁴ नसीहतें : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सफ़हा 163 ता 164 पर है : उजरते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم इशाद इरमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कर्छ औलियाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام की सोहबत में रहा उन में से हर अेक ने मुजे येही वसियत की के जब लोगों में जाओ तो उन्हें इन यार बातों की नसीहत करना : (1) जो पेट भर कर भायेगा उसे इबादत की लज़्जत नसीब नहीं होगी (2) जो जियादा सोयेगा उस की उम्र में ब-र-कत न होगी (3) जो सिर्फ़ लोगों की भुशनूदी याहेगा वोह रिजाअे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से मायूस हो जायेगा (4) जो गीबत और कुज़ूल गोर्छ जियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं भरेगा.

(مِنْهَاجُ الْعَابِدِينَ (عَرَبِي) ص 98)

गीबत इमान के लिये नुक्सान देह है : मडबूबे रब्बुल इबाद عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशाद इरमाया : गीबत और युगवी इमान को इस तरह काट देती हैं जिस तरह यरवाहा दरभ्त को काट देता है.

(التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهيبُ ج 3 ص 332 حديث 28)



इरमाने मुस्तफ़ी صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुज पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مهارات)

कुफ़्र पर मरने वाले के अजाबे कब्र की कैफ़ियत : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुआ गीबत से عذاب الله ईमान जायेअ हो जाने का भौंफ़ है.

आह ! जिस का ईमान बरबाद हो गया ખુदा की कसम ! वोह कहीं का न रहेगा, जब कुफ़्र पर मरने वाला बढ नसीब आदमी कब्र में पड़ोयेगा तो मुन्कर नकीर के सुवालात के दुरुस्त जवाबात न दे सकेगा और फिर भौंफ़नाक अजाबात का सिख़्सिला शुर्अ हो जायेगा. युनान्ये दा'वते इस्लामी के ईशाअती एदारे मक़्त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल सफ़हा 110 ता 111 पर सदरुशशरीअह बढरुत्तरीकह डज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी رحمة الله القوي इरमाते हैं : उस वक्त अक पुकारने वाला आस्मान से पुकारेगा के येह जूटा है, ईस के लिये आग का बिछोना बिछाओ और आग का लिबास पहनाओ और जहन्नम की तरफ़ अक दरवाजा खोल दो. उस की गरमी और लपट उस को पड़ोयेगी और उस पर अजाब देने के लिये दो इरिशते मुकरर होंगे, जो अन्ये और बहरे होंगे, उन के साथ लोहे का गुर्ज होगा के पहाड पर अगर मारा जाये तो जाक हो जाये, उस डथोडे से उस को मारते रहेंगे. नीज़ सांप और बिच्छू उसे अजाब पड़ोयाते रहेंगे, नीज़ आ'माल अपने मुनासिब शक़ल पर मु-तशक़िक़ल हो कर कुत्ता या भेडिया या और शक़ल के बन कर उस को ईजा पड़ोयायेंगे.

जहन्नम में हमेशा रहने की लार्ज जैज़ कैफ़ियत : कियामत के मैदान में ली काफ़िर पर तरह तरह के अजाबात का सिख़्सिला होगा और बिल आबिर मुंड के बल घसीट कर जहन्नम में जोंक दिया जायेगा जहां उसे हमेशा हमेशा रहना होगा. सदरुशशरीअह, बढरुत्तरीकह डज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी رحمة الله القوي मुप्तलिफ़ दिल ख़िला देने वाले अजाबों का तज़क़िरा करने के बा'द इरमाते हैं : फिर आबिर में कुफ़्फ़ार के लिये येह होगा के उस के कद बराबर आग के सन्दूक में उसे बन्द करेंगे, फिर उस में आग भडकायेंगे और आग का कुफ़ल (या'नी आग का ताला) लगाया जायेगा, फिर येह सन्दूक आग के दूसरे सन्दूक में रखा जायेगा और उन दोनों के दरमियान



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરુંગા. (કુઝાબાલ)

આગ જલાઈ જાએગી ઓર ઉસ મેં ભી આગ કા કુફલ લગાયા જાએગા, ફિર ઈસી તરહ ઉસ કો એક ઓર સન્દૂક મેં રખ કર ઓર આગ કા કુફલ લગા કર આગ મેં ડાલ દિયા જાએગા, તો અબ હર કાફિર યેહ સમઝેગા કે ઈસ કે સિવા અબ કોઈ આગ મેં ન રહા, ઓર યેહ અઝાબ બાલાએ અઝાબ હૈ ઓર અબ હમેશા ઉસ કે લિયે અઝાબ હૈ. જબ સબ જન્નતી જન્નત મેં દાખિલ હો લેંગે ઓર જહન્નમ મેં સિર્ફ વોહી રહ જાએંગે જિન કો હમેશા કે લિયે ઉસ મેં રહના હૈ, ઉસ વક્ત જન્નત વ દોઝખ કે દરમિયાન મૌત કો મેંઢે કી તરહ લા કર ખડા કરેંગે, ફિર મુનાદી (પુકારને વાલા) જન્નત વાલોં કો પુકારેગા : વોહ ડરતે હુએ ઝાંકેંગે કે કહીં એસા ન હો કે યહાં સે નિકલને કા હુકમ હો, ફિર જહન્નમિયોં કો પુકારેગા વોહ ખુશ હોતે હુએ ઝાંકેંગે કે શાયદ ઈસ મુસીબત સે રિહાઈ હો જાએ, ફિર ઉન સબ સે પૂછેગા કે ઈસે પહચાનતે હો ? સબ કહેંગે : હાં ! યેહ મૌત હૈ. વોહ ઝબ્હ કર દી જાએગી ઓર કહેગા : એ અહલે જન્નત ! હમેશગી હૈ, અબ મરના નહીં ઓર એ અહલે નાર ! હમેશગી હૈ, અબ મૌત નહીં, ઉસ વક્ત ઉન (યા'ની અહલે જન્નત) કે લિયે ખુશી પર ખુશી હૈ ઓર ઈન (યા'ની દોઝખિયોં) કે લિયે ગમ બાલાએ ગમ. نَسَأُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّينِ وَالْدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. (યા'ની હમ અલ્લાહ કે લિયે ગમ બાલાએ ગમ. نَسَأُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّينِ وَالْدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ.)

મોઝાઝા સે મુઆફી કા સુવાલ કરતે હેં ઓર દીન વ દુન્યા ઓર આખિરત મેં આફિયત માંગતે હેં) (બહારે શરીઅત, જિલ્દ અવ્વલ, સ. 170, 171)

अतार हें ईमां की डिफ़ाउत का सुवाली

ખાલી નહીં જાએગા યેહ દરબારે નબી સે

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُؤَاجِرَةٌ عَلَى رَأْسِ الْبَيْتِ كَمَا كُنْتُمْ تَفْعَلُونَ يَوْمَئِذٍ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (البقرة)

નફલી ઇબાદત ન કરને વાલે સે નફરત કરના કેસા ? : હઝરતે સય્યિદુના આમિર બિન વાસિલા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મરવી હૈ કે મહબૂબે રબ્બે કાએનાત, શહન્શાહે મૌજૂદાત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી (ઝાહિરી) મુબારક હયાત મેં એક સાહિબ કિસી કૌમ કે પાસ સે ગુઝરે તો ઉન્હોં ને ઉન્હેં સલામ કિયા, ઉન લોગોં ને સલામ કા જવાબ દિયા. જબ વોહ સાહિબ વહાં સે તશરીફ લે ગએ તો ઉન મેં સે એક શખ્સ ને ઉન સાહિબ કે બારે મેં કહા : “મેં અલ્લાહ તઆલા કે લિયે ઇસ શખ્સ સે નફરત કરતા હૂં.” જબ ઉન સાહિબ કો ઇસ બાત કી ખબર પહોંચી તો ઉન્હોં ને રસૂલુલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી ખિદમત મેં હાઝિર હો કર સારા માજરા અર્ઝ કિયા ઔર ફરિયાદ કી કે આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ ઉન કો બુલા કર દરયાફત ફરમાઈયે કે મુઝ સે ક્યૂં નફરત કરતે હૈં? નબિય્યે અકરમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે આદમ વ બની આદમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઉસે બુલવા કર પૂછા તો ઉન્હોં ને ઇકરાર કિયા કે મેં ને યેહ બાત કહી હૈ. ઇશાદ ફરમાયા : તુમ ઇસ સે ક્યૂં નફરત કરતે હો? અર્ઝ કી : મેં ઇન સાહિબ કા પડોસી હૂં ઔર મેં ઇન કી ભલાઈ કા ખ્વાહાં હૂં, ખુદા عَزَّ وَجَلَّ કી કસમ ! મેં ને કભી ભી ફર્ઝ નમાઝ કે ઇલાવા ઇન્હેં (નફલ) નમાઝ પઢતે હુએ નહીં દેખા, જબ કે ફર્ઝ નમાઝ તો હર નેક વ બદ પઢતા હૈ. ફરિયાદી સાહિબ ને અર્ઝ કી : યા રસૂલલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ ! ઇન સે પૂછિયે, કયા ઇન્હોં ને મુઝે ફર્ઝ નમાઝ મેં તાખીર કરતે હુએ દેખા હૈ? યા મેં ને વુઝૂ મેં કોઈ કોતાહી કી હૈ? યા રુકૂઅ વ સુજૂદ મેં કોઈ કમી કી હૈ? આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ ને પૂછા તો ઉન્હોં ને ઇન્કાર કરતે હુએ અર્ઝ કી : મેં ને ઇસ મેં ઐસી કોઈ બાત નહીં દેખી. ફિર ઉસ ને મઝીદ અર્ઝ કી : અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી કસમ ! મેં ને ઇન સાહિબ કો ર-મઝાનુલ મુબારક કે ઇલાવા કભી (નફલી) રોઝે રખતે હુએ નહીં દેખા, ઇસ મહીને (યા'ની માહે ર-મઝાનુલ મુબારક) કા રોઝા તો હર નેક વ બદ રખતા હૈ. યેહ સુન કર ફરિયાદી ને અર્ઝ કી : યા રસૂલલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ ! ઇન સે પૂછિયે, કયા મેં ને કભી ર-મઝાનુલ મુબારક મેં રોઝા છોડા હૈ? યા રોઝે કે હક મેં કોઈ કમી કી હૈ? પૂછને પર ઉન્હોં ને અર્ઝ કી : નહીં. ફિર ઉસ ને કહા : અલ્લાહ તઆલા કી કસમ ! મેં ને નહીં દેખા કે ઇન સાહિબ ને ઝકાત કે ઇલાવા



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (मुरान)

किसी मिसकीन या साधल को कुछ दिया हो या अल्लाह तआला के रास्ते में भर्य किया हो, जकात तो हर नेक व बढ अढा करता है. इरियादी ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इन से पूछिये, क्या इन्हों ने मुजे जकात की अढाअेगी में कोताही करते हुअे देभा है ? या मैं ने कभी इस में टालम टोल से काम लिया है ? दरयाफ़्त करने पर उन्हों ने अर्ज की : नहीं. हुजूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस नफ़रत करने वाले से इरमाया : उठ जाओ, शायद येह तुम से बेहतर हो.

(मुसन्द इमाम अहमद ज ९ व २१० حديث २३१६६)

“गीबत मत करो” के नव हुइ की निस्बत से मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में गीबत की 9 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! जिस तरह इराइज व वाजिबात की कोताही करने वालों की कोताहियों का बिला इजाजते शर-ई पीछे से तजकिरा गीबत है, मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में भी बुराई बयान करने के तौर पर तजकिरा करने का येही हुकम है. क्यूंके येह भी इजाअे मुस्लिम का भाईस है. मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में सुस्ती करने वालों की गीबतों की 9 मिसालें मुला-हज्ज हों : ❀ वोह तहज्जुद नहीं पढता ❀ उस ने जिन्दगी में कभी आशूरा का रोजा नहीं रखा ❀ इशराक याशत नहीं पढता ❀ वोह अव्वाबीन क्या पढेगा ! उस को येह तो पूछो के येह नवाफ़िल किस वक्त पढे जाते हैं ❀ वोह तबरुक कड कर नियाज तो भा लेता है मगर इस के लिये यन्दा कभी नहीं देता ❀ मेरा सेठ जरा वायडा (या'नी टेढा) है तीन दिन के म-दनी काफ़िले के लिये छुट्टी ही नहीं देता ❀ मैं ने उस से कहा भी के सभ पढ रहे हैं तुम भी सलातुत्तौबा पढ लो मगर उस ने नहीं पढी ❀ कुरआन प्वानी में सभ से आभिर में पछोयता है शायद इस को कुरआन पढना नहीं आता ❀ वोह ना'त प्वानी में ताभीर से बल्के नियाज के वक्त पछोयता है.

गीबत के अन्दाज : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 413 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “उयूनुल हिक्मायात” हिस्सअे हुवुम सफ़हा 313 पर



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर दस भरतभा दुरदे पाक पढा अद्लाह उर उर सो रडभते नाजिल फ़रमाता है. (طرائف)

है डरते सय्यिदुना छारिस मुहासिबी عليه رحمة الله القوی फ़रमाते हैं : गीबत से बय !
 बेशक वोह औसा अजब शर (या'नी बुराई) है जिसे ईन्सान भुद आगे बढ कर छारिस
 करता है. तेरा उस थीज के बारे में क्या जयाल है जो तुजे अहसान फ़राभोशी पर उभारे,
 तेरी ईतनी नेकियां छीन कर उन को दे दे जिन की तूने गीबत की है यहां तक के वोह राजी
 हो जाअें क्यूंके बरोजे कियामत दिरहमो दीनार काम नहीं आअेंगे. बेशक ! जितना तू
 मुसल्मानों की ईज्जत को नुकसान पड़ोयाअेगा उतनी ही भिक्दार में तेरा दीन तुज से ले
 लिया जाअेगा, लिहाजा गीबत से बय, गीबत के मम्बअ (या'नी निकलने की जगह)
 और ईस के अस्बाब को पहचान, के तुज पर गीबत किन किन जगहों से आती है.
 मजीद फ़रमाते हैं : तवज्जोह से सुन ! बेशक बा'ज ज़हिल व नादान ईस अन्दाज पर
 भी गीबत में मुभला होते हैं के गुनहगारों पर ज्वाह म ज्वाह गुस्से होते और उन से
 हसद और बद गुमानी करते हैं फिर शैतान के बहकावे में आ कर **إِنَّمَا إِلَهُ الْكَافِرِينَ** उस गुस्से
 को "दीनी गैरत" का नाम देते और येह कहते सुनाई देते हैं के मैं अपनी जात के लिये
 गुस्सा नहीं कर रहा मैं तो दीन के नुकसान की वजह से हुलां को बुरा भला कहता या डांट
 उपट करता हूं ! येह औसी बुराईयां हैं जो के अकल मन्हों से पोशीदा नहीं. बा'ज लोग
 अहले ईल्म होने के बा वुजूद शैतान के धोके में आ कर जब किसी की बुराई बयान करते
 हैं तो कहते हैं : "हम तो उस की नसीहत और ईस्लाह के लिये औसा कर रहे हैं, हम तो
 उस के भैर ज्वाह और भलाई याहने वाले हैं." हावांके हकीकत में औसा नहीं होता
 क्यूंके अगर वाकेई वोह भैर (या'नी भलाई) के तालिब होते तो कभी गीबत जैसी
 आइत में न पडते और उन की नसीहत उन के लिये गीबत पर मुआविन (मददगार) न
 होती. (बड़े जिस ने ग-लती की है बराहे रास्त उस को समजाते या ईस्लाह का शर-ई तरीका
 ईप्तिहार करते, पीठ पीछे गीबत करते फिरना येह कौन सा ईस्लाह का तरीका है !)

तवज्जोह से सुन ! बसा अवकात नेक परहेजगार लोग भी डैरत का ईजहार
 करने के अन्दाज में अपने मुसल्मान भाई की गीबत कर बैठते हैं. रहे उस्ताद,
 सरदार और अइसर वगैरा तो बा'ज दइआ वोह शइकत व रहुम टिली के तरीके से
 गीबत की गहरी भाई में जा गिरते हैं. म-सलन अपने शागिर्द या मा तह्त के बारे



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

में कहते हैं : “अफ़सोस ! वोह हुलां हुलां गलत काम (म-सलन बुरी सोहबत या नशे की नुहूसत) में पड गया, काश ! बेयारा हुलां बुराई (म-सलन हेरोईन पीने) का मुर-तकिब न होता !” दर हकीकत वोह अफ़सोस नहीं कर रहे होते ईस तरह की बातें कर के ईस बहाने वोह उस की पोलें भोल डालते हैं मगर समझते येह हैं के हम उस से महब्बत और हमददी की वजह से औसा कह रहे हैं डालांके वोह गीबत के गुनाह में पड चुके होते हैं, वरना अपने मा तह्त या शागिर्ट का क्या भौफ़ ? पीछे से ईस तरह गीबत करने के बजाअे बराहे रास्त उस को समझा कर सख्खी महब्बत का सुभूत दे सकते थे. भा'ज अवकात अेक शप्स किसी की बुराई को दूसरों के सामने जाहिर करते हुअे कहता है : “मैं ने उस की बुराई पर तुम को ईस लिये मुत्तलअ किया है ताके तुम अपने भाई के लिये भुसूसी हुआ करो.” अपने गुमान में येह ईसे हमददी व शफ़कत समझता है लेकिन हकीकत में येह गीबत कर रहा होता है. अल्लाहु रलमान لَمَّا رَأَىٰ فِيهِمْ شَيْطَانَ مِمَّنْ خَلَقَ لَهُمْ مِنْ تَحْتِ الْعَرْشِ الْأَعْتَابِ قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ (अल-अक़ास ३१) अल्लाह ने देखा कि शैतान के भुफ़या वारों से बयाअे. हम अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त की बारगाहे रलमत में हुआ करते हैं के वोह मुसल्मानों की गीबत से हमारी डिफ़ाजत इरमाअे.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(عِيُونُ الْحِكَايَاتِ (عَرَبِي) ص ٣٨١ مُلَخَّصًا)

अफ़सोस मरज बढता ही जाता है गुनाहों का

डो नज़रे शिफ़ा अर्र औ सरकारे मदीना हे

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ना बालिग की गीबत : जिस तरह बय्ये के साथ जूट बोलने की ईजाजत नहीं ईसी तरह उस की गीबत की भी मुमा-न-अत है. ज्वाह अेक ही दिन का बय्या डो, बिला



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शापस की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइइहे पाक न पड़े. (76)

મસ્લ-હતે શર-ઈ ઉસ કી ભી બુરાઈ બયાન ન કી જાએ. માં બાપ ઓર ઘર કે દીગર અફરાદ કે લિયે લમ્હએ ફિક્કિયા હૈ ઉન કો ચાહિયે કે બિલા ઝરરત અપને બચ્ચોં કો પીછે સે (ઔર મુંહ પર ભી) ઝિદ્દી, શરારતી, માં બાપ કા ના ફરમાન વગૈરા ન કહા કરે.

કિસ બચ્ચે કી ગીબત જાઘઝ હૈ ઔર કિસ કી ના જાઘઝ ? : હઝરતે

અલ્લામા અબ્દુલ હય્ય લખ્નવી رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي فرમાते हैं : હઝરતે અલ્લામા સય્યિદુના ઇબ્ને આબિદીન શામી كَسْبُ السَّامِي ने ઇમામ ઇબ્ને હજર رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْبَر سے નક્લ કિયા

હૈ : “જિસ તરહ બાલિગ કી ગીબત હરામ હૈ ઉસી તરહ ના બાલિગ ઔર મજનૂન (યા'ની પાગલ) કી ગીબત ભી હરામ હૈ.” (ردُّ الْمُحْتَرَج ٦ ص ١٧٦) લેકિન રાકિમુલ હુરૂફ

(યા'ની મૌલાના અબ્દુલ હય્ય સાહિબ) કે નઝદીક તફ્સીલ બેહતર હૈ : «1» ઐસા ના બાલિગ બચ્ચા જો ફિલ જુમ્લા (યા'ની થોડી બહુત) સમઝ રખતા હો કે અપની તા'રીફ પર ખુશ ઔર અપની બુરાઈ સે નાખુશ હોતા હો જૈસા કે મા'તૂહ (યા'ની આધા પાગલ ભી અપની તા'રીફ ઔર મઝમ્મત કી સમઝ રખતા હૈ) તો ઐસે ના બાલિગ (બચ્ચે) કી

ગીબત જાઈઝ નહીં ઇસી તરહ નીમ પાગલ કી ભી ના જાઈઝ હૈ «2» ઐસે ના સમઝ બચ્ચે (મ-સલન દૂધ પીતે બચ્ચે) ઔર પાગલ કી ભી ગીબત જાઈઝ નહીં જિન કા કોઈ વાલી વારિસ હૈ, બેશક વોહ બચ્ચા યા પાગલ અપની તા'રીફ યા બુરાઈ સમઝને કી તમીઝ નહીં રખતા તાહમ ઉન કે ઐબ બયાન કરને સે ઉન કે માં બાપ વગૈરા કો બુરા

લગેગા «3» ઐસા લા વારિસ બચ્ચા યા લા વારિસ પાગલ જો અપની તા'રીફ વ ગીબત સે ખુશ ઔર નાખુશ હોને કી સલાહિચ્ચત નહીં રખતા ઉસ કી ગીબત જાઈઝ હૈ મગર ઝબાન કો ઐસોં કી ગીબત સે ભી રોકના હી બેહતર હૈ (ક્યૂંકે બા'ઝ ફુ-કહાએ કિરામ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ने मुत्લकन या'नी એક દિન કે બચ્ચે ઔર મુકમ્મલ પાગલ કી ગીબત

કો ભી હરામ કરાર દિયા હૈ) (માખૂઝ અઝ : ગીબત કયા હૈ, સ. 20, 21)

છોટે બચ્ચે કી ગીબત કી 17 મિસાલેં : બહર હાલ પાગલ હો યા સમઝદાર, બાલિગ હો યા ના બાલિગ, બૂઢા હો યા દૂધ પીતા બચ્ચા હર એક કી ગીબત સે બચના ચાહિયે, બચ્ચોં કી ગીબતોં કી બે શુમાર મિસાલેં હો સકતી હૈં, ક્યૂંકે ઇન કી ગીબત કે



ફરમાને મુસ્તફા : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अमाल)

गुनाह होने की तरफ बहुत कम लोगों की तवज्जोह है, जो मुंह में आया बोल दिया जाता है. यहां नुमूनतन सिर्फ 17 भिसालें पेश की जाती हैं जो कई सूरतों में गीबत में दाखिल हो सकती हैं :

- ❁ बिस्तर गन्दा कर देता है
- ❁ धतना बडा हो गया मगर तमीज नहीं आई
- ❁ धंस को जूट की आदत पड गई है
- ❁ छोटी बहन को नोयता है
- ❁ छोटे मुन्ने को गोद में लो तो बडा मुन्ना डसद करता है
- ❁ दोनों मुन्ने अेक दूसरे की युग्धियां भाते रहते हैं
- ❁ छोटा पढाई में बहुत ज़हीन है मगर बडा 8 साल का हुवा अभी तक कुन्द जेहन है
- ❁ मां को बहुत तंग करता है
- ❁ मुन्नी रात को बहुत खीबती है न सोती है न किसी को सोने देती है
- ❁ मुन्ने ने गुस्से में लात मार कर पानी का कूलर उलट दिया
- ❁ बहुत खिडखिडा हो गया है
- ❁ बात बात पर रूठ जाता है
- ❁ रोजाना पाने के वक्त जगडता है
- ❁ पढने में कमजोर है
- ❁ बडी बख्शी ने छोटी वाली को बाल पींच कर गिरा दिया
- ❁ बस लडता ही रहता है
- ❁ सुब्ह उठा उठा कर थक जाते हैं मगर जवाब नहीं देता वगैरा.

बख्यों को गीबत मत करने दीजिये : उमूमन बख्ये अपने छोटे बहन भाईयों और दीगर घर वालों की अपनी तुतली ज़बान में या ईशारों से गीबतें करते रहते हैं और घर वाले हंस हंस कर दाद देते हैं, कभी किसी को लंगडता देप लेते हैं तो फुद ली उस की नकल उतारते हुअे लंगडा कर खलते हैं और घर वालों से दाद वुसूल करते हैं डालांडे किसी मुअय्यन व मा'लूम मा'जूर की धंस तरह की नककाली ली गीबत है. बाप जब कामकाज से शाम को लौटता है तो आम तौर पर बख्या या बख्शी दिन भर की "कारकईगी" सुनाते हैं, धंस से लुत्फ तो बहुत आता है मगर उस कारकईगी में गीबतों की ली अख्ठी फासी भरमार होती है ! बख्यों को तो गुनाह नहीं होता मगर औलाद की सहीह तरबियत करना यूंके वालिदैन की जिम्मेदारी है और यूं बख्यों की ज़बानी गीबतें सुनने से औलाद की गलत तरबियत होती है लिहाजा औलाद की गलत तरबियत का वबाल मां बाप के सर आ जाता है, यकीनन बख्यों के गीबत करने पर हंस पडने से उन की डौसला अज़ाई होती है और वोड गोया धंस तरह गीबत की तरबियत डसिल करते रहते हैं और बेयारे बालिग होने के बा'द अक्सर गीबत के गुनाह में पक्के हो युके होते हैं. लिहाजा जब ली बख्या गीबत करे, युगली फाअे या जूट बोले तो उस की



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा. (अनसरी)

तुतली ज़बान से महुज़ या'नी लुर्क अन्दोळ छोते हुअे शैतान के बहकावे में आ कर हंसा मत कीजिये, जैसे मौकअ पर अेक दम सन्धदा छो ज़ाँये उस बात पर उस की हौसला शिकनी कीजिये और मुनासिब अन्दाज़ में उस को समज़ाँये, जब बार बार उस को समज़ाते रहेंगे और उस को घर का कोँ भी इँद गीबत वगैरा पर उसे दाद नहीं देगा तो पुद भी गीबत वगैरा सुनने की आइत व गुनाहों से बये रहेंगे और मुन्ना भी बडा छो कर ۞ ۞ ۞ नेक अन्दा अनेगा और गीबत वगैरा से नइरत रहेगा.

बय्यों की इरियाद रसी कीजिये : हां अगर मुन्ना महुज़ बोलने की आतिर नहीं बोल रहा बल्के आप से इरियाद कर के हंसाइ तलब कर रहा है तो बेशक उस की इरियाद सुनिये और हंमदाद कीजिये. म-सलन मुन्ना कलने लगा के मुन्नी ने मेरा भिलौना छीन कर कहीं छुपा दिया है तो येह गीबत नहीं, क्यूँके मुन्ना मां बाप से इरियाद नहीं करेगा तो किस से करेगा ! लिहाज़ा आप मुन्नी से उस का भिलौना दिला दीजिये. अब अगर भिलौना मिल जाने के बा'द मुन्ना हसी बात को मुन्नी की गैर मौजू-दगी में म-सलन अपनी अम्मी से जिक करता है के "मुन्नी ने मेरा भिलौना छीन कर छुपा दिया था तो अब्बू ने मुन्नी को अंट पिलाई और मुझे मेरा भिलौना वापस दिलाया" तो येह बहर डाल गीबत है अगर ये बय्यों को हंस का गुनाह न छो. उमूमन बय्ये जिन लोगों से मानूस छोते हैं उन को इरियाद करते रहते हैं तो अगर किसी से मज़कूरा मिसाल की मानिन्द इरियाद की और वोह इरियाद रसी या'नी हंमदाद नहीं कर सकता. तो अब गीबत पर मब्नी इरियाद न सुने बल्के हत्तल हंमकान अखे अन्दाज़ में बय्ये को टाल दे.

बय्यों से सादिर होने वाली गीबत की 22 मिसालें

❁ मेरा भिलौना तोड दिया है ❁ मेरी टोँड़ी छीन कर जा ली ❁ मेरी आइस्कीम गिरा दी ❁ मुझे पीछे से "छाँ" कर के डरा देता है, शरीर कहीं का ❁ मुज पर बिल्ली का बय्या डाल दिया ❁ मुझे "गन्दा बय्या" कह कर थिडाता है ❁ मेरी नोटबुक इंड दी ❁ मुझे धक्का दे कर गिरा दिया ❁ मेरे कपडे गन्दे कर दिये ❁ अपनी बाबा साईकिल मेरे पाँउ पर थढा दी ❁ अपने कपडे गन्दे कर देता है ❁ वोह गन्दा बय्या है ❁ अम्मी



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़ि़रत है. (भा. ५)

के पास मेरी युग्लियां लगाता है ❀ जूट बोल कर उस्ताद से मुझे मार भिलाई थी ❀ अम्मी मद्रसे का बोलती है तो रोता है ❀ मुन्नी अम्मी को मारती है ❀ उस्ताद ने उस को कल “मुर्गा” बनाया था ❀ छतना बडा हो गया मगर निप्पल यूसता है ❀ हर वक्त उस की नाक बडती रहती है ❀ रोज रोज पेन्सिल गुमा देता है ❀ उस दिन अब्बू की जेब से पैसे युरा लिये थे ❀ उस दिन अम्मी ने उस की ખूब पिटाई लगाई थी.

बच्चों को मूटे बहलावे मत दीजिये : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 सङ्घात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” खिस्सा 16 सङ्घा 159 ता 160 पर है : अबू दावूद व बैहकी ने अब्दुल्लाह बिन आमिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की, कहते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ : रसूलुल्लाह ﷺ उमारे मकान में तशरीफ़ इरमा थे. मेरी मां ने मुझे बुलाया के आओ तुम्हें दूंगी. हुजूर (ﷺ) ने इरमाया : क्या खीज देने का ईरादा है ? उन्हीं ने कहा, ખજूर दूंगी. ईशाद इरमाया : “अगर तू कुछ नहीं देती तो येह तेरे जिम्मे जूट लिखा जाता.”

(سُنَن ابوداؤد ج ٤ ص ٣٨٧ حديث ٤٩٩١)

देखा आप ने ! बच्चों के साथ भी जूट बोलने की ईजाजत नहीं, अइसोस ! आज कल बच्चों को बहलाने के लिये अक्सर लोग जूट मूट ईस तरह कह दिया करते हैं के तुम्हारे लिये खिलौने लाअंगे, हवाई जहाज ला कर देंगे वगैरा. ईसी तरह उराने के लिये अक्सर माअें भी जूट बोल दिया करती हैं के वोह खिल्ली आई, कुत्ता आया वगैरा. जिन लोगों ने अइसा किया उन को याहिये के सखी तौबा करें.

गूंगा कादियानी कैसे मुसल्मान हुवा : म-दनी मुन्नों की गीबतों से ખुद को बयाने और उन का भी गीबतों से बयने का जेहन बनाने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी काइलों के मुसाफ़िर बनिये, सुन्नतों तरे ईजातिमाआत में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये, म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अपनी जिन्दगी गुजारिये. आप की तरगीब के लिये अक अनोभी म-दनी बहार पेश की जाती है, गौर से सुनिये और



इरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुज पर अेक दुरद शरीफ पढता है अल्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज्ज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अज्ज)

जूमिये : युनान्चे सूबअे पंजाब के शहर **भुशाब** में अेक गूंगे बहरे इस्लामी भाई जो द्वा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल की ब-र-कत से गुनालों से ताईब हो कर नेकियों की राह पर गामजन हो चुके थे. उन के घर के करीब अेक गूंगे बहरे शप्स की रिहाईश थी जो कादियानी था. येह "गूंगे इस्लामी भाई" उस गूंगे कादियानी से मुलाकात कर के ईशारों की ज्बान में ईन्फिरादी कोशिश करते हुअे राहे हक की द्वा'वत पेश किया करते और उसे समजाते के दीने इस्लाम ही वोह वाहिद मजहब है जिस में दुन्या व आभिरत की भलाईयां पोशीदा हैं और हकीकी कल्पी सुकून ली ईसी मजहबे हक की कबूलियत में है. वोह गूंगा कादियानी द्वा'वते इस्लामी के गूंगे मुबद्विग की पुर तासीर म-दनी बातों में दिल्दयस्पी तो लेता मगर कोई वाजेह जवाब न देता. वोह (गूंगा कादियानी) कुछ दुन्यवी मसाईल की वजह से बहुत परेशान था और सुकून की तलाश में था. ईसी दौरान द्वा'वते इस्लामी के गूंगे मुबद्विग ने उसे द्वा'वते इस्लामी के बैनल अक्वामी तीन रोजा सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में शिर्कत की द्वा'वत दी, जिसे उस ने कबूल कर लिया. जब वोह "गूंगा कादियानी" मदी-नतुल औदिया (मुलतान शरीफ) द्वा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में शिर्कत के लिये सहराअे मदीना पहाँया तो हर तरफ सज्ज सज्ज ईमामा शरीफ की बहारें और दुरदो सलाम की सदाअें थीं, अल गरज अेक अज्जब इह परवर समां था. येह मनाजिर देष कर वोह गूंगा कादियानी ईस म-दनी माडोल से ईस कदर मु-तअरसिर हुवा के उस ने वही ईजतिमाअ में अपने बातिल मजहब कादियानियत से तौबा की और कलिमा पढ कर मुसल्मान हो गया और गौसे पाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की गुलामी का पढा अपने गले में डाल कर "कादिरी र-जवी" ली बन गया.

दौलते दुन्या से बे रगबत मुजे कर दीजिये मेरी डायत से मुजे जईद न करना मालदार
असअे मडशर में आका लाज रचना आप ही दामने अत्तार है सरकार ! बेहद दागदार

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहगा फिरिश्ते उस के विधे ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अः)

मुसल्मान की बे इम्ज़ती कबीरा गुनाह है : रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाहक बे इम्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है. (سُنَنِ ابُو داوُد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٧)

पुदा एरुवजल व मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ईजा देने वाला : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! लकीकत येह है के अक मुसल्मान अपने दूसरे मुसल्मान भाई की इम्ज़त का मुहाफ़िज़ है मगर अइसोस ! ऐसा नाज़ुक दौरे आ गया है के अब अकसर मुसल्मान ही दूसरे मुसल्मान भाई की इम्ज़त के पीछे पडा हुवा है ज़े बर कर गीबतें कर रहा है और युग्लियां भा रहा है, बिवा तकल्लुफ़ तोइमतें लगा रहा है, बिवा वजह दिल दुखा रहा है, दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "जुल्म का अन्जाम" सइहा 19 ता 20 पर है : हुकूकुल ईबाह का मुआ-मला बडा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौरे दौरे है, अवाम तो कुज़ा खवास कडलाने वाले भी उमूमन ईस की तरफ़ से गाइल रहते हैं. गुस्से का मरज़ आम है ईस की वजह से अकसर "खवास" भी लोगों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और ईस की तरफ़ उन की बिल्कुल तवज्जुह नहीं ह्योती के किसी मुसल्मान की बिवा वजहे शर-ई दिल आज़ारी गुनाह व डराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. मेरे आका आ'ला उजरत एहिे इतावा र-जविय्या शरीफ़ जिल्द 24 सइहा 342 में त-बरानी शरीफ़ के हवाले से नक़ल करते हैं : सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इब्रत निशान है : (يا'नी) जिस ने (बिवा वजहे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईजा दी उस ने मुझे ईजा दी और जिस ने मुझे ईजा दी उस ने अद्लाह एरुवजल को ईजा दी. (٣٦٠٧ حديث ٣٨٧ ص ٢ وَسَطُ ج ٢) अद्लाह एरुवजल व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ईजा देने वालों के बारे में अद्लाह एरुवजल पारह 22 सू-रतुल अइज़ाब आयत 57 में ईशा'द इरमाता है :



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अदलाह (उस पर दस रउमतें बेजता है. (س)

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ
لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾ (پ ٢٢ الاحزاب ٥٧)

तर-ज-मअे कऱुल ँमान : बेशक जे ँजा देते हैं अदलाह (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल को उन पर अदलाह (عَزَّوَجَلَّ) की ला'नत है दुन्या व आभिरत में और अदलाह (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के लिये जिल्लत का अजाब तय्यार कर रभा है.

मोमिन की हुरमत का'बे से गट कर है : सु-नने ँबने माजह में है :

पा-तमुल मुर-सलीन, रहु-मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने का'बअे मुअज्जमा को मुभातब कर के ँशा'द इरमाया : मोमिन की हुरमत तुज से जियादा है. (سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٣١٩ حديث ٣٩٣٢)

कामिल मुसल्मान की ता'रीफ : सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे

मक्कअे मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अ-जमत निशान है : يا'नी मुसल्मान वोह है के उस के हाथ और जभान से दूसरे मुसल्मान मडकूज रहें. (صَحِيحُ بَخَّارِي ج ١ ص ١٥٠ حديث ١٠)

दाघरअे ँमान से निकल जाने का पतरा : मीठे मीठे ँस्लामी भा'यो !

कामिल मुसल्मान वोही है जे जभान से किसी को गाली न दे, बिला ँजजते शर-ँ किसी को बुरा न कहे, किसी की गीबत न करे, किसी को बे वुकूफ न कहे, किसी के अैब को न खोले, किसी का भेद न खोले और हाथ से किसी को तकलीफ न दे, किसी की दिल आजारी न करे, बिला ँजजते शर-ँ किसी को न मारे, किसी को तन्कीदे बे ज़ा का निशाना न बनाअे, जे शप्स अैसा न हुवा बल्के लोगों को उस ने हर तरह की तकलीफ दी, हाथ से मारा, आंख से किसी की तरफ ँजा देने वाले अन्दाज से ँशारा किया, हर शप्स उस से तंग व बेजार रहा तो वोह शप्स कामिल मुसल्मान नहीं है, ँमान उस के दिल में मजबूत नहीं है,



इरमाने मुस्तकी : *عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ* शो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

धन्तिकाल के वक्त अह्तिमाल है के *مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ* शैतान गालिब आ जाये और हर तरह से उसे वस्वसे डाले और *ثُمَّ مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ* वोह शप्स दाँरअे इमान से निकल जाये और अल्वाह *عَزَّوَجَلَّ* न करे उस का कदम सिराते मुस्तकीम से किसल जाये और वोह जहन्नम की राह इप्तिचार करे, जन्नत से महरुम रहे. ब पिलाइ इस के जिस का इमान कामिल हो, इस्लाम की सखी महब्बत उस के दिल को हासिल हो, कामिल मुसल्मानों वाले आ'माल व अइआल उस के अन्दर पाये जाते हों, बन्दों के हुकूक गरदन पर न उठाये हों, इस सूरत में *بِفَضْلِهِ تَعَالَى* शैतान का वस्वसा मौत के वक्त असर अन्दाज न होगी, दरियाये इमान जोश मारेगा, इरिश्ता इब्लीस को भगा देगा, वसाविस को दूर करेगा, इस लिये आतिमा बिलभैर होगी, शैतान अपना सर पीटेगा, अपने सर पर भाक उडायेगा और बहुत यीभेगा यिल्लायेगा.

जिन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश

जं यले तेरी रिजा पर बे कसो मजभूर की

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوْا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرِ اللهُ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नए अकीदगी से तौबा : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! कामिल मुसल्मान बनने के लिये, गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिख्यत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफर कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये और लइतावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में



इरमाने मुस्तफ़ा عيسى بن مريم عليه السلام : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलक़ीक़ वोह बहद अप्त हो गया। (हज़रत)

अव्वल ता आबिर शिर्कत कीजिये. आप की तरगीब के लिये इमान अज़रोज़ **म-दनी** बहार पेश की जाती है युनान्हे **लतीफ़ आबाद** हैदरआबाद (आबुल इस्लाम सिन्ध) के अक़ इस्लामी भाई ने कुछ़ इस तरह बताया : आ'ज़ लोगों की सोहबत में बैठने की बिना पर मेरा जेहून बराब हो गया और मैं तीन साल तक नियाज़ शरीफ़ और **मीलाद शरीफ़** वगैरा पर घर में अे'तिराज़ करता रहा मुझे पडले **दुर्रद शरीफ़** से बहुत शग़्फ़ था (या'नी बेहद हिलयस्पी व रग़बत थी) मगर गलत सोहबत के सबब **दुर्रदे पाक** पढने का ज़जबा ही दम तोड गया. इत्तिफ़ाक़ से अक़ बार मैं ने **दुर्रद शरीफ़** की इज़ीलत पढी तो वोह ज़जबा दोबारा ज़गा और मैं ने कसरत के साथ **दुर्रदे पाक** पढने का मा'भूल बना लिया. अक़ रात जब **दुर्रद शरीफ़** पढते पढते सो गया तो **اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَيَّكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ** ज़ारी हो गया. सुब्ह जब उठा तो मेरे हिल के अन्दर हलयल मयी हुई थी, मैं इस सोय में पड गया के आबिर हक़ का रास्ता कौन सा है ? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से **दा'वते इस्लामी** वाले आशिकाने रसूल का सुन्नतों की तरबियत का **म-दनी काइला** हमारे घर की करीबी मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे **म-दनी काइले** में सफ़र की **दा'वत** दी, मैं यूँके **मु-तज़ब-ज़िब** (Confused) था इस लिये तलाशे हक़ के ज़जबे के तहत **म-दनी काइले** का मुसाफ़िर बन गया. मैं ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज इमामे वाले **म-दनी काइले** वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी किस्म की तन्कीद की न ही तन्ज़ किया बल्के अज्जबियत ही महसूस न होने दी. **अभीरे काइला** ने **म-दनी इन्आमात** का तआरुफ़ करवाया और इस के मुताबिक़ मा'भूल रबने का मश्वरा दिया. मैं ने **म-दनी इन्आमात** का बग़ौर मुता-लआ किया तो यौक़ उठा क्यूँके मैं ने इतने ज़बर दस्त तरबियती **म-दनी इल ज़िन्दगी** में पडली ही बार पढे थे. **आशिकाने रसूल** की सोहबत और **म-दनी इन्आमात** की अ-र-क़त से मुझ पर रब्बे लम यज़ल **كَلِمَاتٍ** का इज़ल हो गया. मैं ने **म-दनी काइले** के तमाम मुसाफ़िरो को जम्अ कर के अे'लान किया के कल तक मैं बहद अकीदा था आप सब गवाह हो ज़ाईये के आज़ से तौबा करता हूँ और **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता रहने की नियत करता हूँ. इस्लामी भाईयों ने इस पर इरहत व मुसररत का इज़हार किया. दूसरे दिन 30 रुपै की **नुक़ती** (अक़ बेसन की मिठाई जो मोती के दानों



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरहे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रहमतें बेजता है. (مسلم)

की तरह बनी छोती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे आ'जम शैख अब्दुल कादिर जलानी قَدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की नियाज दिलवाई और अपने हाथों से तकसीम की. मैं 35 साल से सांस के भरज में मुत्तला था, कोई रात बिगैर तकलीफ़ के न गुजरती थी, नीज मेरी सीधी दाढ में तकलीफ़ थी जिस के बाईस सहीह तरह भी नही सकता था. **म-दनी काफ़िले** की ब-र-कत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तकलीफ़ न हुई और **अल्लहु एज़्ज़ल** में सीधी दाढ से बिगैर किसी तकलीफ़ के जाना भी जा रहा हूँ. मेरा दिल गवाही देता है के अकाईदे अहले सुन्नत हक हैं और मेरा हुस्ने ज़न है के दा'वते ईस्लामी का म-दनी माहोल अल्लाह और उस के प्यारे रसूल **अल्लहु एज़्ज़ल** की बारगाह में मकबूल है.

छाये गर शैतनत तो करें देर मत काफ़िले में यलें, काफ़िले में यलो
सोहबते बह में पड कर, अकीदा बिगड गर गया हो, यलें, काफ़िले में यलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

बह मज़हबों से दूर रहने की हदीसों में ताकीद : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! दा'वते ईस्लामी के आशिकाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले में सफ़र की कैसी ब-र-कतें हैं बल्के हकीकत येह है के उस पुश नसीब ईस्लामी भाई को दुरहे पाक की कसरत की ब-र-कत से दा'वते ईस्लामी का म-दनी काफ़िला भी मिला और उस पर हिदायत का रास्ता भी जुला. येह ईस्लामी भाई बह मज़हबों की सोहबत की वजह से सीधे रास्ते से भटक गये थे, हम सभी को याहिये के बुरी सोहबत से हमेशा दूर रहें और इकत आशिकाने रसूल ही की सोहबत अपनायें. बह मज़हबों की सोहबत ईमान के लिये ज़हरे कातिल है, एन से दोस्ती और तअल्लुकात रबने की अहादीसे मुबा-रका में मुमा-न-अत है. युनान्ये सुल्ताने अरब, मडबूबे रब **अल्लहु एज़्ज़ल** का फ़रमाने ईअत निशान है : "जो किसी बह



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

मजहब को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या औसी बात के साथ उस से पेश आये जिस में उस का दिल भुश हो, उस ने उस यीज की तहकीर की जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर उतारी.” (तारिख بغداد ج ١٠ ص ٢٦٢) रसूले नजीर, सिराजे मुनीर, मजहबूने रब्बे कदीर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने दिल पजीर है : “जिस ने किसी बह मजहब की (ताजीम व) तौकीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी.”

(٦٧٧٢ حديث ١١٨ ص ٥) मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इतावा र-जविय्या शरीफ़ जिहद 21 सफ़हा 184 पर इरमाते हैं : सुन्नियों को गैर मजहब वालों से इफ्तिलात (मेलजोल) ना जाँज है भुसूसन यूँके वोह (बह मजहब) अफ़सर हों (और) येह (सुन्नी) मा तहूत. (يا'नी अल्लाह तआला इरमाता है)

وَمَا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ ۖ وَبَعْدَ الذِّكْرِى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾
 तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और जो कहीं तुजे शैतान भुलावे तो याह आअे पर जालिमों के पास न बैठ.

रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मुअज़्जम है : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और इतने में न डाल दें. (مُقَدِّمَهُ صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٩ حديث ٧)

बह मजहब को उस्ताद बनाना : बह मजहब से दीनी या दुन्यावी ता'लीम लेने की मुमा-न-अत करते हुअे मेरे आका आ'ला उजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा भान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ इरमाते हैं : गैर मजहब वालियों (या वालों) की सोहबत आग है, ज़ी इल्म आकिल बालिग मर्दों के मजहब (मी) इस में बिगड गअे हैं. इमरान बिन हत्तान रक्काशी का किस्सा मशहूर है, येह ताबिइन के जमाने में अक बडा मुहदिस था, पारिज मजहब की औरत (से शादी कर के उस) की सोहबत में (रह कर) مَعَادِ اللهُ भुद पारिज हो गया और येह दा'वा किया था के (उस से शादी कर के) उसे सुन्नी करना याहता है. (यहां वोह नादान लोग इभ्रत हासिल करें जो ब जो'मे इंसिद भुद को बहूत “पक्का सुन्नी” तसव्वुर करते और कहते सुनाई



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढा तलकीक वोह बह भप्त हो गया. (अन०)

देते हैं के हमें अपने मस्लक से कोई खिला नहीं सकता, हम बहुत ही मजबूत हैं ! मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मजीद इरमाते हैं : जब सोहबत की येह हालत (के इतना बडा मुहदिस गुमराह हो गया) तो (बह मजहब को) उस्ताद बनाना किस ह-रजा बहतर है के उस्ताद का असर बहुत अजीम और निहायत जल्द होता है, तो गैर मजहब औरत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बर्यों को वोही देगा जो आप (पुह ही) दीन से वासिता नहीं रफता और अपने बर्यों के बह दीन हो जाने की परवाह नहीं रफता.

(इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 692)

महझूज पुहा रफना सदा बे अ-हनों से

और मुज से भी सरजह न कभी बे अ-हबी हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अठाबे कब्र के होलनाक मनाफिर : उजरते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के महबूबे रब्बे समह, नबिय्ये अहमह, भीठे मुहम्मह ने बकीअे गरकह तशरीफ़ ला कर हो कब्रों के पास षडे हो कर ईशाद इरमाया : क्या तुम ने हुलां और हुलाना को, या इरमाया : हुलां हुलां को हइन कर दिया ? सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : जो हां, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! (बि ईज्ने परवह गार गैब की षबरें देते हुअे) ईशाद इरमाया : अन्नी अन्नी हुलां को (कब्र में) बिठा कर मारा गया है. फिर इरमाया : उस जात की कसम जिस के कब्जअे कुदरत में मेरी जान है ! उसे इतना मारा गया है के उस का हर हर उज्व जुहा हो युका है और उस की कब्र में आग लउका दी गई है और उस ने औसी थीष मारी है जिसे सिवाअे जिन्नो ईन्स के तमाम मप्लूक ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में इसाह न होता और तुम जियादा बातें



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुबूदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अहमद)

न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं. फिर इरमाया : अब दूसरे को भी मारा जा रहा है. फिर इरमाया : उस जात की कसम जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है ! उसे भी इस कदर जोर से मारा गया है के उस की भी हर हर हड्डी जुदा हो गई है और उस की कब्र में भी आग भडका दी गई है, उस ने भी ऐसी यीष मारी है जिसे जिन्नो इन्सान के इलावा तमाम मण्डूक ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में इसाद न होता और तुम जियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं. सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इन दोनों का गुनाह क्या है ? इशाद इरमाया : पहला पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा लोगों का गोशत खाता (या'नी गीबत करता) था.

(صَرِيحُ السُّنَّةِ لِلطَّبْرِيِّ ص ٢٩ حديث ٤٠)

मुसल्मानो ! डर जाओ ! : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस रिवायत में गीबत करने और पेशाब से न बचने वालों के लिये इब्रत के बे शुमार म-दनी इल हैं, पेशाब कर के जो लोग पाकी हासिल न कर के बदन और कपडे वगैरा नापाक कर लेते हैं उन को भी डर जाना चाहिये, इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : पेशाब से बचो आम तौर पर अजाबे कब्र इसी की वजह से होता है. (سُنَنِ دَارَقُطْنِيِّ ج ١ ص ١٨٤ حديث ٤٥٣)

इस जिम्न में अेक दरजा जैज डिक्वायत मुला-हजा हो युनान्ये

पेशाब से न बचने वाले की कब्र से पुकार ! : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 413 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "उयूनुल डिक्वायत" हिस्सअे हुवुम सफ़हा 187 पर है हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं : अेक भरतबा दौराने सफ़र मेरा गुजर जमानअे जाहिलियत के कब्रिस्तान से हुवा. यकायक अेक मुर्दा कब्र से बाहर निकला, उस की गरदन में आग की जन्धर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का अेक भरतन था. जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "अै अब्दुल्लाह ! मुझे थोडा सा पानी पिवा दो !" मैं ने दिल में कहा : इस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ-रबों के तरीके के मुताबिक "अब्दुल्लाह" कह कर पुकार रहा है.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (محرران)

झिर अयानक उसी कध्र से अेक और शप्स निकला, उस ने मुज से कडा : “अै अब्दुल्लाह ! इस ना इरमान को हरगिज पानी न पिलाना, येह काझिर है.” दूसरा शप्स पहले को घसीट कर वापस कध्र में ले गया. मैं ने वोह रात अेक बुढिया के घर गुजारी, उस के घर के करीब अेक कध्र थी, मैं ने कध्र से येह आवाज सुनी : ? وَمَا شَنْ؟ شَنْ وَمَا شَنْ या’नी “पेशाब ! पेशाब क्या है ?” मश्कीजा ! मश्कीजा क्या है ? इस आवाज के मु-तअद्विक बुढिया से पूछा तो उस ने कडा : येह मेरे शोहर की कध्र है, इसे दो जताओं की सजा मिल रही है. पेशाब करते वक्त येह पेशाब के छींटों से नहीं बयता था, मैं इस से कडती के तुज पर अफ़सोस ! जब उंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाँउ कुशादा कर के छींटों से बयता है, लेकिन तू इस मुआ-मले में बिल्कुल भी अेडतियात नहीं करता, मेरा शोहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, झिर येह मर गया तो मरने के बा’द से आज तक इस की कध्र से रोजाना इसी तरह की आवाजें आती हैं. मैं ने पूछा : ? وَمَا شَنْ या’नी “मश्कीजा ! मश्कीजा क्या है ?” की आवाज आने का क्या मकसद है ? बुढिया ने कडा : अेक मर्तबा इस के पास अेक प्यासा शप्स आया, उस ने पानी मांगा तो (इस ने उस को परेशान करने के लिये जाली मश्कीजे की तरफ़ इशारा करते हुअे) कडा : जाओ ! इस मश्कीजे से पानी पी लो, वोह प्यासा बे ताबाना मश्कीजे की तरफ़ लपका, जब उठया तो उसे जाली पाया, प्यास की शिदत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाकेअ हो गई. झिर जब से मेरा शोहर मरा है आज तक रोजाना उस की कध्र से आवाज आती है : ? وَمَا شَنْ या’नी “मश्कीजा ! मश्कीजा क्या है ?” डरते सय्यिहुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में लाजिर हो कर सारा वाकिया अर्ज किया तो सरकारे आली वकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ इरमा दिया.

(عَبُودُ الْجَايَاتِ (عَرَبِي) حَصَّة ٢ ص ٢٠٧)



करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (अहवाल)

हर गुनाह के बदले अेक उज़्व काटा जायेगा ! : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !

गुनाह याहे कितना ही छोटा हो अगर उस पर पकड़ हुई तो जुदा की कसम ! उस का अजाब न सडा जा सकेगा. गुनाहों की सजा से डराते हुअे हज़रते सय्यिहुना अब्दुल वहुडाब शा'रानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي नकल करते हैं : हज़रते सय्यिहुना यूनुस बिन उबैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ करमाते हैं : पांय दिरहम (अहनाफ़ के नज़दीक दस दिरहम) की योरी पर हाथ काटा जाता है और इस में शक नहीं के तुम्हारा सब से छोटा गुनाह भी पांय दिरहम की योरी से तो ज़ियादा ही कभीह (या'नी बुरा) है लिहाजा तुम्हारे हर गुनाह के बदले आभिरत में तुम्हारा अेक उज़्व काटा जायेगा. (تنبيه المغتربين ص 172)

नज़्म, क़ब्र और मुन्कर नकीर की जौड़नाक मन्ज़र कशी : भीठे भीठे

ईस्लामी भाईयो ! वाकेई क़ब्र का मुआ-मला बेहद तश्वीश नाक है, क्या मा'लूम आज ही मौत आ जाये और देपते ही देपते हम क़ब्र की तन्हाईयों में जा पड़ोंयें, अव्वल तो मौत के सदमे का तसव्वुर ही जान को धुलाने वाला है और ठीपर से जुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नाराज़ी की सूरत में अजाब हुवा तो केसे बरदाश्त हो सकेगा ! मुर्दे के सदमे का नकशा षींयते हुअे मेरे आका आ'ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा खान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ करमाते हैं : वोह मौत का ताजा सदमा उठाये हुअे रूह (के निकलते वक्त) जिस का अदना जटका सो जर्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार जर्बे तैग (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सप्त तर, बल्के म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का देपना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ कर. वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर तरफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अयानक आना, वोह सप्त हैबतनाक सूरतें दिखाना के आदमी दिन को हज़ारों के मजमअ में देपे तो हवास बजा न रहें, काला रंग, नीली आंभें देगों के बराबर बडी, अबरक (यमकीली धात) की तरह शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की तरह लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), जमीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, कदो कामत जिस्म व जसामत बला व कियामत, के



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत (अपुल्लै) है .

अेक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्जिलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर) का इासिला, छाथों में लोहे का वोड गुर्ज (या'नी डथोडा) के अगर अेक बस्ती के लोग बल्के जिन्नो ईन्स जम्भ डो कर उठाना याहें न उठा सकें, वोड गरज कडक की डोलनाक आवाओं, वोड दांतों से जमीन थीरते जाहिर डोना, फिर ईन आफ़ात पर आफ़त येह के सीधी तरड बात न करना, आते ही जन्जोड डालना, मोडलत न देना, कडकती जिडकती आवाओं में ईम्तिडान लेना.

وَحَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ اِرْحَمْ ضُعْفَنَا يَا كَرِيمُ يَا جَمِيلُ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَيَّ
نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَالْهِ الْكَرَامِ وَسَائِرِ الْأُمَّةِ اَمِيْنِ اَمِيْنِ يَا اِرْحَمِ الرَّاحِمِيْنَ .

(तरजमा : और अल्लाड (عَزَّوَجَلَّ) डमारे लिये काइ है और वोड सभ से बडा कारसाज है. अै करम इरमाने वाले ! डमारी कमजोरी पर रड्मो करम इरमा, अै रबे जमील ! दुर्रहे सलाम बेज नबिय्ये रडमत (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर और उन की ईज्जत वाली आल और बकिय्या तमाम उम्मत पर. कबूल इरमा, कबूल इरमा, अै सभ से जियादा रड्मो करम इरमाने वाले !) (इतावा र-जविय्या, जि. 9, स. 934 ता 937)

अडे हें मु-कर नकीर सर पर न कोई डामी न कोई यावर
बता ढो आ कर मेरे पयम्बर के सप्त मुश्किल जवाब में डे

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

تُوبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

गेहनी कश्मकश से नजात मिली : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाओं और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से डर डम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सइर कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इके मदीना के जरीअे रिसाला पुर



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोचता है. (बुरान)

कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. सुन्नतों भरे इजतिमाआत में छाजिरी दीजिये और वहां बगौर बयान सुनने की सआदत हासिल कीजिये. आप की तरगीब के लिये अक म-दनी बहार पेश की जाती है मुला-हज्ज इरमाइये : **बाबुल मदीना** (कराची) के अक इस्लामी भाई की हड्डिय्या (या'नी ब कसम) तहरीर का फुलासा है के मैं दावूद इन्जिनियरिंग कोलेज का तालिबे इल्म हूं, भुरे और बह अकीदा लोगों की सोहबतों ने मुझे न-जरिय्यात के मुआ-मलात में "जेइनी कश्मकश" में मुब्तला कर दिया था, मैं कैसला नहीं कर पा रहा था के कौन सीधे रास्ते पर है. 2 साल का तवील अर्सा यूंही गुजर गया. अक रोज मेरी मुलाकात अक जैसे नौ जवान से हुई जिस का अन्दाज व किरदार मेरे दिल में उतर गया. उस आशिके रसूल ने सईद लिबास पहना हुवा था, सर पर सज्ज सज्ज इमामा शरीफ़ था और उस के येहरे पर इबादत का नूर था, उस इस्लामी भाई ने इन्किरादी कोशिश करते हुअे मुझे सहाराअे **मदीना**, मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिकत की दा'वत पेश की. मैं पडले ही उन से **मु-तअस्सिर** हो युका था, इन्कार क्यूंकर हो सकता था. युनान्थे मैं ने बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिकत की. उज के भा'द कसीर ता'दाह में मुसल्मानों के जम्अ होने का मन्जर देअ कर मेरी आंभे उबडभा गई, मेरे दिल ने गवाही दी के येही "अहले उक" हैं. आभिरी दिन होने वाले बयान "अद्लाउ **की फुइया तदबीर**" सुन कर मेरे रोंगटे भडे हो गअे. फिर रिक्त अंगेज दुआ ने ऐसा असर किया के मेरी जिन्दगी बदल गई, मैं पडले हैवान था, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल ने मुझे इन्सान बना दिया है. आज मैं अपने दिल में कसरत से **नेकियां** करने का जजबा पाता हूं. येहरे पर सुन्नत के मुताबिक दाढी शरीफ़ भी सज्ज ली है, कुरआने पाक छिफ़्ज करने की भी निख्यत है. अक और अहम बात येह के जब मैं इजतिमाअ में शिकत के लिये सहाराअे **मदीना** मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ जा रहा था तो मेरे वालिद और वालिदा के हाथ पर इलिज का हम्ला हो गया था, वोह जरा सा भी हाथ नहीं छिला सकते थे. इजतिमाअ में दुआ की ब-र-कत से उन के इलिज जहा हाथ भी ठीक हो गअे.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाज़िल इरमाता है. (طبرانی)

तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माडोल न छूटे कभी भी पुदा म-दनी माडोल
पुदा के करम से पुदा की अता से न दुश्मन सकेगा छुडा म-दनी माडोल

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

धजतिमाअ में सवाब की नियत से शिर्कत करनी याहिये : भीठे भीठे
ईस्लामी लाईयो ! देया आप ने ! अक ईस्लामी लाई के सुन्नतों त्तरा म-दनी हुल्या
अपनाने और ईन्किरादी कोशिश इरमाने की ब-र-कत से “राहे हक” के मु-तलाशी
को अपनी मन्जिल मिल गई ! ईस म-दनी बहार से येह भी मा'लूम हुवा के दा'वते
ईस्लामी के सुन्नतों त्तरा धजतिमाआत में शिर्कत की ब-र-कत से बसा अवकात हुन्यावी
मसाईल भी हल हो जाते हैं, म-सलन मरीजों को शिक्षा मिल जाती है, बे रोजगार
बर सरे रोजगार हो जाते हैं. लेकिन सिर्फ हुन्यावी मसाईल के हल की नियत करने के
बजाये त-लबे ईल्म और सवाबे आपिरत कमाने की भी नियतें जरूर करनी याहियें.

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

दो² कब्रों में होने वाले अजाब के अस्बाब : उजरते सय्यिहुना अभी
भकरह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के मैं हुजूर नबिय्ये करीम, रउिकुर्रहीम
के साथ यल रहा था और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरा हाथ
थामा हुवा था. अक आदमी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बाई तरफ़ था. दरी अस्ना
हम ने अपने सामने दो कब्रें पाई तो मडभूबे पुदाअे तव्वाब, नुबुव्वत के आइताब,
जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : इन दोनों को अजाब हो
रहा है और किसी बडे अम्र की वजह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुजे अक
टहनी ला दे. हम ने अक दूसरे से आगे बढने की कोशिश की तो मैं सडकत ले गया
और अक टहनी (या'नी शाब) ले कर हाजिरे बिदमत हो गया. आप
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस के दो टुकडे कर दिये और दोनों कब्रों पर अक अक रफ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से क्यूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

दिया फिर ईशाद इरमाया : येह जब तक तर रहेंगे इन पर अजाब में कमी रहेगी और इन दोनों को गीबत और पेशाब की वजह से अजाब हो रहा है.

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٧ ص ٣٠٤ حديث ٢٠٣٩٠)

आका को घल्मे गैब है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! गीबतों और पेशाब के छींटों से न बचना कफ़्र के अजाब के अस्बाब में से है. आह ! हमारा वोह नाजुक बदन जो के मा'भूली कांटे की युत्न, दो पहर की धूप की तपश व जलन और बुभार की मा'भूली सी अगन भरदाशत नहीं कर सकता वोह कफ़्र का डोलनाक अजाब कैसे सह सकेगा. या **اَعْلَاهُ عَزَّ وَجَلَّ !** हम पेशाब की आलूदगियों के जुर्मों, गीबतों, युग्लियों और छोटे बडे तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, प्यारे प्यारे **مالिक عَزَّ وَجَلَّ !** हम से हमेशा हमेशा के लिये राजी हो जा और हमारी बे हिसाब मग़ि़रत इरमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ. **أَمِينُ بَجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**. बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा के हमारे प्यारे प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को **ईल्मे गैब** है जभी तो ब अताअे फ़ुदाअे वहुलाब **عَزَّ وَجَلَّ** कफ़्र का अजाब मुला-हजा इरमा लिया जैसा के बयान कर्दा हदीसे पाक से जाहिर है. मेरे आका आ'ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **ईमाम अहमद रज़ा पान** **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** उदाईके बग़िशश शरीफ़ में इरमाते हैं :

सरें अर्श पर हैं तेरी गुज़र दिले इर्श पर हैं तेरी नज़र

म-लक़ूतो मुक्क में कोई शै नहीं वोह जो तुज पे ईयां नहीं

कफ़्र में अजाब हो रहा है : अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** की अता से गैब की खबरें देने वाले मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अक कफ़्र के पास तशरीफ़ लाअे जिस में मय्यित को अजाब हो रहा था तो ईशाद इरमाया : “येह लोगो का गोशत ખाता (या'नी गीबत करता) था.” फिर अक तर टहनी मंगवाई और उसे कफ़्र पर रफ़ कर ईशाद इरमाया : उम्मीद है के जब तक येह तर रहेगी इस के अजाब में कमी रहेगी.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٢ ص ٣٥٠ حديث ٢٤١٣)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : उस शाप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइरे पाक न पड़े. (७)

कब्रों पर झूल डालना मुस्तहब है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गुजश्ता दोनों अछादीसे मुबा-रका में पेशाब से न बचने वाले और गीबत करने वाले के अजाबे कब्र में मुत्तला होने का तजकिरा है. हर मुसल्मान को अेहतियात के साथ जिन्दगी गुजारनी चाहिये. एन रिवायात में कब्र पर तर शाप रचने का जिक्र है. इस जिम्न में मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ اَجْمَعِينَ अपनी मशहूर किताब “जाल हक” हिस्सअे अक्वल सइहा 240 ता 241 पर इरमाते हैं : कहा गया है के इस लिये अजाब कम होगी के जब तक (येह शापें) तर रहेंगी तस्बीह पढ़ेंगी. इस हदीस की शर्ह में अल्लामा न-ववी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي) इरमाते हैं : इस हदीस से उ-लमा ने कब्र के पास कुरआन पढने को मुस्तहब इरमाया. क्यूंके तिलावते कुरआन शाप की तस्बीह से जियादा इस की हकदार है के इस से अजाब कम हो. तहतावी अला मराकिल इलाह सइहा 364 में है : हमारे बा'ज मु-तअप्पिरीन अस्हाब ने इस हदीस की वजह से इतवा दिया के “भुशू और झूल यढाने की (मुसल्मानों में) जो आदत है वोह सुन्नत है.” मुइती साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی मजीद इरमाते हैं : इस हदीस और मुहदिसीन व हु-कहा की ईभारत से दो भातें मा'लूम हुई. अक तो येह के हर सज्ज यीज (या'नी सज्जे) का रचना हर मुसल्मान की कब्र पर जईज है. हुजूर नबिये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَامِ ने उन कब्रों पर (तर) शापें रपीं जिन को अजाब हो रहा था और दूसरे येह के अजाबे कब्र की कमी सज्जे की तस्बीह की ब-र-कत से है..... लिहाजा अगर हम ली आज (कब्रों पर) झूल वगैरा रभें तो ली اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ मय्यित को इअेदा होगा बलके आम मुसल्मानों की कब्रों को कय्या रचने में येह ही मस्लहत है के बारिश में इस पर सज्ज घास जमे और उस की तस्बीह से मय्यित के अजाब में कमी हो.

है कौन के जो गियां करे इतिहा को आये

बरसाये कौन कब्र पे बेकस की भरन झूल



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुऱ पर दुऱद शरीफ़ पढो अल्लाह उऱुऱ तुम पर रऱमत भेजेगा. (अऱनऱुऱ)

गीबतों वगैरा गुनाहों के मु-तअल्लिक अेक मा'लूमाती इतवा : अब गीबत वगैरा गुनाहों के मु-तअल्लिक इतवा २-अविय्या जिल्द 21 सईहा 162 ता 163 का अेक मा'लूमाती इस्तिफ़ता और इतवा मुला-हजा इरमाईये :

सुवाल : गीबत करना, जूट भोलना, पास कर वोह जूट जिन से ञल्के षुढा में इतना डो. डो डोस्त में या शोहर बीवी में या बाप डेडे में या भाई भाई में उस जूट से रन्जिश डो ज्ञअे, बाहम जुढाई डो के घर की षराबी की नौबत आ ज्ञअे, और मुसल्मान के अैब की तलाश व तजस्सुस में रहना, कोई मुसल्मान अगर पोशी-दगी से कोई गुनाह करता डो तो उस की तजस्सुस में लगे रहना और पता पाने पर या मडूऱ अपनी शुबा व डियास से उस को इश (अडिर) करना शोहरत देना डिस द-रजे का गुनाह है और गुनाहाने मऱकूरअे बाला का मुर-तकिब इंसिक व मुस्तल्लिके ला'नते षुढा व रसूल है या नई? और येह सभ गुनाह शरअन द-र-जअे इस्कि में जिना से कम हैं या जि्यादा या बराबर? जवाब मुइस्सल और मुदल्लल (या'नी दलाईल के साथ) दरकार है. **يَبْتُؤُا تُوجَرُوا** (या'नी बयान इरमाईये और अजरो सवाब कमाईये)

अल जवाब : येह सभ गुनाहाने कबीरा हैं और इन का मुर-तकिब इंसिक व मुस्तल्लिके ला'नत. हडीस में इरमाया : **أَلْغَيْبَةُ أَشَدُّ مِنَ الرَّنَا** (या'नी) गीबत सप्त है जिना से. (المُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٥ ص ٦٤ حديث ٦٥٩٠) और अडिर है के कत्ले मोमिन गीबत से अशद (या'नी सप्त तर) है. और अल्लाह तआला इरमाता है : **وَأَلْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ** (प ٢ البقرة: ١٩١) इतना कत्ल से सप्त तर है. और इन सभ में हक्कुल ईबाद (या'नी बन्दों का हक) है तो उस जिना से जऱर बदतर है जिस में हक्कुल ईबाद न डो मगर वोह जूट जिस से डिसी का जरर (या'नी नुकसान) न डो के बे मस्लहतते शर-ई डो तो गुनाह जऱर है मगर ईसे जिना के बराबर नई कह सकते के येह सगीरा है बा'दे ईसरार कबीरा डोगा. **وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ**

पीछा मेरा गीबत की मुसीबत से छुडा दे

हर बात संभल कर करूं तौफ़ीक़ षुढा दे



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुज़ पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भा. ५)

ज़िना छोटा गुनाह नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! यहाँ शैतान कहीं वस्वसे डाल कर ज़िना पर न उक्साओ के येह तो मा'भूली सा गुनाह है. वल्लाह ! हरगिज़ औसा नहीं, येह बात हमेशा ज़ेहून में रफ़िये के छोटे गुनाह को भी अगर कोई छोटा समझ कर करता है तो वोह सप्त कबीरा गुनाह बन जाता है और ज़िना छोटा गुनाह भी नहीं बल्के गुनाहे कबीरा है, इस का अज़ाब पढिये और थर-थराईये नीज़ जब ज़िना का अज़ाब घतना डोलनाक है तो गीबत का अज़ाब कितना दहनाक होगा इस का तसव्वुर जमा कर फ़ुद को उराईये :

दो^२ सांप नोय नोय कर भाओंगे : उजरते सय्यिदुना मसरूक رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُتُوسُ से रिवायत है : जो शप्स योरी या शराब फ़ोरी या ज़िना में मुत्तला हो कर मरता है उस पर दो सांप मुकर्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोशत नोय नोय कर भाते रहते हैं.

(شَرْحُ الصُّدُورِ ص १७२)

जहन्नमी ताबूत : मन्कूल है : जहन्नम में आग के ताबूत में कुछ लोग कैद होंगे के जब वोह राहत मांगेंगे तो उन के लिये ताबूत फ़ोल दिये जाओंगे और जब उन के शो'ले जहन्नमियों तक पछोंयेंगे तो वोह ब-यक ज़बान इरियाद करते हुओ कहेंगे : या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! इन ताबूत वालों पर ला'नत इरमा. येह वोह लोग हैं जो औरतों की शर्मगाहों पर हराम तरीके से कब्ज़ा करते थे.

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص १६७)

जन्नत में दाखिले से महज़म : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 300 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 229 ता 230 पर है मन्कूल है : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने जब जन्नत को पैदा इरमाया तो उस से इरमाया : "कलाम कर." तो वोह बोली : जो मुज़ में दाखिल होगा वोह सआदत मन्द है. तो अल्लाह عَزَّ وَजَلَّ ने इरमाया : मुजे अपनी इज़्ज़ततो जलाल की कसम ! तुज़ में आठ किस्म के लोग दाखिल न होंगे : शराब का आदी, ज़िना पर इसरार करने वाला, युगुल फ़ोर, दय्यूस, (ज़ालिम) सिपाही, हीजडा और रिशतेदारी तोडने वाला और वोह शप्स जो फ़ुदा की कसम



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक हुइरुद शरीफ़ पढता है अल्लाह उरुउरु उस के लिये अक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुइ पहाउ जितना है. (मुरुर)

भा कर कलता है के कुलां काम जइर कइंगा फिर वोह काम नहीं करता.

(إتحاف السادة للريدي ج ٩ ص ٣٤٥)

येह रिवायत नकल करने के बा'द उजरते अल्लामा इब्ने जौजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي जौजी इरमाते हैं : जिना पर इसरार करने वाले से मुराद हमेशा जिना करते रहने वाला नहीं, इसी तरह शराब के आदी से मुराद येह नहीं जो हमेशा शराब पीता रहे बल्के मुराद येह है के जब उसे शराब मुयस्सर हो तो वोह पी ले और अल्लाह उरुउरु के भौइ की वजह से शराब पीने से भाज न आये. इसी तरह जब उसे जिना का भौकअ मिले तो (कर ले और) इस से भाज न रहे और न ही अपने नइस को इस बुरी प्वाइश की तकमील से रोके. बेशक ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है.

(بَحْرُ الْمَوْعُوعِ ص ١٦٧)

नजर दिल में शहवत का बीज बोती है : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! उजरते सय्यिहुना अब्दुल्लाह बिन मरुइद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सभावत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इज़्जत का इरमाने इब्रत निशान है : اَلْعَيْنَانِ تَزْنِيَانِ या'नी आंभों ली जिना करती हैं. (मुसुनदु इमाम अहमद ज २ व ८६ हदित ३९१२) लिहाजा आंभों की डिइज्जत जइरी है. हुज्जतुल इस्लाम उजरते सय्यिहुना इमाम मुहम्मद गजाली رَحْمَةُ اللهِ تَوَالِي इरमाते हैं : जो आदमी अपनी आंभ को बन्द करने पर कादिर नहीं होता वोह अपनी शर्मगाह की डिइज्जत ली नहीं कर सकता.

(احياء العلوم ج ٣ ص ١٢٥)

आंभों में पिघला हुवा सीसा : मन्कूल है : जो शप्स शहवत से किसी अज्जन्बिय्या के हुस्नो जमाल को देभेगा कियामत के दिन उस की आंभों में सीसा पिघला कर डाला जायेगा.

(هدايه ج ٢ ص ٣٦٨)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़ार करते रहेंगे. (अ. ५)

आंभों में आग भर दी जायेगी : हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي نकल करते हैं : जो कोई अपनी आंभों को नजरे हराम से पुर करेगा क्रियामत के रोज उस की आंभों में आग भर दी जायेगी.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ۱۰)

आग की सलाह : हजरते सय्यिदुना अल्लामा ईब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوَى नकल करते हैं : औरत के मलासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना ईब्लीस के जहर में बुजे हुये तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंभ की डिफ़ाजत न की उस की आंभ में बरोजे क्रियामत आग की सलाह डैरी जायेगी.

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص ۱۷۱)

जहन्नम से आजाह होने वाली आंभें : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 235 पर है : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ वहुय़ इरमाई : "ओ मूसा ! मैं ने तीन किस्म की आंभों को जहन्नम पर हराम इरमा दिया है, एक वोह आंभ जो राहे फ़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में पहरा देती है, दूसरी वोह आंभ जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की हराम कर्दा चीजों से रुक जाती है और तीसरी वोह आंभ जो मेरे फौड़ से रोती है, और आंसू के ठलावा हर शै की एक जजा है और आंसू की जजा रहमत, मग़्फ़िरत और जन्नत में दाभिले के ठलावा कुछ नहीं."

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص ۱۷۲)

तुम जन्नत में मेरे साथ होगे : एक शप्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं सिर्फ़ एक महीने के रोजे रभता हूं ईस पर ईजाज़ा नहीं करता, और सिर्फ़ पांच नमाज़ें पढता हूं ईस से ज़ियादा नहीं पढता और मेरे माल में जकात इर्ज़ नहीं और न ही मुज पर उज इर्ज़ है और न ही नफ़ल उज करता हूं, मैं मरने के बा'द कहां जाऊंगा ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے مومن پر ایک بار دھڑکے پاક پڑا اے اللہ اے اس پر دس
રહમતો બેજતા હૈ. (પૃ. ૧)

ને તબસ્સુમ ફરમાતે હુએ ઈશદિ ફરમાયા : તુમ જન્મત મેં મેરે સાથ હોગે જબકે તુમ
અપને દિલ કો દો બાતોં યા'ની ખિયાનત ઓર હસદ સે બયાઓ ઓર અપની ઝબાન કો
દો બાતોં યા'ની ગીબત ઓર ઝૂટ સે ઓર દો બાતોં સે આંખોં કો બયાઓ યા'ની જિસ કી
તરફ નઝર કરના અલ્લાહ તઆલા ને હરામ કરાર દિયા હૈ ઉસ કી તરફ ન દેખો ઓર
કિસી મુસલ્માન કો હકારત સે ન દેખો. (قُوْتُ الْقُلُوْب ج ۱ ص ۴۳)

ઇન્ફિરાદી કોશિશ કી બ-ર-કત : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ગીબત સે
ઝબાન ઓર બદ નિગાહી સે આંખોં કી હિફાઝત કરને કા ઝેહન બનાને કે લિયે દા'વતે
ઈસ્લામી કે મ-દની કાફિલોં મેં સફર કો અપના મા'મૂલ બનાઈયે, મ-દની ઈન્આમાત
કે મુતાબિક અપની ઝિન્દગી ગુઝારિયે ﷺ દોનોં ઝહાં મેં બેઝા પાર હોગા,
આપ કી તરગીબ વ તહરીસ કે લિયે એક મ-દની બહાર ગોશ ગુઝાર કરતા હૂં યુનાન્યે
સરદાર આબાદ (કૈસલઆબાદ, પંજાબ, પાકિસ્તાન) કે એક ઈસ્લામી ભાઈ કા બયાન
હૈ કે મેં અપને શહૂર કે એક મશહૂર દીની મદ્રસે મેં દર્સે નિઝામી કા તાલિબે ઈલ્મ થા.
અટક શહૂર (પંજાબ) કે એક ઈસ્લામી ભાઈ કબી કબાર સરદારઆબાદ અપને મામૂંજાન
કે ઘર તશરીફ લાતે થે ઓર ઉન કે મામૂં હમારે મદ્રસે કે કરીબ રિહાઈશ પઝીર થે, વોહ
ઈસ્લામી ભાઈ દૌરાને કિયામ હમારે મદ્રસે મેં ભી આતે ઓર ત-લબા સે મુલાકાત કર કે
ઉન પર ઈન્ફિરાદી કોશિશ ફરમાતે, મેરી ઉન સે દોસ્તી હો ગઈ થી, વોહ મુઝે દા'વતે
ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ કે બારે મેં બતાયા કરતે, ઉન કી બાતેં સુન સુન કર મેં દા'વતે
ઈસ્લામી કે મુહિબ્બીન મેં શામિલ હો ચુકા થા. ઉન્હીં કી દા'વત પર મુઝે ફૈઝાને મદીના
સરદારઆબાદ (સૂસાં રોડ નઝદ પુરાની ટંકી મદીના ટાઉન) મેં હોને વાલે દા'વતે ઈસ્લામી
કે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ મેં શિર્કત કી સઆદત હાસિલ હુઈ, મેરી શિર્કત કે
પહલે હી ઈજતિમાઅ મેં મુબલ્લિગે દા'વતે ઈસ્લામી ને ઈમામા શરીફ કે ફઝાઈલ પર
બયાન કિયા, જિસે સુન કર મેં ઈતના મુ-તઅસ્સિર હુવા કે હાથોં હાથ ઈમામા ખરીદ કર
અપને સર પર સજા લિયા ઓર બસ્તે સે ફૈઝાને સુન્નત ભી ખરીદી ઓર અપની મસ્જિદ મેં
ઈસ કા દર્સ શુરૂઅ કર દિયા. વક્ત ગુઝરને કે સાથ મેં ને મુકમ્મલ તૌર પર મ-દની હુલ્યા



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુરૂફ)

અપના લિયા. ઇજતિમાઅ મેં અપને સાથ દીગર ત-લબા કો ભી લે જાતા, પહલે હફતે ૩ ઇસ્લામી ભાઈ થે દૂસરે હફતે બઢ કર ઇન કી તા'દાદ 12 હો ગઈ. મેં ને દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની કાફિલોં મેં ભી સફર ક્રિયા ઓર અપને અલાકે મેં મ-દની કામોં કી ધૂમેં મયાના શુરૂઅ કર દીં. 1994 સિ.ઈ. મેં ફેઝાને મદીના સરદારઆબાદ મેં મદ્ર-સતુલ મદીના મેં બતૌરે નાઝિમ સુન્નતોં કી ખિદમત કા મૌકઅ મિલા ઓર અલ્હમુલિલ્લાહ મેં તા દમે તહરીર મજલિસે મદ્ર-સતુલ મદીના (પંજાબ) કા રુક્ન ભી હૂં. અલ્લાહ રબ્બુલ ઇઝ્ઝત્ત ઈઝ્ઝાલ મુઝે દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની માહોલ મેં ઇસ્તિકામત ઇનાયત ફરમાએ.

અતાએ હબીબે ખુદા મ-દની માહોલે હે ફેઝાને ગૌસો રઝા મ-દની માહોલ
અગર સુન્નતેં સીખને કા હૈ જઝબા તુમ આ જાઓ દેગા સિખા મ-દની માહોલ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ઇન્ફિરાદી કોશિશ સવાબ કા આસાન ઝરીઆ હૈ : ઇસ્લામી ભાઈયો! દેખા આપ ને ! કિસ તરહ એક તાલિબે ઇલ્મ કિસી ઇસ્લામી ભાઈ કી ઇન્ફિરાદી કોશિશ સે દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે વાબસ્તા હો ગયા. ઇજતિમાઈ કોશિશ કે મુકાબલે મેં ઇન્ફિરાદી કોશિશ ઉમૂમન સહ્લ હોતી હૈ ક્યૂંકે કસીર ઇસ્લામી ભાઈયોં કે સામને “બયાન” કરને કી સલાહિય્યત હર એક મેં નહીં હોતી જબ કે ઇન્ફિરાદી કોશિશ હર કોઈ કર સકતા હૈ ખ્વાહ ઉસે બયાન કરના આતા હો યા ન આતા હો. ઇન્ફિરાદી કોશિશ સવાબ કમાને કા આસાન ઝરીઆ હૈ. મ-દની મર્કઝ કે દિયે હુએ તરીકએ કાર કે મુતાબિક ઇન્ફિરાદી કોશિશ કે ઝરીએ ખૂબ ખૂબ ખૂબ નેકી કી દા'વત દેતે જાઈયે ઓર સવાબ કા ખઝાના લૂટતે જાઈયે.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (उंअ)

जहन्नम का जाना और लिबास मिलेगा : सरकारे मदीना, सुल्ताने आ करीना, करारे कलबो सीना, कैज गन्जना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का ईशदि ईभ्रत बुन्याद है : जिस शप्स को किसी मर्दे मुस्लिम की बुराई करने की वजह से जाने को मिला, अद्लाह तआला उस को उतना ही जहन्नम से पिलाओगा और जिस को मर्दे मुस्लिम की बुराई की वजह से कपडा पहनने को मिला, अद्लाह तआला उस को जहन्नम का उतना ही कपडा पहनाओगा. और जो किसी शप्स की वजह से सुनाने और दिखाने की जगह में भडा हो तो अद्लाह तआला उसे कियामत के दिन सुनाने और दिखाने की जगह में भडा करेगा.

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٥٤ حدیث ٤٨٨١)

दोऊष की आग के अंगारे जाओगा : मुफ़्स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़्ती अहमद यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मिरआत जिल्द 6 सफ़डा 619 ता 620 पर इरमाते हैं : या'नी ईस तरह (पर) के दो लडे हुअे मुसल्मानों में से अक के पास जावे और उसे भुश करने के लिये दूसरे की गीबत करे, उसे बुरा कहे, उसे नुकसान पड़ोयाने की तदबीरें बताओ ताके ईस जरीओ से येह शप्स ईसे कुछ दे दे या पिला दे. औसे भुशा-मदी लोग आजकल बहुत हैं. मजीद इरमाते हैं : येह दोऊष की आग के अंगारे उन लुकमों के ईवज में जिस कदर यहां लुकमे जाओ उतने ही वहां अंगारे जाओगा. जो किसी को भुश करने के लिये मुसल्मान भाई की गीबत करे या उसे सताओ (और) ईस गीबत वगैरा के ईवज कपडों का जोडा पाओ तो उसे कियामत में ईस जोडे के ईवज आग का जोडा पहनाया जाओगा. मुफ़्ती साहिब मजीद ईस इरमाने आली ("जो किसी की वजह से दिखाने और सुनाने की जगह भडा हो" टा.. के बारे में इरमाते हैं के ईस) के बहुत मआनी हैं : अक येह के जो शप्स किसी मशहूर शरीफ़ आदमी की पगडी उछाले (या'नी उस को भदनाम करे) उस का मुकाबला करे ताके ईस मुकाबले से मेरी शौहरत हो दूसरे येह के जो किसी शप्स को हुन्या में जूटे तरीके से उछाले ताके ईस के जरीओ मुझे ईज्जत व रोजी मिले. जैसे आज कल भा'ज जूटे पीरों के मुरीद उस की जूटी करामतें बयान करते फिरते हैं ताके हम को भी उस के जरीओ ईज्जत मिले के हम उस (पड़ोये हुअे मुशिद) के



इरमाने मुस्तफा عز وجل : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रइमतें बेजता है. (स)

बालके (या'नी मुरीद या शागिद) हैं. तीसरे येह के जो शप्स दुन्या में नामो नुमूद याहे नेकियां करे मगर नामवरी के लिये या जो शप्स किसी के जरीअे से अपने (आप) को मशहूर व नामवर करे क्रियामत में जैसे शप्सों को (सरे) आम रुस्वा क्रिया जावेगा के इरिश्ता उसे उींयी जगह ञडा कर के अे'लान करेगा के (अै) लोगो ! येह ञडा जूटा मक्कार इरेबी (धोकेबाज) था. (मिरआत)

जहन्नम की गिजा और मशरुज : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो अपने अमीर, निगरान, अइसर, सेठ, लीडर या किसी मालदार को अश्रु लगाने, उन की हमदईयां पाने, अपने आप को "वफादार" जताने मगर हकीकत में अपनी हमाकत पर मोहर लगाने और खुद को दोज़्भ का हकदार बनाने के लिये उस सेठ वगैरा के सामने उस के मुबालिफ़ की पोलेँ ञोलते और मुप्तलिफ़ ञावियों से उन की बुराईयां करते हैं. आह ! न जहन्नम की गिजा ञाई जा सकेगी न दोज़्भ का लिबास पहना जा सकेगा. जहन्नम की गिजा का नकशा ञींयते हुअे सदरुशशरीअह, बहरतरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी مك-ت-اتول مدينا की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सइहा 167 ता 168 पर इरमाते हैं : (जहन्नमियों को) ञारदार थूड (अेक कांटेदार जहरीला पौदा) ञाने को दिया जाअेगा, वोह अैसा ढोगा के अगर उस का अेक कतरा दुन्या में आअे तो उस की सोञिश व बदबू तमाम अहले दुन्या की मईशत बरबाद कर दे और वोह गले में जा कर इन्दा डलेगा, उस के उतारने के लिये (दोज़्भी लोग) पानी मांगेंगे, उन को वोह ञौलता पानी दिया जाअेगा के मुंह के करीब आते ही मुंह की सारी ञाल गल कर उस में गिर पडेगी, और पेट में जाते ही आंतों को टुकडे टुकडे कर देगा और वोह शोरबे की तरह बह कर कदमों की तरफ़ निकलेंगी, ञ्यास इस बला की ढोगी के उस पानी पर अैसे गिरेंगे जैसे तोंस (या'नी सप्त ञ्यास) के मारे हुअे उींट. (बहारे शरीअत)

नारे जहन्नम से तू अमां दे, ञुल्ले बरीं दे ञागे जिनां दे

अज पअे हजरते अबू हनीफ़ा, या अल्लाह मेरी जौली बर दे



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جراني)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जे जे अतिराजत करने वाले : उजरते सख्खिदुना यइया बिन मुआज्ज عليه تعالى عنيه رحمة الله मुकर्रमहे इरमाते हैं : मुजे उन लोगों पर तअज्जुब है जो साखिदीन या'नी नेक लोगों के लिये मुबाह (या'नी ज़ा'ज यीज) को भी अैब समजते हैं लेकिन अपने लिये कभीह (या'नी बह तरीन) गुनाहों को भी मा'यूब भयाल नहीं करते. तू देभेगा के उन लोगों में कोई भुद तो गीबत, युगली, हसद, कीना, धोका, तकब्बुर और भुद पसन्दी की नुहूसतों में गिरिफ्तार है और तौबा भी नहीं करता जबके नेक लोगों पर मुबाह (या'नी ज़ा'ज) लिबास, लजीज खाने और मुबाह (ज़ा'ज) मिठाई के इस्ति'माल पर भी अे'तिराज करता है.

(تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِيْنَ ص ٦٦)

भुद याहे हराम जाते हों मगर.....: भीठे भीठे इस्लामी भाईयो! वाकेई भा'ज लोगों की येह आदत होती है के भुद याहे सूदी कर्जे ले कर, जूट बोल कर, मिलावटें और टेक्स की योरियां कर के नापाक या हराम रोजी कमाअें मगर किसी आलिम, ખતીબ या इमाम साहिब को कहीं से नजराना मिला, इन को लोगों के घर दा'वते तआम में आता जता देभा, किसी ने बख्ये वगैरा की विलादत की ખुशी में इन्हें मिठाई का डिब्बा पेश किया तो येह लोग अपने गन्दी आमदनियों को भूल कर उस आलिम साहिब की गीबत पर उतर आते और مَعَادَ اللهِ ॐ इस तरह के गुनाहों भरे जुम्ले कहते सुनाई देते हैं : **1** ॥ जाउि भौलवी है **2** ॥ पेटू है **3** ॥ हलवा ખोर है **4** ॥ नजरानों के लिये भरता है **5** ॥ मुफ्त की दा'वतें ખा कर पेट निकल आया है **6** ॥ ખा ખा कर गरदन मोटी कर ली है **7** ॥ लालयी भौलाना है वगैरा.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढा तलकीक वोह बढे भप्त हो गया. (हिन)

दूसरे की आंभ का तिन्का तो नज़र आता है मगर.....: याद रभिये ! हमाम या आलिम साहिब का किसी मुसल्मान से नज़राना, दा'वत या मिठाई कबूल करना ज़रूरी काम है गुनाह व हराम नहीं बल्के अच्छी अच्छी नियतों हों तो कारे सवाब है. मो'तरिज को अपनी आमदनी पर नज़र दौड़ानी चाहिये, हराम हो तो उस से भी नीज़ गीबतों, तोड़मतों और बढे गुमानियों से तौबा और इस के तकाज़े पूरे करने चाहिये. गौर तो कीजिये ! जब आप किसी की तरफ़ अक उंगली उठाते हैं तो हाथ की तीन उंगलियों का रुख़ जुद आप की तरफ़ हो जाता है गोया येह जामोश तम्बीह (नोटिस) है के उस को बा'द में छोड़ना पहले अपने आप को सुधार ! उज़रते सय्यिदुना अबू दुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : दूसरे की आंभ का तिन्का तो तुम्हें नज़र आ जाता है (या'नी जरा जरा सी बात में उस का औंभ बयान करता फिरता है) मगर अपनी आंभ का शहतीर (या'नी बडी लकडी, मतलब येह के अपना बहुत बडा औंभ भी) नज़र नहीं आता !

(دَمُّ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٩٥ رقم ٥٧)

कब गुनाहों से कनारा में कर्ज़गा या रभ

नेक कब औं मेरे अट्लाह बनूंगा या रभ

कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा

कब मैं भीमार मदीने का बनूंगा या रभ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐसे काम न करो के लोग गीबत करें : भीठे भीठे ईस्लामी त्माईयो ! अवाम व भवास हर अक को चाहिये के मोहतात जिन्दगी गुज़ारें ऐसे मुबाह आ'माल व अइआल से भी अपने आप को बचायें जो के इत्ते बाबे गीबत या'नी गीबत का दरवाज़ा खुलने का सबब बनें इस जिम्न में इतावा र-जविय्या जिल्द 21 सईहा 612 ता 616 पर अक इरसी सुवाल जवाब (जिस का तरजमा भी वही मौजूद है) का अक्सर हिस्सा पेश किया जाता है, इसे पढ कर अन्दाज़ा किया जा सकता है



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (म. १/१६)

के ऐसी ह-र-कते करना किस कदर बुरा है जो मुसल्मानों में गीबतों, तोहमतों और बह गुमानियों और आपसी नफ़रतों का सबब बनें युनान्हे मेरे आका आ'ला हजरत, एमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह एमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की भिदमते बा ब-र-कत में सुवाल हुवा : उ-लमाअे शरीअत और मुफ़ितयाने तरीकत एस मस्अले में क्या इरमाते हैं के जैद अक मकाम पर एमामत व नियाबत के इराइज अन्जाम देता है लेकिन जो लोग सुवर और मुदरि का गोशत पका कर एसाइयों (या'नी क्इस्येनों) को भिलाते हैं जैद उन लोगों के घरों से पाना पाता है और कलता है के "मुदरि और सुवर का गोशत एसाइयों (या'नी क्इस्येनों) के लिये पकाने में कोई हरज नही, पकाने के बा'द हाथ धो डले तो पाक हो जाते हैं." शहर के अक्सर लोग जैद के एस तर्ज अमल को देख कर उन लोगों के घरों से पाना पाने लगे हैं जबके कुछ लोग एस अमल से नफ़रत और सप्त एफ़्तिलाइ कर रहे हैं और निजाअ (या'नी इसाद) की सूरत बन गई है. लिहाजा किताबो सुन्नत की रोशनी में बयान इरमाया जाअे के शप्से मजकूर (या'नी जैद) के बारे में क्या शर-ए हुकम है और एस की मुआ-वन्त व एमदाद और एस से तआवुन करने वालों के बारे में शरीअत क्या इरमाती है? يَبْنُونَ تَوَجَّرُوا (बयान इरमाओ ताके अजरो सवाब पाओ)

अल ज्वाब : जैसे निडर, बे भौंफ़ और तक्वा से आरी लोग जो काफ़िरो गैर मुस्लिमों के लिये (सुवर व मुदरि जैसी) बभीस तरीन और नजिस (या'नी नापाक) व हराम चीजों पकाने भिलाने का पेशा एफ़्तियार करते हैं. जैसे लोगों के हां से दीनदारों और तक्वादार लोगों को पाना हरगिज नही पाना याहिये क्यूंके जहां हराम चीजों का एस्ति'माल कसरत से हो वहां भरतनों के नापाक अश्या से आलूदा होने का अेहतिमाल (या'नी शुबा) होता है. और दीनदार व तक्वादार लोगों का जैसे लोगों के हां जाना और उन के हां से जैसे मश्कूक भरतनों में पाना पाना अवामुन्नास की निगाहों में बाईसे एल्लाम व बाईसे तोहमत हो सकता है. हदीस शरीफ़ में है : "जो कोई अल्लाह तआला और कियामत पर एमान रपता है तो वोह मकामाते तोहमत से बये." लिहाजा ऐसी सूरते हाल में एल्लाम, ता'न और तोहमत से बयना जरूरी है ब सूरते दीगर येह एकदाम अपने दीनी भाईयों को कबीरा गुनाहों गीबत, बोहतान, कीना और



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करुंगा. (क़ुरआन)

इरमाते हैं : ईसाईयो (या'नी क्रिस्थेनो) के साथ मिल कर पाना पीना और ईस किस्म के दूसरे काम करना कज़ इतिरत (या'नी बढ अप्लाक) और इतिने भा'उ लोगो का काम छेता है. मज़ीद आगे चल कर इरमाते हैं : और जिस किसी ने येह कडा के सुवर और मुदर का गोशत पकाने और गैर मुस्लिमो को पिलाने से कोई ईर्द नहीं पडता या कुछ मुअ-यका और पतरा नहीं, वोह शप्से मजकूर (या'नी जैद) गलत बात कहने का मुर-तकिब हुवा बिगैर ईल्म व तडकीक के ईस किस्म का ईसला सादिर कर देना हरगिज मुनासिब नहीं, बिगैर शर-ई मजबूरी के गन्दगियो से आलूदा होना सप्त मन्नूअ और ना ज़ाईज है बिल पुसूस ऐसे कामो से परहेज करना बहुत ज़रूरी है जिन का हासिल (या'नी नतीजा) उन कामो की ईस्लाह करने का ईरादा करना है जिन्हें अल्लाह तआला ने बिगाड दिया है और काइरो को पाना पिलाने के लिये मुसल्मानो का अपने हाथो ना ज़ाईज व हराम चीजो को पकाना यकीनन ना ज़ाईज और हराम है. और येह काईदा व उसूल है के जिस चीज का लेना हराम है उस का देना भी हराम है. अल्लाह तआला ने ईशाद इरमाया है : وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और गुनाह और जियादती पर बाडम मदद न दो. (प १६० المائدة २) और अल्लाह तआला पाक, भरतर और सब कुछ जानने वाला है.

छुप के लोगो से किये जिस के गुनाह वोह भबरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देष सर पे तलवार है क्या होना है

म-दनी येनल पर म-दनी मुआ-करा सुनने की म-दनी बहार : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के मु-तअदिद शो'बे हैं जिन के जरीअे दुन्या में ईस्लाम की बहारें लुटाई जा रही हैं, ईन्डीं में अेक शो'बा "म-दनी येनल" भी है जिस के जरीअे दुन्या के कई मुमालिक में T.V. के जरीअे घरों के अन्दर दाबिल हो कर दा'वते ईस्लामी ईस्लाम का पैगाम आम कर रही है. म-दनी येनल दुन्या का वाहिद येनल है जो के सो झीसदी ईस्लामी रंग में रंगा हुवा है, ईस में न इल्में डिरामे हैं न गाने बाजे और न औरत की नुमाईश है न ही किसी किस्म की मूसीकी. سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी येनल के जरीअे कई कुफ़र दामने ईस्लाम में आ चुके हैं, बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ो के पाबन्द बने हैं



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दृढ़ते पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابراهيم)

और ला ता'दाद अफ़राद गुनाहों से ता'ईब हो कर सुन्नतों पर अमल करने लगे हैं. **म-दनी येनल** की ब-र-कतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये ईस की अेक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा हो युनान्चे अेक ईस्लामी भाई ने मुझे बर्की डाक (E.MAIL) के ज़रीअे अेक “म-दनी बहार” पेश की उस का लुब्बे लुबाब है : आज कल येह डाल है के दौराने गुफ़्त-गू अकसर ईस बात का अन्दाज़ा नहीं हो पाता के **गीबत** का सिख़िला शुर्अ हो युका है ! अेक बार हैदरआबाद (बाबुल ईस्लाम सिन्ध) से बाबुल मदीना आअे हुअे अेक ईस्लामी भाई ने यन्द ईस्लामी भाईयों की मौजू-दगी में कहा : मेरे अेक दोस्त ने मुझे बताया के मेरी बहन जो के ईन्तिहाई **गुसीली** तबीअत की है, अगर कभी किसी से नाराज़ हो जाअे तो फुद से बढ कर मुलाकात में पडल नहीं करती, मेरी भाभी और बहन में यन्द मुआ-मलात की बिना पर आपस में यप-कलश हुई और बहन ने बातयीत बन्द कर दी, हुस्ने ईत्तिफ़ाक के उसी रात दा'वते ईस्लामी के डर डिल अज़ीज़ सो डीसदी ईस्लामी **म-दनी येनल** पर “म-दनी मुज़ा-करा” नशर किया गया जिस में **गीबत की तबाह कारियों** से बयने का जेह्न दिया गया था. मेरी बहन ने जब वोड म-दनी मुज़ा-करा सुना तो **مَدَنِي** मेरी वोडी **गुसीली** बहन जो बढ कर किसी से मुलाकात नहीं करती थी अज़फुद आगे बढी और उस ने मेरी भाभी से न सिर्फ़ मुलाकात की बल्के मुआफ़ी भी मांगी और दोनों में सुलह हो गई. **बहार में यार गीबतें** : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अल्मी जो आप ने **म-दनी बहार** मुला-हज़ा की उस के आगाज़ में लिखा है के दौराने गुफ़्त-गू अकसर अन्दाज़ा डी नहीं होता के **गीबत** का सिख़िला शुर्अ हो युका है तो वाकेई अैसा डी है, फुद ईस **म-दनी बहार** में भी 4 गीबतें की गई हैं. अलबत्ता इन गीबतों को “गुनाहों भरी गीबतें” नहीं कहेंगे के गुनाह होने के लिये येह भी ज़रूरी है के वोड किसी **मुअय्यन** या'नी मफ़्सूस इर्द की गीबत हो, यहां म-दनी बहार में अैब के हवाले से सिर्फ़ “बहन” का तज़क़िरा है मगर कौन सी बहन येह तै नहीं है, हो सकता है के काईल की कई बहनों हों. हां जिस के सामने म-दनी बहार बयान की उस को **मुअय्यन** (PARTICULAR) बहन का मा'लूम है या येह ज़ानता है के काईल की अेक डी बहन है और म-दनी बहार भी बिगैर शर-ई ईज़ाज़त के बयान की गई हो तो अब वोड



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमत नाज़िल इरमाता है. (ज़रान)

इरमाने उल्फ़त निशान है : मुजे कोई सहाबी किसी की तरफ़ से कोई बात न पड़ोयाये, में याहता हूँ के तुम्हारे पास साफ़ सीना आया कइं. (سُنَنِ ابُو دَاوُدَ ج ٤ ص ٣٤٨ حديث ٤٨٦٠)

मुहक़िक अलल इत्लाक, जातिमुल मुहदिसीन, हज़रते अल्लामा शैभ अब्दुल हक़ मुहदिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي हदीसे पाक के इस हिससे “मुजे कोई सहाबी किसी की तरफ़ से कोई बात न पड़ोयाये” की वज़ाहत करते हुअे इरमाते हैं : “या’नी किसी की कोताही, फ़े’ले बद, आदते बद, उस ने येह किया या उस ने येह कहा, हुलां इस तरह कल रहा था.” (اشعة السعادت ٤٧ ص ٨٣) हदीस शरीफ़ के इस हिससे “में याहता हूँ के तुम्हारे पास साफ़ सीना आया कइं” का ખुलासा करते हुअे मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَان हज़रते हैं : या’नी किसी की अदावत, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे. येह भी हम लोगों के लिये बयाने कानून है के अपने सीने (मुसल्मानों के कीने से) साफ़ रખो ताके इन में मदीने के अन्वार देखो, वरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सीनअे रलमत, नूरे करामत का गन्जना है वहां कदूरत (या’नी बुग्जो कीने) की पड़ोय ही नही. (मिरआतुल मनाज्जल, ज़ि. 6, स. 472)

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महबबत : مَسْحُحُ اللهِ ! मज़क़ूरा हदीसे मुबारक में वारिद शुदा इशदि गिरामी भीठे भीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा मुबारक की अपने गुलामों से महबबत की अथाह गहराईयों का पता देता है ! मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के त्माईजान, शहन्शाहे सुखन, उस्ताजे ज़मन हज़रते मौलाना हसन रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَان ने कितना प्यारा शे’र कहा है :

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महबबत
है तर्क अदब वरना कहे हम पे इदिदा डो

(ज़ौके ना’त)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

पीर की नजर से मुरीद को गिराने की कोशिश करने वालों को तम्बीह :

मजकूर उद्दीसे पाक से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो के शागिर्द की उस्ताज से, बेटे की बाप से, मुलाजिम की सेठ से, मा तद्दत की निगरान से और मुरीद की उस के पीर साहिब से बिवा मस्वहतते शर-ई कमजोरियां और बुराईयां बयान कर के गीबत का कबीरा गुनाह करने के साथ साथ उस को उन की नजर से गिरा देते हैं, शायद उन्हें इस बात का હોश भी नहीं होता के वोह अइसा कर के कितनी बड़ी खराबियों का बाईस बनते हैं, ज़ाहिर है जब शागिर्द अपने उस्ताद की, मा तद्दत अपने निगरान की और मुरीद अपने पीरो मुर्शिद की नजर से गिर गया तो बेयारे का जो अन्जाम होगा वोह हर जी शुगिर समज सकता है. काश ! येह गीबत करने वाला गीबत करने से कबल खुद अपने लिये गौर कर लेता के अगर मुझे कोई अपने पीर साहिब या दीनी उस्ताज की निगाह से गिरा दे तो मुज पर क्या गुजरे ! अै काश ! पीरो मुर्शिद की नजर से हम कभी भी न गिरें ! सद्द करोड काश ! हम हमेशा हमेशा अपने मुर्शिदे गिरामी की सीधी और भीठी भीठी नजर में रहें :

सदा पीरो मुर्शिद रहें हम से राजी

कभी भी न हों येह भङा या इवाही

आह ! काश हमारे प्यारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हम गुनहगारों से सदा खुश रहें, कभी भी हमें अपनी निगाहे इनायत से दूर न इरमाअें के

न उठ सकेगा कियामत तक पुढा की कसम !

के जिस को तूने नजर से गिरा के छोड दिया

या रब्बे मुस्तफ़ा ﷺ ! हमारी तमाम खताओं को मुआफ़ इरमा दे और हमेशा हम पर रहमत की नजर रख. आह ! अगर तू नाराज हो गया तो हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह ! हम किस के दरवाजे पर जाअेंगे !



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (१७)

गर तू नाराज हुवा मेरी उलाकत होगी छाये में नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !
कर मुआफ़ और सदा के लिये राजी हो जा येह करम होगा तो जन्नत में रहूंगा या रब !

“बडों” को भी चाहिये “छोटों” की गीबत न सुनें : “बडों” या’नी उस्तादों, निगरानों वगैरा की बिदमतों में म-दनी इस्तिजा है के जब कोई शप्स आप के पास आ कर आप के किसी मा तह्त की बिला मस्लहतते शर-ई गीबत करने लगे तो कुदरत होने की सूरत में झौरन उसे रोक दीजिये, वरना गीबत सुनने के गुनाह में पड सकते हैं. अगर गीबत सुन कर आप को गुस्सा आ गया और जभान से “कुछ” निकल गया तो हो सकता है के वोही गीबत करने वाला मुग्ताब को या’नी जिस की गीबत कर रहा था उस को आप के “अल्फ़ाज” पछोंचा दे और फिर मजीद गुनाहों तरे मसाईल पैदा हों. बिलइर्ज गीबत करने वाला आप के पास किसी की बुराई पछोंचाने में काम्याब हो भी गया हो और आप ने भी गीबत से बचने के तरीकों पर अमल न किया हो तो अपनी आभिरत की त्वाई की जातिर हाथों हाथ तौबा और उस के तकाजे पूरे कर लीजिये और गीबत करने वाले पर इन्किरादी कोशिश कर के उसे भी तौबा करवा दीजिये नीज मुग्ताब या’नी जिस की गीबत की गई है उस के मु-तअद्लिक हरगिज बह गुमानी मत कीजिये, न ही उस पर अपनी शइकतें कम कीजिये के आप को जो कुछ किसी के बारे में बताया गया इस का कोई सुभूत भी नहीं, **مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** गीबत करने वाले के जरीअे मिली हुई बात किसी और को बताने का जज्बअे शर पैदा होते ही इस इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जेहन में दोहराईये : **كَفَى بِالْمُرءِ كَذِبًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَسْمَعٍ**. या’नी किसी इन्सान के जूटा होने को येही काफ़ी है के वोह हर सुनी सुनाई बात (बिगैर तहकीक किये) बयान कर दे. (مُقَدِّمَةٌ صَحِيحِ مُسْلِمٍ ص ٨ حديث ٥) फिर इस हदीसे पाक में की हुई मुमा-न-अत के मुताबिक अमल करने की निथ्यत से उस बात को किसी के आगे बयान मत कीजिये वरना फुद भी गीबत व इइक (तोहमत, बोहतान) वगैरा के गुनाहों की आइत में इंस



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे ज़मुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अमाल)

जअंगे. हां जिस की गीबत की गध थी उस की तस्दीक ह्यो ज़ाने पर अख़री अख़री निय्यतें कर के उस मा तह्त की ज़रूर इस्लाह इरमा दीजिये. आप को अगर्थे बज़ाहिर कोध बडाध मिल भी गध ह्यो मगर अल्लाहु कदीर عَزَّ وَجَلَّ की फुइया तदबीर से हमेशा डरते रहिये, महुज़ रस्मी कलामी नहीं दिल् की गहराध से आजिज़ी आजिज़ी और आजिज़ी करते रहिये, अपनी कम मा-यगी व बे बिज़ा-अती (या'नी कम हैसिय्यती) का अे'तिराफ़ करते हुअे बारगाहे रिसालत में अर्ज़ कीजिये

पाक मुज में कमाल रफ़्मा है मुस्तफ़ा ने संभाल रफ़्मा है
मेरे अैबों पे डाल कर पढा मुज को अख़रों में डाल रफ़्मा है

तेरा अे'जज़ कफ़ का मर जाता

तेरे टुकडों ने पाल रफ़्मा है

युगुल फोर कभी सय्या नहीं हो सकता : ज़ब भी आप के पास कोध आ कर किसी की गीबत करे उस पर हरगिज़ अे'तिमाद मत कीजिये, क्यूंके गीबत करने के सबब वोह इंसिक ह्यो जाता है और इंसिक की फ़बर मो'तबर नहीं ह्योती. हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन शिहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अेक मर्तबा फ़ादशाह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक के पास तशरीफ़ इरमा थे के अेक शफ्स आया, फ़ादशाह ने कदरे ना गवारी के साथ उस से कहा : "मुजे पता यला है तुम ने मेरे फ़िलाफ़ इलां इलां फ़ात की है !" उस ने जवाब दिया : मैं ने तो अैसा कुछ नहीं कहा. फ़ादशाह ने इसरार करते हुअे कहा : जिस ने मुजे फ़ताया है, वोह (कैसे जूट बोल सकता है बहूत) सय्या आदमी है. तो हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने फ़ादशाह को मुफ़ातब कर के इरमाया : (आप को जिस ने इस तरह की फ़बर दी वोह तो युगली फ़ाने वाला हुवा और) "युगुल फोर कभी सय्या ह्यो नहीं सकता !" येह सुन कर फ़ादशाह संभल गया और कहने लगा : हुज़ूर ! आप ने बिल्कुल बज़ा इरमाया. फिर उस शफ्स से कहा : احياء العلوم ج 3 ص 193



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर दुइद शरीफ पढो अद्लाह एउजल तुम पर रहमत भेजेगा. (अिन सदी)

सख्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का तर्ज अमल :

अमीरुल मुअमिनीन उजरते सख्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बिदमते बा ब-र-कत में अेक शप्स हाजिर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फी (NEGATIVE) बात की. आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : अगर तुम याहो तो हम तुम्हारे मुआ-मले की तहकीक करें ! अगर तुम जूटे निकले तो इस आयते मुबा-रका के मिस्दाक करार पाओगे :

إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا

(प २६ الحُجرات ६)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : अगर कोई इासिक तुम्हारे पास कोई ખबर लाअे तो तहकीक कर लो.

और अगर तुम सख्ये हुअे तो येह आयते करीमा तुम पर सादिक आअेगी :

هَمَّا نِرًا مَّشَاءً ۚ بِنَبِيٍّ ۝

(प २९ القلم ११)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : बहृत ता'ने देने वाला बहृत ईधर की उधर लगाता इरने वाला.

और अगर तुम याहो तो हम तुम्हें मुआइ कर दें ! उस ने अर्ज की : या अमीरल मुअमिनीन ! मुआइ कर दीजिये आयन्दा में अैसा (या'नी गीबतें और युगुल खोरियां) नही करुंगा. (अिअै القलुम ज ३ व १९३). अद्लाह एउजल की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मइरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

तुम मेरे पास तीन बुराईयां ले कर आअे : अेक शप्स ने किसी बुजुर्ग की बारगाह में हाजिर हो कर उन्हें उन के दोस्त की कुछ मन्फी (NEGATIVE) बातें बताईं, इस पर उन्होंने ने ईशाद इरमाया : अइसोस ! तुम मेरे पास तीन बुराईयां ले कर आअे : (1) मुजे मेरे ईस्लामी त्वाई से नइरत दिलाई (2) इस वजह से मेरे दिल को (तश्वीशों और वस्वसों में) मशगूल किया और (3) अपने अमीन



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भा.मि.)

नईस पर तोहमत लगाई. (या'नी मैं तुम्हें अमानत दार समजता था मगर तुम तो पेट के डलके निकले !)

(احياء العلوم ج 3 ص 193)

महब्बतों के योरों से बयो : बुजुगाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْبُشَيْرِينَ इरमाते हैं : अक्लों के दुश्मनों और महब्बतों के योरों से बयो, येह योर बढगोई करने वाले और युगली पाने वाले हैं और योर तो माल युराते हैं जबके येह (गीबतें और युग्लियां करने वाले) लोग महब्बतें युराते हैं.

(المستطرف ج 1 ص 101)

जुदा होने तक डालते जिहाद में : डरते सय्यिदुना मन्सूर बिन जालान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَانِ इरमाते हैं : अल्दाड عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मेरे पास उमूमन जो ली आ कर बैठता है वोड जब तक यला न जाये मैं गोया उस के साथ डालते जिहाद में डोता हूं क्यूंके वोड मुजे मेरे दोस्त से मु-तनकिंइर करने (या'नी नइरत दिवाने) से बाज नही रहता, या मेरी गीबत करने वालों की गीबतें मुज़ तक पडोंया कर मुजे तश्वीश में डालता और आजमाईश में मुत्तला करता है. (تنبيه المغتربين ص 196) अल्दाड عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत डो और उन के सहके डमारी मग़्फ़िरत डो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मुजे गीबतों से बया या ईलाडी बयूं युग्लियों से सदा या ईलाडी कभी ली लगाईं न तोहमत किसी पर दे तौंकीके सिद्को वझा या ईलाडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुज पर अक दुइद शरीफ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

म-दनी येनल की बहौलत मौत से 17 दिन कबल धमान मिल गया :

सिद्दीकआबाद (बाबुल मदीना कराची) के अक इस्लामी भाई के बयान का फुलासा है के 20 अप्रील 2009 सि.ई. बरोज पीर शरीफ बाबुल मदीना कराची के रिहाईशी तकरीबन 50 सालह अक गैर मुस्लिम ने जब म-दनी येनल पर इस्लाम की हकीकी ता'लीमात को सुना तो مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मु-तअस्सिर हो कर इस्लाम कबूल कर लिया, उन का इस्लामी नाम मुहम्मद सिद्दीक रखा गया. वोह जुमा'रात को द्वा'वते इस्लामी के आ-लमी म-दनी मर्कज इेजाने मदीना में होने वाले हफतावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शरीक हुअे और مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ आशिकाने रसूल के साथ द्वा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के 12 दिन के म-दनी काइले के मुसाफिर भी बन गअे. म-दनी काइले से वापस आने के दूसरे या तीसरे रोज ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची के नजदीक अक गाडी ने उन्हें कुयल दिया, येह हादिसा ज्ञान लेवा साबित हुवा, यूं वोह इस्लाम की अनमोल दौलत से मालामाल होने के तकरीबन 17 या 18 दिन बा'द ईस दुन्या से रुफ्सत हो गअे. अल्लाह तआला उन की मगिइरत इरमाअे.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

म-दनी येनल की मुहिम है नइसो शैतां के भिलाइ जो भी द्वा'वता करेगा अइतिराइ नइसे अम्मारा पे जर्ब अैसी लगेगी जोरदार के नदामत के सबब होगा गुनहगार अशकवार

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

मरने से कबल कोर सुधरता है तो कोर बिगडता है : مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ पुश नसीब

बन्दे को मौत से सिई 17 या 18 दिन कबल इस्लाम की दौलत नसीब हो गई. अल्लाहु कदीर عَزَّوَجَلَّ की फुइया तदबीर किस के बारे में क्या है येह किसी को नहीं पता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज है, कोई तो अपनी सारी उअ्र कुइ में गुजार दे मगर मरते वक्त धमान की दौलत से सरइराज हो जाअे जब के कोई सारी उअ्र नेकियों में बसर करने के



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (अ. १)

बा वुजूद भ वक्ते रुप्सत बुरे भातिमे से दो यार हो. हम रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ से तलाई का सुवाल करते हैं. अक ईब्रत अंगेज हदीसे पाक मुला-हजा इरमाईये : उम्मुल मुअभिनीन हजरते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है के जब अद्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ तलाई का ईरादा इरमाता है तो उस के मरने से अक साल पडले अक फिरिश्ता मुकरर इरमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है हत्ता के वोह भैर (या'नी तलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : हुलां शप्स अय्ही हालत पर मरा है. जब औसा जुश नसीब और नेक शप्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है. उस वक्त वोह अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाकात को पसन्द करता है और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाकात को. जब अद्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी के साथ बुराई का ईरादा करता है तो मरने से अक साल कब्ल अक शैतान उस पर मुसद्वलत कर देता है जो उसे बहकाता रहता है हत्ता के वोह अपने बह तरीन वक्त में मर जाता है. उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटकने लगती है. उस वक्त येह शप्स अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलने को पसन्द नहीं करता और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मिलने को.

(مُسْتَدْرَأُ فِي رَاهُيَةِ ج 3 ص 303)

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में

मदइन मेरा महबूब के कदमों में बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ईमां की बहार आई इैमाने मदीना में : सुल्तानआबाद (बाबुल मदीना करायी) के अक ईस्लामी त्माई के बयान का लुब्बे लुबाब है के हमारे अलाके में अक गैर मुस्लिम (उम्र तकरीबन 30 साल) अपने दोस्तों के साथ रहता था जिन में कुछ



इरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उरुओ (उस पर दस रइमतें बेजता है. (स्.)

मुसल्मान भी थे, आज कल के अक्सर नौ जवानों की तरह येह लोग भी केबल पर इल्में डिरामे देखा करते थे. जब र-मजानुल मुबारक (1429 सि.हि.) में म-दनी येनल का आगाज हुवा तो केबल पर इस के म-दनी सिक्सिले जारी हुअे, उस गैर मुस्लिम ने जब येह सिक्सिले देभे तो उसे बडे अख्छे लगे. अब वोह अक्सरो बेशतर म-दनी येनल ही देखा करता, म-दनी येनल की ब-र-कत से आभिरे कार वोह कुइ के अंधेरे से नज्जत पाने और इस्लाम के नूर से अपने दिल को यमकाने के लिये द्वा'वते इस्लामी के आ-लमी म-दनी मर्कज इैजाने मदीना हाजिर हुवा, और कलिमा पढ कर मुसल्मान हो गया. इर येह इस्लामी भाई हईतावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में हज्जारों इस्लामी भाईयों और म-दनी येनल के नाजिरीन के सामने सरकारे गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ك़ा मुरीद हो कर कादिरि र-जवी भी बन गया. नमाजे बा जमाअत की पाबन्दी शुरुअ कर दी, येहरे पर दाढी शरीफ़ सजा ली, कभी कभार सज्ज सज्ज इमामा शरीफ़ सर पर सजा कर इस का इैज भी लूटने लगा, द्वा'वते इस्लामी के मद्र-सतुल मदीना (बालिगान) में कुरआने मज्जद पढने का सिक्सिला भी शुरुअ कर दिया. सहाराअे मदीना मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले द्वा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ में भी शरीक हुवा. अल्लाह तआला उन को और हम सब को इमान पर साबित कदम रभे.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

नाय गानों और इल्मों से येह येनल पाक है म-दनी येनल हक बयां करने में भी बेबाक है
म-दनी येनल में नबी की सुन्नतों की धूम है और शैताने लई र-जूर है मग्मूम है

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰى مُحَمَّد

गीबत करने वाले की दुआ कबूल नहीं होती : उतरते सय्यिदुना इकीह अबुल्लैस समर कन्दी الْقَوِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم इरमाते हैं : तीन आदमियों की दुआ कबूल नहीं होती ﴿1﴾ जो माले हराम खाता हो ﴿2﴾ जो ब कसरत गीबत करता हो ﴿3﴾ जो के मुसल्मानों से उसद रभता हो.

(تنبيه الغافلين ص 90)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज़ो शप्स मुज़ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रि)।

जन्नत की ज़मानत : नबियों के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरदारे दो ज़हान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ज-र-कत निशान है : ज़ो शप्स अपने घर में बैठ रहे और किसी मुसल्मान की गीबत न करे तो अद्लाह तआला उस के लिये (जन्नत का) ज़ामिन है.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج 3 ص 46 حديث 3822)

जन्नत में आका का पडोसी : उज़रते सय्यिदुना अबू सईद जुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पुदरी रुज़ी अल्लु त्ताली एनु ने इरमाया : ज़ो शप्स अरुठी तरह नमाज़ पढता हो, उस के अयाल (या'नी घर वाले) ज़ियादा और माल कम हो और वोह शप्स मुसल्मानों की गीबत न करता हो मैं और वोह जन्नत में इन दो की तरह होंगे. (या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अंगुशते शहादत और बीय की उगली मिला कर दिभाया)

(مُسْنَدُ أَبِي يَعْلَى ج 1 ص 428 حديث 986)

“या अद्लाह उमें जन्नत नसीब इरमा” के बाईस दुइइ की निरबत से जन्नत की 22 ज़लकियां

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! मज़कूरा उददीसे पाक में जन्नत के अन्दर मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पडोस पाने का क्या जूब म-दनी नुस्खा बयान किया गया है ! سُبْحَانَ اللهِ ! سُبْحَانَ اللهِ ! जन्नत की अ-जमत की ली क्या ही बात है ! दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-जतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सइहात पर मुशतमिल किताब, “अहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सइहा 152 ता 162 पर तहरीर कर्दा “जन्नत का बयान” में से यन्द ज़लकियां मुला-हज़ा इरमाईये, اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मुंड में पानी आ ज़ाओगा. अद्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत लरी जन्नत की याहत में बेताब हो ज़ाईये और इसे पाने की ज़िदो ज़ुद तेज़ तर कर दीजिये युनान्ये लिभा है : ✨ अगर जन्नत की कोई नाजुन लर यीज़ हुन्या में



इरमाने मुस्तफ़ा عيسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढ़ा तलकीक वोह बढे अप्त हो गया। (उर्रह)

ज्जहिर हो तो तमाम आस्मान व ज़मीन उस से आरास्ता हो जायें और ✨ अगर जन्नती का कंगन (या'नी क्लाई का अेक जेवर) ज्जहिर हो तो आइताब (सूरज) की रोशनी मिटा दे, जैसे आइताब सितारों की रोशनी मिटा देता है ✨ जन्नत की ईतनी जगह जिस में कोडा (याबुक, दुरी) रभ सकें हुन्या व मा झीडा (या'नी हुन्या और इस के अन्दर जो कुछ है उस) से बेहतर है ✨ जन्नत की दीवारें सोने और यांटी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं ✨ जन्नतियों को जन्नत में हर किस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ पाने मिलेंगे, जो चाहेंगे झौरन उन के सामने मौजूद होगा ✨ अगर किसी परिन्द को देख कर उस के गोश्त पाने को जो हो तो उसी वक्त तुना हुआ उन के पास आ जायेगा ✨ अगर पानी वगैरा की ज्वाइश हो तो कूजे जुद हाथ में आ जायेंगे, उन में ठीक अन्दजे के मुवाफ़िक पानी, दूध, शराब, शरूद होगा के उन की ज्वाइश से अेक कतरा कम न जियादा, भा'द पीने के जुद अपुद जहां से आये थे यले जायेंगे ✨ वहां की शराब हुन्या की सी नहीं जिस में बढभू और कडवाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अकल हो जाते हैं, आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं, वोह पाक शराब ईन सब बातों से पाक व मुनज़्जह है ✨ वहां नजसत, गन्दगी, पापाना, पेशाब, थूक, रीठ, कान का मैल, बदन का मैल अस्लन (या'नी बिदकुल) न होंगे ✨ अेक जुशबूदार इरहत अप्श उकार आयेगी, जुशबूदार इरहत अप्श पसीना निकलेगा ✨ सब पाना लज़्म हो जायेगा और ✨ उकार और पसीने से मुश्क की जुशबू निकलेगी ✨ हर वक्त ज़बान से तस्बीह व तकबीर ब कस्द (या'नी इरादतन) और बिला कस्द (या'नी बिला इरादा) भिस्ले सांस के जारी होगी ✨ कम से कम हर शप्स के सिरहाने दस हज़ार जादिम पड़े होंगे, जादिमों में हर अेक के अेक हाथ में यांटी का पियाला होगा और दूसरे हाथ में सोने का और हर पियाले में नये नये रंग की ने'मत होगी, जितना खाता जायेगा लज़्जत में कमी न होगी बल्के जियादती होगी, हर निवाले में सत्तर मजे होंगे, हर मजा दूसरे से मुमताज़, वोह (मजे) मअन (या'नी अेक ही साथ) महसूस होंगे, अेक का अेहसास दूसरे से मानेअ (या'नी रोकने वाला) न होगा ✨ जन्नतियों के न लिबास



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमते बेजता है. (س)

पुराने पउंगे, न उन की जवानी इना होगी ❀ अगर जन्नत का कपडा दुन्या में पहना जाये तो जो देभे बेडोश हो जाये, और लोगो की निगाहें उस का तहम्मूल (या'नी बरदाशत) न कर सकें ❀ अगर कोई डूर समुन्दर में थूक दे तो उस के थूक की शीरीनी (मिठास) की वजह से समुन्दर शीरीं (मीठा) हो जाये और अेक रिवायत है के अगर जन्नत की औरत सात समुन्दरो में थूके तो वोह शहद से जियादा शीरीं (या'नी मीठे) हो जायें ❀ सर के बाल और पलकों और त्भवों के सिवा जन्नती के बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मगीं (या'नी सुरमा लगी) आंभें, तीस बरस की उम्र के मा'लूम होंगे कत्मी इस से जियादा मा'लूम न होंगे ❀ फिर लोग (अल्लाह عزوجل के हुक्म से) अेक बाजार में जायेंगे जिसे मलाअेका घेरे हुअे हें, उस में वोह यीजें होंगी के उन की मिसल न आंभों ने देभी न कानों ने सुनी, न कुलूब (या'नी दिलों) पर उन का पतरा (भयाल) गुजरा, उस में से जो (यीज) याहेंगे, उन के साथ कर दी जायेगी और जरीदो इरोप्त न होगी और ❀ जन्नती उस बाजार में बाहम मिलेंगे, छोटे मर्तबे वाला बडे मर्तबे वाले को देभेगा, उस का लिबास पसन्द करेगा, हुनूज (या'नी अत्मी) गुफ्त-गू पत्म त्मी न होगी के भयाल करेगा, मेरा लिबास उस से अख्श है और येह इस वजह से के जन्नत में किसी के लिये गम नहीं ❀ जन्नती बाहम मिलना याहेंगे तो अेक का तप्त दूसरे के पास यला जायेगा. और उन में अल्लाह عزوجل के नजदीक सब में मुअज्जल वोह है जो अल्लाह तआला के वजहे करीम के दीदार से हर सुब्ह व शाम मुशररफ़ होगा ❀ जब जन्नती जन्नत में जा लेंगे अल्लाह عزوجل उन से इरमायेगा : कुछ और याहते हो जो तुम को दूं? अर्ज करेंगे : तूने हमारे मुंह रोशन किये, जन्नत में दाभिल किया, जहन्नम से नजात दी. उस वक्त पर्दा, के मख्लूक पर था उठ जायेगा तो दीदारे धलाही से बढ कर उन्हें कोई यीज न मिली होगी.

اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا زِيَارَةَ وَجْهِكَ الْكَرِيمِ بِجَاهِ حَبِيبِكَ الرَّؤُوفِ الرَّحِيمِ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالتَّسْلِيمُ، آمين!
(तरजमा : या अल्लाह عزوجل अपने डबीभ रउिकुर्रहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالتَّسْلِيمُ के सदके अपना दीदार नसीब इरमा, आमीन)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढे भप्त हो गया. (हिन)

अल्लाह करम बहरे जिया मुज पे कर ऐसा

जन्नत में पडोसी मेरे आका का बना दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

تُوبُوْا اِلَی اللّٰهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

दूरें पाने का अमल : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गीबतों और गुनाहों त्परी बातों से जान छुडाईये और खुद को जन्नत का हकदार बनाईये. थोडी सी ज्बान यलाईये, **اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ** ज्बान पर लाईये और जन्नत की दूरें पाईये. युनान्चे अक बुरुर्ग **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** ने यालीस साल तक अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** की ईबादत की. अक बार हुआ की : या अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ! तेरी रहमत से मुजे जो कुछ जन्नत में मिलने वाला है उस की कोई जलक हुन्चा में त्पि टिभा दे. अत्पि हुआ ज्परी थी के यकदम मेहराब शक हुई और उस में से अक हसीना व ज्पमीला दूर भरआमद हुई, उस ने कडा के तुजे जन्नत में मुज जैसी सो दूरें ईनायत की ज्पअेंगी, जिन में हर अक की सो सो षाटिमाअें और हर षाटिमा की सो सो कनीजें होंगी और हर कनीज पर सो सो नाजिमाअें (या'नी ईन्तिजाम करने वालियां) होंगी. येह सुन कर वोह बुरुर्ग षुशी के मारे जूम उठे और सुवाल किया : क्या किसी को जन्नत में मुज से जियादा त्पि मिलेगा ? ज्पवाब मिला : ईतना तो हर उस आम जन्ती को मिलेगा जो सुह्र व शाम **اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ** पढ लिया करता है. (رَوْضُ الرَّیَاحِیْنِ ص ००)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

मुसल्मानों की आबज़ वगैरा दूसरे मुसल्मान पर हराम है : नबियों के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरदारे दो ज्पहान, महबूबे रहमान **وَسَلَّمَ** **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** का इरमाने ईब्रत निशान है : मुसल्मान की सब चीजें मुसल्मान पर हराम हैं ईस का माल और ईस की आबज़ और ईस का जून. आदमी को बुराई से ईतना



इरमाने मुस्तफ़ी : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे क़ियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अबुअर्रह्म)

ही काफ़ी है के वोह अपने मुसल्मान भाई को हकीर जाने. (सुन्नै अबुदाउ ज ६ व ३०६ हदीथ ६८८२)

तक़ब्बुर किसे कहते हैं : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अपने से किसी को हकीर जानना तक़ब्बुर कहलाता है, तक़ब्बुर अक तो भुद उराम है मज़ीद इस की वजह से गीबत का गुनाह भी सरअद होता है. मगरूर आदमी जिस को हकीर जानता है उस की हंसी उडाता है अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 11 में इरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۗ (پ २६ الحجرات ११)

तर-ज-मअ कन्जुल इमान : अै इमान वालो ! न मई मई से हंसे, अजब नही के वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औरतें औरतों से, दूर नही के वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों.

किसी को हकारत से मत देणो : हउरते सय्यिहुना इमाम अहमद बिन हजर मक़ी शाफ़े इ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस आयत के तहत इरमाते हैं : “सुप्रियह” से मुराद येह है के जिस की हंसी उडाई जाअे, उस की तरफ़ हकारत से देणना. इस हुकमे भुदावन्दी عَزَّ وَجَلَّ का मक़सद येह है के किसी को हकीर न समजो, हो सकता है वोह अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नजदीक तुम से बेहतर, अइजल और जियादा मुकर्रब हो. युनान्ये सरकारे अबद करार, शाफ़ेअे रोजे शुमार, बि इज्ने परवई गार दो आलम के मालिको मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने भुशूदार है : “कितने ही परेशान डाल, परागन्दा बालों और इटे पुराने कपडों वाले अैसे हें के जिन की कोई परवाह नही करता लेकिन अगर वोह अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ पर किसी बात की कसम भा लें तो वोह उरूर उसे पूरा इरमा दे.” (हदीथ ३८८० ६०९ व ७ ६०९ हदीथ ३८८०) इब्लीसे लईन ने हउरते सय्यिहुना आदम सफ़िय्युद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हकीर जाना तो अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उसे हमेशा हमेशा के लिये षसारे (या'नी नुक़सान) में मुत्तला कर दिया और हउरते सय्यिहुना आदम सफ़िय्युद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इज्जत के साथ काम्याब हो गअे, इन दोनों में



इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह उसे पर दस रउमतें बेजता है. (मु.)

बडा इर्क है. यहां एस मा'ना का भी अेहतिमाल (ईम्कान) है के किसी दूसरे को उकीर न जाने क्यूंके मुश्किन है के वोह अजीज (या'नी ईज्जत वाला) हो जाये और तू जलील हो जाये फिर वोह तुज से ईन्तिकाम ले.

لَا تُهَيِّنَنَّ الْفَقِيرَ عَـلَىٰ أَنْ

تَرْكَعَ يَوْمًا وَالذُّهْرُ قَدْ رَفَعَهُ

या'नी : इकीर (या'नी गरीब आदमी) की तौडीन न कर शायद तू किसी दिन इकीर (या'नी गरीब) हो जाये और जमाने का मालिक उसे अमीर कर दे.

(الرَّوَاظِرُ عَنِ الْكَبَائِرِ ج ٢ ص ١١)

मुसल्मान कौन ? मुहाजिर कौन ? : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मुसल्मान के लिये ज़रूरी है के उस की ज़ात से किसी मुसल्मान को किसी तरह की भी नाहक तकलीफ न पड़ोये, न एस का माल लूटे, न ईज्जत खराब करे, न एसे ज़डे न एसे मारे नीज **मुसल्मानों** को आपस में जगउने से क्या वासिता ! येह तो अेक दूसरे के मुहाजिर होते हैं, युनान्हे अल्लाह के मखबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने हिदायत निशान है : (कामिल) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तकलीफ न पड़ोये और (कामिल) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज को छोड दे जिस से अल्लाह तआला ने मन्अ इरमाया है.

(صَحِيحُ بُخَارِي ج ١ ص ١٥ حَدِيث ١٠)

ईस हदीसे पाक के तहत मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हज़रते मुइती अहमद यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَيْرَان इरमाते हैं के कामिल **मुसल्मान** वोह है जो लु-गतन (या'नी लु-गवी अे'तिबार से) और शरअन (भी) हर तरह मुसल्मान हो. (और) वोह **भोमिन** है जो किसी मुसल्मान की गीबत न करे, गाली, ता'ना, युगली वगैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के खिलाइ कुछ तहरीर करे. मजीद इरमाते हैं के कामिल **मुहाजिर** वोह मुसल्मान है जो तर्के वतन के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोडना भी लु-गतन (या'नी लु-गवी अे'तिबार से)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुज पर दुर्रह शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عمران)

खिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी.

(मिरआतुल मनाज्जह, जि. 1, स. 29)

ईशारे से तकलीफ़ देना भी जाईज नहीं : सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक़कअे मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : किसी मुसल्मान को जाईज नहीं के वोह किसी मुसल्मान को भौइजदा करे. (سُنَن ابوداؤد ج ٤ ص ٣٩١ حديث ٥٠٠) ओक मकाम पर ईशाई इरमाया : मुसल्मान के लिये जाईज नहीं के दूसरे मुसल्मान की तरफ़ आंभ से ईस तरह ईशारा करे जिस से तकलीफ़ पछोये.

(الرُّهْدُ لِابْنِ مُبَارَكٍ ص ٢٤٠ رقم ٦٨٩، إتحاف السادة للزيدي ج ٧ ص ١٧٧)

दिल खिदा देने वाली ખारिश : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मुसल्मान को यूं तो तकलीफ़ व ईजा देना बहुत ही आसान लगता है. उस को जाउ दिया ईस को लताउ दिया, उस की गीबत कर दी ईस पर तोहमत जउ दी, लेकिन नाराजिये रब्बुल ईज्जत की सूरत में आभिरत में येह सब बहुत भारी पउ जाअेगा, युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "जुल्म का अन्जाम" सफ़हा 21 पर है : उजरते सय्यिदुना यजीद बिन श-जरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : जिस तरह समुन्दर के कनारे छोते हैं ईसी तरह जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में भुप्ती गोटों जैसे सांप और भय्यरों जैसे बिच्छू रहते हैं. अहले जहन्नम जब अजाब में कमी के लिये इरियाद करेंगे तो हुकम होगे कनारों से बाहर निकलो वोह जू ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें छोटों और येहरों से पकड लेंगे और उन की भाल तक उतार लेंगे वोह लोग वहां से भयने के लिये आगे की तरफ़ भागेंगे फिर उन पर भुजली मुसल्लत कर दी जाअेगी वोह ईस कदर भुज्जअेंगे के उन का गोशत पोस्त सब उउ जाअेगा और सिर्फ़ लड्डियां रह जाअेंगी, पुकार पडेगी : अै हुलां ! क्या तुजे तकलीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां. तो कहा जाअेगा : येह उस ईजा का भदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था.

(التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهيبُ ج ٤ ص ٢٨٠ حديث ٥٦٤٩)



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (अहवाल)

औं पासअे पासाने रुसुल वक्तुे हुआ है उम्मत पे तेरी आ के अजब वक्त पडा है
तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोथ हां अेक हुआ तेरी के मकबूले जुदा है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जशने विलादत की ब-र-कत से किस्मत जुल गर्ध : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों बरा सफ़र कीजिये, काम्याब जिन्दगी गुजारने और आपिरत संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना फ़िके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवायये और आशिकाने रसूल के साथ मिल कर जशने विलादत की जूब धूमें मयायये ईस की ब-र-कत के ली कया कलने ! शहर तराड कइल जिलअ सद हनोती (कश्मीर) के अेक ईस्लामी भाई के बयान का जुलासा है : रबीउन्नूर शरीफ़ (1430 हि.) की बारहवीं शब हमारे यहां की मस्जिद में जशने विलादत की जुशी में सज्ज जन्डे और यरागां की तरकीब की ज़ा रही थी. दर्री अस्ना यार अफ़राद जो के नशाबाज थे मस्जिद के ईमाम साहिब की भिदमत में हाजिर हो कर अर्ज गुजार हुअे : हम नशा करने की तय्यारी कर ही रहे थे के जयाल आया आज ईद मीलाहुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रात ली कया हम नशे का गुनाह करेंगे ! क्यूं न हम तौबा कर लें. लिहाजा आप के पास हाजिर हुअे हैं. युनान्ये उन्हों ने तौबा की और मस्जिद में होने वाले जशने विलादत की बहारें लूटने में शरीक हो गअे. ईमाम साहिब ने दा'वते ईस्लामी के जिम्मेदारान से राबिता किया, ईस्लामी भाई मस्जिद पलोंये और उन्हों ने उन से पुर तपाक तरीके पर मुलाकात की और हाथों हाथ म-दनी काफ़िले के जइवल के मुताबिक उन की तरबियत शुरुअ कर दी, उन का सीपने सिपाने का शौक दीदनी था. مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ

जशने विलादत की ब-र-कत से यारों ने नमाजों की पाबन्दी निभाने, दाढी मुबारक



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत
है. (ابوعلى)

सजाने, 63 रोज़ा सुन्नतों भरे तरबियती कोर्स की सआदत पाने और मसाजिद आबाद इरमाने वगैरा वगैरा नेकियां बजा लाने की अच्छी अच्छी नियतें लीं कीं, नीज़ घर वालों समेत सिक्सिलअे आलिया कादिरिया र-जविया में दाभिल हो कर अत्तारी हो गये. येह बयान देते वक्त दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हुअे उन्हें अल्मी यन्द ही रोज़ा हुअे हैं और वोह इस वक्त सुन्नतों की तरबियत के 12 दिन के म-दनी काइले में आशिकाने रसूल के उमराह सुन्नतों भरे सहर में हैं.

पूज जूमो अै गुनहगारो तुम्हारी ईद हे

हो गया बप्शिश का सामां ईद मीलाहुन्नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

यरागां देभ कर काइर ने इस्लाम कबूल कर लिया : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो! देभा आप ने! जशने विलादत की ली कया पूज म-दनी बहारें हैं, आशिकाने रसूल जशने विलादत मनाते हैं जल्मी तो उन नशा भाओं को इस रहमतों भरी रात का पता यला और उन के दिल में अेडतिराम पैदा हुवा और सीधे अैसी मस्जिद में पड़ोये जहां जशने विलादत का यरागां हो रहा था और सज्ज सज्ज परयम लहरा रहे थे. जशने विलादत के यरागां की तो कया बात है. अेक इस्लामी भाई ने मुझे बताया के अेक बार जशने विलादत के मौकअ पर मस्जिद को सजा कर दुल्हन बनाया हुवा था, अेक गैर मुस्लिम करीब से गुजरा उस ने सजावट के बारे में मा'लूमात की जब उसे बताया गया के हम ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादत की पुशी में येह अजीमुश्शान यरागां किया है, तो उस का दिल नबिय्ये आभिरुज्जमां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अ-जमत से लभरेज हो गया के आज विलादत को 1500 साल गुजर गये इस के बा वुजूद मुसल्मान अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का इस कदर तुज्को अेडतिशाम से जशने विलादत मनाते और अपनी मस्जिदों और घरों को यूं सजाते हैं तो बस येही दीन सय्या है. اِنَّ اَوْلَادَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ उस ने कुई से तौबा की, कलिमा पढा और हल्का बगोशे इस्लाम हो गया.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है. (गुरान)

जशने विलादत का यरागां : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 561 सइहात पर मुशतमिल किताब, "मल्जूआते आ'ला उजरत" (मुकम्मल) सइहा 174 पर है : अर्ज : मीलाह शरीफ़ में आउ (या'नी प-जशाआ मशअल), इनाूस¹, इर्रश² वगैरा से जैओ जीनत ईस्राफ़ है या नहीं ? ईशाह : उ-लमा इरमाते हैं : لَا خَيْرَ فِي الْإِسْرَافِ وَلَا إِسْرَافَ فِي الْخَيْرِ : (या'नी ईस्राफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के कामों में खर्य करने में कोई ईस्राफ़ नहीं.) जिस शै से ता'जीमे जिक शरीफ़ मकसूद हो, हरगिज मन्ूअ नहीं हो सकती.

अेक उजार शम्में : ईमाम गजाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي) ने अेहयाउल उलूम शरीफ़ में सय्यिद अबू अली इज्जबारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से नकल किया के अेक अन्दअे सालेह ने मजलिसे जिक शरीफ़ तरतीब दी और उस में अेक उजार शम्में रोशन कीं. अेक शप्स आहिर बीन पडोये और येह कैफ़ियत देअ कर वापस जाने लगे. आनिये मजलिस ने हाथ पकडा और अन्दर ले जा कर इरमाया के जे शम्में में ने गैरे जुदा के लिये रोशन की हो वोह जुआ दीजिये. कोशिशें की जाती थीं और कोई शम्में ठन्डी न होती.

(احياء العلوم ج ٢ ص ٢٦ ملخصاً)

लहराओ सव्व परयम अै आका के आशिको !

धर धर करो यरागां के सरकार आ गअे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

داينيه

1. अेक डिस्म का शम्में दान जिस पर पिजरे की शकल का आरीक कपडा या कागज बढा होता है जे घुमाने या हवा के जोर पर गर्दिश करता है.
2. येह इर्शा की जम्में है. या'नी यूने वगैरा से जमीन की सतह हमवार करना.



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रडमते नाज़िल इरमाता है. (ज़रान)

हकीकी मुफ़लिस : पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार

ने صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सडाभअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़सार इरमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़लिस कौन है ? सडाभअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : हम में मुफ़लिस

(या'नी गरीब भिस्कीन) वोड है जिस के पास न द्दिरहम हों और न ही कोई माल. तो

इरमाया : मेरी उम्मत में मुफ़लिस वोड है जो कियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले

कर आयेगा लेकिन उस ने कुलां को गाली दी होगी, कुलां पर तोडमत लगाई होगी, कुलां

का माल जाया होगा, कुलां का पून बडाया होगा और कुलां को मारा होगा. पस उस की

नेकियों में से उन सब को उन का डिस्सा दे दिया जायेगा. अगर उस के जिम्मे आने वाले

हुकूक के पूरा होने से पहले उस की नेकियां भत्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये

जायेंगे, इर उसे जहन्नम में इंक दिया जायेगा. (صحيح مسلم ص 1394 حديث 2081)

आह ! कियामत के रोज़ क्या होगा !! : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! उर

जाओ ! लरज उठो ! हकीकत में मुफ़लिस वोड है जो नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात व

स-दकात, सभावतों, इलाही कामों और बडी बडी नेकियों के बा वुजूद कियामत में

भाली का भाली रह जाये ! कभी गाली दे कर, कभी तोडमत लगा कर, बिला

इजाजते शर-ई अंट कर, बे इज़्ज़ती कर के, जलील कर के, मारपीट कर के, आरियतन

(या'नी आरिज़ी तौर पर) ली हुई यीज़ें कस्दन न लौटा कर, कर्ज़ दबा कर और दिल्

दुभा कर जिन को दुन्या में नाराज़ कर दिया होगा वोड उस की सारी नेकियां ले जायेंगे

और नेकियां भत्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का भोज उस पर डाल कर

वासिले जहन्नम कर दिया जायेगा. लिहाज़ा अगर किसी की गीबत कर ली है और

उस को पता चल गया है या किसी तरह की भी हक त-लफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ

दुन्या ही में जिस की हक त-लफ़ी की है उस से बिगैर शरमाये मुआफ़ी तलाफ़ी कर लेने

में आइय्यत है. मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम

अहमद रज़ा भान رَحْمَةُ الرَّحْمٰن عَلَيْهِ इतावा र-जविय्या जिल्द 24 सफ़हा 463 पर इरमाते

हैं : यहां (दुन्या में) मुआफ़ कर लेना सड्ल (या'नी आसान) है, कियामत के दिन



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

ईस की उम्मीद मुश्किल के वहां हर शप्स अपने अपने डाल में गिरिफ़तार, नेकियों का तलब गार (और) बुराईयों से बेजार होगा. पराई नेकियां अपने हाथ आते अपनी बुराईयां उस (या'नी दूसरे) के सर जाते किसे बुरी मा'लूम होती हैं ! यहां तक के उद्दीस में आया है के मां बाप का बेटे पर कुछ दैन (छुकक का मुता-लबा) आता होगा उसे रोजे कियामत पीटेंगे के हमारा दैन (हक) दे ! वोह कहेगा : मैं तुम्हारा बग्या हूं, या'नी शायद रइम करें, वोह (या'नी वालिदैन) तमन्ना करेंगे काश ! और जियादा (हक) होता (ताके बेटे से नेकियां ले कर या अपने गुनाह उस के सर डाल कर अपनी जलासी करवाओं.) त-भरानी में ईबने मसूदिद عَنهُ اللهُ تَعَالَى से रिवायत है, उन्हों ने कहा के मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से सुना के आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ इरमा रहे थे के वालिदैन का बेटे पर दैन होगा कियामत के रोज वालिदैन बेटे पर लपकेंगे तो बेटा कहेगा : मैं तुम्हारा बेटा हूं ! तो वालिदैन को हक दिलाया जायेगा और वोह तमन्ना करेंगे काश ! हमारा हक और आईद होता¹ जब मां बाप का येह डाल तो औरों से उम्मीद जाम जयाल (या'नी कुजूल जयाल), हां करीम व रहीम मालिको मौला جَلَّ جَلَالُهُ وَتَبَارَكَ وَتَعَالَى जिस पर रइम इरमाना याहेगा तो यूं करेगा के हक वाले को बे बहा कुसूरे जन्नत (या'नी जन्नत के आलीशान महल्लात) मुआ-वजे में अता इरमा कर अइवे हक (या'नी हक मुआइ करने) पर राजी कर देगा. अक करिशमअे करम में दोनों का लला होगा ! न ईस की ह-सनात (या'नी नेकियां) उसे दी गई न उस की सय्यियात (या'नी बढियां) ईस के सर रभी गई न उस का हक जायेअ होने पाया बल्के हक से हजारों द-रजे बेहतर अइजल पाया, रइमते हक की बन्दा नवाजी (बी भूब के) आलिम नाज्ज (या'नी नजात पाये और) मजलूम राजी (हो जाये), فَلِلَّهِ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضَى (पस अल्लाह तआला ही के लिये है ऐसी हम्दो सना जो बहुत जियादा, पाकीजा और बा ब-र-कत है जैसा के हमारे रब की पसन्द और रिजा है)

या ईलाही ! जब पडे महशर में शोरे दारोगीर²

अमन देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

1 : ۱۰۰۲۶ - حدیث ۲۱۹ ص ۱۰۱ المَعَجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ۱ 2 : शोरे दारोगीर या'नी पकड धकड का शोर



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज़ पर दुइदुहे पाक न पड़े. (१७)

मैं ने अपनी ईज़्ज़त लोगों पर स-दका की : भीठे भीठे ईस्लामी लाईयो ! गीबत अक ऐसी आफ़त है के ईस से बहुत ही कम मुसल्मान मलफ़ूज़ होंगे, हमें गीबत और दीगर गुनाहों से बचने और दूसरों को बचाने की भरपूर सअ्य करनी चाहिये गीबत का अक सबब ज़ती बुग्ज़ व अदावत और नफ़रत भी है जिस का ईलाज अइव या'नी मुआइ करना है ईस को यूं समजिये के आप की ईज़्ज़त या ज़ान या माल को किसी ने नुकसान पड़ोयाया हो जिस की वजह से उस की नफ़रत आप के दिल में बैठ गई हो और आप हर जगह हर मौकअ पर उस की गीबत करते फिरते हों। यकीनन ईस तर्ज अमल से आप को मुसल्सल आभिरत का नुकसान होता रहेगा, तो आइकियत ईसी में है के नाराज़ी बाकी रबने के बजाअे मुआइ करने की आदत बनाई जाअे ताके रन्जिशे और ना इत्तिफ़ाकिय्या परवान ही न यठ सके اللهُ سُبْحَانَ اللهُ अल्ले बा'ज़ बुजुगानि दीन رَحْمَتُهُمُ اللهُ الْبَرِيَّةِ से तो येह भी साबित है के वोह पेशगी ही अपने हुकूक मुआइ कर दिया करते थे. युनान्ये ईस की तरगीब दिलाते हुअे रसूले बे मिसाल, साहिबे जूदो नवाल, हबीबे रब्बे जुल जलाल, भीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कसरत के साथ येह ईशदि इरमाते : क्या तुम में से कोई अक ईस बात से आजिज है के वोह अबू जमज़म की तरह हो. उन्हों ने अर्ज़ की : अबू जमज़म कौन है ? ईशदि इरमाया : पहले लोगों (या'नी पिछली उम्मत) में अक शप्स था वोह सुबह के वक्त यूं कलता : या अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मैं ने आज के दिन अपनी ईज़्ज़त को उस आदमी पर स-दका कर दिया जो मुज़ पर जुल्म करे. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٦ ص ٢٦١ حديث ٨٠٨٢)

पेशगी मुआइ करने वाले की मग़ि़रत हो गई : अक मुसल्मान ने बारगाहे पुढा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ में अर्ज़ की : या अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मेरे पास माल नहीं के मैं स-दका करूं तो जो शप्स मेरी ईज़्ज़त के दरपै हो तो येह मेरी तरफ़ से उस पर स-दका है. अद्लाह तआला ने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ वहुय त्मेज के मैं ने ईस शप्स को अप्श दिया. (احياءُ الْعُلُومِ ج ٣ ص ٢١٩)

ईमामे मजलूम की अपनी ईज़्ज़त के मु-तअद्लिक सभावत : ईमामे मजलूम हज़रते सय्यिदुना ईमाम जैनुल आबिदीन وَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब अपने घर से निकलते तो कहते : अै अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मैं आज स-दका करूंगा और वोह येह के आज जो मेरी गीबत करे उस को मैं ने अपनी ईज़्ज़त दे दी. (حياة الحيوان الكبرى ج ١ ص ٢٠٢)



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جیس نے મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દો સો બાર દુરૂદે પાક પઢા ઉસ કે દો સો સાલ કે ગુનાહ મુઆફ હોંગે. (کفرال)

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! શહહાદએ આલી વકાર સચ્ચિદુના ઈમામ ઝૈનુલ આબિદીન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે ઈશાદિ ગિરામી કે મા'ના યેહ હૈં કે આજ કે રોઝ મેરી ગીબત કરને વાલે સે દુન્યા વ આખિરત મેં બદલા નહીં લૂંગા. ઈસ સે મુરાદ હરગિઝ યેહ નહીં કે ગીબત કરના જાઈઝ હો ગયા. ગીબત બ દસ્તૂર ગુનાહ હી રહેગી ઔર ઈસ કી તૌબા ભી વાજિબ હોગી. નીઝ કોઈ યેહ ન સમઝે કે જિસ ને નફરત વ અદાવત ઔર બુઝઝ વ કીને સે બચને કે લિયે પેશગી હુકૂક મુઆફ કર દિયે હોં ઉસ કે હુકૂક તલફ કરના જાઈઝ હો જાતા હૈ ! યાદ રહે કે પેશગી મુઆફી બિલા શુબા એક મુસ્તહ્સન (યા'ની પસન્દીદા) અમલ હૈ લેકિન ઈસ કે બા વુજૂદ સાહિબે મુઆ-મલા યા'ની જો કે અપને હુકૂક પેશગી મુઆફ કર ચુકા હૈ ઉસ કે હક તલફ હોને પર મુતા-લબે કા હક બાકી રહતા હૈ. હાં જો હુકૂક ઝમાનએ સાબિકા (યા'ની ગુઝરે હુએ દિનો) મેં તલફ કિયે જા ચુકે હોં ઉસ કો મુઆફ કર દેંગે તો હક્કુલ ઈબાદ (યા'ની બન્દે કે હુકૂક) મુઆફ હો જાએંગે અલબત્તા અબ ભી હુકૂકુલ્લાહ (યા'ની અલ્લાહ جَلَّ وَجَلَّ કે હુકૂક) ઝિમ્મે બાકી રહેંગે ઔર ઉન કે લિયે તૌબા ઝરૂરી હોગી બહર હાલ હમેં યાહિયે કે અફવો દર ગુઝર કો ઈખ્તિયાર કરેં ઔર ન સિર્ફ પેશગી મુઆફી કા ઝેહ્ન બનાએ બલકે અબ તક જિન લોગોં ને હમારે હુકૂક તલફ કિયે ઉન્હેં ભી રિઝાએ ઈલાહી جَلَّ وَجَلَّ કે લિયે મુઆફ કર દે. મુઆફ કરને કે ફઝાઈલ કી ભી કયા બાત હૈ ઈસ ઝિમ્ન મેં દો રિવાયાત મુલા-હઝા હોં યુનાન્યે

1 મુઆફ કરને કી અઝીમુશ્શાન ફઝીલત : દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ 32 સફહાત પર મુશ્તમિલ રિસાલે “ગુસ્સે કા ઈલાજ” સફહા 32 પર હૈ : કિયામત કે રોઝ એ'લાન કિયા જાએગા જિસ કા અજ અલ્લાહ جَلَّ وَجَلَّ કે ઝિમ્મએ કરમ પર હૈ, વોહ ઉઠે ઔર જન્નત મેં દાખિલ હો જાએ. પૂછા જાએગા કિસ કે લિયે અજ હૈ ? વોહ કહેગા : “ઉન લોગોં કે લિયે જો મુઆફ કરને વાલે હૈં.” તો હઝારોં આદમી ખડે હોંગે ઔર બિલા હિસાબ જન્નત મેં દાખિલ હો જાએંગે.

(الْمَغْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٥٤٢ حديث ١٩٩٨)

2 જન્નત પાને કે તીન³ નુસ્બે : દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ 48 સફહાત પર મુશ્તમિલ રિસાલે “ના યાકિયોં કા ઈલાજ” સફહા 28 તા 29 પર હૈ : હઝરતે સચ્ચિદુના અબૂ હુરૈરા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મરવી હૈ, રસૂલુલ્લાહ صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ને ફરમાયા : તીન³ બાતે જિસ શખ્સ મેં હોંગી અલ્લાહ



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर हुइइ शरीफ़ पढो अल्लाह एउजल तुम पर रहमत भेजेगा.

(अिन मदी)

तआला (डियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान तरीके से लेगा और उस को (अपनी रहमत से) जन्नत में दाखिल इरमाओगा. मैं ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कौन सी बातें हैं? इरमाया : ﴿1﴾ जो तुम से कत्अे तअल्लुक करे (या'नी तअल्लुक तोडे) तुम उस से मिलाप करो ﴿2﴾ जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और ﴿3﴾ जो तुम पर जुल्म करे तुम उस को मुआफ़ कर दो.

(الْمَعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ١ ص ٢٦٣ حديث ٩٠٩)

इजरते मौलाना इम इरमाते हैं :

توبرائے وصل کردن آمدی

توبرائے فصل کردن آمدی

(या'नी तू जोड पैदा करने के लिये आया है तोड पैदा करने के लिये नहीं आया)

म-दनी वसियतें : ! الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ : सगे मदीना ग्फ़ी ने रिआओे ँलाही पाने की नियत से अपने कर्जदारों को पिछले कर्जों, माल युराने वालों को योरियों, हर अेक को गीबतों, तोइमतों, तज़लीलों, जर्बों समेत तमाम ज़ानी माली हुकूक मुआफ़ किये और आयन्दा के लिये भी तमाम तर हुकूक पेशगी ही मुआफ़ कर दिये हैं युनान्ये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना का मत्बूआ 16 सफ़हात पर मुशतमिल रिसाला "म-दनी वसियत नामा" सफ़हा 10 पर इज़्जत व आभइ और ज़ान के मु-तअल्लिक है : मुजे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे (गीबतें करे), ज़म्मी कर दे या किसी तरह भी हिल आज़ारी का सभब बने में उसे अल्लाह एउजल के लिये पेशगी मुआफ़ कर युका हूं, मुजे सताने वालों से कोई इन्तिकाम न ले. बिलइर्ज कोई मुजे शहीद कर दे तो मेरी तरफ़ से उसे मेरे हुकूक मुआफ़ हैं. वु-रसा से भी दर-प्वास्त है के उसे अपना हक मुआफ़ कर दें (और मुकदमा वगैरा दाइर न करें). अगर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत के सटके महरूम में पुसूसी करम हो गया तो इन् शफ़ाअत अपने कातिल या'नी मुजे शहादत का ज़ाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता ज़ाउंगा बशर्ते के उस का ज़ामान पर हुवा हो. (अगर मेरी शहादत अमल में आओे तो इस की वजह से किसी क्स्म के हंगामे और इउतालें न की ज़ाओें. अगर "इउताल" इस का नाम है के लोगों का कारोबार ज़बर दस्ती बन्द करवाया ज़ाओे. नीज हुकानों और गाडियों पर पथराव वगैरा हो. तो बन्दों की ओसी हक



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (मू०)

त-लङ्घियों को कोई भी मुफ़्तिये ईस्लाम जाँच नहीं कर सकता. इस तरह की उतावलाहुराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. इस तरह के जजबाती ईकदामात से दीन व दुन्या के नुक़सानात के सिवा कुछ हाथ नहीं आता. उमूमन उतावली जल्द ही थक जाते हैं और बिल आबिर इन्तिजामिया उन पर काबू पा लेती है.)

उरुरी वजाहत : कतले मुस्लिम में शरअन तीन हुकूक हैं : १) उक्कुल्लाह २) उक्के मक्तूल ३) उक्के वु-रसा. मक्तूल ने अगर जिन्दगी में पेशगी मुआफ़ कर दिया हो तो सिर्फ़ उसी का एक मुआफ़ होगा, उक्कुल्लाह से जलासी के लिये सख़्खी तौबा करे, उक्के वु-रसा का तअल्लुक सिर्फ़ वारिसों से है वोह याहें तो मुआफ़ करें, याहें तो किसास लें. अगर दुन्या में मुआफ़ी या किसास की तरकीब न बनी तो कियामत के रोज़ वु-रसा अपने एक का मुता-लबा कर सकते हैं.

सदका प्यारे की उया का के न ले मुज से डिसाब

बपश बे पूछे लजाअे को लजाना क्या है

मैं ने इल्यास कादिरि को मुआफ़ किया : तमाम ईस्लामी भाईयों और ईस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आजिजाना अर्ज करता हूँ के अगर मैं ने आप में से किसी की गीबत की हो, तोहमत धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी तरह से हिल आजारी की हो मुझे मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ इरमा दीजिये. दुन्या का बडे से बडा उक्कुल अब्द जो तसव्वुर किया जा सकता है इर्ज कीजिये के वोह मैं ने आप का तलफ़ कर दिया है वोह भी और छोटे से छोटा एक जो ज़अेअ किया हो उसे भी मुआफ़ कर दीजिये और सवाबे अज़ीम के उकदार बनिये. हाथ बांध कर म-दनी इल्तिज़ा है के कम अज़ कम अक बार हिल की गहराई के साथ कह दीजिये : “मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी को मुआफ़ किया.”

कर्ज प्वाहों से म-दनी इल्तिज़ा : जिस का मुज पर कर्ज आता हो या मैं ने कोई चीज़ आरियतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते ईस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या गुलाम ज़ाहों से रुजूअ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआफ़ी की लीक से नवाज़ कर सवाबे



इरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुअं पर अेक दुइद शरीफ पढता है अल्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज्ज लिपता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

आभिरत का हकदार बने. जो लोग मेरे मककतुल हें, उन को मैं ने अपने तमाम जाती कर्जे मुआफ़ किये. या ठलाही

तू बे हिसाब बफ़श के हें बे हिसाब जुर्म
देता हूं वासिता तुअे शाहे छिज्जत का

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ! أَسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दिल का दर्द दूर हो गया : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाओं और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्-आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इकडे मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. आप की तरगीब के लिये अेक म-दनी बहार पेशे भिदमत है युनान्ये पक्का कल्ला हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के अेक इस्लामी भाई का कुछ इंस तरह का बयान है : अयानक मेरे दिल में दर्द हुवा. जब दवाओं से झाअेदा न हुवा तो बाबुल मदीना करायी आ कर जिन्नाह अस्पताल में दिल का ओपरेशन करवाया. मगर तकलीफ़ खत्म होने के बजाअे मजीद बढ गइ, दर्द की बे शुमार दवाअें इस्ति'माल कीं, लेकिन झाअेदा न हुवा. आभिरे कार अेक इस्लामी भाई की इन्किरादी कोशिश के नतीजे में आशिकाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइले में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गया. म-दनी काइले में किसी किसम की दवा इस्ति'माल की न ही परहेजी की. अल्लाह उरस म-दनी काइले में सफ़र की ब-र-कत से अल्लाह तआला ने मेरे मरज को दूर कर दिया.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिज़्कार करते रहेंगे. (अ.५)

दिल में गर दर्द हो, या के सर दर्द हो पाओगे सिद्धते, काङ्किले में यलो

ऑपरेशन टलें, और शिङ्गाओं मिलें कर के छिम्मत यलें, काङ्किले में यलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

दिल का बातिनी मरज बाईसे उलाकत है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा

आप ने ! म-दनी काङ्किले की भी कैसी कैसी ब-र-कतें हैं ! म-दनी काङ्किले की ब-र-कत

से दिल का आहिरि दर्द दूर हो गया, बातिनी अमराज वालों के صَلَّوْا عَلَی اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दिल का

बातिनी मरज भी म-दनी काङ्किले की ब-र-कत से दूर होगा. भुदा की कसम ! आहिरि

दर्द के मुकाबले में दिल का बातिनी मरज करोड़ों द-र-जे अतरनाक है. बल्के दोनों में

मुमा-सलत की कोई सूरत ही नहीं. दिल का आहिरि दर्द सभ्र करने वाले के लिये सभबे

दुभूले जन्त है जब के दिल का बातिनी मरज दुन्या व आभिरत में बाईसे उलाकत

है. बातिनी मरज को ईस रिवायत से समजने की कोशिश इरमाईये युनान्चे

दिल का सियाह नुक्ता : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल

मदीना की मत्बूआ 1548 सङ्कहात पर मुश्तमिल किताब, "ईजाने सुन्नत"

जिल्द अव्वल सङ्कहा 920 ता 921 पर है : उदीसे मुबारक में आता है : जब कोई

ईन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर अक सियाह नुक्ता बन जाता है, जब

दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक्ता बनता है यहां तक के उस का

दिल सियाह हो जाता है. नती-जतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज

नहीं होती.

(तफ़सीरु र्मन्थोर ज ८ व ६६)

नसीहत का असर न होने की वजह : अब आहिर है के जिस का दिल ही जंग

आलूद और सियाह हो युका हो उस पर भलाई की बात और नसीहत कहां असर

करेगी ! जैसे ईन्सान का गुनाहों से बाज व बेजार रहना निहायत ही दुश्वार हो

जाता है, उस का दिल नेकी की तरफ़ माईल ही नहीं होता, अगर वोह नेकी की तरफ़



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर एक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह عزوجل (उस पर दस रहमतें भेजता है. (س)

आ ली गया तो बसा अवकात उस का जो इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे म-दनी माहोल से भागने ही की तदबीरें सोयता है. उस का नईस उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, गइलत उसे घेर लेती और वोह बह नसीब सुन्नतों भरे म-दनी माहोल से दूर जा पडता है.

गुनाहों ने मेरी कमर तोड डाली मेरा डर में डोगा क्या या ईलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सडका गुनाहों से डर दम बया या ईलाही

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जबान का गलत ईस्ति'माल कब्र में ईसा सकता है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अल्लाह عزوجل की फुइया तदबीर किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता वोह याहे तो सगीरा गुनाह पर पकड इरमा ले और याहे तो ढेरों गुनाह ली मुआइ इरमा दे और याहे तो किसी अक अखे अमल के सबब अपने दामने रहमत में ले ले युनान्ये डउरते सयिदुना अबू बक शिब्ली बगदादी رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي इरमाते हैं : मैं ने अपने मईम पडोसी को प्वाब में देष कर पूछा, ' مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ' ? अल्लाह عزوجل ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? वोह बोला : मैं सप्त डोल नाकियों से दो यार हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात ली मुज से नहीं बन पड रहे थे, मैं ने दिल में जयाल किया के शायद मेरा जातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! ईतने में आवाज आई : "दुन्या में जबान के गैर जउरी ईस्ति'माल की वजह से तुजे येह सजा दी जा रही है." अब अजाब के इरिशते मेरी तरइ बढे. ईतने में अक साहिब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअत्तर मुअत्तर थे वोह मेरे और अजाब के दरमियान



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

हाथल हो गये. और उन्हों ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी तरह जवाबात दे दिये, الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ अजाब मुज से दूर हुवा. मैं ने उन भुजुर्ग से अर्ज की : अद्लाह एَزَّوَجَلَّ आप पर रहम इरमाओ आप कौन हैं ? इरमाया : “तेरे कसरत के साथ दुरद शरीफ पढने की ब-र-कत से मैं पैदा हुवा हूँ और मुझे हर मुसीबत के वक्त तेरी इमदाद पर मामूर किया गया है.” (الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص २६०)

आप का नामे नामी ओ सल्ले अला

हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कभ्र में आका क्यूं नहीं आ सकते ! : سُبْحَانَ اللهِ ! कसरते दुरद शरीफ की ब-र-कत से मदद करने के लिये कभ्र में जब इरिशता आ सकता है तो तमाम इरिशतों के ली आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ करम क्यूं नहीं इरमा सकते ! किसी ने बिदकुल बजा तो इरियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराउंगी जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आका रोशन मेरी तुरबत को लिल्लाह शहा करना जब नज़्म का वक्त आये दीदार अता करना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पुल सिरात पर रोक दिया जायेगा : मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इब्रत निशान है : जो शप्स मुसल्मान पर कोई बात कहे उस से मक्सूद औब लगाना हो, अद्लाह तआला उस को पुल सिरात पर रोकेगा जब तक उस थीज से न निकले जो उस ने कही.

(سُنَنِ ابُو دَاوُدَ ج ٤ ص ٣٥٤ حَدِيث ٤٨٨٣)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا لڑکے لڑવા اور اس نے مجھ پر دڑدے پاک نہ پڑا
તલકીક વોહ બદ બખ્ત હો ગયા. (ઈબ્ન)

પુલ સિરાત સે ગુઝરને વાલોં કે મુખ્તલિફ અન્દાઝ : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! દેખા આપ ને ! કિસી પર ઐબ લગાના કિતની ખતરનાક ખાત હૈ ! તલવાર કી ધાર સે તેઝ બાલ સે બારીક જહન્નમ પર બને હુએ પુલ સિરાત પર રોક દિયા જાના, ખુદા કી કસમ ! બહુત બડી સઝા હૈ. પુલ સિરાત કે મુતઅલ્લિક એક હદીસે પાક મુલા-હઝા હો યુનાન્થે ઉમ્મુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا સે મરવી હૈ, મેરે સરતાજ, સાહિબે મે'રાજ, મહબૂબે રબ્બે બે નિયાઝ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : જહન્નમ પર એક પુલ હૈ જો બાલ સે ઝિયાદા બારીક ઓર તલવાર સે તેઝ તર હૈ, ઉસ પર લોહે કે આંકડે (યા'ની હુક) ઓર કાંટે હૈં જો કે ઉસે પકડેંગે જિસે અલ્લાહ તઆલા યાહેગા. લોગ ઉસ પર ગુઝરેંગે, બા'ઝ પલક ઝપકને કી તરહ, બા'ઝ બિજલી કી તરહ, બા'ઝ હવા કી તરહ, બા'ઝ બેહતરીન ઓર અચ્છે ઘોડોં ઓર ઊંટોં કી તરહ (ગુઝરેંગે) ઓર ફિરિશ્તે કહતે હોંગે : “رَبِّ سَلِّمْ، رَبِّ سَلِّمْ” ઐ પરવર્દ ગાર સલામતી સે ગુઝાર, ઐ પરવર્દ ગાર સલામતી સે ગુઝાર. બા'ઝ મુસલ્માન નજાત પાએંગે, બા'ઝ ઝખ્મી હોંગે, બા'ઝ ઓધે હોંગે, બા'ઝ મુંહ કે બલ જહન્નમ મેં ગિર પડેંગે. (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٩ ص ٤١٥ حَدِيث ٢٤٨٤٧) તફ્સીલી મા'લૂમાત કે લિયે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કા મત્બૂઆ રિસાલા “પુલ સિરાત કી દહશત” (48 સફહાત) કા ઝરૂર મુતા-લઆ ફરમાઈયે બલકે અપને અઝીઝોં કે ઈસાલે સવાબ કે લિયે તક્સીમ ફરમાઈયે.

યા ઈલાહી જબ યલૂં તારીક રાહે પુલ સિરાત આફતાબે હાશિમી નૂરુલ હુદા કા સાથ હો
યા ઈલાહી જબ સરે શમશીર પર યલના પડે રબ્બે સલ્લિમ કહને વાલે ગમઝુદા¹ કા સાથ હો

યા ઈલાહી ! નામએ આ'માલ જબ ખુલને લગે
ઐબ પોશે ખલક સત્તારે ખતા કા સાથ હો

1. ગમઝુદા યા'ની ગમ દૂર કરને વાલા



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रइमतें बेजता है. (मु.)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ !
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ !
أَسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ !
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

किसी की तकलीफ़ टेभ कर भुश न डों : अल्लाह के ध्यारे लबीभ, लबीबे लबीभ, तबीभों के तबीभ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने डभ्रत निशान है : अपने भाई की शुमातत न कर (या'नी उस की मुसीबत पर डंजलारे मुसरत न कर) के अल्लाह तआला उस पर रइम करेगा और तुजे उस में मुब्तला कर देगा.

(सुन्न त्रिमुडी ज ६ व २२७ हदिथ २०१)

किसी की मुसीबत पर भुश डोने की मिसालें : भीठे भीठे डस्लामी भाईयो ! शुमातत या'नी मुसल्मान की तकलीफ़ पर भुशी के डंजलार से परडेज कीजिये. अगर किसी मुसल्मान की मुसीबत पर दिल में भुद भभुद भुशी पैदा हुई तो डस का कुसूर नहीं ताडम डस भुशी को दिल से निकालने की लरपूर सभ्य करे अगर भुशी का डंजलार करेगा तो शुमातत का मुर-तकिभ डोगा. आज कल शुमातत के नज़्जारे आम हैं. अेक तालिबे डल्म पढाई में कभजोर डो ज़ाभे, डम्तिडान में नाकाम डो ज़ाभे तो भा'ज अवकात दूसरा तालिबे डल्म भुश डो ज़ाता है. डसी तरड किसी डडे ना'त भ्वान की आवाज भैठ ज़ाभे तो कभी डोटा ना'त भ्वान राजी डोता है, यूं डी कुरा (या'नी कारी साडिडान) मुभस्लिगीन, मुकर्ररीन, कारीगरों, दुकानदरों, कारभानेदरों वगैरा वगैरा के दिल में आज कल अकसर अेक दूसरे के भिलाइ "शुमातत" का मजूम जजभा दाभिल डो ज़ाता है. अगर आपस में नाराजी डो ज़ाभे इर तो शुमातत की आइत भ आसानी इरीकैन के दिलों में दाभिल डो ज़ाती है. डस के भा'द जेडून येड भन ज़ाता है म-सलन जिस से नाराजी डोती है अगर वोड या उस का बर्या भीमार डो ज़ाभे, उस के यडं डका पड ज़ाभे, माल योरी डो ज़ाभे, कारोभार डप डो ज़ाभे, घर डे (या'नी गिर) पडे, डाडिसा डो ज़ाभे, मुकदमा काईम डो ज़ाभे,



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلِيٌّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શાપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (جران)

પોલીસ ગિરિફતાર કર લે, ગાડી કા નુકસાન યા ચાલાન હો જાએ, અલ ગરઝ કિસી કિસ્મ કી ભી મુસીબત આએ ઈસ પર બા'ઝ લોગ ખુશી કા ઈઝહાર કર કે શુમાતત કી આફત મેં જા પડતે હેં બલ્કે બા'ઝ જો કે ઝરૂરત સે ઝિયાદા બાતૂની ઓર બે અમલ હોને કે બા વુજૂદ અપને આપ કો “પહોંચા હુવા” સમઝ બૈઠતે હેં વોહ તો યહાં તક બોલ પડતે હેં કે દેખા ! હમ કો સતાયા તો ઉસ કે સાથ “ઐસા” હો ગયા ! ગોયા વોહ છુપી બાતોં ઓર સર બસ્તા (યા'ની ખુફયા) રાઝોં કે જાનને વાલે હેં ઓર આં બદૌલત (યા'ની ઈન) કો અપને મુખાલિફ પર આને વાલી મુસીબત કે અસ્બાબ મા'લૂમ હો જાતે હેં, ઐસે લોગોં કો ડર જાના ચાહિયે કે હુજજતુલ ઈસ્લામ હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ ગઝાલી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي أَوْلِيَاءِهِ ઓહયાઉલ ઉલૂમ જિલ્દ અવ્વલ સફહા 171 પર ફરમાતે હેં : કહા ગયા હૈ કે કુઇ ગુનાહ ઐસે હેં જિન કી સઝા “બુરા ખાતિમા” હૈ હમ ઈસ સે અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી પનાહ ચાહતે હેં. યેહ ગુનાહ “વિલાયત ઓર કરામત કા ઝૂટા દા'વા કરના હૈ.”

મ-દની ! ગુનાહ કી આદતેં નહીં જાતીં આપ હી કુઇ કરેં

મેં ને કોશિશેં કી બહુત મગર મેરી હાલત આહ ! બુરી રહી

તીન³ કામ નહીં કર સકતે તો યૂં કર લો : એક દાના કા કૌલ હૈ કે અગર તીન કામ કરને સે આજિઝ હો તો ફિર તીન કામ યૂં કર લો (1) અગર ભલાઈ નહીં કર સકતે તો બુરાઈ સે ભી રુક જાઓ (2) અગર લોગોં કો નફઅ નહીં દે સકતે તો તક્લીફ ભી મત દો (3) અગર નફલી રોઝા નહીં રખ સકતે તો (ગીબત કર કે) લોગોં કા ગોશત ભી મત ખાઓ.

(تنبيه الغافلين ص ٨٩)

મુસલ્માન કી ઈઝ્ઝત બુઝુર્ગોં કી નઝર મેં : એક બુઝુર્ગ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ફરમાતે હેં : “હમ ને અસ્લાફ (યા'ની ગુઝશ્તા બુઝુર્ગોં) કો દેખા કે વોહ હઝરાત લોગોં કી બે ઈઝ્ઝતી કરને સે બચને કો નમાઝ રોઝે સે બઢ કર ઈબાદત તસવ્વુર કિયા કરતે થે.”

(دَمَّ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٩٤ رقم ٥٥)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (११)

दुन्या जलान की दौलत अेक तरफ़ और गीबत अेक तरफ़ : उजरते सय्यिदुना वल्लूभ मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكُوفَى इरमाते हैं : दुन्या की आफ़रीनिश (या'नी पैदाईश) से ले कर इना होने तक की तमाम दुन्यवी ने'मतें भी बिलइर्ज मेरे पास हों और मैं उन्हें राहे जुदा غَزْوَجَل में लुटा दूं तब भी इतने बडे अजीम सवाब के काम के मुकाबले में बेहतर येह समजता हूं के गीबत छोड दूं. इसी तरह दुन्या और इस की तमाम ने'मतों को अल्लाह غَزْوَجَل की राह में लुटाने से बेहतर समजता हूं के अल्लाह غَزْوَجَل की हराम कर्दा अश्या की ज़ानिब मेरी नज़र न उठे. इस के बा'द पारह 26 सू-रतुल हुजुरात की आयत नम्बर 12 का येह डिस्सा तिलावत किया :

لَا يَعْتَبُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا

(٢٦ البُحْرَانِ ١٢)

तर-ज-मअे क-ज़ुल इमान : अेक दूसरे की गीबत न करो.

और पारह 18 सू-रतुनूर की आयत नम्बर 30 का येह डिस्सा तिलावत किया :

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَعْضُوا مِنْ

أَبْصَارِهِمْ (١٨ النُّورِ ٣٠)

तर-ज-मअे क-ज़ुल इमान : मुसल्मान मर्दों को हुकम हो अपनी निगाहें कुछ नीची रभें.

(تَنْبِيْهُ الغَافِلِيْنَ ص ٨٩)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْنِ की गीबत वगैरा गुनाहों से किस कदर नफ़रत करते थे, वोह उजरात जानते थे के अल्लाह ग़ुनाह पर ही आबिरत में पकड हो गइ तो जुदा की कसम ! सप्त रुस्वाइ का सामना होगा और अगर जिन्दगी में अेक ही बार गीबत की और मुग्ताब (या'नी जिस की गीबत की गइ उस) को मा'लूम हो गया और उस से मुआइ करवाना रह गया और उस पर बरोअे कियामत गिरिइत कर ली गइ तो न जाने क्या बनेगा ! आह ! हुक़ुल इबाद का मुआ-मला बहुत सप्त है.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अज़ाज़)

हरनिया के दद का भातिमा : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये जिक्कुल्लाह की कसरत का जजबा बढाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आपिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. **إِنَّ الدِّينَ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** इस से दीनो दुन्या की ढेरों त्तराईयां हाथ आअेंगी और रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** ने याहा तो बीमारियों से भी शिक़ाअें मिलेंगी. इस जिम्न में अेक म-दनी बहार मुला-हजा इरमाइये. युनान्ये बाबुल मदीना करायी के अेक इस्लामी त्तराई के बयान का तुलासा है, मेरा हरनिया का ओपरेशन हुवा था लेकिन 12 माह गुजर जाने के बा वुजूद तकलीफ़ ब दस्तूर बाकी थी, मुप्तलिक़ किस्म की दवाअें इस्ति'माल की, डॉक्टरों को भी दिभाया मगर इअेदा न हुवा. अेक दिन अेक इस्लामी त्तराई ने म-दनी काइले में सफ़र की दा'वत दी तो मैं ने उन से कहा, त्तराई साडिब ! मेरे साथ येह बीमारी लगी हुई है और आप हजरात मस्जिद में इशर पर सोते हैं इस से मेरी तकलीफ़ बढ जाअेगी. उस इस्लामी त्तराई ने मुज पर काइी इन्किरादी कोशिश की यहां तक के मेरा जेहन बन गया और मैं म-दनी काइले में सफ़र के लिये तय्यार हो कर आलमी म-दनी मर्कज इैजाने मदीना हाजिर हो गया. **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने तीन दिन के म-दनी काइले में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सफ़र की सआदत हासिल की मेरा हरनिया का वोह दद जो किसी दवा को जवाब नही दे रहा था **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी काइले के दौरान ही अत्तम हो गया.

हरनिया का हो दद इस से हो रंग जद मत डरें यल पडें, काइले में यलो

रडमतें लूटने ब-र-कतें लूटने आइये ना यलें काइले में यलो

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مباريات)

बीमारी की इज़ीलत : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हरनिया का दई जो किसी दवा से न जाता था म-दनी काइले में सफ़र की ब-र-कत से यला गया.

देखिये शिफ़ा मिन जानिबिल्लाह عَزَّوَجَلَّ या'नी शिफ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मिलती है, बिलइरज़ किसी का म-दनी काइले में दई न भी जाये और बीमारी दूर न भी हो तब भी दिल बरदाश्ता नहीं होना चाडिये, बीमारी के इजाएल पर नज़र रभते हुअे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाडिये.

युनान्ये द्वा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अक्वल सफ़हा 802 पर है : रसूलुल्लाह

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने बीमारियों का जिक्र इरमाया और इरमाया के मोमिन जब बीमार हो इर अख़ा हो जाये, उस की बीमारी गुनाहों से कफ़ारा हो जाती है और आयन्दा के लिये नसीहत और मुनाफ़िक जब बीमार हुवा इर अख़ा हुवा, उस की मिसाल ग़िंट की है के मालिक ने उसे बांधा इर षोल दिया तो न उसे येह मा'लूम के क्यूं बांधा, न येह के क्यूं षोला ! अेक शप्स ने अरज़ की :

يا رَسُوْلَ اللهِ (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ! बीमारी क्या थीज है, मैं तो कभी बीमार न हुवा ? इरमाया : हमारे पास से उठ जा के तू हम में से नहीं.

(سُنَنِ ابُو داوُد ج ٣ ص ٢٤٥ حديث ٣٠٨٩)

मैं अपने षेरुल वरा के सदके, मैं उन की शाने अता के सदके

भरा है अैबों से मेरा दामन, हुज़ूर इर भी निभा रहे हें

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ثُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शक़ाअत करुंगा. (क़ुरआन)

अेक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "जुल्म का अ-जाम" सईछा 11 ता 13 पर हज़रते अल्लामा अब्दुल वल्लुह शा'रानी قُدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي की किताब "तम्भीडुल मुग़तरीन" के इवाले से नक़ल किया गया है : मशहूर ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना वल्लुह बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : अेक इस्राईली शप्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस तरह बन्दगी करता रहा के दिन को रोज़ा रभता और रात को जाग कर इबादत करता, न कोई उम्दा गिज़ा खाता न किसी साअे के नीचे आराम करता. उस के इन्तिकाल के बा'द किसी ने प्वाब में देष कर पूछा : ? مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ? इरमाया ? जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मेरा हिसाब लिया, इर सारे गुनाह बप्श दिये मगर अेक लकडी जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाजत के बिगैर दांतों में बिलाव कर लिया था (और येह मुआ-मला हुक़ुल इबाद का था) और वोह मुआइ करवाना रह गया था उस की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं."

(تَنْبِيْهُ الْمُعْتَرِيْنَ ص ٥١)

गेहूं का दाना तोडने का उप्पवी नुकसान : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! ज़रा गौर तो कीजिये ! अेक तिन्का जन्नत में दाबिले से मानेअ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'भूली लकडी के बिलाव की तो बात ही कहां है. बा'ज लोग दूसरों के लाभों बलके करोड़ों रुपै हउप कर जाते हैं और उकार तक नहीं लेते. अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इदायत इनायत इरमाअे. आमीन. अेक और इब्रत नाक हिकायत मुला-हज़ा इरमाईये जिस में सिई अेक गेहूं के दाने के बिला इजाजत खाने के नहीं सिई तोड डालने के उप्पवी नुकसान का तज़क़िरा है. युनान्ये मन्कूल है के अेक शप्स को बा'द वफ़ात किसी ने प्वाब में देष कर पूछा : ? مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ? इरमाया ? कहा : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे बप्श दिया, लेकिन हिसाबो किताब हुवा यहां तक के उस दिन के बारे में ली मुज से पूछगछ हुई जिस रोज़ मैं रोजे से था और अपने अेक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब इफ़तार का



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا لڑکھو اور اس نے مجھ پر دھڑکے پاક نہ پڑا۔
તહકીક વોહ બદ બખ્ત હો ગયા. (અન. ૧)

અલબત્તા કિસી શર-ઈ વજહ સે ગઝબનાક હોના સહીહ હૈ. (تَنْبِيهِ الْمُغْتَرِّينَ ص ۱۹۳)

ગીબત કરને વાલે કો સમજાને કા એક નયા અન્દાઝ : ! اذبحرته

સચ્ચિદુના શૈખ અબ્દુલ વહ્હાબ શા'રાની فَيَسِّرْ سِرَّهُ التَّوْرَانِي ने કિતને પ્યારે અન્દાઝ મેં

સમજાયા હૈ આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ઈશાદિ ગિરામી સે હમેં યેહ ભી દર્સ મિલ રહા હૈ કે

અગર ગીબત કરને વાલે કે સાથ જવાબી કારવાઈ કી ગઈ તો નફરત કી દીવાર મઝીદ

મઝબૂત હો જાએગી, ફસાદ બઢેગા ઓર અગર ઉસ કો મહબ્બત સે સમજાને કી

કોશિશ કી ગઈ તો اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ વોહ ગીબત હી સે બાઝ આ જાએગા. દા'વતે ઈસ્લામી

કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કા મત્બૂઆ રિસાલા, “ના ચાકિયોં કા ઈલાજ”

સફહા 22 તા 23 પર હૈ : યેહ ઉસૂલ યાદ રખિયે કે નજાસત કો નજાસત સે નહીં,

પાની સે પાક કિયા જાતા હૈ લિહાઝા અગર કોઈ આપ કે સાથ નાદાની ભરા સુલૂક કરે

તબ ભી આપ ઉસ કે સાથ મહબ્બત ભરા સુલૂક કરને કી કોશિશ ફરમાઈયે اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

ઈસ કે મુસ્બત નતાઈજ દેખ કર આપ કા કલેજા ઝરૂર ઠન્ડા હોગા. વલ્લાહિલ મુજીબ

! عَزَّوَجَلَّ વોહ લોગ બડે ખુશ નસીબ હેં જો ઈંટ કા જવાબ પથ્થર સે દેને કે બજાએ ઝુલ્મ

કરને વાલે કો મુઆફ કર દેતે ઓર બુરાઈ કો ભલાઈ સે ટાલતે હેં. બુરાઈ કો ભલાઈ

સે ટાલને કી તરગીબ કે ઝિમ્ન મેં પારહ 24 सू-રએ حَمَّ السَّجْدَةِ કી 34 વીં આયતે

કરીમા મેં ઈશાદ હૈ :

ادْفَعْ بِالتِّي هِيَ اَحْسَنُ فَاذَا الْاَزِي

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : ઐ સુનને વાલે !

بَيْنِكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ

બુરાઈ કો ભલાઈ સે ટાલ જભી વોહ કે તુઝ મેં

(پ ۲۴ حَمَّ السَّجْدَةِ ۳۴)

حَبِيْمٌ

ઓર ઉસ મેં દુશ્મની થી ઐસા હો જાએગા જૈસા

કે ગહરા દોસ્ત.

યશ્મે કરમ હો ઐસી કે મિટ જાએ હર ખતા

કોઈ ગુનાહ મુઝ સે ન શૈતાં કરા સકે



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मक़द़ि)

अद्लाहु ज़ब्बार एज़्ज़ुल की फ़ुया तदबीर का शिकार : उजरते सय्यिदुना

भक मु-अनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَمِي इरमाते हैं : जब तुम किसी शप्स को देपो के वोह लोगो के औभो का वकील बना हुवा है (या'नी सब की पोलें भोलता और गीबते करता फिरता है) तो जान लो के वोह अद्लाहु एज़्ज़ुल का दुश्मन है और अद्लाहु ज़ब्बार एज़्ज़ुल की फ़ुया तदबीर का शिकार है. (تَنْبِيهِ الْمُعْتَرِينَ ص 197)

सामने कुछ पीछे कुछ : उजरते सय्यिदुना बिशरे हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكافي इरमाते हैं :

उन लोगो पर तअज्जुब है जो पीछे से तो इस्लामी भाईयो की गीबत कर के उन की इज्जत की धजियां उडाते हैं मगर जब सामने आते हैं तो भूष महब्बत का इज्जत करते और उन की ता'रीफ़ शुर्अ कर देते हैं. (تَنْبِيهِ الْمُعْتَرِينَ ص 197)

निफ़ाक से नइरत : जब उजरते सय्यिदुना इमाम ज़ाफ़रे सादिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق़ी इरमाते हैं :

तारिकुदुन्या (या'नी गोशा नशीन) हो गये तो उजरते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी ने हाजिरे भिदमत हो कर कहा : तारिकुदुन्या होने से मप्लूक आप के हुयूओ भ-रकात से महरूम हो गय है ! आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने इस के जवाब में मुन्द-र-जअे ज़ैल दो शे'र पढे

نَهَبَ الْوَفَاءَ ذَهَابَ أَمْسِ الدَّاهِبِ وَالنَّاسُ بَيْنَ مَخَابِلٍ وَمَارِبِ

يُفْشُونَ بَيْنَهُمُ الْمَوَدَّةَ وَالْوَفَا وَقُلُوبُهُمْ مَحْشُوءَةٌ بِعَقَارِبِ

या'नी वफ़ा किसी जाने वाले कल की तरह यली गय और लोग अपने भयालात में गरक हो कर रह गये. लोग यू तो अक दूसरे के साथ इज्जत व वफ़ा करते हैं लेकिन उन के दिल अक दूसरे के भुजो कीना के बिश्चूओ से लभरेज हैं ! (تَذَكُّرَةُ الْاَوْلِيَاءِ ص 22)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا لیک لُوا اور اُس نے مُجھ پر دُرُودِ شَرِیْکِ نِ پڑھا اُس نے جَکّا کِی. (عمران)

आज कल निफ़ाक का अन्दाज़ : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने !

सय्यिदुना इमाम ज़ा'इरे सादिक **رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِقِ** लोगों की मुना-इकत वाली रविश से तंग आ कर अलवत (तन्हाई) में तशरीफ़ फ़रमा हो गये. उस पाकीजा दौर में भी येह सूरते डाल होने लगी थी तो अब तो जो डाल बे डाल है उस का किस से शिक्वा कीजिये. आह ! आज कल तो अक्सर लोगों का डाल ही अजब हो गया है जब बाहम मिलते हैं तो अके दूसरे के साथ निडायत ता'ज़ीम के साथ पेश आते और जूब डाल अडवाल पूछते हैं, हर तरह की जातिर दारी और जूब मेहमान दारी करते हैं कभी ठन्डी बोतल पिला कर निडाल करते हैं तो कभी याय पिला कर, पान गुटके से मुंह लाल करते हैं. ज आहिर हंस हंस कर ज़ुश कलामी व कीलो काल करते हैं मगर अपने दिल में उस के बारे में ज़ुज व मलाल रअते हैं, इसी लिये तो मिलने वाले जू ही ज़ुदा होते हैं उन की गीबतें शुज़अ कर देते हैं, उन के उयूब बयान कर के हंसते हैं के कुलां शप्स अैसा है कुलां वैसा है कुलां शप्स को क्या हो गया है उमेशा बन ठन कर फिरता है और कुलां शप्स की याल कैसी अजब है के देज कर हंसी आती है और कुलां शप्स कितना बे डया है के उस की बातों को बयान करने ही से उम को शर्म आती है और कुलां शप्स मग़्ज़र मा'लूम होता है के लोगों से बातें बहुत कम करता है और कुलां शप्स बे वुकूफ़ है लोगों से बात करने की तमीज़ नहीं रअता और कुलां शप्स अजब मस्बरा है के गोया हीजडा हो ! कुलां बहुत शरारती है, कुलां मेरे पैसे जा गया है, अरे वोड तो पक्का 420 है.

गीबतो युगली की आइत से बयें

येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाईये

आहिरो बातिन उमारा अक डो

येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाईये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوْبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرِ اللهُ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे ज़ुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (त्रोवाल)

गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम : दा'वते इस्लामी के इशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 173 पर है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : जिस ने अपने भाई को जैसे गुनाह पर आर दिलाया जिस से वोह तौबा कर युका है, तो मरने से पहले वोह फुद उस गुनाह में मुत्तला हो जाओगा. (सन्न त्रिम्दी ज ६ व २२६ हदित २०१३)

ताईब को शरमिन्दा किया तो फुद गुनाह में इंस गया : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा जब कोई मुसल्मान किसी गुनाह से तौबा कर ले तो अब उस गुनाह के बारे में उस को शरमिन्दा नहीं करना चाहिये इस जिम्न में हजरते सय्यिदुना शैब अब्दुल वइहाब शा'रानी قُدَس سرُهُ التَّوَرَانِي नकल करते हैं : हजरते सय्यिदुना यइया बिन मुआज राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इरमाते हैं : अकल मन्द को चाहिये के किसी को उस के उस गुनाह की वजह से आर (या'नी शर्म) न दिलाओ (जिस से वोह तौबा कर युका हो) क्यूंके मैं ने अक बार किसी को (तौबा के बा वुजूद) उस के गुनाह के सबब आर दिलाई (या'नी शरमिन्दा किया) तो बीस साल के बा'द मैं फुद उस में मुत्तला हो गया. (तन्बीة الْمُعْتَرِينَ ص १९७)

दरप्ट लगा रहा हूं : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! बे जा बक बक की आदत आदमी को न बोलने का बुलवाती और नाकों यने यबवाती है, भूब गीबतें करवाती और युग्लियां बिलवाती है, आदमी युप रहे इसी में आइय्यत है और बोलना है तो अख्ण बोले, जिकुल्लाह करे देबिये ! **हमारे भीठे भीठे आका** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को जभान का कितना प्यारा इस्ति'माल बताया आप बी सुनिये और जूमिये युनान्चे “सु-नने एब्ने माजह” की रिवायत में है : (अक बार) मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे हजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को मुला-हजा इरमाया के अक पौदा लगा रहे हैं. इस्तिफ़सार इरमाया : क्या कर रहे हो ? अर्ज की : दरप्ट लगा रहा हूं. इरमाया : मैं बेहतरीन दरप्ट लगाने का तरीका बता दूं ! **سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ** पढने से हर कलिमे के



ફરમાને મુસ્તાફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابويعلى)

ઇવજ (યા'ની બદલે) જન્નત મેં એક દરખ્ત લગ જાતા હૈ.

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ ج ٤ ص ٢٥٢ حَدِيث ٣٨٠٧)

જન્નત મેં ચાર⁴ દરખ્ત લગેંગે : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઇસ હદીસે પાક મેં ચાર કલિમે ઇશાદિ ફરમાએ ગએ હેં : ﴿1﴾ سُبْحَانَ اللَّهِ ﴿2﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ ﴿3﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ﴿4﴾ الْكُفْرُ
 येह यारों कलिमात पढ़ें तो जन्नत में चार दरख्त लगाने जायें और कम पढ़ें तो कम. म-सलन अगर سُبْحَانَ اللَّهِ कडा तो एक दरख्त. इन कलिमात को पढने के लिये जभान यलाते जाईये और जन्नत में ખૂબ ખૂબ દરખ્ત લગવાતે જાઈયે.

عَمْرَاضِجٍ مَكْنٍ دَرْنَفْتَكُو ذِكْرًا وَكُنْ ذِكْرًا وَكُنْ ذِكْرًا

(યા'ની ફાલતૂ બાતોં મેં ઉમે અઝીઝ ઝાએઅ મત કર, ઝિકુલ્લાહ કર, ઝિકુલ્લાહ કર, ઝિકુલ્લાહ કર)

80 બરસ કે ગુનાહ મુઆફ : ઇસી તરહ ઝબાન કા એક અચ્છા ઇસ્તિ'માલ યેહ ભી હૈ કે દુર્રદો સલામ પઢતે રહિયે ઓર ગુનાહ બખ્શવાતે રહિયે જૈસા કે દુર્રે મુખ્તાર મેં હૈ : જો સરકારે નામદાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ પર એક બાર દુર્રદ ભેજે ઓર વોહ કબૂલ હો જાએ તો અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ ઉસ કે અસ્સી (80) બરસ કે ગુનાહ મિટા દેગા.

(لُدْرُمُخْتَار ج ٢ ص ٢٨٤)

બિસ્મિલ્લાહ કીજિયે કહના મમ્નૂઅ હૈ : બા'ઝ લોગ ઝબાન કા ગલત ઇસ્તિ'માલ કરતે હુએ ઇસ તરહ કહ દેતે હેં : “બિસ્મિલ્લાહ કીજિયે !” “આઓ જી બિસ્મિલ્લાહ !” “મૈં ને બિસ્મિલ્લાહ કર ડાલી”, તાજિર હઝરાત જો દિન મેં પહલા સૌદા બેચતે હેં ઉસ કો ઉમૂમન “બોની” કહા જાતા હૈ મગર બા'ઝ લોગ ઇસ કો ભી “બિસ્મિલ્લાહ” કહતે હેં, મ-સલન “મેરી તો આજ અભી તક બિસ્મિલ્લાહ હી નહીં હુઈ !” જિન જુમ્લોં કી મિસાલેં પેશ કી ગઈ યેહ સબ ગલત અન્દાઝ હેં. ઇસી તરહ ખાના ખાતે વક્ત અગર કોઈ આ જાતા હૈ તો અક્સર ખાને વાલા ઉસ સે કહતા હૈ : આઈયે !



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है. (ग़ुरान)

आप भी जा लीजिये, आम तौर पर जवाब मिलता है : “बिस्मिल्लाह” या इस तरह कहते हैं : “बिस्मिल्लाह कीजिये !” मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 16 सईहा 22 पर है के इस मौकअ पर इस तरह बिस्मिल्लाह कलने को उ-लमा ने बहुत सप्त मन्नूअ करार दिया है. (बहारे शरीअत) हां येह कह सकते हैं : बिस्मिल्लाह पढ कर जा लीजिये. बल्के जैसे मौकअ पर दुआएया अल्फ़ाज कलना बेहतर है, म-सलन لَمَّا وَكُنَّا لِلَّهِ رَجْرَجًا या’नी अल्लाह ज़ुज्रुह में और तुम्हें ब-र-कत दे. या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये : अल्लाह ज़ुज्रुह ब-र-कत दे.

बिस्मिल्लाह कलना कब कुई है : हराम व ना ज़ाईज काम से कबल बिस्मिल्लाह शरीफ़ हरगिज, हरगिज, हरगिज न पढी जाये, हरामे कर्ह काम से पहले बिस्मिल्लाह पढना कुई है युनान्ये “इतावा आलमगीरी” में है : शराब पीते वक्त, जिना करते वक्त या जूआ भेलते वक्त बिस्मिल्लाह कलना कुई है.

(فتاوى عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۳)

कब जिकुल्लाह ज़ुज्रुह करना गुनाह है ! : याद रभिये ! ज़बान से जिको दुर्रद बाईसे अजरो सवाब भी है और बा’ज सूरतों में मन्नूअ भी म-सलन “मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सईहा 335 पर है : गाहक को सौदा दिभाते वक्त ताजिर का इस गरज से दुर्रद शरीफ़ पढना या سُبْحَانَ اللَّهِ कलना के उस चीज की उम्दगी जरीदार पर जाहिर करे ना ज़ाईज है. यूंही किसी बडे को देभ कर इस निखत से दुर्रद शरीफ़ पढना के लोगों को उस के आने की जबर हो जाये ताके उस की ता’जीम को उठे और जगह छोड दें ना ज़ाईज है. (ردّالمُحتار ج ۲ ص ۲۸۱)

ईस्तिफ़ाल के लिये अल्लाह अल्लाह की सदाओं बुलन्द करना : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मजकूरा ज़ुज्रुहये के पेशे नजर में (सगे मदीना غَفَى عَنْهُ) अकसर ईस्लामी भाईयों को समजाता रहता हूं के मेरी आमद पर “अल्लाह अल्लाह” की सदाओं बुलन्द न किया करे क्यूंके ब जाहिर यहां जिकुल्लाह नहीं ईस्तिफ़ाल मकसूद होता है.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर दस भरतभा दुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाजिल इरमाता है. (طبرانی)

जो है गाफ़िल तेरे जिक से जुल जलाल उस की गफ़लत है उस पर वभावो नकाल¹
कअरे गफ़लत² से हम को भुदाया निकाल हम हों जाकिर³ तेरे और मजकूर⁴ तू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने अफ़िशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अपनी नेकियां तुम्हें क्यूं दूं? : अक शप्स ने उजरते सय्यिदुना इसन बसरी
से कडा : मुजे अबर मिली है आप मेरी गीबत करते हैं! इरमाया :
मेरे नजदीक तुम्हारी अडम्मियत धतनी जियादा भी नहीं के मैं अपनी नेकियां तुम्हारे
हवाले कर दूं. (احياء العلوم ج 3 ص 183)

गीबत गोया नेकियां इंकने की मशीन है : उजरते सय्यिदुना हुजैल बिन धयाज
इरमाते हैं : गीबत करने वाले की मिसाल उस शप्स जैसी है : जो
मिन्जनीक (या'नी पथर इंकने की हाथ से यलाध जाने वाली पुराने दौर की मशीन) के
उरीअे अपनी नेकियों को मशरिक व मगरिब हर तरफ़ इंकता है. (تنبيه المغتربين ص 193)

कत्मी गीबत नहीं की : उजरते सय्यिदुना धमाम बुआरी इरमाते हैं : मुजे जब से
है के उजरते सय्यिदुना शैभ अबू आसिम इरमाते हैं : मुजे जब से
अकल (या'नी समज) आध है के गीबत हराम है मैं ने कत्मी भी गीबत नहीं की.

(تَهذِيبُ الْأَسْمَاءِ وَاللُّغَاتِ لِلنُّوَوِيِّ ص 836)

لدينه

1. दुप, अजाअ. 2. गफ़लत का गढा. 3. जिक करने वाला 4. जिक किया गया



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

जो जियादा बोलता है वोह जियादा ग-लतियां करता है : दा'वते इस्लामी के इशाअती एदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 344 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सइहा 108 पर हुजुजतुल इस्लाम हजरते सय्यिहुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : जभान की डिफ़ाजत से नेक आ'माल मइफ़ूज होते हैं क्यूंके जो शप्स जभान का ध्यान नहीं रभता, हर वक्त बोलता ही रहता है, वोह उमूमन लोगो की गीबत में मुभ्तला हो जाता है. (مِنْهَاجُ الْعَابِدِينَ (عَرَبِي) ص 65) मशहूर मुहा-वरा है : مَنْ كَثُرَ لَغَطُهُ كَثُرَ سَقَطُهُ या'नी जो जियादा बोलता है जियादा ग-लतियां करता है.

दीवाने हो जाओ : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अगर लब भोलना और मुंह से बोलना ही है तो तिलावत कीजिये, ना'त शरीफ़ पढिये, भूभ भूभ जिक्रे एलाही कीजिये. दो इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿1﴾ इस कसरत के साथ जिक्रुल्लाह ﴿2﴾ (الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج 2 ص 173 حديث 1882) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का एतनी कसरत से जिक्र करो के मुनाफ़िकीन तुम्हें रियाकार कलने लगें. (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج 12 ص 131 حديث 12786)

जन्नत के मइल्लात हासिल करने का नुस्खा : जभान के उम्दा इस्ति'माल के लिये अक एमान अफ़रोज रिवायत सुनिये और जूमिये युनान्ये हजरते सय्यिहुना सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से भरवी है के अद्लाह के मइबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने अहद (पूरी सूरत) को 10 बार पढा अद्लाह तआला उस के लिये जन्नत में मइल बनाता है जिस ने 20 बार पढा उस के लिये दो मइल बनाता है जिस ने 30 बार पढा उस के लिये तीन मइल बनाता है. हजरते सय्यिहुना उमर बिन अत्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस वक्त हमारे भहुत से मइल्लात होंगे ? इर्शाद इरमाया : अद्लाह तआला का इज़्ज़ल इस से भी जियादा वसीअ है.

(سُنَنِ دَارِمِي ج 2 ص 502 حديث 3429)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइरे पाक न पड़े. (म)

अल्लाह की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी

औं काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत की बढबू : गीबत करने से अक मप्सूस बढबू निकलती है. पहले जब कोह गीबत करता था तो बढबू के सबभ सब को मा'लूम हो जाता था के गीबत हो रही है ! मगर अब गीबत की इस कदर कसरत हो गई है के हर तरफ़ इस की बढबू के त्बके उठ रहे हैं मगर हमें बढबू नहीं आती क्यूंके हमारी नाक इस की बढबू से अट गई है. इस को यूं समजिये के जब गटर साफ़ की जा रही होती है तो आम शप्स उस की बढबू के बाईस वहां भडा नहीं रह सकता मगर तंगी को कुछ भी पता नहीं चलता इस लिये के उस की नाक उस गन्दगी की बढबू से अट युकी होती है. युनान्ये इतावा र-जविय्या मुभर्रजा जिह्द अव्वल सफ़हा 720 पर है : जूट और गीबत मा'नवी नजसत (या'नी बातिनी गन्दगियां) हैं व लिहाजा जूटे के मुंह से औसी बढबू निकलती है के डिफ़ाजत के फिरिश्ते उस वक्त उस के पास से दूर हट जाते हैं जैसा के हदीस में वारिद हुवा है और इसी तरह अक बढबू की निरखत रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भबर दी के येह उन के मुंह की सडांठ (या'नी बढबू) है जो मुसल्मानों की गीबत करते हैं और हमें जो जूट या गीबत की बढबू महसूस नहीं होती उस की वजह येह है के हम उस से मालूफ़ (या'नी इस के आदी) हो गअे हमारी नाकें उस से त्बरी हुई हैं जैसे यमडा पकाने वालों के महल्ले में जो रहता है उसे उस की बढबू से छजा नहीं होती दूसरा आअे तो उस से नाक न रभी जाअे. मुसल्मान इस नईस झाअेदे (या'नी उम्हा नतीजे) को याद रभें और अपने रभ (عُرُوجًا) से उरें, जूट



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरहे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

और गीबत तर्क करें. क्या (عَزَّ وَجَلَّ) मुंड से पापाना निकलना किसी को पसन्द होगा? बातिन की नाक खुले तो मा'लूम हो के जूट और गीबत में पापाने से बढतर सडांढ (या'नी बढबू) है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने इरमाया : "जब बन्दा जूट बोलता है, उस की बढबू से इरिश्ता अेक मील दूर हो जाता है." (सुन त्रिमुदी ज ३ व ३१२ हदीथ ११११)

उजरते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रावी है उम भिदमते अकदस हुजूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم में हाजिर थे के अेक बढबू उठी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने इरमाया : जानते हो के येह बढबू क्या है, येह उन की बढबू है ज्ये मुसल्मानों की गीबत करते हैं.

(ثَمَّ الْعَيْبَةَ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص १०४ رقم ७)

अल्लाह उमें जूट से गीबत से बयाना मौला उमें कैदी न जलनम का बनाना
अै प्यारे खुदा अज पअे सुल्ताने जमाना जन्नत के मडल्लात में तू उम को बसाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللّٰهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

उर बाल के बढले अेक अेक नूर : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! उमें जमान का दुरुस्त इस्ति'माल सीपना याहिये. वरना खुदा की कसम ! गीबतें और तोइमतें और मुप्तलिफ़ गुनाहों की शामतें आपिरत में इंसा सकती हैं. वाकेइ अगर उम अपनी जमान का दुरुस्त इस्ति'माल करें तो वक्तन इ वक्तन ढेर सारी नेकियां हासिल कर सकते हैं. भा-तमुल मुर-सलीन, रइमतुल्लिल आ-लमीन

शुबु अइमान ज १ व ११२ हदीथ ०११)

विलिये उर बाल के बढले कियामत में नूर होगे.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुर्रहे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रहे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भाष्य)

को देख कर भाग ज़ाया करता था और **أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** आज वोह दिन है के जुद मेरे सर पर सज़ सज़ एमामे शरीफ़ का ताज जगमगा रहा है.

मक़बूलियत का मदार किल्लत व कसरत पर नहीं : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! इज़ाने सुन्नत के दर्स की कितनी ज़बर दस्त ब-र-कत है ! वोह इस्लामी भाई कैसे जजबे वाले थे के कोई न मिला तो तन्हा योक दर्स शुरुअ कर दिया ! इस में सत्मी के लिये दर्स के म-दनी झूल हैं उन का अकेले दर्स देना अेक मुसल्मान के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने का सबब बन गया. येह त्मी अन्दाज़ा लगाईये के तन्हा दर्स देते हुअे देख कर जब अैसे शप्स को रहूम आ गया ज़े के एन यीज़ों से दूर भागता था तो अल्हाड तबा-र-क व तआला तन्हा या कम ता'दाद में दर्स देने वालों से कितनी महब्बत करता और किस कदर उन पर रहूमो करम इरमाता डोगा. याद रभिये ! किल्लत व कसरत पर मक़बूलियत का दारो मदार नहीं. ज़े इस्लामी भाई त्मीउत्माड के बिगैर और एको साउन्ड न हो तो बयान या ना'त शरीफ़ पढने के लिये तय्यार नहीं डोते उन की तरगीब के लिये अर्ज़ है के बारगाडे जुदा वन्दी में सिर्फ़ एण्वास देखा ज़ाता है. हाज़िरीन और याहने वालों की कसरत हो मगर जुलूस न हो तो कोई फ़ाअेदा नहीं डोता. यकीनन जितने त्मी अम्बिया हुअे सब के सब अल्हाड **عَزَّوَجَلَّ** के मक़बूल तरीन बन्दे हैं और हर अेक ने 100 झीसदी अपनी जिम्मेदारी निभाई मगर बा'ज़ अम्बियाअे किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** पर सिर्फ़ अेक ही आदमी इमान लाया युनान्ये

सिर्फ़ अेक इद ने तस्दीक की : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एशाद इरमाया : मैं जन्नत के बारे में सब से पहले शफ़ाअत करने वाला डोउंगा, और किसी नबी की तस्दीक एतनी न की गई जितनी मेरी तस्दीक की गई, बा'ज़ अम्बियाअे किराम **(عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام)** वोह हैं जिन की तस्दीक उन की उम्मत में से सिर्फ़ अेक शप्स ने की है.

(صحيح مسلم ص ١٢٨ حديث ٣٢٢)



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुज़ पर अक़ दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उरस के लिये अक़ कीरात अज् लिफ़ता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अज़ज़)

950 साल में सिर्फ़ 80 आदमी इमान लाअे : मुफ़सिरे शहीर हकीमुल

उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार पान् عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हदीसे पाक के तहत लिफते हैं : इस इरमाने आली के अक़ मा'ना येह हैं के जितने जियादा लोगों ने मुज़ पर इमान कबूल किया इतने लोग किसी और नबी पर इमान नहीं लाअे येह बिल्कुल जाहिर है क्यूंके दूसरे नबी किसी पास कौम के नबी होते थे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सारे जहान के नबी हैं नीज़ और नबियों का जमानअे नुबुव्वत महदूद था, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नुबुव्वत ता कियामत है. मज़ीद लिफते हैं : हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने साढे नव सो (950) साल तब्लीग़ इरमाई मगर सिर्फ़ अस्सी (80) आदमी इमान लाअे आठ (8) आदमी अपने घर के, बहतर (72) आदमी दूसरे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने तेईस (23) साल तब्लीग़ इरमाई, देष लो आज तक क्या डाल है ! (मिरआत, जि. 8, स. 6, 7)

गीबत गुनाहे कबीरा है : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हज़र मक्की शाईफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : सहीह अहादीसे मुबा-रका में है के (1) गीबत सूद से बढ कर है (2) अगर ईसे (या'नी गीबत को) समुन्दर के पानी में डाल दिया जाअे तो उसे ली बढबूदार कर दे (3) (गीबत करने वाले) दोजभ में मुदरि पार रहे थे (4) उन (गीबत करने वालों) की इजा बढबूदार थी (5) उन्हें (या'नी गीबत करने वालों को) कब्रों में अजाब दिया जा रहा था. इन में से बा'ज अहादीसे मुबा-रका ही ईस के कबीरा होने के लिये काफ़ी हैं, पस जब येह सारी जम्अ हो जाअें तो इर गीबत क्यूंकर कबीरा गुनाह न कडलाअेगी ? (الرّوآجرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِرِ ج ٢ ص ٢٨)

आलिम के बारे में अहतियात की हिकायत : हज़रते शैष अफ़जलुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَسِين से जब किसी आलिमे दीन के मकाम के बारे में पूछा जाता तो (गीबत में जा पडने के षौफ़ से) इरमाते : मेरे इलावा किसी और से पूछो मैं तो लोगों को कमाल और बेहतरी ही की निगाह से देखता (और हर अक के बारे में हुस्ने उन से काम लेता)



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुदे पाक लिखा तो ज़ब तक मेरा नाम उस में रहेंगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (उज़्ज़ान)

हूं, मेरे पास कश्क नहीं जिस के ज़रीअे एन के उन मकामात की मा'लूमात कर सकूं जो रब्बे काअेनात एज़्ज़ल के यहाँ हैं. और उदीस शरीफ़ में है : **الظَّنُّ كَذْبُ الْحَدِيثِ**¹ : (तरज़मा : बढ गुमानी सभ से जूटी बात है.) (تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِينَ ص १९३)

अख़्श गुमान एबादत है : मीठे मीठे ईस्लामी त्माईयो ! आज़ कल बढ गुमानी का मरज़ आम है. मुसल्मान के बारे में अख़्श गुमान कर के सवाब कमाना याहिये युनान्ये इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ** : **يَا'नी** हुस्ने ज़न उम्दा एबादत से है. (سُنَنِ ابوداؤد ج ६ ص ३८८ حديث ६९९३) **मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उज़रते मुइती अहमद यार पान एल्ले रَحْمَةُ الْحَنَانِ** एस उदीसे पाक के मुप्तलिफ़ मतालिब बयान करते हुअे लिखते हैं : **या'नी** मुसल्मानों से अख़्श गुमान करना, एन पर बढ गुमानी न करना येह त्मी अख़्शी एबादत में से अेक एबादत है.

(मिरआत मनाज्जिद, ज़ि. 6, स. 621)

आलिम की गीबत करने वाला रउमत से मायूस : अइसोस ! आज़ कल आलिम उ-लमा की ब कसरत गीबत की जाती है. लिहाज़ा शैतान किसी आलिमे दीन की गीबत पर उतारे तो उज़रते सख्यिदुना अबू उइस कबीर **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيرِ के एस एशरिफ़ को याद कर के फ़ुद को उराईये : जिस ने किसी इकीड (आलिम) की गीबत की तो कियामत के रोज़ उस के येहरे पर लिखा डोगा : **“येह अद्लाह एज़्ज़ल की रउमत से मायूस है.”** (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ७१)**

दोउष के कुत्ते काटेंगे : गीबत उ-लमा की डो या अवाम की, गीबत फिर गीबत ही है, फ़ुदा की कसम ! एस का अज़ाब न सखा ज़ा सकेगा युनान्ये अेक बार मदीने के तालादर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से इरमाया : **صَحِيحُ بَخَارِيِّ ج ६ ص ११७ حَدِيثُ १ : ٦٠٦٦**

لدينه

صَحِيحُ بَخَارِيِّ ج ६ ص ११७ حَدِيثُ १ : ٦٠٦٦



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے مومن پر ایک بار دُرُودِ پاک پڑھا اَللّٰہ اَللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (उस पर दस रहमतें भेजता है. (س)

लोगों की गीबत न करो वरना दोज़ख के कुत्ते तुम्हें काटेंगे.

(تفسیر دُرِّ مَنثور ج ۷ ص ۵۷۲، مَنہاجُ العابدین ص ۶۶)

रात के सन्नाटे में कुत्ता उभ्ला आवर डो तो..... : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !

मज़हूरा रिवायत को बार बार पढ़िये और तसव्वुर कीजिये के रात का सन्नाटा डो, कुत्ता भौंकता हुवा पीछे आ रहा डो और आप उस से बयने के लिये तदबीरें कर रडे डों के यकायक जपट कर आप के कुरते का दामन अपने मुंह से पकड ले ! उस वक्त आप की छालत क्या डोगी ! अब गौर कीजिये किसी मुसल्मान की गीबत कर दी और भरने के बा'द अगर सज़ाअन जहन्नम के कुत्ते ने कुरते के दामन को नहीं बदन को और वोड भी पकडा डी नहीं काटना शुर्अ कर दिया तो उस वक्त क्या गुज़रेगी !

कर ले तौबा रब की रहमत डै बडी

नार में वरना सज़ा डोगी कडी

उ-लमा की गीबत की 15 मिसालें : छालात बहुत ना गुफ़ता बिड डैं, शैतान ने अकसर मुसल्मानों को उ-लमाअे डक से काड़ी दूर कर दिया डै, अइसोस ! सड करोड अइसोस ! मुंह बर कर अब उ-लमाअे किराम की गीबतें की ज़ती डैं. उ-लमा की गीबत की यन्ड मिसालें मुला-डज़ा डों : ❀ वा'ज़ के पैसे लेता डै ❀ बडा बद ज़बान डै ❀ पेटू डै ❀ डलवे मांडे षाता डै ❀ षाना उट कर षाता डै ❀ उस दिन उल्टे ड़थ से पानी पी रहा थ़ा ❀ अपने आप को सब से बडा आलिम समज़ता डै ❀ वा'ज़ में नाक से बोडता डै ❀ बहुत लम्बा बयान करता डै ❀ बयान में अस किस्से कडानियां सुनाता डै ❀ आवाज़ भी "षास" नहीं डै ❀ डरि ! डरा बय के रहना "अल्लामा साहिब" डैं ❀ डालयी डै ❀ छोडो छोडो यार ! वोड तो मौलवी डै ❀ (اللّٰہ آलिमों को बा'ज़ लोग डकारत से कड डेते डैं) येड मुल्ला लोग.



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

आलिम की तौहीन कब कुई है और कब नहीं : आम आदमी और आलिमे दीन की गीबत में बडा इर्क है, आलिम की गीबत में अक्सर उस की तौहीन का पडलू भी होता है जो के काफ़ी तश्वीशनाक है. आलिम की तौहीन की तीन सूरतें और एन के बारे में हुकमे शर-एँ बयान करते हुअे मेरे आका आ'ला हज़रत, एमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह एमाम अहमद रज़ा ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-अविध्या जिल्द 21 सइहा 129 पर इरमाते हैं : ﴿1﴾ अगर आलिमे (दीन) को एंस लिये बुरा कइता है के वोह “आलिम” है जब तो सरीह काफ़िर है और ﴿2﴾ अगर ब वजहे एल्म उस की ता'ज़ीम इर्क ज़ानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ખુसूमत (या'नी दुश्मनी) के बाईस बुरा कइता है, गाली देता (है और) तहकीर करता है तो सप्त इंसिक इाज़िर है और ﴿3﴾ अगर बे सबब (या'नी बिला वजह) रन्ज (बुग़ज़) रખता है तो مَرِيضُ الْقَلْبِ وَ حَيْثُ الْبَاطِن (या'नी दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला) है और उस (या'नी आलिम से प्वाह म प्वाह बुग़ज़ रખने वाले) के कुई का अन्देशा है. “खुलासा” में है : مَنْ أَبْغَضَ عَالِمًا مِنْ غَيْرِ سَبَبٍ ظَاهِرٍ خِيفَ عَلَيْهِ الْكُفْرُ या'नी जो बिला किसी ज़ाहिरी वजह के आलिमे दीन से बुग़ज़ रખे उस पर कुई का ખौफ़ है.

(خُلَاصَةُ الْفَتَاوَى ج ٤ ص ٣٨٨)

ઉ-લમા की तौहीन के बारे में यन्द

सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं :

आलिमे बे अमल की तौहीन

सुवाल : क्या आलिमे बे अमल की तौहीन भी कुई है ?

जवाब : ब सबबे एल्मे दीन आलिमे बे अमल की तौहीन करना भी कुई है. आलिमे बे अमल भी एल्मे दीन की वजह से ज़हिल एबादत गुज़ार से ब ह-र-जहा अइज़ल व बेहतर है. मेरे आका आ'ला हज़रत, एमामे अहले सुन्नत,



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढे अप्त हो गया. (अन)

मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : और कुरआन शरीफ़ ईन्हें (या'नी उ-लमाअे हक को) मुत्लकन वारिस बता रहा है, हत्ता के ईन (में) के बे अमल (आलिम) को भी या'नी जब के अकाईदे हक पर मुस्तकीम (या'नी सहीहुल अकीदा सुन्नी) और खिदायत की तरफ़ दाई (बुलाने वाला) हो के गुमराह (आलिम) और गुमराही की तरफ़ बुलाने वाला (मौलवी) वारिसे नबी नहीं नाईबे ईहलीस है. وَالْعِبَادُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی. हां, रब़ عَزَّ وَجَلَّ ने तमाम उ-लमाअे शरीअत को कहां वारिस इरमाया है? यहां तक के ईन के बे अमल को भी ! हां, वोह हम से पूछिये, मौला عَزَّ وَجَلَّ इरमाता है :

तर-ज-मअे कज़ुल ईमान : फिर हम ने किताब
كَانَ الْكِتَابُ الَّذِي نَزَّلْنَا فِيهِ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ का वारिस किया अपने युने हुअे बन्दों को तो
مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۗ وَمِنْهُمْ مَّقْتَصِدٌ ۗ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ
بِالْخَيْرَاتِ يُأْتِنُ اللَّهَ ذَلِكَ هُوَ الْقَصْلُ
कोई वोह है जो अल्हाड के हुकम से बलाईयों में
(پ ۲۲ فاطر ۳۲) الْكَبِيرُ ۝ सञ्कत ले गया येही बडा इज़ल है.

मजकूरा जाला आयते करीमा इतावा र-जविय्या जिल्द 21 सईहा 530 पर नकल करने के बा'द मेरे आका आ'ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मज़ीद इरमाते हैं : देओ बे अमल (उ-लमा जो) के गुनाहों से अपनी जान पर जुल्म कर रहे हैं उन्हें भी किताब का वारिस बताया और निरा (या'नी इकत) वारिस ही नहीं बल्के अपने युने हुअे बन्दों में गिना. अहादीस में आया, रसूलुल्हाड صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ईस आयत की तईसीर में इरमाया : हम में का जो सञ्कत (बरतरी) ले गया वोह तो सञ्कत ले ही गया और जो मु-तवस्सित (या'नी दरमियाना) हाल का हुवा वोह भी नज़ात वाला है और जो अपनी जान पर जालिम (या'नी गुनहगार) है उस की भी मग्इरत है.

(تفسیر درمنثور ج ۷ ص ۲۵) आलिमे शरीअत अगर अपने ईल्म पर आमिल भी



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جَسَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِسَسِ نَعِ مَوْجًا پَرِ اَعَكْ بَارِ دُوْرِدَعِ پَاكْ پَدَا اَصْلَااَلِ عَزَّوَجَلَّ (اَسِ پَرِ دَسِ رَحْمَتَوِ بَعِجَتَا هَيْ. (س))

હો (જબ તો વોહ મિસ્લે) ચાંદ હૈ (જો) કે આપ (ખુદ ભી) ઠન્ડા ઓર તુમ્હે (ભી) રોશની દે વરના (આલિમે બે અમલ મિસ્લે) શમ્મ હૈ કે ખુદ (તો) જલે મગર તુમ્હે નફ્અ દે. **રસૂલુલ્લાહ** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ફરમાતે હૈં : **उस शप्स की मिसाल जो लोगों को ખૈર (યા'ની ભલાઈ) કી તા'લીમ દેતા ઓર અપને આપ કો ભૂલ જાતા હૈ** **उस इतीले (या'नी यराग की बत्ती) कી तरह है** કે લોગોં કો રોશની દેતા હૈ ઓર ખુદ જલતા હૈ. (الترغيب والترهيب ج ١ ص ٧٤ حديث ١١)

જાહિલ કો આલિમ સે બેહતર જાનના કેસા ?

સુવાલ : જાહિલ કો આલિમ સે બેહતર સમઝના કેસા ?

જવાબ : અગર ઈલ્મે દીન સે નફરત કે સબબ જાહિલ કો આલિમ સે બેહતર સમઝતા હૈ તો યેહ કુફ્ર હૈ. **हु-कडाअे किराम** رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ફરમાતે હૈં : ઈસ તરહ કહના : “ઈલ્મ સે જહાલત બેહતર હૈ યા આલિમ સે જાહિલ અચ્છા હોતા હૈ.” કુફ્ર હૈ. (مَجْمَعُ الْأَنْهَارِ ج ٢ ص ٥١١)

તાલિબે ઈલ્મે દીન કો ફૂંએ કા મેંડક કહના

સુવાલ : દીની તાલિબે ઈલ્મ યા આલિમે દીન કો બ નઝરે હકારત ફૂંએ કા મેંડક કહના કેસા હૈ ?

જવાબ : કુફ્ર હૈ.

“મૌલવી લોગ ક્યા જાનતે હૈં” કહના કેસા ?

સુવાલ : એક શપ્સ ને કિસી બાત પર હકારત કે સાથ કહા : “મૌલવી લોગ ક્યા જાનતે હૈં!” ઉસ કા ઈસ તરહ કહના કેસા ?

જવાબ : કુફ્ર હૈ. મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ اللهِ الرَّحْمَن ફરમાતે હૈં : “મૌલવી લોગ ક્યા જાનતે હૈં!” કહના કુફ્ર હૈ. (इतावा र-जविथ्या, जि. 14, स. 244) જબ કે ઉ-લમા કી તહકીર મક્સૂદ હો.



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

“दीन पर अमल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है” कलना कैसा ?

सुवाल : येह कलना कैसा है के “अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दीन को आसान उतारा था मगर मौलवियों ने मुश्किल बना दिया !”

जवाब : येह उ-लमा की तौहीन की वजह से कलिमअे कुई है. क्यूंके हु-कडाअे किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام इरमाते हैं : أَلَا سِتْخَفَاتٍ بِالْأَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرًا : या'नी अशराफ़ (सादाते किराम) और उ-लमा की तहकीर (छहें घटिया ज़ानना) कुई है. (مَجْمَعُ الْأَنْهَرَج ٢ ص ٥٠٩)

मौलवियों वाला अन्दाज़

सुवाल : सुन्नी आलिमे दीन की तर्ज़ पर कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ किये जाने वाले किसी मुबत्व्लिग के बयान को हकारतन “मौलवियों वाला अन्दाज़” कलना कैसा ?

जवाब : कुई है. क्यूंके इस में उ-लमाअे हक की तौहीन है.

“आलिम सारे ज़ालिम” कलने का हुकमे शर-ई

सुवाल : “आलिम सारे ज़ालिम” येह मकूल कैसा है ?

जवाब : मुत्व्लकन उ-लमाअे हक़ा के बारे में ऐसा ज़ुम्ला कलना कुई है.

आलिमे दीन को हकारत से मुद्ला कलना

सुवाल : जो उ-लमाअे किराम को तहकीर की निय्यत से “मुद्ला मुद्ला” या “मुद्ला लोग” कहे उस के लिये क्या हुकमे है ?

जवाब : अगर ब सभबे छल्मे दीन उ-लमाअे किराम की तहकीर (या'नी हकारत) की निय्यत से कडा तो कलिमअे कुई है. युनान्ये मुद्ला अली कारी عَلَيْهِ وَحَمَةُ اللَّهِ الْبَارِي इरमाते हैं : जिस ने (तौहीन की निय्यत से) आलिम को उवैलिम या अ-लवी (या'नी मौला अली كُرَّمَهُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) को उलैवी कडा उस ने कुई किया. (مَنْعَ الرُّوضِ لِلْقَارِي ص ٤٧٢) उर्दू प्वां “उवैलम” या “उलैवी”



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुहे पाक न पढा तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (हृदय)

नहीं बोलते. अलबत्ता बा'ज अवकात बेबाकों की ज़बानों से मौलवा, मुल्कउ वगैरा अल्फ़ाज सुनना (सगे मदीना عَنْهُ को) याद पउता है. बहर डाल आलिमे दीन की ब सबबे ँल्मे दीन तौहीन करना या अ-लवी साहिबान या सादाते किराम की शराफ़ते हसब नसब के सबब किसी किस्म का तौहीन आमेज लफ़्ज बोलना कुफ़ है.

“मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे” कलना

सुवाल : “दुन्यवी ता'लीम हासिल करोगे तो अैश करोगे, ँल्मे दीन सीज कर मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे” येह कलना कैसा ?

जवाब : ँस जुम्मे में ँल्मे दीन की तौहीन का पहलू नुमायां है ँस लिये कुफ़ है. काँल पर तौबा व तजदीदे ँमान लाजिम है और अगर ँल्म व उ-लमा की तौहीन ही मकसूद थी तो कर्ल कुफ़ है काँल काफ़िर व मुरतद हो गया और उस का निकाह भी टूटा और पिछले नेक आ'माल भी ज़ाअेअ हुअे.

तौहीने उ-लमा के मु-तअद्लिक 10 पैरे

﴿1﴾ जितने मौलवी हैं सब भद मआश हैं कलना कुफ़ है जब के ब सबबे ँल्मे दीन, उ-लमाअे किराम की तहकीर की निय्यत से कला हो. (माभूज अज इतावा अम्हदिय्या, जि. 4, स. 454)

﴿2﴾ येह कलना : “आलिम लोगों ने देस ज़राब कर दिया.”

कलिमअे कुफ़ है (माभूज अज इतावा २-अविख्या, जि. 14, स. 605)

﴿3﴾ येह कलना कुफ़ है के “मौलवियों ने दीन के टुकडे टुकडे कर दिये”

﴿4﴾ जो कहे : “ँल्मे दीन, को क्या कउंगा ! जेब में रुपै होने याहिअें.” कलने वाले पर हुकमे कुफ़ है.

﴿5﴾ किसी ने आलिम से कला : “जो और ँल्मे दीन को किसी बरतन में संभाल कर रभ.” येह कुफ़ है. (فتاوى عالمگیری ج २ ص २१)

﴿6﴾ जिस ने कला : “उ-लमा जो बताते हैं उसे कौन कर सकता है !” येह कौल कुफ़ है. क्यूके ँस कलाम से लाजिम आता है के शरीअत में अैसे अहकाम हैं जो ताकत से बाहर हैं या उ-लमा ने अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर जूट बांधा है مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! (مَنْعُ الرُّوضِ ص ६१)

﴿7﴾ येह कलना : “सरीद का पियाला ँल्मे दीन से बेहतर है.” कलिमअे कुफ़ है. (الْبَيِّنَاتُ ص ६१)



इरमाने मुस्तफ़ी : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

ईल्मे दीन की वजह से बुग्ज रचना कुई है या'नी ईस वजह से के वोह आलिमे दीन है. ﴿9﴾ जो कहे : “इसाद करना आलिम बनने से बेहतर है” जैसे शप्स पर हुकमे कुई है. (२७१) ﴿10﴾ याद रहे ! सिई उ-लमाअे अहले सुन्नत ही की ता'जीम की जाअेगी. रहे अद मजहब उ-लमा, तो उन के साअे से भी त्मागे के उन की ता'जीम हराम, उन का बयान सुनना, उन की कुतुब का मुता-लआ करना और उन की सोहबत इप्तियार करना हराम और इमान के लिये जहरे हलाहिल है.

काश मैं दरप्त होता ! : भीठे भीठे इस्लामी त्माईयो ! आलिमे दीन की शाने अ-जमत निशान में बे अ-दबी से बयना बहुत जइरी है. फुदा न ज्वास्ता कोई अैसी भूल हो गई जिस से इमान से हाथ धोना पड गया तो फुदा की कसम ! बहुत रुस्वाई होगी के बरोजे कियामत काइरों को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में ओंक दिया जाअेगा जहां उन्हें हमेशा हमेशा अजाब में रहना पडेगा. अल्लाह ज़ुज्रुलमें ज्बान की लज्जिशों से भी बयाअे और हमारे इमान की डिफ़ाजत इरमाअे. आमीन. हमारे सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कब्रों आभिरत के मुआ-मले में अल्लाह ज़ुज्रुल से बहुत उरते थे, ग-ल-बअे भौई के वक्त इन हजरात की ज्बान से बसा अवकात ईस तरह के कलिमात अदा होते थे : काश ! हमें हुन्या में अतौरे इन्सान न भेजा जाता के इन्सान बन कर हुन्या में आने के बाईस अब जातिमा बिल इमान, कब्र व कियामत के इम्तिहान वगैरा के कठिन मराहिल दरपेश हैं. अक बार हजरते सय्यिहुना अबू दरदा رضي الله تعالى عنه ने भौई फुदा ज़ुज्रुल में डूब कर इरमाया : अगर तुम वोह जान लो जो मौत के आ'द होना है तो तुम पसन्दीदा पाना पीना छोड दो, सायादार घरों में न रहो बल्के वीरानों का रुख कर जाओ और तमाम उम्र आहो ज़ारी में बसर कर दो ईस के आ'द इरमाने लगे : काश ! मैं दरप्त होता जिसे काट दिया जाता.

(الرُّهْدُ لِلْإِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ص ١٦٢ رَقْم ٧٤٠)

मैं बजाअे इन्सां के कोई पौदा होता या

नप्ल¹ बन के तयबा के भाग में पडा होता

لَدِينِهِ

1. ख़ूर का दरप्त, आम दरप्त



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مبارکات)

काश मुझे ज़ब्र कर दिया जाता : एब्ने असाकिर ने “तारीफ़े दिमश्क” जिल्द 47 सफ़्हा 193 पर उतरते सय्यिदुना अबू हरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से येह कलिमात नक़ल किये हैं : काश ! मैं हुम्बा होता, मुझे किसी मेहमान के लिये ज़ब्र कर दिया जाता, मुझे पाते और षिला देते.

जॉ कनी¹ की तकलीफ़ें ज़ब्र से हैं बढ कर काश ! मुर्ग़ बन के तयबा में ज़ब्र हो गया होता मर्ग-अरे² तयबा का कोई होता परवाना गिदें शम्भ़ि़र क़िर कर काश ! जल गया होता

काश ! अर³ या अय्यर या घोडा बन कर आता और

मुस्तफ़ा ने झूटे से बांध कर रखा होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आह ! मेरे गुनाह !! : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! उ-लमाअे किराम का मकाम समझने, एन के अहतिराम का ज़अबा पाने, गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी एन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना इफ़्के मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीफ़ के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्भ करवाँये. आशिकाने रसूल की सोहबत उठाने का अेक बेहतरीन जरीआ मद्र-सतुल मदीना (बादिगान) ली है. एन में कुरआने करीम पढिये अगर पढे हुअे हैं तो पढाँये. आप की तरगीब व तहरीस के लिये अर्ज़ है, अेक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरे गुनाह बहुत जियादा थे. जिन

دينه

1. नज़्म का आलम, एन्सान की इह निकलने का अमल, 2. सज़ा ज़र 3. गधा



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा. (क़ुरआन)

मैं V.C.R की लीड सप्लाय करना, रातों को औबाश लडकों के साथ घूमना, रोज़ाना दो बल्के तीन तीन इल्में देपना, वेरायटी प्रोग्राम्ज़ में रातें काली करना शामिल है। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ। बाबुल मदीना करायी के अलाके नया आबाद के अके ईस्लामी भाई की मुसव्सल ईन्फ़िरादी कोशिश की अ-र-कत से अलाके के मद्र-सतुल मदीना (अराअे बादिगान) में जाने की तरकीब अनी, और इस तरह आशिकाने रसूल की सोडभत मिली और मैं तप्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाअस्ता हो कर म-दनी कामों में मसरूफ़ हो गया।

उमें आलिमों और बुजुर्गों के आदाअ सिपाता है उर दम सदा म-दनी माडोल हें ईस्लामी भाई सभी भाई भाई हें बेडद महब्बत अरा म-दनी माडोल

ता'लीमे कुरआन के दो² इजाईल : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ। उमूमन रोज़ाना ईशा के आ'द उजारहा मद्र-सतुल मदीना काईम किये जाते हें जहां की सभीलिव्लाह कुरआने करीम की ता'लीम दी जाती है। ता'लीमे कुरआने करीम के इजाईल के क्या कलने ! युनाअे दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुशतमिल किताअ, "अडारे शरीअत" डिस्सा 16 सफ़हा 127 से दो इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-उआ हों : ﴿1﴾ तुम में बेडतर वोड शप्स है, जो कुरआन सीपे और सिपाअे. (بخاری ج 3 ص 410 حديث 5027) ﴿2﴾ जो कुरआन पढने में माडिर है, वोड किरामन कातिबीन के साथ है और जो शप्स रुक रुक कर कुरआन पढता है और वोड उस पर शाक है (या'नी उस की उबान आसानी से नही यलती, तकलीफ़ के साथ अदा करता है) उस के लिये दो अज्ज हें. (صحيح مسلم ص 400 حديث 798)

येही है आरजू ता'लीमे कुरआं आम हो जाअे

उर एक परयम से ठिया परयमे ईस्लाम हो जाअे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرِ اللهُ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مَوْتٌ عَلَى مَوْتِ الْوَجْدِ عَلَى مَوْتِ الْوَجْدِ . (البصلى)

गुस्ताफे रसूल का अन्जाम : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अगर गीबत की कसरत के सबभ रब्बुल ईज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा और हुज़ूर ताजदारे रिसालत क़र्रुह गअे और ईमान बरबाद हो गया और कोई बद्द नसीब काफ़िर हो कर मरा तो ખુदा की कसम कहीं का न रहेगा. कुफ़्फ़ पर मरने वाला हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा, काफ़िरो के अन्जाम के बारे में मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ईशाद पढिये और तौबा तौबा कीजिये और अपने ईमान की डिफ़ाज़त के लिये ખूब कुढिये युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 502 सइहात पर मुश्तमिल किताब "मक्कूज़ाते आ'ला हज़रत" (मुकम्मल, मुपर्ज़ा) सइहा 147 पर है : એક મર્તબા આસ (જો કે બહુત બડા ગુસ્તાખે રસૂલ કાફિર થા વોહ) સફર કો ગયા. તકાન (યા'ની થકન) કે બાઈસ એક દરખ્ત સે તકિયા (યા'ની ટેક) લગા કર બૈઠ ગયા. જિબ્રઈલે અમીન (عَلَيْهِ السَّلَام) બ હુકમે રબ્બુલ આ-લમીન (عَزَّوَجَلَّ) તશરીફ લાએ ઓર ઉસ કા સર પકડ કર દરખ્ત સે ટકરાના શુરૂઅ કિયા. વોહ ચિલ્લાતા થા કે અરે કૌન મેરે સર કો દરખ્ત સે ટકરા રહા હૈ ? ઉસ કે સાથી કહતે થે કે હમં કોઈ નઝર નહીં આતા. યહાં તક કે જહન્નમ વાસિલ હુવા (યા'ની મર કર જહન્નમ પહોંચા). કિયામત કે દિન અબૂ જહ્લ જહન્નમી કી સબ સે જુદા હાલત હોગી : યેહ અપને આપ કો مَلَأَ اللَّهُ "અઝીઝ વ કરીમ" કહા કરતા યા'ની ઈજ્જત વાલા વ કરમ વાલા. દારોગઅે દોઝખ (યા'ની દોઝખ કે નિગરાન ફિરિશ્તે) કો હુકમ હોગા કે ઈસ કે સર પર ગુર્ઝ મારો ! જિસ કે લગતે હી એક બડા ખલા (બહુત બડા ગઢા) સર મં હો જાએગા ઓર જિસ કી વુસ્અત ઈતની ન હોગી જિતની તુમ ખયાલ કરતે હો બલ્કે જિસ કી એક દાઢ કોહે ઉહુદ (યા'ની ઉહુદ પહાડ) કે બરાબર હોગી ઉસ કે સર ફતને સે જો ખલા (ગઢા) હોગા વોહ કિસ કદર વસીઅ હોગા ! ગરઝ ઉસ ખલા (ગઢે) મં જહન્નમ કા ખૌલતા હુવા પાની ભરા જાએગા ઓર ઉસ સે કહા જાએગા :

دُقُّ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٩٩﴾

(٢٥٠٧ الدخان ٤٩)

તર-જ-મઅે કન્ઝુલ ઈમાન : યખ તૂ તો ઈજ્જત વ કરમ વાલા હૈ.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पहुँचता है. (مُرَاتَب)

और काफ़िर को येही पानी पिलाया जायेगा के जब मुंह के करीब आयेगा मुंह उस में गल कर गिर पड़ेगा और जब पेट में उतरेगा, आंतों के टुकड़े कर देगा, और उस पानी को ऐसा पियेंगे जैसे तौंस (या'नी न बुजने वाली प्यास) के मारे ठोंट. लूक से बेताब होंगे तो पारदार थूड¹ भौलता हुवा, यर्भ दिये (या'नी पिघले) हुअे तांभे की तरह उबलता हुवा भिलायेंगे जो पेट में जा कर भौलते हुअे पानी की तरह जोश मारेगा और लूक को कुछ झांछेदा न देगा. अन्वाअ अन्वाअ (या'नी तरह तरह) के अजाब होंगे. हर तरफ़ से मौत आयेगी और मरेंगे कभी नही, न कभी उन के अजाब में तप्फ़ीफ़ (या'नी कमी) होगी.

पुदाया बुरे भातिमे से बयाना पढ़ूं कलिमा जब निकले दम या एलाही
गुनाहों से भरपूर नामा है मेरा तेरे हाथ में है भरम या एलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गर्मियों में रोजा आसान मगर युप रहना मुश्किल : जिन लोगों की ज़बान कैथी की तरह चलती रहती है वोह जूट, गीबत, तोहमत और युगली वगैरा आइतों में अकसर मुज्तला होते रहते हैं, वाकेई ज़बान पर कुइले मदीना लगाना या'नी ईस को काबू में रखना निहायत ज़रूरी है अगर्चे येह मुश्किल ही सही मगर कोशिश करेंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आसानी कर देगा. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सफ़हा 107 पर हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي نَكَل

ادبیتہ

1. ओक पारदार जहरीला पौदा जिस के पत्ते सज्ज और कूल रंग बिरंगे होते हैं.



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरहे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाज़िल इरमाता है. (ज़रान)

करते हैं : छज़रते सय्यिहुना यूनुस बिन उबैदुल्लाह رحمة الله تعالى عليه इरमाते हैं : मेरा नफ़स बसरा जैसे गर्भ शहर के अन्दर और वोह भी सप्त गर्भियों में रोज़ा रफ़ने की तो कुव्वत रफ़ता है मगर इज़्ज़ल गोर्ध से ज़बान को रोकने की ताक़त नहीं रफ़ता !

(منهاج العابدین (عربی) ص ٦٤) अगर एन तीन उसूलों को पेशे नज़र रफ़ लिया जाये तो अडा नफ़अ डोगा : **1** बुरी बात कडना डर डाल में बुरा है **2** इज़्ज़ल बात से फ़ामोशी अइज़ल है **3** बलाई की बात करना फ़ामोशी से बेडतर है.

मेरी ज़बान पे कुइले मदीना लग जाये इज़्ज़ल गोर्ध से बयता रहुं सदा या रब !
करें न तंग बयालाते बह कभी कर हे शुज़िरो इक़ को पाकीज़गी अता या रब !

ब वक़ते नज़्ज़अ सलामत रहे मेरा एमं

मुज़े नसीब डो कलिमा है इल्तिज़ा या रब!

जिगर का केन्सर ठीक डो गया : ज़बान पर कुइले मदीना लगाने का जेहून बनाने, गीबत करने सुनने की आदत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल का ज़जबा बढाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल से डर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सइर कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोज़ाना इक़े मदीना के ज़रीअे रिसाला पुर कीजिये और डर म-दनी माड की 10 तारीफ़ के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये और जहां कहीं "दसें इज़ाने सुन्नत" डोता देखें उस में फ़ुशदिली के साथ ब निय्यते सवाब ज़र शिक़त इरमाअें नीज़ डइतावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ की डाज़िरी किसी सूरत में भी तर्क न इरमाअें, आप की तरगीब के लिये अक़ एमंन अइरोज़ म-दनी बडार आप के गोश गुज़ार करता हूं. युनान्थे गुलिस्ताने मुस्तफ़ा (बाबुल मदीना करायी) के अक़ इस्लामी भाई के बयान का फ़ुलासा है : मैं ने अक़ अैसे इस्लामी भाई को दा'वते इस्लामी के मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में डोने वाले बैनल अक़वामी सुन्नतों भरे तीन रोज़ा इजतिमाअ की दा'वत पेश की जिन की



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा लिंक हो और वोह मुज पर दुरुद शरीक न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रिबिया)

बेटी को जिगर का केन्सर था. वोह दुआमे शिफ़ा करने का ज़रूआ लिये सुन्नतों भरे
 ईजतिमाअ में शरीक हो गये. उन का कहना है मैं ने ईजतिमाअे पाक में पूब हुआ
 की. الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का येकअप करवाया तो येह देप कर
 डोक्टर हैरानो शशदर रह गये के उस के जिगर का केन्सर जत्म हो युका था ! डोक्टरों की
 पूरी टीम वर्तअे हैरत में डूबी हुई थी के आभिर केन्सर गया कहां ! जब के मरीज़ा की
 डालत ईस कदर भराब थी के ईजतिमाअे पाक में जाने से पहले उस के जिगर से
 रोज़ाना कम अज़ कम अेक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था ! الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ
 ईजतिमाअे पाक (मदीनतुल औलिया, मुलतान) में शिर्कत की ब-र-कत से अब उस
 लडकी के जिगर में केन्सर का नामो निशान तक न रहा था, الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे भयान
 वोह लडकी अब न सिर्फ़ ३ ब सिद्धत है बल्के उस की शादी भी हो चुकी है.

अगर दहरे सर हो, कहीं केन्सर हो दिलायेगा तुम को शिफ़ा म-दनी माहोल
 शिफ़ाअें मिलेंगी, बलाअें टलेंगी यकीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माहोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

कोई मरज़ ला ईलाज नहीं : मीठे मीठे ईस्लामी लाँयो ! देया आप ने !
 सुन्नतों भरे ईजतिमाअ की ब-र-कत से डोक्टरों के बकौल ला ईलाज माना जाने
 वाला केन्सर भी ठीक हो गया, उकीकत येह है के कोई मरज़ अैसा नहीं जिस की दवा
 न हो युनान्ये दवा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ
 114 सङ्घात पर मुशतमिल किताब, "घरेलू ईलाज" सङ्घा 1 पर है : अद्लाह
 के उबीब के उबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिद्धत निशान है : हर बीमारी की
 दवा है, जब दवा बीमारी तक पड़ोया दी जाती है तो अद्लाह के उबीब के उबीब से मरीज़
 अस्था हो जाता है.

(صحيح مسلم ص ۱۲۱۰ حدیث ۲۲۰۴)



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदुटे पाक न पड़े. (१७)

केन्सर के दो धलाज : «1» पिसा हुवा कावा जीरा तीन तीन ग्राम दिन में तीन मर्तबा पानी से धस्ति'माल कीजिये «2» रोजाना युटकी भर पिसी हुधं जालिस डलदी पाने से **كَلْبِي كَنْسَرُ نَهْدِي** कभी केन्सर नहीं होगा.

गीबत के मुप्तलिइ तरीके : भीठे भीठे धस्लामी लाधयो ! गीबत सिई जभान ही से नहीं और तरीकों से भी की जा सकती है म-सलन «1» धशारे से «2» लिप कर «3» मुस्कुरा कर (म-सलन आप के सामने किसी की भूबी बयान हुधं और आप ने तन्जिया अन्दाज में मुस्कुरा दिया जिस से जाहिर होता हो के “तुम भले ता'रीफ़ किये जाओ, मैं धस को भूब जानता हूं !”) «4» दिल् के अन्दर गीबत करना या'नी बढ गुमानी को दिल् में जमा लेना. म-सलन बिगैर देभे बिला दलील या बिगैर किसी वाजेह करीने के जेहन बना लेना के “कुलां में वफ़ा नहीं है.” या “कुलां ने ही मेरी चीज चुराई है” या “कुलां ने थून्ही गप लगा दिया है” वगैरा «5» अल गरज हाथ, पाउं, सर, नाक, डोंट, जभान, आंभ, अबरु, पेशानी पर बल डाल कर या लिप कर, फोन पर SMS कर के, धन्टरनेट पर येटिंग के जरीअे, बर्की डाक (या'नी E.MAIL) से या किसी भी अन्दाज से किसी के अन्दर मौजूद बुराई या जामी दूसरे को बताई जाअे वोह गीबत में दाखिल है.

मोमिनों पर तीन अेहसान करो ! : डरते सय्यिहुना यइया बिन मुआज राजी **مُؤْمِنِينَ** इरमाते हैं : तुम से मोमिनों को अगर तीन इवाधद हासिल हों तो तुम मुहसिनीन (या'नी अेहसान करने वालों) में शुमार किये जाओगे «1» अगर धन्धे नइअ नहीं पड़ोया सकते तो नुक्सान भी न पड़ोयाओ «2» धन्धे पुश नहीं कर सकते तो रन्जदा भी न करो «3» धन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो.

(تنبيه الغافلين ص ٨٨)

मुसल्मान की ललाई बयान करने वालों के लिये इरिशतों की दुआ : मशहूर ताबेई बुजुर्ग डरते सय्यिहुना मुजलिद **مُؤْمِنِينَ** (जिन का 103 सि.डि. में मक़कअे मुअज़्जमा **مُؤْمِنِينَ** में सजदे की डालत में विसाल हुवा) इरमाते हैं :



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

जब कोई शप्स अपने इस्लामी भाई का बलाई के साथ जिक करता है तो उस के साथ रहने वाले फिरिश्ते उसे द्युआ देते हैं के “तुम्हारे लिये भी इस की भिस्व हो” और जब कोई अपने भाई को बुराई (या’नी गीबत वगैरा) से याद करता है तो फिरिश्ते कहते हैं : तूने उस की पोशीदा बात ज़ाहिर कर दी ! जरा अपनी तरफ़ देख और अद्लाह جَلَّ وَجَلَّ का शुक्र कर के उस ने तेरा पर्दा रखा हुवा है. (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٨)

मुजरिम हूँ दिल् से षौक़े कियामत निकाल द्यो

पर्दा गुनहगार पे दामन का डाल द्यो

मीठे बोल की मीठी लिकायत : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! मुसल्मान के बारे में बलाई वाला मीठा बोल बोलने वाले को फिरिश्ते द्युआओ भैर से नवाजते हैं और गीबत वगैरा करने वालों को तम्भील करते हैं लिहाजा हमें हमेशा ज़बान से मीठा बोल अदा करने की सअ्य करनी याहिये और मीठा बोल तो फिर मीठा बोल है इस की मिठास वोह रंग लाती है के अक्लें दंग रह जाती हैं ! इस ज़िन्न में अेक लिकायत सुनिये और ज़ूमिये युनान्ये पुरासान के अेक बुरुर्गِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को प्वाब में हुकम हुवा : “तातारी कौम में इस्लाम की दा’वत पेश करो !” उस वक्त उलाकू का बेटा तगूदार भर सरे इक्तिदार था. वोह बुरुर्गِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सफ़र कर के तगूदार के पास तशरीफ़ ले आये. सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसल्मान मुबद्लिग को देख कर उसे मरुभरी सूज़ी और कलने लगा : “मियां ! येह तो बताओ तुम्हारी दाढी के बाल अख्छे या मेरे कुत्ते की दुम ?” बात अगर्ये गुस्सा दिलाने वाली थी मगर यूँके वोह अेक समजदार मुबद्लिग थे लिहाजा निहायत नरमी के साथ इरमाने लगे : “मैं भी अपने पालिक व मालिक अद्लाह جَلَّ وَجَلَّ का कुत्ता हूँ अगर ज़ां निसारी और वफ़ादारी से उसे पुश करने में काम्याब हो ज़ां तो मैं अख्छा वरना आप के कुत्ते की दुम ही मुज से अख्छी.” यूँके वोह अेक बा अमल मुबद्लिग थे गीबत व युगली, औबजूई और बद कलामी नीज़ हुज़ूल गोई वगैरा से दूर रहते हुअे अपनी ज़बान जिकुल्लाह جَلَّ وَجَلَّ से हमेशा तर रपते थे लिहाजा उन की ज़बान से निकले हुअे मीठे



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مَوْتٌ بِرَدِّ شَرِيكَهِ بِدُونِ اَعْتِظَاءِ عَزْرٍ وَتُومٍ بِرَدِّ مَتِّهِ لَمَجْرَعًا. (ابن عمر)

बोल तासीर का तीर बन कर तगूदार के दिल में पैवस्त हो गये के जब उस ने अपने “जहरीले कांटे” के जवाब में उस बा अमल मुबद्लिग की तरफ़ से “भुशबूदार म-दनी झूल” पाया तो पानी पानी हो गया और नरमी से बोला : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां किया म इरमाईये. युनान्थे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه उस के पास मुकीम हो गये. तगूदार रोजाना रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه की बिदमत में लाजिर होता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعालَى عَلَيْه निहायत ही शक़्त के साथ उसे नेकी की दा'वत पेश करते. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه की ईन्किरादी कोशिश ने तगूदार के दिल में म-दनी ईन्किलाब बरपा कर दिया ! वोही तगूदार जो कल तक ईस्लाम को सङ्खअे हस्ती से मिटाने के दर पै था आज ईस्लाम का शैदाई बन युका था. उसी बा अमल मुबद्लिग के लाथों तगूदार अपनी पूरी तातारी कौम समेत मुसल्मान हो गया, उस का ईस्लामी नाम अहमद रखा गया. तारीख गवाह है के अक मुबद्लिग के भीठे बोल की ब-र-कत से वस्ते अेशिया की भूंभार तातारी सल्तनत ईस्लामी हुकूमत से बदल गई. अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रडमत हो और उन के सढके डमारी मङ्किरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मीठी ज़बान : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ? मुबद्लिग हो तो औसा ! अगर तगूदार के तीपे जुम्ले पर वोड बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه गुस्से में आ जाते तो हरगिज येड म-दनी नताईज बर आमद न होते. लिहाजा कोई कितना ही गुस्सा दिलाअे डमें अपनी ज़बान को काबू में ही रचना याडिये के जब येड बे काबू हो जाती है तो बा'ज अवकात बने बनाअे खेल भी बिगाड कर रभ देती है. मीठी ज़बान ही तो थी के जिस की शीरीनी और याशनी ने तगूदार जैसे वडशी और भूंभार ईन्साने बढ तर अज हैवान को ईन्सानिय्यत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाईज कर दिया.

है इलाहो कामरानी नरमी व आसानी में

डर बना काम बिगड जाता है नादानी में



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुज़ पर कसरत से दुर्रहे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रहे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भाष्य)

जिको द्हुआ के अन्दाज़ पर गीबत : हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने अहयाउल उलूम जिल्द 3 में सब से बढ तरीन गीबत का तज़क़िरा करते हुअे जो कुछ इरमाया है उस की रोशनी में अर्ज़ करने की सअ्य करता हूं : भा'ज़ लोग ज़ररत से कुछ ज़ियादा ही होशियार होते हैं और वोह शैतान के ज़ंसे में आ कर, سُبْحَانَ اللَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ कह कर नीज़ द्हुआईया जुम्ले भोल कर गीबत बल्के साथ ही साथ रियाकारी के त्नी मुर-तक़िब हो जाते हैं ! म-सलन शप्सिय्यात या अरबाबे ईक्तिदार की तरफ़ मैलान रभने वाले किसी आदमी का तज़क़िरा निकलने पर साफ़ लफ़्ज़ों में बुराई करने के बज़ाअे कुछ ईस तरह बोलेंगे : الْحَمْدُ لِلَّهِ वज़ीरों, अफ़्सरों और सरमाया दारों से अपना कोई वासिता नहीं एन द्हुन्यादारों के आगे कौन ज़लील हो ! (यूं एनडायरेक्ट उस मप्सूस आदमी की जो बडे लोगों से मेलजोल रभता है गीबत हो चुकी) या किसी की बात यलने पर उस के बारे में यूं कहेंगे : हम बे हयाई से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की पनाह मांगते हैं, एलाही भैर इरमा. यूं जिक व द्हुआ के अन्दाज़ में किसी मप्सूस आदमी के तज़क़िरे के मौकअ पर बिला एज्जते शर-ई उस के “बे हया” होने का एज्जहार कर के उस की गीबत में मुत्तला हुअे और बन्द लफ़्ज़ों में अपनी पारसाई (या'नी बा हया होने) का अे'लान कर के रियाकारी की तबाहकारी में जा पडने का ખतरा मोल लिया. एसी अन्दाज़ में द्हुआ ही द्हुआ के अन्दर मप्सूस आदमियों की दीगर ખामियों के एनडायरेक्ट या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में तज़क़िरे कर डालते और सवाब के बज़ाअे अज़ाब के हक़दार बनते हैं. एसी तरह भा'ज़ अवकात किसी की ता'रीफ़ कर के त्नी गीबत की अमीक (या'नी गहरी) ખाई में जा पडते हैं म-सलन कहेंगे : “ ! سُبْحَانَ اللَّهِ कुलां पक़्का नमाज़ी परहेज़ गार है, उस के अख़्लाक त्नी उम्दा हैं मगर बेयारा ऐसी बात में मुत्तला है जिस में हम सत्मी घिरे हुअे हैं मेरा मतलब है के उस में सभ्र की कमी है !” देखा आप ने ! शैतान ने किस कदर यालाकी के साथ ता'रीफ़ करवा कर और काईल की तवाजोअ और एन्किसारी ખुद अपनी ही ज़बानी बुलवा कर अगले को “बे सभ्र” कहलवा कर गीबत की आइत में इंसा दिया ! एस मिसाल को आसान अन्दाज़ में यूं समजिये जैसा



इरमाने मुस्तफा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर ओक दुइद शरीफ पढता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये ओक कीरात अज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अज)

के बा'जों की आदत होती है के यार वोह है तो शरीफ आदमी मगर उस का मेरी तरह दिल् जरा छोटा है, उस को यूं तो दीन से बहुत मडब्बत है मगर मेरी तरह नमाजों में सुस्त है, इलां आदमी अख्ग है मगर मेरी तरह ठन्डा है के इस्तिन्जा खाने में जाता है तो बैठ जाता है वगैरा. इसी तरह बा'ज अवकात किसी के औब या उस की ખता का यूं तजकिरा किया जाता है : “बेयारे से गुस्से ही गुस्से में इलां को थप्पड मार देने की जो भूल हुई है इस पर मुजे सप्त अइसोस है ! मैं दुआ करता हूं के अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ रइम इरमाओ.” इस तरह दुआ के अन्दाज में उस मुसल्मान के गुस्से में आ कर गुल्मन किसी को थप्पड जड देने के औब व ખता का तजकिरा कर डाला, और गीबत की मुसीबत गले पडी. दुआ वाली भिसाल देने के बा'द हुज्जतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي इरमाते हैं : इजहारे अइसोस और दुआ में येह शप्स जूट भोलता है, दुआ करनी ही थी तो नमाज के बा'द युपके से भी की जा सकती थी और अगर अइसोस ही था तो उस की ખता का जो अब इस ने उंका बजाया इस पर भी अइसोस होना याहिये था ! इसी तरह अगर किसी के गुनाह का पता लग जाता है तो बा'ज नादान लोग सब के सामने इस तरह कहते हैं : “बेयारा (म-सलन इलां के पैसे ખुई ખुई करने की) बहुत बडी आइत में इंस गया है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की और हमारी तौबा कबूल इरमाओ.” येह दुआ भी इकीकत में दुआ नहीं बल्के गीबत का ओक बढ तरीन अन्दाज है. (ماخوذ از: احياء العلوم ج ۳ ص ۱۷۹)

कियामत का डोशरुभा मन्जर : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! गीबत की इकीकत को समजने और अपनी जभान को काबू में रभने का जेहन बनाईये, ખुद को कइरे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से उराईये और जरा कियामत के डोशरुभा मन्जर को तसव्वुर में लाईये. दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सइहात पर मुश्तभिल किताब, “बहारे शरीअत” जिहद अव्वल सइहा 133 ता 135 के मजमून का ખुलासा है : इस वक्त सूरज यार हजार बरस की राह पर है और इस तरह उस की पीठ है, कियामत के दिन सूरज सिई ओक भील पर डोगा और उस का मुंड इस तरह डोगा, भेजे ખौलते डोंगे और इस कसरत से पसीना निकलेगा के सत्तर गज जमीन में जज्ब हो जाओगा, इर जो पसीना जमीन न पी सकेगी वोह



इरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये धस्तिगफार करते रहेंगे. (उः३)

उपर चढेगा, किसी के टप्पों तक होगा, किसी के घुटनों तक, किसी के कमर कमर, किसी के सीने, किसी के गले तक, और काफिर के तो मुंह तक चढ कर भिस्ल लगाम के जकड जामेगा, जिस में वोह दुबकियां पायेगा. उस गरमी की हालत में प्यास की जो कैफियत होगी मोहताजे बयान नहीं, जभानें सूख कर कांटा हो जायेगी, भा'जों की जभानें मुंह से बाहर निकल आयेगी, दिल उबल कर गले को आ जायेगे, हर मुत्तला ब क-दरे गुनाह तकलीफ में मुत्तला किया जायेगा, जिस ने यांही सोने की जकत न दी होगी उस माल को भूब गर्म कर के उस की करवट और पेशानी और पीठ पर दाग करेंगे, जिस ने जानवरों की जकत न दी होगी उस के जानवर कियामत के दिन भूब तय्यार हो कर आयेगे और उस शप्स को वहां लिटायेगे और वोह जानवर अपने सींगों से मारते और पाउ से रौंदते उस पर गुजरेंगे, जब सब इसी तरह गुजर जायेगे फिर उधर से वापस आ कर यूहीं उस पर गुजरेंगे, इसी तरह करते रहेंगे, यहां तक के लोगों का हिसाब अत्म हो. وَعَلَىٰ هَٰذَا الْقِيَاسِ. फिर बा वुजूद इन मुसीबतों के कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, भाई से भाई भायेगा, मां बाप औलाद से पीछा छुडायेगे, बीबी बय्ये अलग जान युरायेगे, हर अक अपनी अपनी मुसीबत में गिरिफ्तार, कौन किस का मददगार होगा.....! हजरते आदम ﷺ को हुकम होगा, ऐ आदम ! दोजबियों की जमाअत अलग कर, अर्ज करेंगे : कितने में से कितने ? ईशदि होगा : हर हजार से नव सो नानानवे, येह वोह वक्त होगा के बय्ये मारे गम के बूढे हो जायेगे, उम्ब वाली का उम्ब साकित हो जायेगा, लोग जैसे दिभाई देंगे के नशे में हूँ, हालां के नशे में न होंगे, व लेकिन अल्लाह का अजाब बहुत सप्त है, गरज किस किस मुसीबत का बयान किया जाये, अक हो, दो² हों, सो¹⁰⁰ हों, हजार¹⁰⁰⁰ हों तो कोई बयान भी करे, हजारहा मसाईब और वोह भी जैसे शदीद के अल अमां अल अमां.....! और येह सब तकलीफें दो यार घन्टे, दो यार दिन, दो यार माह की नहीं, बल्के कियामत का दिन, के प्यास हजार भरस का अक दिन होगा.

(बहारे शरीअत, जिहद अव्वल, स. 133 ता 135)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरहे पाक पढा अद्लाह उंस पर दस रइमतें बेजता है. (म)

लोग मुता-लबे कर रहे होंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! जैसे डोशरुभा डालात में यारों जानिब से नइसी नइसी की आवाज बुलन्द होगी, हर तरफ से वावेला की आवाज कान में पड़ेगी, दोऊभ सामने जोश मारती हुई होगी, हर एक वाला अपने एक का मुता-लबा करेगा और रब्बुल इज़्जत की बिदमत में नालिश (या'नी इरियाद) करेगा, कोई कहेगा : इस ने मेरी गीबत की, इस ने मेरा मजाक उड़ाया, कोई बोलेगा : इस ने मुज पर जुल्म किया, कोई कहेगा : इस ने मुझे अहमक कड़ा, कोई कहेगा : इस ने मुझे बे वुकूफ़ बोला, कोई पुकारेगा : इस ने मुझे कत्ल किया, कोई इरियाद करेगा : इस ने मेरा कर्जा दबा लिया, कोई कह रहा होगा : इस ने मेरी किताब छुपाई, कोई कहेगा : इस ने मुझे धूर कर देया और डरा दिया था, किसी का दा'वा होगा : इस ने मुझे बिला वजह ठाडा था, कोई बोल रहा होगा : इस ने मेरा औंभ षोल दिया था, कोई कहता होगा : इस ने मुझे धक्का मारा था. बहर डाल तमाम अडले डुकूक और जिन्हों ने एक तलफ़ किये होंगे उन को फिरिश्ते परवर्द गार उज़्ज के सामने डालिरे करेंगे, येड लोग नदामत से सर रुकाअे डुअे होंगे, और अद्लाह तबा-र-क व तआला हर अेक के साथ अदूलो इन्साइ इरमाअेगा, हर एक वाले को षुश करेगा, उन लोगों की नेकियां इन को देगा और इन की बदियां उन के सर डालेगा. फिर अगर इजले षुदा उज़्ज शामिले डाल डुवा तो उन की नजात डो जाअेगी वरना जइन्नम में पडे अेक मुदत तक जलेंगे.

शानो शौकत के डोने का अजीज है अबस अरमान आबिर मौत है
अेशो गम में साबिरो शाकिर रहे है वोडी इन्सान आबिर मौत है

صَلُّوا عَلَى الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रूनी)

ईस्लाह का हसीन अन्दाज : भीठे भीठे म-दनी आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जब किसी की बात पछोंयती जो ना गवार गुजरती तो उस का पर्दा रખते हुअे उस की ईस्लाह का येह हसीन अन्दाज होता के ईशाद इरमाते : **مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَقُولُونَ كَذًا وَكَذًا : يَا'नी लोगों को क्या हो गया जो औसी बात कहते हैं.** (سَنَنِ ابوداؤدج ६ ص ३२९ حديث ६४८)

काश ! हमें भी ईस्लाह का ढंग आ जाअे, हमारा तो अकसर डाल येह होता है के अगर किसी को समजाना भी हो तो बिला ज़रुरते शर-ई सब के सामने नाम ले कर या उसी की तरफ़ देष कर ईस तरह समजाअेंगे के बेयारे की पोलेँ भी षोल कर रष देंगे अपने जमीर से पूछ लीजिये के येह समजाना हुवा या अगले को जलील (DEGRADE) करना हुवा ? ईस तरह सुधार पैदा होगा या मज़ीद बिगाड बढेगा ? याद रभिये ! अगर हमारे रो'ब से सामने वाला युप हो गया या मान गया तब भी उस के दिल में ना गवारी सी रह जाअेगी जो के बुग्जो कीना **गीबत** व तोहमत वगैरा के दरवाजे षोल सकती है. हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इरमाती हैं : **“जिस किसी ने अपने त्माई को अे'लानिया नसीहत की उस ने उसे औब लगाया और जिस ने युपके से की तो उसे जीनत बप्शी.”** (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٦ ص ١١٢ رقم ٧٦٤١) अगर पोशीदा नसीहत नइअ न दे तो इर (मौकअ और मन्सब की मुना-सबत से) अे'लानिया नसीहत करे. (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٤٩)

डाज् मुशताक सुनहरी जालियों के रू बरू : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्बरा सइर कीजिये, और सुन्नतों त्बरे ईजतिमाअ में अज इब्तिदा ता इन्तिहा मुकम्मल शिर्कत कीजिये न जाने किस के सदके किस पर कब करम हो जाअे ! आप की तरगीब के लिये अेक ईमान अइरोज म-दनी बहार गोश गुजार की जाती है युनान्ये बाबुल ईस्लाम सिन्ध की अेक मस्जिद के मुअज़्ज़न



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरइदे पाक पढा अल्लाह अَرْوَعْلُ (उस पर दस रइमतें बेजता है. (س))

की इसरत हिल में बढाअें और तमन्नाअे दीदार में अशक बढाअें, वोह आशिकाने रसूल किस कदर अप्त बेदार हैं जो जल्वअे यार से अपनी आंभें ठन्डी करते हैं, उशशाक की भी क्या शान है,

बढारे भुल्ल सदके डो रडी है इअे आशिक पर
भिली जती हैं कलियां हिल की तेरे मुस्कुराने से

दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वज़ीफ़ा : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सइहात पर मुश्तमिल किताब "मल्कूअते आ'ला इज्जरत" (मुकम्मल) सइहा 115 ता 116 पर है :

अजः उभीअे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारते शरीफ़ा हासिल डोने का क्या तरीका है ?

इशादः दुरइद शरीफ़ की कसरत शभ में और सोते वक्त के इलावा हर वक्त तकसीर (या'नी कसरत) रभे भिल भुसूस इस दुरइद शरीफ़ को बा'दे इशा सो बार या जितनी बार पढ सके पढे

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا أَمَرْتَنَا أَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْهِ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ أَهْلُهُ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى لَهُ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى رُوحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَرْوَاحِ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى جَسَدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَجْسَادِ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْقُبُورِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
इसूले जियारते अकदस (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के लिये इस से बेउतर सीगा नही मगर भालिस ता'जीमे शाने अकदस (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) के लिये पढे इस नियत



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો શખ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુરૂફી)

કો ભી જગહ ન દે કે મુઝે ઝિયારત અતા હો, આગે ઉન કા કરમ બેહદ વ બે ઇન્તિહા હૈ.

فِرَاقٌ وَوَصْلٌ چہ خواہی رضائے دوستِ طَلَب

کہ حَيْفٌ بِأَشَدِّ أَزْ وَغَيْرِ أَوْ تَمَنَّاى

(યા'ની નઝદીકી વ દૂરી સે કયા મતલબ ! દોસ્ત કી ખુશનૂદી તલબ કર કે ઇસ કે ઇલાવા દોસ્ત સે કિસી ઓર શૈ કી આરઝૂ કરના કાબિલે અફસોસ હૈ)

જલ્વએ યાર ઇધર ભી કોઈ ફૈરા તેરા

હસ્તેં આઠ પહર તકતી હેં રસ્તા તેરા

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ગીબત નેકિયોં કો જલા દેતી હૈ : આહ ! હમારે મુઆ-શરે કી બરબાદી ! અફસોસ સદ કરોડ અફસોસ ! ગીબત કરને ઓર સુનને કી આદત ને હર તરફ તબાહી મચા રખી હૈ. મન્કૂલ હૈ : આગ ભી ખુશક લકડિયોં કો ઇતની જલ્દી નહીં જલાતી જિતની જલ્દી ગીબત બન્દે કી નેકિયોં કો જલા કર રખ દેતી હૈ.

(احياءُ العُلوم ج ٣ ص ١٨٣)

મેરી નેકિયાં કહાં ગઈ ? : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ગીબત કી તબાહ કારિયોં મેં સે યેહ ભી હૈ કે ઇસ કી વજહ સે નેકિયાં ઝાએઝ હો જાતી હેં જૈસા કે અલ્લાહ કે મહબૂબ, દાનાએ ગુયૂબ, મુનઝઝહુન અનિલ ઉયૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઇશાદિ ફરમાયા : બેશક કિયામત કે રોઝ ઇન્સાન કે પાસ ઉસ કા ખુલા હુવા નામએ આ'માલ લાયા જાએગા, વોહ કહેગા મેં ને જો ફુલાં ફુલાં નેકિયાં કી થીં વોહ કહાં ગઈ ? કહા જાએગા : તૂને જો ગીબતેં કી થીં ઇસ વજહ સે મિટા દી ગઈ હેં.

(التَّرغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ٣ ص ٣٣٢ حَدِيثُ ٣٠)



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुर्रहे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (अन)

क़ियामत में अेक अेक लइज़ का हिसाब होगा : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो !

आह ! बरोजे क़ियामत अेक अेक लइज़ का हिसाब होगा. गौर कीजिये ! इस इनी दुन्या में “उम्मे अज़ीज़ के यार दिन” गुज़ारने के बा’द हमें अंधेरी क़भ्र में उतार दिया ज़ायेगा और फिर उस की वइशत आमेज़ तन्हाईयो में न जाने कितना अर्सा हमारा क़ियाम होगा. फिर जब अर्साभे मइशर में हिसाबो क़िताब के लिये हाज़िरी होगी तो अपना हर हर अमल अपने नामभे आ’माल में लिखा हुवा दिभाई देगा जैसा के कुरआने मज्द, कुरकाने हमीद के पारह 30 सू-रतुज़्ज़िज़्ज़ाल आयत नम्बर 6 ता 8 में इशाई होता है :

يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا لِّيُرَوَّأَ
اَعْمَالَهُمْ ۗ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
حَيْرًا يَرَهُ ۗ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
شَرًّا يَرَهُ ۗ

तर-ज-मभे कन्जुल इमान : उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ क़िरेंगे कइ राह हो कर ताके अपना क़िया दिभाभे ज़भें तो ज़ो अेक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देभेगा और ज़ो अेक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देभेगा.

आह ! अल्लाहु कदीर عَزَّ وَجَلَّ की भुइया तदबीर हमारे बारे में क्या है कुइ नहीँ मा’लूम, आया बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ से परवानभे मग़्दिरत ज़री होगी या نَسْئَلُ الْعَاقِبَةَ दुभूले ज़हन्नम का हुकम मिलेगा इस का कुइ नहीँ पता. (मैदादल्ले عَزَّ وَجَلَّ) या’नी हम आइय्यत का सुवाल करते हैं)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी ! **हाभे ! में नारे ज़हन्नम में जलूंगा या रब अइव कर और सदा के लिये राज़ी हो जा** **गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब**

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ !
تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ
صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ !
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (म. १७६)

जिस की गीबत की जाअे वोह फ़ाअेदे में..... : जब आप को मा'लूम हो के मेरी गीबत की गँह है तो सीप पा होने (या'नी गुस्से में आ जाने) के बजाअे सध्रो तहम्मूल से काम लीजिये और यूं भी नुकसान उसी का होता है जिस ने गीबत की, जिस की गीबत की गँह वोह तो फ़ाअेदे ही में रहता है युनान्ये हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : बन्दे को कियामत के दिन जब उस का नामअे आ'माल दिया जाअेगा तो वोह उस में अैसी नेकियां देभेगा जो ईस ने न की होंगी, अर्ज़ करेगा : अै मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ ! येह मेरे लिये कहां से आ गँह ? कहा जाअेगा : येह वोह नेकियां हैं जो लोगों ने तुम्हारी गीबत की थी. (تَنْبِيْهُ الْمُفْتَزِّيْنَ ص १९२)

मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा हकदार है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने किसी ने गीबत का तज़क़िरा किया तो इरमाया : अगर मैं किसी की गीबत करना दुरुस्त जानता तो अपनी मां की गीबत करता क्यूंके मेरी नेकियों की सब से ज़ियादा हकदार वोही है. (مُنْهَاجُ الْعَابِدِيْنَ ص १०)

मां के पूरे हुकूक अदा नहीं किये जा सकते : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! दिल को थोटा लगाने के लिये ईस हिकायत में ईब्रत के काफ़ी म-दनी इल हैं, गोया इरमा रहे हैं के नेकियां यूंके अनमोल हैं और मां के हुकूक से भी सुबुक दोशी मुफ़्दिन नहीं लिहाजा अगर नेकियां किसी को देनी ही हों तो ईन्सान अपनी मां ही को क्यूं न दे दे ! ईस हिकायत से मां की अहम्मियत का भी पता चलता है. बहर हाल गीबत में कोई भलाई नहीं ईस में रुस्वाई ही रुस्वाई है.

अै प्यारे भुदा अज़ पअे सुल्ताने मदीना

गीबत की नुहूसत से मेरी जान छुडा दे



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (महारज़ान)

आधे गुनाह मुआफ़ : हज़रते सय्यिदुना अता पुरासानि سَيِّدُ الرَّسَائِلِ इरमाते हैं :

अगर कोई आप की गीबत करे तो परेशान न हों, गीबत करने वाला ना दानिस्ता तौर पर आप ही के साथ बलाई कर रहा है ! हमें येह बात पछोथी है के जिस की अेक बार गीबत की जाअे उस के निस्फ़ (या'नी आधे) गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं.

(تَنْبِيْهُ الْمُعْتَرِيْنَ ص ١٩٤)

सारी रात की ँबाहत और गीबत : अेक बार हज़रते सय्यिदुना हातिम

असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नमाजे तहज्जुद झैत हो गई तो जैजअे मोह-त-रमा ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ँस पर आर (या'नी गैरत) दिलाई. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : गुजशता शब कुछ अइराह सारी रात नवाझिल में मसइक रहे हैं और सुबह उन्हों ने मेरी गीबत की है तो उन की उस रात की ँबाहत बरोजे क्रियामत मेरे भीजाने अमल (या'नी आ'माल तुलने की तराजू) में रज दी जाअेगी ! (مُنْهَاجُ الْعَابِدِيْنَ ص ٦٦)

100 बरस की नइली ँबाहत और अेक गीबत : भीठे भीठे ँस्वामी भाईयो !

भुजुगाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللهُ السُّبِيْن के इरामीन में हिकमत के बे शुमार म-दनी झूल छोते हैं, मजकूरा हिकायत में गीबत करने वालों को बडे अछूते अन्दाज में योट लगाई गई है ताके वोह गीबतें कर के अपनी ँबाहतें दाव पर न लगाअें, ँस हिकायत से येह म-दनी झूल भी मिला के जौ आदमी ज्वाह सारी सारी रात ँबाहात में गुजारे मगर गीबतों से बाज न आअे तो उस की ँबाहात व रियाजात उन लोगों को दे दी जाअेगी जिन की गीबतें और हक त-लझियां की हैं ! सय पूछो तो 100 बरस की नइली ँबाहत के मुकाबले में सिई अेक बार की गीबत जियादा अतरनाक है क्यूंके अगर कोई शप्स जिन्दगी में कभी भी नइली ँबाहत नहीं करेगा तब भी क्रियामत में ँस पर उस की गिरिइत (या'नी पकड) नहीं है जब के गीबत में रब्बुल ँज्जत की मा'सियत (या'नी ना इरमानी) और सवाबे आभिरत की ँजाअत (या'नी जाअेअ होना) और हलाकत



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરુંગા. (ખૂબાલ)

હે. દુન્યા કી સારી દૌલત કા હાથ સે જાતે રહના અગર્યે નફસ પર ગિરાંબાર હૈ મગર હકીકત મેં બહુત છોટા નુક્સાન હૈ ઓર ક્રિયામત મેં “એક નેકી” ભી અગર કિસી કો હક ત-લફી કે ઈવઝ દેની પડી તો ખુદા કી કસમ યેહ બહુત બડા નુક્સાન હૈ.

મીઝાં પે સબ ખડે હેં આ'માલ તુલ રહે હેં

રખ લો ભરમ ખુદારા અતાર કાદિરી કા

હાજત રવાઈ ઓર બીમાર પુર્સી કી ફઝીલત : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો !

ગીબત કી બદ ખસ્લત સે જાન છુડાઈયે, નેકિયાં બચાઈયે બલ્કે ખૂબ બઢાઈયે, નેકિયાં બઢાને કે મક્કી મ-દની નુસ્ખે અપનાઈયે ઓર જન્નતુલ ફિરદૌસ કે હકદાર બન જાઈયે, **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ !** કિતને ખુશ નસીબ હેં વોહ ઈસ્લામી ભાઈ ઓર ઈસ્લામી બહને જો અપની ઝબાન કો નેકી કી દા'વત, સુન્નતોં ભરે બયાન ઓર ઝિકો દુરુદ મેં લગાએ રખતે હેં. મુસલમાન કી હાજત રવાઈ કરના કારે સવાબ હૈ નીઝ બીમાર યા પરેશાન મુસલમાન કો તસલ્લી દેના ભી ઝબાન કા અઝીમુશ્શાન ઈસ્તિ'માલ હૈ. યુનાન્યે હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને ઉમર **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ઓર હઝરતે સય્યિદુના અબૂ હુરૈરા **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** સે રિવાયત હૈ દોનોં ફરમાતે હેં : જો અપને કિસી મુસલમાન ભાઈ કી હાજત રવાઈ કે લિયે જાતા હૈ અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ઉસ પર પછતર હઝાર મલાએકા કે ઝરીએ સાયા ફરમાતા હૈ, વોહ ફિરિશ્તે ઉસ કે લિયે દુઆ કરતે હેં ઓર વોહ ફારિગ હોને તક રહમત મેં ગોતાઝન રહતા હૈ ઓર જબ વોહ ઈસ કામ સે ફારિગ હો જાતા હૈ તો અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ઉસ કે લિયે એક હજ ઓર એક ઉમ્રે કા સવાબ લિખતા હૈ. ઓર જિસ ને મરીઝ કી ઈયાદત કી અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ઉસ પર પછતર હઝાર મલાએકા કે ઝરીએ સાયા ફરમાએગા ઓર ઘર વાપસ આને તક ઉસ કે હર કદમ ઉઠાને પર ઉસ કે લિયે એક નેકી લિખી જાએગી ઓર ઉસ કે હર કદમ રખને પર ઉસ કા એક ગુનાહ મિટા દિયા જાએગા ઓર એક દ-રજા બુલન્દ ક્રિયા જાએગા, જબ વોહ મરીઝ કે સાથ બેઠેગા તો રહમત ઉસે ઢાંપ લેગી ઓર અપને ઘર વાપસ આને તક રહમત ઉસે ઢાંપે રહેગી.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٣ ص ٢٢٢ حديث ٤٣٩٦)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے مومن پر دس مرتباً دُرّہ پاک پڑا اے اللہ اے عَزَّوَجَلَّ اُس پر سو رحمتوں نازل فرماتا ہے. (طبرانی)

सियासी तब्सिरों की बैठकें : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस हिकायत से मा'लूम हुवा के सियासी काईदीन, अरबाबे ईक़्तदार और हुक़मरान तबके की गीबत की भी खुली छूट नहीं. सद करोड अफ़सोस ! आज कल शायद ही हमारी कोई निशस्त ऐसी हो जिस में किसी सियासी लीडर या वज़ीर या कौमी या सूबाई ऐसेम्बली के किसी रुक़न की ईज़्ज़त की धज्जियां न उड़ाई जाती हों. कभी वज़ीरे आ'ज़म ह-दई तन्कीह होता है तो कभी सद्र, कभी वज़ीरे आ'ला की शामत आती है तो कभी गवर्नर की. मुफ़्तलिफ़ लोगों के मु-तअद्विक नाम बनाम जोरदार मन्फ़ी (NEGATIVE) बहसों की जातीं, जो त्मर कर कीयउ उछाला जाता और अेक से अेक बुरे नाम रभे जाते हैं. गौर से सुनिये ! रब्बे काअेनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 11 में ईशाई फ़रमाता है :

وَلَا تَتَّبِعُوا بِاللَّيْلِ لَمَعًا قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ १۱
तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : और अेक दूसरे के बुरे नाम न रभो.

फ़िरिशते ला'नत करते हैं : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 246 ता 247 पर येह हदीसे पाक लिखी है : हज़रते सय्यिहुना सईद बिन आभिर से रिवायत है के नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ता'जवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ईशादि हकीकत बुन्याह है : जिस ने किसी मुसल्मान को उस के नाम के ईलावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर मलाअेका ला'नत भेजते हैं.

(الجامع الصغير للسيوطي ص ٥٢٥ حديث ٨٦٦٦)

अब्बारी बबरों का डाल बे डाल : मन-यले नौ जवानों की अक्सर मंडलियों और बडे बूढों की कसीर बैठकों में हुक़मरानों और सियासी लीडरों के बारे में गीबतों, तोहमतों, बह गुमानियों और अैब दरियों का वोह मन्हूस सिस्सिला यलता है के **إِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي إِنِّي أَخافُ أَن يُسْأَلَ عَنِّي وَارْتَمَتِ السَّمَكَةُ بَيْنَهُمَا وَانفَصَلَّتْ عَنِّي وَارْتَمَتِ السَّمَكَةُ بَيْنَهُمَا وَانفَصَلَّتْ عَنِّي** ! फिर सितम बालाअे सितम येह के दलील भी किसी के पास कुछ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

नहीं होती ! शायद कोई कहे के क्यूं नहीं हम ने हुलां अम्बार में पढा था, अब बिलइर्ज वोह अम्बार इल्मी अदाकाराओं की इोइश अदाओं की तस्वीरों से भरपूर इश्तिहारों, गन्दी ह-र-कतों की जज्बात लउकाने वाली (SEX APPEALING) खबरों, छुप कर गुनाह करने वालों की बिला ज़रते शर-ई आबइ रेजियों, हुकमरानों, सियासत दानों और मुआ-शरे के हर तबके के मुसल्मानों की तज़लीलों, तोड़मत्तों और इल्जाम तराशियों और मरे हुअे मुसल्मानों तक की गीबतों से भरपूर रहता हो तो मेरे खयाल में अगर कोई वलिय्युद्दाह भी गीबतों और गुनाहों भरी खबरों से भरपूर और बे पर्दा औरतों की तस्वीरों से मा'भूर ऐसा अम्बार पढने में मशगूल हो तो शायद अपनी विलायत न बया पाअे ! बुराईयों से सरशार किसी जैसे अम्बार में छपी हुई "अैब दरियों और गीबतों भरी खबर" को दलील कैसे बनाया जा सकता है ! अगर खबर सख्खी भी थी तब भी बिला मस्लहत शर-ई किसी मुसल्मान की बुराई (छापने और) बयान करने और इस तरह की गुनाहों भरी खबर बिला इज्जते शर-ई पढने की शरीअत ने कब इज्जत दी है ! इसी को तो इस्लाम ने अैब दरी और गीबत करार दे कर इस की भरपूर अन्दाज में हौसला शिकनी इरमाई है.

कुत्तों की तरह काटते और नोयते होंगे ! : बहर डाल ऐसी सोहबतों और बैठकों को तर्क करना ज़रूरी है जिन में गुनाहों भरी बहसें छिडतीं, डालाते डालिरा पर हुजूल तब्सिरे होते, मुसल्मानों की इज्जतें पामाल होतीं और ખૂब गीबतें की जाती हैं. आप की तप्वीइ (या'नी अजाब से डराने) के लिये अर्ज है के दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सइहा 253 पर है : अेक बुजुर्गِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ इरमाते हैं के जब कियामत का दिन आअेगा तो अद्लाह جَزَّوَجَزَّ की ना इरमानी के लिये मिल कर बैठने वाले और गुनाहों पर अेक दूसरे की मद्द करने वाले जम्अ होंगे, फिर वोह घुटनों के बल खडे होंगे और अेक दूसरे को कुत्तों की तरह काटते और नोयते होंगे, येह वोह बद् नसीब होंगे जो बिगैर तौबा किये हुन्या से रुप्सत हुअे होंगे.

(بَحْرُ الدُّمُوعِ (عربی) ۱۸۰)



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पढे. (१७)

में फ़ालतू भातों से रहूं दूर उमेशा

युप रहने का अल्लाह ! सलीका तू सिपा दै

दुआये कुनूत पढने वाले अपना वा'दा निभाये : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !

भुरी सोहबतों से बयना बेहद ज़रूरी है वरना आपिरत तबाह हो सकती है. मेरे

आका आ'ला उजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा पान

अहमद रज़ा पान **مَكْتُوْلُ الْمُكْرَمِ** इरमाते हैं : शरीअते मुतह्हरा ने नमाज में कोई जिक्र ऐसा नहीं रखा

है जिस में "सिर्फ़ ज़बान" से लफ़्ज़ निकाले जायें और मा'ना मुराद न हों. (इतावा

र-अविय्या, जि. 29, स. 567) तो आप की याद दिहानी के लिये अर्ज़ है के नमाजे वित्र में

आप येह दुआये कुनूत तो पढते ही होंगे जिस में है : **وَنَخْلَعُ وَتَتْرُكُ مَنْ يَفْجُرُكَ ۝**

या'नी "(या अल्लाह ! हम) अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस को जो तेरी ना

इरमानी करे" अगर आज से पहले मा'ना मा'लूम नहीं थे तो यलिये अब पता चल

गया लिहाजा अपने रब **عَزَّ وَجَلَّ** से किये जाने वाले रोज रोज के ईस वा'दे को अब

अ-मली ज़मा पहना ही दीजिये और नमाज न पढने वालों, गालियों, बद गुमानियों,

तोहमतों, गीबतों, युग्लियों और तरह तरह से ना इरमानियों में मुलव्वस रहने

वालों इंसिकों और इजिरों की बैठकों और उन की सोहबतों से तौबा कर लीजिये.

और कुरआने करीम भी ऐसों की सोहबत से मन्अ इरमाता है, जैसा के पारह 7

सू-रतुल अन्आम आयत नम्बर 68 में ईशाद होता है :

وَإِمَّا يُسِيبَكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और जो कहीं तुजे

الدِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ शैतान लुलावे तो याद आये पर ज़ालिमों के

पास न बैठ.

तइसीराते अहमदिय्या में ईस आयते मुबा-रका के तह्त लिखा है : यहां

ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुत्तदिईन या'नी गुमराह व बद दीन और

इंसिकीन हैं.

(تفسيرات أحمدية ص 388)



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे ज़मुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ ह्योगे. (अहमद)

नेकी की द्य'वत द्येने के लिये इंसिकों के पास ज़ाना ज़र्यज है : ज्यो इस्लामी त्माइ मुतकी परहेज गार ह्यो, वोह यारी द्योस्ती में नही बलके सिर्फ़ नेकी की द्य'वत की हद तक ना इरमानों और बिगडे हुअे लोगों के साथ बैठ सकता है युनान्ये पारह 7 सू-रतुल अन्आम आयत नम्बर 69 में रब्बुल इबाद عَزَّ وَجَلَّ इशरिद इरमाता है :

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِنْ شَيْءٍ وَلَا لِكِنْ ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾
(پ ٧، الانعام: ٦٩)

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और परहेज गारों पर उन के हिसाब से कुछ नही, हां नसीहत द्येना शायद वोह बाज आअें.

हजरते सदरुल अफ़जिल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِيَة عَلَيهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِيَة अजाइनुल इरइान में इंस आयते करीमा के तहत इरमाते हें : इंस आयत से मा'लूम हुवा के पन्दो नसीहत और इजहारे हक के लिये इन के पास बैठना ज़र्यज है.

हज्जज्ज बिन यूसुफ़ की गीबत से त्मी परहेज : हमारे बुजुगानि दीन رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِيَة को गीबत के मुआ-मले में अद्लाहु द्यवर عَزَّ وَجَلَّ का इंस कदर डर रहता था के जिन के जुल्मो सितम की द्यस्तानें मशहूर व मा'रुफ़ ह्योतीं उन का त्मी बिला ज़रते शर-ई तजक़िरा करने से बयते थे जैसा के हजरते सय्यिदुना इस्माईल हक़ी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नकल करते हें : हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद इब्ने सीरीन عَلَيهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَيْن से अज्ज की गइ : क्य़ा बात है के आप ने कत्मी त्मी हज्जज्ज (बिन यूसुफ़) के बारे में द्यो लइज नही बोले ! (या'नी उसे बुरा त्मला नही कहा) इरमाया : "में (अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की पुइया तदबीर से) डरता हूं, कहीं अैसा न ह्यो के क़ियामत के दिन अद्लाह तआला तौहीद की ब-र-कत से उसे तो ह्योड द्ये (या'नी यूंके वोह मुसल्मान था लिलज्जा इंस निस्बत के सबब अपने इजलो करम से उसे बे हिसाब बप्श द्ये) और मुजे उस की गीबत करने की वजह से अजाब में मुतला इरमा द्ये." (تفسير روح البیان ج ٩ ص ٩٠)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुर्रहे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रहे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़ि़रत है. (भा. ५)

नज़्अ में कुड़् अकने का शर-ई मस्अला : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! पौड़े पुढा से लरज उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बरहक को राजी करने के लिये उस की बारगाहे बेक्स पनाह में जुक जाईये. आह ! युगली, हसद और शराब नोशी के सबब वलिये कामिल का शागिर्द कुड़्किया कलिमात बोल कर मरा. यहां अेक ज़र्री मस्अला समज लीजिये युनान्चे सदरुशरीअह, बदरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : मरते वक्त اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْأَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ لِيْ اَمْرًا يَنْجُوْنِيْ مِنْ اَمْرِىْ اِنْ اَمْرًا لَمْ يَكُنْ لِيْ مِنْ اَمْرِىْ اِنَّ اَمْرًا لَمْ يَكُنْ لِيْ مِنْ اَمْرِىْ اِنَّ اَمْرًا لَمْ يَكُنْ لِيْ مِنْ اَمْرِىْ

(बहारे शरीअत, खिस्सा : 4, स. 158, १६ व ३ ج ۱۰ مُخْتَار)

अकसर ખताओं ज़भान से छोती हैं : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! वाकेई गलत खलने वाली ज़भान ईन्सान को बहुत परेशान करती है, ईन्सान ईसी ज़भान से गालियां निकाल कर, जूट बोल कर, गीबतें कर के युग्लियां भा कर अपनी आभिरत को दाव पर लगाता है. ईस ज़भान की आइतों से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की पनाह ! मशहूर सहाबी उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्उद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के अहक के रहबर, शाईअे महशर, महबूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : ईन्सान की अकसर ખताओं उस की ज़भान से छोती हैं.

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِي ج ۱۰ ص ۱۹۷ حدیث ۱۰۴۴)

रोज़ाना सुब्ह आ'ज़ा ज़भान की ખुशामद करते हैं : उजरते सय्यिदुना अबू सईद पुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : जब ईन्सान सुब्ह करता है तो उस के तमाम आ'ज़ा ज़भान के सामने आज़िज़ाना येह कडते हैं : हमारे बारे में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से डर ! क्यूंके हम तुज से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम सीधे रहेंगे अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े हों.

(سُنَن تَرْمِذِي ج ۴ ص ۱۸۳ حدیث ۲۴۱۰)



इरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुअ पर ओक दुइद शरीफ पढता है अल्लाह उरस के लिये ओक कीरात अज्ज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है : मुफ़्फ़िसिरे शहीर उकीमुल

उम्मत उजरते मुफ़्फ़ती अहमद यार ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ ઇस उदीसे पाक के तह्त फ़रमाते हैं : नफ़अ व नुकसान, राहत व आराम, तकालीफ़ व आलाम में (अै ज़बान !) हम तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू भराब होगी हमारी शामत आ जावेगी तू दुरुस्त होगी हमारी इज़्जत होगी. ખયાલ રહે કે જબાન દિલ કી તરજુમાન હૈ ઇસ કી અચ્છાઈ બુરાઈ દિલ કી અચ્છાઈ બુરાઈ કા પતા દેતી હૈ. (મિરઆત, જિ. 6, સ. 465)

ज़बान की बे ओहतियाती की आइतें : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! वाकेइ ज़बान अगर टेढी चलती है तो भा'ज अवकात इसादात बरपा हो जाते हैं, इसी

ज़बान से अगर मर्द अपनी बीवी को तलाक कल दे तो (कई सूरतों में) तलाके मुगदलजा वाकेअ हो जाती है, इसी ज़बान से अगर किसी को बुरा बला कला और उस को तैश (या'नी गुस्सा) आ गया तो भा'ज अवकात कत्वो गारत गरी तक नौबत पड़ोय जाती है. इसी ज़बान से अगर किसी मुसल्मान को बिला इज्जते शर-ई उंट दिया और उस की दिल आज़ारी कर दी तो यकीनन इस में गुनहगारी और जहन्नम की हकदारी है. “त-बरानी शरीफ़” की रिवायत में है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इब्रत निशान है : जिस ने (बिला वजहे शर-ई) किसी मुसल्मान को इजा दी उस ने मुझे इजा दी और जिस ने मुझे इजा दी उस ने अल्लाह उरस को इजा दी.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٢ ص ٣٨٦ حديث ٣٦٠٧)

उमेशा की रिजा व नाराज़ी : उजरते सय्यिदुना बिलाल बिन हारिस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

रिवायत करते हैं, सुल्ताने दो जहान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने हकीकत निशान है : कोई शप्स अच्यी बात बोल देता है उस की इन्तिहा नहीं जानता इस की वजह से उस के लिये अल्लाह की रिजा उस दिन तक के लिये लिफ़ी जाती है जब वोह उस से मिलेगा. और ओक आदमी बुरी बात बोल देता है जिस की इन्तिहा नहीं जानता अल्लाह इस की वजह से अपनी नाराज़ी उस दिन तक लिफ़



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (अ. ५)

देता है जब वोह उस से मिलेगा.

(سُنَن تَرِمِذِي ج ٤ ص ١٤٣ حديث ٢٣٢٦)

पहले तोलो फिर मुंड से ओलो : मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुइती

अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ ईस उदीसे पाक के तइत इरमाते हैं : (बा'उ अवकात आदमी) कोई बात ऐसी बुरी ओल देता है जिस से रब तआला उमेशा के लिये नाराउ हो जाता है लिहाजा ईन्सान को याहिये के बहुत सोय समज कर बात किया करे. उजरते सय्यिदुना अल्कमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) इरमाया करते थे के मुजे बहुत सी बातों से बिलाल ईब्ने हारिस (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) की (मजकूरा) उदीस रोक देती है. (म. ८) या'नी में कुछ ओलना याहता हूं के येह उदीस सामने आ जाती है और में (ईस भौइ से) भामोश हो जाता हूं (के कहीं ऐसी बात मुंड से न निकल जाओ जिस की वजह से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उमेशा के लिये मुज से नाराउ हो जाओ).

(मिरआत, जि. 6, स. 462)

कुइले मदीना लगाने डी में आइय्यत है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !

बे सोये समजे ओल पडना बेहद भतरनाक नताईज का हामिल हो सकता और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उमेशा उमेशा की नाराजी का भाईस बन सकता है. यकीनन उभान का कुइले मदीना लगाने या'नी अपने आप को गैर जइरी बातों से बयाने डी में आइय्यत है. भामोशी की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ गुइत-गू लिभ कर या ईशारे से कर लिया करना बेहद मुईद है क्यूंके जो जियादा ओलता है उभूमन भताओं भी जियादा करता है, राज भी इश कर डालता है. गीबत व युगली और औबजूई जैसे गुनाहों से बयना भी ऐसे शप्स के लिये बहुत दुशवार होता है बल्के बक बक का आदी बा'उ अवकात مَعَادُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ कुइय्यात भी बक डालता है !

दिल की सप्ती का अन्जाम : अल्लाहु रइमान एउजल्लम पर रइम इरमाओ और

उमारी उभान को लगाम नसीब करे के येह जिकुल्लाह से गाइल रइ कर इजूल ओल ओल कर दिल को भी सप्त कर देती है. अल्लाहु गनी عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे नबी मक्की म-दनी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईभ्रत निशान है : इओइश गोई सप्त दिली



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर अक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रकमते बेजता है. (س)

से है और सप्त दिली आग में है.

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ۳ ص ۴۰۶ حدیث ۲۰۱۶)

भक भक की आदत कुइ में डाल सकती है : मुक़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत

उरते मुफ़ती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ इस उदीसे पाक के तहत इरमाते हैं :

या'नी जो शप्स उभान का बेभाक हो, के हर बुरी बली बात बे धउक मुंह से निकाल

दे तो समज लो के उस का दिल सप्त है उस में डया नहीं. सप्ती वोह दरप्त है जिस की

जउ इन्सान के दिल में है और इस की शाभ दोऊभ में. जैसे बे धउक इन्सान का

अन्जाम येह होता है के वोह अल्लाह रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की भारगाह

में भी बे अदब हो कर काफ़िर हो जाता है.

(मिरआत, जि. 6, स. 641)

و يا ايتها الیوم انی اذین انی اذین

अइसोस मगर दिल की कसावत¹ नहीं जाती

صَلُّوا عَلَي الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَي الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

गीबत करने वाला काबिले रहम है : अक बुरुग² से किसी ने

कहा : हुलां शप्स आप की इस कदर बुराई बयान करता है के मुजे आप पर

रहम आता है. इरमाया : “काबिले रहम तो वोह शप्स पुढ है.”

(تفسير قرطبي ج ۸ ص ۲۴۲) ! سُبْحَانَ اللهِ ! हमारे बुरुगों का इप्लास व अप्लाक सद करोड

मरहबा ! इन की म-दनी सोय की भी क्या बात है ! अपनी बे तहाशा बुराईयां

करने वाले पर भी गुस्सा नहीं आ रहा बल्के दिल मुत्मईन है के मेरा अपना क्या

ادينه

1. या'नी सप्ती



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جئى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

जता है ! गीबत करने वाला ही नुकसान उठाता है और वोह नादान धन मा'नों में काबिले रहम ही है के अपनी नेकियां बरबाद कर रहा और गुनहगार हो कर अजाबे नार का हकदार करार पा रहा है.

दर्टे सर हो या बुभार आये तउप जता हूं मैं जहन्नम की सजा कैसे सहूंगा या रब !

अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

“बहुत सोता है” कहना गीबत है : उजरते सय्यिहुना अबू बक सिदीक और उजरते सय्यिहुना उ-मरे इरक़े आ'उम रَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के बारे में भरवी है के धन में से अक ने दूसरे से इरमाया के **إِنْ فَلَا تَكُونُوا** या'नी इलां शप्स बहुत सोता है इर उन्हों ने सरकारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से सालन मांगा ताके रोटी पाअें, नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरमाया : तुम सालन पा युके हो. उन्हों ने अर्ज की : हमें तो इस का इल्म नहीं. इरमाया : हां क्यूं नहीं तुम दोनों ने अपने भाई का गोशत पाया है.

(احياء العلوم ج 3 ص 180، إتحاف السادة للزيدي ج 9 ص 307)

गीबत सुनने वाला भी गीबत करने में शरीक है : हुज्जतुल इस्लाम उजरते सय्यिहुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली **رَحِمَهُ اللهُ الْوَالِي** येह उदीसे पाक नकल करने के बा'द इरमाते हैं : तो देओ किस तरह सुल्ताने अम्बिया **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने दोनों को इस मस्अले में जम्अ किया (हालांके उबान से सिर्फ) अक ने गीबत की मगर दूसरे ने उसे सुना (लिहाजा वोह भी गीबत में शरीक ठहराअे गअे)

(احياء العلوم ج 3 ص 180)

पाने और बोलने से मु-तअद्लिक गीबत की 12 मिसालें : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा ज़ियादा सोने वाले के बारे में पीछे से कहना के “सोता बहुत है” गीबत है. मज़ीद पाने और बोलने से मु-तअद्लिक गीबत की 12 मिसालें मुला-हजा हों : ❁ जाता बहुत है ❁ जब देओ जाता रहता है ❁ इस को



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढ़ा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (अब)

तो हर वक्त जाने ही की पडी रहती है ❀ बे यभाअे निगल जाता है ❀ भोटियां अपनी तरफ़ सरका लेता है ❀ जहां नियाज का जाना हो वहां पछोंय जाता है ❀ कुरआन प्वानी/ एजतिमाअ/ एजतिमाअे जिको ना'त/ उर्स शरीफ़ में जाने के वक्त पछोंयता है ❀ मय्यित के तीजे का जाना भी नहीं छोडता ❀ बोलता बहुत है ❀ दूसरों की बारी नहीं आने देता ❀ दूसरों की बात काट देता है ❀ अगले को बातों ही बातों में भा जाता है वगैरा वगैरा. मजकूरा रिवायत से عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ उतरते शैभैने करीमैन या'नी सय्यिदैनाना सिद्दीके अकबर व इरक़े आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के बारे में किसी तरह की बुराई उेडून में न लाई जाअे, येह उमानअे तरबियत के मुआ-मलात हैं. सहाभअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इस तरह के मु-तअदिद वाकिआत कुतुबे अहादीस में मिलते हैं. युनान्ये

पीछे से एशारतन "ठिगना" कडना गीबत है : उम्मुल मुअभिनीन उतरते सय्यि-दतुना आईशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا रिवायत इरमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रउिइरुईम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ से अउ की : सइय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये येह काफ़ी है के वोह अैसी हैं अैसी हैं या'नी पस्ता कद हैं, उुतूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एशदि इरमाया के "तुम ने अैसा कलिमा कडा (या'नी अैसी बात कडी) के अगर समुन्दर में मिलाया जाअे तो उस पर गालिब आ जाअे." (سنن ابوداؤد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٥) या'नी किसी पस्ता कद को भी ❀ पस्ता कद ❀ नाटा ❀ ठिगना कडना गीबत में दाखिल है, जब के बिला उररत हो.

किसी के इतिरी अैब बयान करना अडे भौइ की बात है : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! लम्बा और ठिगना वगैरा होना येह इतिरी उयूब हैं बिला मस्लहत शर-ई पीठ पीछे किसी मुसल्मान के एन अैबों का तजकिरा भी गीबत है अडे इस के बारे में उुजुतुल इस्लाम उतरते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي इरमाते हैं : अगर उस के अैब का तअद्लुक उस की भिदकत (या'नी इतिरत) से है तो उस की बुराई बयान करना गोया مَعَادِلُ اللَّهِ अद्लाह तआला की



इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुठ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

किसी के मा'यूब मरज का तजकिरा करना : सुल्ताने अम्बियाअे किराम, शह-शाहे भैरुल अनाम, महबूबे रब्बुस्सलाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भिदमते बा ब-र-कत में अेक आदमी का तजकिरा करते हुअे जब अर्ज की गई : हुलां शप्स भुद नहीं भा सकता यहां तक के कोई उसे भिलाअे और न ही यल सकता है यहां तक के कोई उसे यलाअे. तो इरमाया : “तुम ने उस की गीबत की.” सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : या रसूलव्वाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम ने तो वोह बात बयान की है जो उस में मौजूद है. ईशाद इरमाया : गीबत के लिये ईतना ही काफ़ी है के तुम ने अपने भाई का औब बयान किया. (حلیة الأولیاء ج ۸ ص ۲۰۴ رقم ۱۱۸۸۳)

लूले लंगडे की गीबत : ताबेई बुजुर्ग हजरते सय्यिदुना मुआविया बिन कुर्रह عَلَيْهِ इरमाते हैं : “अगर तुम्हारे पास से कोई लुन्जा (या'नी लूला या लंगडा) गुजरे और तुम उस के लुन्जे पन के औब का तजकिरा करो तो येह भी गीबत है.” (تفسیر درّ منثور ج ۷ ص ۵۷۱) मा'लूम हुवा के किसी लुन्जे को भी बिला ईजाअते शर-ई पीठ पीछे लुन्जा कलना गीबत है ईसी तरह किसी को ❀ लंगडा ❀ गन्जा ❀ अन्धा ❀ काना ❀ लूला ❀ तुतला ❀ हकला ❀ गूंगा ❀ बहुरा ❀ कुभडा वगैरा कलना भी गीबत है.

लिबास की जामी बताना भी गीबत है : उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ईशाद इरमाती हैं के अेक मर्तबा मैं नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अइलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भिदमत में हाजिर थी, मैं ने अेक औरत के बारे में कहा : یا'नी येह लम्बे दामन वाली है. तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : اَلْقَطِيْ اَلْقَطِيْ या'नी जो कुछ तेरे मुंह में है निकाल डेंक. तो मैं ने मुंह से गोशत का टुकडा निकाल कर डेंका.

(الصّت مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج ۷ ص ۱۴۵ حدیث ۲۱۶)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا جیک હુવા ઓર ઉસ ને મુજ પર દુરુદે પાક ન પઢા તહકીક વોહ બદ બખ્ત હો ગયા. (હુન્)

“ગીબત કરના નિહાયત હી સખ્ત ગુનાહ હૈ” કે ચૌબીસ હુરુફ કી નિસ્બત સે લિબાસ કે મુ-તઅલ્લિક ગીબત કી 24 મિસાલેં

મા'લૂમ હુવા કે પીઠ પીછે કિસી કે લિબાસ કી ખરાબી કા બયાન કરના ભી ગીબત હૈ લિબાસ કે મુ-તઅલ્લિક ગીબત કી 24 મિસાલેં મુલા-હઝા હોં : (દર્જે ઝૈલ બાતેં દુરુસ્ત હોં તો ગીબત વરના ઈસ સે બડે ગુનાહ તોહમત મેં દાખિલ હોંગી) ❀ ઉસ કી આસ્તીન લમ્બી હૈ ❀ કપડે બે ઢંગે હેં ❀ કપડે મૈલે હેં ❀ કપડોં કો ગન્દગી સે નહીં બચાતા ❀ કપડોં સે બદબૂ આતી હૈ ❀ કપડોં કા ડીઝાઈન સહીહ નહીં ❀ બડે ભાઈ કા કુરતા ચઢા લિયા હૈ ❀ ઈસ કો કપડે પહનને કા ઢંગ નહીં આતા ❀ ઈમામા સહીહ સે બાંધના નહીં આતા ❀ ઉસ કી ચાદર મૈલી ચિકટ હો ગઈ હૈ ❀ મોઝે ફટે હુએ પહનતા હૈ ❀ લન્ડા બાઝાર કે (સેકન્ડ હેન્ડ) કપડે પહનતા હૈ ❀ ઘટિયા વાલા કપડા હૈ ❀ ઓરતોં વાલે રંગોં કે કપડે પહનને કા બહુત શૌક હૈ ❀ ઉસ લિબાસ મેં તો વોહ મસ્ત મલંગ લગતા હૈ ❀ ઝરા દેખો તો બડે ભાઈ કી કમીસ ઓર છોટે ભાઈ કી શલવાર ચઢા લી હૈ, કિતના અજબ લગ રહા હૈ ❀ કિતના કન્જૂસ હૈ કે ઈતના પૈસે વાલા હો કર ભી કપડે બિલ્કુલ સાદે પહનતા હૈ ❀ બાપ ચપરાસી હૈ મગર બેટે કે કપડે તો દેખો ! ❀ માંગા હુવા સૂટ પહના હોગા વરના ઈસ કી ઈતની અવકાત કહાં ! ❀ યેહ ઈસ લિયે ફટે પુરાને કપડે પહનતા હૈ તાકે પાર્ટિયોં સે માલ બટોરના આસાન હો ❀ જબ દેખો ઉસ કે કપડે કહીં ન કહીં સે ફટે હુએ હોતે હેં ❀ અપની ગુરબત ઝાહિર કરને ઓર લોગોં કી હમદર્દિયાં પાને કે લિયે પૈવન્દ લગે કપડે પહનતા હૈ ❀ કર્ઝે લે કર ઈતના મહંગા સૂટ લેને કી ઈસે ક્યા ઝરૂરત થી ❀ ઉફ ! ઉસ ને કિસ કદર અજબ લિબાસ પહના હુવા થા.

શરાબે મહબ્બત કુછ ઐસી પિલા દે કભી ભી નશા હો ન કમ યા ઈલાહી

મુઝે અપના આશિક બના કર બના દે તૂ સર તા પા તસ્વીરે ગમ યા ઈલાહી



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अबुअह्ल)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوْا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرِ اللهُ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जूअे के कारोबार से तौबा : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये द्वा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इक़े मदीना के ज़रीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्भ करवाइये. आप की तरगीब के लिये अेक म-दनी बडार गोश गुज़ार करता हूँ युनान्चे सोई डिवीजन डेरा बगटी (बलूचिस्तान) के अेक स्कूल टीयर ने कुछ ईस तरह डक्किया तहरीर दी है के मैं तम्बोला (अेक डिस्म का भेल जिस में पैसों का जूआ होता है) की दुकान यलाता था. 2004 ई. में पाकिस्तान के सूबे बाबुल ईस्लाम (सिन्ध) सत्ड पर सहराअे मदीना (बाबुल मदीना करायी) में डोने वाले तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक द्वा'वते ईस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में जुश डिस्मती से शिर्कत की सआदत मिल गई, आभिर में जब दुआ डुई तो मुज़ पर रिक्कत तारी डो गई. मैं ने साबिका तमाम गुनाहों से तौबा करने के साथ साथ नमाजे बा जमाअत पाबन्दी से अदा करने की निखत कर ली. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ईजतिमाअ से वापस आते ही तम्बोला का काम यकसर खत्म कर दिया, दाढी शरीफ़ रभ ली और स्कूल में दर्स भी ज़री कर दिया और द्वा'वते ईस्लामी के मद्र-सतुल मदीना (बराअे बालिगान) में कुरआने पाक पढना शुरुअ कर दिया.

जूआ डराम है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! द्वा'वते ईस्लामी के सुन्नतों भरे ईजतिमाआत की भी क्या बात है ! अल्लाहु तव्वाभ اَعُوْذُ بِكَ رَحْمَتِكَ سے ઇન में



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (કુરાઆલ)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّخَذُوا اللَّيْسُ
وَالْأَنْصَابَ وَالْأَزْوَاجَ مَرْجِسٍ مِّنْ
عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوا لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ ۝
اتَّسَائِرُ يَدِ الشَّيْطَانِ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمْ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَيْرِ وَالْيَمِينِ
وَيَصِدَّكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ۝ (پ ۷ المائدہ: ۹۰، ۹۱)

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : એ ઈમાન વાલો !
શરાબ ઓર જૂઆ ઓર બુત ઓર પાંસે નાપાક
હી હેં શૈતાની કામ તો ઈન સે બચતે રહના
કે તુમ ફલાહ પાઓ. શૈતાન યેહી ચાહતા
હે કે તુમ મેં બૈર ઓર દુશ્મની ડલવાવે શરાબ
ઓર જૂએ મેં ઓર તુમ્હે અલ્લાહ (عَزَّوَجَلَّ)
કી યાદ ઓર નમાઝ સે રોકે તો ક્યા તુમ
બાઝ આએ ?

હઝરતે સદરુલ અફાઝિલ સય્યિદુના મૌલાના મુહમ્મદ નઈમુદ્દીન મુરાદઆબાદી
બઝાઈનુલ ઈરફાન મેં ઈસ કે તહ્ત લિખતે હેં : ઈસ આયત મેં શરાબ
ઓર જૂએ કે નતાઈજ ઓર વબાલ બયાન ફરમાએ ગએ કે શરાબ ખોરી ઓર જૂએ
બાઝી કા એક વબાલ તો યેહ હે કે ઈસ સે આપસ મેં બુઝઝ ઓર અદાવતેં પૈદા હોતી હેં
ઓર જો ઈન બદિયોં (યા'ની બુરાઈયોં) મેં મુબ્તલા હો વોહ ઝિકે ઈલાહી ઓર નમાઝ
કે અવકાત કી પાબન્દી સે મહરૂમ હો જાતા હૈ.

જૂઆ મેં જીતા હુવા માલ હરામ હૈ : પારહ 2 સૂ-રતુલ બ-કરહ કી આયત
નમ્બર 188 મેં ઈશદિ રબ્બુલ ઈબાદ હોતા હૈ :

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ
(پ ۲ البقره: ۱۸۸)

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : ઓર આપસ મેં એક
દૂસરે કા માલ નાહક ન ખાઓ.

સદરુલ અફાઝિલ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના સય્યિદ મુહમ્મદ નઈમુદ્દીન
મુરાદઆબાદી બઝાઈનુલ ઈરફાન મેં ફરમાતે હેં : ઈસ આયત મેં બાતિલ



इरमाने मुस्ताफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ा पर हुज़ूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابويعلى)

तौर पर किसी का माल खाना हराम इरमाया गया ज्वाह लूट कर या छीन कर या थोरी से या जूअे से या हराम तमाशों या हराम कामों या हराम थिजों के बदले या रिश्वत या जूटी गवाही या युगुल जोरी से येह सब मन्भूअ व हराम है.

(अज़ाधनुल इरफ़ान, स. 47)

गोया भिन्जीर के भून और गोशत में हाथ उभोया : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रउिफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ ने इरमाया : जिस ने नई शेर (जूआ भेलने का सामान) से जूआ भेला तो गोया उस ने अपना हाथ भिन्जीर के गोशत और भून में उभोया.

(سُنَنُ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٢٣١ حَدِيثُ ٣٧٦٣)

जूअे की दा'वत देने वाला कइइारे में स-दका करे : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशदि इब्रत बुन्याद है : जिस शप्स ने अपने साथी से कहा : "आओ जूआ भेलें." तो उस (कहने वाले) को याहिये के स-दका करे.

उज़रते अल्लामा यहुया भिन शरइ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस हदीस की शर्ह में लिखते हैं : उ-लमा इरमाते हैं के सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने स-दका करने का हुकम इस लिये दिया है के उस शप्स ने गुनाह की दा'वत दी थी, उज़रते अल्लामा भिताभी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने कहा के जितने पैसों का जूआ भेलने का कहा था उतने पैसों का स-दका करे मगर सहीह वोह है जो मुहकिक्कीन ने कहा है और येही हदीसे पाक का ज़ाहिर है के स-दके की कोई भिकदार मुअय्यन नहीं, आसानी से जितना स-दका कर सके कर दे.

(شَرْحُ مُسْلِمٍ لِلنَّوَوِيِّ ج ٦ ص ١٠٧)

मेरे आका आ'ला उज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-जविय्या जिल्द 19 सइहा 646 पर इरमाते हैं : सूद और थोरी और गस्ब और जूअे का रुपिया कर्ह हराम है.

(इतावा र-जविय्या, जि. 19, स. 646)



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (मुरान)

जूआ की ता'रीफ़ : जूआ को अ-रबी में किमार कहते हैं इस की ता'रीफ़ मुला-हज्ज् इरमाईये : हजरते भीर सय्यिद शरीफ़ जुरज्जानि قُدَس سرُّهُ الرَّبَّانِي लिखते हैं : हर वोह भेल जिस में येह शर्त हो के मज्लूब (या'नी नाकाम होने वाले) की कोई चीज गालिब (या'नी काम्याब होने वाले) को दी जायेगी येह “किमार” (या'नी जूआ) है. (التعريفات ص ۱۲۶)

जूआ की 6 सूरतें : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! आज कल दुन्या में जूआ के नित नये तरीके राईज हैं, एन में से 6 येह हैं :

1 लाटरी : इस तरीक़े कार में लाभों करोड़ों रुपै के इन्आमात का लालय दे कर लाभों टिकट मा'मूली रकम के बढले इरोप्त किये जाते हैं इर कुरआ अन्दाज़ी के जरीअे काम्याब होने वालों में यन्द् लाभ या यन्द् करोड रुपै तकसीम कर दिये जाते हैं जब के बकिया अइराद की रकम डूब जाती है, येह भी जूआ ही की अेक सूरत है जो के हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है.

2 प्राईज बॉन्ड की परयी : (हुकूमते पाकिस्तान 200, 750, 1500, 7,500, 15,000, 40,000) रुपै की कीमत के इन्आमी बॉन्ड्स बैंक के जरीअे जारी करती है और जद्वल के मुताबिक हर माह कुरआ अन्दाज़ी के जरीअे करोड़ों रुपै के इन्आमात भरीदारों में तकसीम करती है, जिस का इन्आम नहीं निकलता उस की भी रकम मइज़्ज़ रहती है वोह उसे जब चाहे लुना (या'नी केश करवा) सकता है. येह जवाज (या'नी ज़ाईज होने) की सूरत है और जूआ में द्वापिल नहीं. लेकिन इस के मुत्तवाज़ी भा'ज लोग इन्आमी बॉन्ड्स की परयियां बेयते हैं एन परयियों की भरीद व इरोप्त, गैर कानूनी ना ज़ाईज व हराम है क्यूंके बेयने वाला हुकूमत की तरफ़ से जारी कर्दा प्राईज बॉन्ड्स अपने ही पास रभता है (बल्के भा'ज अवकात तो प्राईज बॉन्ड्स भी बेयने वाले के पास नहीं होते) परयी बेयने वाला भरीदार को कलील रकम के बढले परयी पर मइज़्ज़ अेक नम्बर लिख कर दे देता है के अगर इस नम्बर पर इन्आम निकल आया तो मैं



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے موز پر دس مرتباً دُرُودِ پاک پढا اے اللہ اے اے (اس پر سو راتوں تک) نازل فرماتا ہے۔ (طبرانی)

તુમ્હેં ઇતની રકમ દૂંગા. ઇન્આમી પરચી કા યેહ કામ ભી જૂઆ હૈ ક્યૂંકે ઇસ મેં ઇન્આમ ન નિકલને કી સૂરત મેં ખરીદાર કી રકમ ડૂબ જાતી હૈ.

3 મોબાઇલ મેસેજિઝ ઓર જૂઆ : મોબાઇલ પર મુખ્તલિફ સુવાલાત પર મબ્ની મેસેજિઝ (MESSAGES) ભેજે જાતે હૈં જિસ મેં મ-સલન કૌન સી ટીમ મેચ જીતેગી ? યા પાકિસ્તાન કિસ દિન બના થા ? દુરુસ્ત જવાબાત દેને વાલોં કે લિયે મુખ્તલિફ ઇન્આમાત રખે જાતે હૈં, શિર્કત કરને વાલે કે “મોબાઇલ બેલેન્સ” સે કલીલ રકમ મ-સલન દસ રુપૈ કટ જાતી હૈ, જિન કા ઇન્આમ નહીં નિકલતા ઉન કી રકમ ઝાએઝ હો જાતી હૈ, યેહ ભી જૂઆ હૈ જો કે હરામ ઓર જહન્નમ મેં લે જાને વાલા કામ હૈ.

4 મુઅમ્મા : ઇસ મેં એક યા એક સે ઝિયાદા સુવાલાત હલ કરને કે લિયે દિયે જાતે હૈં જિસ કા હલ મુન્તઝિમીન કી મરઝી કે મુતાબિક નિકલ આએ ઉસે ઇન્આમ દિયા જાતા હૈ, ઇન્આમાત કી તા’દાદ તીન યા ચાર યા ઇસ સે ઝાઈદ ભી હોતી હૈ. લિહાઝા દુરુસ્ત હલ ઝિયાદા તા’દાદ મેં નિકલે તો કુરઆ અન્દાઝી કે ઝરીએ ફૈસલા હોતા હૈ. ઇસ ખેલ મેં બહુત સારે અફરાદ શરીક હોતે હૈં, ઉન કી શિર્કત દો તરહ સે હોતી હૈ : (1) મુફ્ત (2) મા’મૂલી ફીસ દે કર, અગર શુ-રકા સે કિસી કિસ્મ કી ફીસ ન લી જાએ તો ઓર કોઈ માનેએ શર-ઈ ન હોને કી સૂરત મેં ઉસ ઇન્આમ કા લેના જાઈઝ હૈ. જિસ મેં શુ-રકા સે ફીસ લી જાતી હૈ ઉસ મેં ઇન્આમ મિલે યા ન મિલે રકમ ડૂબ જાતી હૈ, યેહ સૂરત જૂઆ કી હૈ જો કે હરામ ઓર જહન્નમ મેં લે જાને વાલા કામ હૈ.

5 પૈસે જમ્મ કર કે કુરઆ અન્દાઝી કરના : બા’ઝ અફરાદ યા દોસ્ત આપસ મેં થોડી થોડી રકમ જમ્મ કર કે કુરઆ અન્દાઝી કરતે હૈં કે જિસ કા નામ નિકલા સારી રકમ ઉસ કો મિલેગી, યેહ ભી જૂઆ હૈ ક્યૂંકે બકિયા અફરાદ કી રકમ ડૂબ જાતી હૈ. ઇસી તરહ બા’ઝ અવકાત પૈસે જમ્મ કર કે કોઈ કિતાબ યા દૂસરી ચીઝ ખરીદી જાતી હૈ કે જિસ કા નામ કુરઆ અન્દાઝી મેં નિકલ આયા ઉસે યેહ કિતાબ દે દી જાએગી યેહ ભી જૂઆ હી હૈ. યાદ રહે કે બા’ઝ કમ્પનિયાં અપની મસ્નૂઆત ખરીદને વાલોં કો



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

કુરઆ અન્દાઝી કર કે ઈન્આમાત દેતી હૈ યેહ જાઈઝ હૈ ક્યૂંકે ઈસ મેં કિસી કી ભી રકમ નહીં રૂબતી.

6 મુપ્તલિફ ખેલોં મેં શર્ત લગાના : હમારે યહાં મુપ્તલિફ ખેલ મ-સલન ઘુડદૌડ, ક્રિકેટ, કેરમ, બિલયર્ડ, તાશ, શતરન્જ વગૈરા દો તરફા શર્ત લગા કર ખેલે જાતે હેં કે હારને વાલા જીતને વાલે કો ઉતની રકમ યા ફુલાં ચીઝ દેગા યેહ ભી જૂઆ હૈ ઓર ના જાઈઝ વ હરામ. કેરમ ઓર બિલયર્ડ કલબ વગૈરા મેં ખેલતે વક્ત ઉમૂમન યેહ શર્ત રખી જાતી હૈ કે કલબ કે માલિક કી ફીસ હારને વાલા અદા કરેગા, યેહ ભી જૂઆ હૈ. બા'ઝ “નાદાન” ઘરોં મેં મુપ્તલિફ ખેલોં મ-સલન તાશ યા લૂડો પર દો તરફા શર્ત લગા કર ખેલતે હેં ઓર કમ ઈલ્મી કે બાઈસ ઈસ મેં કોઈ હરજ નહીં સમઝતે વોહ ભી સંભલ જાએ કે યેહ ભી જૂઆ હૈ ઓર જૂઆ હરામ ઓર જહન્નમ મેં લે જાને વાલા કામ હૈ.

જૂએ સે તૌબા કા તરીકા : જૂઆ ખેલને વાલા અગર નાદિમ હુવા તો ઉસ કો ચાહિયે કે બારગાહે ઈલાહી عَزَّوَجَلَّ મેં સચ્ચી તૌબા કરે મગર જો કુછ માલ જીતા હૈ વોહ બ દસ્તૂર હરામ હી રહેગા ઈસ ઝિમ્ન મેં રહનુમાઈ કરતે હુએ મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નાત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફરમાતે હેં : “જિસ કદર માલ જૂએ મેં કમાયા મહૂઝ હરામ હૈ. ઓર ઈસ સે બરાઅત (યા'ની નજાત) કી યેહી સૂરત હૈ કે જિસ જિસ સે જિતના જિતના માલ જીતા હૈ ઉસે વાપસ દે, યા જૈસે બને ઉસે રાઝી કર કે મુઆફ કરા લે. વોહ ન હો તો ઉસ કે વારિસોં કો વાપસ દે, યા ઉન મેં જો આકિલ બાલિગ હોં ઉન કા હિસ્સા ઉન કી રિઝા મન્દી સે મુઆફ કરા લે. બાકિયોં કા હિસ્સા ઝરૂર ઉન્હેં દે કે ઈસ કી મુઆફી મુમ્કિન નહીં, ઓર જિન લોગોં કા પતા કિસી તરહ ન ચલે, ન ઉન કા, ન ઉન કે વરસા કા, ઉન સે જિસ કદર જીતા થા ઉન કી નિચ્ચત સે ખૈરાત કર દે, અગર્યે (ખુદ) અપને (હી) મોહતાજ બહન ભાઈયોં, ભતીજોં, ભાન્જોં કો દે દે.” આગે ચલ કર મઝીદ ફરમાતે હેં : ગરઝ જહાં જહાં જિસ કદર યાદ હો સકે કે ઈતના માલ ફુલાં સે હાર જીત મેં ઝિયાદા પડા થા, ઉતના તો ઉન્હેં યા ઉન કે વારિસોં કો દે, યેહ ન હોં તો ઉન કી નિચ્ચત સે તસદુક



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (१७)

(या'नी स-दका) करे, और जियादा पडने के येह मा'ना के म-सलन अेक शप्स से दस बार जूआ भेला कभी येह जता कभी येह, उस (या'नी सामने वाले जूआरी) के जतने की (रकम की) मिकदार म-सलन सो रुपै को पछोंयी, और येह (पुद) सभ दफ़आ के मिला कर सवा सो जता, तो सो सो बराबर हो गअे, पय्यीस उस (या'नी सामने वाले जूआरी) के देने रहे. एतने ही उसे वापस दे. وَعَلَى هَذَا الْقِيَّاس (या'नी और इसी पर कियास कर लीजिये) और जहां याद न आअे के (जूआ भेलने वाले) कौन कौन लोग थे और कितना (माल जूआ में जत) लिया, वहां जियादा से जियादा (मिकदार का) तप्मीना (या'नी अन्दाजा) लगाअे के इस तमाम मुदत में किस कदर माल जूआ से कमाया होगा उतना मालिकों (या'नी उन ना मा'लूम जूआरियों) की निय्यत से भैरात कर दे, आकिबत यूंही पाक होगी. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

(इतावा र-अविय्या, जि. 19, स. 651)

इतै शुदा की बुराई करना भी गीबत है : उअरते सय्यिदुना अबू हुरैरा को जब रजम किया गया था, (या'नी जिना की “उद” में एतने पथर मारे गअे के वफ़ात पा युके थे) दो शप्स आपस में भातें करने लगे, अेक ने दूसरे से कहा : उसे तो देओ के अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उस की पर्दा पोशी की थी मगर उस के नफ़स ने न छोडा, رُجِمَ رُجْمَ الْكَلْبِ, या'नी कुत्ते की तरह रजम किया गया. हुजुरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सुन कर सुकूत इरमाया (या'नी आमोश रहे). कुछ देर तक यलते रहे, रास्ते में मरा हुवा गधा मिला जो पाउं इलाअे हुअे था. सरकारे वाला तभार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन दोनों शप्सों से इरमाया : जाओ उस मुदरि गधे का गोशत भाओ. उन्हों ने अर्ज की : या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इसे कौन भाअेगा ? एशाद इरमाया : वोह जो तुम ने अपने भाई की आबरू रेजी की, वोह इस गधे के भाने से भी जियादा सप्त है. कसम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! वोह (या'नी माईज) इस वक्त जन्नत की नहरों में गोते लगा रहा है.

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٩٧ حديث ٤٤٢٨)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

कुलां ने फुदकुशी कर ली येह कलना गीबत है : मा'लूम हुवा फौत शुदा लोगों की बुराई करना भी गीबत है. बा'ज अवकात बडा सभ्र आजमा मुआ-मला होता है. म-सलन डाकू, दहशत गर्द, अपने अजीज के कातिल वगैरा कत्ल कर दिये जायें या उन्हें फांसी लगा दी जाये तो बा'ज अवकात लोग गीबत के गुनाह में पड ही जाते हैं. इसी तरह फुदकुशी करने वाले मुसल्मान के बारे में बिला एज्जते शर-ए येह कल देना के "कुलां ने फुदकुशी की" येह गीबत है यूं ही नाम व पहचान के साथ किसी मुसल्मान की फुदकुशी की अफ्बार में फबर भी न लगाई जाये के इस से मरने वाले की गीबत भी होती और इस के साथ साथ मर्हूम के अहलो अयाल की एज्जत पर भी बट्टा लगता है. हां इस अन्दाज में तजक़िरा किया के पढने या सुनने वाले फुदकुशी करने वाले को पहचान ही न पाये के वोह कौन था तो हरज नहीं मगर येह जेहून में रहे के नाम न लिया मगर गाँ, महल्ला, बिरादरी, अवकात, फुदकुशी का अन्दाज वगैरा बयान करने से फुदकुशी करने वाले की शनाफ्त मुम्किन है लिहाजा पहचान हो जाये इस अन्दाज में तजक़िरा भी गीबत में शुमार होगा. मस्अला येह है के मुसल्मान फुदकुशी करने से इस्लाम से फारिज नहीं हो जाता इस की नमाजे जनाजा भी अदा की जायेगी, इस के लिये दुआये मग़ि़रत भी करेंगे, मरने वाले मुसल्मान को बुराई से याद करने की शरीअत में एज्जत नहीं. इस ज़िम्न में द्यो इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हज़ा हों : **﴿1﴾** अपने मुर्दों को बुरा न कल्यो क्यूंके वोह अपने आगे भोजे हुअे आ'माल को पहल्यो युके हें. (बुख़ारी ज १ व ४७० حديث १३९३)

﴿2﴾ अपने मुर्दों की पूबियां बयान करो और उन की बुराईयों से बाज रहो. (सन् त्रिभुजि ज २ व ३१२ حديث १०२१)

हज़रते अल्लामा मुहम्मद अबदुर्रुफ़ि मुनावी लिखते हें : मुर्द की गीबत ज़िन्दे की गीबत से बदतर है, क्यूंके ज़िन्दे शप्स से मुआफ़ करवाना मुम्किन है जब के मुर्दा से मुआफ़ करवाना मुम्किन नहीं.

(فَيْضُ الْقَدِيرِ لِلْمُنَاوِي ج ١ ص ٥٦٢ تَحْتِ الْحَدِيثِ ٨٥٢)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલ્લાહ ઈઝ્ઝુલુમ પર રહમત ભેજેગા. (અબુ ડાવુદ)

ગરસાલ મુદ્દે કી બુરાઈ બયાન ન કરે : દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 1250 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “બહારે શરીઅત” જિલ્દ અવ્વલ સફહા 811 પર હૈ : (મય્યિત કો ગુસ્લ દેતે વક્ત) જો અસ્છી બાત દેખે મ-સલન ચેહરા ચમક ઉઠા યા મય્યિત કે બદન સે ખુશબૂ આઈ, તો ઉસે લોગોં કે સામને બયાન કરે ઓર કોઈ બુરી બાત દેખી, મ-સલન ચેહરે કા રંગ સિયાહ હો ગયા યા બદબૂ આઈ યા સૂરત વ આ'ઝા મેં તગય્યુર આયા તો ઉસે કિસી સે ન કહે ઓર ઐસી બાત કહના જાઈઝ ભી નહીં કે હદીસ મેં ઈશાદિ હુવા : “અપને મુદ્દોં કી ખૂબિયાં ઝિક કરો ઓર ઉસ કી બુરાઈયોં સે બાઝ રહો.”

મરને કે બા'દ બુલન્દ આવાઝ સે કલિમા પઢા ! : અગર કિસી મુસલ્માન ને મરતે વક્ત બ ઝાહિર કલિમા ન પઢા ઓર કિસી ને કહા કે “ઈસ કો કલિમા નસીબ નહીં હુવા” ઉસ ને ઈસ મરને વાલે કી ગીબત કી, ઈસ ઝિમ્ન મેં એક ઈમાન અફરોઝ હિકાયત મુલા-હઝા ફરમાઈયે યુનાન્યે હઝરતે અલ્લામા અબ્દુલ હય્ય લખ્નવી ﷺ ફરમાતે હૈં : મેરે બુઝુર્ગોં મેં એક વલિયુલ્લાહ યા'ની મૌલાના મુહમ્મદ ઈઝહારુલ હક લખ્નવી ﷺ ને ઈન્તિકાલ કિયા ઓર મરતે વક્ત ઉન કી ઝબાન સે કલિમા ન નિકલા, લોગોં ને ઉન પર ચાદર ડાલ દી ઓર તજહીઝ વ તક્ફીન કા ઈન્તિઝામ કિયા, જબ સબ લોગ બાહર નિકલે તો બા'ઝોં ને બતૌર તા'ન કે કહા કે ઝાહિર મેં નિહાયત મુત્તકી થે ઓર મરતે વક્ત ઝબાન સે કલિમા ભી ન નિકલા, ઈસ બાત સે તમામ હાઝિરીન કો રન્જ હુવા, ઈતને મેં મૌલાના મહૂમ ને દોનોં પાઉં કો સમેટા ઓર બ આવાઝે બુલન્દ કલિમા પઢા, જબ લોગોં કે કાનોં મેં આવાઝ પહોંચી તો તા'ન કરને વાલોં કો લોગોં ને મત્ઊન કિયા (યા'ની બુરા ભલા કહા).

(ગીબત કયા હૈ, સ. 19)

મરે હુએ કાફિર કી ગીબત : શારેહે બુખારી મુફ્તી શરીફુલ હક અમજદી ﷺ લિખતે હૈં : કુફ્ફાર કી બુરાઈ બયાન કરની જાઈઝ હૈ અગર્યે વોહ મર ગએ હોં અલબત્તા અગર મરને વાલે કુફ્ફાર કે અહલો અયાલ મુસલ્માન હોં ઓર



इरमाने मुस्तफा ﷺ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगि़रत है. (भा. ५)

उन के काफ़िर मां बाप, उसूल (या'नी दादा वगैरा) की बुराई करने से उन्हें ईजा पड़ोये तो इस से बचना जरूरी है के अब येह ईजाये मुस्लिम है और मुसल्मान को ईजा देना ज़ाईज नहीं. (नुज़हतुल कारी, जि. 2, स. 886)

शहा मंडला रही है मौत सर पर फिर भी मेरा नफ़स

गुनाहों की तरफ़ डर दम है माईल या रसूलव्लाह

6 मुद्दों की सन्सनी भैज लिखायात : लोगों की ईब्रत के लिये झैत शुदा मुसल्मानों की बुराई बयान करने में भी शरअन हरज नहीं है मुहदिसीने किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने मुसल्मानों को गुनाहों से डराने के लिये किताबों में भरे हुअे काफ़िरों के ईलावा बह मज़हबों और मुसल्मानों के अजाबों के भी तज़किरे इरमाये हैं युनान्ये इस जिम्न में छ मुद्दों की सन्सनी भैज लिखायात मुला-हज़ा इरमाईये :

(1) आग का कुरता : उजरते सय्यिदुना अबू राइअ عَنهُ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मैं रसूलव्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के उमराह बकीअ में गुजरा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : उई ! उई ! तो मैं ने गुमान किया के शायद आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मेरा ईरादा इरमाते हैं. मैं ने अर्ज की : या रसूलव्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! क्या मुज से कोई ग-लती हुई ? इरमाया : नहीं, बल्के इस कअ्र वाले शप्स को मैं ने बनू हुवां के पास स-दका वुसूल करने भेजा था तो इस ने अक यादर बतौरे भियानत बया ली थी. आभिर वैसा ही आग का कुरता इस को पढनाया गया.

(سُنَنِ نَسَائِي ص ١٥٠ حديث ٨٥٩)

सरकार से कुछ छुपा हुवा नहीं : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! दर्से ईब्रत देने के लिये इस हदीसे पाक में झैत शुदा शप्स के अजाबे कअ्र का जिक़ किया गया है. इस रिवायत से येह भी रोजे रोशन की तरह ज़ाहिर हुवा के हमारे मक्की म-दनी आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की अता से ईल्मे गैब रपते हैं ज़न्बी तो कअ्र में डोने वाले अजाब के साथ साथ सबबे अजाब की भी हाथों हाथ खबर ईशाई इरमा दी. मेरे आका आ'ला उजरत, ईमामे



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर अेक दुइइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज्ज लिपता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (मैज़ज़)

अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का कितना प्यारा अकीदा था युनान्ये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की उदाईके बग़्शिशा शरीफ़ का शे'र सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये :

सरे अर्श पर हें तेरी गुज़र, दिले इर्श पर हें तेरी नज़र
म-लक़ूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुज़ पे ईयां नहीं

(या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अल्लाह रब्बुल ईज़ज़त एज़्ज़ल की ईनायत से अर्श आप की गुज़र गाह है और इर्श जेरे निगाह है. अल गरज़ मलाअेका हों या आलमे अरवाह, काअेनात में कोई चीज़ त्मी अैसी नहीं जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से पोशीदा हो)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(2) बे दीन की गरदन में सांप : डाइज़ अबू भल्लाल ने “किताब करामातुल औलिया” में अपनी सनद से रिवायत की के मुज़ से अब्दुल्लाह बिन हाशिम ने इरमाया : मैं अेक मय्यित को नहलाने गया, जब मैं ने उस के जिस्म से कपडा षोला तो उस की गरदन पर सांप लिपटे हुअे थे ! मैं ने उन सांपों से कडा के आप को ईस पर मुसल्लत किया गया है और हमें ईस को गुस्ल देना है, अगर आप ईज्ज़त दें तो हम ईस को गुस्ल दे दें फिर आप अपनी जगह वापस आ जाईये, तो वोह सांप हट कर अेक कोने में हो गअे. जब हम गुस्ले मय्यित से इररिग हुअे तो वोह अपनी जगह वापस आ गअे. येह शप्स बे दीनी (या'नी गुमराही) में मशहूर था. (شَرْحُ الصُّوْر ص १११)

(3) गरदन में सांप लिपटा हुवा था : उज़रते सय्यिदुना अबू ईसहाक इरमाते हैं : मुजे अेक मय्यित को गुस्ल देने के लिये बुलाया गया, जब मैं ने उस के येहरे से कपडा हटाया तो उस की गरदन में सांप लिपटा हुवा था, लोगों ने बताया के येह सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देता था. (مَعَادُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ)

(شَرْحُ الصُّوْر ص ११३)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुइरे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे. (अ. ५)

सहाबा के हक में जुदा से डरो ! : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! مَعَادَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ !

सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देना गुनाह, गुनाह, बहुत सप्त गुनाह, कर्ह हुराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. द्वा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 192 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "सवानेहे करबला" सफ़हा 31 पर है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुगफ़फ़ल से मरवी है के हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया के मेरे अस्हाब के हक में जुदा से डरो ! जुदा का भौंफ़ करो ! ! ईन्हें मेरे भा'द निशाना न बनाओ, जिस ने ईन्हें मडबूब रखा मेरी मडबूबत की वजह से मडबूब (या'नी ध्यारा) रखा और जिस ने ईन से बुग़्ज किया वोह मुज़ से बुग़्ज रખता है, ईस लिये उस ने ईन से बुग़्ज रखा, जिस ने ईन्हें ईजा दी उस ने मुजे ईजा दी, जिस ने मुजे ईजा दी उस ने बेशक जुदाअे तआला को ईजा दी, जिस ने अल्लाह तआला को ईजा दी करीब है के अल्लाह तआला उसे गिरिफ़्तार करे.

(سُنَنِ تَرْمِذِي ج ٥ ص ٤٦٣ حَدِيث ٣٨٨٨)

सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये : सदरुल अफ़ाजिल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي ने इरमाते हैं : मुसल्मान को याहिये के सहाबअे किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रभे और हिल में ईन की अकीदत व मडबूबत को जगह दे. ईन की मडबूबत हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की मडबूबत है और जो बद नसीब सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अ-दबी के साथ ज़भान जोले वोह दुश्मने जुदा व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) है. मुसल्मान जैसे शप्स के पास न बैठे. (सवानेहे करबला स. 31) मेरे आका आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَى इरमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेडा पार अस्हाबे हुज़ूर

नजम हें और नाव है ईतरत रसूलुल्लाह की

(या'नी अहले सुन्नत का बेडा पार है क्यूंके सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ईन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अतहार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कश्ती की तरह हें)



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर एक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (مسلم)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 تَوْبُوا إِلَى اللهِ !
 اسْتَغْفِرُ اللهُ
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !

(4) कभ्र में भयानक काला सांप : हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ँब्ने अब्बास र्सी اللہ تعالیٰ عنہما की भिदमत में कुछ लोग डालिर हुअे और अर्ज की : हम सङ्गे हज पर निकले हुअे हैं, मकामे सिफ़ाह पर हमारे काङ्किले का आदमी झौत हो गया है. हम ने उस के लिये जब कभ्र ढोदी तो अेक बहुत बडा काला सांप बैठा नजर आया, जिस ने कभ्र को भर रभा था उसे छोड कर दूसरी कभ्र ढोदी तो उस में भी वोही सांप नजर आया. आप र्सी اللہ تعالیٰ عنہ की भिदमत में ँस गम्भीर मस्अले के हल की ढातिर डालिर हुअे हैं. हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ँब्ने अब्बास र्सी اللہ تعالیٰ عنہमा ने इरमाया : “येह उस की भियानत की सजा है जिस का वोह मुर-तकिभ हुवा करता था.” और बैहकी के अल्फ़ाज येह हैं : يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّكَ كَانْتَ تَعْمَلُ : “येह उस के अमल की सजा है जो वोह किया करता था.” आप हजरात उसे उन दोनों में से किसी अेक कभ्र में दफ़न कर दीजिये, ढुदा की कसम ! अगर ँस दुन्या की सारी जमीन भी ढोद डालेंगे तभ भी हर जगह येही कुछ ढाअेंगे.” बिल आभिर हम ने उस को सांप भरी कभ्र में दफ़ना दिया. वापस आ कर हम ने उस का सामान उस के घर वालों को दे दिया और उस की बेवा से उस के आ'माल के बारे में सुवाल किया तो उस ने बताया : येह ढाना बेयता था और उस में से अपने घर वालों के लिये कुछ निकाल लेता था इर कमी पूरी करने के लिये उस में उतनी ही भिलावट कर देता था.

(شَرَحُ الصُّدُورِ ص ١٧٤، شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٤ ص ٣٣٤ حَدِيثُ ٥٣١١)

धोकाभाजी जहन्नम से है : भीठे भीठे ँस्लामी भाँयो ! देढा आप ने ! ज़रतन ँभ्रत के लिये मुर्दे की बुराँ भयान करना ज़ाँज था जभी तो हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ँब्ने अब्बास र्सी اللہ تعالیٰ عنہमा ने उस मरे हुअे डाल् की बुराँ भयान इरमाँ, नीज जवाज ही के सबभ बुलन्द ढाया मुहदिसीन ने ँस हिकायत को



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

अपनी अपनी कुतुब में नक़ल किया. इस हिक़ायत से मिलावट वाला माल धोके से बेयने की तबाहकारी मा'लूम हुई. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक़-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 480 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “अयानाते अत्तारिय्या” हिरसअे अव्वल के सफ़हा 218 पर है : अल्वाह के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईअ्रत निशान है : जो हमारे साथ धोकाबाज़ी करे वोह हम में से नहीं और मक़ और धोकाबाज़ी जहन्नम में हैं. (1) धोकाबाज़ी (2) अहसान जताने वाला. (3) अहसान जताने वाला. (سَنَن تَرْمِذِي ج 3 ص 388 حَدِيث 1970)

मिलावट वाला माल बेयने का ज़ाईज तरीका : यहाँ वोह लोग ईअ्रत हासिल करें जो मिलावट वाला माल धोके से बेयते हैं अगर मरने के बा'द पक़ड में आ गये तो क्या होगा ! अगर माल मिलावट वाला है और गाहक को मिलावट वगैरा की मिक़दार बता दी या मिलावट बिल्कुल नुमायां नज़र आ रही है तो अैसा माल बेयना ज़ाईज है जब के इस में से कुछ छुपाया न गया हो म-सलन मिलावट की मिक़दार बताई मगर कम बताई जैसा के 50 इंसद मिलावट थी और 25 इंसद कहा या जितनी मिलावट उपर से नज़र आ रही हो उस से ज़ियादा नीये मिलावट कर रभी हो और वोह ज़ाहिर न करे तो ना ज़ाईज है. इसी तरह धोका देने के लिये उपर उम्दा इल और नीये या बीय में गले सडे इल रभने वालों और यूं ही दूसरी चीज़ों में धोका बाज़ी से काम लेने वालों को ईन गुनाहों से बेयना याहिये.

धोकाबाज़ी में नुहूसत है बडी

याद रभ इस की सज़ा होगी कडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा عليه السلام : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढ़ा तलक़ीक़ वोह बहद भयत हो गया. (उंअ)

(5) परिन्दे ने कै की तो उस में से ँन्सान निकल पडा ! : ँस्मह अब्बादानी
 कहते हैं : मैं किसी जंगल में घूम रहा था के मैं ने अक गिरजा देभा, गिरजा में अक राहिब की जानकाह थी उस के अन्दर मौजूद राहिब से मैं ने कहा के तुम ने ँस (वीरान) मक़ाम पर जो सब से अजबो गरीब यीज देभी हो वोह मुझे बताओ ! तो उस ने बताया : मैं ने अक रोज़ यहाँ शुतर मुर्ग़ जैसा अक देव हैकल सईद परिन्दा देभा, उस ने उस पथर पर बैठ कर कै की, उस में से अक ँन्सानी सर निकल पडा, वोह बराबर कै करता रहा और ँन्सानी आ'जा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअत (या'नी झुरती) के साथ अक दूसरे से जुडते रहे यहाँ तक के वोह मुकम्मल आदमी बन गया ! उस आदमी ने जूँ डी उठने की कोशिश की उस देव हैकल परिन्दे ने उस के ठोंग मारी और उस को टुकडे टुकडे कर दिया, फिर निगल गया. कँ रोज़ तक मैं येह भौंफ़नाक मन्जर देभता रहा, मेरा यकीन जुदा عز وجل की कुदरत पर बढ गया के वाकैँ अल्लाह तआला मार कर जिलाने पर कादिर है. अक दिन मैं उस देव हैकल परिन्दे की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और उस से दरयाफ़्त किया के अँ परिन्दे ! मैं तुजे उस जात की कसम दे कर कहता हूँ जिस ने तुज को पैदा किया के अब की बार जब वोह ँन्सान मुकम्मल हो जाअे तो उस को बाकी रहने देना ताके मैं उस से उस का अमल मा'लूम कर सकूँ. तो उस परिन्दे ने इसीह अ-रबी में कहा : “मेरे रब عز وجل के लिये डी बादशाहत और बका है हर यीज फ़ानी है और वोही बाकी है मैं उस का अक फिरिश्ता हूँ और ँस शप्स पर मुसल्लत किया गया हूँ ताके ँस के गुनाह की सजा देता रहूँ.” जब कै में वोह ँन्सान निकला तो मैं ने उस से पूछा : अँ अपने नफ़स पर जुल्म करने वाले ँन्सान ! तू कौन है और तेरा किस्सा क्या है ? उस ने जवाब दिया : “मैं हज़रते मौलाअे काअेनात अलिय्युल मुर्तजा शेरे जुदा عز وجل का कातिल अब्दुर्रहमान ँब्ने मुल्जम हूँ, जब मैं मर युका तो अल्लाह तआला के सामने मेरी इह लाज़िर हुँ, उस ने मेरा



इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ जिस ने मुज पर अेक बार दुरहे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रइमते भेजता है. (सु.)

नामअे आ'माल मुज को दिया जिस में मेरी पैदाईश से ले कर उजरते अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को शहीद करने तक की हर नेकी और बदी लिपी हुई थी. फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस फिरिश्ते को हुकम दिया के वोह कियामत तक मुजे अजाब दे." येह कह कर वोह युप हो गया और देव हैकल परिन्दे ने उस पर ठोंगें मारी और उस को निगल गया और यला गया. (شَرْحُ الصُّوَرِ ص १७०)

ईब्ने मुल्जम ने मौला अली को क्यूं शहीद किया ? : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! मौला अली शेरे फुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم के कातिल का जो के पारिष्ण बढ दीन व गुमराह था कैसा दईनाक अन्जाम हुवा ! वोह बढ नसीब क्यूं ईतना बडा गुनाह करने के लिये आमादा हुवा ईस सिक्सिले में उजरते अल्लामा जलालुदीन सुयूती शाईई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने "मुस्तदरक" के हवाले से लिखा है के ईब्ने मुल्जम अेक कताम नामी पारिष्णिया औरत के ईशके मजाजी में गिरिफ्तार हो गया था, उस ने शादी के लिये महर में तीन उजार दिरहम और उजरते मौला अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم के कतल का मुता-लभा रपा था. (تَارِيخُ الْخُلَفَاءِ ص १३९، الْمُسْتَدْرَك ج ६ ص २१ رقم ६१६६) **अइसोस !** ईशके मजाजी में ईब्ने मुल्जम अन्धा हो गया और उस ने उजरते मौलाअे काअेनात, मौला अली शेरे फुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم जैसी अजीम हस्ती को शहीद कर दिया, ईस ना बकार को वोह औरत तो भाक मिलनी थी हाथों हाथ येह सजा मिली के लोगों ने देपते ही देपते उसे पकड लिया, बिल आभिर उस के बदन के टुकडे टुकडे कर के टोकरे में डाल कर आग लगा दी गई और वोह जल कर पाकिस्तर हो गया ! और मरने के भा'द ता कियामत ज़ारी रहने वाले ईस के लरजा भैज अजाब का अत्मी आप ने तजकिरा सुना. वोह बढ भप्त, न ईधर का रहा न उधर का रहा. उजरते सय्यिहुना अबुदरदा عَنْهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बिल्कुल सय इरमाया है के "शह्वत की घडी त्तर के लिये पैरवी तवील गम का भाईस बनती है." (सहाबी का कौल यहीं तक है) काबील भी तो शह्वत ही की वजह से उजरते सय्यिहुना हाबील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को शहीद कर के भरबाह हुवा और भरबाह भी कैसा हुवा के सिई सुन कर ही जुरजुरी आ जाअे ! तो ईस की भी डिकायत मुला-हजा इरमाईये और शह्वत की आइत से रब्बुल ईज्जत की पनाह मांगिये :



इरमाने मुस्तफ़ा عاشي الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोह अद अप्त हो गया. (हूँ)

(6) डौज पर उलटा लटका हुआ आदमी : अब्दुल्लाह कहते हैं : हम यन्द

अफ़राह समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुआ. छत्तिहाकन यन्द रोज तक अंधेरा छाया रहा, जब रोशनी हुई तो एक बस्ती आ गई. अब्दुल्लाह कहते हैं के मैं पीने के लिये पानी की तलाश में रवाना हुआ तो बस्ती के दरवाजे बन्द थे, मैं ने बहुत आवाजें दीं, कोई जवाब न आया, ईसी अस्ना में दो शह सुवार (या'नी दो घोडे सुवार) नुमूदार हुआ, उन्हों ने कहा : **अै अब्दुल्लाह !** उस गली में द्वापिल हो जाओ तो तुम्हें पानी का एक डौज मिलेगा उस में से पानी ले लेना और वहां के मन्जर को द्वाप कर भौंझदा न होना. मैं ने उन से उन बन्द दरवाजों के बारे में दरयाफ़त किया जिन में हवाओं चल रही थीं, उन्हों ने बताया : "येह वोह घर हैं जिन में **मुर्दों** की इहें रहती हैं." फिर मैं डौज पर पड़ोया तो मैं ने द्वापा के **एक शप्स पानी पर उलटा लटका हुआ** है वोह अपने हाथ से पानी लेना याहता है लेकिन नाकाम हो जाता है, मुझे द्वाप कर पुकारने लगा : **अै अब्दुल्लाह !** मुझे पानी पिलाओ. मैं ने भरतन ले कर उभोया ताके उसे पानी पिला सकूं लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड लिया, मैं ने उस लटके हुआ **आदमी** से कहा : **अै बन्दअे पुदा !** तूने द्वाप लिया के मैं ने अपनी तरफ़ से कोशिश की के तुझे पानी पिलाओं लेकिन मेरा हाथ पकडा गया, तू मुझे अपना वाकिआ बता. उस ने कहा : मैं हजरते **आदम** عليه السلام का लउका (काबील) हूं, जिस ने दुन्या में सब से पहला कत्ल किया.

(کتاب من عاش بعد الموت مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج ٦ ص ٢٩٧ رقم ٤٨)

काबील के सियाह कारनामे : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! काबील शुअ्रअ में मुसल्मान था बा'द में मुरतद हो गया था, ईसी ने दुन्या का सब से पहला कत्ल किया, ईसे दुन्या में येह सजाओं मिलीं के कत्ल करते ही उस का गोरा रंग सियाही में तब्दील हो गया, दिल एक दम सप्त हो गया, अपनी बहन **ईकलीमा** को अदन की तरफ़ ले कर भाग गया, हराम औलाद हुई, जब बुद्धा हो गया तो उस की औलाद ईस को पथर मारती थी, यहां तक के अपनी औलाद के पथर ही से हलाक हो गया. हलाकत के बा'द मिलने वाली सजा का लरजा भौंझ वाकिआ आप सुन युके. **मुइस्सिरे**



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (म. १/११)

शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़्ती अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن काबील के सियाह कारनामे बयान करते हुअे एश़ादि इरमाते हें : हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का हुकुम न मानना, ना ज़ाँज निकाल का एरादा करना, हाबील के कत्ल का एरादा करना, हाबील के कत्ल के बा'द मुरतद हो ज़ाना, गाना बज़ाना, बाजे ताशे एजाद करना. मज़ीद इरमाते हें : मुरतद व बे दीन को नबी जादा होना बिल्कुल ही बेकार है, पैगम्बर जादगी (सिर्फ़) एमान के साथ मुफ़्ती है, देओ काबील नबी जादा था मगर हलाक हो गया. (मापूज़ अज़ तफ़्सीरे नएमी, ज़ि. 6, स. 403, 405)

तेरी रहमतों ही से एमां मिला हें न हो अब येह मुज से जुदा या एवाही
मुसल्मां हें अतार तेरे करम से हो एमान पर पातिमा या एवाही

दर्स में शिक़त मेरी एस्लाह का सबब बन ग़र्ह : एमान की डिफ़ाअत का ज़अबा पाने, गीबत करने सुनने की अख़लत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत बनाने के लिये दा'वते एस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों बरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आबिरत संवारने के लिये म-दनी एन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िके मदीना के ज़रीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को ज़म्म करवाएये. फ़ैजाने सुन्नत के दर्स, एन्फ़िरादी कोशिश, माहे र-मजानुल मुबारक में आशिकाने रसूल के साथ अ'तिक़ाफ़ की भी बडी ब-र-कतें हें ! आएये ! एस ज़िम्न में अेक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार कइं. बम्बर, कश्मीर के अेक एस्लामी भाई ने कुछ एस तरह तहरीर दी के मैं उन दिनों इस्ट्र एयर में पढता था, कोलेज का आजादाना माहोल था, फ़िल्में डिरामे देबने और गाने बाजे सुनने का शौक़ जूनून की हद तक था हत्ता के उस गाडी में सफ़र नहीं करता था जिस में गाने या फ़िल्म न होती ! हमारी कोलोनी में दा'वते एस्लामी के अेक एस्लामी भाई तशरीफ़ लाअे उन्हों ने फ़ैजाने सुन्नत से दर्स दिया और अेक दुआ याद करवाई. एस से मैं बहुत ज़ियादा मु-तअस्सिर हुवा, एस के बा'द से दर्स फ़ैजाने सुन्नत सुनना शुरुअ



इरमाने मुस्तफा ﷺ : على الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अद्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (प्त)

कर दिया. मेरे म-दनी माडोल से बा काँधवा वाबस्तगी की अेक बहुत बडी वजह हमारे अलाके के अेक मुबल्लिग की ँन्डिरादी कोशिश है उन का हुस्ने अज्लाक, आ'ला किरदार, जज्बअे हुस्ने अमल और महब्बत भरा अन्दाल है. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने माडे र-मजानुल मुबारक में आशिकाने रसूल के साथ दस दिन के अे'तिकाफ़ की भी सआदत हासिल की. ँस का मुज पर बडा गहरा असर हुवा और मैं गुनाहों से ताँब छो गया. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ अयान देते वक्त कश्मीर की मुशा-वरत के अेक रुकन की हैसियत से नमाजों और सुन्नतों की धूमें मयाने की कोशिश कर रहा हूँ. साथ ही साथ कश्मीर में दा'वते ँस्लामी की अेक "मजलिस" का निगरान बना दिया गया हूँ और कश्मीर के अेक डिवीजन की निगरानी से भी मुशर्रफ़ हूँ.

मीठे मीठे ँस्लामी भाँयो ! देखा आप ने ! दसैं डैजाने सुन्नत की अ-र-कत से म-दनी माडोल की तरफ़ रगबत मिली, ँस्लामी भाँ की ँन्डिरादी कोशिश व शक़त ने मजीद तक्वियत अज्शी और सद करोड मरहबा ! म-दनी माडोल के अन्दर होने वाले सुन्नतों भरे अे'तिकाफ़े र-मजान ने गुनाहों की गहरी पाँ में गिरे हुअे ँन्सान को सहारा दे कर निकाला और ँतनी जबर दस्त अ-जमत अज्शी के दा'वते ँस्लामी के बहुत सारे जिम्मेदारों का भी जिम्मेदार बना दिया. काश ! तमाम ँस्लामी भाँ और ँस्लामी अहनें (अ शुमूल सब के सब छोटे बडे जिम्मेदारान) रोजाना दो दसैं डैजाने सुन्नत देने या सुनने की तरकीब इरमा लिया करें.

कध्र की रोशनी : दा'वते ँस्लामी के ँशाअती ँदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1548 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "डैजाने सुन्नत" सफ़हा 195 ता 196 पर है : दसों अयान के सवाब का भी क्या कहना ! अजरते अद्लामा जलालुद्दीन सुयूतिशहाई ँ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي "शरुस्सुदूर" में नकल करते हैं : अद्लाह तबा-र-क व तआला ने अजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुद्लाह الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की तरफ़ वड्य इरमाँ, "अलाँ की आतें जुद भी सीषो और दूसरों को भी सिषाओ, मैं अलाँ सीषने और सिषाने वालों की कध्रों को रोशन इरमाँगा ताके उन को किसी किसम की



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मैराज़)

वदूशत न हो.”

(حلیة الأولیاء ج ۶ ص ۵ حدیث ۷۶۲۲)

कब्रें जगमगा रही होंगी : इस रिवायत से नेकी की बात सीपने सिपाने का अजरो सवाब मा'लूम हुआ. **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** सीपने सिपाने की निखत से सुन्नतों त्भरा भयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जायेंगे, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** उन की कब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी किस्म का भौक़ मडसूस नहीं होगा. अख़री अख़री निखतों के साथ **ईन्ज़िरादी कोशिश** करते हुआ नेकी की दा'वत देने वालों, म-दनी काइले में सफ़र और इक़े मदीना कर के म-दनी **ईन्आमात** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरगीब दिलावे वालों और सुन्नतों त्भरे **ईजतिमाअ** की दा'वत पेश करने वालों नीज़ ब निखते सवाब मुबद्विगीन की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की कुबूर भी **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** हुज़ूर मुहीउनुनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नूर के सटके नूरुन अला नूर होंगी.

कब्र में लहरायेंगे ता हशर यश्मे नूर के

जल्वा इरमा होगी जब तल्मत रसूलुल्लाह की

(उदाईके भफ़िश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दा'वत में गीबत की लिकायत : उजरते सय्यिदुना **ईब्राहीम बिन अदहम** कहीं पाने की दा'वत पर तशरीफ़ ले गये, लोगों ने आपस में कहा के कुलां शप्स अत्मी तक नहीं आया. अक शप्स बोला : वोड मोटा तो बडा सुस्त है.

ईस पर उजरते सय्यिदुना **ईब्राहीम बिन अदहम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم अपने आप को



इरमाने मुस्तफ़ा عليه السلام : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (अबुअल)

मलामत करते हुअे इरमाने लगे : अफ़सोस ! मेरे पेट की वजह से मुज पर येह आइत आई है के मैं अेक अैसी मजलिस (या'नी बैठक) में पडोंय गया जहां अेक मुसल्मान की गीबत हो रही है. येह कह कर वहां से वापस तशरीफ़ ले गअे और (इस सदमे से) तीन (और ब रिवायते दीगर सात) दिन तक खाना न खाया. (تنبيه الغافلین ص ۸۹)

“गीबत करना गुनाहे कबीरा है” के उन्नीस दुरद की निरबत से किसी को सुस्त वगैरा कहने के मु-तग़ल्लिक 19 मिसालें

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! अल्लाह के नेक बन्दे मुसल्मान की आबइ रेजी बिल्कुल बरदाशत नहीं करते और अैसी बैठकों और दा'वतों को भी तर्क कर देते हैं जहां मुसल्मानों की गीबतों का सिखिसला हो. क्या कभी हम भी किसी गीबतों भरी दा'वत या बैठक से “वोक आउट” हुअे ? हां, वहां से उठ कर यल देने से पहले अपनी बात का वज़्न देभना होगा या'नी अगर येह उन्ने गालिब हो के समजाने से गीबत करने वाले तौबा कर लेंगे तब तो उन्हे गीबत से बाज रभना आप पर वाजिब हो जाअेगा और अगर अैसी सूरत नहीं तो जिस तरह मुफ्किन हो गीबत सुनने से बयिये और अगर इतना व इसाद का भौंफ़ न हो तो वहां से उठ कर यल दीजिये. यूंके गीबत की ज़ाईज सूरतें भी मौजूद हैं लिहाजा समजाने और उठ कर जाने वाले के पास इतना इल्म होना ज़रूरी है जिस से वोह येह तै कर सके के वाकेई गुनाहों भरी गीबत हो रही है. इस डिक्क़ायत से मा'लूम हुवा के पीठ पीछे किसी को “मोटा” और “सुस्त” कहना भी गीबत में दाखिल है. मोटा और सुस्त दोनों अलग अलग अल्फ़ाज़ हैं या'नी अगर किसी भारी भरकम आदमी को पीछे से बिला इजाजते शर-ई मोटा कहा तब भी गीबत है इसी तरह बिला इजाजते शर-ई पीछे से किसी को ❀ सुस्त ❀ काहिल ❀ नाकारा ❀ ढीला ❀ कामयोर ❀ निकम्मा ❀ निभट्टू ❀ गंवार ❀ ज़हिल ❀ अनपठ ❀ कम अकल ❀ अह्मक ❀ बे वुकूफ़ ❀ नादान ❀ पगला ❀ भावला ❀ पागल ❀ देर से समजने वाला ❀ मोटी अकल वाला वगैरा कहना भी गीबत है.



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : ﷺ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત
(البرقلى).

મેરે સર પે ઈસ્યાં કા બાર આહ મૌલા !
ઝમી બોઝ સે મેરે ફટતી નહીં હે

બઢા જાતા હે દમ બદમ યા ઈલાહી
યેહ તેરા હી તો હે કરમ યા ઈલાહી

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

દોનોં જહાં કી ઝિલ્લત : મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, વલિયે ને'મત, અઝીમુલ બ-ર-કત, અઝીમુલ મર્તબત, પરવાનએ શમ્મે રિસાલત, મુજદિદે દીનો મિલ્લત, હામિયે સુન્નત, માહિયે બિદઅત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફતાવા ર-ઝવિયા શરીફ જિલ્દ 24 સફહા 347 પર ફરમાતે હૈં : જો મઝલૂમ કી દાદ રસી પર કાદિર હો ઔર ન કરે તો ઉસ કે લિયે ઝિલ્લત કા અઝાબ હે. હદીસ મેં હૈં કે રસૂલુલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ફરમાતે હૈં : “જિસ શખ્સ કે સામને ઉસ કે મુસલ્માન ભાઈ કી ગીબત કી જાએ ઔર યેહ ઉસ કી મદદ પર કાદિર હો ઔર ન કરે, અલ્લાહ તઆલા ઉસે દુન્યા વ આખિરત મેં પકડેગા.”

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ١٣٤ رقم ١٠٨) મઝીદ ઈસી જિલ્દ કે સફહા 426 તા 427 પર લિખતે હૈં : નબિય્યે કરીમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : “જિસ શખ્સ કે સામને કિસી મુસલ્માન કી બે ઈઝ્ઝતી કી જાએ ઔર વોહ તાકત કે બા વુજૂદ ઉસ કી ઈમદાદ ન કરે તો કિયામત કે દિન અલ્લાહ તઆલા ઉસે લોગોં કે સામને ઝલીલો રુસ્વા કરેગા.”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٥ ص ٤١٢ حديث ١٠٩٨٥) આ'લા હઝરત عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى યેહ હદીસે પાક લિખને કે બા'દ તહરીર ફરમાતે હૈં : અન્દાઝા કિયા જા સકતા હૈં કે મુસલ્માન કી (ગીબત વગૈરા કે ઝરીએ) બે ઈઝ્ઝતી કો દેખ કર ખામોશ રહના એસે (યા'ની કિયામત કી રુસ્વાઈ કે) અઝાબ કા બાઈસ હૈં તો ખુદ ઉસે (યા'ની કિસી મુસલ્માન કો ગીબત



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : توم جहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (بخاری)

वगैरा के जरीअे) जलील करने के दरपै होना और जिस (मन्सब और) मर्तबे की वजह से उसे मुसल्मानों के नजदीक ईज्जत हासिल हो उस में (गीबतों, एल्काम तराशियों और बद् गुमानियों वगैरा के जरीअे) रफ्ना अन्दज्जी (या'नी जलल डालने) की कोशिश करना किस कदर अजाब और अल्लाह तआला के गजब का सबब होगा ! (इतावा २-जविय्या)

अल्लाह की दी दुर्घ ईज्जत कौन छीन सकता है ! : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! बयान कर्दा रिवायात और आ'ला हजरत عَلَيْهِ تَعَالَى اللَّهُ تَعَالَى के इम्हदात (या'नी ईशादात) से वोह हजरत ईब्रत हासिल करें जो बिला ईजाजते शर-ई किसी सुन्नी आलिम, पेशवा, सर-बराह किसी तन्जीमी जिम्मेदार या किसी भी आम मुसल्मान के पीछे पड जाते हैं. उस को ह-दई तन्कीह बनाते हुअे उस की ईज्जत उछालने लगते हैं, यूं गीबतों, युग्लियों, तोहमतों, बद् गुमानियों, औब दरियों, हिल आजारियों और न जाने किन किन गुनाहों के **मुर-तकिब** डोते हैं. जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुअज्जज किया हो उस की ईज्जत कौन छीन सकता है ! सुनो ! सुनो ! जो बद् नसीब बिला वजहे शर-ई किसी मुसल्मान की मुष्पा-लइत करते उन को बद्नाम करते फिरते हैं औसों के बारे में कुरआने करीम क्या फरमाता है युनान्ये पारह 18 सू-रतुनूर आयत नम्बर 19 में अल्लाहु रहमान عَزَّوَجَلَّ का फरमाने ईब्रत निशान है :

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ
فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : वोह लोग जो याहते हैं के मुसल्मानों में बुरा यरया फैले उन के लिये ददनाक अजाब है दुन्या और आभिरत में.

मुजे गीबतों से तू महझूज फरमा पअे सरवरे दो जहां या एलाही
जो शाडे मदीना की ना'ते सुनाअे अता कर दे औसी जहां या एलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रडमते नाज़िल इरमाता है. (طبرانی)

आका صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने **ज्वाब में इरमाया** : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी **ईन्आमात** के मुताबिक अमल कर के रोजाना इक़े मदीना के ज़रीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. आइये "मस्जिद भरो ईजतिमाअ" की अेक अनोपनी म-दनी बहार सुनते हैं युनान्हे 10 सितम्बर 2004 बरोज जुमुअतुल मुबारक तहसील ठरी मीरवाह से मुत्तसिल "गोठ हाज्ज इत्यास पास पैली" (पाकिस्तान) की **जुलानी मस्जिद** में बा'द नमाजे ईशा "मस्जिद भरो ईजतिमाअ" हुवा. मुबत्विले दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा बयान इरमाया और तब्विले कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के बैनल अक्वामी ईजतिमाअ सितम्बर (2004) में शिकत और हाथों हाथ म-दनी काफ़िले में सफ़र की भरपूर तरगीब दिलाई. 7 सितम्बर 2004 के रात उसी गाँव के अेक जुश नसीब इस्लामी भाई ज़ो के दुरुद शरीफ़ पढते पढते सोअे थे उन को सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की **ज्वाब में जियारत** हुई, भीठे भीठे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ ने सलाम ईशाद इरमाने के बा'द जुद ही अपना तआरुफ़ ली करवाया के में **मुहम्मद** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ हुँ और ज़ो कुछ ईशाद इरमाया उस में येह ली था "तुम्हारे गाँव पर जुसूसी करम हो गया है." मजीद ईशाद इरमाया : "जो येहरे पर दाढी सजाअे उस की मुज से मडब्बत है और जो दाढी मुंडाअे उस की मुज से मडब्बत नही और तू रोज तहज्जुद की नियत करता है मगर सुस्ती कर ज़ता है, उठ और तहज्जुद अदा कर." जब भरे मजमअ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइरे पाक न पड़े. (म)

था। “मेरे उम्मती दाढी मुंडवाते हैं इस से मेरे सीने में दर्द होता है।” येह सुन कर उस मुबल्लिग ने मुज क्लीन शेव के येहरे पर अपने दोनों हाथ कैर दिये और मेरी आंभ पुल गई. (गालिबन वोह प्वाब ताजा तरीन था उस नौ जवान ने मेरे सामने दाढी बढाने के अज़ूम का एजहार किया)

आका मदीनतुल मुनव्वरहे की मउब्बत की निशानी सजा लीजिये : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जिस ने अभी तक दाढी नहीं रपी उस को याहिये के अपने भीठे भीठे म-दनी मउबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मउब्बत की निशानी दाढी शरीफ़ अपने येहरे पर सजा ले, अब तक मुंडाई या ठोड़ी के नीचे अक मुद्दी से घटाई इस से तौबा भी कर ले. शैतान लाप रोके दाढी के मु-तअद्लिक दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना का हिल हिला देने वाला रिसाला, “काले बिखू” (सफ़हात 25) का मुता-लआ कीजिये. नीज मक-त-बतुल मदीना की ज़ारी कर्दा “काले बिखू” नामी ओडियो केसिट सुनिये या V.C.D देखिये.

सरकार का आशिक भी क्या दाढी मुंडाता है
क्यूं ईशक का येहरे से एजहार नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सूद से बडा गुनाह कौन सा है ? : हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रइमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़त इरमाया : क्या तुम जानते हो के अद्लाह उरुज के नजदीक सूद से बडा गुनाह कौन सा है ? सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्र की : وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ : या'नी अद्लाह



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલ્લાહ ઈજ્ઝલ તુમ પર રહમત ભેજેગા.

(અબુ ડાવુદ)

કરના, સૂદ ખ્વાર કો અલ્લાહ રસૂલ સે જંગ કરને કા અલ્ટી મેટમ દિયા ગયા હૈ, યેહ તો માલી સૂદ કા હાલ હૈ, મુસલ્માન કી આબરૂ ચૂંકે માલ સે ઝિયાદા અઝીઝ ઓર કીમતી હૈ ઈસી લિયે મુસલ્માન કી આબરૂ રેઝી (ગીબત વગૈરા કર કે), ઈસે ઝલીલ કરના બદ તરીન સૂદ કરાર દિયા ગયા. (મિરઆત, જિ. 6, સ. 618)

બિલયકીં એસે મુસલ્માં હેં બડે હી નાદાં અહલે ઈસ્લામ કી ગીબત જો કિયા કરતે હેં જો હેં સુલ્તાને મદીના કે હકીકી આશિક ગીબતો યુઝ્લિયો તોહમત સે બચા કરતે હેં

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

મુસલ્માન કી ઈઝ્ઝત કી હિફાઝત કા સવાબ : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! આપ કે સામને જબ ભી કોઈ આદમી કિસી ઈસ્લામી ભાઈ કી ખતા યા ઉસ કે એબ કા તઝકિરા ઉસ કી મૌજૂ-દગી મેં યા પસે પુશત (યા'ની પીઠ પીછે) શુરૂઅ કરે તો સુનને મેં અગર કોઈ મસ્લહતે શર-ઈ ન હો તો ફૌરન એહતિરામે મુસ્લિમ કા લિહાઝ કરતે હુએ સવાબે આખિરત કમાને કી નિચ્ચત સે અપને ઈસ્લામી ભાઈ કી ઈઝ્ઝત કી હિફાઝત કરને કી તરકીબ કીજિયે. તાજદારે રિસાલત, મુસ્તફા જાને રહમત, શમ્એ બઝમે હિદાયત, સરાપા અ-ઝ-મતો શરાફત ﷺ કા ફરમાને આફિચ્ચત નિશાન હૈ : જો અપને (મુસલ્માન) ભાઈ કી પીઠ પીછે ઉસ કી ઈઝ્ઝત કા તહફ્ફુઝ કરે તો અલ્લાહ ઈજ્ઝલ કે ઝિમ્મએ કરમ પર હૈ કે વોહ ઉસે જહન્નમ સે આઝાદ કર દે. (મુસ્નદામમ અહમદ ૬૮૫૧) હઝરતે સયિદુના અનસ રઝી ﷺ સે મરવી હૈ કે હુઝૂર નબિય્હે કરીમ, રઊફુર્હીમ ﷺ ને ઈશાદ ફરમાયા : જિસ ને દુન્યા મેં અપને ભાઈ કી ઈઝ્ઝત કી હિફાઝત કી, અલ્લાહ ઈજ્ઝલ કિયામત કે દિન એક ફિરિશ્તા ભેજેગા જો જહન્નમ સે ઉસ કી હિફાઝત ફરમાએગા. (દમ્ ઈબ્ને લાઝિન આબી દુન્યા સ ૧૩૧ હદિથ ૧૦૦)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भाष्य)

गीबत से रोकने के यार इजाईल : मुसल्मान की गीबत करने वाले को रोकने की कुदरत होने की सूरत में रोक देना वाजिब है, रोकना सवाबे अजीम और न रोकना बाईसे अजाबे अलीम (या'नी दईनाक अजाब का बाईस) है इस जिम्न में यार इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हजा इरमाईये :

﴿1﴾ जिस के सामने उस के मुसल्मान भाई की गीबत की जाअे और वोह उस की मदद पर कादिर हो और मदद करे, अद्लाह तआला हुन्या और आभिरत में उस की मदद करेगा और अगर बा वुजूदे कुदरत उस की मदद नहीं की तो अद्लाह तआला हुन्या और आभिरत में उसे पकडेगा. (مُصَنَّفُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ ج ١٠ ص ١٨٨ رقم ٢٠٤٢٦)

﴿2﴾ जो शप्स अपने भाई के गोशत से उस की गीबत (अदम मौजू-दगी में) रोके (या'नी मुसल्मान की गीबत की जा रही थी इस ने रोका) तो अद्लाह पर हक है के उसे जहन्नम से आजाद कर दे. (بَشَاةُ الْمَصَالِحِ ج ٣ ص ٧٠ حديث ٤٩٨١)

﴿3﴾ जो मुसल्मान अपने भाई की आबइ से रोके (या'नी किसी मुस्लिम की आबइ रेजी होती थी उस ने मन्अ किया) तो अद्लाह पर हक है के कियात के दिन उस को जहन्नम की आग से बयाअे. इस के बा'द इस आयत की तिलावत इरमाई :

﴿وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ﴾ (तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और हमारे जिम्मअे करम पर है मुसल्मानों की मदद इरमाना. (شرح السنة ج ٦ ص ٤٩٤ حديث ٣٤٢٢) (پ ٢١ الروم: ٧))

﴿4﴾ जहां मई मुस्लिम की हत्के हुरमत (या'नी बे ईज्जती) की जाती हो और उस की आबइ रेजी की जाती हो ऐसी जगह जिस ने उस की मदद न की (या'नी येह बामोश सुनता रहा और उन को मन्अ न किया) तो अद्लाह तआला उस की मदद नहीं करेगा जहां ईसे पसन्द हो के मदद की जाअे और जो शप्स मई मुस्लिम की मदद करेगा जैसे मौकअ पर जहां उस की हत्के हुरमत (या'नी बे ईज्जती) और आबइ रेजी की जा रही हो, अद्लाह तआला उस की मदद इरमाअेगा जैसे मौकअ पर जहां ईसे महबूब (या'नी पसन्द) है के मदद की जाअे. (سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٥٥ حديث ٤٨٨٤)



इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो मुज पर अेक दुइद शरीफ पढता है अल्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज् लिपता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

गीबत करने वाले के सामने ता'रीफ : हमारे अस्लाफ رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى किसी से मुसल्मान की गीबत सुनते तो उसे फौरन टोकते और उन का अन्दाज भी कितना हसीन होता ! युनान्चे उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ की मजलिस में अेक शप्स ने सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू उनीफा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की गीबत की तो आप رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इशादि इरमाया : अै शप्स ! तू इमाम के अैब क्यूं बयान करता है ! उन की शान तो येह थी के पेंतालीस⁴⁵ साल तक अेक वुजू से पांयों वक्त की नमाज अदा करते रहे.

(الْخَيْرَاتُ الْجَسَانَ لِلْهَيْتِيِّ ص 117، رَدُّ الْمُفْتَاحِ ج 1 ص 100)

गीबत करने वाले से पीछा छुडाने का तरीका : भीठे भीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ السُّبْحَانِ का गुनाहों भरी गीबत सुनने से बचने का जजबा मरहबा ! काश ! सद् करोड काश ! हमारा येह जेहन बन जाअे के जूं ही किसी मुसल्मान का मन्ही (NEGATIVE) तजकिरा निकले फौरन खबरदार हो जाइये और गौर कीजिये, अगर वोह तजकिरा गीबत पर मब्नी या गीबत की तरफ ले जाने वाला हो तो फौरन उस से बाज आ जाइये, अगर कोई और आदमी येह गुफ्त-गू करने लगा हो तो उस को मुनासिब तरीके पर रोक दीजिये, अगर वोह बाज न आअे तो वहां से उठ जाइये, अगर उसे रोकना या अपना वहां से हटना मुम्किन न हो तो हिल में बुरा जानिये, तरकीब से बात बदल दीजिये उस गुफ्त-गू में हिलयस्पी मत लीजिये, म-सलन इधर उधर देबने लग जाइये, मुंह पर बेजारी के आसार लाइये, बार बार घडी देब कर उक्ताहट का इजहार इरमाइये, मुम्किन हो तो इस्तिन्जा पाने का कह कर ही उठ जाइये और फिर आप का कडा जूट न हो जाअे इस लिये इस्तिन्जा भी कर लीजिये. "गीबत गाह" में हाजिर रहने के बजाअे मजबूरन इस्तिन्जा पाने में वक्त गुजारना बहुत मुनासिब अमल है إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ इस पर भी सवाब मिलेगा.

अप्लाक हों अखे मेरा किरदार हो सुथरा

महबूब के सडके में मुज नेक बना दे



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुर्रहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़्कार करते रहेंगे. (अ. ५)

गीबत करने वाले को ईशारे से नहीं ज़बान से रोकिये : हुज्जतुल ईस्लाम

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ التَّوَالِي के इरमाने वाला शान का फ़ुलासा है : जहां गीबत हो रही हो और येह (मुरुव्वत में नहीं बल्के) उर के सबज ज़बान से रोक नहीं सकता तो दिल में बुरा जाने तो अब ईसे गुनाह नहीं होगा, अगर वहां से उठ कर जा सकता है या गुफ़्त-गू का रुख बदल सकता है मगर औसा नहीं करता तो गुनहगार है, अगर ज़बान से कल भी देता है के “फामोश हो जाओ” मगर दिल से सुनना याहता है तो येह मुना-इकत है और जब तक दिल से बुरा न जाने गुनाह से बाहर न होगा, इकत हाथ या अपने अब्रू या पेशानी के ईशारे से युप कराना काफ़ी न होगा क्यूंके येह सुस्ती है और गीबत जैसे गुनाह को मा'भूली समजने की अलामत है, (अगर इसाद का अन्देशा न हो तो) गीबत करने वाले को सप्तती से वाजेह अल्फ़ाज़ में रोके. (احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۸۰) ताजदारे मदीनअे मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कअे मुकर्रमा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : जिस शप्स के पास किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वोह ताकत (रफने) के बा वुजूह उस की मदद न करे अद्लाह तआला कियामत के दिन लोगो के सामने उसे रुस्वा करेगा.

(مُسْنَدُ اِمَامِ اَحْمَد ج ۵ ص ۴۱۲ حدیث ۱۰۹۸۵)

उ-लमा को अवाम न टोकें : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गीबत से रोकने वाले के

लिये ईतनी मा'लूमात होना ज़रूरी है के वोह गुनाहों त्बरी गीबत की पहचान रफता हो नीज़ रोकते वक्त अपनी बात का वज़्न देभना भी बहुत ज़रूरी है कहीं औसा न हो के आप किसी को मन्अ करे और कोई इतना षडा हो जाअे येह बात भी जेह्न में रफिये के बा'ज़ अवकात बिल फुसूस अहले ईल्म हज़रात की कोई बात सरसरी तौर पर सुनने वाले को गीबत लगती है मगर दर हकीकत वोह गुनाहों त्बरी गीबत नहीं होती क्यूंके गीबत की जाईज सूरतें भी मौजूह हैं, मुहा-वरा है : **خَطَاةَ بُرُرْكَانٍ كَرَفْتَنَ خَطَاَسْت** या'नी “बुलुगो पर अे'तिराज करना उन की षता पकडना फुद षता है.” लिहाज़ा उ-लमाअे किराम को अवाम हरगिज़ न टोकें और उन के लिये दिल में मैल भी न लाअें. हां अगर आप को गीबत के बारे में मा'लूमात



इरमाने मुस्तफा ﷺ : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह उखर (उस पर दस रउमतें बेजता है. (स्.))

हों और वोह आलिम साहिब वाकेई सरीह गीबत कर रहे हों तो वहां से उठ जाईये, मुम्किन हो तो बात का रूप बदल दीजिये अगर उटना या बात बदलना और किसी तरह से गीबत सुनने से बचना मुम्किन न हो तो दिल में बुरा जानते हुअे उतल मकदूर बे तवज्जुही बरतिये. अगर “हां” में सर खिलाअेंगे या दिलयस्पी और तअज्जुब का ईजहार करेंगे, ताईद में “अख्श”, “ज”, “ओहो” वगैरा आवाअें निकालेंगे तो गुनहगार होंगे.

आलिम को टोकने के मु-तअद्विक इरमाने आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ : मेरे आका आ'ला उजरत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अजीमुल भ-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्अे रिसालत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, डामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे भैरो भ-र-कत, उजरते अल्लामा मौलाना अलहाज अल डाईज अल कारी शाह ईमाम अहमद रजा भान अवावाम को (हक्के) अे'तिराज नहीं पछोंयता और जो मशहूर भ मा'रिफत हो उस का मुआ-मला जियादा नाजुक है हर आमी मुसल्मान के लिये हुकम है के उस के (या'नी उस आम मुसल्मान के ली) हर कौल व फे'ल के लिये सत्तर (70) महुमले उसन (या'नी अख्शे अेहतिमालात और जाईज तावीलात) तलाश करो, (उन अवावाम पर ली भद गुमानी मत करो) न के उ-लमा व मशाईफ जिन पर अे'तिराज का अवावाम को कोई हक (ही डालिल) नहीं ! यहां तक के कुतुबे दीनिया में तसरीह (या'नी साफ़ लिखा) है अगर सरा-हतन नमाज का वक्त जा रहा है और आलिम नहीं उठता तो जाहिल का येह कहना गुस्ताफी है के “नमाज को यलिये”, वोह (या'नी आलिम) ईस (या'नी गैरे आलिम) के लिये डादी (या'नी रहनुमा) बनाया गया है न के येह (जाहिल) उस (आलिम) के लिये. (इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 708)

सुनूं न इरदश क्लामी न गीबतो युगली तेरी पसन्द की बातें इकत सुना या रब
करें न तंग भयालाते भद कली कर दे शुठिरो किंक को पाकीजगी अता या रब

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

जिस को सलामती की दुआ दी उसी की गीबत !!! : किसी को सलाम कर के ज़ान व माल और इज़्ज़त व आभर वगैरा की सलामती की दुआ दी और फिर जूँ ही वहां से हटे **مَدَدَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** उसी की इज़्ज़त उछालनी या'नी गीबत करनी शुरू कर दी येह कैसा अजब मुआ-मला है ! ज़ हां, **“السَّلَامُ عَلَيْكُمْ”** के मा'ना हें : “तुम पर सलामती हो.” लगे हाथों सलाम की नियत भी मुला-हज़ा इरमा लीजिये युनान्ये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ बहारें शरीअत हिरसा 16 सइहा 102 पर लिभे हुअे ज़ुज़्इये का भुलासा है : “सलाम करते वक्त हिल में येह नियत हो के जिस को सलाम करने लगा हूं इस का माल और इज़्ज़त व आभर सब कुछ मेरी हिराजत में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दप्ल अन्दाज़ी करना इराम ज़ानता हूं.” (رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ٩ ص ٦٨٢) आरिफ़ बिल्लाह ! हज़रते सय्यिदुना शैभ अबू तालिब मक्की **رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** इरमाते हें : अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के नेक बन्दे मुलाकात के वक्त सलाम करते तो इस से येह मुराद लेते के तू मेरी तरफ़ से सलामत रहा, मैं तेरी गीबत और मज़्मत नहीं करूंगा.

(قَوْتُ الْقُلُوبِ ج ١ ص ٣٤٨)

करूं किसी की भी गीबत न मैं कभी या रब भुदाये पाक करम ! अज पये नबी या रब
मुआइ कर दे गुनाह तू मेरे सभी या रब तुझे हज़रते शेरें भुदा अली या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भौइनाक हादिसा होते होते रह गया : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की त-रबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सइर कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (ह/अ)

संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इक्रे मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. सुन्नतों तरे ईजतिमाअ में हाजिरी दीजिये न जाने कब हिल चोट भा जअे और दोनों जहां में तलाइयां ईनायत हो जअें. आप की तरगीब के लिये अेक म-दनी बहार गोश गुजार करता हूं : 1425 सि.हि. में होने वाले बैनल अक्वामी तीन रोजा सुन्नतों तरे ईजतिमाअ (सहराअे मदीना, मदीनतुल औलिया, मुलतान शरीफ़) के यन्द रोज़ आ'द (सगे मदीना غففة) से मिलने अेक साहिब पंजाब से बाबुल मदीना करायी आअे, उन के बयान का खुलासा कुछ ईस तरह है, "मैं **A.C.** कोय का द्राईवर हूं, परेशानियों ने तबाह डाल कर दिया था, शैतान मुझे भावला बना कर मेरा येड जेहन बना युका था के दुन्या वाले मत्वबी और बे वफ़ा हैं मुझे **पुढकुशी** कर लेनी है मगर तन्हा नहीं औरों को त्मी साथ ले कर मरना है. बिहाजा मैं ने येड तै किया हुवा था के भयाभय त्मरी हुई कोय को पूरी रफ़तार के साथ गहरी भाई में गिरा कर सब सुवारियों समेत अपने आप को अत्म कर दूंगा. अैसे में सुवारियां ले कर ईजतिमाअ (सहराअे मदीना, मुलतान शरीफ़) में आने की सआदत मिल गई. गोया मेरे ही लिये **पुढकुशी** का ईलाज नामी बयान हुवा, सुन कर मैं पौई पुढा جَرَجْر से लरज उठा, मैं ने अखी तरह समज लिया के **पुढकुशी** से जान छूटती नहीं मजीद ईस जाती है. मैं ने सख्ये हिल से तौबा की, बयान करने वाले का नाम व पता लोगों से ले कर अब आप के पास दुआओं लेने आया हूं." युनान्ये उस ने दुआ करवाई और नमाज की पाबन्दी, डरतावार सुन्नतों तरे ईजतिमाअ में हाजिरी, म-दनी काइलों में सफ़र वगैरा की अखी अखी नियतें कर के रोता हुवा पलट गया. **क्या पुढकुशी से जान छूट जाती है ?** : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 472 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बयानाते अत्तारिय्या" हिस्सअे हुवुम के सफ़हा 404 ता 406 पर है : **पुढकुशी** करने वाले शायद येड समजते हैं के हमारी जान छूट जाअेगी ! डालां के ईस से जान छूटने के बजाअे नाराजिये रब्बुल ईज़ज़त جَرَجْر की सूरत में निहायत बुरी तरफ़ ईस जाती



इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (उस पर दस रलमतें बेजता है. (س))

हे. पुढा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! पुढकुशी का अजाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा.

आग में अजाब : उदीसे पाक में हे : जो शप्स जिस थीज के साथ पुढकुशी करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी थीज के साथ अजाब दिया जायेगा.

(صحيح بخارى ج ٤ ص ٢٨٩ حديث ٦٦٥٢)

उसी हथियार से अजाब : उजरते सय्यिदुना साबित बिन जड्हाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का से भरवी है के राहते कलबे नाशाद, महबूबे रब्बुल एबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का एशादि एब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से पुढकुशी की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से अजाब दिया जायेगा.

(صحيح بخارى ج ١ ص ٤٥٩ حديث ١٣٦٣)

गला घोंटने का अजाब : उजरते सय्यिदुना अबू लुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से भरवी है, सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुद्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने एब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की आग में अपना गला घोंटता रहेगा और जिस ने पुढ को नेजा मारा वोह जहन्नम की आग में पुढ को नेजा मारता रहेगा.

(صحيح بخارى حديث ٣٦٥ ج ١ ص ٤٦٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! पुढकुशी का एलाज नामी बयान की केसिट मक-त-बतुल मदीना से हासिल कीजिये और सब घर वालों को सुनाईये और पुसूसन परेशान हालों को सुनने के लिये पेश कीजिये. ईसी बयान को हस्बे जउरत तरमीम के साथ बनाम : पुढकुशी का एलाज रिसाले की सूरत में ली शाअेअ किया गया है. अपने अजीजों के इसाले सवाब के लिये दा'वते इस्लामी के एशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना से जियादा से जियादा खरीद कर गम के मारों, दुभियारों और बीमारों बलके आम मुसल्मानों में तकसीम कीजिये. अगर पढ कर कोई अेक ली मुसल्मान पुढकुशी के एरादे से बाज आ गया तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप का ली बेडा पार होगा.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جئى اللّٰه تعالى عليه و آله و سلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

कध में शकल तेरी बिगड जायेगी पीप में लाश तेरी लिखड जायेगी
बाल उस जायेगे बाल उधड जायेगी कीडे पड जायेगे ना'श सड जायेगी
मत गुनाहों पे हो भाई भेबाक तू भूल मत येह डकीकत के हे पाक तू
थाम ले दामने शाडे लौलाक तू सखी तौबा से हो जायेगा पाक तू

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

घर जा कर नेकी की दा'वत देते : डरते सखिदुना अब्दुल अजीज दरैनी
ﷺ को जब मा'लूम होता के किसी शप्स ने उन की गीबत की है तो
आप ﷺ इहमाईश (या'नी समजाने) के लिये उस के घर तशरीफ़ ले जाते
और इरमाते : ओ भाई ! आप को क्या हो गया के आप ने अब्दुल अजीज के
गुनाह उठा लिये !

(تنبيه المغتربين ص ۱۹۲)

“गुनाह उठा लिये” की वजाहत : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस हिकायत से
पता चलता के हमारे अस्लाफ़ अपनी गीबत का सुन कर धूआं कूआं हो कर आस्तीनें
बढा कर गीबत करने वाले पर बढ दौडने के बज्जामे, अगर जाना पडता तो उस के घर
जा कर भी उस को नेकी की दा'वत पडोयाते और उस के दिल को चोट लगाने वाले
कलिमात ईशाद इरमाते. इस हिकायत में “गुनाह उठा लिये” जो कहा गया है इस से
बुराद येह है के अगर बिगैर तौबा और मुग्ताब या'नी जिस की गीबत की उस से बे
मुआफ़ करवाये मरा तो जिस की गीबत की है उस को अपनी नेकियां देनी पडेंगी,
अगर नेकियां न हुई या कम पड गई तो उस के गुनाह अपने सर उठाने पडेंगे !
आह ! गीबत का मुआ-मला बेहद नाजुक है, तौबा तौबा हमारी करोडों बार तौबा.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढे भप्त हो गया. (अ. १)

अहूद कीजिये : न गीबत करूंगा न सुनूंगा.

हे गीबत से बचने की नियत एलाही

में काईम रहूँ कर ईआनत¹ एलाही

रहमत पलट जाती है : उजरते सय्यिहुना हातिम असम رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ इरमाते हैं :

जब किसी मजलिस में येह तीन बातें हों तो उन लोगों से रहमत पलट जाती है : (1)

दुन्या का जिक्र (2) जियादा हंसना और (3) लोगों की गीबत करना. (تنبيه المغتربين ص १९६)

अजाबे कब्र के तीन हिस्से : उजरते सय्यिहुना कतादा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :

उमें बताया गया है के अजाबे कब्र को तीन हिस्सों में तकसीम किया गया है : अेक

तिहाई अजाब गीबत से, अेक तिहाई युगली से, और अेक तिहाई पेशाब (के छोटों

से फुद को न बचाने) से होता है.

(تَمَّ الْعَيْبَةُ لِأَبِي الدُّنْيَا ص ९२ رقم ०२)

कुत्तों की शकल में उठेंगे : सरकारे द्यो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम,

रसूले मुहूतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरमाया : गीबत करने वालों, युगुल पोरों

और पाकबाज लोगों के औब तलाश करने वालों को अद्लाह عَزَّوَجَلَّ (कियामत के दिन)

कुत्तों की शकल में उठायेगा.

(التَّوْبِيخُ وَالتَّنْبِيهُ لِأَبِي الشَّيْخِ الْأَصْبَهَانِيِّ ص ९७ رقم २२०، التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ३ ص ३२० حديث १०)

मुइस्सिरे शहीर डकीमुल उम्मत उजरते मुइती अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ

इरमाते हैं : जयाल रहे के तमाम ईन्सान कब्रों से ब शकले ईन्सानी उठेंगे इर महशर में

पड़ोंय कर भा'ज की सूरतें मस्य हो जायेंगी. (या'नी बिगड जायेंगी म-सलन मुप्तलिइ

जानवरों जैसी हो जायेंगी)

(मिरआत, जि. 6, स. 660)

1. या'नी ईमदाद



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुर्रहे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (म.अ.अ.उ.)

गोश्त की छोटी सी बोटी : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ज़बान अगर्चे ब जाहिर गोश्त की अेक छोटी सी बोटी है मगर येह पुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ की अजीमुश्शान ने'मत है. ईस ने'मत की कद्र तो शायद गूंगा ही जान सकता है. ज़बान का दुरुस्त ईस्ति'माल जन्नत में दाखिल और गलत ईस्ति'माल जहन्नम से वासिल कर सकता है. ईस ज़बान से तिलावते कुरआन करने वाला और दुर्रदो सलाम पढने वाला रब्बुल ईज़्जत की ईनायत से जन्नत में जाता है. ईस ज़बान से किसी मुसल्मान को गाली निकालने वाला नीज़ गीबत, युगली व तोहमत का मुर-तकिब अजाबे नार का हकदार करार पाता है. अगर कोई बद् तरीन काफ़िर भी हिल की तस्दीक के साथ ज़बान से لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढ ले तो कुफ़ी शिर्क की सारी गन्दगी से पाक हो जाता है उस की ज़बान से निकला हुवा येह कलिमअे तय्यिबा उस के गुज़श्ता तमाम गुनाहों के मैल कुयैल को धो डालता है. ज़बान से अदा किये हुअे ईस कलिमअे पाक के बाईस वोह गुनाहों से अैसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा के उस रोज़ था जिस रोज़ उस की मां ने उसे जना था. येह अजीम म-दनी ईन्किलाब हिल की ताईद के साथ ज़बान से अदा किये हुअे कलिमे शरीफ़ की बढौलत आया.

हर बात पर साल भर की ईबादत का सवाब : अै काश ! हम भी अपनी ज़बान का सहीह ईस्ति'माल करना सीख लें. गीबतों, युग्लियों और तोहमतों बरी बातों से पीछा छुडा लें, बेशक अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भरजी के मुताबिक अगर ज़बान को यलाया जाअे तो जन्नत में घर तय्यार हो जाअेगा. ईस ज़बान से हम तिलावते कुरआने पाक करें, जिहुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करें, दुर्रदो सलाम का विर्द करें, पूब पूब नेकी की दा'वत दें तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हमारे वारे ही न्यारे हो जाअेंगे. मुका-श-इतुल कुलूब में है : हररते सय्यिहुना मूसा कलीमुल्लाह الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने बारगाहे पुदा वन्ही عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : अै रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! ज़ो अपने भाई को



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (مهارات)

बुलाये और उसे नेकी का हुकम करे और बुराई से रोके उस शप्स का बदला क्या होगा ?

इरमाया : “मैं उस के हर कलिमे के बदले अेक साल की ईबादत का सवाब लिखता हूँ और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे हया आती है.” (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ٤٨)

आशिकाने रसूल के भीठे बोल की ब-रकात : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !

नेकी की बात बताने, गुनाह से नफ़रत दिलावे और इन कामों के लिये किसी पर

ईन्फ़िरादी कोशिश का सवाब कमाने के लिये येह ज़रूरी नहीं के जिस को समजाया वोह

मान जाये तो ही सवाब मिलेगा बल्के अगर वोह न माने तब भी إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

सवाब ही सवाब है और अगर आप की ईन्फ़िरादी कोशिश से किसी ने गुनाहों से

तौबा कर के सुन्नतों भरी जिन्दगी गुज़ारनी शुरुअ कर दी फिर तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप

का भी बेडा पार हो जायेगा. आईये ईस जिम्न में ईन्फ़िरादी कोशिश की अेक म-दनी

बहार सुनते यलें युनान्हे शहर कुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के अेक नौ जवान ईस्लामी

भाई की तहरीर बितसरुफ़ पेश करता हूँ : मैं उन दिनों मेट्रिक का तालिबे ईल्म था,

बुरी सोहबत के बाईस जिन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिजाज बेहद गुसीला

था, बह तमीज़ी की आदते बह ईस हद तक पछोंय चुकी थी के वालिद साहिब कुजा

दादाजान और दादीजान के सामने भी केंयी की तरह ज़मान यलाता. अेक रोज़

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी का

अेक “म-दनी काइला” हमारे महल्ले की मस्जिद में आ पछोंया, जुदा का करना

अैसा हुआ के मैं आशिकाने रसूल से मुलाकात के लिये पछोंय गया. अेक ईस्लामी

भाई ने ईन्फ़िरादी कोशिश करते हुआ मुझे दर्स में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन के भीठे

बोल ने मुझ पर अैसा असर किया के मैं उन के साथ ही दर्स में बैठ गया. उन्हों ने दर्स

के बा'द ईन्तिहाई भीठे अन्दाज में मुझे बताया के यन्द ही रोज़ बा'द सहाराये मदीना

मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में दा'वते ईस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक्वामी

सुन्नतों भरा ईजतिमाअ हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये. उन के दर्स ने मुझ

पर बहुत अख़ा असर किया था लिहाजा मैं ईन्कार न कर सका. यहां तक के मैं

सुन्नतों भरे ईजतिमाअ (सहाराये मदीना, मदीनतुल औलिया, मुलतान) में हाजिर



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करुंगा. (क़ुरआन)

डो गया. वहां की रोनके और ब-र-कते देष कर में हैरान रह गया, एजतिमाअ में डोने वाले आभिरी बयान “गाने बाजे की डोल नाकियां” सुन कर मैं थर्रा उठा और आंभों से आंसू ज़ारी डो गअे. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाडों से तौबा कर के उठा और दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता डो गया. मेरी म-दनी माडोल से वाबस्तगी से डुमारे घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल की ब-र-कत से मुअ जैसे बिगडे डुअे बढ अण्ळाक और अस्ता अराब नौ जवान में म-दनी इन्किलाब से मु-तअस्सिर डो कर मेरे बडे भाई ने भी दाढी मुबारक रअने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया. मेरी अेक डी बहन है. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मेरी इकलौती बहन ने भी म-दनी अुरकअ पहन लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ घर का डर इई सिव्सिलअे आलिया कादिरिया र-अविया में दाभिल डो कर सरकारे गौसे आ'अम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيمِ का मुरीद डो गया. और उस इन्क़िरादी कोशिश करने वाले मेरे मोडसिन इस्लामी भाई के भीठे बोल की ब-र-कत से मुअ पर अद्लाहु आ'अम عَزَّوَجَلَّ ने अैसा करम इरमाया के मैं ने कुरआने पाक डिफ़्ठ करने की सआदत डसिल कर ली और दसे निअामी (आलिम कोर्स) में दाभिला ले लिया और येड बयान देते वक्त द-र-जअे सालिसा या'नी तीसरी क्लास में पहोंय युका डूं. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के तअद्लुक से अलाकाई काइला जिम्मादार डूं. मेरी निय्यत है के اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ शा'बानुल मुअज़्जम 1427 सि.डि. से यक मुशत 12 माड के लिये म-दनी काइलों में सइर करुंगा.

दिल पे गर अंग डो, घर का घर तंग डो डोगा सब का भला, काइले में यलो

अैसा इँजान डो, डिफ़्ठ कुरआन डो कर के डिम्मत जरा, काइले में यलो

कअ्र का भयानक तसव्वुर : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! गौर कीजिये ! सोचिये ! ! डो सकता है आज डी मौत आ जाअे, दुन्या की सारी ने'मते डुट जाअे, सब अरमान षाक में मिल जाअे और देअते डी देअते जनाअा कअ्रिस्तान में दाभिल डो जाअे, आड ! आड ! आड ! तसव्वुर कीजिये उस वक्त क्या गुअर रही डोगी जब कअ्र में तन्हा रअ



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عن النبي صلى الله عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

कर, उपर से मनो मिट्टी डाल कर नाज उठाने वाले रुप्सत हो रहे होंगे, हाअे ! धुप अंधेरा, आह ! वइशत का बसेरा, जैसे में अगर गीबतो, युग्लियो, औब दरियो, तोइमतों और बह गुमानियो वगैरा वगैरा गुनाहों के सबब अंधेरी क्ख्र में भौइनाक मारपीट शुइअ हो गइ, भयानक आग सुलगा दी गइ, तरह तरह के जहरीले सांप बिखू कइन इाड कर नाजुक बहन से लिपट गअे तो क्या बनेगा ! अकल भी सलामत होगी, बेडोशी भी तारी न होगी, यीओ पुकार भी बेकार साबित होगी, न किसी को पास बुला सकेंगे, न जुद किसी के पास जा सकेंगे ! हाअे मेरे अद्लाह عَزَّوَجَلَّ !

धुप अंधेरा ही क्या वइशत का बसेरा होगा क्ख्र में कैसे अकेला में रहूंगा या रब !
गर कइन इाड के सांपों ने जमाया कब्जा हाअे बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !
उंक मखर का भी मुज से तो सहा जाता नहीं क्ख्र में बिखू के उंक कैसे सहूंगा या रब !
गर तू नाराज हुवा मेरी उलाकत होगी हाअे ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा

गर करम कर दे तो जन्त में रहूंगा या रब !

भाभी ने जहू करवा दिया है : भीठे भीठे इस्लामी भाइयो ! घर में बीमारी, परेशानी या बे रोजगारी हो तो आज कल अक्सर वस्वसा आता है के शायद किसी ने जहू करवा दिया है, लिहाजा “बाबा ज़” (ता’वीज धागा देने वाले) से राबिता किया जाता है, बिलइर्ज “बाबा ज़” बता दे के तुम्हारे करीबी रिश्तेदार ने जहू करवाया है तो उमूमन बहू या भाभी की शामत आ जाती है. बा’ज अवकात “बाबा ज़” जहू करने वाले या वाली के नाम का पडला इई बलके नाम ही बता देते हैं ! कभी कभी तो सूईयो वाला माश के आटे का पुतला और ता’वीज वगैरा भी घर से बरआमद हो जाता है. और इर लोग जैसे “बाबा ज़” पर अन्धा भरोसा कर लेते हैं और पानदान भर में गीबत व ओहतान तराशी का बह तरीन सिव्सिला यल निकलता



इरमाने मुस्तफ़ा : **عَنْ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (हदीस)

और नती-जतन हरा भरा लड़लडाता पानदान ता-भतो ताराज हो कर रह जाता है. याद रभिये ! बिला सुभूते शर-ई सिर्फ़ आभिलों और बाबाओं के कडने पर अगर आप ने किसी से कहा : म-सलन : “**हमारी भाभी ज़दू करवाती है**” तो येह भोडतान, गुनाहे कभीरा, हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम हुआ और अगर किसी ने छुप कर वाकेई ज़दू करवा भी दिया हो और आप को यकीनी तौर पर पता चल गया हो तब भी उस मफ़्सूस ईद का ज़दू के हवाले से बिला मस्लहतते शर-ई किसी से तज़क़िरा करना गीबत है. भयाल रहे ! आभिलों या बाबाओं का भताना शर-ई सुभूत नहीं कडलाता.

अगर घर से सूँधियों वाला पुतला भरआमद हो ज़ाये तो ! : वस्वसा : “**बाबा ज़**” ने नाम और सूँधियों वाले पुतले की निशान देही कर दी फिर भी येह शर-ई सुभूत क्यूं नहीं ? क्या “**बाबा ज़**” जूटे हैं ?

वस्वसे का ईलाज : देभिये ! किसी बात को दलीले शर-ई न मानना और है और जिस की दलील न मानी गई उसे जूटा समझना और है. म-सलन किसी बात में दो गवाहों की हाजत हो और गवाह सिर्फ़ अक हो वोह अगरे कोई सालेह, नेक बल्के वली ही हो, काज़ी उस की गवाही रद कर देता है तो ईस का येह मत्वब हरगिज़ नहीं के काज़ी उस को जूटा समझ रहा है बल्के शरीअत ने गवाही का ज़ो निसाब मुकरर किया है काज़ी उस निसाब के हुक़म पर अमल कर रहा है. यूँही हम बाबा ज़ को जूटा नहीं कड रहे बल्के हुक़मे शर-ई पर अमल करते हुअे बाबा ज़ के भता देने को दलील बना कर किसी शफ़्स पर ज़दू का ईलाज नहीं साभित कर रहे बहर हाल हुक़मे शरीअत येही है के किसी बाबा ज़ का पुतले वगैरा के बारे में भता देना और उस पुतले का भरआमद हो जाना ईस बात की दलीले शर-ई नहीं है के वाकेई कुलां रिशतेदार ही ने येह ज़दू करवाया है.

ज़ो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे गलत हो सकते हैं ? : वस्वसा : ज़ो बाबा ज़ ता'वीज़ात वगैरा के पैसे नहीं मांगते वोह किस तरह गलत हो सकते हैं ? **वस्वसे का ईलाज** : अ-मलिय्यात की लाईन ऐसी है के ज़ो पैसे नहीं मांगता बा'ज़ अवकात उस की आमदनी मांगने वालों की निस्बत ज़ियादा होती है क्यूंके बार बार



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (महाजुल)

पैसे मांगने वालों से लोग दूर भागते हैं. हजरते मौलाअे काअेनात, मौला अली शेरे फुदा : كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ इरमाते हैं : बछडा जब थनों को बहुत जियादा यूसने लगता है तो उस की मां उस को सींग मारती है. (مكاشفة القلوب ص १२०) बहर डाल “बाबा” अगरे पैसे न मांगता हो तब भी लोग यूंके हकीकत से ना वाकिफ़ होते हैं इस लिये उमूमन औसों के जियादा अकीदत मन्द हो जाते हैं और फिर दा’वतों और नजरानों की तरकीब के साथ साथ शोहरत व ईज्जत भी डसिल होती है. डुब्बे ज़ाड या’नी ईज्जत व शोहरत की महब्बत का भरज जिन को लग जाता है वोड लोग मशहूरी के लिये करोडों रुपै अपने पल्ले से अर्य करने से भी नहीं यूकते ! आम इन्तिबाआत के मवाकेअ पर जम्हूरी मुमालिक में इस के नज़ारे आम होते हैं. यकीनन शरीअत के किसी भी मुआ-मले में कत्अन ज़ोल नहीं. याद रअिये ! इस्तिआरात, मुवक्कलात और जिन्नात के जरीअे नहीं बल्के कुरआनो सुन्नत के अहकामात के तवरसुत से इस्लामी अदालतों के मुआ-मलात तै किये जाते हैं.

अगर तकिये के नीचे से ता’वीज निकल आये तो ? : वस्वसा : अगर त्माभी या बडू की जेब या उस के तकिये के नीचे से ता’वीज बरआमद हुवा हो तो क्या येड भी शर-ई सुभूत नहीं ?

वस्वसे का इलाज : येड भी शर-ई दलील नहीं. जो ता’वीज बरआमद हुवा उसे “जदू” करार देने के लिये भी तो कोई मा’कूल दलील होनी याहिये ! अपने इलाज या किसी निज्ज मक्सद के लिये भी तो वोड ता’वीज इस्ति’माल कर सकती हैं. बिलइर्ज वोड जदू ही का ता’वीज साबित हो जाअे तब भी इस का क्या सुभूत है के आप को नुक्सान पडोंयाने ही के लिये वोड लाई थीं. येड शैतानी ह-र-कत भी हो सकती है के कोई शरीर जिनन घर में इसाद करवाने के लिये तकिये के नीचे या जेब में ता’वीज डाल दे !

मुंड की बढबू के बा वुजूद शराबी न कडा जाअे : डुज्जतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِيَّ के इरमान का फुदासा है : किसी शप्स के मुंड से शराब की बू आती हो इस बिना पर उस पर हड लगानी ज़ाईज नहीं क्यूंके हो सकता है इस ने शराब से डुल्ली की हो, फुद न पी हो किसी ने जबर दस्ती



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (महाजिज)

पीने पर मजबूर कर दिया हो. लिहाजा इस मुसल्मान पर (सिर्फ़ मुंह की बढबू के सबब) बढ गुमानी न की जाओ (या'नी इस को शराबी करार न दिया जाओ)

(احياء العلوم ج ۳ ص ۱۸۶)

शर-ई सुभूत किसे कहते हैं : शर-ई सुभूत की यहाँ सूरत येह है के या तो जिस पर ईल्जाम है वोह भुद ब होशो हवास ईकरार करे के मैं ने जादू करवाया है, अगर वोह ईन्कार करे तो दो मर्द मुसल्मान या अक मुसल्मान मर्द और दो मुसल्मान औरतें गवाही दें के हम ने इस को जादू करते हुअे अपनी आंभों से देखा है. अगर मजकूर शर-ई गवाह नहीं ला सकते तो जिस पर ईल्जाम है अगर वोह कसम भा ले के मैं ने जादू नहीं करवाया तो उस को सख्या मानना जरूरी है.

तूने योरी की : देणिये ! शैतान के उकसाने पर बहू वगैरा पर जादू का ईल्जाम लगाने और पूछगछ के दौरान उस के ईन्कार पर हरगिज येह बात ज़बान पर न लाईये के येह इंस गई तो अब इस ने ईन्कार करना ही है और आदमी ईज़्जत बयाने के लिये तो जूटी कसम भी भा लेता है इस लिये येह भी जूटी कसम भा रही है. भुदारा अक मुसल्मान की ईज़्जत की अहम्मियत को समजने की कोशिश कीजिये. आप की ईब्रत के लिये अक ईमान अफ़रोज हदीस शरीफ़ अर्ज करता हूं : युनान्थे हज़रते सय्यिदुना अबू हुदैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फَرَمَاتے हैं : **अल्लाह के महुबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने आलीशान है : हज़रते इसा इब्ने मरयम ने अक शप्स को योरी करते देखा तो उस से फरमाया : “तूने योरी की.” वोह बोला : “हरगिज नहीं उस की कसम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं.” तो हज़रते इसा ने फरमाया : मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मैं ने अपने को आप जुटलाया.

(صحيح مسلم ص ۱۲۸۸ حديث ۲۳۶۸)

....के मेरी आंभों ने देभने में ग-लती की : अल्लाहु अकबर ! देखा आप ने ! हज़रते सय्यिदुना इसा इहुल्लाह وَالسَّلَامُ وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने कसम भा लेने वाले के साथ कितना अजीम भरताव किया. मुफ़रिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर रोजे जमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा. (अबुअल)

यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ उस कसम भाने वाले को छोड देने के मु-तअद्विक हजरते सय्यिदुना ईसा رَحْمَةُ الْخَنَّانِ उल्लाल وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के जज्बात की अक्कासी करते हुअे तहरीर इरमाते हैं : या'नी इस कसम की वजह से तुजे सय्या समजता हूं के मोमिन बन्दा अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) की जूटी कसम नहीं आ सकता, (क्यूं के) उस के दिल में अल्लाह के नाम की ता'जीम होती है, अपने मु-तअद्विक गलत इहमी का जयाल कर लेता हूं के मेरी आंभों ने देभने में ग-लती की. (मिरआत, जि. 6, स. 663) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रडमत हो और उन के सटके हमारी मग़ि़रत हो. أُمِّينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأُمِّينَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तौबा और मुआझी का तरीका : उम्मीद है मस्अला समज में आ गया होगा, औसे मवाकेअ पर सभ्र करना याहिये वरना बह गुमानियों, गीबतों और तोहमतों वगैरा गुनाहों से भयना दुश्वार हो जाता है. अब अगर किसी ने इस तरह की भता की है के बिगैर सुभूते शर-ई ज़ाहू का इल्जाम लगा बैठा है तो वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में गिडगिडा कर तौबा करे और तौबा के तकाजे भी पूरे करे नीज जिस पर इल्जाम लगाया म-सलन त्वात्मी या बहू वगैरा तो उन से मुआझ भी करवाअे. रस्मी तौर पर सिर्फ SORRY कल देना काफ़ी नहीं बल्के जिस घडल्ले (या'नी बेबाकी और धूम घडक्के) से उस की बहनामी और दिल आजारी की है उसी की मुना-सभत से जूब आजिजी कर के, गिडगिडा कर और हाथ जोड कर उस से इस कदर मुआझी मांगे के उस का दिल मुत्मईन हो जाअे और वोह मुआझ कर दे नीज जिन जिन को येह बात बताई हो उन के सामने भी कलना पडेगा के मैं ने जूटा इल्जाम लगाया था. वाकेई यहां नइस मुआझी मांगने से इन्कार ही करेगा. अब बन्दे पर है के मुआझी मांग कर दुन्यवी तौर पर अपने नइस की मा'मूली सी जिल्लत इप्तिवार करे या आभिरत की दईनाक रुस्वाई और डोलनाक सजा. देभिये ! शैतान तरह तरह के हीले बहाने सुजाअेगा, वस्वसे दिलाअेगा के म-सलन यूं तो येह सर यठ जाअेगी, इस का दिल जुल जाअेगा, हम पर कब्जा जमा लेगी, हमारी बहनामी हो जाअेगी वगैरा. आप ईन शैतानी जयालों की तरइ न जाईये, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिजा के लिये हुकमे शरीअत पर अमल कीजिये إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ इस की ब-र-कत जुद ही देभ लेंगे.



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابوعلى)

यहां तक के जुदा न ज्वास्ता वोह वाकेई मुजरिमा हुई तब भी आप की जुश अज्लाकी और आजिगी की ब-र-कत से **إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** आप की पैर ज्वाह बन जायेगी.

ड्राईवर की जान बय गई : बाबुल मदीना (कराची) के अलाका नयाआबाद की ओक ईस्लामी बहन के हक्किया बयान का जुलासा है के मेरे ओक भाई जो के अरब शरीफ के शहर “रियाज” में ब हैसियते ड्राईवर मुला-जमत कर रहे हैं. ओक दिन ड्राईविंग के दौरान अतरनाक हादिसा हुवा और वोह बेहोश हो गये. हिमागी योटें ईतनी जियादा थीं के बयने की उम्मीद न रही. हम लोग मजबूर थे उन को देखने भी न जा सकते थे. **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक हा’वते ईस्लामी के ईस्लामी बहनों के हफ्तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में शिकत किया करती थी. मैं ने भाईजान वाली परेशानी अपने अलाके की ओक ईस्लामी बहन को बताई. उन्होंने ने मुझे दिवासा दिया और भश्वरा दिया के ईसी तरह पाबन्दी से ईजतिमाअ में शिकत कर के पूज हुआ किया करो. युनान्हे मैं ने औसा ही किया **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ईजतिमाअ में की जाने वाली हुआओं की ब-र-कत से तीन माह के अन्दर अन्दर भाईजान ने बातचीत शुरूअ कर दी. डॉक्टर भी हैरान रह गये क्यूंके हिमागी योटें बहुत जियादा थीं और ब जाहिर बयने की उम्मीद बहुत कम थी. **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ईजतिमाआत की ब-र-कत पर मेरी अकीदत और जियादा मजबूत हुई.

औ ईस्लामी बहनो कभी छोडना मत मसाईब को देगा भगा म-दनी माहोल
तू पर्टे के साथ ईजतिमाआत में आ तेरी देगा बिगडी बना म-दनी माहोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में रहमतों का नुजूल होता है : **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में मांगी जाने वाली हुआओं जरूर रंग लाती हैं, क्यूंके वहां अल्लाह व रसूल **عَزَّوَجَلَّ** का ठिक होता है. उजरते सय्यिहुना ईमाम सुफ़यान बिन उयैना **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फरमाते हैं : **عَنْدَ نِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزُلُ الرَّحْمَةُ** : हैं नेक लोगों के



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है. (ग़रान)

ज़िक्र के वक्त रहमते धवाही उतरती है. (حَلِيَّةُ الْأَوْلِيَاءِ ج ٧ ص ٣٣٥ رقم ١٠٧٥٠) जब नेक बन्दों के तज़क़िरों पर रहमतों का नुज़ूल होता है तो जहां अल्लाह व रसूल का ज़िक्र भैर होगा वहां रहमतें क्यूं नाज़िल न होंगी और जहां छमाछम रहमतें बरस रही हों वहां दुआओं क्यूं क़बूल न होंगी. हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा और हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं के हम दोनों महबूबे रब्बे जुल ज़लाल, साहिबे जूदो नवाल, शहन्शाहे फ़ुश भिसाल, सुल्ताने शीरीं मकाल, पैकरे हुस्नो ज़माल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में छाज़िर थे के रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : जो कौम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये बैठती है इरिशते उन्हें घेर लेते हैं और रहमत उन्हें ढांप लेती है और उन पर सकीना नाज़िल होता है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने इरिशतों के सामने उन का ज़िक्र इरमाता है. (صَحِيح مُسْلِم ص ١٤٤٨ حديث ٢٧٠٠) मिरमात ज़िल्द 3 सईहा 305 पर है : सकीना से मुराद या तो फ़ास मलाअेका हैं या दिल् का नूर या दिल्ी यैन व सुकून है.

ज़िक्र किसे कहते हैं ? : “अल्लाह हूँ और हक हूँ” की ज़र्बे लगाना बेशक ज़िक्र है. ताहम तिलावते कुरआन, हम्दो सना, मुनाज़ात व दुआ, दुर्रदो सलाम, ना'त व मन्क़बत, फ़ुत्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वगैरा भी “ज़िक्रुल्लाह” में शामिल हैं. यकीनन दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआत भी ज़िक्र के हल्के हैं.

सारे आलम को है तेरी ही ज़ुस्त-जू ज़िन्नो ईन्सो मलक को तेरी आरज़ू
याद में तेरी हर अक है सू असू बन में वडशी लगाते हैं ज़र्बाते हू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमत नाजिल फरमाता है. (طبرانی)

पूरी कौम की गीबत का मस्अला : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 173 पर है : किसी बस्ती या शहर वालों की बुराई की, म-सलन येह कहा के वहां के लोग जैसे हैं, येह गीबत नहीं क्यूंके जैसे कलाम का येह मक्सद नहीं होता के वहां के सब ही लोग जैसे हैं बल्के बा'ज लोग मुराद होते हैं और जिन बा'ज को कहा गया वोह मा'लूम (या'नी PARTICULAR) नहीं, गीबत इस सूरत में होती है जब मुअय्यन व मा'लूम (या'नी जो पहचाने जा सकें जैसे) अशपास की बुराई जिक्र की जाये और अगर इस का मक्सूद वहां के तमाम लोगों की बुराई करना है तो येह गीबत है. (تَرْمِذِي ج ٩ ص ٦٧٤)

लंगडे की नक्काली : किसी लंगडे की नक्काली में लंगडा कर यलना नीज किसी मप्सूस मुसल्मान की किसी भी पामी की नकल उतारना गीबत है बल्के येह जभान से गीबत करने से भी जियादा बुरा है. क्यूंके नकल करने में पूरी तस्वीर कशी और बात को समजाना पाया जाता है जब के कलने में वोह बात नहीं होती.

नाम लिये बिगैर गीबत करना : नाम लिये बिगैर गीबत करना गुनाह नहीं, हां अगर नाम तो न लिया मगर जिस को कल रहा है वोह समज रहा है के किस के बारे में बात हो रही है तो अब गीबत है.

मुंह पर भी कल सकता हूं ! : गीबत करने वाले का येह समजना या कलना के मैं उस के मुंह पर भी कल सकता हूं, इस को गीबत के गुनाह से नहीं बचा सकता क्यूंके गीबत के हराम होने की अस्ल वजह ईजाअे मुस्लिम है और मुंह पर कलने से उस का दिल जियादा दुभेगा तो येह और भी बडा गुनाह हुवा. जिस की बुराई की गई वोह हंसने लगा इस का मत्वब हरगिज येह नहीं के वोह अपनी बुराई सुन कर जूम उठा है, फ़िरतन आम आदमी अपनी ता'रीफ़ सुन कर ही ખुश होता है अपनी मजम्मत सुन कर कोई ખुश नहीं होता लिहाजा अपनी मजम्मत सुन कर हंसना येह “भिस्यानी हंसी” होती है के आदमी मुरुव्वत में या अपनी जेंप मिटाने के लिये जैसे मौकअ पर हंसता है हावां के अन्दरूनी तौर पर उस का दिल जल रहा होता है.



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

बन्द अल्फ़ाज में गीबत : ता'रीज या'नी बन्द अल्फ़ाज में भी गीबत हो सकती है म-सलन किसी की बुराई का तज़क़िरा हुवा तो कहा : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं "ऐसा" नहीं हूँ, येह गीबत है क्यूंके येह भी बुराई करने का ही अेक अन्दाज है इस का साफ़ मत्वब येही हुवा के वोह "ऐसा" है.

कुछ कहुंगा तो गीबत हो जायेगी : किसी मुसल्मान के बारे में बात यली तो कहा : "छोडो यार ! मैं उस को जानता हूँ, अगर कुछ कहुंगा तो गीबत हो जायेगी." ऐसा कहने वाला गीबत कर युका के उस ने इस अन्दाज में उस की बुराई कर डाली !

इसी तरह की गीबत पर मब्नी मज़ीद 14 ज़ुम्ले ❀ बस ज़ अल्लाह मुआफ़ करे, उस के बारे में आप को क्या बताओं ❀ बस भाई क्या कहुं उस के लिये तो हुआ ही की जा सकती है ❀ यार ! उस को समजाना अपने बस की बात नहीं, जब उस की सूई अटकती है तो फिर किसी की नहीं सुनता ❀ आज कल उस की घूमी हुई है ❀ लमई ! मैं तो इस से बाज आया मेरी सुनता ही कब है ❀ जब मत्वब होता है तो "हां ज़ हां ज़" करता है इस के बा'द लिफ़्ट भी नहीं कराता ❀ अख़ा ! अख़ा ! दरवाजे पर हूलां भडा हुवा है इस का कोई मत्वब पडा होगा ❀ उस से जान छुडाने की बडी कोशिश की मगर वोह तो बिल्कुल ही "चिपक" गया था ❀ मैं ने तो उसे टालने की बहुत कोशिश की मगर टस से मस नहीं हुवा ❀ यार ! वोह कहां किसी को घास डालता है ❀ उफ़ ! वोह मन्हुस कहां आ गया ! ❀ वोह तो नादान दोस्त निकला ❀ उस का काम नहीं वोह तो "सीधा आदमी" है (उमूमन "सीधा आदमी" कह कर बे वुकूफ़ या नादान या कम अकल मुराद लेते हैं) ❀ कैसा भीठा भीठा बन रहा था !

अैब पोशी के लिये जूट ज़ाईज होने की अेक सूरत : गीबत में अेक बहुत बडी आइत येह भी है के जब "अेक इर्द" की गीबत दूसरे के सामने की जाती है तो बा'ज अवकात वोह "अेक इर्द" दूसरे की नज़र से गिर जाता है और शरीअत को येह कत्अन ना गवार है के अेक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर रोजे ज़ुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

मजबूरी के अपने आप को अपुशी ज़िल्लत पर पेश करे वोह हम में से नहीं है.

(الْمُعْتَمِرُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ١٤٧ حديث ٤٧١)

मुजे नारे द्योअप से डर लग रहा है ह्यो मुज ना तुवां पर करम या एलाही
सदा के लिये ह्यो ज़ाजी पुदाया ह्येशा ह्यो लुफ़ो करम या एलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُوا اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुआ के लिये दर-प्वास्त देने का तरीका : आ'ज लोग ज़ब किसी को दुआ के लिये मक़तूबात या रुक़्आत बिजवाते हैं, तो उन में **مَعَاذَ اللَّهِ** ! अपनी गन्दी ह-रकात के एन्किशाफ़ात करते बढके अपनी मां बहनों तक के लिये हया सोज भातें लिखने से बाज नहीं रहते ! म-सलन मेरी मां या बहन या बेटी या बहू या बीवी के पराअे आदमी से ना ज़ाएज तअव्लुकात हैं. हद तो येह है के एस्लामी बहनें ली अेहतियात नहीं करतीं, उन को एस अम्र का कत्अन अेहसास ही नहीं होता के हमारी तहरीर न जाने कौन कौन पढता होगा और उस पढने वाले को कैसे कैसे वसाविस आते होंगे. कोए लिखती है : मेरा शोहर या बाप कमाता नहीं बस सारा दिन घर में पडा रहता है और घर में जगडे करता रहता है, सास या नन्द जुल्म करती है, मेरा भाए जूआरी है, मेरी बहन किसी के साथ भाग गए है, मेरा भाए किसी लडकी के यक्कर में है, मेरा बेटा शराब पीता है, मेरी बेटी फ़ेशन कर के बे पर्दा घूमती है वगैरा. दुआ का कहने के लिये येह तफ़सीलात बयान करने के बज्जअे मुब्हम (या'नी बन्द) अह्फ़ाज में भात करनी मुनासिब है म-सलन बेटा या भाए या शोहर शराब या जूअे की बुराए में मुब्तला है तो एन बुराए और बुराए करने वाले की निशान देही किये बिगैर एन अह्फ़ाज में दुआ करवा सकते हैं : "मेरे अेक करीबी अजीज आ'ज बुरी



इरमाने मुस्तफा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुऱा पर दुऱुद शरीफ़ पढो अद्वालाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा. (अनसुर)

आदतों में गिरिफ़्तार हैं उन की इस्लाह के लिये हुआ कर दीजिये” यूँही बहन या बेटी भाग गई या किसी लउके के यक्कर में पउ गई तो इन अद्वाला में हुआ की दर-प्वास्त की जा सकती है : “मेरी अक रिश्तेदार किसी ना काबिले बयान बुराई में पउ गई है उस के लिये हुआ कर दीजिये.” इन अद्वाला से हुआ करवाने में फ़ाअेदा येह है के यूँके इर्द **मुअय्यन** (या'नी PARTICULAR) न हुवा लिहाजा गीबत का इम्कान अस्लन (या'नी बिदकुल ही) अत्म हो गया. दूसरी बात येह के मप्सूस बुराई और भिलाई हया अद्वाला के बयान से भी बयत हो गई. हां अगर किसी ने हुआ करवाने की नियत से अपनी या किसी मप्सूस इर्द की आमी या औब किसी के आगे बयान कर दिया तो येह गुनाह **भरी गीबत** नहीं, गुनाह **भरी गीबत** उसी सूरत में होगी जब के किसी **मुअय्यन** व मा'लूम इर्द की आमी मइज उस की बुराई करने की नियत से बयान की जाये.

तबीब को उयूब बयान करने का तरीका : तबीब या आमिल को ब नियते हुसूले इलाज उयूब बताने में हरज नहीं. अलबत्ता इर्दे **मुअय्यन** का तजकिरा किये बिगैर काम चल जाता हो तो यला लीजिये म-सलन “मेरा बेटा शराब पीता है” कइने के बजाये यूं कइ दीजिये के “मेरा अक रिश्तेदार शराब पीता है” अगर नाम वगैरा बताना जरूरी हो या भुद अपनी ही आभियां बयान किये बिगैर यारा न हो तो येह अहतियात जरूरी है के उस तबीब या आमिल ही को बताया जाये बिला हाजत कोई भी दूसरा इर्द वोह बातें सुनने या जानने न पाये. अडे डॉक्टर उमूमन अपने कमरे में अलग बुला कर मरीज से अहवाल सुनते हैं मगर न जाने क्यूं इन की अक्सरियत उस मौकअ पर तआवुन के लिये बे पर्दा औरत साथ रहने का गुनाह करती है ! यन्द बार मुजे जब औसा इत्तिफ़ाक हुवा है तो राजदारी की गुफ़्त-गू न होने के बा वुजूद निगाहों की डिफ़ाजत की आतिर दर-प्वास्त कर के औरत को कमरे से बाहर भिजवा दिया है. हर अक को हुकमे शरीअत पर अमल करना चाहिये.

इहानी इलाज के अस्ते पर राजदारी का तरीका

सुवाल : दा'वते इस्लामी की “मजलिस” की तरफ़ से मुल्क व बैरने मुल्क इहानी इलाज के बे शुमार अस्ते लगाये जाते हैं, हुपियारे लोग कितार लगा कर,



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भा. १)

अपने मसा'ल बता कर ई सबीलिल्लाह 'लाज हासिल करते हैं, 'न में यकीनन राज की बातें भी होती हैं, हर अक को अलग से वक्त देना हमारे बस का रोग नहीं कोई हल बता दीजिये.

जवाब : इहानी 'लाज के जरीअे शह-शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दुबियारी उम्मत की भिदमत बेशक अहुत बडी सआदत है मगर 'स म-दनी काम और हर हर अमल को गुनाहों से पाक साफ़ रफना जरूरी है. हरगिज येह नहीं होना चाहिये के अक मुस्तहब काम के लिये مَعَاذَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ गुनाहों तरे हराम और जहन्नम में ले जाने वाले काम होते रहें. लोगों तक आवाज न पछोंये 'स के लिये कोई हिकमते अ-मली 'प्तियार करना जरूरी है म-सलन अस्ते के सामने 'तने फ़ासिले पर कोई रुकावट रफ दी जाये जहां तक आवाज न जा सके, जिस की बारी हो उसी को करीब बुलाया जाये, परेशानियां सुनने के लिये सिर्फ़ अक इर्द हो जो के फौक़े फुदा كَرَّوْكَرَّ का हा मिल और मुसल्मानों के राजों का अमीन हो, बिला 'ज्जते शर-' 'स का कोई मुआविन हरगिज करीब न रहे. नीज द'र्जे जैल मजमून का बेनर या बोर्ड बनवा कर उत्तल 'म्कान अस्ते के अैन 'ीपर की जानिब 'स तरह लगा दिया जाये के कितार में मौजूद हर इर्द ब आसानी पढ सके नीज वक्तन इ वक्तन 'स मजमून का अ'लान भी किया जाता रहे. मजमून येह है :

कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जायेगा : लोगों को ब ग-रजे 'लाज मजबूरन राज भी बताने पडते हैं लिहाजा अस्ते पर होने वाली गुफ्त-गू को सुनने से दूसरा आदमी अपने आप को बचाये, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने 'भ्रत निशान है : जो शप्स किसी कौम की बातें कान लगा कर सुने हावां के वोह 'स बात को ना पसन्द करते हों या 'स बात को छुपाना चाहते हों तो कियामत के दिन 'स के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जायेगा. (صحيح بخاری ج ٤ ص ٤٢٣ ح ٤٢٠٤)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़्ती अहमद यार फ़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ मजकूर हदीसे पाक के तहत इरमाते हैं : या'नी जो दूसरों की फुफ़या बात छुप कर सुने 'स के कान में कियामत के दिन सीसा गर्म कर के 'डेला जायेगा. हदीस बिदकुल



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर ओक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये ओक कीरात अज्ज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अज़ाज़)

जाहिर पर है, इस में किसी तावील की जरूरत नहीं, वाकेई उसे क्रियामत में येह अजाब होगा के येह भी राजो नियाज का योर है. (मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 6, स. 203) (हदीसे पाक की शर्ह बोर्ड या बेनर में न उलवाओं के मजमून काई तवील हो जायेगा, हां हेन्ड बिल वगैरा में शामिल करने में मुजा-यका नहीं)

डॉक्टरों और आमिलों वगैरा के लिये

सुवाल : दूसरों की मौजू-दगी में डॉक्टरों, हकीमों, आमिलों, समाज कारकुनों और सियासी रहनुमाओं को भी जरूरतन अपने राज बताने पडते हैं, इस सिक्सिले में भी कुछ म-दनी कूल दे दीजिये.

जवाब : हर मुसल्मान को याहिये के भुद भी गुनाहों और उन के अस्बाब से बये और अपनी मकदूर तर दूसरों को भी बयाये लिहाजा इन साहिबान को भी ऐसी हिक्मते अ-मली इप्तिहार करनी होगी के ओक का औब दूसरा न सुन पाये. येह हजरात भी अगर मुनासिब भयाल इरमाओं तो अपने यहां मजकूरा बोर्ड या बेनर लगवा लें और उस में लइज "बस्ते पर" की जगह अपनी जरूरत के अल्फाज म-सलन "पीर साहिब से" "बाबा ज से" "डॉक्टर साहिब से" "हकीम साहिब से" वगैरा की तरकीब इरमा लें.

गीबतों से बयूं, युग्लियों से बयूं हो निगाहें करम, ताजदारें हरम
भद कलामी न हो, यावह गोई न हो भोलूं में कम से कम, ताजदारें हरम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत की 12 जाईज सूरतें : ① भद मजहब की भद अकी-दगी का बयान ② जिस की बुराई से नुक्सान पहांयने का भदशा हो तो दूसरों को उस से बयाने के लिये ब क-दरे जरूरत सिई उसी बुराई का तजकिरा म-सलन जो ताजिर धोके से मिलावट वाला माल बेयता हो उस से मुसल्मानों को बयाने के लिये उस के उस नाकिस माल की निशान देही करना. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : क्या इजिर के जिक् से बयते हो उस को लोग कब पहचानेंगे ! इजिर का जिक् उस यीज के



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ.इ.)

साथ करो जो उस में है ताके लोग उस से बयें. (السُّنَنُ الْكُبْرَى ج ١٠ ص ٣٥٤ حديث ٢٠٩١٤)

﴿3﴾ म-सलन कारोबारी, शिराकत दारी या शादी वगैरा के लिये मश्वरा मांगने पर जिस के बारे में मश्वरा मांगा गया है उस के अगर जैसे उयूब मा'लूम हैं जिस से नुकसान पड़ोय सकता है तो ज़रतन सिर्फ़ वोही उयूब बताना ﴿4﴾ काज़ी (या पोलीस) से ईन्साफ़ के हुसूल के लिये इरियाद करते वक्त के हुलां ने थोरी की, जुल्म किया वगैरा

﴿5﴾ जो ईस्लाह कर सकता हो उस से सिर्फ़ ईस्लाह की निव्यत से शिकायत की जा सकती है म-सलन मुरीद की पीर से, बेटे की बाप से, बीवी की शोहर से, रिआया की बादशाह से, शागिर्द की उस्ताज़ से शिकायत की जा सकती है ﴿6﴾ इतवा लेने के लिये नाम ले कर बुराई बयान कर सकता है मगर बेहतर येह है के मुफ़्ती से भी ईशारतन या'नी जैद बक में दरयाफ़्त करे. (बहारे शरीअत, डिस्सा : 16, स. 177, 178, मुलफ़्फ़सन)

﴿7﴾ पडयान के लिये ज़रतन गूंगा बहारा वगैरा कडना : किसी के जिस्मानी औब म-सलन अन्धा, मोटा वगैरा सिर्फ़ पडयान के लिये कडना जब के वोह ईस अलामत से मा'रुफ़ (या'नी पडयाना जता) हो अगर बिगैर औब आहिर किये भी पडयान हो सकती है तो बेहतर येह है के नाम के साथ औब का तज़क़िरा न करे. म-सलन जैद मोटा है मगर नाम मअ वलदिय्यत बताने या किसी और अलामत से तरकीब बन सकती है तो अब मोटा कडने से बये. युनान्ये “रियाज़ुस्सालिहीन” में है : म-सलन कोई शप्स आ'रज (लंगडे) असम (बहरे), आ'मा (अन्धे), अह्वल (भेंगे) के लकब से मशहूर है तो उस की मा'रिफ़त व शनाप्त (या'नी पडयान) के लिये ईन औसाफ़ व अलामात के साथ ज़िक़ करना ज़रतन है मगर तन्कीस (या'नी ज़ामी बयान करने) के ईरादे से ईन औसाफ़ के साथ तज़क़िरा ज़रतन नहीं. अगर (ज़ामी बरे) लकब के बिगैर पडयान हो सकती हो तो बेहतर येह है के लकब बयान न करे.

(رِيَاضُ الصَّالِحِينَ لِلنُّوَيْ ص ٤٠٤) दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक़-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-इहात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” डिस्सा 16 सइहा 178 पर है : आ'ज़ मर्तबा महुज़ पडयानने के लिये किसी को अन्धा या काना या ठिगना या लम्बा कडा जता है, येह गीबत में दाख़िल नहीं.



इरमाने मुस्तफा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरहे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमते बेजता है. (५)

शे पुल्लम पुल्ला बुराई करता हो उस की गीबत : ﴿८﴾ पुल्लम पुल्ला लोगो से माल छीन लेने, अलल अे'लान शराब पीने, दाढी मुंडाने या अेक मुक्री से घटाने वगैरा वगैरा अलानिया गुनाह करने वाले के जिन को एन गुनाहो के मुआ-मले में लोगो से हया न रही हो उन की सिर्फ उन बातों का तजकिरा करना ﴿९﴾ जालिम हाकिम के उन मजालिम का बयान करना भी ज़रूरी है शे पुल्लम पुल्ला करता हो, हां जालिम भी शे बुरा अमल घुप कर करता हो उस का बयान गीबत है. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 177 पर है : शे शप्स अलानिया बुरा काम करता है और उस को इस की कोई परवा नहीं के लोग उसे क्या कहेंगे, उस की उस बुरी ह-र-कत का बयान करना गीबत नहीं, मगर उस की दूसरी बातें शे ज़ाहिर नहीं हैं उन को जिक्र करना गीबत में दाखिल है. हदीस में है के जिस ने हया का डिजाब अपने येहरे से हटा दिया, उस की गीबत नहीं. (बहारे शरीअत) भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हज़रते अल्लामा सय्यिद मुर्तजा ज़बैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : याद रहे ! इस से (या'नी अलल अे'लान जुर्म करने वाले के उस जुर्म के तजक़िरे से) सिर्फ लोगो की भैर प्वाही मकसूद हो, हां जिस शप्स ने अपना गुस्सा (या लडास) निकालने या अपने नफ़स का एन्तिकाम लेने के लिये फ़ासिके मो'लिन की मज़ूम सिफ़ात को बयान किया वोह गुनाहगार है. (اتحاف السادة للزيدي ج ٩ ص ٣٣٢)

(10) बतौरे अफ़सोस किसी की बुराई बयान करना : किसी ने अपने मुसल्मान भाई की बुराई अफ़सोस के तौर पर (बयान) की के मुजे निहायत अफ़सोस है के वोह अैसे काम करता है येह गीबत नहीं, क्यूंके जिस की बुराई की अगर उसे ખबर भी हो गई तो इस सूरत में वोह बुरा न मानेगा, बुरा उस वक्त मानेगा जब उसे मा'लूम हो के इस कहने वाले का मकसूद ही बुराई करना है, मगर येह ज़रूर है के उस यीज़ का एजहार इस ने हसरत व अफ़सोस ही की वजह से किया हो वरना येह गीबत है बल्के अेक किस्म का निफ़ाक और रिया और अपनी मद्दह सराई (या'नी अपने मुंड अपनी ता'रीफ़) है, क्यूंके इस ने मुसल्मान भाई की बुराई बयान



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

की और ज़ाहिर येह किया के बुराई मक़सूद नहीं येह निज़ाक हुवा और लोगो पर येह ज़ाहिर किया के येह काम में अपने लिये और दूसरो के लिये बुरा जानता हूं येह रिया है और यूंके गीबत को गीबत के तौर पर नहीं किया, लिहाज़ा अपने को सु-लहा (नेक बन्दों) में से होना बताया येह तज़कियअे नफ़स और फुद सिताई (अपने मुंह अपनी तारीफ़) हुई. (अहारे शरीअत, ख़िस्सा : 16, स. 176, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000)

अतौरै अफ़सोस गीबत करने से बचने ही में आइय्यत है : हकीकत येही है के गीबत ज़ाहिर होने की अफ़सोस वाली सूरात में गीबत के गुनाह में ज़ा पडने का अतरा बहुत ज़ियादा है के आम आदमी के लिये “हकीकी अफ़सोस” और “अस्ल गीबत” में फ़र्क करना बेहद मुश्किल है युनान्चे हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़की رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (या'नी इल्मे क्लाम के माहिरिन उ-लमा) इरमाते हैं के किसी ऐसी चीज़ का ज़िक्र करना जिस से सामने वाले की तफ़्हीफ़ (या'नी तहकीर व तज़लील) होती हो येह उस वक्त गीबत होगी जब के इस से (उस की इज़्ज़त को) नुक़सान पड़ोयाने और बुराई बयान करने का इरादा करे और (हो) इस का उस (के अइब) को अफ़सोस के तौर पर ज़िक्र करना गीबत नहीं कहलायेगा. येह लिखने के बा'द हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़की رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मज़ीद इरमाते हैं के (इस ज़िम्न में) इमाम समर कन्दी رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي अपनी “तफ़सीर” में इरमाते हैं : मैं कहता हूं जो उन उ-लमाओ किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام ने बयान इरमाया है इस में अज़ीम अतरा है क्यूंके इस में (या'नी मैं तो अतौरै अफ़सोस गीबत कर रहा हूं मैं) इस बात का गुमान है के लोगो का इस तरह करना (या'नी अपने अयाल में अफ़सोस के लिये गीबत करता हूं समजना बे अहलतियाती की सूरात में) उन को उस बात



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (उंअ)

की तरफ़ ले जायेगा जो महुज़ (गुनाह भरी) गीबत है लिहाज़ा ईस का बिल्कुल तर्क कर देना (या'नी बतौरै अइसोस किसी की गीबत न करना) तक्वा के ज़ियादा करीब और ज़ियादा अहतियात पर मब्नी है. (تفسير روح البيان ج ٩ ص ٨٩) ﴿11﴾ उदीस के रावियों, मुकदमे के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जरह (या'नी ईन के उयूब को ज़ाहिर) करना (رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ج ٩ ص ٦٧٥) ﴿12﴾ मुरतद और काफ़िरे हर्बा की बुराई बयान करना (अब दुन्या में तमाम काफ़िर हर्बा हैं). येह बयान कर्दा तमाम सूरतें ब ज़ाहिर गीबत हैं और हकीकत में गुनाहों भरी गीबत नहीं और ईन उयूब का बयान करना ज़ाहिर है बल्के भा'ज सूरतों में वाजिब है.

सुबह डोती है शाम डोती है उम्र यूं ही तमाम डोती है

गीबतें युग्दियां है करवाती जब जहां बे लगाम डोती है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

काफ़िर और मुरतद की गीबत के अहकाम : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! “जिम्मी काफ़िर” की गीबत ना ज़ाहिर और “हर्बा काफ़िर” और मुरतद की ज़ाहिर है, आज कल दुन्या के तमाम यहूदी, क्रिस्थेन और हर काफ़िर “हर्बा” है. मगर पुराने दौर में जब के मुसल्मानों का ग-लबा था उस वक्त “जिम्मी काफ़िर” भी पाये जाते थे. उन को तकलीफ़ देना और उन की गीबत करना ना ज़ाहिर था जैसा के शाहे अबरार, उम गरीबों के गम प्वार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने नसीहत निशान है : “जिस ने किसी यहूदी या नसरानी को तकलीफ़ देह बात कही उस का ठिकाना ज़हन्नम है.” (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان حديث ٤٨٦٠ ج ٧ ص ١٩٣) जिम्मी काफ़िर उस मप्सूस काफ़िर को कहते हैं जो ईस्लामी हुकूमत को अपने तहफ़्फ़ुज के लिये जिज़्या (TAX) अदा करे. युनान्थे “तफ़्फ़ीरे नईमी” में है : जिज़्या या'नी वोड शर-ई महसूल (TAX) जो हुकूमत अहले किताब (यहूद व नसारा) से उन के ज़ान व माल की डिफ़ाजत



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (س)

के बढले वुसूल करे.

(तफ़सीरे नईमी, जि. 10, स. 254, मुलज्जसन)

दे गीबत से तोहमत से नफ़रत पुदाया

के बेशक है एन में हलाकत पुदाया

मेरी ज़ात से दिल् दुभे न किसी का

मिले मुज से सब को मुसरत पुदाया

बढ मज़हबों से हदीस व आयत न सुनी : हज़रते अल्लामा इमाम अबू बक़ मुहम्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِين की पिटमत में दो बढ अकीदा आदमी लाज़िर हुअे और कहने लगे : अै अबू बक़ ! हम आप को अेक हदीस सुनाते हैं. इरमाया : मैं नही सुनूंगा. दोनों ने कहा : अख़्ण यलिये कुरआने करीम की अेक आयत ही सुन लीजिये. इरमाया : नही सुनूंगा, तुम दोनों मेरे पास से यले ज़ाओ वरना मैं उठ कर यला ज़ाता हूं. आभिर वोह यले गअे तो बा'ज लोगों ने (हैरत से) अर्ज़ की : अै अबू बक़ ! आप अगर उन से हदीसे पाक या आयते कुरआनी सुन लेते तो इस में आभिर क्या हरज था ? इरमाया : मुजे येह षौफ़ लाहिक हुवा के येह लोग कुरआनो हदीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाअें और वोह मेरे दिल् में रह ज़ाअे (तो हलाक हो ज़ां इस लिये मैं ने उन से कुरआनो हदीस सुनना गवारा न किया).

(सुनन दारमी ज 1, स 120, रकम 397) इतावा र-जविथ्या, जि. 6, स. 106)

बढ अकीदा शप्स की गीबत : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस लिहायत में मशहूर ताबेइ बुज़ुर्ग इमामुल मुअब्बिरीन हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक़ मुहम्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِين ने दो शप्सों के बारे में येह ज़ो इरमाया है के “मुजे येह षौफ़ लाहिक हुवा के येह लोग कुरआनो हदीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाअें” येह ब ज़ाहिर बढ गुमानी व गीबत है मगर येह ज़ाहिर बढ गुमानी व गीबत है बल्के अैसी गीबत बाईसे सवाबे आभिरत होती है क्यूंके वोह दोनों बढ अकीदा थे लिहाज़ा आप ﷺ ने उन की बढ अकी-दगी का लोगों पर इजहार इरमा दिया. दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सइहात पर मुश्तमिल किताब, “बछारे शरीअत” हिससा 16 सइहा 175 ता 176 पर



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज़ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

सदरुशशरीअह, भदरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوِي इरमाते हैं : **भद अकीदा** लोगों का जरर (या'नी नुकसान) **इसिक** के जरर से बहुत ज़ाईद है, **इसिक** से जो जरर (या'नी नुकसान) पछोंयेगा वोह उस से बहुत कम है जो **भद अकीदा** लोगों से पछोंयता है. **इसिक** से अक्सर दुन्या का जरर (नुकसान) होता है और **भद मज़हब** से तो दीनो इमान की बरबादी का जरर (नुकसान) है और **भद मज़हब** अपनी **भद मज़हबी** इैलाने के लिये नमाज़ रोज़ा की ब जाहिर भूब पाबन्दी करते हैं, ताके इन का वकार लोगों में काईम हो इर जो गुमराही की बात करेंगे उन का पूरा असर होगा, लिहाज़ा ऐसों की **भद मज़हबी** का इजहार **इसिक** के इस्क के इजहार से ज़ियादा अहम है इस के बयान करने में इरगिज़ दरेग न करें. (बहारे शरीअत)

मन्हूस भद मज़हबों की बात सुननी ही नहीं है : मज़क़रा ख़िकायत से उन लोगों को भी दर्स हासिल करना चाहिये के जो येह समजते हैं के जो कोई भी कुरआनो इदीस बयान करे आंभें बन्द कर के उस से सुन लेना चाहिये अगर ऐसा होता तो मुसल्मानों के जलीलुल कद्र इमाम उजरते सय्यिदुना इमाम अबू बक़ मुहम्मद इब्ने **सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَسِين जैसे अजीम आलिमे दीन ने उन **भद अकीदा** आदमियों से कुरआनो इदीस को क्यूं नहीं सुना ! बस यूं समजो के उन्हीं ने न सुन कर गोया हम जैसे को समजाया है के मैं भी नहीं सुनता तुम भी मत सुनो ! हालां के आप **रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अ-रबी दान और जलीलुल कद्र आलिम व मुजतहिद थे, अगर वोह **भद अकीदा** लोग तावील करते तो पकडे भी जाते मगर इन **मन्हूस भद मज़हबों** से सुनना ही नहीं है के शैतान को बहकाते देर नहीं लगती. अगर आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** सुन लेते तो दूसरों के लिये दलील हो जाती और वोह सुन कर गुमराह होते. और हां आप ने उन को जो यले जाने का हुक़म इरमाया वोह कोई **भद अज्लाकी** नहीं थी बल्के ऐसा करना औन हुस्ने अज्लाक है. **अल्लाह व रसूल** ﷺ के दुश्मनों की खातिर तवाज़ोअ नहीं की जा सकती.

जो हें दुश्मन रसूल के उन को

हम ने दिल से निकाल रफ़्पा है



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोह बढे अप्त हो गया. (हिन)

बढे मज़्ज़ुलबी की बू : दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सईहात पर मुश्तमिल किताब, "मस्कुताते आ'ला हज़रत" (मुकम्मल) सईहा 302 पर है : हज़रते उ-मरे इरुके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाजे मगरिब पढ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाये थे के अक शप्स ने आवाज़ दी : कौन है के मुसाफ़िर को जाना दे ? अभीरुल मुअमिनीन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने जादिम से ईशाद इरमाया : ईसे हमराह ले आओ. वोह आया (तो) उसे जाना मंगा कर दिया. मुसाफ़िर ने जाना शुरुअ ही किया था के अक लइज़ उस की ज़बान से अइसा निकला जिस से "बढे मज़्ज़ुलबी की बू" आती थी, इरान जाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया.

(كَنْزُ الْقَمَالِ ج ١٠ ص ١١٧ رقم ٢٩٣٨٤)

इरिक्के हक्को बातिल ईमासुल हुदा

तेगे मस्लूले शिदत पे लाभों सलाम

बढे मज़्ज़ुलबों के पास बैठना कैसा ? : "मस्कुताते आ'ला हज़रत" (मुकम्मल) सईहा 277 से अर्ज़, ईशाद का ईक्तिबास मुला-हज़ा इरमाईये और अपनी आभिरत की बेहतरी की सूरत बनाईये.

अर्ज़ : अक्सर लोग बढे मज़्ज़ुलबों के पास जान बूज़ कर बैठते हैं. उन के लिये क्या हुक्म है ?

ईशाद : (बढे मज़्ज़ुलबों के पास बैठना) हराम है और बढे मज़्ज़ुलब हो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिये ज़हरे कातिल. रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضَلُّونَكُمْ وَلَا يَفْتِنُونَكُمْ : दूर करो और उन से दूर भागो वोह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वोह तुम्हें इतिने में न डालें.

(مَقْدَمُهُ صَحِيحُ مُسْلِمٍ حَدِيثُ ٧ ص ٩) और अपने नईस पर अ'तिमाद करने वाला बडे कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बडे जूटे) पर अ'तिमाद करता है, اِنِّهَا كَذَبٌ شَيْءٌ اِذَا حَلَفْتُ فَكَيْفَ اِذَا وَعَدْتُ, (नईस अगर कोई बात कसम जा कर कहे तो सब से बढे कर जूटा है न के ज़ब ज़ावी वा'दा करे) सहीह हदीस में इरमाया : जब दज्ज़ाल निकलेगा, कुध (अइराद) उसे तमाशे के तौर पर देखने जाओगे के हम तो अपने दीन पर मुस्तकीम (या'नी काईम)



फ़रमाने मुस्तफ़ी ﷺ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुंढ और दस भरतबा शाम दुरदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

हैं, हमें उस से क्या नुकसान होगा ? वहां जा कर वैसे ही हो जायेंगे.

(सुन्न अबुदाउदज ६ व १०७ अहदित ६३१९) उदीस में है नबी ﷺ ने फ़रमाया : जो जिस कौम से दोस्ती रभता है उस का हशर उसी के साथ होगा.

(अल्लुजुम अल्लासुतुल्लुब्रानि ज १९ अहदित ६६०)

अद्लाह उरमाता है :

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ

(७, ६, ५, ४, ३, २, १)

तर-ज-मअे कन्जुल धमान : तुम में से जो कोध

उन से दोस्ती रभेगा तो वोह उन्हीं में से है.

अेक अुजुगु अेक उरमाते हैं : اَلْاَعْدَاءُ ثَلَاثَةٌ عَدُوُّكَ وَعَدُوُّوَصِيْقِكَ وَصَدِيْقُ عَدُوِّكَ : (दुश्मन तीन हैं : अेक तेरा दुश्मन, अेक तेरे दोस्त का दुश्मन और अेक तेरे दुश्मन का दोस्त.) (अल्लुजुम अल्लासुतुल्लुब्रानि ज १९ अहदित ६६०)

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

गैर मुस्लिम का कबूले धस्लाम : भीठे भीठे धस्लामी भाधयो ! गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये द्वा'वते धस्लामी के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिख्यत के लिये म-दनी काङ्किलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सङ्गर कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी धन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माड की 10 तारीफ के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाधये. भूब हङ्गावार सुन्नतों भरे धजतिमाआत में शिर्कत कीजिये और द्वा'वते धस्लामी के हर दिल् अजीज म-दनी येनल के सिव्सिले देभिये. आप की तरगीब के लिये म-दनी येनल की अेक म-दनी बहार पेश की जाती है युनान्ये मर्कजुल औलिया (लाहोर) के अेक धस्लामी भाध का बयान कुध यूं है के हमारे अलाके में अेक वर्कशोप थी, उस में अेक T.V. भी रभा हुवा था जिस पर कारीगर मुप्तलिङ्ग येनल देभा करते थे. र-मजानुल मुबारक 1429 सि.हि. (2008)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مبارزات)

में जब दा'वते इस्लामी का म-दनी येनल शुरुअ हुआ तो उन्हें कुछ ऐसा भाया के हीगर तमाम येनल के बजाये अब वोह इकत म-दनी येनल देखने लगे. उन कारीगरों में अेक गैर मुस्लिम नौ जवान भी शामिल था वोह भी "म-दनी येनल" के पुरसोज सिक्सिलों (प्रोग्राम्ज) में दिलयस्पी लेने लगा. म-दनी येनल में इस्लाम का हकीकी नकशा देख कर वोह बेहद मु-तअस्सिर हुआ और الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तीन दिन के भा'द वोह कलिमा पढ कर मुसल्मान हो गया.

कुई के अैवां में मौला डाल दे येह जल्जला

या एलाही ! ता अबद ज़री रहे येह सिक्सिला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

25 गैर मुस्लिम कैदियों का कबूले इस्लाम : दा'वते इस्लामी के मुबद्लिगीन की मसाएये जमीला से वक्तन इ वक्तन कुईफ़ार की इस्लाम आ-वरी की ખબरें मिलती रहती हैं. युनान्ये अेक और इमान अफ़रोज बहार आप के गोश गुजार करता हूं : बरें आ'जम अफ़रीका के अेक मुल्क जम्बिया (zambia) के दारुल भिलाफ़ लुसाका (Lusaka) की कम्वाला (Kamwala) जेल में 2004 सि.ई. में दो भाई किसी गैर कानूनी काम के इल्जाम में कैद हो गये. वहां पर मुकीम यन्द इस्लामी भाई हर दूसरे दिन मुलाकात के लिये जाते. जाने के सामान के साथ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा म-दनी रसाएल भी तोहूइतन दे आते. भौके भुदा عَزَّوَجَلَّ व इशके मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मखू तहरीरें पढ कर दोनों भाइयों के दिलो दिमाग में म-दनी इन्किलाब बरपा होना शुरुअ हो गया. पन्ज वक्ता नमाज के साथ साथ उन्होंने ने तहज्जुद की पाबन्दी भी शुरुअ कर दी, म-दनी इन्आमात को अपने डीपर नाफ़िज करने का इरादा कर लिया और इैजाने सुन्नत से हर्स देना शुरुअ कर दिया.

हर्स की इब्तिदा में बताये जाने वाले दुर्रदे पाक के इजाएल सुन सुन कर हीगर मुसल्मान कैदी भी कसरत के साथ दुर्रदो सलाम पढने लगे. इस की उन्हें कुछ अैसी



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جئنا مكة على رؤسنا برؤس فاطمة بنت محمد ليلة السبت 12 ربيع الثاني سنة 610 هـ
की शक़ाअत कर्ज़गा. (क्रोआवाल)

ब-र-कतें नसीब हुंई के बहुत से कैदियों को जल्द रिहाई मिल गई. कुर्क़ार कैदी दुर्रहे पाक की ब-र-कतें जागती आंभों से देख कर बहुत मु-तअस्सिर होते. यूं आहिस्ता आहिस्ता वोह दीने ईस्लाम के करीब होते यले गये और مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ तीन से चार माह के कलील अर्से में 25 गैर मुस्लिम कैदी दौलते ईस्लाम से मुशर्रफ़ हो गये. उन में अेक पचास सालह पादरी भी शामिल था. उस का किस्सा यूं हूवा के उस ने कैद के दौरान ईस्लामी कुतुब का मुता-लआ शुरुअ किया तो अेक रात प्वाब में ईन्तिहाई भूब सूरत मस्जिद देपी लेकिन जब उस में दाभिल होने की कोशिश की तो दरवाजा बन्द हो गया. सुब्ह किसी ईस्लामी भाई के पास मस्जिदुन्न-बविथियशरीफ़ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का तुगरा देख कर बे साप्ता पुकार उठा के येह तो वोही मस्जिद है जो मैं ने प्वाब में देपी थी. दीने ईस्लाम के बारे में मा'लूमात हासिल कर के और ईस्लामी भाईयों का सहीह ईस्लामी नक़शा अपनी आंभों से देख कर वोह पादरी भी मुसल्मान हो गया और निख्यत की के कैद से आजाद हो कर अपने सारे भानदान को मुसल्मान होने की दा'वत पेश कर्ज़गा.

मक़बूल जहां त्तर में हो दा'वते ईस्लामी

सदका तुज़े अै रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“गीबत की तबाह कारियां” के सोलह दुर्रइ की निस्बत

से गीबत पर उभारने वाली 16 चीज़ों का बयान

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बहुत सारे अस्बाब अैसे हैं जिन की वजह से आदमी गीबत की आइत में मुत्तला हो जाता है इन में से 16 येह भी हैं :

﴿1﴾ गुस्सा ﴿2﴾ बुग़्जो कीना ﴿3﴾ हसद ﴿4﴾ गहरे दोस्त या घर के किसी अहम इर्द की डिमायत का जज़्बअे बे ज़ा ﴿5﴾ ज़ियादा बोलने की आदत ﴿6﴾ तन्ज़ करने



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो भेशक येह तुम्हारे लिये तहारेत
है. (ابوحنبل)

की ખસ્લત ﴿7﴾ હંસી મઝાક કી લત (ઐસા શખ્સ દૂસરોં કો હંસાને કે લિયે લોગોં કી નક્લેં ઉતાર કર ભી બસા અવકાત ગીબત મેં મુખ્તલા હો જાતા હૈ) ﴿8﴾ ઘરેલૂ ના ચાકિયાં (ઇન હાલાત મેં ગીબત સે બચના કરીબ બ ના મુશ્કિન હૈ, સુલહ કર લેને હી મેં દોનોં જહાં કી આફિયત હૈ) ﴿9﴾ રિશ્તેદારોં યા દોસ્તોં સે નારાઝિયાં ﴿10﴾ ગિલા શિક્વા કરને કી આદત (જહાં કિસી કે બારે મેં દૂસરે સે શિક્વા શુરૂઅ કિયા કે શૈતાન ને બદ ગુમાનિયોં, ઐબ દરિયોં, ગીબતોં, તોહમતોં ઓર ચુગ્લિયોં કા ઢેર લગવા દિયા !) ﴿11﴾ તકબ્બુર ﴿12﴾ વહમી તબીઅત ﴿13﴾ બે જા તન્કીદી ઝેહ્ન (તન્કીદે બે જા કા મરીઝ કિસી કી બરાહે રાસ્ત ઈસ્લાહ કરને કે બજાએ ઉમૂમન દૂસરોં કે આગે ગીબતેં કરતા ફિરતા હૈ કે વોહ યૂં કર રહા હૈ ફુલાં ઊં કર રહા હૈ ફુલાં કો યૂં નહીં બલ્કે યૂં કરના ચાહિયે થા) ﴿14﴾ ગીબત કી હલાકત સામાનિયોં ઓર ઈસ કે દીની વ દુન્યવી નુક્સાનોં સે ના વાકિફિયત ﴿15﴾ બે જા જઝ્બાતિયત ઓર “ભડાસ” નિકાલે બિગૈર સુકૂન ન મિલના ﴿16﴾ ખૌફે ખુદા ્રૂજલ્ કી કમી ઓર અઝાબે ઈલાહી ્રૂજલ્ સે અપને આપ કો ડરાતે રહને કી આદત ન હોના વગૈરા. બહર હાલ જો ગીબત કી આફાત સે ખુદ કો બચાને ઓર કબ્ર વ જહન્નમ કે અઝાબાત સે નજાત પાને કા આરઝૂ મન્દ હો ઉસે બચાન કદર્દ જુમ્લા અસ્બાબ ઓર ઈસ કે ઈલાવા ભી ગીબત પર ઉભારને વાલી તમામ અશ્યા કા ઈલાજ કરના ઓર ગીબત સે બચને કે તરીકે જાનના નિહાયત ઝરૂરી હૈ.

मिटा मेरे रन्जो अलम या इलाही अता कर मुझे अपना गम या इलाही

शराबे महब्बत कुछ ऐसी पिला दे कभी भी नशा हो न कम या इलाही

ગીબત સે બચને કા આસાન તરીન વિર્દ : હઝરતે અલ્લામા મજહુદીન ફીરોઝઆબાદી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ سے મન્કૂલ હૈ : જબ કિસી મજલિસ મેં (યા'ની લોગોં મેં) બૈઠો ઓર કહો : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ : તુમ પર એક ફિરિશ્તા મુકરર ફરમા દેગા જો તુમ કો ગીબત સે બાઝ રખેગા. ઓર જબ મજલિસ સે



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (मुरान)

उठो तो कडो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ तो फिरिश्ता लोगो को तुम्हारी गीबत करने से बाज रखेगा. (الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص २७४)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّدٍ

गीबत का ँजमाली (या'नी मुप्तसर) ँलाज : गीबत का ँजमाली या'नी मुप्तसर ँलाज येह है के ँस के अरबाब का जातिमा किया जाये. म-सलन गुस्सा भी ँस का अेक सभब है तो जब किसी पर गुस्सा आ जाये और उस की गीबत करने और अैब भोलने का जजबा पैदा हो तो झौरन गौर कीजिये के अगर मेरे ँस अमल पर अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ गजबनाक हो गया और उस ने मेरे उयूब भोल दिये तो मैं क्या करूंगा ! नीज अपने आप को यूं भी उराँये के अगर मैं गुस्से में आ कर गीबत करूंगा तो गुनाहगार और जहन्नम का हकदार करार पाउंगा के येह गुनाह के जरीअे गुस्सा ठन्डा करना हुवा और इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “जहन्नम में अेक दरवाजा है उस से वोही दाभिल होंगे जिन का गुस्सा किसी गुनाह के बा'द ही ठन्डा होता है.” (الْفَرْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخَطَّابِ ج १ ص २०० حديث १७८)

अहुत बडा सभब है लिहाजा ँस की तबाह कारियां जेहन में ला कर ँन के ँलाज की भी तरकीब कीजिये, और भुद को ँस वरद से उराँये जैसा के इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “शा'बान की पन्दरहवीं शब में अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों को रहमत की नजर से देखता और सब को बप्श देता है लेकिन मुशरिक और क्रीना परवर को नहीं बप्शा जाता.” (الاحسان بترتيب صحيح ابن جبان ج १ ص ४७० حديث ०२३६)

असद भी “गीबत” का अेक सभब है ँस का भी ँलाज कीजिये. अजरते सय्यिदुना अबुदरदह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : जो मौत को कसरत के साथ याद करे उस के असद और भुशी में कमी आ जायेगी. (مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ८ ص १६७ رقم ६)

अहुत बडा दरवाजा खुलता है, घर के नाराज अइराद म-सलन मां बाप, भाई अहन नीज दीगर रिश्तेदारों से सुलह कर लीजिये और आयन्दा भी हरगिज ँन से न भिगाडिये, वोह लाभ भिगाडें मगर आप उन के साथ हुस्ने सुलूक ही करते रहिये.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमत नाजिल इरमाता है. (طبرانی)

ईन दो इरामीने मुस्तफ़ा ﷺ के ज़रीअे अपना पूब जेहून बनाईये :

(1) “सब से अइजल स-दका वोह है जो कीना परवर रिश्तेदार को दिया जाअे.”

(أَلْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٢ ص ٢٧ حدیث ١٠١٠)

ईस की वजह येह है के कीना रअने वाले रिश्तेदार

को स-दका देने में स-दका भी है और क्त्अे रेहूमी करने (या'नी रिश्तेदारी तोउने)

वाले के साथ सिलअे रेहूमी (या'नी हुस्ने सुलूक) भी. (2) “रिश्ता काटने वाला जन्त

में नहीं जाअेगा.” (صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٣٨٣ حدیث ٢٠٥٦)

मज़ाक मस्भरी की आदत पर फुद पर

पाबन्दी लगा दीजिये, फामोशी और सन्जदगी की आदत बनाईये. जब गीबत

करने को ज़ याहे तो उस के हुन्यवी व उप्पवी नुकसानात पर गौर कीजिये, ईस के

अज़ाबात जैसा के मुर्दार का गोशत खाना, तांभे के नापुनों से अपना येहरा और

सीना छीलना, पडलूओं से काट काट कर गोशत खिलाया जाना वगैरा जेहून में

दोहराईये, नीज़ गीबत के सबभ होने वाली नेकियों की कमी, गुनाहों की ज़ियादती

और बुरे फातिमे के फौड़ से फुद को ठीकठाक उरा दीजिये. गीबत के ईजमाली (मुफ्तसर)

ईलाज की ईन यन्द सुतूर को काई मत समजिये, आगे आने वाला गीबत का

तइसीली ईलाज भी ज़रूर पढिये. हां ईस से शैतान आप को बहुत रोकैगा और पूब

सुस्ती दिलाअेगा मगर आप ईसे मुकम्मल पढ कर ईस मरदूह को ना मुराद कीजिये.

गीबत की तबाह कारियों और ईस पर मिलने वाले अज़ाबों का वक्तन इ वक्तन

मुता-लआ करते रहिये वरना तवज्जोह हट जाने की सूरत में गीबत पर दोबारा

दिलेर हो जाने का खतरा रहेगा.

अइव इरमा फताअे मेरी अे अइ शौको तौईक, नेकी का हे मुज को तू
जारी दिल कर के हर दम रहे जिके हू आदते भद भदल और कर नेक पू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बफिशश)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिसके पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्फूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

मियां बीवी के कबूले इस्लाम की इमान अइरोज म-दनी बहार : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सइर कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इक़े मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्भ करवाइये और दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में त्तरपूर छिस्सा लीजिये. **إِنَّمَا دَعَا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ** जहां इस्लामी त्तरा म-दनी कामों में मसइफ़ हें वहां इस्लामी बहनें त्तरा किसी तरह म-दनी कामों में पीछे नही, आइये पहले दुरइद शरीफ़ पढ लीजिये इर अेक म-दनी बहार सुनते हें युनान्ये सेन्ट्रल जेल सप्पर 2 (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की कैदी षातून के बयान का षुलासा कुछ इंस तरह है : मुसल्मान होने से पहले में गैर मुस्लिमा थी. हमारी "बेरिक" में अेक बा पदा इस्लामी बहन, कैदी षवातीन को कुरआने पाक की ता'लीम देने और सुन्नतें सिषाने के लिये आती थीं. उन का इस्लाम के सांये में ढला किरदार और येहरे से तकदुस के जलकते अन्वार देष कर मुजे उन में अज्जब कशिश मइसूस हुइ, उन्हे देष कर मुजे उजरते सय्यि-दतुना मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا याद आ जातीं. में ने जष उन से मुलाकात की तो उन्हों ने अपना तआरुइ कुछ यूं करवाया : मेरा तअल्लुक दा'वते इस्लामी से है, दा'वते इस्लामी तष्वीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक है, दा'वते इस्लामी ने हमें येह म-दनी मकसद अता इरमाया है के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगो की इस्लाह की कोशिश करनी है, **إِنَّمَا دَعَا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ**" इसी अजीम मकसद को पूरा करने की कोशिश के लिये दा'वते इस्लामी में मुप्तलिइ शो'बों में म-दनी काम करने के लिये जहां दीगर मजलिस काइम हें वहीं अेक मजलिस "इंजाने कुरआन" के नाम से त्तरा है जो दुन्या के मुप्तलिइ मुमालिक के जेलषाना जत में दा'वते इस्लामी का "म-दनी काम" करने की सअ्य में मसइफ़ है, में इसी मजलिस की इज्जत से यहां कैदी षवातीन की इस्लाह की कोशिश का जजबा ले कर आती हूं.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (१७)

अद्लाह करे मेरी कोशिशें बार आवर हों और यहां मौजूद ईस्लामी जहने नेक बन जाअें.

यहां जिस कदर हें जहनें सभी म-दनी बुरकअ पहनें

ईन्हें नेक तुम बनाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दा'वते ईस्लामी की उस मुबद्लिगा के अन्दाजे गुफ्त-गू ने मुजे अपना औसा

गिरवीदा कर लिया के मैं रोजाना उन की मुन्तजिर रहने लगी, जब वोह तशरीफ़ ले

आतीं तो मैं अपना जियादा वक्त उन के साथ ही गुजारने की कोशिश करती. उन का

पाकीजा किरदार देख कर सोचा करती के ईस्लाम अपने मानने वालों को ईफ़्त व

पारसाई का कैसा प्यारा दर्स देता है ! उन की सोहबत और ईन्किरादी कोशिश की

ब-र-कत से मेरे दिल में ईस्लाम की महबबत की शम्अ रोशन होने लगी, बिल

आभिर अेक रोज मैं ने मुसल्मान होने का अज़्मे मुसम्मम कर ही लिया. दूसरे दिन

जूं ही वोह मुबद्लिगा तशरीफ़ लाईं मैं ने वुफ़ूरे शौक में बे करार हो कर उन से कहा :

आप के आ'ला किरदार और पाकीजा गुफ्तार ने मुजे बहुत मु-तअस्सिर किया है.

ईस्लाम किस कदर प्यारा दीन है, मैं ने औसा तो कभी सोचा भी न था, मैं ईस की

रोशन ता'लीमात का खुली आंजों से मुशा-हदा कर चुकी हूं, ईस के बा'द जब मैं ने

मुसल्मान होने की ज्वाहिश का ईजहार किया तो उन्हों ने ખुश हो कर झौरन मुजे

तौबा करवा कर कलिमा पढा दिया : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

येह देख कर वहां मौजूद दीगर ईस्लामी जहनें अशकबार हो गईं और गले

लग कर मुजे मुसल्मान होने की मुबारक बाह देने लगीं. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने दा'वते

ईस्लामी के पाकीजा म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर ईस्लामी अहकामात पर

अमल की कोशिश शुरुअ कर दी और सिव्सिलअे कादिरिया र-जविया में दाभिल हो

कर सरकारे गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मुरीदनी बन गईं. ईस्लाम कबूल करने के

बा'द मैं ने अपने शोहर पर ईन्किरादी कोशिश शुरुअ कर दी. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दो माह

बा'द वोह भी जुमादल आभिरह 1427 सि.हि. में सायअे ईस्लाम में आ गअे.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अमाल)

अै इस्लामी बडनो तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का म-दनी माडोल
तुम्हें सु-नतों और पदों के अडकाम येड ता'लीम इरमाअेगा म-दनी माडोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल की ब-र-कत से आअे द्यिन
बुत परस्तों की इस्लाम आ-वरी की तरकीबें बनती रहती हैं, उन के लिये जैल के द्यो
सुवाल जवाब निडायत कार आमद हैं :

मुशरिका का शोडर मुसल्मान डो गया निकाड का क्या बना ?

सुवाल : अगर शोडर मुसल्मान डो गया और बीवी बुत परस्त है तो बीवी के साथ
निकाड बर करार रडया या टूट गया ?

जवाब : सदरुशशरीअड, बदरुतरीकड, डडरते अद्लामा मौलाना मुइती मुडम्मद
अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیٰ इरमाते हैं : औरत अगर मुशरिका
है तो मुसल्मान की औजियत में नहीं रह सकती. अद्लाड عَزَّوَجَلَّ इरमाता
है : لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ¹ तर-ज-मअे क-जुल इमान : न येड उन्हे डलाल
न वोड इन्हे डलाल. (अ-मत्तह. 1) शोडर के मुसल्मान डोने के बा'द काजी
औरत पर इस्लाम पेश करेगा अगर इस्लाम से इन्कार करे निकाड जता
रडेगा. और जडं काजी न हों जैसे आज कल हिन्दुस्तान, यडं औरत को
तीन डैज आने पर निकाड टूट जाअेगा. येड डुकम निकाड टूटने का है.
या'नी अगर तीन डैज गुजरने के बा'द औरत भी मुसल्मान डो गइ और
उसी शोडर के पास रहना याडती है तो जदीद निकाड की डरत डोगी के
अब वोड पहला निकाड जता रडया. रडया औरत से जिमाअ करना तो मर्द
के इस्लाम लाते डी (उस काइरा बीवी से) डराम डो गया.

(इतावा अमजदिय्या, जि. 4, स. 416)



इरमाने मुस्तफा ﷺ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्जरत है. (पृष्ठ ११)

रुकावट है. अलबत्ता मैं ट्रेष रखा हूं के आप लोग अेक जैसे लिबास में मल्बूस हैं, जब बस में बढे तो बुलन्द आवाज से अपने इस्लामी तरीके पर सलाम किया¹ और हेरत तो इस बात की है के आप हजरात के साथ शामिल नाबीना अफ़राद ने भी सकेद लिबास पहना और सर पर सज्ज इमामा बांधा हुवा है, इन सब के येहरो पर दाढी ली है.”

उस की इस्लाम की तरफ़ जुकाव वाली गुफ़्त-गू सुनने के बा'द अमीरे काइला ने बडे प्यार से उसे मुप्तसर तौर पर दा'वते इस्लामी और इस की मजलिस “मजलिसे भुसूसी इस्लामी भाई” का तआरुफ़ करवाया और बताया के येह मजलिस किस तरह गूंगे बहरो और नाबीनाओं में म-दनी काम करती है. फिर उस से कहा के “येह नाबीना इस्लामी भाई उन्ही बे अमल मुसल्मानों की इस्लाह के लिये निकले हैं जिन्हें ट्रेष कर आप इस्लाम कबूल करने से कतरा रहे हैं.” येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा के कलिमा पढ कर मुसल्मान हो गया.

आइये आशिकी मिल के तब्लीगे दी काफ़िरो को करे काइले में यलो
कुफ़ का सर जुके दी का उंका बजे ان شاء الله यले काइले में यलो

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

1. कुफ़र के अक्सरियती मुमालिक के जहां लारी ता'दाद में गैर मुस्लिम छोते हैं वहां अगर बस वगैरा में सलाम करे तो मुसल्मानों की नियत करे, इस्लामी मुमालिक जैसे पाकिस्तान वगैरा में बसों के अन्दर सलाम करने में मुसल्मानों की नियत की हाजत नहीं, अलबत्ता अगर मा'लूम है के बस में कुफ़र ली सुवार हैं तो अब सलाम करने में मुसल्मानों की नियत करे.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक हुइरद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्ज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

गीबत के तइसीली 10 ँलाज १लाज नम्बर 1

तन्हा रहे या अख्शी सोहबत ँप्तियार करे : दीनी भशगलों और दुन्या के जइरी कामों से इरागत के बा'द भल्वत या'नी तन्हाँ ँप्तियार कीजिये या सिर्फ़ अैसे सन्ज्हा और सुन्नतों के पाबन्द ँस्लामी भाँयों की सोहबत हासिल कीजिये जिन की भातें भौंके पुदा व ँशके मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में ँजाई का भाँस बनें और वोह वक्तन इ वक्तन जाहिरि बुराँयों और भातिनी बीभारियों की निशान देही करते और ँन का ँलाज तजवीज इरमाते हों. अख्शी सोहबत के मु-तअद्लिक दौ इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हजा इरमाते : (1) अख्शा रईक वोह है के जब तू पुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलावे. (الأخوان لابن أبي الدنيا رقم ٤٦) (2) अख्शा रईक वोह है के उस के देभने से तुम्हें पुदा عَزَّوَجَلَّ याद आवे और उस की गुइत-गू से तुम्हारे अमल में जियादती हो और उस का अमल तुम्हें आभिरत की याद दिलावे. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٧ ص ٥٧ حديث ٩٤٤٦)

नेक बन्दे की हुआ पर “आमीन” कहने की ब-र-कत : अैसे नेक बन्दों की भिदमत में हाजिरी की सआदत बसा अवकात भाँसे भगिइरत हो जाती है युनान्हे हजरते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाईँह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي शरुइसुदूर में नकल करते हें : हजरते सय्यिहुना यजीद बिन हाइन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى कहते हें : मैं ने हजरते सय्यिहुना अबू ँसहाक मुहम्मद बिन यजीद वासिती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي को प्वाब में देभा तो पूछा : अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला किया ? तो उन्हों ने इरमाया : मेरी भगिइरत कर दी. मैं ने पूछा : भगिइरत का क्या सबब बना ? इरमाया : अक भर्तबा हजरते सय्यिहुना अबू अम्र बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي जुमुआ के दिन हमारे पास तशरीफ़



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुर्रहे पाक लिखा तो ज़ब तक मेरा नाम उस में रहेंगा फिरशते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अः)

इरमा हुअे और हुआ की तो हम ने आमीन कही, बस ईसी लिये भग़िरत हो ग़ई.

(شَرْحُ الصُّدُورِ ص ٢٨٢، كِتَابُ الْمَنَامَاتِ مَعَ مَوْسُوعَةِ ابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ج ٣ ص ١٥٦ رقم ٣٣٧)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! मा'लूम हुवा के नेक बन्दों के साथ हुआ में शिर्कत बहुत बड़ी सआदत है. लिहाज़ा सुन्नतों त्भरे ईजतिमाअ वगैरा में "हुआ" में दिल् ज़मई के साथ शिर्कत कीजिये न ज़ाने किस की कुरबत और किस की सोडबत और किस की रिक्कत आमेज़ आमीन की ब-र-कत से अपना बेडा पार हो ज़अे.

मुज़े बे हिसाब बफ़्श दे मेरे मौला

तुज़े वासिता नेक बन्दों का या रब

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ईलाज नम्बर 2

जाती दोस्तियों में गीबतों से बयना दुश्वार है : जाती दोस्तियों से कत्अन ईजतिनाब (या'नी परहेज़) किया ज़अे क्यूंके अब अक्सर माडोल औसा हो गया है के ज़ब दो मिल कर तीसरे का मन्ई (NEGATIVE) तज़क़िरा शुज़अ करें तो करीब करीब ना मुम्किन है के गीबत, युगली, बद् गुमानी व ईल्ज़ाम तराशी वगैरा से बय निकलें. इन झालतू सोडबतों में सुन्नतों त्भरी गुफ़्त-गू कम और मुल्की व सियासी डालात पर तब्सिरा ज़ियादा होता है, गोया सारे मुल्क का निज़ाम येही यला रहे हों ! लिहाज़ा कल्मी किसी वज़ीर पर तन्कीद करेंगे तो कल्मी किसी वीडर पर और येड दोस्त ज़ब अपने अपने घरों की तरफ़ पलटेंगे तो "बद् गुमानियों, गीबतों और तोड्मतों के गुनाहों का टोकरा" ली हर अेक के साथ ज़अेगा ! हज़रते सय्यिदुना झरूके आ'ज़म के गुनाहों का टोकरा है : तुम पर ज़िक्रुल्लाह عَزَّ وَجَلَّ लाजिम है के बेशक ईस में शिफ़ा है और लोगों के तज़क़िरों (म-सलन गीबत) से बयो के येड बीमारी है.

(احياءُ العُلوم ج ٣ ص ١٧٧)



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (س)

झालतू बैठकों से दूर रहिये : गीबत समेत मु-तअद्विद गुनाहों से लिफाजत का बेहतरीन नुस्खा लोगों से अलग थलग रहना है युनान्हे हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के इरमाने आली का फुलासा है : आम लोगों की उमूमन आदत होती है के जहां कहीं मिल के बैठे के किसी न किसी की “इज्जत” के पीछे पड़े या’नी गीबतों और युग्लियों का सिक्सिला शुरुअ हो गया क्यूंके उन की गिजा येही है ! जैसे लोगों का यूंके अकेले में दिल उक्ताता है लिहाजा मिलजुल कर गपशप और “तेरी मेरी” कर के “टाईम पास” करते हैं अगर आप जैसे के साथ बैठेंगे तो गुनाहों त्भरी बातों में त्भी हां में हां मिलानी पड़ेगी और यूं गुनहगार और अजाबे नार के हकदार होते रहेंगे, अगर “हां, ना” किये बिगैर फामोश बैठे रहेंगे तब त्भी नहीं बय सकते क्यूंके बिगैर शर-ई मजबूरी के गीबत सुनने वाला त्भी गीबत करने वाले ही की तरह गुनहगार होता है ! अगर आप उन की गुनाहों त्भरी बातों पर अे’तिराज करेंगे तो येह आप के फिलाफ़ हो जाअेंगे, नतीजतन वोह आप की त्भी गीबतों और दिल आजारियों पर उतर आअेंगे.

(ماخوذ از: إحياء العلوم ج ٢ ص ٢٨٦)

मुझे अपना आशिक बना कर बना दे तू सर ता पा तस्वीरे गम या इलाही

जो इश्के मुहम्मद में आंसू बहाअे अता कर दे वोह यश्मे नम या इलाही

“टाईम पास” करने की बैठक का नकशा पेश करने वाली हिकायत : हजरते सय्यिदुना इज्जैल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيهِ मस्जिदुल हराम शरीफ़ (मककतुल मुकदरमा (زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا) में तन्हा तशरीफ़ इरमा थे, आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيهِ का अेक दोस्त आया, आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيهِ ने पूछा : कैसे आना हुवा ? जवाब दिया : औ अबू अली ! बस यूं ही जरा दिल बहलाने के लिये आ गया हूं. इरमाया : अल्लाह की कसम ! येह तो बड़ी वहशत दिलाने वाली बात है ! क्या आप येह याहते हैं के मैं आप के लिये जीनत इप्तियार करूं और आप मेरे लिये इप्तियार करें, आप मुज से जूट बोलें और मैं आप



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

से जूट बोलूं ! या तो आप यहां से तशरीफ ले जाइये या मैं यहा जाता हूं. (سُبْحَانَ اللَّهِ) सय्यिदुना कुजैल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दिल बहलाने और वक्त गुजारने के लिये मिल बैठने वालों का नकशा ही पीय कर दिभा दिया के जो लोग “टाईम पास” करने के लिये बैठते हैं वोह उभूमन अक दूसरे के लिये जीनतें और बनावटें करते और भूब जूटी गप्पी हांक्ते हैं !

भा'ज उ-लमाअे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ السَّلَام ने इरमाया है के अल्हाड तआला जब किसी भन्दे से मडब्बत करता है तो उसे गुभनाम कर देता है. (ماخوذان: احياة العلوم ج ٢ ص ٢٨٧)

इकत तेरा तालिब हूं डरगिज नहीं हूं तलब गारे जाडो उशम या एलाडी
न हे ताजे शाही न हे बादशाही बना हे गदाअे डरम या एलाडी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मेलजोल का अड्ल कौन ? : लोगों से मेलजोल के अड्ल की मिसाल देते हुअे हुज्जतुल ईस्लाम डजरते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फलीफअे वक्त उशशाम के पास तशरीफ ले गअे और पूछा : उशशाम ! कैसे डो ? उस ने गुस्से से कहा : आप ने मुजे “अमीरुल मुअमिनीन” कड कर मुभातब क्यूं नहीं किया ? इरमाया : एस लिये के तमाम मुसल्मान तुम्हारी षिलाइत से मुताफिक नहीं हैं, लिहाजा मैं उरा के तुम्हें अमीरुल मुअमिनीन कडना कहीं जूट न डडरे. हुज्जतुल ईस्लाम डजरते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي एस डिकायत को नकल करने के भा'द इरमाते हैं : लिहाजा जो आदमी एस कडर भरा और साफ गो डो और एस डिस्म की बातों (म-सलन गीबतों, युग्लियों, रियाकारियों, भुद पसन्धियों, भुशामदों वगैरा वगैरा) से भय सकता डो वोह बेशक लोगों में मिलजुल कर रहे वरना अपना नाम मुनाफिकों की फेडरिस्त में लिभवाने पर राजी डो जाअे.

(ماخوذان: احياة العلوم ج ٢ ص ٢٨٧)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलक़ीक वोह बढे अप्त हो गया. (उत्तर)

आडिरी अख़ी सोहबतों में भी गीबतों का मरज ! : उजरते सय्यिदुना शैख अब्दुल वल्हाब शा'रानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي इरमाते हैं : मुझे याद नहीं के मैं ने इस जमाने के मशा'य्य में से किसी से मुलाकात की हो और मेरा उस के साथ बैठना गीबत से महकूज़ रहा हो, औसा बहुत कम हुआ इसी लिये मैं ने अपने दीन की और उन के भी दीन की डिफ़ाज़त की खातिर उन से मुलाकात कम कर दी मगर उन के हुकूक में सुस्ती नहीं की. जब बुजुर्गों की मजलिसों का येह डाल है तो दूसरों की बैठकों का क्या आलम होगा ! तो औ भाई ! इस जमाने में जब किसी शप्स से मुलाकात करे तो अपने नफ़स की मुकम्मल डिफ़ाज़त कर और इस मुआ-मले में हरगिज़ सुस्ती न कर. (تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِيْنَ ص ۲۲۴)

हर आने वाला वक्त पिछले वक्त से बुरा है : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! उजरते सय्यिदुना शैख अब्दुल वल्हाब शा'रानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي (मु-तवक्फ़ा 973 हि.) दसवीं सदी हिजरी के बुजुर्ग थे जब उन के दौर में येह डाल था तो अब तो पन्दरहवीं सदी हिजरी है हम उन के दौर से तकरीबन 450 साल मज़ीद दूर हो चुके हैं और हर आने वाला वक्त दीनी अे'तिबार से पिछले वक्त से बुरा है. उजरते सय्यिदुना जुबैर बिन अदी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरमाते हैं के हम ने उजरते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बारगाह में हज्ज्ज बिन यूसुफ़ की तरफ़ से पछोयने वाली तकालीफ़ की शिकायत की तो इरमाया : "सब्र करो ! क्यूंके तुम पर कोई जमाना नहीं आयेगा मगर इस के बाद में आने वाला जमाना उस से बढतर होगा यहां तक के तुम अपने रब् عَزَّ وَجَلَّ से मिलो, येह मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ से सुना है." (صَحِيْحُ بُخَارِي ج ۴ ص ۴۳ ح ۶۸ ۷۰) मुइरिसिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : जमाना जिस कदर हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ से दूर होता जायेगा जुल्म व इसाद भी बढता जायेगा, हर जमाना पहले जमाने से दीन के लिहाज़ से बढतर है, कभी कोई गुनाह जियादा कभी कोई गुनाह ! (मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 7, स. 202 मुलफ़्फ़सन)



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रहमतें बेजता है. (س)

हर हर ईद गीबत गो नही : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हर जी शुओर अन्दाजा लगा सकता है के आज कल जब तमाम ही बुराईयां उड़जे बाम पर हें तो फिर “गीबत” क्यूं पीछे रहेगी ! पैर ईस का मत्वब हरगिज येह नहीं के हर हर ईद लाजिमी तौर पर गीबत में लगा हुवा है, अल्लाह ﷻ के नेक बन्दों से हरगिज दुन्या पाली नहीं. तो जो वाकेई नेक बन्दे हों उन की सोहबते बा ब-र-कत से ज़रर हैज हासिल करना याहिये और जो ब जाहिर मज़हबी वज़अ कत्व रभते हों और देभने में “नेक सूरत” हों मगर गीबतों, युग्लियों, बद्द गुमानियों, तोहमतों वगैरा वगैरा गुनाहों की गन्दगियों और गलाजतों में लिथडे रहते हों उन की मजलिसों (बैठकों) से दूर रहने ही में सलामती बल्के औसों से दूर रहना शरअन भी ज़ररी है. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 164 पर है : ईमरान बिन हित्तान से रिवायत की, कहते हें : मैं (हजरते सय्यिदुना) अबू ज़र (गिफ़ारी) رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास गया, उन्हे काली कमली ओढे हुअे मस्जिद में तन्हा बैठा हुवा देभा. मैं ने कहा : अबू ज़र ! येह तन्हाई कैसी ? उन्हों ने कहा : मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को इरमाते सुना : तन्हाई अख़ी है बुरे हम-नशीन से और हम-नशीने सालेह (या'नी नेक रफ़ीक) तन्हाई से बेहतर है और अख़ी बात बोलना फामोशी से बेहतर है और बुरी बात बोलने से युप रहना बेहतर है.

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٤ ص ٢٥٦ حَدِيثُ ٤٩٩٣)

डाल हमारा कैसे जभूं है और वोड कैसे और वोड क्यूं है

सब है तुम पर रोशन शाहा صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ

(सामाने बफ़िशश)

50 सिदीकीन का सवाब : अमीरुल मुअमिनीन हजरते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे फ़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ इरमाते हें : अन्करीब लोगों पर अेक औसा जमाना आअेगा के उन की बादशाही (हुकूमत) कत्व और जुल्म के बिगैर नहीं डोगी. और मालदारी तकब्बुर और फ़ुज्व से पाली न डोगी और लोगों के साथ



इरमाने मुस्तफा عسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

मजलिस (बैठक) प्वालिशे नईसानी के बिगैर न होगी. पस जो शप्स वोह जमाना पाओ और सभ्र करे और अपने नईस की डिफाजत करे तो अद्लाह عز وجل उसे पयास सिदीकीन जैसा सवाब अता करेगा.

(تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِينَ ص २२०)

गीबत भोर से तो कुत्ता ही भला : उजरते सय्यिदुना हम्माद बिन जैद عليه تعالى رحمه الله की इरमाते हैं : मैं अक बार उजरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عليه رحمه الله العفار की बिदमत में हाजिर हुवा, उन के सामने अक कुत्ता देष कर मैं ने उसे लगाना थाहा तो इरमाया : ओ हम्माद ! एसे छोड दो यकीनन येह उस भुरे साथी से बेहतर है जो मेरे पास बैठ कर लोगो की गीबत करता है.

(تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِينَ ص २२७)

तो कुत्ता मुज जैसे सेंकडों से अख्श : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देषा आप ने ! हमारे भुजुर्गो की भी क्या भूब म-दनी सोय हुवा करती थी ! वोह गीबत भोर जो बिगैर तौबा के भर जाओ और अद्लाह व रसूल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की नाराजी की सूरत में वासिले जहन्नम हो जाओ वद्लाह बिद्लाह तद्लाह अैसे आदमी से तो कुत्ता ही करोडो द-रजे बेहतर है के उस के लिये दोज्जफ का अजाब नहीं. तजकि-रतुल औलिया में है : उजरते सय्यिदुना हसन बसरी عليه رحمه الله القوي की बिदमते भा अ-जमत में किसी ने सुवाल किया : आप बेहतर हैं या कुत्ता ? इरमाया : अगर अजाब से बय गया तो मैं वरना कुत्ता मुज जैसे सेंकडों से अइजल है. (تذكرة الاولياء حصه اول ص ६३)

आप की गलियों के कुत्ते मुज से तो अख्शे रहे

हे सुई उन को मुयस्सर सभ्र गुम्बद देष कर

हसन बसरी और अक गोशा नशीन : उजरते सय्यिदुना हसन बसरी القوي इरमाते हैं : अक शप्स को लोगो से अलग थलग रहने वाला पा कर मैं ने इस का सबब पूछा : तो उस ने कहा : मैं बहुत अहम काम में मशगूल रहता हूं. मैं ने पूछा वोह क्या है ? कहने लगा : मैं हर सुबह अपने आप को ने'मत और गुनाह



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (हिन)

के दरमियान पाता हूं लिहाजा मैं ने'मतों के शुक्र और गुनाहों से तौबा में मशगूल रहता हूं. मैं ने उस से कहा : औ भाई ! तू हसन बसरी से अइकह या'नी जियादा इकीह (बहुत बडा आलिम) है, अकेला ही बैठा कर. (تَنْبِيْهُ الْمُعْتَرِيْنَ ص ۲۲۷)

तन्हाई में भलाई ही भलाई है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! वाकेई तन्हाई में भलाई ही भलाई है मगर जो ऐसा आलिम हो जिस की मुसल्मानों को छाजत हो और उस से लोगों को नइअ पछोयता हो वोह मेलजोल तर्क कर के भलवत (या'नी गोशा नशीनी) ईप्तियार न करे. बाकी लोग अगर मां बाप, अहलो अयाल और दीगर हुक्कुल ईबाद का भयाल रभने के साथ साथ अपनी अहम दीनी व हुन्यवी जइरतों से इरिग हो कर बकिइया वक्त उजूलत नशीनी (या'नी तन्हाई) में गुजारें (जब के तन्हाई में रहने के आदाब से ली वाकिइ हों¹) तो उन के लिये नूरुन अला नूर. हजरते सय्यिदुना उकबा बिन आमिर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ! नजात क्या है ? इरमाया : **«1»** अपनी जभान को रोक रभो (या'नी अपनी जभान वहां भोलो जहां इअेदा हो, नुक्सान न हो) और **«2»** तुम्हारा घर तुम्हें किफायत करे (या'नी बिना जइरत घर से न निकलो) और **«3»** गुनाहों पर रोना ईप्तियार करो. (سَنَنِ تَرْمِذِي ج ۴ ص ۱۸۲ حدیث ۲۴۱۶)

दिल में हो याद तेरी गोशअे तन्हाई हो

किर तो भलवत में अजब अन्जुमन आराई हो

गीबत से भयने का अनोभा तरीका : जब ली किसी के बारे में कुछ कहने की नौबत आये तो काश ! हमारा तसव्वुर येह भंध जाये के वोह हमारे सामने मौजूद है कहीं ऐसा न हो के कोई लइज ऐसा जभान से अदा हो जाये जिसे सुन कर येह नाराज हो जाये युनान्ये हजरते सय्यिदुना अबू तालिब मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي इरमाते हें : किसी जुजुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ का इरमान है के जब ली किसी आदमी का मेरे सामने जिक्र किया गया तो मैं ने गोया उसे अपने सामने बैठा हुआ पाया और उस के बारे में

1. लुबाबुल अेहया सइहा 163 ता 165 पर गोशा नशीनी का भयान मुला-हजा इरमाईये. ईस का भूब तइसीली भयान अेहयाउल उलूम जिल्द 2 में है.



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

वोही कलाम किया जिसे वोह पसन्द करे. (قُوْتُ الْقُلُوبِ ج 1 ص 349) एसी तरह अेक और बुज़ुर्ग़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : मेरे सामने जब किसी का तज़क़िरा छ़ुता है, अपने दिल में उस का तसव्वुर ज़मा लेता हूँ और ज़ो अपने लिये पसन्द करता हूँ, उस के बारे में भी वोही क़हता हूँ. (अय्यास)

शरफ़ दे उज का मुज़े भडरे मुस्तफ़ा या रब रवाना सूअे मदीना डो काफ़िला या रब
दिया दे अेक जलक सब्ज सब्ज गुम्बद की बस उन के जल्वे में आ जाअे फ़िर कज़ा या रब

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ !
صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ !
تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ
صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ !
صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ !

गैर मुस्लिम मुसल्मान डो गया : भीठे भीठे ईस्लामी त्वाँय्यो ! गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये द्वा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से डर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्बरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोज़ाना फ़िके मदीना के ज़रीअे रिसाला पुर कीजिये और डर म-दनी माड की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को ज़म्अ करवाँये. द्वा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना के ज़री कर्दा रसाँल और विडियो केसिटें तोडके में भाँटते रहिये न जाने कब किस का दिल थोट भा जाअे, वोह राडे रास्त पर आ जाअे और आप का त्भी बेडा पार डो जाअे. आप की तरगीब के लिये अेक ईमान अफ़रोज बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है युनान्चे U.K. (इंग्लैंड) के अेक ईस्लामी त्वाँ का ईस तरह बयान है के मैं बहुत अर्से से अेक गैर मुस्लिम पर ईन्फ़िरादी कोशिश कर रहा था के वोह मुसल्मान डो जाअे मगर मुज़े काम्याबी नहीँ मिल रही थी. अेक बार द्वा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (महाजिन)

की ज़ारी कर्दा अेक V.C.D. उन को तोलके में दी गई उस V.C.D. का नाम है : बैनल अक़वामी इजतिमाअ व इजतिमाई अे'तिकाइ. उस ने V.C.D. को अपने घर वालों को साथ बिठा कर यला दी, वोह V.C.D. देभता गया और उर्दू न समजने के बा वुजूद मइज़ बैनल अक़वामी इजतिमाअ और इजतिमाई अे'तिकाइ के इह परवर मनाजिर देभ कर उस के दिल में इस्लाम की मइब्बत उतरती यली गई. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आबिरे कार वोह कलिमा पढ कर दाईरअे इस्लाम में दाभिल हो गया और दा'वते इस्लामी के इजतिमाअ में ली शिर्कत करने लगा, म-दनी माहोल की ब-र-कत से सब्ज सब्ज इमामे शरीफ़ से उस का सर "सर सब्ज" हो गया. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ वोह आशिकाने रसूल के साथ राहे षुदा عَزَّوَجَلَّ में सइर करने वाले म-दनी काइले का मुसाफ़िर ली बना.

अव्लाह करम अैसा करे तुज पे जहां में

अै दा'वते इस्लामी तेरी धूम मयी हो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ईलाज नम्बर 3

गीबत का येह ईलाज ली इअेदे मन्द है के आप अपने जेहून में येह बात अेक दम जमा लीजिये के जब कोई मेरी गीबत करता है तो मुजे तकलीफ़ होती है इसी तरह मैं जिस की गीबत कइंगा उसे ली तो अजियत होगी, तो जे काम मुजे अपने लिये ना पसन्द है वोह दूसरे मुसल्मान भाई के लिये क्यूं कइं !

यूहे भगाने के लिये बिदली न रभने का इमान अइरोज सभब : गीबत से तो बयना ही याहिये, पुराने जमाने के लोगों की तो अैसी म-दनी सोय होती थी के षुद तकलीफ़ गवारा कर लेते मगर दूसरे को तकलीफ़ न होने देते युनान्ये "मुका-श-इतुल कुलूब" में है : अेक साहिब के घर में यूहे बहुत हो गअे थे, किसी ने मशवरा दिया बिदली रभ लीजिये. उन साहिब ने जवाब दिया : बिदली की "मियाउ" सुन कर यूहे



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (ખૂબાલ)

ભાગ તો જાએંગે મગર મુઝે ડર લગ રહા હૈ કે કહીં પડોસિયોં કે ઘરોં મેં ન ઘુસ જાએં !
અગર યૂં હુવા તો મેં ઐસા આદમી બના કે જો અપને લિયે જિસ તક્લીફ કો ના પસન્દ
કરતા હૈ વોહી તક્લીફ ઉસ ને દૂસરે કે લિયે ગવારા કર લી. (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ۲۸۲)

ખૈર ખ્વાહ હમ ભી પડોસી કે બનેં યેહ કરમ યા મુસ્તફા ફરમાઈયે

ને 'મતે અખ્લાક કર દીજે અતા યેહ કરમ યા મુસ્તફા ફરમાઈયે

ગીબતો યુગલી કી આફત સે બયેં

યેહ કરમ યા મુસ્તફા ફરમાઈયે

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ઇલાજ નમ્બર 4

“ભડાસ” નિકાલના ગીબત મેં ડાલ સકતા હૈ : કિસી ને દિલ દુખા દિયા, સખ્ત ગુસ્સા આ ગયા ઔર સખ્ર કા દામન હાથ સે છૂટ ગયા ઈસ સબબ સે દિલ દુખાને વાલે કે બારે મેં અગર કિસી કે આગે “ભડાસ” નિકલને લગી તો સમજો કે જહન્નમ કી આગ ઈકઠ્ઠી હોની શુરૂઆ હો ગઈ કે અબ ગીબત વ બોહતાન તરાશી જૈસે કબીરા ગુનાહ, હરામ ઔર દોઝખ મેં લે જાને વાલે કામ સે આપ કો શાયદ કોઈ ન બચા પાએ ક્યૂંકે જબ કોઈ ગુસ્સે ઔર જઝબાત કે આલમ મેં ભડાસ નિકાલ રહા હોતા હૈ ઉસ વક્ત ઉમૂમન સુનને વાલા ભી સહમ જાતા હૈ ઔર ઉસ કી ઈસ્લાહ નહીં કર પાતા. ઉસ દિલે સિયાહ સે અલ્લાહ ﷻ કી પનાહ જો હિદાયત કી બાત સુનને કે લિયે તય્યાર ન હો. આહ ! ગીબત કી તબાહકારી ! હઝરતે સય્યિદુના અબૂ કિલાબા رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈ ગીબત દિલ કો હિદાયત ઔર ભલાઈ સે મહરૂમ કર દેતી હૈ. (تنبيه المعتبرين ص ۱۹۱) ગુસ્સે



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत
(البرقلى).

का ँलाज कीजिये, दूसरों के आगे त्बाहस निकालने के बजाये मुआझी और दर गुजर से काम लेते हुअे जन्नत में बे हिसाब दाभिले की तउप वाला जेहून बनाईये.

मुआझ करने वालों का बे हिसाब जन्नत में दाभिला : मुआझ कर देने की इजीलत त्मी अैसी है के मुंह में पानी आ जाता है युनान्ये सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना, इँज गन्जना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ँशदि भा करीना है : क्रियामत के रोज अे'लान क्रिया जाअेगा : जिस का अज अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिम्मअे करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाभिल हो जाअे. पूछा जाअेगा : किस के लिये अज है ? वोह मुनादी (या'नी अे'लान करने वाला) कहेगा : "उन लोगों के लिये जो मुआझ करने वाले हैं." तो हजारों आदमी जडे होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाभिल हो जाअेंगे. (الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٥٤٢ حديث ١٩٩٨) काश ! हमें त्मी मुआझ कर देने का जज्बा नसीब हो जाअे. और काश ! काश ! काश ! हम त्मी बे हिसाब जन्नतुल इरदौस में दाभिले की सआदत पा लें.

तू बे हिसाब बप्श के हें बे शुमार जुर्म
देता हूं वासिता तुजे शाहे डिजाज का

(जौके ना'त)

बुरा कहने से बयने वाले का ખुश अन्जाम : हजरते सय्यिहुना शैख सा'दी भोस्ताने सा'दी में नकल करते हैं : अेक नेक सीरत शप्स अपने जाती दुश्मनों का जिंक त्मी बुराई से न करता था. जब त्मी किसी की बात छिडती, उस की ज्बान से नेक अद्ल्ज ली अदा होते. उस के मरने के भा'द किसी ने प्वाब में देभा तो पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ يَا'नी अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुलबुल की तरह शीरीं (या'नी मीठी) आवाज में बोला : दुन्या में मेरी येही कोशिश होती थी के मेरी ज्बान



इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (प्रान्)

से किसी के बारे में कोई बुरी बात न निकले, नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) ने भी मुज से कोई सप्त सुवाल न किया और الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ यूं मेरा मुआ-मला बहुत अच्छा रहा.

(بوستان سعدی ص ۱۴۴) (दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "गुस्से का इलाज" का मुता-लआ गुस्से की आदत निकालने के लिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ लेखित बेहतरीन मुआविन साबित होगा)

सुन लो नुकसान ही होता है बिल आभिर उन को

नफस के वासिते गुस्सा जो किया करते हैं

इलाज नम्बर 5

गीबत के अजाबत याद कीजिये : जब किसी की पीठ पीछे बुराई करने को जो याहे तो गीबत के अजाबत को याद कीजिये, म-सलन तांभे के नापुनों से अपने येहरे और सीने को नोयने वाला अजाब, अपने ही पहलूओं (या'नी करवटों) का गोशत काट काट कर बिलाअे जाने का अजाब नीज तसव्वुर कीजिये के बरोजे कियामत अपने मुर्दा त्माई का गोशत खाना पडेगा और गीबत करने वाला मुंज बिगाडे खिल्वाता हुवा उसे भाअेगा. अब सोचिये के हलाल जानवर का ताजा गोशत भी कय्या नहीं पाया जाता तो मरे हुअे इन्सान का गोशत किस तरह पाया जा सकेगा ?

गीबत का ताईब आभिर में जन्नत में जाअेगा : म-कूल है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हजरते सय्यिहुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वहुय इरमाई के जो गीबत से तौबा कर के मरा वोह आभिरी शप्स होगा जो जन्नत में जाअेगा और जो गीबत पर इसरार करते हुअे (या'नी गीबत पर काईम रहते हुअे) मरा वोह पहला शप्स होगा जो जहन्नम में दाखिल होगा. (رسالة تُشِيرُ بِهِ ص ۱۹۴)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुहे पाक पढा अद्लाह उंस पर सो रलमते नाजिल फरमाता है. (طبرانی)

गुल भयाअेगा, दौजभ में जाअेगा : भीढे भीढे ईस्लामी भाईयो ! जो शप्स गीबत करता है उस को सिवाअे अपने नुकसान के कुछ हाथ नहीं आता उता के अगर तौबा कर के मरा है तो अगरे कियामत में उस को गीबत पर अजाभ न होगे ताहम जन्नत में सब लोगो के बा'द जाअेगा. और ईस सबभ से बहुत सप्त पछताअेगा और नदामत उदाअेगा. और अगर बिगैर तौबा के मरा और अद्लाह गळभ नाक हुवा तो बरोजे कियामत सब से कबल जहन्नम में जाअेगा, अगरे गुल बहुत भयाअेगा, खीभेगा, खिल्लाअेगा मगर रोना धोना वहां काम न आअेगा.

देभिये क्या उशर को डो मेरा डाल मुज को रलता है येडी उर दम मलाल
डो करम मुज पर भुदाअे जुल जलाल मुज को जन्नत दे जहन्नम में न डाल

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

ईलाज नम्बर 6

सोने का पडास स-दका करने से भी पसन्दीदा : अपने नफ्स पर बार (भोज) डाले म-सलन अगर गीबत की तो 5 रुपै भैरात करुंगा. भुदा की कसम ! पांच रुपै तो कुछ भी नहीं हैं, उजरते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फरमाते हैं : अद्लाह उंस की कसम ! मेरे नजदीक गीबत को तर्क करना सोने का पडास स-दका करने से जियादा पसन्दीदा है.

(تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِيْنَ ص 192)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तैरिब)

गीबत हो जाती तो भैरात करते : उजरते सय्यिहुना एमाम मुहम्मद एब्ने सीरीन عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْفَيِين की आदत थी के अगर कभी उन से किसी की गीबत सरजद हो जाती तो भैरात करते थे.

(تفسير رُوح البیان ج ۹ ص ۸۹)

दो दिरहम की खिकायत : उजरते सय्यिहुना अबुल्लैस बुभारी عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي उज के लिये निकले तो दो दिरहम एस निय्यत से जेब में डाले के अगर घर पलटने तक कहीं भी गीबत सादिर हुँ तो येह दो दिरहम भैरात कर दूंगा. السَّارَا الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ सारा सफ़र गीबत से बचे रहे और वोह दो दिरहम जेब में महफूज रहे. एन्हीं का इरमान है : मैं अक मर्तबा की गीबत को सो मर्तबा के जिना से बढतर समजता हूँ.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ۷۱)

मजकूरा खिकायत की वजाहत : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! उजरते सय्यिहुना अबुल्लैस عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى अडे मुत्तकी और परहेज गार बुजुर्ग थे आप عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की म-दनी सोय भरहबा ! गीबत का दरवाजा मजबूती से बन्द करने के लिये आप عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने दो दिरहम भैरात करने की निय्यत की उबर दस्त तरकीब इरमाई. यकीनन उज के दौरान गीबत करना आम हालत के मुकाबले में जियादा बडा गुनाह है और जो गीबतों, युग्लियों, दिल् आजारियों, गन्दी गालियों और जुम्हा बे हयाईयो से भुद को बनाने में काम्याबी हासिल कर ले वोह गुनाहों से पाक साफ़ हो जाओ युनान्ये दा'वते इस्लामी के इशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल सफ़हा 1031 पर इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : "जिस ने उज किया और रफ़स (या'नी झोड़श कलाम) न किया और फ़िस्क न किया तो गुनाहों से पाक हो कर अइसा लौटा जैसे उस दिन, के मां के पेट से पैदा हुवा." (بخاری ج ۱ ص ۱۲ حدیث ۱۰۲۱)

आज कल जो लोग उज के वासिते जाते हैं उन में से बे शुमार हुजुज वतन में जिस तरह गुनाह करते रहे हैं इसी तरह बेबाकी से राहे मदीना में भी लगे रहते हैं, यहां तक के अहराम की हालत में भी लोगो की भूब गीबतें की जाती हैं,



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

﴿2﴾ अक और रिवायत में है के जहन्नम की धतनी गहराई में गिरता है जो मशरिक व मगरिब के फ़ासिले से भी ज़ियादा है. (صحيح مسلم ص 1090 حديث 2988) ﴿3﴾ जो थीज़ धन्सान को सब से ज़ियादा जन्नत में दाखिल करने वाली है वोह तक्वा और हुस्ने फुल्क (या'नी अख़्श अफ़्लाक) हैं और जो थीज़ धन्सान को सब से ज़ियादा जहन्नम में ले जाने वाली है वोह द्यो जौफ़दार थीज़ें हैं मुंढ और शर्मगाह. (سنن ترمذی حديث 2004 ص 1802) ﴿4﴾ जो युप रहा, उसे नज़ात है. (ایضاً حديث 2001 ص 1903) ﴿5﴾ सुकूत (या'नी फामोशी) पर काधम रहना साठ बरस की धबादत से अफ़जल है. (شعب الإيمان ج 4 ص 240 حديث 4903) ﴿6﴾ ज़ियादतिये फामोशी को लाज़िम कर दो के धस से शैतान दफ़अ होगा और तुम्हें धीन के कामों में मदद देगी. (ایضاً ص 243 حديث 4942) ﴿7﴾ मेरे लिये छ थीज़ों के जामिन हो ज़ाओ में तुम्हारे लिये जन्नत का ज़िम्मेदार होता हूं (1) जब बात करो सय बोवो और (2) जब वा'दा करो उसे पूरा करो और (3) जब तुम्हारे पास अमानत रफी ज़ाओ उसे अदा करो और (4) अपनी शर्मगाहों की छिज़ाज़त करो और (5) अपनी निगाहें नीथी रफ़ो और (6) अपने हाथों को रोको (या'नी हाथ से किसी को धज़ा न पड़ोंयाओ)

(مسند إمام احمد ج 8 ص 412 حديث 22821)

मेरी ज़बान पे "कुफ़ले मदीना" लग ज़ाओ कुज़ूल गोध से बयता रहूं सदा या रब
उठे न आंफ कभी भी गुनाह की ज़ानिब अता करम से हो ऐसी मुजे हया या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ! أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

परिन्दे की नेकी की दा'वत : कता (जो के कभूतर से मिलता जुलता परिन्दा है) जब बोवता है तो कहता है : مَنْ سَكَتَ سَلَّمَ या'नी जो फामोश रहा सलामत रहा.

(تفسير قرطبي ج 7 ص 127) ज़बान पर कुफ़ले मदीना लगाना या'नी ज़रूरत की बात भी



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुऱा पर दुरद शरीफ़ पढो अद्वलाह एऱुऱुम तुम पर रहमत भेजेगा. (अऱुऱुऱु)

कम से कम अद्वलाह में करना, जहां जहां मुम्किन हो वहां ज़बान से बोलने के बजाये ज़ामोश रह कर लिफ़ कर या इशारे से काम चलाना भी गीबत से बचने के अस्बाब मुहय्या कर सकता है. मगर येह जेहून में रहे के गीबत लिफ़ कर बलके इशारे से भी हो सकती है और जहां किसी मुसल्मान की गुनाहों त्बरी गीबत हो रही हो वहां शर-इ रुप्सत के बिगैर युप रहने की इज्जत नहीं, गीबत करने वाले को गीबत से बाज रह कर अपने मुसल्मान भाई की इज्जत की डिफ़ाजत करे.

न गीबत करेंगे न गीबत सुनेंगे

ब औने जुदा लब पे काबू रहेंगे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सुवारी के ज़ानवर पर ला'नत मत करो : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सइहा 166 पर है : अक शप्स ने अपनी सुवारी के ज़ानवर पर ला'नत की, रसूलुद्वलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : इस से उतर ज़ओ हमारै साथ में मदज़िन यीज को ले कर न यलो, अपने डिपर और अपनी औलाद व अम्वाल पर बद हुआ न करो कहीं ऐसा न हो के येह बद हुआ उस साअत में हो जिस में जो हुआ जुदा (عَزَّوَجَلَّ) से की ज़ाअे कबूल होती है. (صحيح مُسْلِم ص 1064 حديث 3009)

ज़ानवर को जुरा कहना : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! ज़बान पर काबू पाने की सप्त ज़रूरत है. ज़ानवरों पर भी ला'नत करने की मुमा-न-अत है, बिला ज़रूरत इन की जुराई भी ज़बान से क्यूं निकले ! अब ज़ाहिर है जो ज़ानवरों को भी जुरा कहने से बयेगा वोह मुसल्मानों की गीबत से ब द-र-जअे औला इज्जतिनाब (या'नी परहेज) करेगा. अलबत्ता ज़ानवर का औब बयान करने को मुसल्मान की गीबत की तरह का जुर्म नहीं करार देंगे हां अगर वोह ज़ानवर किसी मुसल्मान का हुवा तो उस



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : على الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज़ पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्ग़िरत है. (भा.मि.)

मुसल्मान की गीबत व दिल् आज़ारी की सूरत बन सकती है, म-सलन ﷻ हुलां का धोडा भरयल है ﷻ इस की कुरबानी की गाय की हड्डियां पस्वियां नज़र आ रही हैं ﷻ उस का बकरा तो हड्डियों का ढांचा है ﷻ उस के मुर्गे की बांग की आवाज़ बे सुरी है वगैरा वगैरा ज़ुम्लों में धन जानवरों के मालिकान की धंज़ा का पडलू मौजूद है लिहाज़ा येह गीबत है.

मरे हुअे कुत्ते की बुराई से भी बचो : हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार على نبينا وعليه الصلوة والسلام इह्ललाह एक मरे हुअे कुत्ते के पास से गुज़रे, हवारियों ने अर्ज़ की : येह कुत्ता किस कदर बढबूदार है ! हज़रते सय्यिदुना इसा इह्ललाह على نبينا وعليه الصلوة والسلام ने इरमाया : इस के द्वांत कितने सफ़ेद हैं ! गोया आप على نبينا وعليه الصلوة والسلام ने उन को मुद्दर कुत्ते की गीबत से भी मन्अ इरमाया और उन को खबरदार किया के बे ज़बान जानवरों की भी ખूभी का ही जिक करना याहिये. (ماخوذ از إحياء العلوم ج 3 ص 177) **अद्लाह एज़्ज़ व ज़ल्ल की उन पर रहमत हो और उन के सढके हमारी मग्ग़िरत हो.**

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भिन्नीर के लिये उम्दा झिकरा इस्ति'माल इरमाया : हज़रते सय्यिदुना इसा इह्ललाह على نبينا وعليه الصلوة والسلام के हुस्ने अख्लाक के भी क्या कलने ! वाकेई येह आप على نبينا وعليه الصلوة والسلام का ही हिससा था के मुद्दर कुत्ते की भी ખूभी ही की तरफ़ नज़र इरमाई. "तारीखे द्दिमश्क" जिल्द 47 सफ़्हा 437 पर है के हज़रते सय्यिदुना इसा इह्ललाह على نبينا وعليه الصلوة والسلام के सामने से अक भिन्नीर गुज़रा, इरमाया : "مُرِّ بِسَلَامٍ" या'नी सलामती से गुज़र जाओ. लोगों ने तअज्जुब के साथ अर्ज़ की : या इह्ललाह ! क्या वजह है के आप ने सुवर के लिये इतना उम्दा ज़ुम्ला इश्राई इरमाया ? इरमाया : मैं अपनी ज़बान पर बुरी बात लाना नहीं याहता. (تاريخ دمشق ج 47 ص 437) **अद्लाह एज़्ज़ व ज़ल्ल की उन पर रहमत हो और उन के सढके हमारी मग्ग़िरत हो.**

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अेक दुइरुद शरीफ़ पढता है अद्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (फ़िराज़)

भियडे को उलीम कलना : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! हजरते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ وَآلِيَّ وَغَلِيَّةِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की मुबारक सोय सद करोड भरलभा ! काश ! हमें भी औसी समज नसीब हो जाये के कहां कौन से अद्लाज भोलने याहियें. भा'ज अवकात किसी दुन्यवी शै पर मु-तभरिंक अद्लाज न भोलना भी अदभ होता है जैसा के अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का अेक सिफ़ाती नाम उलीम عَزَّ وَجَلَّ भी है लिहाजा जाने की यीज के लिये “उलीम” का लफ़्ज कलना जाईज होने के बा वुजूद भा'ज बन्दगाने जुदा को अख़्श नहीं लगता. ईस गिजा को उईरू में भियडा भी कहते हैं लिहाजा वोह येही लफ़्ज इस्ति'माल करते हैं. तजकि-रतुल औलिया में है : हजरते सय्यिदुना बा यजीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّمَا ने अेक बार सुर्ष रंग का सेब छाथ में ले कर इरमाया : “येह बहुत लतीफ़ है.” गैब से आवाज आई : “हमारा नाम सेब के लिये इस्ति'माल करते हुअे हया नहीं आई !” अद्लाह عَزَّ وَजَلَّ ने यालीस दिन के लिये अपनी याद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه के कलब से निकाल दी. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه ने भी कसम भाई के अज कभी (अपने वतन) बिस्ताम (शहर का नाम) का इल नहीं जाउंगा. (تذكرة الاولياء ص ۱۳۴) देभा आप ने ! “लतीफ़” का अेक लफ़्जी भा'ना “उम्दा” भी है मगर यूंके “लतीफ़” अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है ईस लिये सय्यिदुना बा यजीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّمَا को तम्भीह की गई. अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हुस्ने अप्लाक मिले लीक में इप्लास मिले

ईक बिकारी है जडा आप के दरबार के पास

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

जबान का तीर भता नहीं होता : हर सूरत में जबान की डिफ़ाजत करनी याहिये के जब येह चलती है तो क्या का क्या कर डालती है ! मशहूर ताबेई बुजुर्ग हजरते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : लोगों का तीर ईंकना जबान के जरीअे अजिय्यत पडोयाने से जियादा आसान है क्यूंके कमान का तीर भता हो सकता



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुद पाक लिखा तो ज़ब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (उः १)

हैं लेकिन ज़बान का तीर कभी भता नहीं होता.

(تَنْبِيْهُ الْمُعْتَرِيْنَ ص ۱۸۹)

ज़बान का ज़म्म तलवार के ज़म्म से सप्त होता है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने कितने अछूते अन्दाज़ में “ज़बान की ईजा” की हलाकत भैजियों की निशान देही इरमाई है ! वाकेई लोहे के नोकीले तीर के मुकाबले में ज़बान का ज़म्म सप्त तर होता है. तीर का ज़म्म जल्दी भर जाता है मगर ज़बान से की हुई गीबत या दिल् आज़ारी का ज़म्म आसानी से नहीं भरता अ-रबी मक़ला है : جَزَعُ الْكَلَامِ أَصْعَبُ مِنْ جَزَعِ الْحَسَامِ या’नी ज़बान का ज़म्म तलवार के ज़म्म से ज़ियादा सप्त होता है.

(الْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۷)

जिको दुरुद हर घडी विई ज़बां रहे

मेरी कुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

ईलाज नम्बर 8

गीबत की आदत निकालने का बेहतरीन नुस्खा : किसी भी मरज़ से बचने का ज़जबा पाने के लिये उस के मोहलिकत या’नी तबाह कारियां जानना मुईद होता है. लिहाज़ा दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक़-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सईहात पर मुश्तमिल किताब, “बहारै शरीअत” हिस्सा 16 सईहा 169 ता 182 और ओहयाउल उलूम जिल्द 3 से गीबत का बयान ज़रूर पढ लीजिये. जिस का “नइसे अम्मारा” गीबत का आदी हो उस को काबू करना आसान नहीं, वोह बोदी दलीलें दे कर, ज़बर दस्ती की ज़रतें भावर करवा कर गीबत पर उभारता रहेगा लिहाज़ा ईस पर बार बार ईब्रत के ताज़ियाने (या’नी कोरे) बरसाने होंगे, ओक आध बार वईदात व नुक़सानात पढ लेने से काम चलना बहुत मुश्किल है अव्वल तो डाइज़ा ही अकसर कमज़ोर और इर शैतान भी ऐसी भातें इरन लुला देता है. युनान्ये मश्वरा है के शैतान लाभ सुस्ती दिलाओ दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरहे पाक पढा अवलाह عزوجل (उस पर दस रलमतें बेजता है. (س)

मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ “इंजाने सुन्नत” जिल्द 2 का येह बाब गीबत की तबाह कारियां मुकम्मल पढ लेने के बा’द भी वक्तन इ वक्तन मुता-लअे में रफिये, फास कर ईस का दर्स घर के अन्दर ज़रर जारी कीजिये के आज़ कल अक्सर घर “गीबत कटे” बने हुअे हैं. **لَا تَقْرَأُوا الْقُرْآنَ حَتَّى تَتَذَكَّرُوا لَهُ** हैरत अंगेज़ तौर पर घर दर्स की ब-र-कतें सामने आ जाअेंगी. देफिये हिम्मत कर के पढते (या सुनते) रहियेगा, क्यूंके शैतान कभी भी नहीं याहेगा के आप येह पढ़ें (या सुनें) और गीबत की तबाह कारियों से उरें.

उठे न आंफ कभी भी गुनाह की जानिब अता करम से डो अैसी मुजे डया या रब किसी की फामियां देभें न मेरी आंफें और सुनें न कान भी अैभों का तजकिरा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ईलाज नम्बर 9

गीबत नेकियों की बरबादी और जहन्नम में दाखिले का सबब बन गइ तो ! : जब किसी की गीबत करने को ज़ याहे तो फुद को यूं उराईये के बरोजे कियामत किस कदर इसरत का मकाम लोगा अगर गीबत करने के सबब मेरी नेकियां दूसरों के नामअे आ’माल में और उन के गुनाहों का बोज़ मेरे सर पर आ पडा और गीबत के गुनाह के बाईस इरिशते मुजे सूअे जहन्नम ले यले तो मेरा क्या बनेगा !

माल देने में बफील मगर नेकियां लुटाने में सफी ! : डज़रते सय्यिहुना ईब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَلِيمَةِ गीबत करने वाले की सर-जनिश करते (या’नी अंट पिवाते) हुअे इरमाते हैं : अै जूटे ईन्सान ! तू अपने दोस्तों को तो दुन्या का डकीर माल देने से बुफ्ल करता रहा मगर आभिरत का माल (या’नी नेकियों का फजाना) तूने अपने दुश्मनों पर लुटा दिया ! न तेरा दुन्यवी बुफ्ल काबिले कुबूल न गीबतें कर कर के नेकियां लुटाने वाली सफावत मकबूल.

(تَنْبِيهُ الْعَاقِلِينَ ص ٨٧)



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

गुसीले मिजाज और गीबत की परसत से मुज को हमेशा बया या एलाडी
हो अप्लाक अरथा हो किरदार सुथरा मुजे मुत्तकी तू बना या एलाडी

صَلُّوْا عَلَي الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَي الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

गुर्हे का दर्द दूर हो गया : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत उालने के लिये द्वा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. आप की तरगीब के लिये म-दनी काइले की अेक म-दनी बहार गोश गुजार की जाती है : हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की अेक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है के मुजे गुर्हे में इतना शदीद दर्द उठता के जब तक 2 इन्जेक्शन न लगते, आराम न आता. फुश किस्मती से हमारे अलाके में इस्लामी बहनों का म-दनी काइला तशरीफ़ लाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तौईक बफ़्शी और मैं भी उन के साथ सुन्नतें सीअने सिआने के हलके में शरीक हुई. वहां मेरे गुर्हे में दर्द शुरुअ हो गया यहां तक के रात हो गई. जब आना सामने आया तो यावल थे, मैं धबराई के अगर यावल आये तो दर्द मजीद बढ जायेगा फिर मैं ने सोया के ब-र-कत के लिये आ लेती हूं إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कुछ नहीं होगा. أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आने के बा'द मेरा दर्द बढा नहीं बलके अत्म हो गया.



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا لڑکے لڑکا اور اس نے مجھ پر دُڑدے پاک نہ پڑا
તહકીક વોહ બદ બપ્ત હો ગયા. (૫૩)

દર્દ ગુર્દે મેં હૈ યા મસાને મેં હૈ ઇસ કા ગમ મત કરેં કાફિલે મેં યલો
મન્ફઅત આખિરત કે બનાને મેં હૈ યાદ ઇસ કો રખેં કાફિલે મેં યલો

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

મફલૂજ કી હાથોં હાથ શિફાયાબી : ઇસ ઝિમ્ન મેં દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 1548 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “ફૈઝાને સુન્નત” સફહા 533 પર હૈ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ સલાતો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક, દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની માહોલ મેં ૨-મઝાનુલ મુબારક કે આખિરી અ-શરે મેં મસાજિદ કે અન્દર ઇજતિમાઈ એ'તિકાફ કા સિલ્સિલા હોતા હૈ જિસ મેં મો'તકિફીન કી સુન્નતોં ભરી તરબિયત કી જાતી હૈ. મુઆ-શરે કે કઈ બિગડે હુએ અફરાદ દૌરાને એ'તિકાફ ગુનાહોં સે તાઈબ હો કર ઝિન્દગી કે નએ દૌર કા આગાઝ કરતે હેં. બા'ઝ અવકાત રબ્બે કાએનાત جَزَاءُ کِي ઇનાયાત સે ઇમાન અફરોઝ કરિશ્માત કા ભી ઝુહૂર હોતા હૈ યુનાન્યે ૨-મઝાનુલ મુબારક 1425 સિ.હિ. કે ઇજતિમાઈ એ'તિકાફ મેં દા'વતે ઇસ્લામી કે આલમી મ-દની મર્કઝ ફૈઝાને મદીના બાબુલ મદીના કરાચી મેં જહાં કમોબેશ 2000 મો'તકિફીન થે, ઉન મેં ઝિલઅ ચકવાલ (પંજાબ, પાકિસ્તાન) કે 77 સાલહ મુઅમ્મર બુઝુર્ગ હાફિઝ મુહમ્મદ અશરફ સાહિબ ભી મો'તકિફ હો ગએ. કિબ્લા હાફિઝ સાહિબ કા હાથ ઓર ઝબાન મફલૂજ થે ઓર કુવ્વતે સમાઅત ભી જવાબ દે ચુકી થી. વોહ બડે ખુશ અકીદા થે. ઉન્હોં ને એક બાર ઇફતાર કે ખાને મેં બસદ હુસ્ને ઝન એક મુબલ્લિગ સે જૂઠા ખાના લે કર ખાયા, ઉસી સે દમ ભી કરવાયા, બસ ઉન કે હુસ્ને ઝન ને કામ કર દિખાયા, રહમતે ઇલાહી جَزَاءُ کِي જોશ આયા, અલ્લાહ جَزَاءُ کِي ને ઉન કો શિફાયાબ ફરમાયા. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ ઉન કા ફાલિજ કા મરઝ જાતા રહા. ઉન્હોં ને હઝારોં ઇસ્લામી ભાઈયોં કી મૌજૂ-દગી મેં ફૈઝાને મદીના કે મન્ચ પર ચઢ કર બસદ અકીદત અપને રૂ બ સિહ્હત હોને કી બિશારત સુનાઈ, યેહ નવીદે જાં ફિઝા સુન કર ફઝા “અલ્લાહ અલ્લાહ, અલ્લાહ અલ્લાહ” કી પુરકૈફ સદાઓં સે ગૂંજ ઉઠી. ઉન



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جَسَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِسَاسِ نَعِ مَوْجِا پَر اَعَك باار دُرُودِ پاك پِدا اءلءالء عَزَّوَجَلَّ (ءسِ پَر دس رءلمتوں بءءتا هءِ. (س))

દિનોં કઈ મકામી અખ્બારાત ને ઈસ ખબરે ફરહત અસર કો શાએઅ ક્રિયા.

દા'વતે ઈસ્લામી કી કચ્ચૂમ દોનોં જહાં મેં મય જાએ ધૂમ

ઈસ પે ફિદા હો બચ્યા બચ્યા યા અલ્લાહ મેરી ઝોલી ભર દે

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ઈલાજ નમ્બર 10

સિર્ફ અપને ઐબોં કો દેખિયે : જબ કભી દૂસરે કે ઐબ બયાન કરને કો જી ચાહે ઉસ વક્ત અપને ઉયૂબ કી તરફ મુ-તવજજેહ હો કર ઉન કો દૂર કરને મેં લગ જાના ચાહિયે, ખુદા ેઝ્ઝલ્ કી કસમ ! યેહ બહુત બડી સઆદત મન્દી હૈ. સરકારે દો આલમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે બની આદમ, રસૂલે મુહ્તશમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશદિ ફરમાયા : ઉસ શખ્સ કે લિયે ખુશ ખબરી હૈ જિસે ઉસ કે ઉયૂબ (પર નઝર) ને દૂસરોં કી ઐબજૂઈ સે ફેર દિયા.

(الْفَرْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخَطَّابِ ج ٢ ص ٤٤٧ حَدِيث ٣٩٢٩)

અપને ઐબોં કો યાદ કરો : હઝરતે સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન અબ્બાસ રઝી અલ્લાહુ ટેઆલી ંહેમા કા ફરમાન હૈ : જબ તૂ કિસી કે ઉયૂબ બયાન કરને કા ઈરાદા કરે તો અપને ઐબોં કો યાદ કર લિયા કર.

(ذَمُّ الْغِيْبَةِ لِأَيِّ الدُّنْيَا ص ٩٥ رَقْم ٥٦)

અપને ઐબોં કો જાનને કે બા વુજૂદ.....: હઝરતે સચ્ચિદુના ઝૈદ કુમ્મી વોહ શખ્સ કેસા અજબ હૈ જિસે મા'લૂમ હૈ કે મુઝ મેં ફુલાં ઐબ હૈ ફિર ભી અપને આપ કો અચ્છા ઈન્સાન સમઝતા હૈ જબ કે અપને મુસલ્માન ભાઈ કો સિર્ફ શક (યા સુની સુનાઈ બાત) કી બુન્યાદ પર બુરા આદમી તસવ્વુર કરતા હૈ. પસ અક્લ કહાં હૈ ?

(تَنْبِيْهُ الْمُعْتَرِيْنَ ص ١٩٧)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

जो अपने औबों को जान लेता है : उजरते सय्यि-दतुना राबिआ अ-दविथ्या इरमाती थीं : बन्दा जब अल्लाह रब्बुल ईज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ की मडुबत का मजा यभ लेता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे फुद उस के अपने औबों पर मुत्तलअ इरमा देता है पस इस वजह से वोह दूसरों के औबों में मशगूल नहीं होता. (बल्के अपने औबों की ईस्लाह की तरफ़ मु-तवज्जह रहता है)

(تَنْبِيهِ الْمُفْتَزِينَ ص 197)

छुपी छुई बातों की टटोल मत करो ! : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रडमते आलम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मुअज़्जम है : औ वोह लोगो जो ज़बान से ईमान लाअे और ईमान उन के दिलों में द्वाभिल नहीं हुवा, मुसल्मानों की गीबत न करो और इन की छुपी छुई बातों की टटोल न करो, इस लिये के जो शप्स अपने मुसल्मान भाई की छुपी छुई चीज़ की टटोल करेगा, अल्लाह तआला उस के औब ज़ाहिर इरमा देगा और जिस के अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) औब ज़ाहिर करेगा. उस को रुस्वा कर देगा, अगर्थे वोह अपने मकान के अन्दर हो.

(سُنَنِ ابُو دَاوُدَ ج 4 ص 304 حَدِيث 4880)

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! किसी मुसल्मान के औबों की टोल में नहीं पडना याहिये, रब्बे काअेनात عَزَّ وَجَلَّ पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में ईशाद इरमाता है : وَلَا تَجَسَّسُوا : तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : और औब न ढूंडो. सदरुल अफ़ाज़िल उजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इरमाते हैं : या'नी मुसल्मानों की औबजूई न करो और उन के छुपे छुअे हाल की ज़ुस्त-जू में न रहो जिसे अल्लाह तआला ने अपनी सत्तारी से छुपाया.

(जज़ाईनुल ईरफ़ान, स. 823)

अल्लाह औब पोशी इरमाअेगा : उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ईब्ने उमर रब्बुल आ'ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यार व मददगार छोडता है और जो



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (हदीथ)

अपने भाई की हाजत पूरी करे अल्लाह तआला उस की हाजत पूरी करता है और जो किसी मुसल्मान की तकलीफ़ दूर करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कियामत की तकलीफ़ों में से उस की तकलीफ़ दूर इरमायेगा और जो किसी मुसल्मान की औबपोशी करे तो फुदाये सत्तार عَزَّوَجَلَّ कियामत के रोज उस की औब पोशी इरमाये. (صحيح مسلم حديث 7080 ص 1396)

औब छुपाओ जन्नत पाओ : डरते सय्यिदुना अबू सईद फुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रडमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जो शप्स अपने भाई का औब देष कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाबिल कर दिया जायेगा.

(مُسْنَدُ عَبْدِ بْنِ حَمِيدٍ ص 279 حَدِيثُ 880)

जहन्नम में यीष रडे होंगे ! : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! سُبْحَانَ اللَّهِ ! औब पोशी की इजीलत व अहम्मियत के भी क्या कलने ! जो यीज आभिरत के लिये जिस कदर अहम होगी शैतान उसी कदर उस के पीछे लगेगा. लिहाजा मुसल्मान को मुसल्मान की औब पोशी से रोकने के लिये पूरा जोर लगा देता है और नौबत यहां तक आ पड़ोयी है के आज मुसल्मानों की अक्सरियत मुसल्मानों की औब दरियों और गीबतों में मशगूल है. और अक्सर कोई किसी की ढामी ढकने के लिये तय्यार ही नहीं बिला तकल्लुफ़ बलके बसा अवकात तो इम्प्रिया दूसरों के आगे बयान कर देता है, उन में से अगर किसी ने किसी का औब कभी छुपा भी लिया तो बस आरिजी तौर पर, जूँ ही कुछ नाराजी हुई के जितने भी औब छुपा कर रभे थे सभ पर से अेक दम पर्दा उठा देता है ! आह ! भौड़े आभिरत ही जाता रहा ! यकीनन जहन्नम की सजा सही नहीं जा सकेगी. डरते सय्यिदुना ईसा رُحِمَهُ اللهُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने कहा है : कितने ही सिद्धत मन्द भदन, भूष सूरत येहरे और भीठा भोलने वाली जभाने कल जहन्नम के त-बकात में यीष रडे होंगे !

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص 102)



इरमाने मुस्तफ़ी : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अहमद)

ओरो के औब छोड नजर पूबियो पे रभ

औबो की अपने भाई मगर पूब रभ परभ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत इमान में इसाद पैदा करती है : उजरते सय्यिदुना हसन बसरी जल्दी इसाद पैदा करती है जितनी जल्दी आकिला की बीमारी उस के जिस्म को पराब करती है." (आकिला पडलू में डोने वाले उस डोडे को कडते हैं जिस से गोशत पोस्त (पाल) सड जाते हैं और गोशत उडने लगता है) मज्रीद इरमाया करते : औ इब्ने आदम ! तुम उस वक्त तक इमान की डकीकत को नहीं पा सकते जब तक लोगो के उयूब तलाश करना तर्क न कर दो, जो उयूब तुम्हारे अपने अन्दर पाये जाते हैं तुम उन की इस्लाह शुइअ कर दो और उन औबो को अपनी जात से दूर कर लो. पस जब तुम औसा करोगे तो येड यीज तुम्हें अपनी ही जात में मशगूल कर देगी. और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नजदीक इस तरह का बन्दा सब से जियादा पसन्दीदा है.

(ذم الغيبة لابن أبي الدنيا ص ٩٧٠٩٣ رقم ٦٠٠٥)

अेक नौ मुस्लिम की दईनाक आपबीती : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो !

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तडरीक, दा'वते इस्लामी अडले डक की सुन्नतो बरी तडरीक है, इस के अकाईद औन कुरआनो सुन्नत के मुताबिक हैं, इस से डर दम वाबस्ता रहिये, ان شاء الله عَزَّوَجَلَّ आशिकाने रसूल की सोडबत की ब-र-कत से इमान की डिफ़ाजत का जजभा, नेकियो की तरफ़ रगबत और गीबतो वगैरा गुनाडो से नइरत की सआदत डसिल डोगी. डर डालत में



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مباركات)

ईमान की डिफ़ाजत ज़रूरी है. अगर ईमान पर ખातिमा न हुआ तो ईबादत कुछ भी काम न आयेगी, इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : है : يَا'नी आ'माल का दारो मदार ખातिमे पर है. (بخاری ج ٤ حدیث ٦٦٠٧) याहे कैसी ही आफ़त आन पडे ईमान हरगिज मु-तज़द्विजल नहीं होना चाहिये. इस ज़िम्न में “**अक नौ मुस्लिम की दईनाक आपबीती**” सुनने से तअव्लुक रખती है युनान्ये देहली (हिन्द) के अलाके सीलम पूर के मुकीम 22 सालह नौ जवान के कबूले ईस्लाम का ईमान अइरोज वाकिआ उन्ही की ज़बानी सुनिये. उन का कहना कुछ यूं है : मैं अक गैर मुस्लिम ખानदान से तअव्लुक रખता था, मेरे वालिद की प्वाहिश थी के मैं डॉक्टर बनूं, इस सिव्सिले में उन्हों ने मुझे 1994 सि.ई. में अपने डॉक्टर दोस्त के अस्पताल भेज दिया. वोह गैर मुस्लिम डॉक्टर मुसल्मानों से इस कदर नइरत करता था के उन के हाथों की छूई हुई चीज़ तक ખाना या पीना गवारा न करता. मेरी भी येही आदत बन गई के सारा दिन प्यासा रहना मन्ज़ूर मगर मुसल्मानों के हाथ से पानी पीना ना मन्ज़ूर. कई साल यूंही गुज़र गये. अक रोज सज़ा ईमामे में मल्बूस अक ईस्लामी भाई आंभों के ओपरेशन के लिये वहां आये. उन की ज़बान व निगाह की डिफ़ाजत का अन्दाज़ और हुस्ने अप्लाक देਖ कर रइता रइता मैं उन के करीब हो गया. वोह मुझ पर वक्तन इ वक्तन ईन्फ़िरादी कोशिश करते रहते. कुछ दिनों बाद वोह अस्पताल से गये गये मगर मेरा उन से राबिता रहा और मैं उन के पास आता जाता रहा.

उन के पास अक ज़मीम किताब थी जिस का नाम “**इंजाने सुन्नत**” था, जब वोह थोक वगैरा पर उस का दर्स देते तो ईन्फ़िरादी कोशिश करते हुअे मुझे भी दर्स में शिर्कत की दा'वत पेश करते, मैं सुनने बैठ जाता. इंजाने सुन्नत के दर्स की ब-र-कत से कुछ ही दिनों में मेरा दिल मज़हबे ईस्लाम के लिये नइरत के बज्जअे महब्बत महसूस करने लगा. अब मैं मुसल्मानों के साथ ખा पी भी लेता और मसाजिद व अज़ान का अेहतिराम करता. 2004 सि.ई. में अक रोज दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला “**गुस्व का तरीका**” पढा मगर सहीह तरीके से समज न सका. उन ईस्लामी भाई से पूछा तो उन्हों ने मुझे रिसाले की मदद



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (કુઆલ)

સે તફસીલન તહારત કે મસાઈલ સમઝાએ ઓર ફરમાયા કે હકીકી પાકી બિગૈર મુસલ્માન હુએ હાસિલ નહીં કી જા સકતી. વોહ વક્ત મેરી સઆદતોં કી મે'રાજ કા થા, ઉન કે અલ્ફાઝ ને મેરી ઝિન્દગી કા રુખ તબ્દીલ કર દિયા, મેં ને કુછ દેર સોયા ઓર ફિર “કલિમએ તય્યિબા” પઢ કર દાઈરએ ઈસ્લામ મેં દાખિલ હો ગયા. કુફ્ર કે અંધેરે છટ ગએ ઓર મેરા દિલ નૂરે ઈસ્લામ સે જગ-મગાને લગા.

મેં તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક દા'વતે ઈસ્લામી કે સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ મેં પાબન્દી સે શિર્કત કરને લગા ઓર હુઝૂર ગૌસે આ'ઝમ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْكَلِيمِ કા મુરીદ હો કર સિલ્સિલએ આલિયા કાદિરિય્યા ર-ઝવિય્યા મેં દાખિલ હો ગયા ઓર બા જમાઅત નમાઝેં પઢને લગા, મગર કભી કભી શૈતાન મઝ્હબે ઈસ્લામ કે બારે મેં વસ્વસે ડાલતા થા. એક રોઝ દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કા મત્બૂઆ રિસાલા “બુદ્દા પુજારી” પઢા તો 18 જૂલાઈ 2005 સિ.ઈ. 18 જૂલાઈ 2005 સિ.ઈ. તમામ વસ્વસોં કી જડ કટ ગઈ. ﷺ કો આશિકાને રસૂલ કે હમરાહ મ-દની કાફિલે મેં સુન્નતોં ભરે સફર કી સઆદત મિલી. ઈસ સે પહલે મેં ઝરા ઝરા સી બાત પર ઘર વાલોં સે નારાઝ હો જાતા, ખાના મિઝાજ કે ખિલાફ મિલતા તો ખૂબ શોર મચાતા થા, મ-દની કાફિલે મેં સફર કી બ-ર-કત સે યેહ આદત ભી નિકલ ગઈ. ઘર વાલે મેરી ઈસ તબ્દીલી પર હૈરાન થે ઓર મઝ્હબે ઈસ્લામ સે મુ-તઅસ્સિર હો રહે થે. મેં દાઢી શરીફ કી સુન્નત અપનાને કે સાથ સાથ સર પર સબ્ઝ ઈમામા ભી બાંધને લગા મગર ઘર જાતે વક્ત ઉતાર લેતા.

ચન્દ દિનોં બા'દ બા'ઝ લોગોં ને મેરે ખિલાફ ઘર વાલોં કા મન્ફી ઝેહન બનાયા જિસ પર ઘર મેં સખ્તી શુરૂઅ હો ગઈ, અબ મુઝે બાત બાત પર ટોકા જાતા બલ્કે મારને સે ભી દરેગ ન ક્રિયા જાતા. મેં ને તંગ આ કર ઘર છોડ દિયા મગર કુછ હી રોઝ બા'દ ભાઈ વગૈરા ને બહાને સે બુલવાયા ઓર ઝબર દસ્તી નાઈ (હજામ) કે પાસ પકડ કર લે ગએ. જબ મેં ને ઉસ નાઈ કો બતાયા કે મેં મુસલ્માન હો ચુકા હૂં તો વોહ ડર ગયા ઓર ઉસ ને દાઢી મૂંડને સે ઈન્કાર કર દિયા. મેરે ઘર વાલે ભી દાઢી કાટને સે ડર રહે થે મગર અફસોસ કે ઈલ્મે દીન સે બે બહરા એક મુસલ્માન ને ઘર વાલોં સે કહા :



करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत
हे . (अबुसल्लि)

“दाढी रभना ज़रूरी नहीं है, हमें देखो ! लापों मुसल्मान कहां दाढी रभते हैं ?” येह सुन कर कुर्क की तारीकियों में घिरे हुअे घर वालों का दिल अेक दम भुल गया और उन्हों ने सोते में भ्लेड से मेरी दाढी मूंडना शुर्अ कर दी. मेरी आंभ भुल गई, दाढी बयाने की जिदो जहूद में मेरा येहरा लहू लुखान हो गया, मैं रो रो कर उन्हेँ ईस काम से बाज रहने की ईस्तिजाअें करता रहा मगर उन्हों ने मेरी अेक न सुनी और दाढी मूंड कर ही दम लिया. येहरे से बहने वाला लहू मेरे आंसूओं में शामिल हो गया. उन्हों ने ईसी पर बस नहीं किया बल्के मुजे अेक कमरे में डैद कर दिया. तन के कपडों के ईलावा मेरे पास और कुछ न था, मेरी निगरानी की जाती मगर मैं किसी न किसी तरह छुप कर नमाजें अदा कर लेता. नींद की कुरबानी दे कर भी अपना वुजू काईम रभता ताके मौकअ मिलने पर नमाज अदा कर सकूं. मेरा कोई पुरसाने डाल न था न ही कोई हमदई था के हमदई के दो भीठे बोल सुना कर मेरी डारस बंधाता. तकरीबन 2 माह ईसी तरह गुजर गअे यहां तक के 2-मजानुल मुबारक का मुकदस महीना तशरीफ ले आया. आह ! मुजे कौन स-हरी इराहम करता ! 2-मजानुल मुबारक का रोजा छोडना मुजे गवारा न था युनान्ये मैं ने बिगैर स-हरी ही रोजा रभ लिया. शाम तक जब मैं ने जाना नहीं जाया तो घर वालों को तश्वीश लुई. वोह जम्अ हो कर आअे और जाना जाने के लिये जोर देने लगे. मैं ने कहा : “रभ दो मैं जा लूंगा.” उन के जाने के बा’द मैं ने मजीद ईस्वार से बयने के लिये सालन ईधर उधर कर दिया और रोटियां जेब में डाल लीं मगर घर वालों को किसी तरह शक हो गया और उन्हों ने दिन के वक्त जबर दस्ती मुजे जाना भिलाया, मैं दिल ही दिल में कुढता रहा मगर मजबूर था, यूं मैं पांय रोजे न रभ सका.

आभिरे कार किसी सबब से घर वालों की तरफ से कुछ ढील मिली और मैं दोबारा अस्पताल जाने लगा. मैं बिगैर स-हरी रोजे की नियत कर लेता और ब जाहिर दो पहर का जाना साथ ले जाता मगर शाम के वक्त उस से ईफ्तारी करता. ईसी दौरान मैं ने ईस्लाम कबूल करने के मु-तअख्लिक कानूनी कागजात भी मुकम्मल करवा लिये मगर घर वालों को पता नहीं चलने दिया. मैं घर वालों से छुप कर जिस मस्जिद में नमाज अदा करने जाता था वहां की ईन्तिजामिया ने षौफ़जदा हो कर मुजे मन्अ कर दिया के आप यहां न



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोँयता है. (मुरान)

આયા કરે, કહીં ફસાદ ન હો જાએ. મેરા દિલ તો બહુત દુખા કે મેં મુસલ્માન હોતે હુએ ભી હાલાત કી સિતમ ઝરીફી કી વજહ સે મસ્જિદ મેં દાખિલે સે રોક દિયા ગયા હું મગર બે બસ વ લાચાર થા ક્યા કરતા ! દા'વતે ઈસ્લામી કા મ-દની મર્કઝ વહાં સે બહુત દૂર થા ઓર હાલાત કે પેશે નઝર મેં ને ખુદ હી ઉન્હેં રાબિતા કરને સે મન્અ કર રખા થા.

પરેશાનિયોં કે તસલ્સુલ ને મેરે આ'સાબ શલ કર દિયે થે, મુઝે કોઈ ઐસા હમદદ વ ગમ ગુસાર ભી નહીં મિલતા થા કે જિસ કે કન્ધે પર સર રખ કર ચન્દ અશક બહા કર અપને દિલ કા બોઝ હલકા કર સકું, આહ ! મેં બિલ્કુલ તન્હા થા, ઐસે વક્ત મેં મુઝે નમાઝ પઢને મેં બડા સુકૂન ઓર હૌસલા મિલતા થા, મેરી ઝબાન પર દુર્રદ શરીફ જારી રહતા. અબ મેં ને હિમ્મત કર કે 3 કિલો મીટર દૂર “જનતા કોલોની” કી મસ્જિદ મેં બા જમાઅત નમાઝ અદા કરને કે લિયે જાના શુરૂઅ કર દિયા. ઘર વાલે એક બાર ફિર નર્મ પડ ચુકે થે. એક રોઝ મહલ્લે કે કિસી નામ નિહાદ મુસલ્માન ને ઘર વાલોં કો અચ્છા લગાને કે લિયે ઉન કા કુછ ઈસ તરહ ઝેહૂન ખરાબ કરને કી કોશિશ કી કે “હમ ભી આખિર મુસલ્માન હેં, કૌન સા રોઝ રોઝ નમાઝ પઢતે હેં. બસ જુમુઆ યા ઈદ કી નમાઝ પઢ લિયા કરતે હેં ! લગતા હૈ તુમ્હારા બેટા કિસી જિન્ન કો કાબૂ કરને કા અમલ કર રહા હૈ, યેહ પાગલ હો જાએગા તો તુમ્હેં પતા ચલેગા.” ઉસ કી બાતેં સુન કર ઘર વાલે ઘબરા ગએ ઓર ફિર સે સપ્તી શુરૂઅ કર દી હત્તા કે દુર્રદ શરીફ વગૈરા પઢને કે લિયે મેરે હોટ હિલાને પર ભી પાબન્દી લગા દી ગઈ. ઘર વાલે મુઝે પકડ કર એક આમિલ કે પાસ લે ગએ. ઉસ ને ભી કહ દિયા કે ઈસ પર “અ-સરાત” હેં !

ઈન હાલાત સે મેં બહુત દિલ બરદાશતા હુવા ઓર શાયદ મેં દોબારા કુફ કે અંધેરોં મેં ખો જાતા મગર રબુલ અકરમ عَزَّوَجَلَّ કા કરમ શામિલે હાલ રહા કે અંધેરોં મેં ને દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ મેં આશિકાને રસૂલ કી ઝબાની મહબૂબે રબ્બે ઝુલ જલાલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ઓર હઝરતે સય્યિદુના બિલાલ પર હોને વાલે મઝાલિમ કી દાસ્તાનેં સુન રખી થીં, ઉન મઝાલિમ કે સામને મેરી તકાલીફ કુછ ભી નહીં થીં, અપને મક્કી મ-દની આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી આઝમાઈશોં ઓર ઉન પર કિયે જાને વાલે બે મિસાલ સબ્ર કો યાદ કર કે મેરા ઈમાન ઓર મઝબૂત હો જાતા.



करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रहमत नाज़िल करमाता है. (ज़रान)

अेक रोज़ में छुप कर दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों तरे ईजतिमाअ में जा पड़ोया. ईत्तिलाअ पा कर घर वाले आ धमके और मुजे वहां से उठा कर ले गअे. न मैं ने कोई मुजा-हमत की और न किसी को करने दी के इसाद होगा. घर ले जा कर मुजे ईतना मारा गया के मैं नीम बेहोश हो गया. होश आने पर मैं ने घर छोडने का अज़्मे मुसम्मम कर लिया डालांके उ दिन पडले ही मेरी सरकारी नोकरी की तकदुरी का ऑर्डर मौसूल हुवा था जिस के लिये मैं ने सालों मेहनत और कोशिशें की थीं. अब अेक तरफ़ जाती मकान, मां बाप और रोशन मुस्तफ़िल और दूसरी तरफ़ ईमान जैसी अजीम दौलत ! मगर मैं ने रब्बुल अकरम عز وجل के करम से ईमान की डिफ़ाजत की खातिर 21 मार्च 2007 सि.ई. को अपनी मरज़ी से डिजरत की और अपना घर छोड दिया.

الحمد لله عز وجل आज मैं हिन्द के मुज्तलिफ़ शहरों में आशिकाने रसूल के हमराह म-दनी काफ़िलों में सुन्नतों तारा सफ़र कर रहा हूं और घर वालों की सप्ती के बाईस रह जाने वाली तमाम नमाज़ें भी कज़ा कर चुका हूं. मेरी प्वाडिश थी के मैं भी कभी नमाज़ में ईमामत की सआदत डसिल कर सकूं. الحمد لله عز وجل म-दनी काफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से यन्द सूरतों को दुरुस्त मफ़ारिज के साथ याद करने और नमाज़ के ज़री मसाईल सीपने में काम्याब हो चुका था. लिडाला 13 अप्रिल 2007 सि.ई. को मेरी मुराद बर आई और मुजे हिन्द के "जांसी" नामी शहर में इज की जमाअत में ईमामत की सआदत डसिल हो गई. दा'वते ईस्लामी पर मेरी जान कुरबान के ईस ने कुई की आगोश में पलने वाले को न सिई दौलते ईमान से नवाजा बल्के ईमामत के मुसल्ले पर ला डडा किया. येड सब मेरे रब्बुल ईज़ज़त عز وجل की रहमत, और ताजदारे रिसालत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की ईनायत है.

ईन नौ मुस्लिम ईस्लामी त्वाई के बयान का मज़ीद फुलासा है के दौराने सफ़र "कन्नोज़" शहर के मुसल्मानों के महल्ले "कागज़ियानी" डज़िर हुवा, वहां की "पुरानी मस्जिद" के सामने वाला मैदान लोगों से तारा हुवा था, कोई ताश भेलने में तो कोई जूअे में मस्ज़ूफ़ था. नमाजे अस्र के बा'द मैं उन लोगों के पास नेकी की दा'वत देने के लिये डज़िर हुवा यकायक अेक शप्स ईन्तिडार्थ गुस्से की डालत में डडा हो



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (त्रिबीब)

गया और मुझे गन्दी गन्दी गालियां देते हुअे उांटने लगा के किसी और को ज़ा कर समझाओ हमें समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है. एतने में अेक बूढे शप्स ने उस से कडा : “ईस की भात तो सुनो के येह क्या कडना याहता है ?” युनान्ये मैं ने नेकी की दा'वत पेश की और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल में सीजे हुअे नमाज़ पढने के इजाईल और न पढने से मु-तअव्लिक वईदें सुनाई, जब मइसूस हुवा के लोहा गर्भ हो युका है तो मैं ने कडा “जो भातें मैं आप को बता रहा हूं येह तो आप हज़रात को मुझे बतानी याहिएं क्यूंके मैं ने अभी कुछ अर्सा कबल ही ईस्लाम कबूल किया है. इर मैं ने मुप्तसरन अपने ईस्लाम कबूल करने और ईस दौरान आने वाले इम्तिहानात के वाकिआत सुनाने शुर्अ किये तो वहां मौजूद हज़रात शिदते ज़ज्बात से रोने लगे हत्ता के मुझे गालियां बकने वाला शप्स रोते हुअे कडने लगा : अस करो वरना मेरा दम निकल जायेगा. अब येह तमाम हमारे साथ मस्जिद में यलने के लिये तय्यार थे. नमाजे अस्र में हम दो नमाज़ी थे मगर हैरत अंगेज़ तौर पर नमाजे मगरिब में उ सकें बन गईं. अेक बुजुर्ग इरमाने लगे : “मैं ईन लोगो को देभते देभते बूढा हो गया हूं आज पहली बार ईन्हें मस्जिद में देभ रहा हूं.”

काकिरो को यलें, मुशिरको को यलें दा'वते दीन दें, काकिले में यलो

काकिर आ जायेंगे, राडे उक पायेंगे إِنَّ شَاءَ اللهُ यलें काकिले में यलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत से तौबा का तरीका : अह्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नदामत के साथ तौबा व इस्तिफ़ार कीजिये. जिस जिस की गीबत की है उस के लिये दुआअे मग्किरत कीजिये. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : गीबत के कइक़ारे में येह है के जिस की गीबत की है, उस के लिये इस्तिफ़ार करे, येह कहे : اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَآلِهِ يَا'नी ईलाही ! हमें और उसे अप्श दे. (००७ हदीथ २९६ ص २ ج १) الكِبْرِيُّ لِلْبَيْهَقِيِّ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शाप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (76)

हों तो भशव-रतन अर्ज है के हो सके तो रोजाना वक्तन इ वक्तन यूं कडिये : या अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने आज तक जितनी भी गीबतें की हैं उन से तौबा करता हूं. या अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी और आज तक मैं ने जिन जिन मुसल्मानों की गीबत की है उन सब की अपने मडभूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके मग़िरत इरमा. (याद रहे ! कबूलिय्यते तौबा के लिये येह भी शर्त है के उस गुनाह से दिल में बेजारी और आयन्दा न करने का अज़्म हो.)

मेरी और जिन जिन की मैं ने की है गीबत या जुदा

मग़िरत इरमा दे, इरमा सब पे रहमत या जुदा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बन्दे से भी मुआफ़ी मांगे : जिस की “गीबत” की उस को पता नहीं यला तो उस से मुआफ़ी मांगना जरूरी नहीं. अद्लाहु गइफ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में तौबा व इस्तिफ़ार कीजिये और दिल में पक्का अहद कीजिये के आयन्दा कभी किसी की गीबत नहीं करूंगा. अगर उस को मा'लूम हो गया है तो उस के पास जा कर गीबत के मुकाबिल उस की जाँज ता'रीफ़, और उस से मडभूबत का इजहार कीजिये, ताके उस का दिल शुश हो और आजिजी के साथ अर्ज कीजिये के मैं ने जो आप की गीबत की है उस पर नादिम हूं मुजे मुआफ़ इरमा दीजिये. अब बिलइर्ज वोह मुआफ़ न भी करे तब भी اللَّهُمَّ إِنِّي آخِرَتِمْ مِّنْ مُّوَا-अजा न होगा. हां अगर रस्मी तौर पर (SORRY कह दिया) बिला इज्लास मुआफ़ी मांगी और उस ने मुआफ़ कर भी दिया तब भी आखिरत में मुवा-अजे (या'नी पूछगछ) का भौफ़ बाकी है.

(माभूज अज : बहारे शरीअत, डिस्सा : 16, स. 181)

सदका प्यारे की डया का के न ले मुज से डिसाब

बाश बं पूछे लजाओ को लजना क्या है



इरमाने मुस्तफ़ी صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरहे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

तौबा के बा'द जिस की गीबत की थी उस को पता चल गया तो ? : गीबत से तौबा कर लेने के बा'द मुग्ताब या'नी जिस की गीबत की थी उस को पता चलता तो अब क्या करना चाहिये ! इस ज़िम्न में मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान رَحْمَةُ الرَّحْمٰن عَلَيْهِ इतावा र-अविय्या जिल्द 24 सईहा 411 पर नकल करते हैं : रौ-जतुल उ-लमा में है के मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा के अगर गीबत उस शप्स तक नहीं पछोंथी जिस की गीबत की गई थी तो गीबत करने वाले के लिये तौबा इअदेमन्ट होगी या नहीं ? उन्हों ने इरमाया : हां. (इअदेमन्ट होगी) क्यूंके उस ने बन्दे के हक के मु-तअद्लिक होने से पहले तौबा कर ली है, गीबत बन्दे का हक (या'नी हुक्कुल इबाद में शामिल) उस वक्त होगी जब उस तक पछोंथ जायेगी. मैं ने कहा के अगर तौबा के बा'द उस शप्स तक गीबत पछोंथ जाये ? इरमाया के उस की तौबा बातिल नहीं होगी बल्के अद्लाह तआला द्योनों को बप्श देगा. गीबत करने वाले को तौबा की वजह से और जिस की गीबत की गई उसे उस तकलीफ़ की वजह से जो उसे गीबत सुन कर हुई है क्यूंके अद्लाह तआला करीम है उस के मु-तअद्लिक येह नहीं कहा जा सकता के वोह किसी की तौबा कबूल इरमा कर रद इरमा दे बल्के द्योनों को बप्श देगा.

(منح الرّوض للقارى ص ٤٤٠)

उर था के इस्यां की सज़ा, अब होगी या रोजे जज़ा

दी उन की रहमत ने सदा, येह ल्मी नहीं वोह ल्मी नहीं

जिस की गीबत की उस को पता चल गया..... इर मर गया : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي عَلَيْهِ इरमाते हैं : जिस की गीबत की उस को पता चल गया और अब वोह मर गया या गाईब हो गया उस से किस तरह मुआफ़ी मांगे ? येह मुआ-मला बहुत दुश्वार हो गया !



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़रत है. (मजिह)

दुन्या ही में मुआफ़ करवा लेने में आइय्यत है : सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इब्रत निशान है : जिस के जिम्मे अपने त्माई का आबज़ वगैरा किसी बात का मजलिमा (या'नी जुल्म) हो, उसे लाजिम है के यहीं उस से मुआफ़ी याह ले कबल उस वक्त के आने के, के वहां न दीनार होंगे और न द्दिरहम अगर इस के पास कुछ नेकियां होंगी तो ब कदर उस के हक के इस से ले कर उसे दी जायेंगी वरना उस के गुनाह इस पर रभे जायेंगे.

(صحيح بخارى ج ٢ ص ١٢٨ حديث ٢٤٤٩)

सब ने सई महशर में ललकार दिया हम को

औं भे कसों के आका अब तेरी दुहाई है

बोह्तान की ता'रीफ़ : किसी शप्स की मौजू-दगी या गैर मौजू-दगी में उस पर जूट बांधना बोह्तान कहलाता है. (الْحَدِيثُ النَّدِيَّةُ ج ٢ ص ٢٠٠) इस को आसान लफ़्जों में यूं समजिये के बुराई न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या इ बड़ वोह बुराई उस की तरफ़ मन्सूब कर दी तो येह बोह्तान हुवा म-सलन पीछे या मुंह के सामने रियाकार कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो त्मी तो आप के पास कोई सुबूत न हो क्यूंके रियाकारी का तअव्लुक बातिनी अमराज से है लिहाजा इस तरह किसी को रियाकार कहना बोह्तान हुवा.

बोह्तान से तौबा का तरीका : बोह्तान से तौबा करे इस तौबा में तीन बातों का पाया जाना जरूरी है : **1** आयन्दा बोह्तान को तर्क करने का पक्का इरादा करना **2** जिस का हक ज़अेअ किया, मुश्किन हो तो उस से मुआफ़ी याहना म-सलन साहिबे हक जिन्दा और मौजूद है नीज मुआफ़ी मांगने से कोई जगडा या अदावत पैदा नहीं होगी **3** (जिन) लोगों के सामने बोह्तान लगाया उन) के सामने अपने जूट (या'नी बोह्तान) का इकरार करना या'नी येह कहना के जो मैं ने बोह्तान लगाया था उस की कोई हकीकत नहीं. (الْحَدِيثُ النَّدِيَّةُ وَ الطَّرِيقَةُ الْحَمْدِيَّةُ ج ٢ ص ٢٠٩)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुअज़ पर अेक दुइइ शरीफ़ पढता है अल्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुइ पहाउ जितना है. (अज़्ज़)

ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 सइहात पर मुशतमिल किताब, “अहारे शरीअत” हिस्सा 16 सइहा 181 पर सदरुशरीअह, अदरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ’उमी अरुरी है अल्ले जिन के सामने अोइतान बांधा है उन के पास ज़ा कर येह कलना अरुरी है के में ने जूट कहा था ज़ो इलां पर में ने अोइतान बांधा था. (अहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 181) नइस के लिये यकीनन येह सप्त गिरां है मगर दुन्या की थोडी सी जिल्लत उठानी आसान मगर आभिरत का मुआ-मला इन्तिहाई संगीन है, अुइअ की कसम ! दोज़अ का अज़ाअ अरदाशत नहीं उो सकेगा. लिहाज़ा पढिये और लरजिये : **अोइतान का अज़ाअ** : नअिये रहमत, शईअे उम्मत, शह-शाहे नुअुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : ज़ो किसी मुसलमान की अुराई अयान करे ज़ो उस में नहीं पाई जाती तो उस को अल्लाह उरस वक्त तक दोज़अियों के कीयउ, पीप और अून में रअेगा जअ तक के वोह अपनी कही हुई आत से न निकल आअे.

(سُنَن ابوداؤد ج ۳ ص ۴۲۷ حدیث ۳۰۹۷)

गुनाह के ईलाम का अज़ाअ : लोगों पर गुनाहों की तोइमत लगाने वालों के अज़ाअ की अेक दिल् खिला देने वाली रिवायत मुला-हज़ा उो युनान्ये जनाअे रिसालत मआअ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अ्वाअ में दअे हुअे कई मनाजिर का अयान इरमा कर येह भी इरमाया के कुछ लोगों को उअानों से लटकाया गया था. में ने ज़िअ्रईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से उन के अारे में पूछा तो उनहों ने अताया के येह लोगों पर अिला वजह ईलामे गुनाह लगाने वाले हैं.

(شَرْحُ الصُّدُور ص ۱۸۲)

शक्की मिआजों को तम्बीह : ज़ो शक्की मिआज औरतें अपने मईों पर तोइमतें धरतीं और ईस तरह की आतें करतीं हैं के ❀ किसी औरत के यक्कर में है ❀ सब पैसे उसी को दे आता है वगैरा यूं ही ज़ो वहमी मई अपनी औरतों पर ईस तरह गुनाह



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये इस्तिज़ार करते रहेंगे. (अ. १)

की तोड़मते लगाते हैं के ❀ इस की किसी के साथ “आशनाई” है ❀ अपने आशना को झोन करती है ❀ उस से मिलती है ❀ गन्दे काम करवाती है वगैरा. उन को बयान कर्दा इल्जामे गुनाह के अजाब की रिवायत से इब्रत हासिल करनी चाहिये. इस जिम्न में अेक इब्रत अंगेज़ डिक्वायत मुला-हजा हो युनान्ये

औरत पर तोड़मत लगाने के सबभ हलाकत : हजरते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाईई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی شَرْحُ الصُّدُور में नकल करते हैं : अेक शप्स ने ज्वाब में जरीर भ-तझी को देखा तो पूछा : يَا مَعْزُومٌ لِمَ اَصْلَحَ اللهُ بِكَ يا'नी अल्लाह उल्लाह ने तुम्हारे साथ क्या मुआ-मला किया ? तो उन्हों ने कहा : मेरी भगि़रत कर दी. मैं ने पूछा : भगि़रत का क्या सबभ बना ? कहा : उस तक़बीर कलने पर ज़े मैं ने अेक जंगल में कही थी. मैं ने पूछा : इरज़दक का क्या हुवा ? तो उन्हों ने कहा : अइसोस पाक दामन औरतों पर तोड़मत लगाने के बाईस वोह हलाकत में गिरि़तार हुवा.

(شَرْحُ الصُّدُور ص ٢٨٥، البداية والنهاية ج ٦ ص ٤٠٩)

हाअे ! हाअे ! हाअे ! हम ने न जाने जिन्दगी में कितनों पर बोहतान बांधे होंगे !
आह !

हर जुर्म पे ज़े याहता है इट के रोगि

अइसोस मगर दिव की कसावत¹ नहीं जती

अेक दूसरे को गीबत से बयाने का तरीका : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! जिन जिन भुश नसीबों का येह जेहन बन रहा हो के हमें गीबत के मूज़ी मरज से छुटकारा पाने के लिये कोशिशें तेज़ तर कर देनी हैं वोह आपस में तै कर लें के हम में से अगर कौनो कोई गीबत शुरुअ कर दे तो ज़े भौजूद हो वोह अपनी कुव्वत के मुताबिक ज़मान से टोक कर रोक दे और तौबा करने का कहे नीज़ अव्वल आभिर صَلَّوْا عَلَی الْحَبِیْب ﷺ

1 : सप्तौ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरइ पाक पढा अल्लाह उरउ (उस पर दस रइमतें भेजता है. (५८)

कह कर दुरइ शरीफ़ पढाने के साथ कहे : “تُوبُوا إِلَى اللَّهِ!” (या'नी अल्लाह उरउ की तरफ़ तौबा करो !) येह सुन कर गीबत करने वाला कहे : اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ (या'नी में अल्लाह तआला से अफ़िश याहता हूं) اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ (उस तरह हाथों हाथ तौबा की सआदत मिल जाअगी. जिन्हों ने गीबत करते न सुना हो उन से अहतियात लाजिमी है, आवाज व अन्दाज जैसे न हों के जिन को पता न था उन को भी मा'लूम हो जाअे के हुलां ने مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ गीबत की.

किसी को काला कडना भी गीबत है : हमारे बुजुगाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِينِ तौबा के मुआ-मले में बिहकुल नहीं शरमाते थे युनान्ये हुजुतुल इस्लाम उतरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي نकल इरमाते हैं : उतरते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِين ने अक शप्स का जिक करते हुअे इरमाया : वोह आदमी सियाह इम (या'नी काला) है इर इरमाया : “اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ” या'नी “में अल्लाह तआला से अफ़िश तलब करता हूं” में समजता हूं के में ने उस की गीबत की है. (احياء العلوم ج ۳ ص ۱۷۸)

बिगैर शरमाअे इरन तौबा कर लेनी याहिये : भीठे भीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुजुगाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين का भौंके पुदा भरलभा ! इतने उबर दस्त बुजुग ने इरन सब के सामने तौबा कर ली इस में येह भी दर्स मिला के पुदा न प्वास्ता कभी लोगों के सामने गीबत वगैरा गुनाह सरजद हो जाअे तो अहसास होते ही बिगैर शरमाअे सब के सामने तौबा कर ली जाअे. अगर बा'द में अहसास हो गया और तौबा कर ली तो जिन जिन के सामने गीबत का गुनाह किया उन को अपनी तौबा पर मुत्तलअ कर दिया जाअे. तौबा का येह काइहा जेहन में रभिये जैसा के हदीसे पाक में है : सुल्ताने दौ जहान, मदीने के सुल्तान, रइमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने इअ्रत निशान है : जब तुम कोइ गुनाह करो तो तौबा कर लो, اَلْسِرُّ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَةُ بِالْعَلَانِيَةِ या'नी पोशीदा गुनाह की तौबा पोशीदा और अलानिया गुनाह की तौबा अलानिया. (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ۲۰ ص ۱۰۹ حديث ۳۳۱)



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुअ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रूनी)

ईस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा के बिला ईजाजते शर-ई पीठ पीछे किसी मुसल्मान के जिस्मानी औब बयान करना म-सलन ❀ काला ❀ भूरा ❀ बढ सूरत ❀ कोढी ❀ गन्जा ❀ मोटा ❀ लम्बा ❀ ठिगना ❀ काना ❀ अन्धा ❀ बहरा ❀ गूंगा ❀ बांडा ❀ भेंगा ❀ लूला ❀ लंगडा ❀ कुबडा कडना गीबत हे. भा'ज ईस्लामी भाई काली रंगत वाले ईस्लामी भाई को **बिलाली** कहते हैं, बिला ज़रत येह भी न कडा जाअे के पीठ पीछे से कडना गीबत में शुमार होग़ा क्यूंके जिस को "बिलाली" के मुरादी मा'ना मा'लूम होंगे या'नी जो समजता होग़ा के मैं काला हूं ईस लिये मुजे "बिलाली" कह रहे हैं तो उस को भुरा लग सकता हे. हां अगर किसी मप्सूस ईस्लामी भाई की पडयान ही बिलाली हे तो ईस निय्यत से बिलाली कडने में हरज नही.

गुनाह डोते ही झौरन तौबा करना वाजिब हे : डरते सय्यिदुना ईमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرَى से मन्कूल हे : जूं ही गुनाह सादिर डो झौरन तौबा कर लेना वाजिब हे प्वाह सगीरा गुनाह ही क्यूं न डो. (شَرْحُ النَّوَوَى عَلَى صَحِيحِ مُسْلِمِ الْجُزْءِ السَّابِعِ عَشَرَ ص ٥٩)

किसी की बात गीबत न थी मगर आप ने गीबत कड दी तो ? : किसी बात को गुनाह भरी गीबत करार देने के लिये मा'लूमात होना ज़रूरी हे अगर आप ने बे सोये समजे किसी की बात को गीबत ठहराया और उस के मुर-तकिब को गुनहगार करार दिया और वोह गुनहगार नही था तो ईस सूरत में आप गुनहगार होंगे तौबा उस पर नही आप पर वाजिब डो जाअेगी ! बहर डाल आपस में येह ज़र तै कर लीजिये के गीबत न डो रही डो फिर भी अगर किसी ने गलत इहमी के सबब ! كَلَّمْتُ إِلَهِي कड दिया तब भी डम "जगडे" की कैफ़ियत पैदा न होने देंगे वरना शैतान को दूसरे आविये से या'नी लडवाने और हिलों में भुग़ल व कीना डलवाने के जरीअे गुनाह करवाने का मौकअ डाय आ सकता हे.

जगडे से बयने की इज़ीलत : भुदा न प्वास्ता कभी डो ईस्लामी भाई लड पड़ें तो मौकअ पा कर तीसरा भुलन्द आवाज से صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ कड दे, डोनों दुरद शरीफ़



ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ﷺ : جِس كِے پاس مِیرا جِيكِ ہُوا اُور اُس نِے مُجھ پَر دُڑدِے پاك ن پدا
تلكِ كِيكِ وَه لُكِ بَد بَپتِ لُو گَيا. (ص: ۱۸)

ਪਠਤੇ ਛੁਐ ਸੁਲੁਛ ਕਰ ਲੇਂ. ਜੋ ਛਕ ਪਰ ਛੋਨੇ ਕੇ ਆ ਵੁਜ਼ੂਫ ਨਹੀਂ ਝਗੜਤਾ ਉਸ ਕਾ ਤੋ
بِوِذَا لُيَا پَار هِے. یُنَانِیْے مَدِیْنِے كِے سُوْلْتَانِ, رَحْمَتِے دِوِ جَلْدَانِ
مُكْتَمِلِے كَا فِرمَانِے جَنْنَتِ نِشَانِ هِے : جੋ ਛਕ ਪਰ ਛੋਨੇ ਕੇ ਆ ਵੁਜ਼ੂਫ ਝਗੜਾ
ਨਹੀਂ ਕਰਤਾ ਮੈਂ ਉਸ ਕੇ ਲਿਯੇ ਜੰਨਤ ਕੇ (ਅਨ੍ਦੜਨੀ) ਕਨਾਰੇ ਮੇਂ ਐਕ ਘਰ ਕਾ ਝਾਮਿਨ ਛੂੰ.

(سُنَنِ ابُو دَاوُدَ ج ۴ ص ۳۳۲ حَدِيثِ ۴۸۰۰)

اللهِ كُحْنِے كِی فِزِیْلَتِ : لوگوں كِی مَؤْجُ-دِغِی مِےਂ هَر تَرَه كِی مَآ'سِیْیَتِ,
بَلْكَے نَا پَسَنْدِیْدَا ل-ر-كْتِ م-سَلْوَنِ كُؤُؤَلِ گِوِئِ سَاَدِیْر لُوْنِے پَر بَلْكَے مَؤْكَؤِ كِی
مُؤْنَا-سَبْتِ سِے بِلِیَا اَنْوَانِ لَمِی بُولَنْدِ آوَآؤِ سِے اَوْوَلِ آوَپِیْر اَلْحَبِیْبِ كِے
سَاَثِ ! تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ ! كُحْنِے دِےنَا یَاھِیْیِے كِے هَر وَكْتِ تَؤْبَا وَ اِسْتِغْفَارِ كَرْتِے رَحْنَا كَارِے
سِوَآَبِ هِے. فِرمَانِے مُسْتَفِیْ كَا هِے : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِہِ وَآلِہِ وَسَلَّمَ
اَلْوَلَاھِ تَاوَالَا سِے اِسْتِغْفَارِ (یَا'نِی مَغْفِیْرَتِ تَلَبِ) كَرِےگَا اَلْوَلَاھِ تَاوَالَا اُس كِی
مَغْفِیْرَتِ فِرمَا دِےگَا. (كُحْنَا لَمِی اِسْتِغْفَارِ یَا'نِی مَغْفِیْرَتِ تَلَبِ كَرْنَا هِے)

(سُنَنِ تِرْمِذِی ج ۵ ص ۲۸۸ حَدِيثِ ۳۴۸۱)

تَؤْبَا كِے تِیْنِ اَرْكَانِ هِے : اَلْوَبْتَا گੁْنَاھِ سَرْؤَدِ لُوْوَا لُو تِوِ اُس كِی مِھْؤُ
رَسْمِی تَؤْبَا كَاھِی نھِیਂ دَا'وَْتِے اِسْلَامِی كِے اِشَا'ئِْتِی اِئْدَارِے مَك-ت-بَتُوْلِ مَدِیْنَا كِی
مِٹْبُوْآ 480 سَفْھَاتِ پَر مُشْتَمِلِ كِیْتَاَبِ, "بِیَانَاْتِے اَتَاْرِیْیَا" لِیْسِے اَوْوَلِ
كِے سَفْھَا 79 پَر هِے : سَدْرُوْلِ اَفْكَالِیْلِ لُؤْرْتِے اَلْوَلَامَا مَؤْوَآْنَا سَاْیِیْدِ مُؤْھْمَدِ
نِئْمُوْدِیْنِ مُرَاَدِ آوَآَدِی رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكُبْرَى فِرمَاْتِے هِے : تَؤْبَا كِی اَسْلِ رُؤُؤِ اِئْلِوَلَاھِ
(یَا'نِی اَلْوَلَاھِ عَزَّ وَجَلَّ كِی تَرْفِ رُؤُؤِ كَرْنَا) هِے اِئْسِ كِے تِیْنِ رُكْنِ هِے : ﴿1﴾ اِے'تِیْرَاكِے
جُؤْمِ ﴿2﴾ نَدَامَتِ ﴿3﴾ اِؤْمِے تَرْكِ (یَا'نِی اِئْسِ گੁْنَاھِ كِو تَرْكِ كَر دِےنِے كَا پَكْكََا اِئْرَاَدَا)
اِغْر گੁْنَاھِ كَا بِلِیِے تَلَاھِی لُو تِوِ اِئْسِ كِی تَلَاھِی (یَا'نِی نُكْسَانِ كَا بَدَلَا) لَمِی
لَاؤِیْمِ م-سَلْوَنِ تَاْرِكُؤْسِوَالَاھِ (یَا'نِی بِے نِمَاؤِی) كِے لِیْیِے پِیْئِلِی نِمَاؤِی كِی كُؤَا
لَمِی لَاؤِیْمِ هِے.

(پْآَا اِئْنُوْلِ اِئْرَفْكَانِ, س. 12)



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جيس نے موزا પર એક બાર દુરૂદે પાક પઢા અલ્લાહ ઉસ પર દસ રહમતોં બેજતા હૈ. (س)

સત્તમી ગીબત સે બચને કી તરકીબ કરેં : તમામ મુસલ્માન, જુમ્લા આશિકાને રસૂલ બ શુમૂલ દા'વતે ઇસ્લામી કી તમામ મજાલિસ કે અરાકીન વ મુબલ્લિગીન, મુદરિસીન વ ત-લ-બએ ઇલ્મે દીન, મુઅલ્લિમીન વ મુ-ત-અલ્લિમીન નીઝ મ-દની કાફિલોં કે મુસાફિરીન વગૈરા ગીબત સે બચને કે મઝકૂરા તરીકોં પર અમલ કરેંગે તો ઇન કે લિયે **عَزَّ وَجَلَّ** અલ્લાહ હોંગી. યા અલ્લાહ **عَزَّ وَجَلَّ** ! મુસલ્માનોં કો બદ ગુમાનિયોં, ગીબતોં, તોહ્મતોં, યુગ્લિયોં, દિલ આઝારિયોં વગૈરા ગુનાહોં સે મહફૂઝ ફરમા, યા અલ્લાહ **عَزَّ وَجَلَّ** ! હમારે પ્યારે પ્યારે આકા **صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** 'امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

દુઆએ અત્તાર : યા રબ્બે મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! જો ભી ઇસ્લામી ભાઈ યા ઇસ્લામી બહન અપને યહાં “એક દૂસરે કો ગીબત સે બચાને કા તરીકા” રાઈજ કરે ઉસ કી ઓર જો જો સાથ દે ઉન સબ કી ગૈબ સે મદદ ફરમા, ઉન સબ કી ગીબત બલ્કે હર મા'સિયત સે હિફાઝત ફરમા કર ઉન કે દિલોં મેં અપની ઓર અપને પ્યારે હબીબ **صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** કી સચ્ચી મહબ્બત ભર દે. ઉન સબ કો જન્નતુલ ફિરદૌસ મેં બે હિસાબ દાખિલ ફરમા કર પ્યારે હબીબ **صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** કે પડોસ મેં બસા દે ઓર યેહ તમામ દુઆએ મુઝ પાપી વ બદકાર, ગુનહગારોં કે સરદાર કે હક મેં ભી કબૂલ ફરમા. યા અલ્લાહ **عَزَّ وَجَلَّ** હમારે પ્યારે આકા **صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** કી પ્યારી ઉમ્મત કી મગ્ફિરત ફરમા.

પુદાયા અજલ આ કે સર પર ખડી હે
મુસલ્માં હે અત્તાર તેરી અતા સે

દિખા જલ્વએ મુસ્તફા યા ઇલાહી
હો ઇમાન પર ખાતિમા યા ઇલાહી

'امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلٰی اللہ ! اَسْتَغْفِرُ اللہ

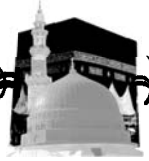
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد



इरमाने मुस्तफ़ी : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसने मुझ पर दस भरतबा सुंढ और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

डी भिदमते बा अ-र-कत में आने से डया मडसूस करती हैं, उन्हें ँज्जत दीजिये ताके वोड भी रोज़ा षोल लें. अल्लाड के मडभूभ, दानाअे गुयूभ, मुनज़्जुन अनिल उयूभ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन से रुभे अन्वर डेर लिया, उन्होंने डेर अर्र की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने डेर येडूरअे अन्वर डेर लिया, उन्होंने डेर येडी बात दोडराई आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने डेर येडूरअे अन्वर डेर लिया, वोड डेर येडी बात दोडराने लगे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने डेर रुभे अन्वर डेर लिया, डेर गैभ दान रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने (गैभ की षबर देते हुअे) ँशाद इरमाया : “उन दोनों ने रोज़ा नडी रभा वोड कैसी रोज़ादार हैं वोड तो सारा दिन लोगों का गोशत षाती रडी ! जओ उन दोनों को हुकम दो के वोड अगर रोज़ादार हैं तो डे कर दे.” वोड सडाभी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन के पास तशरीफ़ लाअे और उन्हें इरमाने शाडी रुअे और उन्होंने इरमाने शाडी सुनाया. उन दोनों ने डे की, तो डे से जमा हुवा षून निकला. उन सडाभी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की भिदमते बा अ-र-कत में वापस डाजिर डो कर सूरते डाल अर्र की. म-दनी आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ँशाद इरमाया : उस ज़ात की कसम ! जिस के कडअे कुदरत में मेरी ज़ान है, अगर येड उन के डेटों में बाकी रडता, तो उन दोनों को आग षाती. (क्यूंके उन्होंने ने गीभत की थी) (दम् الغيبة لابن أبي الدنيا ص ٧٢ رقم ٣١)

अेक और रिवायत में है के जभ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन सडाभी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुंड डैरा तो वोड सामने आअे और अर्र की : या रसूलल्लाड صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! वोड दोनों ष्यास की शिदत से भरने के करीब हैं. सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने हुकम इरमाया : उन दोनों को मेरे पास लाओ. वोड दोनों डाजिर हुं. सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अेक षियाला मंगवाया और उन में से अेक को हुकम इरमाया : ँस में डे करो ! उस ने षून, षीप और गोशत की डे की, डता के आधा षियाला भर गया. डेर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने दूसरी को हुकम दिया के तुम भी ँस में डे करो ! उस ने भी ँसी तरड की डे की, यडं तक के षियाला भर गया. अल्लाड के ष्यारे रसूल, रसूले मक़बूल, सय्यिदड आमिना के



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रजमतें भेजता है. (स्)

ગુલશન કે મહકતે ફૂલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદ ફરમાયા : ઈન દોનોં ને અલ્લાહ અલ્લાહ કી હલાલ કર્દા ચીઝોં (યા'ની ખાને, પીને વગૈરા) સે તો રોઝા રખા મગર જિન ચીઝોં કો અલ્લાહ અલ્લાહ કી હલાલ કર્દા ચીઝોં (ઈલાવા રોઝે કે ભી) હરામ રખા હૈ ઉન (હરામ ચીઝોં) સે રોઝા ઈફતાર કર ડાલા ! હુવા યૂં કે એક લડકી દૂસરી લડકી કે પાસ બૈઠ ગઈ ઓર દોનોં મિલ કર લોગોં કા ગોશત ખાને (યા'ની ગીબત કરને) લગી. (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٩ ص ١٦٥ حَدِيثُ ٤٢٣٧١)

ઈલ્મે ગૈબે મુસ્તફા ﷺ : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ઈસ હિકાયત સે રોઝે રોશન કી તરહ વાઝેહ હુવા કે અલ્લાહ અલ્લાહ કી અતા સે હમારે મીઠે મીઠે આકા મક્કી મ-દની મુસ્તફા ﷺ કો ઈલ્મે ગૈબ હાસિલ હૈ ઓર આપ આપ કો અપને ગુલામોં કે તમામ મુઆ-મલાત મા'લૂમ હો જાતે હૈ. જભી તો ઉન લડકિયોં કે બારે મેં મસ્જિદ શરીફ મેં બેઠે બેઠે ગૈબ કી ખબર ઈશાદ ફરમા દી. ઈસ હિકાયત સે યેહ ભી પતા ચલા કે ગીબત ઓર દૂસરે ગુનાહોં કા ઈરતિકાબ કરને સે બરાહે રાસ્ત ઈસ કા અસર રોઝે પર ભી પડ સકતા હૈ જિસ કી વજહ સે રોઝે કી તક્લીફ ના કાબિલે બરદાશત હો સકતી હૈ. બહર હાલ રોઝા હો યા ન હો, ઝખાન કાબૂ હી મેં રખની ચાહિયે વરના યેહ ઐસે ગુલ ખિલાતી હૈ કે તૌબા !

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ખબર

नफ़सो शैतां सख्यिदा ! कब तक दबाते जाओगे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿2﴾ ગીબત સે બાઝ રખને કા હસીન અન્દાઝ

હઝરતે સય્યિદુના સુફ્યાન બિન હુસૈન رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કહતે હૈં કે મેં હઝરતે સય્યિદુના ઈયાસ બિન મુઆવિયા رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કે પાસ બૈઠા હુવા થા, ઈતને મેં એક શખ્સ કરીબ સે ગુઝરા, મેં ને ઉસ કી બુરાઈ બયાન કરના શુરૂઆ કર દી, ઉન્હોં ને કહા :



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीक न पढा उस ने जफा की. (عمران)

ખામોશ ! ફિર ફરમાને લગે : સુફ્યાન ! ક્યા તુમ ને રૂમિયોં ઓર તુકોં કે ખિલાફ જંગ કી હૈ ? જવાબ દિયા : નહીં. વોહ બોલે : તુર્ક ઓર રૂમી તો તુમ સે બય ગએ લેકિન એક મુસલ્માન ભાઈ મહફૂઝ ન રહ સકા (યા'ની દેખતે હી તુમ ને ઉસ કી ગીબત શુરૂઅ કર દી !) હઝરતે સય્યિદુના સુફ્યાન رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કહતે હૈં : (મેરા દિલ ચોટ ખા ગયા ઓર) ઇસ કે બા'દ મૈં ને કભી કિસી કી ગીબત ઓર આબરૂ રેઝી નહીં કી. (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ۸۸) અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી ઉન પર રહમત હો ઓર ઉન કે સદકે હમારી મગ્ફિરત હો.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! જબ ભી હમારે સામને કોઈ ગીબત વગૈરા કા ઇરતિકાબ કરે તો મુઝ્કિના સૂરત મેં ઉસે સમજાના ચાહિયે કે સમજાના રાએગાં નહીં જાતા. રબ્બે કાએનાત عَزَّ وَجَلَّ પારહ 27 સૂ-રતુઝ્ઝારિયાત આયત નમ્બર 55 મેં ઇશાદ ફરમાતા હૈ :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۵۵﴾ તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઇમાન : ઓર સમજાઓ કે સમજાના મુસલ્માનોં કો ફાએદા દેતા હૈ.

(پ ۲۷، الذریت: ۵۵)

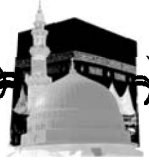
અમલ કા હો જઝબા અતા યા ઇલાહી

ગુનાહોં સે મુઝ કો બયા યા ઇલાહી

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

﴿3﴾ રૂઈ વાલે ને ખિયાનત કી !

એક નેક શપ્સ ને અપની રફીકએ હયાત (યા'ની બીવી) કે લિયે રૂઈ ખરીદી. જબ ઘર પહોંચા તો વોહ કહને લગી કે રૂઈ બેચને વાલોં ને આપ કે સાથ ખિયાનત (ઠગબાઝી) કી હૈ. ઉસ શપ્સ ને ઓરત કો ફૌરન તલાક દે દી ! ઉસ આદમી સે જબ ઇસ કા સબબ પૂછા ગયા તો કહા : મૈં એક ગૈરત મન્દ ઇન્સાન હૂં, મુઝે ખદશા લાહિક હુવા કે બરોઝે કિયામત અગર રૂઈ બેચને વાલે ઇસ ગીબત (વ તોહ્મત) કી વજહ સે



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (ખૂબાલ)

ઇસ સે અપને હક કે તલબ ગાર હુએ તો કહીં અહલે મહશર યેહ ન કહેં કે દેખો ! ફુલાં કી બીવી સે રૂઈ બેયને વાલે અપના હક માંગ રહે હેં ! ઇસ લિયે મેં ને ઉસે તલાક દે દી !

(تَنْبِيهُ الْغَافِلِينَ ص ٨٩)

તાજિરોં કી ગીબત કી 17 મિસાલેં : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! કિસી કૌમ યા મહ્કમે કી ગીબત કરના મ-સલન કહના : “પોલીસ વાલે રિશવત ખોર હોતે હેં.” યેહ ગુનાહોં ભરી ગીબત નહીં ક્યૂંકે મહ્કમએ પોલીસ યા કૌમ યા ગ્રૂપ કે અન્દર અચ્છે બુરે દોનોં તરહ કે લોગ હોતે હેં અલબત્તા કિસી કૌમ યા મહ્કમએ પોલીસ કે હર હર ફર્દ કી બુરાઈ મક્સૂદ હો તો ઝરૂર ગીબત હૈ. મઝકૂરા હિકાયત મેં કિસી મખ્સૂસ રૂઈ વાલે કા નહીં મુત્લકન “રૂઈ વાલોં” કા ઝિક હૈ. ઇસ લિહાઝ સે તો યેહ ગીબત ન હુઈ મગર હો સકતા હૈ કે ઉસ ગાઉં મેં રૂઈ કી દો યા તીન હી દુકાનેં હોં ઔર ઉસ ઔરત ને જો ગીબત ભરી ગુફ્ત-ગૂ કી ઇસ કે સિયાકો સબાક સે ઉસ નેક આદમી ને યેહી મુરાદ સમઝી હો કે વોહ હમારે યહાં કે હર હર રૂઈ વાલે કો ખાઈન વ ઠગ કહ રહી હૈ લિહાઝા ખૌફે ક્રિયામત કે સબબ ફૌરન તલાક દે દી હો. બહર હાલ ઇસ હિકાયત સે વોહ લોગ ઇબ્રત હાસિલ કરેં જો બિલા કિસી મસ્લહતે શર-ઈ બાત બાત પર તાજિરોં કી ગીબત વ તોહ્મત કે મુ-તઅલ્લિક બિલા તકલ્લુફ ઇસ તરહ કે જુમ્લે કહતે રહતે હેં :

❖ ઇસ ને ઠગ લિયા ❖ ઠગી હૈ ❖ ઠગિયા હૈ ❖ ગાહકોં કો લૂટતા હૈ ❖ નફ્રઅ ઝિયાદા લેતા હૈ ❖ ઇસ કા માલ સબ સે મહંગા હોતા હૈ ❖ ધોકેબાઝ હૈ ❖ મિલાવટ કરતા હૈ ❖ તોલ મેં ડન્ડી મારતા હૈ ❖ ચિકની ચુપડી બાતેં કર કે ગાહક કો ફાંસ લેતા હૈ ❖ બહુત લાલચી હૈ સબ સે આખિર મેં દુકાન બન્દ કરતા હૈ ❖ કપડા ખીંચ કર નાપતા હૈ ❖ ઉધાર માલ લે કર લૌટાને કા નામ નહીં લેતા ❖ ઇસ સે કર્ઝ કી વુસૂલી આસાન નહીં, ધક્કે બહુત ખિલાતા હૈ ❖ સૂદખોર હૈ ❖ ન જાને કિતનોં કે પૈસે ખા કે બૈઠા હૈ ❖ ઝૂટી કરમેં ખાતા હૈ.



करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो भेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल्लै)

दे रिज़के उलाल अज पअे गौसे आ'जम हराम माल से तू बया या धलाडी
डो अप्लाक अख़ा डो किरदार सुथरा मुजे मुत्तकी दे बना या धलाडी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुलाजिमीन की गीबतों की 18 मिसालें : मुलाजिमीन के बारे में बिला मस्लहतते शर-ध बोले जाने वाले गुनाहों तरे कलिमात व फ़िकरात की मिसालें ❀ कामयोर है ❀ सुस्त है ❀ ढीला है ❀ जब देभो छुट्टियां करता है ❀ हराम खोर है ❀ दुकान में योरियां करता है ❀ काम पर त्तेजे तो बहुत टार्थम पास कर के आता है ❀ जब देभो बस फ़ोन पर लगा रहता है ❀ बहुत मुंह यढा है ❀ बात बात पर नाराज डो ज़ता है ❀ गालक को बराबर “डील” नहीं कर सकता ❀ आवला ❀ अहमक ❀ बुधू है ❀ धस के नपरे बढ गअे हें ❀ अेक तो देर से आता है और ❀ जल्दी भागने की करता है ❀ दुकान में योरी डो गध है मुजे डुलां नोकर पर शक है.

दुकानदारों की आपसी गीबत की 10 मिसालें : मीठे मीठे धस्लामी त्ताधयो ! कारोबार में उंय नीय डोती रहती है, अलादीसे मुबा-रका से मुस्तफ़ाह डोता है के गुनाहों के बाधस त्ती बे ब-र-कती डोती है. मुसल्मान को याडिये के अगर कत्ती बे ब-र-कती डो या बिकरी में कमी आअे तो अपने आ'माल का मुहा-सबा करे मगर आ'ज लोग अैसे भौकअ पर शैतान के बहकावे में आ कर बह गुमानियों, गीबतों और तोहमतों पर उतर आते हें और कुध यूं कहते सुनाध देते हें : ❀ लगता है डुलां मेरे कारोबार की तरक्की देभ नहीं सकता ❀ मेरे गालक तोडता है ❀ जान बूज कर दाम कम बता कर मेरे गालक खराब कर देता है ❀ खुद मिलावट वाला माल बेयता है मगर ❀ मेरे गालक को बहजन करने के लिये मेरी यीजों को मिलावट वाली कहता है ❀ बह मआशी कर के मेरी दुकान के आगे पथारा लगवा दिया है ❀ येह याहता है के बस किसी तरह में येह दुकान छोड दू ❀ उस ने अैसी नजर लगा दी है



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पहुँचता है. (गुरान)

के गालक करीब नहीं इटक्ता ❀ वोह सामने वाला दुकानदार जब देपो हाथ में तस्बीह ले कर पढ पढ कर हमारी दुकान की तरफ़ इंकता रहता है ❀ उस दिन तो बा काईदा मुसल्ला बिछा कर नमाजें पढे जा रहा था और दो अेक बार तो हमारी दुकान की तरफ़ देपा भी था हो न हो ईसी ने जादू के जोर से कारोबार की बन्दिश कर दी है ! भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! येह बात गिरेह में बांध लीजिये के जिको अज़्कार, नमाजों और पाक क्लामों के जरीअे जादू हो ही नहीं सकता लिहाजा किसी मुसल्मान के बारे में बढ गुमानियों, गीबतों और तोड़भतों के गुनाहों में मत पडिये, अपनी नजर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर रभिये.

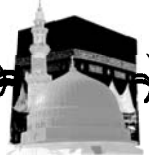
हुक्कुल ईबाद ! आह ! होगा मेरा क्या ! सरे हशर रभना भरम या ईलाही

बडी कोशिशें की गुनह छोडने की रहे आह ! नाकाम हम या ईलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

4 महुमा अम्मी जान ने म-दनी काम करने की छजाजत हिलवाध

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर हम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भर सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना किंके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाईये. सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइलों में भूब सफ़र कीजिये, ईस्लामी बहनें अपने महारिम के साथ म-दनी काइले में सफ़र की सआदत हासिल करें, आप की तरगीब के लिये म-दनी बहार गोश गुजार की जाती है युनान्ये कोट अत्तारी (कोटरी बाबुल ईस्लाम सिन्ध) की अेक ईस्लामी बहन का बयान है के मुजे दा'वते ईस्लामी से प्यार है, लिहाजा मैं भूब बढ यढ कर दा'वते ईस्लामी का म-दनी काम करना याहती थी मगर मेरे बर्यों के अब्बू ईजाजत नहीं देते



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उरुज (उस पर सो रलमतें नाज़िल फ़रमाता है. (ज़रान्)

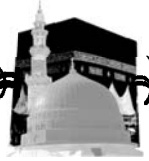
थे. मैं फिर भी शरीअत के दा'वरे में रहते हुअे अपनी बिसात के मुताबिक म-दनी काम किया करती. मेरी जुश नसीबी के स-फ़रुल मुजफ़्फ़र 1430 सि.हि. के मुबारक महीने में हमारे अलाके के अक घर में दा'वते इस्लामी की इस्लामी बहनों का म-दनी काफ़िला तशरीफ़ लाया. जद्वल के मुताबिक दूसरे दिन होने वाले तरबियती इजतिमाअ में मुझे भी शिर्कत की सआदत मिली. मैं ने वहां पर येह दुआ मांगी : “या अल्लाह उरुज ! इस म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से मेरे बय्यों के अब्बू मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करने की इजाजत दे दिया करें.” उसी रात मेरे बय्यों के अब्बू को मेरी मर्हूमा अम्मीजान (या'नी इन की सास जो इन्हें बेटों की तरह याहती थीं) की प्वाब में जियारत हुइ, मर्हूमा ने फ़रमाया : “तुम मेरी बेटी को दा'वते इस्लामी के म-दनी काम क्यूं नहीं करने देते ! उसे इस की इजाजत दे दो.” मेरे बय्यों के अब्बू ने येह प्वाब सुना कर मुझे हंसी जुशी दा'वते इस्लामी के म-दनी काम करने की इजाजत दे दी. यूं इस्लामी बहनों के म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से मेरे दिल की मुराद भर आई.

काफ़िले में जरा मांगो आ कर हुआ पाओगे ने'मतें काफ़िले में यलो

डोगा लुफ़्के जुदा आओ बहनो हुआ मिल के सारे करें काफ़िले में यलो

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

म-दनी काम की तउप मरहबा ! : इस्लामी बहनो ! देया आप ने ! म-दनी काफ़िलों की भी कैसी प्यारी प्यारी बहारें हैं ! इन्हें मुजफ़्फ़र इंस में पूब हुआओं कबूल होती हैं. म-दनी काम के जरीअे नेकी की दा'वत आम करने की तउप मरहबा ! के इस में सवाब ही सवाब है इस जिम्न में यार अलाहीसे मुबारका पेश की जाती हैं :



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से क्यूस तरीन शप्स है. (अहमद)

યાર⁴ ફરામીને મુસ્તફા ﷺ : ﴿1﴾ નેકી કી રાહ દિખાને વાલા નેકી કરને વાલે કી તરહ હૈ. (1) ﴿2﴾ અગર અલ્લાહ ેઝ્ઝલ્ તુમ્હારે ઝરીએ કિસી એક શપ્સ કો હિદાયત અતા ફરમાએ તો યેહ તુમ્હારે લિયે ઈસ સે અચ્છા હૈ કે તુમ્હારે પાસ સુર્ખ ઊંટ હો. (2) ﴿3﴾ બેશક અલ્લાહ ેઝ્ઝલ્, ઉસ કે ફિરિશ્તે, આસ્માન ઓર ઝમીન કી મખ્લૂક યહાં તક કે ચ્યૂટિયાં અપને સૂરાખોં મેં ઓર મછલિયાં (પાની મેં) લોગોં કો નેકી સિખાને વાલે પર “સલાત” ભેજતે હૈં. (3) મુફરિસિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફતી અહમદ યાર ખાન ેઝ્ઝલ્ ેઝ્ઝલ્ ફરમાતે હૈં : અલ્લાહ ેઝ્ઝલ્ કી “સલાત” સે ઉસ કી ખાસ રહમત ઓર મખ્લૂક કી “સલાત” સે ખુસૂસી દુઆએ રહમત મુરાદ હૈ. (4) ﴿4﴾ બેહતરીન સ-દકા યેહ હૈ કે મુસલ્માન આદમી ઈલ્મ હાસિલ કરે ફિર અપને મુસલ્માન ભાઈ કો સિખાએ. (5)

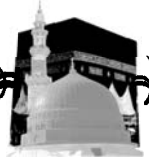
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ !

﴿5﴾ ઈમામે આ'ઝમ કા અપને ગુસ્તાખ કે સાથ હુસ્ને સુલૂક

ઈમામુલ અઈમ્મહ, સિરાજુલ ઉમ્મહ હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા ેઝ્ઝલ્ ેઝ્ઝલ્ મિના શરીફ કી મસ્જિદુલ ખૈફ મેં તશરીફ ફરમા થે કે એક શપ્સ ને આ કર મસ્મલા પૂછા આપ ેઝ્ઝલ્ ેઝ્ઝલ્ ને ઉસ કા જવાબ દિયા ફિર કિસી ને કહા કે યેહ હઝરતે સચ્ચિદુના હસન બસરી ેઝ્ઝલ્ ેઝ્ઝલ્ કે જવાબ કે બિલ્કુલ ખિલાફ હૈ. ઈશાદ ફરમાયા : ઈસ મસ્મલે મેં હસન બસરી (ેઝ્ઝલ્ ેઝ્ઝલ્) ને ઈજતિહાદી ખતા

سُنَّيْنِ تَرْمِذِي ج ٤ ص ٣١٤ حديث ٢٦٩٤ (3) صَحِيح مُسْلِم ص ١٣١١ حديث ٢٤٠٦ (2) سُنَّيْنِ تَرْمِذِي ج ٤ ص ٣٠٥ حديث ٢٦٧٩ (1)

(4) سُنَّيْنِ ابْنِ مَاجَه ج ١ ص ١٥٨ حديث ٢٤٣ (5) مِيرِ اَتَا تُل مَنَا شِوْ ل, ج. 1, س. 200



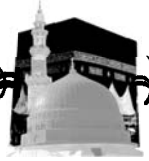
ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : اِس شَظْس كِى نَاك پَاك آءَلُوْء لُو وِىس كَے پَاس مَءرَا لِكِك لُو اُورِ
وول موز پءر ءُرُرُءَءَ پَاك ن پءَءَ . (م) .

કી. ફિર એક ઓર શપ્સ આયા ઉસ ને અપના ચેહરા છુપાયા હુવા થા, ઉસ ને આપ
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي کو ગાલી નિકાલી ઓર કહા : તુમ હસન બસરી
ખતાકાર કહતે હો. મગર આપ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ كِى كُوءتَءَ بءرءَءشء كَا يَءل آءلءم كَء
આપ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ كَء يَءلرَءَءَ پءر كوئِء گُءسَا نءر ن آءَا. لَءلرِىن تَءش مَء آء كء
ઉસ ગુસ્તાખ કો મારને કે લિયે ઉઠે, સચ્ચિદુના ઇમામે આ'ઝમ اَللّٰهُ اَلْاَكْرَمُ ને લોગોં
કો ઠન્ડા કિયા ઓર ઉસ શપ્સ સે ફરમાયા : “હસન બસરી (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي) સે
ઇજતિહાદી ગ-લતી હુઈ ઓર હઝરતે સચ્ચિદુના ઇબને મસ્ઊદ عَنهُ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ઇસ
બાબ મેં જો રિવાયત કી વોહ સહીહ હૈ.” (المناقب للموفق ج ٢ ص ٩) **ءلءلآء عَزَّ وَجَلَّ** કી ઉન
પર રહમત હો ઓર ઉન કે સદકે હમારી મગ્ફિરત હો.

اُمَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ગુસ્સે પર કાબૂ કે ભી કયા ખૂબ ફઝાઈલ હૈં ! : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો !
દેખા આપ ને ! કરોડોં હ-નફિયોં કે અઝીમ પેશવા હઝરતે સચ્ચિદુના ઇમામે આ'ઝમ
ફકીહે અફખમ ઇમામ અબૂ હનીફા عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ كَا سبْرُو تءبْممُول ! હાલાં કે આપ
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ચાહતે તો લોગ માર માર કર ઉસ કા ભુરકસ નિકાલ દેતે મગર આપ
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને ઐસા ન હોને દિયા. જબ કોઈ અપની બે ઇઝ્ઝતી કરે તો ઉમૂમન
ગુસ્સા આ જાતા હૈ મગર ઐસે મૌકઅ પર ગુસ્સે કો રોક કર ઉસ કે ફઝાઈલ કા હકદાર
બનના ચાહિયે. દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ
312 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “બહારે શરીઅત” હિસ્સા 16 સફહા 188 તા
189 પર હૈ : નબિયે કરીમ ﷺ كَا ફرમાને અઝીમ હૈ : જો શપ્સ અપની
ઝબાન કો મહફૂઝ રખેગા, **ءلءلآء عَزَّ وَجَلَّ** ઉસ કી પદા પોશી ફરમાએગા ઓર જો અપને
ગુસ્સે કો રોકેગા, કિયામત કે દિન **ءلءલآء** તઆલા અપના અઝાબ ઉસ સે રોક દેગા ઓર
જો **ءلءલآء عَزَّ وَجَلَّ** સે ઉઝર કરેગા, **ءلءલآء عَزَّ وَجَلَّ** ઉસ કે ઉઝર કો કબૂલ ફરમાએગા.

(شَعْبُ الْإِيمَان ج ٦ ص ٣١٥ حديث ٨٣١١)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جَسَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِس نے મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દો સો બાર દુરૂદે પાક પઢા ઉસ કે દો સો સાલ કે ગુનાહ મુઆફ હોંગે. (ક્રમી)

ક્યા ઈમામે આ'ઝમ ને હસન બસરી કી ગીબત કી ? : મઝકૂરા હિકાયત મેં સચ્ચિદુના ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने सच्यिदुना हसन बसरी की येह कह कर गीबत की के “उन्हों ने ईजतिहादी ખતા કી” મગર યેહ જાઈઝ ગીબત થી ક્યૂંકે એક મુફતી શર-ઈ મસ્અલે પર ખતા કરે તો દૂસરા મુફતી ઉસ કા રદ કર સકતા હૈ. યુનાન્ચે “બહારે શરીઅત” હિસ્સા 16 સફહા 178 તા 179 પર હૈ : હદીસ કે રાવિયોં ઔર મુકદમે (CASE) કે ગવાહોં ઔર મુસન્નીફીન પર જરહ કરના ઔર ઉન કે ઉયૂબ બયાન કરના જાઈઝ હૈ અગર રાવિયોં કી ખરાબિયાં બયાન ન કી જાએ તો હદીસે સહીહ ઔર ગૈરે સહીહ મેં ઈમ્તિયાઝ ન હો સકેગા. ઈસી તરહ મુસન્નીફીન કે હાલાત ન બયાન કિયે જાએ તો કુતુબે મોઅ-ત-મદા વ ગૈરે મોઅ-ત-મદા (યા'ની કાબિલે એ'તિમાદ વ ના કાબિલે એ'તિમાદ કિતાબોં) મેં ફર્ક ન રહેગા. ગવાહોં પર જરહ ન કી જાએ તો હુકૂકે મુસ્લિમીન કી નિગહ દાશત (દિખભાલ) ન હો સકેગી.

હસદ કી બીમારી બઢ યલી હૈ, લડાઈ આપસ મેં ઠન ગઈ હૈ શહા મુસલ્માન હોં મુનઝઝમ, ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા મિટા મેરી ગીબતોં કી આદત, હો દૂર બે જા હંસી કી ખસ્લત દુરૂદ પઢતા રહૂં મેં હર દમ, ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿6﴾ ઈમામે આ'ઝમ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने कभी दुश्मन की भी गीबत नहीं की એક મરતબા હઝરતે સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને મુબારક ﷺ نے હઝરતે સચ્ચિદુના સુફ્યાન સૌરી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم سے कहा કે “ईमामे आ'जम अबू हनीफ़ा की गीबत से इतना ज़ियादा बचते हैं કે मैं ने कभी उन को दुश्मन की गीबत करते भी नहीं सुना !”

(مرقاة المفاتيح ج ١ ص ٧٧)



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुऒ पर हुऒुद शरीफ़ पढो अल्लाह उऒुऒ तुम पर रऒमत लेऒेगा।

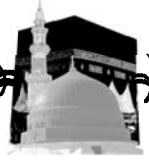
(अऒऒुऒ)

आधे अऒले ऒमीन से भी ँमामे आ'ऒम की अऒल ऒियाऒा : भीऒे भीऒे ँस्लामी ऒाँयो ! ऒऒरते सऒ्यिऒुना ँमामे आ'ऒम كِي اَكْل رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم كِي अऒल मन्दी के ऒया ऒऒने ! यऒीनन अऒल मन्ऒ वोऒी है ऒो अपने आप को अल्लाऒ व रसूल के वुऒूऒों का भी सरऒार है ऒो मुसऒ्मानों की गीऒतों में पऒ ऒर अपनी नेऒियां ऒरऒाऒ ऒर के ऒऒऒनम का ऒऒऒार ऒनता रहे. ऒा'वते ँस्लामी के ँशाऒती ँऒारे मऒ-त-ऒतुल मऒीना की मऒूऒा 649 सऒऒात पर मुशतमिल ऒिताऒ, “डिकायतें और नसीऒतें” सऒऒा 332 पर है : ऒऒरते सऒ्यिऒुना अऒी ऒिन आसिम ने ँशाऒऒ इरमाया : अगर निऒऒ (या'नी आधे) अऒले ऒमीन की अऒलों से ँमाम अऒू ऒनीऒा كِي رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की अऒल का मुवा-ऒना ऒिया ऒाऒे तो भी आप से ँमाम अऒू ऒनीऒा كِي رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की अऒल ऒियाऒा ऒोगी. (تبييض الصحيفة في مناقب الامام ابي حنيفة للسيوطي ص 128)

गीऒतें मत कीऒिये पऒताऒेंगे धुप अंधेरी ऒऒ्र में ऒऒ ऒाऒेंगे
सांप ऒिऒऒू ऒेऒ ऒर ऒिल्लाऒेंगे ऒे ऒसी ऒोगी न ऒुऒ ऒर पाऒेंगे
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
7 कऒ्र वाले गीऒत नऒीं ऒिया ऒरते

ऒा'वते ँस्लामी के ँशाऒती ँऒारे मऒ-त-ऒतुल मऒीना की मऒूऒा 649 सऒऒात पर मुशतमिल ऒिताऒ, “डिकायतें और नसीऒतें” सऒऒा 477 पर है : ऒऒरते सऒ्यिऒुना सरी स-ऒती كِي رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : अऒ ऒार मुऒे ऒऒिऒतान ऒाना हुवा. वऒां में ने ऒऒरते सऒ्यिऒुना ऒऒऒल ऒाना كِي رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ऒेऒा के अऒ ऒऒ्र के ऒरीऒ ऒैऒे मिऒी में ऒोटऒोट ऒो रहे हैं ! में ने यऒां तशरीफ़ इरमा ऒोने का सऒऒ पूऒा तो ऒवाऒ ऒिया : “में अैसी ऒौम के पास हूँ ऒो मुऒे अऒिऒ्यत नऒीं ऒेती और अगर मैं यऒां से गाँऒ ऒो ऒाऒें तो मेरी गीऒत नऒीं ऒरती.” (الرَّوَضُ الْفَائِقُ (عربي) ص 246) “अल्लाऒ उऒुऒऒ की उन पर रऒमत ऒो और उन के सऒके ऒमारी मऒिऒरत ऒो।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



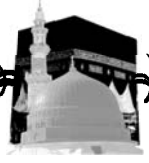
इरमाने मुस्तफा ﷺ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगि़रत है. (भा. १५)

अल्लाह वालों की भी क्या भूष म-दनी सोय हुवा करती है, वाकेई कब्रिस्तान में वक्त गुजारने वाले को अपनी मौत याद आने के साथ साथ गीभत से भयत की भी सआदत नसीब होती है, न वोह किसी की गीभत करते न कब्र वाले उस की गीभत करते हैं.

मौत को मत भूलना पछताओगे कब्र में अै आसियो ! जब जाओगे
सांप बिस्छू टूष कर धबराओगे भाग न डरगिज वहां से पाओगे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ
﴿8﴾ उम अब सिई म-दनी येनल देभते हैं

गीभत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये द्वा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिख्यत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाइये. सुन्नतों की तरबिख्यत के म-दनी काइलों में भूष सफ़र कीजिये, ईस्लामी भडनें अपने महारिम के साथ म-दनी काइले में सफ़र की सआदत हासिल करें, आप की तरगीभ के लिये म-दनी भडार गोश गुजार की जाती है युनान्ये शडदाद पूर (बाबुल ईस्लाम सिन्ध) की अेक ईस्लामी भडन (उम्र तकरीबन 45 साल) के भयान का भुलासा है के हमारे घर में नमाजों की अदाअेगी की कोई तरकीभ नहीं थी, केवल के जरीअे T.V. पर भूष इिल्में और डिरामे देभे जाते. इल्मे दीन से मडरूमि और नेक सोडभत से दूरी की बिना पर आवे का आवा ही बिगडा हुवा था. हमारी भुश नसीबी के अेप्रील 2009 ई. में हमारे अलाके के अन्दर द्वा'वते ईस्लामी की ईस्लामी भडनों का म-दनी काइला तशरीफ़ लाया. "अलाकाई दौरा बराअे नेकी की



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज्ज पर अेक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उरस के लिये अेक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

दा'वत" के दौरान म-दनी काङ्किले की इस्लामी बहनें हमारे घर भी आईं. उन की दा'वत पर मैं म-दनी काङ्किले की ज़ाअे कियाम पर होने वाले बयान में शरीक हुई. ईस बयान ने मेरे हिल की दुन्या बहल डाली, मैं दरियाअे गम में डूब गई के अइसोस ! मेरी सारी उम्र गुनाहों में गुजर गई. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के म-दनी काङ्किले की ब-र-कत से मुझे तौबा की सआदत मिली, न सिर्फ़ मैं ने बल्के मेरी बेटियों ने भी पांयों वकत की नमाज पढना शुइअ कर दी और अब हमारे घर कोई और नहीं सिर्फ़ दा'वते इस्लामी का म-दनी येनल देखा जाता है.

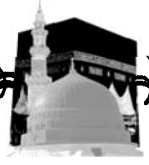
हिल की कालक धुले सुभ से ज़ना मिले आओ आओ यलें काङ्किले में यलो
छूटें बह आदतें सब नमाजी बनें पाओगे रइमतें काङ्किले में यलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नमाज बुराईयों से बयाती है : देपी आप ने ! म-दनी काङ्किले की ब-र-कत ! रब्बुल इज्जत عَزَّوَجَلَّ की इबादत से दूर रहने वाले घराने में नमाजों की बहार आ गई ! हर मुसल्मान को नमाज पढनी याहिये اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ नमाज की ब-र-कत से बुराईयां भी छूट ज़ाअेंगी युनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 21 सू-रतुल अ-कभूत आयत नम्बर 45 में ईशाद इरमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ तर-ज-मअे क-जुल ईमान : बेशक नमाज मन्अ करती है बे हयाई और बुरी बात से.

ईत्तिबाअे न-बवी में भुशक टहनी हिलाई : नमाज की इज़ीलत के क्या कलने ! युनान्चे दा'वते इस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 743 सङ्कहात पर मुशतमिल किताब, "जन्त में ले जाने वाले आ'माल" सङ्कहा 76 पर है : हजरते सय्यिदुना अबू उस्मान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के मैं हजरते सय्यिदुना सलमान इरसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ अेक दरभ्त के नीचे बडा था के आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़ार करते रहेंगे. (अहमद)

उस दरप्त की अक भुशक टहनी को पकडा और उसे खिलाया यहां तक के उस के पत्ते जउ गअे फिर इरमाया : अै अबू उस्मान ! क्या तुम मुज से नहीं पूछोगे के मैं ने अैसा क्यूं किया ? मैं ने पूछा के आप ने अैसा क्यूं किया ? तो इरमाया : अक भरतभा मैं रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ अक दरप्त के नीये भडा था तो सरकारे मदीना के साथ ने इसी तरह किया और उस दरप्त की अक भुशक टहनी को पकड कर खिलाया यहां तक के उस के पत्ते जउ गअे फिर इरमाया : अै सलमान ! क्या तुम मुज से नहीं पूछोगे के मैं ने येह अमल क्यूं किया ? मैं ने अर्ज की : आप ने अैसा क्यूं किया ? इशाद इरमाया : बेशक जब मुसल्मान अखी तरह वुजू करता है और पांय नमाअे अदा करता है तो उस के गुनाह इस तरह जउते हैं जिस तरह येह पत्ते जउ जाते हैं. फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुभा-रका पढी :

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُكُفًا مِّنَ
الْبَيْتِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ
ذَلِكَ ذِكْرٌ مِّنَ الذِّكْرِينَ ﴿١١٢﴾

(प १२ अहमद ११२)

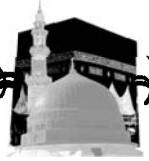
आज बनता हूं मुअज्जल जो भुले हरर में अैभ
अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा

तर-ज-मअे कजुल इमान : और नमाज का इम
रभो दिन के दोनो कनारो और कुछ रात के
खिसो में बेशक नेकियां बुराईयो को मिटा देती
हैं येह नसीहत है नसीहत मानने वालो को.

(मुसनिद इमाम अहमद ज ९ स १७८ खडिथ २३७६८)

हाअे रुखाई की आइत में ईसूंगा या रभ
गर करम कर दे तो जन्त में रहूंगा या रभ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अद्लाह عزوجل उस पर दस रलमतें बेजता है. (س)

9 गीभत के सभभ भरजभ में कैद

दा'वते ईस्वामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 सईहात की किताभ, "आंसूओं का दरिया" में है : इकीह अबुल हसन अली बिन इरदून कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي अपनी किताभ "अज़्ज़ाहिर" में इरमाते हैं : मैं ने 555 सिने खिजरी में "शहरे इास" में ईन्तिकाल करने वाले अपने यथा को ज्वाभ में देभा के घर के अन्दर तशरीफ लाअे और दीवार से टेक लगा कर बैठ गअे, मैं भी उन के सामने बैठ गया, मैं ने उन का बदला हुवा रंग देभा तो पूछा : "यथाजान ! आप को आप के रभ عزوجل से क्या मिला?" इरमाया : "बेटा ! मेहरबान से मेहरबानी के सिवा और क्या मिलता है, अद्लाह عزوجل ने गीभत के ईलावा हर यीज में मुज पर नरभी इरमाई, मैं मरने के बा'द से ले कर अब तक गीभत की वजह से खिरासत (या'नी कैद) में हूँ, अब तक मेरा येह गुनाह मुआफ़ नहीं हुवा, बेटा ! मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ के गीभत व युगली से बयते रहना क्यूंके मैं ने आभिरत में गीभत से बढ कर किसी और यीज पर पकड नहीं देभी." येह कह कर वोह मुज से रुजसत हो गअे.

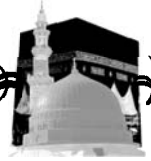
(بحرُ الأُتُوع ص 180)

धुप अंधेरा ही क्या वइशत का बसेरा डोगा	कभ्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रभ !
गर कइन इाड के सांपों ने जमाया कब्जा	डाअे भरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रभ !
उंक मखर का भी मुज से तो सडा जाता नहीं	कभ्र में बिच्छू के उंक कैसे सहूंगा या रभ !
गर तू नाराज हुवा मेरी उलाकत डोगी	डाअे ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रभ !

अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रभ !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



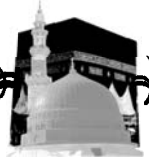
इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

﴿10﴾ छिजडे की मडब्बत में इंसने की वजह

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! गीबत ने झैतगी के भा'द इंसा कर रभ दिया ! गीबत, युगली, बढ गुमानी वगैरा ऐसी ना मुराद आझात हैं के बसा अवकात इन्सान को डीने हयात या'नी जते जे भी इबादत से दूर कर के मजीद गुनाहों के तन्दूर में जोक देती हैं, युनान्हे हजरते सय्यिदुना शैख अबुल कासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नकल करते हैं के सय्यिदुना शैख अबू ज़ा'इर बलभी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : हमारे हां बलभ में अक नौ जवान था. यूं तो वोह भूब इबादत व रियाजत किया करता मगर गीबत की आझत में मुज्तला था अकसर कहता : कुलां औसा है, कुलां वैसा है. अक रोज में ने उसे लोगों के कपडे धोने वाले डीजडों के पास से निकलता देखा, मैं ने उस से इस का सबब पूछा, कहने लगा : येह लोगों को भुरा भला कहने या'नी गीबतें करने की सजा है के मुजे इस डाल में डाल दिया गया है, अइसोस ! मैं इन में से अक मुभन्नस (या'नी डीजडे) की मडब्बत में मुज्तला हो गया हूं, उसी मुभन्नस के इशक की वजह से मैं इन धोबी डीजडों की भिदमत करता हूं और रब्बे जुल जलाल جَزَّوَجَزَّ की तरफ से पहले मुजे जो बातिनी अहवाल हासिल थे सब जाते रहे. लिहाजा आप अद्लाह तआला से हुआ कीजिये के मुज पर रइम इरमाअे.

(رساله قشيره ص ۱۹۶)

कहीं गीबत तो नहीं ले डूबी ! : मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! गीबत की तबाहकारी ने अक इबादत व रियाजत करने वाले नौ जवान को छिजडे के इशक में इंसा डाला ! गीबतों की नुहूसतों के सबब वोह इबादतों की लज्जतों से भी मडइम हो गया. यहां वोह इस्लामी भाई गौर इरमाअें जिन्हें पहले सुन्नतों भरे भयानों, प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना'तों, जिहुल्लाह और हुआओं में बहुत दिल जभ्द हासिल होती थी मगर अब औसा नहीं बलके दिल हर दम गुनाहों की तरफ माईल रहता है, उन्हें कहीं "गीबत" की आझत तो नहीं ले डूबी ! सअ्यी तौबा करें के अद्लाह रब्बुल इज्जत جَزَّوَجَزَّ की रइमत बहुत बडी है.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढा तलकीक वोड बढे बप्त हो गया. (उंअ)

गुनाहों ने मेरी कमर तोड डाली मेरा हश्र में डोगा क्या या एलाही !
येड हिल नेकियों में नहीं लग रहा है एबाहत का हे हे मजा या एलाही !

मुझे बे हिसाब बप्श हे मेरे मौला

पअे शाहे भैरुल वरा या एलाही !

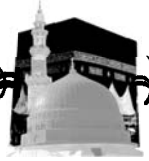
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

﴿11﴾ नमाज दोहराओ

हजरते सय्यिहुना रबीअ बिन सबीह السَّمِیْعِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّمِیْعِ इरमाते हैं : दो आदमी मस्जिदुल हराम शरीफ़ शَرَفًا وَتَعْظِیْمًا के अक दरवाजे के करीब बैठे थे के एतने में अक आदमी गुजरा जो के मुपन्नस मा'लूम हो रहा था, उसे देख कर ना गवारी महसूस करते हुअे दोनों वहां से उठ गअे. जब नमाज का वक्त हुआ तो दोनों ने बा जमाअत नमाज अदा की. फिर उन्हें अहसास हुआ के हम कहीं हिल की गीबत में तो मुप्तला नहीं हो गअे ! युनान्ये फौरन हजरते सय्यिहुना अता رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ की षिदमते बा ब-र-कत में हाजिर हो कर मस्अला पूछा, इरमाया : वुजू कर के अपनी नमाज दोहराओ, जब उन्होंने ने बताया के हमारा रोजा भी है तो इरमाया : अपने रोजे की भी कजा करो !

(ذَمُّ الْغِیْبَةِ لِابْنِ اَبِي الدُّنْیَا ص १० رقم ६२)

क्या गीबत से रोजा टूट जाता है ? : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुआ किसी मुसल्मान के लिये जज़्बअे हकारत व नइरत और बढे गुमानी हिल में जमाना हिल की गीबत है. दा'वते इस्लामी के इशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सइहा 984 पर सदरुशरीअड, बदरुत्तरीकड हजरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरमाते हैं : अहतिलाम हुआ या गीबत की तो रोजा न गया (دُرُّمُخْتَارٍ ج ३ ص ६२१-६२४) अगरे गीबत बहुत सप्त कबीरा (गुनाह) है. कुरआने मज्जद में गीबत करने की निस्बत इरमाया :



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रक्षमतें बेजता है. (स्)

“જૈસે અપને મુદ્દા ભાઈ કા ગોશ્ત ખાના.” ઓર હદીસ મેં ફરમાયા : “ગીબત ઝિના સે ભી સખ્ત તર હૈ.” (۶۰۹۰ حدیث ۳ ص ۵ ج ۱) અગર્યે ગીબત કી વજહ સે રોઝે કી નૂરાનિયત જાતી રહતી હૈ. સફહા 996 પર ફરમાતે હેં : જૂટ, યુગલી, ગીબત, ગાલી દેના, બેહૂદા (યા'ની બે હયાઈ કી) બાત, કિસી કો તક્લીફ દેના કે યેહ ચીઝેં વૈસે ભી ના જાઈઝ વ હરામ હેં રોઝે મેં ઓર ઝિયાદા હરામ ઓર ઈન કી વજહ સે રોઝે મેં કરાહત આતી હૈ. (બહારે શરીઅત)

હર ખતા તૂ દર ગુઝર કર બે કસો મજબૂર કી

યા ઈલાહી ! મગ્ફિરત કર બે કસો મજબૂર કી

﴿12﴾ એક હીજડે કી મગ્ફિરત કી હિકાયત

જો લોગ હીજડે (મુખન્નસ, ઝખ્બે, ખુન્સા) સે નફરત કરતે ઓર ઉસે હકારત સે દેખતે હેં, ઉન કો ઐસા નહીં કરના ચાહિયે કે યેહ ભી અલ્લાહ ﷻ કા બન્દા હૈ ઓર ઉસી ﷻ ને ઈસે પૈદા ફરમાયા હૈ ઓર હીજડે કો ભી ચાહિયે કે ગુનાહોં ઓર નાય ગાનોં જૈસે હરામ ઓર જહન્નમ મેં લે જાને વાલે કામ સે પરહેઝ કરે, અલ્લાહ ﷻ કી રિઝા પર રાઝી રહતે હુએ સુન્નતોં ભરી ઝિન્દગી ગુઝારે. જો ફિત-રતન મુખન્નસ યા'ની હીજડા હો ઉસે ખુદ કો સતાએ જાને કે સબબ દિલ થોડા કરને કે બજાએ અલ્લાહ રબ્બુલ ઈઝઝત ﷻ કી રહમત પર નઝર રખની ચાહિયે. આઈયે એક ખુશ નસીબ હીજડે કી હિકાયત મુલા-હઝા ફરમાઈયે, શાયદ હર હીજડે કો ઉસ પર રશક આએ કે કાશ ! મેરે સાથ ભી ઐસા હી હો. યુનાન્ચે હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ અબ્દુલ વહ્હાબ બિન અબ્દુલ મજ્હદ સ-કફી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ફરમાતે હેં : મૈં ને એક જનાઝા દેખા જિસે ત્રીન મર્દ ઓર એક ખાતૂન ને ઉઠા રખા થા, ખાતૂન કી જગહ મૈં ને ઉઠા લિયા, નમાઝે જનાઝા કી અદાએગી ઓર તદફીન કે બા'દ મૈં ને ઉસ ખાતૂન સે મા'લૂમ કિયા : મર્હૂમ સે આપ કા ક્યા રિશ્તા થા ? બોલી : મેરા બેટા થા. પૂછા : પડોસી વગૈરા જનાઝે મેં ક્યું નહીં આએ ? કહા : દર અસ્લ મેરા ફરઝન્દ મુખન્નસ (યા'ની ખુન્સા, હીજડા) થા. ઈસ લિયે લોગોં ને ઈસ કે જનાઝે મેં શિક્રત કો અહમ્મિયત નહીં દી. સચ્ચિદુના શૈખ



इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (जब्रान्)

अब्दुल वद्दाब बिन अब्दुल मज्द رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : मुजे उस गमज्दा मां पर बडा रद्म आया, मैं ने उसे कुछ रकम और गल्ला वगैरा पेश किया. उसी रात सईद लिबास में मल्बूस अक आदमी यौदहवीं के यांद की तरह येहरा यमकाता हुवा मेरे प्वाब में आया और शुक्रिया अदा करने लगा, मैं ने पूछा : **مَنْ أَنْتَ؟** या'नी आप कौन हैं? बोला : मैं वोही **मुभन्नस** हूं जिसे आज आप ने दफ्न किया है, लोगों के मुजे उकीर समजने की वजह से **अल्लाहु कदीर** عَزَّوَجَلَّ ने मुज पर रद्म इरमाया. (رساله قشيريہ ص ۱۷۳ مُلَخَّصًا) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके उमारी मगि़रत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

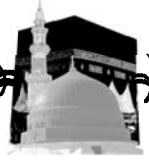
तुम्हें मा'लूम क्या भाई ! जुदा का कौन है मकबूल

किसी मोमिन को मत देणो कभी भी तुम उकारत से

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿13﴾ राना बढ मआश

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सईर कीजिये और योक दर्स, मस्जिद दर्स, बाजार दर्स वगैरा में शिकत कीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक दे तो आप जुद भी रोजाना इेजाने सुन्नत से कम अज कम दो दर्स दीजिये. योक दर्स की अक म-दनी बहार मुला-उजा इरमाईये युनान्चे सूबा उतरांयल (हिन्द) के अक 20 सालह नौ जवान ईस्लामी भाई ने जो कुछ लिख कर दिया वोह **ब तसरुफ़** पेशे भिदमत है : मैं जुरी सोहबत के बाईस कमो बेश 14 साल की उम्र ही से जराईम के दलदल में इंस युका था. शराब पीना और औरतों का पीछा करना मेरा मडबूब मशगला था. इर मैं ने **बढ मआशी** शुइअ कर दी. लोगों से बे वजह लडना, मारपीट करना, मेरी आदत में शामिल हो गया यहां तक के मैं राना



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (उंन)

भद मआश के नाम से पहचाना जाने लगा. मैं उम्र में छोटा ज़रू था मगर मैं किसी से उरे बिगैर सामने वाले पर पै दर पै वार करना शुरू कर देता था. हर तरफ़ मेरी धाक बैठ गઈ, लोग मेरे नाम से डरने लगे. वालिदैन मुझ से बेजार हो चुके थे मगर बेबस थे. मेरे काले करतूत दिन ब दिन बढ़ते जा रहे थे. अक दिन गली के नुक्कड़ पर अक सज्ज इमामे वाले इस्लामी भाई को थोक दर्स देता देख कर मैं करीब जा पड़ा हुआ, जो कुछ सुना वोड मुझे बहुत अच्छा लगा. मैं ने किताब पर नज़र डाली तो उस पर झैजाने सुन्नत लिखा था. दर्स देने वाले इस्लामी भाई ने मुझ से बड़ी महफ़्फ़त के साथ मुलाकात की और इन्किराही कोशिश करते हुअे मुझे म-दनी काङ्किले में सफ़र की दा'वत पेश की, झैजाने सुन्नत के दर्स ने मेरे अन्दर हलयल मया रपी थी, मैं ने हामी भर ली और आशिकाने रसूल के हमराह तीन दिन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काङ्किले में सफ़र करते हुअे "जक पूर" पड़ोया और मज़ीद तीन दिन के लिये राडे जुदा جَزْرَة में "जगन्नाथ पूर" जाने वाले म-दनी काङ्किले के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल की. थोक दर्स और म-दनी काङ्किले में सफ़र की सआदत हासिल करने की ब-र-कत से मेरे दिल में म-दनी इन्किलाब भरपा हो गया, मैं ने साबिका गुनाहों से तौबा कर ली और दाढी शरीफ़ सजाने की भी नियत कर ली. हुआ इरमाईये के रब्बुल इज़्ज़त جَزْرَة मुझे इस्तिकामत इनायत इरमाईये. मेरे घर वाले मुझ में आने वाले इस म-दनी इन्किलाब से बे इन्तिहा जुश हैं. वालिदअे मोह-त-रमा दा'वते इस्लामी के लिये जूब हुआअें करती हैं. جَزْرَة मुझ समेत मेरे घर वालों ने सिद्विसलअे आलिया कादिरिया र-जविया में दाबिल हो कर सरकारे भगदाद हुज़ुरे गौसे पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया है.

जजभा गो सई हो, काङ्किले में यलो तुम जवां मई हो, काङ्किले में यलो

भप्त जुल जअेंगे, काङ्किले में यलो जुर्म धुल जअेंगे, काङ्किले में यलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुबदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मौजूज़)

याहे गुनाह आस्मान तक पडोंय गअे डों : मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो !

रब्बुल ईज़ज़त عَزَّوَجَلَّ की रहमत बहुत बडी है, बिलइज़ किसी से बडे से बडे गुनाह भी सरअद हो गअे डों, वोह मायूस न हो, बेशक तौबा का दरवाज़ा खुला हुवा है.

बन्दा सिद्धके दिल से उस के दरबारे करम बार में लुक ज़ाअे तो उस का इज़लो करम अपनी आगोश में ले ही लेता है. नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशदि ईरमाया :

تَرْجَمَا : اِذَا تَرَجَمْتَ لَوْ اَخْطَاكَ حَتَّى تَبْلُغَ خَطَايَاكُمُ السَّمَاءَ ثُمَّ تَبْتِمُ لَنَا بَعْدَ عَيْكُمُ : अगर तुम ईतने गुनाह करो के वोह आस्मान तक पडोंय ज़ाअे फिर खुदा عَزَّوَجَلَّ से तौबा करो तो अल्लाह

बल्के तौबा करने वाले से अल्लाह तबा-र-क व तआला ईस कदर राज़ी होता है के हम ईस का अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकते ! ईस ज़िम्न में दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे

मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 132 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "तौबा की रिवायात व खिकायात" सफ़हा 12 पर मरकूम है :

सय्यिदुल मुबद्लिगीन, रद्मतुद्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मसरत निशान है : अल्लाह

अपने मोमिन बन्दे की तौबा से उस शप्स से ज़ियादा खुश होता है ज़े किसी हलाकत भौज़ ज़मीन पर पडाव करे उस के साथ उस की सुवारी भी हो जिस पर उस के

पाने पीने का सामान लदा हुवा हो फिर वोह सर रभ कर सो ज़ाअे और ज़ब बेदार हो तो उस की सुवारी ज़ा युकी हो, वोह उसे तलाश करे यहां तक के उस पर धूप और प्यास या

ज़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने याहा गालिब आ गई और वोह परेशान हो कर कहे के मैं उसी जगह लौट ज़ाता हूं जहां सो रहा था फिर सो ज़ाता हूं यहां तक के मर ज़ाअे फिर वोह

अपनी कलाई पर सर रभ कर मरने के लिये सो ज़ाअे फिर ज़ब बेदार हो तो उस के पास उस की सुवारी मौजूद हो और उस पर उस का तोशा भी मौजूद हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शप्स के अपनी सुवारी के लौटने पर खुश होने से भी ज़ियादा राज़ी होता है. (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाहों को मुआफ़ इरमा देता है और

उस पर ईन्आमो ईकराम करता है) (صحيح مسلم ص ١٤٦٨ حديث ٢٧٤٤)



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مهارات)

न हो मायूस आती है सदा गोरे गरीबां से
नबी उम्मत का डामी है पुढा बन्दों का वाली है

﴿14﴾ गीबत में लज़्जत की वजह

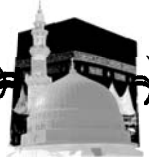
उठरते सय्यिदुना इसा इहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ अक मर्तबा कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे, इसनाअे राह शैतान को देखा के अक हाथ में शइद और दूसरे में राभ उठाअे यला जा रहा था, आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने पूछा : अै दुश्मने पुढा ! येह शइद और राभ तेरे किस काम आती है ? बोला : शइद गीबत करने वालों के डोंटों पर लगाता हूं ताके इस गुनाह में वोह और आगे बढें और राभ यतीमों के येहरों पर मलता हूं ताके लोग इन से नफ़रत करें. (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ٦٦)

नाम निहाद भयानक सुकून : भीठे भीठे इसलामी भाईयो ! वाकेई गीबत की भी अज्जब लज़्जत है के जिस को इस मोहलिक मरज़ की याट लग जाती है वोह जब तक किसी की भुराई न बयान कर ले उस को अक गूना बेयैनी सी रहती है और जब गीबत कर के “भडास” निकाल लेता है तो सुकून मिल जाता है मगर येह वोह सुकून है जो के बहुत सारी बे सुकूनियों का भाईस है. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस “नाम निहाद भयानक सुकून” से हमें मडकूज व मामून इरमाअे और हमें अपनी और अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सय्यी मडब्बत की बे करारी नसीब इरमाअे.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मेरे दिल को दहें उक्कत वोह सुकून दे ईलाही !

मेरी बे करारियों को न कभी करार आअे



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करुंगा. (कुरआन)

﴿15﴾ मरा हुवा भय्यर

उजरते सय्यिहुना अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अक मुर्दा भय्यर के करीब से गुजरे तो बा'ज अहबाब से एश्राफ़ इरमाया : एसे पेट भर कर खाना मुसल्मान का गोशत खाने (या'नी गीबत करने) से बेहतर है.

(التوبيخ والتنبيه لابی الشيخ الاصهانی ص ۹۷ رقم ۲۱۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

﴿16﴾ एन्सान नुमा कुत्तों का सालन

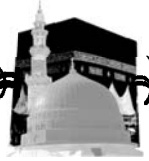
उजरते सय्यिहुना एमाम अैनुल आबिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُنِین ने किसी शप्स को गीबत करते हुअे सुना तो इरमाया : गीबत से बयो, क्यूंके येह एन्सान नुमा कुत्तों का सालन है.

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ۱۸۱ رقم ۱۶۱)

कुत्तों से तशबीह देने की वजह : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मजलूमे करबला उजरते सय्यिहुना एमाम अैनुल आबिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُنِین ने गीबत करने वालों को एन्सान नुमा कुत्तों के साथ एस लिये तशबीह दी है के कुरआने मज्जद और अहादीसे मुबा-रका में गीबत को मुदरि का गोशत खाने की मिसल बताया गया है और मुदरि का गोशत खाना और खाना कुत्तों का काम है लिहाजा गीबत करने वाले गोया कुत्तों की मिसल हो कर आदमियों की अकसाम से खारिज हुअे क्यूंके अगर आदमी होते तो एन में आदमी की सिफ़त होती और एन्सान की भस्लत एन में पाई जाती, किसी की गीबत न करते, किसी का गोशत कुत्तों की तरह न खभाते.

नभी का सदका सदा गीबतों से दूर रचना कभी किसी की भी युगली करूं में न या रब !
तेरे हबीब अगर मुस्कुराते आ जायें तो गोरे तीरह में हो जायें यांदना या रब !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جئى الله تعالى عليه وآله وسلم : جئى شمس مؤذن पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جرانى)

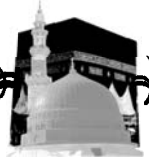
«17» अनोप्री छींक

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिख्यत के लिये म-दनी काङ्किलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, आप की तरगीब व तहरीस के लिये अेक म-दनी बहार पेशे षिदमत है युनान्चे अेक ईस्लामी भाई का कुछ ईस तरह का बयान है के मेरी रीढ की उड़ी का मोहरा अपनी जगह से हिल गया था. बहुत ईलाज कराया मगर ईङ्काका न हुवा. अेक ईस्लामी भाई के तरगीब दिलावे पर आशिकाने रसूल के साथ दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबिख्यत के म-दनी काङ्किले में सफ़र किया. रात के पाने के वक्त अयानक मुजे जोरदार छींक आई जिस से मेरा सारा जिस्म लरज उठा. اِسْ اَنُوْپْرِ اِخِيْكَ كِي اَب-ر-कْت سے मेरी रीढ की उड़ी का मोहरा अपनी जगह पर दुरुस्त हो गया.

रीढ की उड़ियों, की भी भीमारियों से मिलेगी शिफा, काङ्किले में यलो ताजदारे हरम, का जो डोगा करम पायेगा हिल जिला, काङ्किले में यलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

छींक की अ-र-कते : भीढे भीढे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! म-दनी काङ्किले की भी क्या ખૂબ બહારે હે ! કે ઈસ કી અ-ર-કત સે જોરદાર છીંક આઈ ઓર પીઠ કા મોહરા દુરુસ્ત હો ગયા ! છીંક અલ્લાહ ﷻ કો પસન્દ હે ઓર ઈસ કી ભી કયા ખૂબ અ-ર-કતે હે ! દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ 32 સફહાત પર મુશ્તમિલ રિસાલા, “101 મ-દની ફૂલ” સફહા 13 તા 14 પર હે : «1» જો કોઈ છીંક આને પર اِسْ اَنُوْپْرِ اِخِيْكَ كِي اَب-ر-كْت سے મહફૂઝ રહેગા. (મિરઆતુલ મનાજહ, જિ. 6, સ. 396) «2» હઝરતે મૌલાએ કાએનાત, અલિય્યુલ મુર્તઝા كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ફરમાતે હે : જો



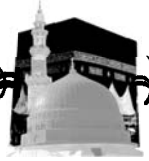
ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (अन)

કોઈ ઈર્ક આને પર **﴿3﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ કહે તો વોહ દાઢ ઓર કાન કે દર્દ મેં કભી મુખ્તલા નહીં હોગા. (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ٨ ص ٤٩٩ تحت الحديث ٤٧٣٩) **﴿4﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ યા **﴿5﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ કહે. **﴿4﴾** સુનને વાલે પર વાજિબ હે કે ફોરન “يَرْحَمُكَ اللَّهُ” (યા’ની અલ્લાહ તુઝ પર રહમ ફરમાએ) કહે. ઓર ઇતની આવાઝ સે કહે કે ઈર્કને વાલા ખુદ સુન લે. (બહારે શરીઅત, હિસ્સા : 16, સ. 119) **﴿5﴾** જવાબ સુન કર ઈર્કને વાલા કહે : “يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ” (યા’ની અલ્લાહ હમારી ઓર તુમ્હારી મગ્ફિરત ફરમાએ) યા યેહ કહે “يَهْدِيكُمْ اللَّهُ وَيُصْلِحْ بَأْسَكُمْ” (યા’ની અલ્લાહ તુમ્હે હિદાયત દે ઓર તુમ્હારા હાલ દુરુસ્ત કરે). (عالمگیری، ج ٥ ص ٣٢٦)

﴿18﴾ અમરદ કે સાથ મઝાક કરને વાલે કી ગીબત

હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ સા’દી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي ફરમાતે હૈં : એક આબિદ (યા’ની ઇબાદત ગુઝાર આદમી) ને કિસી “લડકે” સે ખુશ તબ્ઈ (મઝાક મસ્ખરી) કી. જબ દૂસરે આબિદોં કો મા’લૂમ હુવા તો વોહ બદ ગુમાનિયોં ઓર ગીબતોં મેં પડ ગએ કે ઓહો ! ઐસા પરહેઝ ગાર આદમી હો કર ભી અમરદ (યા’ની ખૂબ સૂરત લડકે) કે ચક્કર મેં ફંસ ગયા વગૈરા. રફતા રફતા યેહ ખબર ઉસ આબિદ તક પહોંચ ગઈ તો ઉસ ને કહા : ઐ લોગો ! અલ્લાહ **﴿18﴾** نے “لڈكے” كے साथ ساڈن نىخىت والوں كے لىيے तङ्करीहन हंसने बोलने को डराम नहीं किया, अलबत्ता बढ गुमानी और गीबत को डरर डराम किया है. तुम्हें किस ने कड दिया के बढ गुमानी और गीबत हलाल है ! (ماخوذ از: بوستان سعدى ص ١٨٩)

કિસી કો “અમરદ પરસ્ત” કહના : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! વાકેઈ કાબિલે તવજ્જોહ હિકાયત હૈ. ઇસ મેં કોઈ શક નહીં કે બડે ઇસ્લામી ભાઈયોં કો અમરદોં (બે રીશ લડકોં) સે દૂર હી રહના યાહિયે, તાહમ કિસી કો અમરદ કે સાથ દેખ કર ઉસ કે બારે મેં બદ ગુમાનિયાં કરને કી શરઅન હરગિઝ ઇજાઝત નહીં. યાદ રખિયે ! મુસલ્માન



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुन्ड और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (अ. 1/1)

પર બદ ગુમાની હરામ છે. એસે મૌકઅ પર કહે જાને વાલે મુ-તવક્કઅ ગીબતોં ઓર

ગુનાહોં ભરે જુમ્લોં કી 5 મિસાલેં મુલા-હઝા હોં : ﴿1﴾ વોહ “અમ્રદ પરસ્ત હૈ”

﴿2﴾ ઉસ ને અમ્રદ સે જોડી બનાઈ હૈ ﴿3﴾ ખૂબ સૂરત લડકોં સે તરકીબેં બનાતા હૈ

﴿4﴾ નિયત ખરાબ મા'લૂમ હોતી હૈ ﴿5﴾ કુછ ક્રિયા તો જૂતે ખાએગા વગૈરા વગૈરા.

હુસ્ને ઝન કા જામ પીજિયે : બિલફર્જ ઝેહની તૌર પર વોહ શખ્સ વાકેઈ એસા હો

તબ ભી આપ કે પાસ ઈસ કા કૌન સા વાઝેહ કરીના હૈ ? અગર આપ કે પાસ યકીની

મા'લૂમાત હૈં તો અચ્છી અચ્છી નિયતેં કર કે બેશક ઉસ કો તન્હાઈ મેં સમઝાઈયે,

આખિર દૂસરોં કે સામને ગીબત કરને મેં કયા મસ્લહત હૈ ? બહર હાલ તૌબા તૌબા

ઔર તૌબએ તામ્મ કીજિયે, અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કા નામ લીજિયે, કરને કા કામ કીજિયે

ઔર અગર દિલ કે અન્દર બદ ગુમાની પૈદા હો રહી હૈ તો હુસ્ને ઝન કા જામ પીજિયે

કે ફરમાને મુસ્તફા ﷺ હૈ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : يا'नी હુસ્ને

ઝન ઉમ્દા ઈબાદત હૈ. (مُسْنَدُ إمام احمد ج 3 ص 547 حديث 10368)

ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 1548 સફહાત પર મુશ્તમિલ ક્રિતાબ, “ફૈઝાને

સુન્નત” જિલ્દ અવ્વલ સફહા 523 પર હૈ મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે

સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ નકલ ફરમાતે હૈં :

ખબીસ ગુમાન ખબીસ દિલ હી સે પૈદા હોતા હૈ. (ફતાવા ર-અવિયા, જિ. 22, સ. 400)

બેશક દિલ કા હાલ રબ્બે ઝુલ જલાલ عَزَّوَجَلَّ હી જાનતા હૈ લિહાઝા જો લોગ વાકેઈ

“અમ્રદ પરસ્ત” હૈં ઔર બા વુજૂદ શહવત કે ઈન સે દોસ્તિયાં કરતે હૈં. ઉન કો ખુદા

કા ખૌફ કરના ચાહિયે. ઔર ઈસ લરઝા ખૈઝ હિકાયત પર ગૌર કર કે અપની આકિબત

કી ફિક કરની ચાહિયે યુનાન્થે

﴿19﴾ દો અમ્રદ પસન્દ મુઅઝ્ઝિઝનોં કી બરબાદી

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 472

સફહાત પર મુશ્તમિલ ક્રિતાબ, “બયાનાતે અત્તારિયા” હિસ્સએ દુમુવ સફહા 123

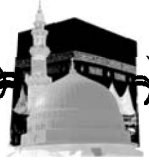


इरमाने मुस्तफ़ी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (महाजरा)

ता 127 पर है : उजरते सय्यिहुना अब्दुल्लाह बिन अहमद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : मैं तवाफ़े का'बा में मशगूल था के अेक शप्स पर नजर पडी जे गिलाफ़े का'बा से लिपट कर अेक ही दुआ की तकरार कर रहा था : “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुप्सत करना.” मैं ने उस से पूछा : एस के एलावा कोए और दुआ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे दो भाई थे, बडा भाई यालीस साल तक मस्जिद में बिला मुआ-वजा अजान देता रहा. जब उस की मौत का वक्त आया तो उस ने कुरआने पाक मांगा, हम ने उसे दिया ताके एस से ब-र-कते हासिल करे, मगर कुरआन शरीफ़ हाथ में ले कर वोह कडने लगा : “तुम सब गवाह हो जाओ के मैं कुरआन के तमाम अे'तिकादात व अहकामात से बेजारी जाहिर करता और नसरानी (क्रिस्चियेन) मज़हब एप्तिवार करता हूं.” इर वोह मर गया. एस के बा'द दूसरे भाई ने तीस बरस तक मस्जिद में ई सबीखिल्लाह अजान दी. मगर उस ने भी आभिरि वक्त नसरानी (या'नी क्रिस्चियेन) होने का एकरार किया और मर गया. लिहाजा मैं अपने जातिमे के बारे में बेहद इंक मन्ट हूं और हर वक्त जातिमा बिलभैर की दुआ मांगता रहता हूं. उजरते सय्यिहुना अब्दुल्लाह बिन अहमद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस से एस्तिफ़सार इरमाया के तुम्हारे दोनों भाई आभिर औसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : “वोह गैर औरतों में दिल यस्पी लेते थे और अम्रदों (या'नी बे रीश लडकों) को (शह्रवत से) देभते थे.”

(الرَّوْضُ الْفَاتِقُ ص ١٤)

रिशतेदार का रिशतेदार से पर्दा : भीठे भीठे एस्लामी भाईयो ! गजब हो गया ! क्या अब भी गैर औरतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज नहीं आयेगे ? क्या अब भी गैर औरतों नीज अपनी भाभी, यथी, ताई, मुमानी (के येह सब भी शरअन गैर औरतें ही हैं एन) से अपनी निगाहें नहीं बयायेगे ? एसी तरह ययाजाद, तायाजाद, मामूजाद, इफ़ीजाद और ખालाजाद का नीज बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है. ना महरम पीर और मुरी-दनी का भी पर्दा है. मुरी-दनी अपने ना महरम पीर का हाथ नहीं यूम सकती.



इरमाने मुस्तफ़ा ۱. عَسَىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे ज़ुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (त्रोवाल)

अम्रद को शह्वत से देभना हराम है : जबरदार ! अम्रद तो आग है आग !

अम्रद का कुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मजाक मस्बरी, आपस में कुशती, भींयातानी

और लिपटा लिपटी जहन्नम में जोंक सकती है. अम्रद से दूर रहने ही में आङ्कियत है

अगर्ये उस बेयारे का कोर्ष कुसूर नहीं, अम्रद होने के सभब उस की हिल आजारी भी

मत कीजिये, मगर उस से अपने आप को बयाना बेहद ज़रूरी है. हरगिज अम्रद को

स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाईये, जुद भी उस के पीछे मत बैठिये के आग आगे

हो या पीछे उस की तपश हर सूरत में पडोंयेगी. शह्वत न हो जब भी अम्रद से

गले मिलना महल्ले झितना (या'नी झितने की जगह) है, और शह्वत होने की सूरत

में गले मिलना बल्ले हाथ मिलाना बल्ले हु-कहाअे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام इरमाते हैं :

अम्रद की तरफ़ शह्वत के साथ देभना भी हराम है. (لُرْمُخْتَار ج ٢ ص ٩٨، تفسیرات احمدیه ص ٥٥٩)

उस के बदन के हर हिस्से हत्ता के लिबास से भी निगाहों को बयाईये. इस के तसव्वुर से

अगर शह्वत आती हो तो इस से भी बयिये, उस की तहरीर या किसी चीज से शह्वत

भडकती हो तो उस से निस्बत रहने वाली हर चीज से नज़र की हिफ़ाजत कीजिये, हत्ता

के उस के मकान को भी मत देभिये. अगर उस के वालिद या बडे भाई वगैरा को देभने से

उस का तसव्वुर काईम होता है और शह्वत बढती है तो उन को भी मत देभिये.

अम्रद के साथ 70 शैतान : अम्रद के जरीअे किये जाने वाले शैताने अय्यार व

मक्कार के तबाहकार वार से जबरदार करते हुअे मेरे आका आ'ला उजरत

عَلَيْهِ ۱. رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : मन्कूल है : औरत के साथ दो² शैतान छोते हैं और अम्रद के

साथ सत्तर. (इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 721)

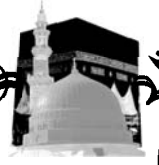
बहर हाल अज्जबिय्या औरत (या'नी जिस से शादी ज़ाईज हो) उस से

और अम्रद से अपनी आंभों और अपने वुजूद को दूर रहना सप्त ज़रूरी है

वरना अभी आप ने उन दो भाईयों की अम्वात के तश्वीश नाक मुआ-मलात पढे

जो ब ज़ाहिर नेक थे. मेहूरबानी इरमा कर दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे

मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ मुफ्तसर रिसाला अम्रद पसन्दी की तबाह कारियां



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُؤَلَّزٌ عَلَى أَنْ يَكْفُرَ بِمَا كَفَرَ بِهِ فِي الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَيَكْفُرَ بِمَا كَفَرَ بِهِ فِي الْبَيْتِ الْحَرَامِ . (ابن ماجه)

કા મુતા-લઆ ફરમા લીજિયે.

નફસે બે લગામ તૂ ગુનાહોં પે ઉકસાતા હે

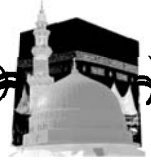
તૌબા તૌબા કરને કી ભી આદત હોની ચાહિયે

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
﴿20﴾ શૈખ સા'દી કે ઉસ્તાઝ ને કયા ખૂબ ટોકા

હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ સા'દી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَامِدِ ફરમાતે હૈં : મૈં ને એક બાર અપને ઉસ્તાદે મોહતરમ હઝરતે અલ્લામા અબુલ ફરજ અબ્દુરહમાન બિન જૌઝી سے અર્ઝ કી : મૈં લોગોં મેં દર્સે હદીસ પેશ કરતા હૂં તો ફુલાં શખ્સ હસદ કરતા ઓર જલતા હે ! ઉસ્તાદે મોહતરમ ને ફરમાયા : ઐ સા'દી ! તઅજજુબ હૈ કે તુમ હસદ કો તો બુરી ચીઝ તસ્લીમ કરતે હો મગર મેરે સામને કિસી કો “હાસિદ” કહ કર ઉસ કી બિલા તક્લુફ ગીબત કર રહે હો ! આખિર તુમ્હેં યેહ કિસ ને કહ દિયા કે સિર્ફ હસદ હી હરામ હૈ કયા ગીબત હરામ નહીં ? યાદ રખો ! અગર હાસિદ જહન્નમ કા હકદાર હૈ તો ગીબત કરને વાલા ભી અઝાબે નાર કા સઝાવાર હૈ.

(بوستان سعدي ص ۱۸۸ مَلْخَصًا)

ગીબત સે રોકના કબ વાજિબ હે : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! سُبْحَانَ اللهِ ! અસાતિઝા હોં તો ઐસે ! સિર્ફ મખ્સૂસ અસ્બાક પઢાને હી સે ગરઝ ન હો, બલકે ત-લબા કી અખ્લાકી તરબિયત કા ભી ધ્યાન રખે, એક ઉસ્તાઝ હી કયા હર મુસલ્માન અપની ઈસ ઝિમ્મેદારી કો સમઝે ઓર નેકી કી દા'વત ઓર ગુનાહ સે મુમા-ન-અત કી તરકીબ વ સૂરત બનાતા રહે. યેહ મસ્અલા ઝેહન મેં રખિયે કે જબ કોઈ શખ્સ ગુનાહ મ-સલન ગીબત કર રહા હો ઉસ વક્ત મૌજૂદ શખ્સ કા ઝન્ને ગાલિબ હો કે મૈં મન્અ કરુંગા તો યેહ બાઝ આ જાએગા તો ઉસ કે લિયે વાજિબ હૈ કે ઉસ કો ગીબત સે રોકે, અગર નહીં રોકેગા તો ગુનહગાર હોગા. દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મતબૂઆ 312 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ,



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पछोयता है. (بخاری)

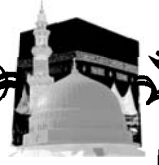
“બહારે શરીઅત” હિસ્સા 16 સફહા 255 પર હૈ : સરકાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “कसम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! या तो अच्छी बात का हुकम करोगे और बुरी बात से मन्अ करोगे या अद्लाह तआला तुम पर जल्द अपना अजाब भेजेगा, फिर दुआ करोगे और तुम्हारी दुआ कबूल न होगी.”

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٦٩ ح ٢١٧٦)

હસદ કે મુ-તઅલ્લિક ગીબત કી સાત મિસાલેં : “બોસ્તાને સા’દી” કી હિકાયત સે યેહ ભી સીખને કો મિલા કે “કુલાં મુજ સે હસદ કરતા હૈ” કહના ગીબત હૈ, બલ્કે યેહ જુમ્લા ગીબત સે ભી સપ્ત ગુનાહ તોહ્મત કી તરફ જા રહા હૈ ક્યૂંકે “હસદ” બાતિની અમરાઝ મેં સે હૈ ઈસ કા તઅલ્લુક દિલ સે હૈ અગર્યે કભી કભાર વાઝેહ કરાઈન (યા’ની બિલ્કુલ સાફ અલામતોં) સે ભી હસદ કા ઈઝહાર હો જાતા હૈ મગર અકસર લોગ કિયાસ હી સે કિસી કો હાસિદ કહ દિયા કરતે હૈં. હસદ કે મુ-તઅલ્લિક ગીબત કે મઝીદ સાત ફિકરાત મુલા-હઝા હોં : ❀ જલ કુક્કડ હૈ ❀ મુજ સે જલતા હૈ ❀ મેરી તરક્કી દેખ નહીં સકતા ❀ મેરી ખુશી સે ખુશ નહીં હુવા ❀ મેરા નુક્સાન ચાહતા હૈ ❀ મેરી ભલાઈ મેં રાઝી નહીં ❀ મુઝે દેખ કર ઈસ કે તન બદન મેં આગ લગ ગઈ.

બહરે શાહે કરબલા મેરા ગુનાહોં કા મરઝ દૂર કર દીજે ખુદારા એ તબીબે ઝી વકાર
ફિકે નઝ્એ રૂહો કબ્રો હશર સે બચ જાતા ગર કાશ ! હોતા આપ કી ગલિયોં કા મેં ગદોં ગુબાર

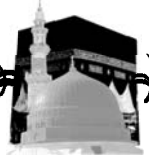
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (ज़रान)

21 मिनी सिनेमा घर बन्द कर दिया

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये द्वा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिख्यत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्भ करवाइये. आप की तरगीब व तहरीस के लिये अेक म-दनी बहार गोश गुजार करता हूं युनान्चे अेक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है के सूबअे पंजाब के जिलअ बहावल पूर की तहसील टैलवाला में अेक साडिब (उम्र तकरीबन 37 साल) का मिनी सिनेमा घर था, वोह रोजाना कई शो यलाते जिस में सेंकडों अफ़राद इिल्में देभते और अपनी आंभों में जहन्नम की आग भरने का सामान किया करते. इलावा अर्जी वोह किराअे पर इिल्मों की वीसीडीज भी दिया करते. अेक मुबल्लिगे द्वा'वते इस्लामी ने इन्डिरादी कोशिश करते हुअे उन्हे म-दनी येनल यलाने की तरगीब दी, भुश किस्मती से उन साडिब ने कभी कभार म-दनी येनल यलाना शुअअ किया, जिसे वोह भुद भी देभा करते. यन्द हईतों के बा'द या'नी 9 शा'भानुल मुअज़्जम 1430 हि. को "यज़मान" शहर में डोने वाले "इजतिमाअे जिको ना'त" में सेंकडों इस्लामी भाईयों के सामने उन्हों ने बताया के म-दनी येनल की ब-र-कत से मेरे अन्दर भौंके भुदा इज़्ज़ पैदा हुवा है मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली है और अपना मिनी सिनेमा बन्द कर दिया है, नीज उन्हों ने नमाजों की पाबन्दी करने, द्वाढी शरीफ़ सजाने और र-मजानुल मुबारक में द्वा'वते इस्लामी के 10 दिन के इजतिमाई अे'तिकाइ में बैठने की अख़ी अख़ी निय्यतें कीं. कादिरिख्या र-जविख्या सिस्सिले में बैअत हो कर हुजूरे



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से क्यूस तरीन शप्स है. (तैरिब)

ગૌસે આ'ઝમ અલ્લાહિ રહ્માને કે મુરીદ બન ગએ. ઉન્હોં ને ફિલ્મોં વગૈરા કી તકરીબન 40 હઝાર રુપૈ માલિયત કી વીડિયો સીડીઝ ઝાએઝ કર દીં. મિની સિનેમા કી જગહ પર મક્તબા કાઈમ ક્રિયા જિસ મેં મક-ત-બતુલ મદીના કા સામાન યા'ની ક્રિતાબે, વીસીડીઝ વગૈરા રખીં ઓર રિઝકે હલાલ કમાને મેં મસરૂફ હો ગએ. અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ઉન્હેં ઓર હમેં ઈસ્તિકામત નસીબ ફરમાએ.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ગુનાહોં સે મુઝ કો બચા યા ઈલાહી

મુઝે નેક બન-દા બના યા ઈલાહી

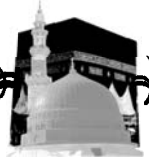
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿22﴾ દોનોં મેં સે કૌન બેહતર ?

હઝરતે સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا સે કિસી ને સુવાલ ક્રિયા : જો શપ્સ (નફલી) ઈબાદત ભી ઝિયાદા કરતા હૈ ઓર ગુનાહ ભી ઝિયાદા કરતા હૈ વોહ બેહતર હૈ યા વોહ જો કે (નફલી) ઈબાદત ભી કમ કરતા હૈ ઓર ગુનાહ ભી કમ કરતા હૈ ? હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ને જવાબ દિયા જો શપ્સ (નફલી) ઈબાદત કમ કરતા હૈ ઓર ગુનાહ ભી કમ કરતા હૈ વોહ બેહતર હૈ ઓર સલામતી ઉસી કે લિયે હૈ. (مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ٨ ص ١٩٦، تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٢٠٢). કયુંકે (નફલી) ઈબાદત કરને કે મુકાબલે મેં ગુનાહ છોડને મેં ઝિયાદા સવાબ હૈ.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (५)

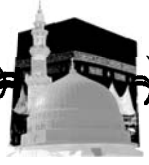
उकीकी मुत्तकी कौन ? : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! ई जमाना मुत्तकी व परहेज गार होने का दारो मदार जाहिरि नइली इबादतों म-सलन नइली नमाजों और नइली रोजों पर ही रह गया है, जो शप्स ब कसरत नवाफिल पढता या बहुत नइली रोजे रभता है या अक्सर तस्बीह हाथ में रभता और भूष जिको अज़्कार करता और गिडगिडा कर दुआओं किया करता है या स-दका भैरात बहुत करता है, उसी को लोग **मुत्तकी** और परहेज गार कहा करते हैं, अगर्ये इन इबादतों के साथ साथ दिन भर लोगों की गीबतें करता फिरता हो, बिला वजह मुसल्मानों को जाडता और उन के दिल दुभाता हो तब भी उस के तकवे को आंय नहीं आती ! अगर कोई आदमी जाहिर में नइली इबादत कम करता हो मगर गीबत वगैरा गुनाहों से बयता हो उस को ई जमाना **मुत्तकी** नहीं कहा जाता. इस की वजह कहीं येह तो नहीं के लोगों की नजर में गीबत करने न करने की कुछ अहम्मियत ही नहीं. याद रभिये ! जो इराइज, वाजिबात और मुअक्कदा सुन्नतों की पाबन्धियों के साथ साथ गीबतों वगैरा गुनाहों से भी बयता हो. वोह बहुत बडा **मुत्तकी** है. बाकी याहे कोई सारा ही साल नइली रोजे रभे, सारी सारी रात नइली इबादत बजा लाये, हर साल उज को जामे, हर बरस र-मजानुल मुबारक में उम्रे की सआदत पाये, दाढी रपाये, जुद्धें बढाये, इमामा शरीफ सजाये ब जाहिर कैसा ही नेक सूरत हो मगर गीबतें करता हो, मुसल्मानों के औब भोलता उन के दिल दुभाता हो वोह **मुत्तकी** व परहेज गार तो पाक होगा, “नेक बन्दा” भी नहीं, फ़ासिक व गुनहगार और अजाबे नार का हकदार है.

उठे न आंभ कभी भी गुनाह की जनिबे अता करम से हो ऐसी मुजे हया या रभ
किसी की भामियां देभें न मेरी आंभें और सुनें न कान भी औंभों का तजकिरा या रभ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿23﴾ **अेक बार की हुई गीबत के सभभ बेहोश हो गये**

उजरेते सय्यिहुना दावूद तार्थ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; अेक मकाम से गुजरे तो बेहोश हो गये. होश आया तो लोगों ने बेहोशी का सभभ पूछा : इरमाया : यहां पछोंयते ही



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अक्राम)

अेक दम याद आया के इस मकाम पर मैं ने अेक शप्स की गीबत की थी लिहाजा मुजे अदलाह अज़्र की पकड और आभिरत के हिसाब का जयाल आ गया इस षौफ़ से मैं बेहोश हो गया.

(نُزْهُةُ الْمَجَالِسِ ج ١ ص ١٩٩)

बरोजे उशर ईंट और धागे का मुता-लबा : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो !

हमारे जुजुर्गों का षौफ़े जुदा अज़्र भी भरहबा ! किसी गुनाह से लाज तौबा करें मगर षौफ़े अत्म नहीं होता, नदामत नहीं जाती, अेक हम हें के गुनाह करने के बा'द हंसते हंसते अपने गालों पर बारी बारी हाथ लगा कर हिल को मना लेते हें के हम गुनाहों से साफ़ सुथरे हो चुके और फिर उस गुनाह को अपने पदमे जयाल से हई गलत की तरह मिटा देते और अपनी मस्तियों में बह मस्त हो जाते हें ! आह ! कियामत का हिसाब ! जुदा की कसम ! बिल जुसूस हुकुकुल इबाद का मुआ-मला इन्तिहाई तशवीश नाक है जैसा के उजरते सय्यिदुना हसन असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي इरमाते हें : कियामत में अपना हक वुसूल करने के लिये अेक शप्स दूसरे का हाथ पकड लेगा वोह दूसरा शप्स कहेगा : मैं तुजे नहीं पहचानता, तू कौन है ? पहला शप्स कहेगा : तूने मेरी दीवार से अेक ईंट निकाली थी और तूने मेरे कपडे से धागा निकाला था. (इस सबब से मैं तुज पर अपने हक की वुसूली के लिये दा'वा करता हूं) (احياءُ العُلوم ج ٥ ص ٩٩)

यालीस बरस से रो रहा हूं : इसी लिये हमारे जुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَيِّنَاتِ लोगों के ब जाहिर इन्तिहाई मा'मूली नजर आने वाले हुकुकु से भी बहत डरते थे. उजरते सय्यिदुना कुहमस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی इरमाते हें : मैं अेक गुनाह की नदामत के सबब यालीस बरस से रो रहा हूं. किसी ने पूछा : या सय्यिदी ! वोह कौन सा गुनाह है ? इरमाया : अेक भरतबा मेहमान के लिये मछली ली थी फिर उस के खाने के बा'द हाथ धोने के लिये मैं ने अपने पडोसी की दीवार से बिला इजजत मिट्टी का टुकडा ले लिया था.

(رساله قشيرييه ص ١٤٩)



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُؤَن پَر دُرُودِ شَرِيفِ پَدُو اءَءَلَاءِ عَزْوَجَلْ تُوْم پَر رءَمء مَبِءَجَا. (ابن مءر)۔

બહુત કોશિશોં કી ગુનહ છોડને કી રહે આહ ! નાકામ હમ યા ઈલાહી
ઝમીં બોઝ સે મેરે ફટતી નહીં હૈ યેહ તેરા હી તો હૈ કરમ યા ઈલાહી

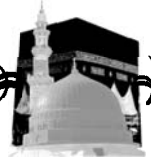
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ
﴿24﴾ ગીબત કરને વાલે કા વકાર જાતા રહતા હૈ

એક દાના (અક્લ મન્દ) કે સામને કિસી શનાસા ને એક મુસલ્માન કી ગીબત કી, ઉસ દાના ને કહા : ઐ શખ્સ ! પહલે મેરા દિલ ફારિગ થા, અબ તૂને ગીબત કે ઝરીએ મેરા દિલ ઉસ મુસલ્માન કે ઐબોં કે મુ-તઅલ્લિક વસ્વસોં ઔર નફરતોં મેં મશ્ગૂલ કર દિયા ઔર ઉસ મુસલ્માન કો મેરી નઝર મેં હકીર બનાને કી સઅ્ય કી ઔર ઈસ તરહ સે તૂ ભી મેરે નઝદીક “ગન્દા” હુવા, ક્યૂંકે મેં સમઝતા થા કે તૂ અમીન (યા’ની અમાનત દાર) હૈ ઔર બાત કો ખૂબ છુપાતા હૈ, અબ જબ કે તૂને ઉસ કા ઐબ ખોલા તો મા’લૂમ હો ગયા કે તૂ અમીન નહીં હૈ તેરે દિલ મેં કોઈ બાત રુકતી નહીં.

(ماخوذ از تنبیہ الغافلین ص ۹۲)

﴿25﴾ માઝી કી યાદ..... દો નાબીના

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! વાકેઈ ગીબત કરને વાલા ખુદ હી ગન્દા બનતા ઔર ઝલીલ હોતા હૈ. લોગ ગીબત કે આદિયોં સે કતરાતે, ઘિન ખાતે ઔર ખુદ કો બચાતે હૈં. અપને લડક-પન કી ધુંદલી યાદોં મેં સે દો નાબીનાઓં કા તઝકિરા કરતા હું. એક નાબીના મુકમ્મલ દાઢી વાલા, ફુરઆને પાક કા બહુત પક્કા હાફિઝ ઔર મઝ્હબી વઝ્અ કત્અ કા શખ્સ થા મગર બાતેં ઔર ગીબતેં બહુત ઝિયાદા કિયા કરતા થા, કિસી કો નહીં છોડતા થા, મેં (યા’ની સગે મદીના رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ઉસ સે કતરાતા થા. દૂસરા નાબીના દાઢી મુન્ડા યા ખશખશી દાઢી વાલા આમ સા આદમી થા, ઉસ કી ખૂબી યેહ થી કે એક દમ ખામોશ તબીઅત થા ઉસ કા નામ તક મુઝે મા’લૂમ નહીં, કભી ભી ઉસ કે મુંહ સે મેં ને કિસી કી ગીબત નહીં સુની, મુઝે નમાઝ કે બા’દ બારહા લાઠી પકડ કર ઉસે ઉસ કે ઘર તક લે જાને કા મૌકઅ મિલા હૈ. લગે હાથોં નાબીના કો ચલાને કી ફઝીલત ભી મુલા-હઝા કીજિયે.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भा.मि.)

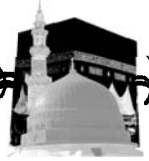
नाबीना को यालीस कदम यलाने की इज़ीलत : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 244 सइहात पर मुशतमिल किताब, "बिडिशत की कुन्जियां" सइहा 226 पर है : इज़रते सय्यिहुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के जो किसी नाबीना को यालीस कदम हाथ पकड कर यलाओगा उस के येडरे को जहन्नम की आग नही छूओगी.

(تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر ج ٤٨ ص ٣)

नाबीना को यलाने का तरीका : अक और रिवायत भी मुला-हजा हो युनान्ये ! इज़रते सय्यिहुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के भा-तमुल मुर-सलीन, रहुमतुदिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने दिल नशीन है : जिस ने किसी नाबीना को अक भील तक यलाया तो उसे भील के हर ज़िराअ (या'नी गज़) के बदले अक गुलाम आजाद करने का सवाब मिलेगा. जब तुम नाबीना को यलाओ तो उस का उलटा हाथ अपने सीधे हाथ से थाम लो के येह भी स-दका है.

(الْفُرُوسُ بِمَأْثُورِ الْخَطَّابِ ج ٣٥٠ حَدِيثُ ٨٣٩٧)

गुलाम आजाद करने की इज़ीलत : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! जुदाओ रहमान गुलामों की रहुमतों पर कुरबान के उस ने हमारे लिये सवाब कमाना किस कदर आसान रभा है. गुलाम आजाद करने पर क्या सवाब मिलता है इस बारे में ब कसरत रिवायात हैं, अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ याहे तो अपने इजलो करम से नाबीना का हाथ पकड कर यलाने पर वोह सभ सवाब अता इरमा दे. तरगीब के लिये अक हदीसे मुबारक भयान की जाती है युनान्ये सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहुमते आ-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो शप्स मुसल्मान गुलाम को आजाद करेगा इस (गुलाम) के हर उज़्व के बदले में अद्लाह उंस (आजाद करने वाले) के हर उज़्व को जहन्नम से आजाद इरमाओगा. सईद बिन मरज़ाना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : मैं ने जब सय्यिहुना जैनुल आबिदीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की भिदमते आली में येह हदीसे पाक सुनाई तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपना अक अैसा गुलाम आजाद कर दिया जिस की इज़रते सय्यिहुना अब्दुल्लाह



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ ﷻ ઊસ કે લિયે એક કીરાત અજ લિખતા હૈ ઓર કીરાત ઉહુદ પહાડ જિતના હૈ. (મુજીઝ)

બિન જા'ફર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا દસ હઝાર દિરહમ કીમત લગા ચુકે થે !

(صحيح بخارى ج ٢ ص ١٥٠ حديث ٢٥١٧)

કુછ ઐસા કર દે મેરે કિદિંગાર આંખોં મેં હમેશા નકશ રહે રુએ યાર આંખોં મેં
ન કેસે યેહ ગુલો ગુન્યે હોં ખ્વાર આંખોં મેં બસે હુએ હેં મદીને કે ખાર આંખોં મેં
﴿26﴾ મ-દની ચેનલ કી બ-ર-કત સે ગીબત સે પરહેઝ

હેદરઆબાદ (પાકિસ્તાન) કે એક ઇસ્લામી ભાઈ કા બયાન કુછ યૂં હે કે હમારે ઘર વાલોં ને તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક, દા'વતે ઇસ્લામી કે સો ફી સદી ઇસ્લામી ચેનલ યા'ની સુન્નતોં ભરે મ-દની ચેનલ પર “ગીબત કી તબાહ કારિયોં” કે મૌઝૂઅ પર એક મુબલ્લિગે દા'વતે ઇસ્લામી કા બયાન સુના. જિસ મેં ઉન્હોં ને મુઆ-શરે મેં બોલે જાને વાલે ગીબત કે અલ્ફાઝ કી તરફ ભી તવજજોહ દિલાઈ. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ઊસ બયાન કો સુન કર ગીબત સે બચને કા બહુત ઝેહન બના. એક મર્તબા મેં ને ઘર કે અન્દર કહા કે “છોટા ભાઈ ફુલાં ચીઝ લે કર અભી તક વાપસ નહીં આયા, બહુત સુસ્ત હૈ.” તો મેરી વાલિદએ મોહ-ત-રમા ને ફૌરન મેરી ગિરિફત ફરમાઈ કે યેહ તો તુમ ને ઊસ કી ગીબત કર ડાલી ક્યૂંકે તુમ ને ઊસ કો “બહુત સુસ્ત” કહ કર ઊસ કી બુરાઈ કી ! યુનાન્યે મેં ને ફૌરન તૌબા કી. અબ ઘર કે અફરાદ કી યેહ હાલત હૈ કે બાત બાત પર એક દૂસરે કી તવજજોહ દિલાતે હેં કે અભી જો બાત હુઈ યા ફુલાં લફઝ બોલા કહીં યેહ ગીબત તો નહીં !

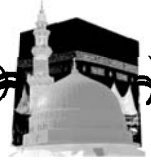
ગુનાહોં સે મુઝ કો બચા યા ઇલાહી

મુઝે નેક બન્દા બના યા ઇલાહી

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज पर हुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़ार करते रहेंगे. (अ. ५)

﴿27﴾ “वोड मुर्दे की तरह सोया है” कलना

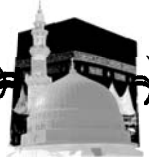
उठरते सय्यिहुना शैभ सा'दी رحمه الله عليه इरमाते हैं : मैं बहुत छोटी ही उम्र से रातों को जाग कर ईबादत किया करता था. एक बार वालिदे मोहतरम के साथ सारी रात ईबादत में गुजारी और तिलावते कुरआन करता रहा. यन्द अफ़्राह हमारे करीब मजे से सो रहे थे. मैं ने वालिदे मोहतरम से कहा : एन में से कोई एक भी औसा नहीं जो उठ कर (तहज्जुद के) दौ नईल ही पढ ले, येह तो मुर्दों की तरह सोअे पडे हैं ! वालिदे गिरामी ने इरमाया : बेटा ! तुम ईबादत करने के बजाअे सारी रात सोअे रहते येही बेहतर था क्यूंके तुम बेदार रह कर गीबत की आइत में गिरिइतार हो गअे.

(تفسير رُوح البیان ج ٩ ص ٨٩)

“गीबत करना गुनाह है” के यौदह हुइइ की निरबत से

नईली कामों के मु-तअल्लिक गीबत की 14 मिसालें

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा के तहज्जुद वगैरा नईली ईबादत से गाइल हो कर सारी रात सोया रहना उस के हक में बेहतर है जो के रात भर ईबादत तो करे मगर गीबत की आइत में ली जा पडे. तहज्जुद व नवाइल अदा करना बेशक कारे सवाब है मगर गीबत करने वाला हकदारे अजाब है. इस हिकायत में उन लोगों के लिये ईब्रत के कसीर म-दनी इल हैं जो बिला हाजते शर-ई इस तरह से गीबतें करते हैं म-सलन ❀ हुलां ईशराक याशत नहीं पढता ❀ उस को बहुत जगाया मगर इज (या तहज्जुद) के लिये नहीं उठा, अस मुर्दे की तरह सोया पडा रहा ❀ बा जमाअत नमाज की पाबन्दी नहीं करता ❀ पीर शरीफ़ का रोजा नहीं रभता ❀ जब ली ईजतिमाअ की दा'वत देता हूं “आंटी मार देता है” ❀ म-दनी ईन्आमात पर अमल करने में सुस्त है ❀ ईजतिमाअ में देर से आता या ❀ बाहर अस्तों पर घूमता या ❀ होटल में बैठा या ❀ दोस्तों के साथ बातें करता रहता है ❀ म-दनी मश्वरे में हमेशा तापीर से आता है ❀ कभी म-दनी काइले में सइर नहीं करता और ❀ समजाओ तो जूटे बहाने कर देता है.



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جَسَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुइदे पाक पढा अद्लाह उँस पर दस रइमतें भेजता है. (स्)

«28» બુરાઈ કરને વાલે કે સાથ ભલાઈ કી અનોખી હિકાયત

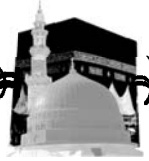
હઝરતે સચ્ચિદુના સુલ્તાનુલ મશાઈખ ખ્વાજા મહબૂબે ઈલાહી નિઝામુદ્દીન ઔલિયા رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ કી એક આદમી ખૂબ ગીબતેં કરતા ઔર આપ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ પર તરહ તરહ કી તોહ્મતેં બાંધતા ફિરતા થા. ઈસ કે બા વુજૂદ આપ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ઉસ કે ઘર ખર્ચ કે લિયે રોઝાના કુછ ન કુછ ભિજવા દિયા કરતે થે, તવીલ મુદત તક યેહ સિલ્સિલા ચલતા રહા. એક દિન ઉસ કી ઝૌજા ને ગૈરત દિલાતે હુએ કહા : દસ્તૂર તો યેહ હૈ કે જિસ કા ખાના ઉસ કા ગાના, મગર યેહ કહાં કા ઈન્સાફ હૈ કે જિસ કા ખાના ઉસી પર ગુરાના ! આપ ભી અજીબ શખ્સ હૈં કે એક ઔસે બુઝુર્ગ કે પીછે લગે હુએ હૈં જો બિગૈર સુવાલ આપ કે બચ્ચોં કો પાલ રહા હૈ ! બીવી કી બાતેં સુન કર ઉસ કો નદામત હુઈ, ગીબતોં ઔર તોહ્મતોં સે બાઝ આ ગયા. ઉસી રોઝ સે હઝરતે સચ્ચિદુના ખ્વાજા નિઝામુદ્દીન ઔલિયા رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને ભી અખ્રાજાત ભિજવાને બન્દ કર દિયે. વોહ હાઝિરે દરબાર હો કર અર્ઝ ગુઝાર હુવા : સરકાર ! ઈસ મેં કયા હિકમત હૈ કે જબ તક આપ કે બારે મેં ખુરાફાત બકતા રહા મુઝ પર ઈન્આમાત વ ઈકરામાત કી બરસાત રહી મગર જૂં હી મુઝખ્રફાત (યા'ની વાહિયાત બકવાસાત) સે બાઝ આયા ઈનાયાત વ નવાઝિશાત બન્દ હો ગઈ ! ઈશાદિ ફરમાયા : જબ તક તુમ મેરી આબરૂ રેઝી કરતે રહે મુઝે તુમહારી તરફ સે નેકિયાં મિલતી રહીં ઔર ખતાએં મિટતી રહીં, ઉન દિનોં તુમ ગોયા મેરે અજીર યા'ની મઝદૂર થે લિહાઝા મેં તુમ્હેં નેકિયાં ભેજને ઔર ગુનાહ મૈટને કી ઉજરત (મઝદૂરી) પેશ કરતા રહા, અબ જબ કે તુમ ને યેહ કામ તર્ક કર દિયા હૈ તો ફિર મેં ઉજરત કિસ બાત કી દૂં ! (سبع سنابل ص ٥٩ مُلَخَّصًا) !

અદલાહ عُزْرُوجَلْ કી ઉન પર રહમત હો ઔર ઉન કે સદકે હમારી મગ્ફિરત હો.

أُمِّيْنِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ગુનાહગાર હૂં મેં લાઈકે જહન્નમ હૂં કરમ સે બખ્શ દે મુઝ કો ન દે સઝા યા રબ

બુરાઈયોં પે પશેમાં હૂં રહમ ફરમા દે હે તેરે કહૂર પે હાવી તેરી અતા યા રબ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : ﺟﻮ ﺷﺨﺲ ﻣﯘﺝ ﭘﺮ ﺩﯗરﺪﻩ ﭘﺎક ﭘઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ﻟﻮﺍﺋﻲ)

ઈંટ કા જવાબ નાયાબ ગોહર સે : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! હઝરતે સચ્ચિદુના સુલ્તાનુલ મશાઈખ ખ્વાજા મહબૂબે ઈલાહી નિઝામુદ્દીન ઔલિયા ﷺ કી મઝકૂરા હિકાયત મેં યેહ મ-દની ફૂલ ભી ઈન્તિહાઈ ખુશબૂદાર હૈ કે અહલુલ્લાહ ઈંટ કા જવાબ પથ્થર સે નહીં “નાયાબ ગોહર” સે દિયા કરતે હૈં ! અલ્લાહ વાલે બુરાઈ કો બુરાઈ સે નહીં ભલાઈ સે ટાલા કરતે હૈં ઔર વોહ ઐસા ક્યૂં ન કરેં કે પારહ 24 સૂરએ ﺣﻢَ ﺍﻟﺴَّﺠﺪﻩ કી 34 વીં આયતે કરીમા મેં ઈશાદિ હૈ :

اِدْفَعْ بِاَلَّتِي هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا اَلَّزِمِي
بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَاَنْتَ وَنِي
حَيِّمٌ ﴿٣٧﴾

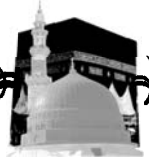
તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : ઐ સુનને વાલે ! બુરાઈ કો ભલાઈ સે ટાલ જભી વોહ કે તુઝ મેં ઔર ઉસ મેં દુશ્મની થી ઐસા હો જાએગા જૈસા કે ગહરા દોસ્ત.

હુસ્ને સુલૂક કા નતીજા : સચ્ચિદુના સદરુલ અફાઝિલ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના સચ્ચિદ મુહમ્મદ નઈમુદ્દીન મુરાદઆબાદી ﷺ “ખઝાઈનુલ ઈરફાન શરીફ” મેં બુરાઈ કો ભલાઈ સે ટાલને કા તરીકા બતાતે હુએ ઈશાદિ ફરમાતે હૈં : મ-સલન ગુસ્સે કો સખ્ર સે, જહ્લ કો હિલ્મ સે, બદ સુલૂકી કો અફ્વ (વ દર ગુઝર) સે કે અગર કોઈ તેરે સાથ બુરાઈ કરે તૂ મુઆફ કર. ઈસ ખસલત કા નતીજા યેહ હોગા કે દુશ્મન દોસ્તોં કી તરહ મહબ્બત કરને લગેંગે.

શાને નુઝૂલ : કહા ગયા હૈ કે યેહ આયત અબૂ સુફ્યાન કે હક મેં નાઝિલ હુઈ કે બા વુજૂદ ઉન કી શિદ્દતે અદાવત કે નબિય્યે કરીમ ﷺ ને ઉન કે સાથ સુલૂકે નેક ક્રિયા, ઉન કી સાહિબ ઝાદી કો અપની ઝૌજિયત કા શરફ અતા ફરમાયા, ઈસ કા નતીજા યેહ હુવા કે વોહ સાદિકુલ મહબ્બત જાં નિસાર હો ગએ. (ખઝાઈનુલ ઈરફાન, સ. 863)

﴿29﴾ હમ્લા આવર કે સાથ હૈરત અંગેઝ હુસ્ને સુલૂક

બુરાઈ કો ભલાઈ સે ટાલને કે ઝિમ્ન મેં એક અજબો ગરીબ હિકાયત મુલા-હઝા ફરમાઈયે યુનાન્યે એક શખ્સ ને હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ નસીરુદ્દીન મહમૂદ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِس کے پاس میرا جیک ہوا اور اُس نے مجھ پر دُڑدے پاک نہ پڑا
تاکذیک وہ بھ بھت ہو گیا. (ابن ابی)

બિન યૂસુફ રશીદ અવધી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي کے આસ્તાનએ આલિયા (દિલ્લી) મેં દાખિલ
હો કર છુરી સે 15 યા 17 વાર કર કે આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को शहीद जल्मी कर दिया.
આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कभाले सभ्र का मुजा-हारा करते हुअे हम्ला आवर से इरमाया :
झौरन अन्हर वाले कभरे में छुप जाओ वरना लोग पडोंय गअे तो शायद तुम्हें जिन्दा
नहीं छोड़ेंगे, वोह छुप गया. लोगों ने बहुत तलाशा मगर हम्ला आवर का सुराग न
मिला, आधी रात के वक्त मौकअ पा कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हम्ला आवर को वहां
से रुप्सत कर दिया. (سبع سنابل ص ٦٤ مُلَخَّصًا) **अद्लाह की उन पर रहमत हो और
उन के सदके हमारी मज्दिरत हो.**

اُمِّينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

औलियाउद्लाह की भी कैसी बुलन्द शानें होती हैं ! वोह अपनी
भुराईयां करने वालों बटके ज्ञान के दर पै रहने वालों के साथ भी हुस्ने सुलूक किया
करते हैं, किसी ने सय ही तो कहा है

بدی را بدی سہیل باخند جزا

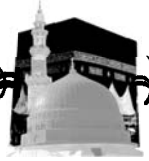
اگر مروی احسن الی من آسا

(યા'ની બદી કા બદલા બદી સે દેના તો આસાન હૈ અગર તૂ મદ હૈ તો ભુરાઈ કરને વાલે
કે સાથ ભી ભલાઈ કર)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

﴿30﴾ દો ગુદડિયોં વાલા

દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 413
સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “ઉયૂનુલ હિકાયાત” હિસ્સએ દુવમ સફહા 18 પર હૈ :
હઝરતે સય્યિદુના ઇબ્રાહીમ આજુરી કબીર رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِير ફરમાતે હૈં : સદિયોં કે દિન
થે મેં મસ્જિદ કે દરવાઝે પર બૈઠા હુવા થા કે કરીબ સે એક શખ્સ ગુઝરા જિસ ને દો
ગુદડિયાં ઓઢ રખી થીં. મેરે દિલ મેં બાત આઈ કે શાયદ યેહ ભિકારી હૈ, ક્યા હી
અચ્છા હોતા કે યેહ અપને હાથ સે કમા કર ખાતા. જબ મેં સોયા તો ખ્વાબ મેં દો



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَسَى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दूइदे पाक पढा अद्वलाह एउज (उस पर दस रडमतें बेजता है. (५))

ફિરિશ્તે આએ મુજે બાઝૂ સે પકડા ઓર ઉસી મસ્જિદ મેં લે ગએ. વહાં એક શખ્સ દો ગુદડિયાં ઓઢે સો રહા હૈ જબ ઉસ કે ચેહરે સે ગુદડી હટાઈ ગઈ તો ચેહ દેખ કર મેં હૈરાન રહ ગયા કે ચેહ તો વોહી શખ્સ હૈ જો મેરે કરીબ સે ગુઝરા થા ! ફિરિશ્તોં ને મુજ સે કહા : “ઇસ કા ગોશ્ત ખાઓ.” મેં ને કહા : મેં ને ઇસ કી કોઈ ગીબત તો નહીં કી. કહા : “ક્યૂં નહીં ! તૂને દિલ મેં ઇસ કી ગીબત કી, ઇસ કો હકીર જાના ઓર ઇસ સે નાખુશ હુવા.” હઝરતે સય્યિદુના ઇબ્રાહીમ આજુરી કબીર عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِير ફરમાતે હૈં : ફિર મેરી આંખ ખુલ ગઈ, ખોફ કી વજહ સે મુજ પર લરઝા તારી થા, મેં મુસલ્સલ તીસ (30) દિન ઉસી મસ્જિદ કે દરવાઝે પર બૈઠા રહા, સિફ ફર્જ નમાઝ કે લિયે વહાં સે ઉઠતા. મેં દુઆ કરતા રહા કે દોબારા વોહ શખ્સ મુજે નઝર આ જાએ તાકે ઉસ સે મુઆફી માંગૂં. એક માહ બા’દ વોહ પુર અસરાર શખ્સ મુજે નઝર આ ગયા, પહલે કી તરહ ઉસ કે જિસ્મ પર દો ગુદડિયાં થીં. મેં ફૈરન ઉસ કી તરફ લપકા, મુજે દેખ કર વોહ તેઝ તેઝ ચલને લગા, મેં ભી પીછે હો લિયા. આખિરે કાર મેં ને ઉસ કો પુકાર કર કહા : “ઐ અદ્લાહ ઈઝ્જલ કે બન્દે ! મેં આપ સે કુછ બાત કરના ચાહતા હૂં.” ઉસ ને કહા : ઐ ઇબ્રાહીમ ! ક્યા તુમ ભી ઉન લોગોં મેં સે હો જો દિલ કે અન્દર મુઅમિનીન કી ગીબત કરતે હૈં ? ઉસ કે મુંહ સે અપને બારે મેં ગૈબ કી ખબર સુન કર મેં બેહોશ હો કર ગિર પડા. જબ હોશ આયા તો વોહ શખ્સ મેરે સિરહાને ખડા થા. ઉસ ને કહા : ક્યા દોબારા ઐસા કરોગે ? મેં ને કહા : “નહીં, અબ કભી ભી ઐસા નહીં કરૂંગા.” ફિર વોહ પુર અસરાર શખ્સ મેરી નઝરોં સે ઓઝલ હો ગયા ઓર દોબારા કભી નઝર ન આયા. (عَبْيُونُ الْحِكَايَاتِ (عَرَبِي) ص ٢١٢) અદ્લાહ ઈઝ્જલ કી ઉન પર રહમત હો ઓર ઉન કે સદકે હમારી મગ્ફિરત હો.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

બદ ગુમાની ભી ગીબત હૈ : મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઇસ હિકાયત સે હમેં ઇબ્રત કે બે શુમાર મ-દની ફૂલ યુનને કો મિલતે હૈં, ઇસ સે ચેહ ભી મા’લૂમ હુવા કે કિસી કે બારે મેં બદ ગુમાની ભી ગીબત હૈ. યા’ની કિસી વાઝેહ કરીને કે બિગૈર કિસી કે બારે મેં બુરાઈ કો દિલ મેં જમા લેના કે વોહ ઐસા હી હૈ બદ ગુમાની કહલાતા હૈ જો કે ગીબતુલ કલ્બ યા’ની દિલ કી ગીબત હૈ. કિસી કે સાદા લિબાસ વગૈરા કો દેખ કર



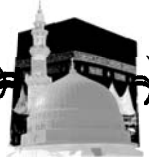
ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો શખ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુરૂફ)

ઉસે હકીર ઓર ભીક માંગને વાલા ફકીર જાનના બડી ભૂલ હે. કયા મા'લૂમ હમ જિસે હકીર તસવ્વુર કર રહે હેં વોહ કોઈ ગુદડી કા લા'લ યા'ની પહોંચી હુઈ હસ્તી હો. જૈસા કે મઝકૂરા હિકાયત સે ઝાહિર હુવા કે વોહ ગુદડી પોશ શખ્સ કોઈ આમ આદમી નહીં ખુદા રસીદા બુઝુર્ગ થે !

न पूछे इन भिका पोशों को अकीदत हो तो देखे इन को
यहें बेजा लिये फिरते हैं अपनी आस्तीनों में

﴿31﴾ પુર અસરાર હબશી

મઝકૂરા હિકાયત સે મિલતી જુલતી એક ઓર ઈમાન અફરોઝ હિકાયત મુલા-હઝા ફરમાઈયે યુનાન્યે મન્કૂલ હૈ : હઝરતે સય્યિદુના હસન બસરી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ બે ઈન્તિહા મુન્કસિરુલ મિઝાજ થે. હર શખ્સ કો અપને સે બેહતર તસવ્વુર ક્રિયા કરતે. એક દિન દરિયાએ દિજલા કે કનારે કિસી હબશી કો શરાબ કી બોતલ કે સાથ એક ઓરત કે હમરાહ દેખા, આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને દિલ મેં કહા : કયા યેહ શરાબી હબશી ભી મુઝ સે બેહતર હો સકતા હૈ ! ઈસી દૌરાન એક કશ્તી ગુઝરી જિસ પર સાત અફરાદ સુવાર થે, યકાયક વોહ ગરકાબ હો ગઈ ઓર સાતો આદમી ડૂબ ગએ. યેહ દેખ કર હબશી દરિયા મેં કૂદ ગયા ઓર ઉસ ને એક એક કર કે છ અફરાદ કો બાહર નિકાલા, ફિર મુઝ સે બોલા : સાતવાં આપ નિકાલિયે, મેં તો આપ કા ઈમ્તિહાન લે રહા થા કે આપ સાહિબે બાતિન ભી હેં યા નહીં ! યેહ ભી સુન લીજિયે ! યેહ ઓરત ઓર કોઈ નહીં બલકે મેરી અમ્મીજાન હેં ઓર બોતલ મેં શરાબ નહીં સાદા પાની હૈ. આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ સમઝ ગએ કે યેહ હબશી કોઈ આમ આદમી નહીં બલકે મેરી ઈસ્લાહ કે લિયે આઈ હુઈ ગૈબી હસ્તી હૈ. લિહાઝા આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને ઉસ કા એહતિરામ ક્રિયા ઓર દુઆ કી દર-ખ્વાસ્ત કી, ઉસ ને દુઆ કી : અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ આપ કો નૂરે બસીરત (યા'ની દિલ કી નઝર કે નૂર) સે નવાઝે. ઈસ કે બા'દ આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને કભી ભી ખુદ કો કિસી સે બેહતર નહીં સમઝા યહાં તક કે એક બાર કિસી ને ઈસ્તિફસાર ક્રિયા કે કુત્તા બેહતર હૈ યા આપ ? ફરમાયા : અગર અઝાબ સે નજાત પા ગયા તો મેં બેહતર વરના કુત્તા મુઝ જૈસે સેંકડો ગુનહગારો સે



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (अन. १)

भेउतर है. (माखुडः از: تذکرة الاولیاء حصه ۱ ص ۴۳) **अल्लाह एउर की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िरत हो.**

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा के किसी मुसल्मान के मु-तअद्लिक जटपट गलत राय नहीं काईम कर लेनी याहिये हमें क्या मा'लूम के अल्लाह एउर की बारगाह में किस का क्या मकाम है !

नज़रे करम जुदारा मेरे सियाह दिल पर
भन जअेगा येह हम तर में भे भडा नगीना

﴿32﴾ **हभशी ने जूँ डी दुआ मांगी....**

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा वोह हभशी कोई पछोंये हुअे भुजुर्ग थे. लिहाजा किसी की जाहिरि शकलो सूरत और लिबास वगैरा को देख कर उस की हरगिज तहकीर नहीं करनी याहिये. हुजुजतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इरमाते हैं : अक साल मदीनअे मुनव्वरह رَأَاهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا में कइत हुवा लोगों को अज हद गम हुवा, अक रोज अहले मदीना नमाजे इस्तिस्का (या'नी बारिश मांगने की नमाज) के वासिते निकले और हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी साथ थे, सब लोग रो रो कर दुआ मांगने लगे किसी की दुआ कबूल नहीं होती थी, इतने में दो यादरों में मलबूस अक हभशी आया और बारगाहे जुदा वन्दी में यू अर्ज गुजार हुवा : “इलाही ! हम गुनहगार हैं तूने हम लोगों को अदभ सिषाने के लिये पानी रोक लिया है, या अल्लाह ! अपनी रहमत से इसी वक्त पानी भरसा, इसी वक्त पानी भरसा, इसी वक्त पानी भरसा.” इलझौर घन्धोर घटा उमंड आई, और मूसलाधार बारिश भरसने लगी. हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वहां से हजरते सय्यिदुना इज्जैल बिन इयाज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास आअे, उन्हों ने इरमाया : क्या बात है के आप उदास नजर आ रहे हैं ? उन्हों ने हभशी की दुआ और बारिश वादा वाकिआ सुनाया, येह सुन कर हजरते सय्यिदुना



इरमाने मुस्तफ़ी ﷺ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (माखुदाज: احياء العلوم ج ١ ص ٤٠٨)

कुजैल बिन धयाज رحمة الله تعالى عليه ने यीष मारी और बेडोश डो कर जमीन पर तशरीफ़ ले आये. (माखुदाज: احياء العلوم ج ١ ص ٤٠٨) अद्लाड एउरुजल की उन पर रडमत डो और उन के सदके डमारी मग़िरत डो.

أومين بجاه النبي الأمين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मडब्बत में अपनी गुमा या धवाडी न पाडिं में अपना पता या धवाडी तरे षौफ़ से तरे डर से डमेशा में थरथर रडूं कांपता या धवाडी

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّد

﴿33﴾ औलाडे नरीना डो गध

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये द्वा'वते धस्लामी के म-दनी माडोल से डर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काडिलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्तरा सडर डीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी ध-आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना डिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर डीजिये और डर म-दनी माड की 10 तारीष के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्भ करवाधये. म-दनी काडिले में सडर की नियत की त्ती क्या षूष बडार है युनान्ये अेक धस्लामी त्ताध का कुध यूं कडना है, मेरी त्तात्ती "उम्मीद" से थीं. अदुत्रा साउन्ड के जरीअे बताया गया के बेटी है, त्ताधजान ने नियत की अगर बेटा डुवा तो द्वा'वते धस्लामी के आशिकाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के उ दिन के म-दनी काडिले में सडर कडुंगा. मेरे त्ताध के धर बेटा पैदा डुवा.

नेक औलाद की, द्दाद डरियाद की षातिर आओ यदें, काडिले में यलो कल्ल त्ती शाद डो, धर त्ती आबाद डो षाओगे राडतें, काडिले में यलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّد



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हुआ और उसने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उसने जफ़ा की. (مبارکات)

जितनी नियतें जियादा सवाब भी जियादा : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो !

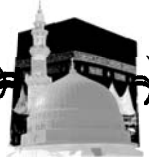
مَا شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ अथही नियत और वोह भी म-दनी काफ़िले में सुन्नतों त्तरा सफ़र करने की, سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! इसकी भी क्या भूषण ब-र-कत है के औलाद औलाद नरीना से गोद हरी हो गई ! येह जेहून में रहे के जितनी अथही नियतें जियादा होगी उतना ही सवाब में ईजाफ़ा होगा लिहाजा किसी ज़ात मकसद पाने की नियत के साथ सवाबे आभिरत की नियत को नहीं भूलना चाहिये. म-सलन अगर सिर्फ़ औलाद की नियत से म-दनी काफ़िले में सफ़र किया तो म-दनी काफ़िले में सफ़र का सवाब नहीं मिलेगा. अगर सवाब की नियत भी की होगी तो औलाद न भी मिले सवाब ज़रूर मिल जायेगा. जैसा के पारह 13 सूरे अयूसुफ़ आयत 56 में अद्लाह عَزَّوَجَلَّ का ईशदि गिरामी है :

﴿١٧﴾ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْحَسَنِينَ तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और हमनेकों का (پ ۱۳ یوسف: ۵۶) नेग जायेअ नहीं करते.

﴿34﴾ गीबत करने वाले को तोड़इ

उतरते सय्यिदुना हसन असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي को किसी ने कहा के हुलां ने आप की गीबत की है तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने गीबत करने वाले आदमी को भजूरो का अक थाल त्तर कर रवाना किया और साथ ही कहला त्तेजा के सुना है आप ने मुजे अपनी नेकियां हदिय्या की हैं तो मैं ने उन का बदला देना बेहतर जाना इस लिये भजूरें हाजिर की हैं. (منهاج العابدین ص ۶۵) अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सडके हमारी मग़ि़रत हो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (कुरआन)

गीभत करने वाले को हुआअे भैर से नवाजिये : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !

देभा आप ने ! औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का नेकी की दा'वत का अन्दाज भी कितना अनोखा हुवा करता था, जब उमाने के वली की तरफ़ से गीभत करने वाले को बदले में भजूरो का थाल पड़ोया डोगा वोह किस कदर मु-तअस्सिर हुवा डोगा ! और येह भी हकीकत है के जिस की गीभत की जाअे वोह झाअेदे में रहता है क्यूंके जिस ने गीभत की उस की नेकियां ईस (या'नी जिस की गीभत की गई उस) के आ'माल नामे में मुन्तकिल की जाती हैं और जो नेकियां गोया तोहई में दे वोह अेक तरह से हमारा भैर ज्वाह या'नी भलाई याहने वाला ही हुवा. लिहाजा उस से उलजने के बजाअे उस के हक में हुआअे भैर करनी याहिये.

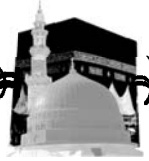
जो गीभत से युगली से रहता है भय कर

में देता हूं उस को हुआअे मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿35﴾ ईत्र की शीशी का तोहई

अेक मुबत्विलेगे दा'वते ईस्लामी का कुछ ईस तरह बयान है : मुजे पता यला के इलां साहिब ने मेरे भिलाई लोगों में गीभत की है, मुजे हजरते सय्यिहुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعَى की खिकायत मा'लूम थी. (जो अभी गुजरी) लिहाजा ईन की पैरवी की निख्यत से उन साहिब को तोहईतन "ईत्र की शीशी" भिजवाई और जिन के जरीअे भिजवाई उन को दर-ज्वास्त कर दी के सौगात भिजवाने का सभब बयान कर के आप उन की तईडीम कीजिये या'नी समजाने की तरकीब बनाईये, बात आई गई डो गई. अेक बार हम यन्द ईस्लामी भाई ईत्तिफ़ाक से उन गीभत व मुष्पा-लईत करने वाले साहिब की हुकान के करीब से गुजरे, देभते ही वोह अपनी हुकान से बाहर आ गअे, पुर तपाक तरीके पर मुलाकात की, इल के रस या किसी मशरूब से हमारी



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत
है. (ابويعلى)

भातिर तवाओअ की और अपनी दुकान के अन्दर मुज़ से हाथ उठवा कर हुआओ
अ-र-कत करवाएँ. **لِلَّهِ الْحَمْدُ**

ईंटों के तू पथ्थर से जवाभात न देना

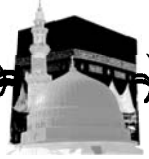
शैतान के डर वार को नाकाम बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿36﴾ म-दनी मुन्ने की जान बय गई

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत
उलाने के लिये द्वा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से डर हम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों
की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र
कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी
ईन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना इक़े मदीना के जरीअे रिसाला पुर
कीजिये और डर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को
जम्अ करवाइये. डैडरआबाद (बाबुल ईस्लाम सिन्ध) के ईस्लामी त्वाई का बयान
बित्तसर्इ अर्ज करता हूँ: मेरा म-दनी मुन्ना जिस की उम्र 5 माह है मुसल्लल बीमार
रहता था. डैडरआबाद के तक्ररीबन तमाम बडे बडे अस्पतालों में ईलाज करवाया,
जब "जाम शोडू अस्पताल" से लीवर स्कीन करवाया तो पता चला के बय्ये का अेक
कनेकशन नहीं है जो जिगर से आंतों को पड़ोयता है. बडे डोकटर ने बताया के ईस का
ऑपरेशन डोगा मगर उस के काम्याब डोने के ईम्कानात कम हैं.

र-मजानुल मुबारक में हम बाबुल मदीना (करायी) पड़ोय गये और ऑपरेशन
के लिये म-दनी मुन्ने को N.I.C.H अस्पताल में दाबिल करवा दिया. डइते वाले रोज
म-दनी मुन्ने का ऑपरेशन हुवा तो डोकटरों ने बताया के ईस का तो कनेकशन भी
नहीं, पित्ता भी नहीं और जिगर भी बहुत कमजोर है जो के सिई 25 डीसद काम कर
रहा है. ईस बय्ये के बयने का ईम्कान बहुत ही कम है. दूसरे डइते म-दनी मुन्ने का



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुझ तक पहुँचता है. (भुरान)

દૂસરા ઓપરેશન તે હુવા, મેં ઓપરેશન કે એક દિન પહલે યા'ની જુમુઆ કે રોઝ મ-દની કાફિલે મેં આશિકાને રસૂલ કે હમરાહ સુન્નતોં ભરે સફર પર રવાના હો ગયા. **مَدْنِي كَافِلَةَ** મ-દની કાફિલે સે વાપસી પર પતા ચલા કે મેરે મ-દની મુન્ને કા ઓપરેશન કામ્યાબ હો ગયા હૈ મગર ઉસ કો દૂધ નહીં દે સકતે થે ઓર પેશાબ મેં ખૂન આ રહા થા. મેં દૂસરે હફતે ફિર મ-દની કાફિલે મેં સફર પર રવાના હો ગયા. **مَدْنِي كَافِلَةَ** મ-દની કાફિલે મેં સફર કે દૌરાન હી ઘર વાલોં ને ફોન પર ઇતિલાઅ દી કે પેશાબ મેં ખૂન આના ભી બન્દ હો ગયા હૈ ઓર ઇસ ને દૂધ પીના ભી શુરૂઅ કર દિયા હૈ. મેં મ-દની કાફિલે સે ઇતવાર કો વાપસ આયા ઓર **مَدْنِي كَافِلَةَ** દૂસરે દિન યા'ની પીર શરીફ કો અસ્પતાલ સે છુટ્ટી ભી મિલ ગઈ ઓર હમ મ-દની મુન્ને કો ઘર લે આએ. **مَدْنِي كَافِلَةَ** મ-દની કાફિલે કી બ-ર-કત સે મેરા મ-દની મુન્ના બિલ્કુલ ઠીક હો ગયા. અલ્લાહ **عَزَّ وَجَلَّ** દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની માહોલ કો સલામત રખે.

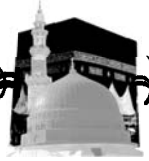
أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

બચ્યા બીમાર હૈ, બાપ બેઝાર હૈ ગમ કે સાએ ઢલેં, કાફિલે મેં ચલો
ગમ ચલે જાએંગે, દિન ભલે આએંગે સબ્ર સે કામ લેં, કાફિલે મેં ચલો

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿37﴾ 15 સાલહ મરીઝા કી ઈમાન અફરોઝ સિહ્હત યાબી

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! દેખા આપ ને ! મ-દની કાફિલે કી બ-ર-કત સે નાકિસ બચ્યા ન સિર્ફ ઝિન્દા બચ ગયા બલ્કે સિહ્હત મન્દ ભી હો ગયા. અલ્લાહ **عَزَّ وَجَلَّ** કી કુદરત કે ચેહ સબ કરિશ્મે હૈં, યકીનન દા'વતે ઇસ્લામી વાલોં પર રખબુલ અકરમ **عَزَّ وَجَلَّ** કા બે ઇન્તિહા કરમ હૈ. બેશક અલ્લાહ **عَزَّ وَجَلَّ** યાહે તો કેસા હી ગમ્ભીર મસ્અલા હો ચુટકી મેં હલ હો જાતા હૈ. ઇસ ઝિમ્ન મેં એક ઈમાન અફરોઝ હિકાયત સુનિયે ઓર ઝૂમિયે યુનાન્ચે બગદાદ શરીફ મેં એક અ-લવી લડકી રહતી થી, વોહ પન્દરહ સાલ તક અપાહજ (યા'ની મા'જૂર) રહી, એક રાત વોહ સો કર ઉઠી તો



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अद्लाह उंस पर सो रडमत नाजिल इरमाता है. (ज़रान)

तन्दुरुस्त थी, अब वोह उठ कर बैठ भी सकती थी और खडी भी हो सकती थी, उस से इस सिक्सिले में पूछा गया तो उस ने कहा : अेक रात में सप्त हिल बरदाशता हुई, मैं ने अद्लाह तआला से हुआ मांगी के या तो इस मुसीबत से नजात अता इरमा दे या फिर मौत दे दे और बहुत रोई. ज्वाब में देभा के अेक बुजुर्ग मेरे पास तशरीफ़ लाअे हैं, मैं कांप गई, और मैं ने कहा : क्या आप का इस तरह मेरे पास आना जाईज है ? उन्हों ने इरमाया : मैं तुम्हारा वालिद हूं, मैं ने गुमान किया के शायद मेरे जदे आ'ला हजरते अमीरुल मुअमिनीन अलिय्युल मुर्तजा शेरे जुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ पुदा हूं, मैं ने अर्ज की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप मेरी डालत नही देअते ? उन्हों ने इरमाया : मैं तेरा वालिद मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) हूं. मैं ने रोते हुअे अर्ज की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! अद्लाह तआला से मेरे लिये सिद्धत की हुआ इरमा दीजिये. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने दोनों डोंटों को ड-र-कत दी. फिर इरमाया : अपना डाय लाओ, मैं ने अपना डाय पेश कर दिया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उसे पकड कर ढीया और मुजे बिडा दिया. फिर इरमाया : अद्लाह का नाम ले कर खडी हो जाओ. मैं ने अर्ज की : मैं कैसे खडी हो जाऊं मैं तो मा'जूर हूं ! इरमाया : अपने दोनों डाय लाओ, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हे पकड कर ढीया तो मैं खडी हो गई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने तीन दइआ ईसी तरह किया, फिर इरमाया : खडी हो जाओ, अद्लाह तआला ने तुम्हें सिद्धत व आइय्यत अता इरमा दी है, तुम उस की इम्द करो और उस से डरो, फिर मुजे छोडा और तशरीफ़ ले गअे. जब मैं बेदार हुई तो तन्दुरुस्त थी, उन का वाकिया बगदाह शरीफ़ में भूब मशहूर हुवा.

(مصباحُ الظَّلامِ في المُستَغِيثِينَ بخيرِ الا نام ص ۱۰۳)

सरे बालीं ईन्हे रडमत की अदा लाई है

डाल बिगडा है तो बीमार की बन आई है



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीक न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रिभुष)

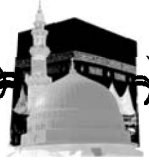
﴿38﴾ લમ્બા સિયાહ આદમી

હઝરતે સય્યિદુના ખાલિદ ર-બ-ઈ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ફરમાતે હૈં કે મૈં જામેઅ મસ્જિદ મેં બૈઠા થા કે કુછ લોગ એક શપ્સ કી ગીબત કરને લગે, મૈં ને ઉન્હે ઇસ સે મન્અ ક્રિયા તો ગીબત સે બાઝ આ કર કિસી ઓર મૌઝૂઅ પર આ ગએ, કુછ દેર બા'દ ફિર ઉસી શપ્સ કે ખિલાફ બોલને લગે, અબ કી બાર મૈં ભી કુછ દેર કે લિયે ગુફ્ત-ગૂ મેં શરીક હો ગયા. રાત કો ખ્વાબ દેખા કે એક લમ્બા સિયાહ આદમી થાલ મેં ખિન્ઝીર કે ગોશ્ત કા લોથડા લિયે આયા ઓર કહને લગા : ખાઓ ! મૈં ને કહા : મૈં..... મૈં..... મૈં ક્યૂં “ખિન્ઝીર કા ગોશ્ત” ખાઊં ? અલ્લાહ કી કસમ ! મૈં નહીં ખાઊંગા. ઉસ ને મુઝે સપ્તી સે ઝન્ઝોડા ઓર કહા : તુમ ને તો ઇસ સે ભી ગન્દી ચીઝ ખાઈ (યા'ની ગીબત કી) હૈ. યેહ કહ કર ઉસ ને મુઝે ગુદ્દી સે પકડા ઓર ખિન્ઝીર કા ગોશ્ત જિસ સે ખૂન બહ રહા થા મેરે મુંહ મેં ટૂંસને લગા હત્તા કે મૈં નીંદ સે બેદાર હો ગયા. ખુદા કી કસમ ! તીસ દિન તક મુઝે ઉસ કી બદબૂ આતી રહી ઓર મૈં જબ ભી ખાના ખાતા તો ઉસ સે ખિન્ઝીર કે ગોશ્ત કા ઝાયકા અપને મુંહ મેં મહસૂસ કરતા.

(دَمُّ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٨٥ رقم ٤٣)

﴿39﴾ અમ્રદ બીની વગૈરા કી હાથોં હાથ ગૈબી સઝાએં

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! યેહ બુઝુર્ગ નસીબદાર થે કે ઇન કો દુન્યાએ ના પાએદાર હી મેં ખ્વાબ કે ઝરીએ ખબરદાર કર દિયા ગયા. આહ ! હમારા ક્યા બનેગા ! અફસોસ ! હમ ને તો ન જાને કિતનોં કી ગીબતેં કી ઓર સુની હોંગી. અલ્લાહ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત عَزَّوَجَلَّ હમેં દુન્યા વ આખિરત કી ઝિલ્લત સે બચાએ. બા'ઝ અવકાત એસા ભી હોતા હૈ કે ગુનાહ કરતે હી હાથોં હાથ સઝાએં મિલતી ઓર ખૂબ ખૂબ રુસ્વાઈ હોતી હૈ યુનાન્યે દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 853 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “જહન્નમ મેં લે જાને વાલે આ'માલ” સફહા 646 પર હૈ : બા'ઝ લોગોં ને અમ્રદ (યા'ની ખૂબ સૂરત લડકે) કો શહ્વત કે સાથ યા ઓરત કો



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइइडे पाक न पड़े. (१७)

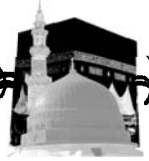
देभा तो उन की आंभें बह कर रुप्सारों (या'नी गालों) पर आ गઈ ! भा'ज ने जूं ही अपना हाथ किसी औरत के हाथ पर रभा तो दोनों के हाथ आपस में थिमट गअे और भूब रुस्वाઈ हुई, लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गअे, यहां तक के भा'ज उ-लमाअे किराम رحمة الله السلام ने उन की रहनुमाई इरमाई के सख्ये दिल् से तौबा करें और अहुद करें के आयन्दा औसी गन्दी उ-र-कत कत्मी नहीं करेंगे. जब उन्होंने ने औसा किया, तो अद्लाह عز وجل ने उन्हें छुटकारा अता इरमाया. इस किताब के मुसन्निफ़ हजरते अद्लामा इब्ने उजर عليه رحمة الله الاخير इरमाते हैं : इसी तरह मेरे अक जानने वाले के साथ हुवा जे के भुश शकल व भुश अन्दाभ था, उस ने गुनाह किया भी तो कैसी मुकदस जगह पर ! मस्जिदुल हराम के अन्दर और वोह भी उ-जरे अस्वद के पास उस पर शैतान सुवार हुवा और उस ने अक औरत को यूम लिया ! कहुरे इलाही عز وجل की बिजली गिरी और उस का येहरा पूरे का पूरा मसभ हो गया, (या'नी बिगड गया) तन बदन बे ढब हुवा, अकल कुन्द हुई और आवाज भी भराब हो गई अल गरज सरापा इभ्रत का नुभूना बन गया. हम तटकने से अद्लाह عز وجل की पनाह मांगते हैं और अद्लाह عز وجل से इत्तिजा करते हैं के हमें मरते दम तक आजमाईशों से बयाअे, बेशक वोह सब से जियादा करीम व रहीम है.

गुनाहों ने कहीं का भी न छोडा

करम हम पर उभीबे किभिया हो

﴿40﴾ लिफ़्ट का पंभा

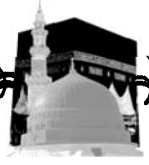
भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! यकीनन अपनी चीज की बुराई सुनना किसी को भी अख़ा नहीं लगता, इस जिम्न में अपना अक वाकिआ तसरुफ़ के साथ अर्ज करता हूं युनान्ये सप्त गर्भियों के दिन थे, हम यन्द इस्लामी भाई किसी के घर से पाना भा कर निकले और लिफ़्ट में सुवार हुअे, गर्भ उवा का अेहसास हुवा, अक ने कहा : पंभा लगा हुवा है, दूसरा बोला : हुलां किराअे दार इस्लामी भाई की इमारत



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

की लिफ़्ट तो अेयर कन्डीशन्ड है, ँस पर हमारो मेज़बान ज्यो के उस ँमारत के अेक इलेट का किराअे दार था वोह भोल उठा : “येह ँमारत काई पुरानी है.” सगे मदीना ग़ुफ़ी ने तीसरे से अर्ज की : येह बताँये के आप की बात के “येह ँमारत काई पुरानी है” सुन कर मकान मालिक भुशी से जूम उठेगा या द्दिल बरदाश्ता डोगा ? ँस पर वोह पशेमान हुअे के वाकेँ पता लगने की सूरत में उसे ँजा पडोंयेगी. फिर मेरी बात की तौसीक करते हुअे उन्हों ने अपना अेक वाकिआ सुनाया के मेरे पास अेक पुरानी कार थी अेक बार मेरे बे तकल्लुफ़ द्योस्त ने कहा : यार ! ँस “भटारे” को छुट्टी भी करवाओ ! मुजे ँस जुम्ले से सप्त सदमा पडोंया और मैं ने वोह कार ँस्ति’माल करना छोड दी और अेक द्योस्त के गेराज में उलवा दी. अर्सा हुवा यूँ ही पडी है, बेयने को भी द्दिल नहीं करता क्यूँके उस के साथ मेरी बा’अ मु-तभर्रिक यादें वाबस्ता हैं. ज्यो ज्यो ँस्लामी भाँई गुफ़्त-गू में शरीक थे ﷺ सब ने गीभतें करने सुनने से तौभा की.

अैभ भयान करना गीभत है भी और नहीं भी : भीठे भीठे ँस्लामी भाँय्यो !
भयान कर्दा डिकायत से भभूभी अन्दाजा लगाया जा सकता है के कुतूल गुफ़्त-गू किस कदर भतरनाक डोती है के गीभत डो जाती है और कानों कान भबर भी नहीं डोती ! ँस डिकायत में अेक नहीं कम अज कम द्यो गीभतें हैं अेक तो वोडी “ँमारत बहुत पुरानी है” और ँस से पहले की जाने वाली बात के ँस की लिफ़्ट में तो सिर्फ़ पंभा है जब के कुलां की लिफ़्ट में A.C. है. अगर येह बात भी मकान मालिक सुने तो उस को ना गवार गुजरे लिहाजा येह भी गीभत है. यहां येह वजाहत करता यदूं के अगर भुराँ भयान करने का कोँ सडीह मक्सद डो म-सलन ँमारत में इलेट किराअे पर लेना था और ँस जिम्न में येह गुफ़्त-गू हुँई के येह ँमारत भी पुरानी है और लिफ़्ट में भी सिर्फ़ पंभा लगा हुवा है, कुलां ँमारत बेहतर है के उस की लिफ़्ट में भी A.C. है, यलो वहीँ इलेट भुक करवाते हैं. तो येह गुनाह भरी गीभत नहीं. अगर किसी सडीह मक्सद की निय्यत नहीं भस यूँ ही किसी का अैभ या उस की किसी यीज



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલ્લાહ ઈંજલ તુમ પર રહમત ભેજેગા. (અનહદી)

કી ખરાબી કો પીઠ પીછે બયાન કર દિયા જૈસા કે આજ કલ હમારી અક્સરિય્યત કી આદત હૈ તો યેહ ગુનાહ ભરી ગીબત હૈ ઓર મઝકૂરા હિકાયત મેં ભી મહૂઝ ફુઝૂલ બક બક કે તૌર પર બિલા મક્સદે સહીહ ઈમારત કે ઐબ બયાન કિયે ગએ લિહાઝા વોહ દોનોં બાતેં ગુનાહોં ભરી ગીબતેં શુમાર હોંગી.

દુઆએ અત્તાર : યા રબ્બે મુસ્તફા عَزَّوَجَلَّ ! હમારી બે હિસાબ મગ્ફિરત ફરમા, યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમારે સારે ગુનાહ મુઆફ ફરમા, યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમેં ગીબતોં ચુઘિયોં, તોહ્મતોં, બદ ગુમાનિયોં, દિલ આઝારિયોં ઓર હર તરહ કે ગુનાહોં સે બચા, યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમેં પક્કા નમાઝી ઓર સુન્નતોં કા આદી, મ-દની ઈન્આમાત કા આમિલ ઓર મ-દની કાફિલોં કા મુસાફિર બના. યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમેં દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ મેં ઈસ્તિકામત ઈનાયત ફરમા. યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમારે પ્યારે પ્યારે આકા મક્કી મ-દની મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી પ્યારી ઉમ્મત કી મગ્ફિરત ફરમા.

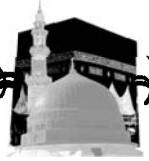
પુદાયા અજલ આ કે સર પર ખડી હૈ દિખા જલ્વએ મુસ્તફા યા ઈલાહી
મુસલ્માં હૈ અત્તાર તેરી અતા સે હો ઈમાન પર ખાતિમા યા ઈલાહી

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुरडे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरडे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगिफरत है. (भाजिह)

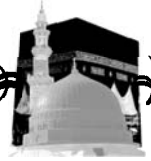
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

दुरद शरीफ़ की इज़ीलत : उजरते उबय्य बिन का'ब रضى الله تعالى عنه ने अर्र की के (सारे विद्, वज़ीफ़े, दुआओं छोड दूंगा और) में अपना सारा वक्त दुरद प्वानी में सर्फ़ करेगा. तो सरकारे मदीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरमाया : “येह तुम्हारी फ़िकों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाओगे.”

(सुन्न त्रिम्झी ज ४ व २०७ हदिथ २६६०)

अहयाउल उलूम से गीबत की ता'रीफ़ और मिसालें : हुज्जतुल इस्लाम उजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رحمه الله الوالى अहयाउल उलूम जिल्द 3 सफ़हा 177 पर इरमाते हैं : गीबत येह है के तुम अपने (मुसल्मान) भाई का जिक उन अल्फ़ाज के साथ करो के अगर उस तक येह बात पड़ोये तो वोह उसे ना पसन्द करे. याहे उस के ब-दनी या न-सभी (या'नी जानदानी) औब का तजकिरा करो या अप्लाक और अमल के अे'तिबार से कोताही बयान करो, उस की हुन्यवी ખરાબી का जिक करो या उप्परी का, हता के उस के कपडे, मकान और जानवर के हवाले से नक्स (जामी) बयान करना भी गीबत है.

बदन में नक्स (जामी) की सूरत येह है के म-सलन ❀ युन्या (या'नी कमज़ोर नजर वाला या तेज रोशनी बरदाशत न करने के सबब आंभें जपकाने वाला) है ❀ तेंगा (जिस को अेक के दो नजर आंभें या आंभें दबा कर देबने वाला) है ❀ गन्जा है ❀ उस का कद छोटा या ❀ लम्बा है ❀ उस का रंग सियाह (काला) या ❀ जर्द (पीला) है वगैरा वगैरा या'नी हर वोह बात जिसे वोह ना पसन्द करता है वोह गीबत है, बात फिर जिस तरह की भी हो.

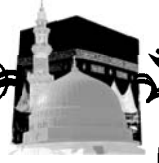


इरमाने मुस्तफा عليه السلام : जो मुअ पर अक दुरद शरीफ पढता है अव्लाह عز وجل उस के लिये अक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अज्ज)

नसब (पानदान) के उवाले से गीबत येह है के म-सलन वोह यूं कहे के उस का बाप
 ❀ भोयी है या ❀ जाकरुब (जादू देने वाला) है. अप्लाक के उवाले से गीबत इस
 तरह है के ❀ वोह बढ अप्लाक है ❀ बपील (कन्जूस) ❀ मु-तकब्बिर (भगदुर)
 ❀ रियाकार ❀ बहुत गुस्से वाला ❀ बुजदिल ❀ आजिठ ❀ कमजोर दिल और
 ❀ ला परवाल. अइआल में गीबत येह है के जैसे कामों का जिक् किया जाये जिन का
 दीन से तअद्लुक है जैसे तुम कछो के ❀ वोह योर है ❀ जूटा है ❀ शराब पोर है
 ❀ भियानत करने वाला या ❀ जालिम है ❀ नमाज या ❀ जकात में सुस्ती करने
 वाला है या येह के ❀ रुकूअ और ❀ सज्दा भी अखी तरह नहीं करता ❀ नजसतों
 (या'नी नापाकियों) से नहीं बयता ❀ मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक नहीं करता
 ❀ जकात सहीह मकाम पर अदा नहीं करता या ❀ इस (या'नी जकात) की तकसीम
 सहीह तरीके पर नहीं करता या के ❀ अपने रोजे को गुनाहों ❀ गीबतों और
 ❀ लोगों की इज्जतों में दप्ल अन्दाजी से नहीं बयाता. और दुन्या से मु-तअद्लिक
 अइआल में गीबत की सूरत येह है के ❀ वोह जियादा बा अदब नहीं है ❀ लोगों के
 साथ तौहीन आमेज सुलूक करता है ❀ अपने आप पर किसी दूसरे का हक नहीं जानता
 या येह के ❀ वोह दूसरों पर सिर्फ अपना हक समजता है या येह के ❀ वोह बहुत
 जियादा बातें करता है ❀ बहुत भाता है ❀ बहुत सोता है ❀ बे वक्त सोता है
 ❀ हर जगह बैठ जाता है. कपड़ों के मु-तअद्लिक गीबत की सूरत येह है के म-सलन
 ❀ उस की आस्तीन बहुत फुली है ❀ दामन लम्बा है और ❀ कपडे मैले हैं.

(احياء العلوم ج 3 ص 177)

आह ! हमारी ज्बान की बे अहतियातियां !!! : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो !
 आह ! हमारी ज्बान की बे अहतियातियां !!! आज कल अक्सर लोग मुसल्मानों
 के बारे में न जाने क्या क्या बक कर रोजाना कितनी ही बार गीबत या भोइतान
 वगैरा का इरतिकाब करते हुअे الله أكبر अजाबे नार के हकदार ठहरते होंगे ! हर
 कौम, हर शो'बे, हर तब्के की अपनी अपनी ज्बान में झी जमाना बे शुमार हजारों
 हजार ऐसे अह्जाज बोले जाते हैं जो गीबत या भोइतान पर मुश्तमिल होते हैं,
 इसी तरह अक्सर औरतों की बातों में भी गुनाहों भरे कलिमात व मुहा-वरात

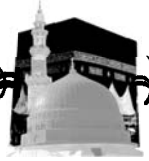


इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुइरे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेंगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (उंफ़)

की कसरत व बोडतात छोती है. अभी ओहयाउल उलूम के हवाले से आप ने ईजमाली तौर पर गीबत की मिसालें मुला-हजा कीं, येह सारे के सारे अल्फ़ाज आज़ भी मुफ़्तलिफ़ अन्दाज़ में हमारे यहाँ बतौर गीबत राईज हैं. ईस के ईलावा भी मैं अपनी नाकिस मा'लूमात के मुताबिक उर्दू ज़बान और अपने गिर्दो पेश के माहोल में बोले जाने वाले जैसे अल्फ़ाज और जुम्हों की तफ़सीली तौर पर निशान देही करने की कोशिश करता हूँ जिन में अक्सर का तअद्लुक गीबत से है जब के बुराई बयान करने के लिये पीठ पीछे कहे जायें. मौक़अ महल और निय्यत की ज़राबियों के अतिबार से बसा अवकात येही अल्फ़ाज औब दरी या तोहमत या बह गुमानी या गाली या बह अडकाबी या हिल आज़ारी वगैरा बल्के अक ही वक्त में इन छ समेत मज़ीद कई गुनाहों पर भी मुन्तबिक (या'नी लागू) हो सकते हैं. अगर येह मिसालें आप जेह्न नशीन इरमा लेंगे और आपिरत के नुक़सान से बचने की कुहन नसीब हुई तो ईन के ज़रीअे गुनाहों बरे मज़ीद बे शुमार कलिमात व फिरात जुद ही समज़ में आ जायेंगे और इन गुनाहों से दूर रहने में बहुत ही मदद मिलेगी. पढने वाले की हिल यस्पी और सहूलत के लिये मुफ़्तलिफ़ उन्वानात की सुर्भियां लगा कर मिसालों को बयान किया गया है. शैतान लाफ़ कोइत हिलाअे मगर आप गोश बर आवाज़ रहिये और भूब तवज्जोह से गीबत वगैरा गुनाहों के दलदल में धंसाने वाले अल्फ़ाज और जुम्हे समाअत इरमाते यले जाईये :

“गीबत ईमान को काट देती है” के बीस दुइइ की निस्बत से पडोसियों के बारे में गीबतों की 20 मिसालें

✽ उस जैसे पडोसी से तो अद्लाह बयाअे ✽ इलां पडोसन याल यलन की अख़री नहीं ✽ उस की लउकियां ज़राब हैं ✽ उस के सारे लउके नम्बरी हैं ✽ वोह पडोसन तो जब देपो कुछ न कुछ मांगने आ जाती है मायिस तक घर में नहीं रभी ✽ उस के घर का माहोल बहुत बुरा है ✽ ईस को ज़रा मुंह दे दिया तो अब जब देपो ठीक खाने के वक्त किसी न किसी बहाने से आ जाती है ✽ उस की नाक बहुत तेज़ है



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुळ पर अेक बार दुरुदे पाक पढा अदलाह عزوجل (उस पर दस रइमतें भेजता है. (س))

हमारे जाने की पुश्बू उसे झोरन पड़ोय जाती है ❀ आये दिन उस के हां तो जगडा ही रहता है ❀ मियां बीवी की आपस में बनती नहीं ❀ उन की लडकी घर से भाग गई है ❀ कल उस के अडे भेटे ने उस पर हाथ उठाया था ❀ वोह पडोसी तो बिडकुल पडोसियों का कोई हक ही नहीं जानता ❀ उपर की मन्जिल वाला बुद्धा बहुत सताता है ❀ पहली मन्जिल वाले के बय्ये बहुत शरारती हैं ❀ अेक तो मेरे बय्ये को उस के बय्ये ने मारा, जब इरियाह ले कर गया तो उपर से मुळ से जगडने लगा ❀ उस के बय्यों की शिकायत करूं तो बिडकुल नहीं सुनता ❀ बिगैर दस्तक दिये हमारे घर के अन्दर घुस जाता है ❀ हमारा मकान मालिक उपर की मन्जिल पर रहता है अैसा तंग करता है के बस क्या कछूं ❀ उस पडोसी के भेटे की धूमधाम से शादी हुई मगर हमें जूटे बहाने शादी कई तक नहीं दिया वरना हम कौन सा उन के जाने के लिये बैठे हैं, अदलाह عزوجل ने हम को बहुत दिया है.

“गीबत की हलाकत भैजियां” के सतरह दुरुइ की निरुबत से मंगनी/शादी में गीबतों की 17 मिसालें

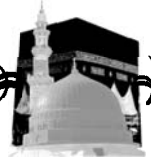
जब रिश्ता तै करना होता है तो इरीकैन भीठे भीठे बन कर तरकीब बना लेते हैं, मगर इस दौरान भी और आ'द में तो अकसर गीबतों का सिखिसा रहता है इस की 17 मिसालें मुला-हजा हों : ❀ बे मुरुव्वत लोग हैं ❀ घर आ कर दा'वत देनी याहिये थी ❀ सिई कडलवा दिया या ❀ झोन से ही गुजारा कर लिया ❀ सास ने किसी को बुलाने के लिये भी नहीं भेजा ❀ हम ने उन को अपने यहां के लिये जियादा आदमियों को साथ लाने की दा'वत दी थी मगर उन्हों ने हम को बहुत थोडे आदमियों की दा'वत दी है ❀ मैं दा'वत में गया तो सुसर ने मुझे भास लिफ्ट नहीं दी ❀ मुझे येह तक नहीं बोला के “और आओ” ❀ लडकी वालों की तरफ से बहुत दिन हुअे कोई दा'वत नहीं मिली येह कोई तरीका है ! ❀ कन्जूस मकनी यूस हैं ❀ जाने का सिई पतीला भिजवा दिया देग आनी याहिये थी ❀ सास का दिल बहुत छोटा है ❀ आम की सिई अेक ही पेटि भेज और ❀ आम भी बस अैसे ही थे ❀ अडे भाई



इरमाने मुस्तफा ﷺ : عن النبي صلى الله عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (بخاری)

के लिये घडी ❁ बाज के लिये सूट और ❁ अम्मी के लिये यादर की तरकीब थी मगर हर चीज घटिया पकड़ाई वगैरा वगैरा. इन में बा'ज तो वोह गीबतें हैं जिन को शायद “योरी और सीना जोरी” कहें तब भी गलत नहीं क्यूंके अक्वल तो जिन चीजों के गिले शिक्वे हो रहे हैं उन के अन्दर अक्सर रिश्वत की भयानक आइत भी शामिल है. म-सलन येह मुता-लभात करना के लउके के भाई और वालिदैन को लउकी वाले येह येह चीजें देंगे तो ही हम रिश्ता करेंगे तो येह “रिश्वत” हुई लउकी वाले अगर तहाईई नहीं देते तो लउके वाला इरीक ता'ने मलने देता है लिहाजा अपनी लउकी को सुसराव वालों के शर से भयाने के लिये आम की पेटियां और जाने के पतीले वगैरा पेश किये जाते हैं. मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : “रिश्वत वोह है जो बा'ज कौमों में राईज है के अपनी बेटी या भहन का रिश्ता किसी से उस वक्त तक नहीं करते जब तक भातिभ (या'नी निकाह का पैगाम देने वाले) से अपने लिये कोई चीज हासिल न कर लें, नीज रिश्वत वोह है के कोई शप्स अपने जेरे विलायत (या'नी जेरे सर परस्ती) लउकी का रिश्ता तो कर दे मगर अपने लिये कुछ लिये बिगैर वोह लउकी शोहर के हवाले न करे.” (इतावा र-अविय्या, जि. 12, स. 257) याद रभिये ! रिश्वत हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है युनान्हे हदीसे पाक में है : الرَّاشِي وَالْمَرْتَشِي فِي النَّارِ. (अल्लेजुमُّ الْاَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ١ ص ٥٥٠ حديث ٢٠٢٦)

रिश्वत से तौबा का तरीका : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जिस ने रिश्वतें ली हों, अब नादिम है तो सिई जहानी तौबा काई नहीं, तौबा के साथ साथ सारी रिश्वतें उन को लौटाना होंगी जिन जिन से ली हैं, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को दे, उन का भी पता न लगे तो इकीर को दे दे. रिश्वत की मजीद मा'लूमात के लिये ईजाने सुन्नत जिहद अक्वल सइहा 540 ता 554 का मुता-लआ इरमा लीजिये.



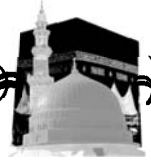
ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ﷺ : جس کے پاس میرا لڑکے لڑکی اور اس نے مجھ پر دُڑدے پاک نہ پڑے
 तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (११)

“ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੀ ਆਭੜ ਰੇਝੀ ਫ਼ਰਾਮ ਹੈ” ਕੇ ਆਫ਼ਸ ਫ਼ੁੜਫ਼ ਕੀ ਨਿਸ਼ਬਤ ਸੇ ਸੁਸਰਾਲੀ ਰਿਸ਼ਤੀਂ ਕੀ ਗੀਭਤੀਂ ਕੀ 22 ਮਿਸਾਲੇਂ

❖ ਮੇਰੀ ਭਫ਼ਨ ਕੀ ਉਸ ਕੀ ਸਾਸ ਤੰਗ ਕਰਤੀ ਹੈ ❖ ਭਫ਼ਨੀਓ ਫ਼ਰ ਕਾ ਖ਼ਰ੍ਯ ਨਫ਼ੀਂ
 ਫ਼ੇਤਾ ❖ ਕਮਾ ਕਰ ਸਭ ਮਾਂ ਕੀ ਫ਼ੇ ਫ਼ੇਤਾ ਹੈ ❖ ਫ਼ਾਮਾਫ਼ ਮੇਰੀ ਭੇਟੀ ਪਰ ਝੁਲਮ ਕਰਤਾ ਹੈ
 ❖ ਅਪਨੀ ਮਾਂ ਕੀ ਭਾਤੀਂ ਮੇਂ ਆ ਕਰ ਆਰ ਆਰ ਫ਼ਰ ਸੇ ਨਿਕਾਲ ਫ਼ੇਨੇ ਕੀ ਤੜੀਯਾਂ ਫ਼ੇਤਾ ਹੈ
 ❖ ਮਾਂ ਕੇ ਯਫ਼ਾਨੇ ਪਰ ਭਾਤ ਭਾਤ ਪਰ ਮਾਰਤਾ ਹੈ ❖ ਤਲਾਕ ਕੀ ਫ਼ਮਕੀਯਾਂ ਫ਼ੇਤਾ ਹੈ ❖ ਰਾਤ
 ਫ਼ੇਰ ਤਕ ਫ਼ਰ ਸੇ ਆਫ਼ਰ ਰਫ਼ਤਾ ਹੈ ❖ ਫ਼ਿਨ ਕੀ ਫ਼ੇਰ ਤਕ ਸੀਤਾ ਰਫ਼ਤਾ ਹੈ ❖ ਫ਼ੜ ਫ਼ਰਾਮ ਹੈ
 ❖ ਫ਼ੂਸਰੀ ਔਰਤ ਕੇ ਯਕੱਕਰ ਮੇਂ ਹੈ ❖ ਈਸ ਕੇ ਫ਼ੋਸ਼ਟ ਅਯਥੇ ਨਫ਼ੀਂ ਹੈਂ ❖ ਸੁਨਾ ਹੈ ਨਸ਼ਾ
 ਵਗੈਰਾ ਭੀ ਕਰਤਾ ਹੈ ❖ ਫ਼ਮ ਕੀ ਭਫ਼ੁਤ ਮਨ੍ਹੂਸ ਆਫ਼ਮੀ ਸੇ ਪਾਲਾ ਪੜ ਗਯਾ ਹੈ ❖ ਐਵਫ਼ੀ
 (ਯਾ'ਨੀ ਭਸ ਐਸਾ ਫ਼ੀ) ਹੈ ❖ ਝਫ਼ਰੀਲਾ ਸਾਂਪ ਹੈ ❖ ਉਸ ਕੇ ਫ਼ਿਲ ਮੇਂ ਫ਼ਗਾ ਹੈ ❖ ਉਝੜ
 ❖ ਗੰਵਾਰ ❖ ਝਫ਼ਿਲੇ ਮੁਤਲਕ ਹੈ ❖ ਭੇਟੇ ਕੀ ਸਾਸ ਝਫ਼ੂਗਰਨੀ ਹੈ ❖ ਭਫ਼ੂ ਨੇ ਤਾ'ਵੀਝ ਗਨ੍ਫ਼ੇ
 ਕਰਵਾ ਕਰ ਮੇਰੇ ਭੇਟੇ ਕੀ ਅਪਨੀ ਤਰਫ਼ ਕਰ ਲਿਯਾ ਹੈ ਈਸ ਲਿਯੇ ਭੇਟਾ ਮੇਰੀ ਐਕ ਨਫ਼ੀਂ ਸੁਨਤਾ.

“ਗੀਭਤ ਨਾ ਝਫ਼ੜ ਵ ਫ਼ਰਾਮ ਹੈ” ਕੇ ਸਤਰਫ਼ ਫ਼ੁੜਫ਼ ਕੀ ਨਿਸ਼ਬਤ ਸੇ ਮਯਕੇ ਝ ਕਰ ਸੁਸਰਾਲ ਕੇ ਮੁ-ਤਅਲਵਿਕ ਕੀ ਭਨੇ ਵਾਲੀ ਗੀਭਤੀਂ ਕੀ 17 ਮਿਸਾਲੇਂ

❖ ਸਾਸ ਫ਼ਰ ਵਕ਼ਤ ਮੁਂਫ਼ ਝੁਲਾਐ ਰਫ਼ਤੀ ਹੈ ❖ ਭਾਤ ਭਾਤ ਮੇਂ ਕੀੜੇ ਨਿਕਾਲਤੀ
 ਹੈ ❖ ਮੇਰਾ ਪਕਾਨਾ ਉਸੇ ਪਸਨਫ਼ ਫ਼ੀ ਨਫ਼ੀਂ ਆਤਾ ❖ ਮੇਰੀ ਤਭੀਅਤ ਖ਼ਰਾਭ ਫ਼ੀ ਤੀ
 ਸਾਸ ਕਫ਼ਤੀ ਹੈ ਭਫ਼ਾਨੇ ਭਨਾਤੀ ਹੈ ❖ ਫ਼ੂਸਰੀ ਭਫ਼ੂ ਕੀ ਭੜਾ ਯਾਫ਼ਤੀ ਹੈ ਮੇਰੇ ਸਾਥ
 ਪਰਾਯਾ ਸੁਲੂਕ ਕਯੂੰ ਕਰਤੀ ਹੈ ❖ ਭੜੀ ਅਘਭੜ ਔਰ ਸਘਤ ਮਿਝਾਝ ਹੈ ❖ ਮੁਝ ਪੇ ਫ਼ਰ
 ਵਕ਼ਤ ਅਪਨਾ ਫ਼ੁਕਮ ਯਲਾਤੀ ਰਫ਼ਤੀ ਹੈ ❖ ਸ਼ੋਫ਼ਰ ਕੀ ਮੇਰੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਭੜਕਾਤੀ ਹੈ
 ❖ ਸਾਸ ਮੁਝ ਸੇ ਕਾਮ ਭਫ਼ੁਤ ਕਰਵਾਤੀ ਹੈ ਖ਼ੁਫ਼ ਸਾਰਾ ਫ਼ਿਨ ਭਿਸ਼ਟਰ ਪਰ ਪੜੀ ਰਫ਼ਤੀ ਹੈ
 ❖ ਮਾਂ ਭੇਟੀ ਮਿਲ ਕਰ ਮੇਰੀ ਭੁਰਾਫ਼ੀਯਾਂ ਕਰਤੀ ਰਫ਼ਤੀ ਹੈਂ ❖ ਸਾਸ ਨੇ ਸ਼ੋਫ਼ਰ ਕੀ ਮੇਰੇ
 ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਕਰ ਫ਼ਿਯਾ ਹੈ ਅਭ ❖ ਮੇਂ ਉਨ੍ਹੇਂ ਸੀਨਾ ਭਨ ਕਰ ਭੀ ਫ਼ਿਭਾਫ਼ੀਂ ਵੋਫ਼ ਮੁਝੇ
 ਪਾਫ਼ੀਂ ਕੀ ਝੂਤੀ ਫ਼ੀ ਸਮਝੇਂਗੇ ❖ ਕਫ਼ੀ ਕਫ਼ੀ ਫ਼ਨ੍ਫ਼ੇ ਉਨ ਕਾ ਈਨ੍ਫ਼ਿਝਾਰ ਕਰਤੀ ਫ਼ੂੰ ਆਫ਼ੇ ਫ਼ੀ
 ਮੁਂਫ਼ ਝੁਲਾ ਕਰ ਭੈਫ਼ ਝਾਫ਼ੇ ਹੈਂ ❖ ਉਨ ਕੀ ਕਲਮੁਖ਼ੀ ਤਲਾਕਨ ਭਫ਼ਨ ਕੀ ਭੀ ਖ਼ਿਫ਼ਮਫ਼ੇਂ ਕਰਨੀ



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर अक बार दुरुदे पाक पढा अवलाह عزوجل (उस पर दस रहमतें बेजता है. (س))

पडती हैं ❁ मेरी झुलां तलाकन नन्दे बडी मुंहफ़ट है ❁ तलाक ली मगर जोर नहीं गया ❁ सुना है उस ने अपने मियां को अक दिन भी सुभ नहीं दिया था आबिर बेयारा तलाक न देता तो क्या करता.

“गीबत करने वाला बरोजे कियामत कुत्ते की शकल में आयेगा” के सेंतीस हुर्रुफ़ की निरबत से मंगनी टूटने या तलाक होने पर की जाने वाली गीबतों की 37 मिसालें

अगर मंगनी टूट जाये या तलाक वाकेअ हो जाये तो अक्सर शैतान फ़रीक़ैन को कान पकड कर रिंग में लाता और वोह नाय नयाता है के अल अमान वल डईज !!! गीबतों, तोहमतों, ँलाम तराशियों, अैब दरियों, दिल् आजारियों, बढ गुमानियों और बढ कलामियों का अक तूफ़ान पडा हो जाता है, हर भूभी भी “अैब” बन कर रह जाती है ! हर फ़रीक़ अपने आप को “मजलूम” साबित करने के लिये अक दूसरे से बढ यढ कर जूट बोलता है डालां के बरसों से घर यल रहा होता है मगर जब दो भानदानों में “जंग” छिडती है, तो फ़रीके मुकाबिल को ﷻ “बढ अकीदा” तक कड दिया जाता है ! अैसे मवाकेअ पर की जाने वाली गीबतों की 37 मिसालें मुला-डजा डों : लडकी वालों की तरफ़ से गीबतें : ❁ शराभी था ❁ जूआरी ❁ लुय्या ❁ लईगा ❁ लोडर ❁ आवारा था ❁ 420 था ❁ कमाता नहीं था ❁ घर का भर्य नहीं देता था ❁ सब पैसे मां के डाय में दे देता था ❁ उस ने कभी घर को घर नहीं समजा ❁ सास रोटी नहीं देती थी ँस लिये लडकी पदले से पाती थी ❁ बहुत जालिम लोगों से पाला पडा था ❁ इंस गअे थे ❁ बडी मुश्किल से जान छूटी है ❁ डमारी लडकी को बे कुसूर मारता था ❁ डमारे सामने बहुत अकडता था ❁ उस का सारा भानदान नीय है डमारे मे'यार के लोग डी नहीं थे ❁ डमारी लडकी पर सोकन लाना याहता था ❁ डमें जान से मारने की धमकियां देने लगा था ❁ डमारी लडकी को बढनाम करना शुड्रअ कर दिया था ❁ कमीने ने आबिर अपनी जात दिभाई.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरेदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

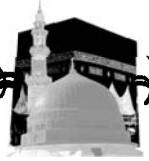
लडके वालों की तरफ़ से गीबतें : ❀ लडकी का याल यलन सहीह नहीं था ❀ बहुत सारे आशना बना रभे थे ❀ घर में ज़बान बहुत यलाती थी ❀ इस की मां ने खाना पकाना भी नहीं सिखाया था ❀ बरतन भी मांजने नहीं आते थे ❀ कपडे भी बराबर नहीं धो सकती थी ❀ बहुत जगडावू थी ❀ योरियां करती थी ❀ ता'वीज़ गन्डे करवाती थी ❀ ज़दूगरनी थी ❀ युडैल थी ❀ हमारे घर का सुकून बरबाद कर दिया था ❀ इस की मां घर आ कर हम को कोसनें दे गई थी ❀ हम को इस ने बढनाम कर दिया है ❀ हम ने गरीब समज कर तरस जाया था मगर उस का तो दिमाग आस्मान पर पड़ोया हुवा था वगैरा वगैरा.

घर की बात बाहर करने वाला कमजात होता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डिहायते भैर की हुआ है, यकीनन जो गीबतें वगैरा करता है वोह बहुत ही भुरा बन्दा है. आईये ! आप को अक अखे बन्दे की डिहायत अर्ज करूं युनान्हे अक भुजुर्ग عَلَيْهِ تَعَالَى اللهُ تَعَالَى مِنْهُ فَارْمَاتِهِ هَيْ : अक साहिबे राज (या'नी पेट के मजबूत आदमी) का निकाह हुवा मगर दोनों के माबैन जेह्नी हम आहंगी का कुकदान था (या'नी कमी थी) किसी तरह उस के दोस्त को इस बात की बनक मिल गई, उस ने पूछा : तुम्हारे घर का क्या मरखला है ? उस साहिबे राज ने जवाब दिया : मैं ईतना कमजात नहीं के घर की बात किसी को बता दूं ! बात आई गई हो गई. बिल आबिर घर न यल सका और तलाक टेनी पड गई. जब उस के दोस्त को पता यला तो बोला : वोह तो अब तुम्हारी बीवी नहीं रही, बता दो क्या मुआ-मला था ? उस समजदार शप्स ने जवाब दिया : अब तो वोह मेरे लिये गोया गैर औरत हो चुकी है और किसी गैर औरत के मु-तअद्लिक मैं कैसे बात करूं !

अल्लाह हम को इज़ल से अकले सलीम दे

शर्मो हया तू बहरे रसूले करीम दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढा तलकीक वोह बढे अप्त हो गया. (हंज़र)

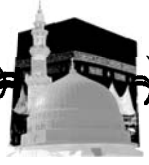
जोड़ों की बीमारी भी गँध और बे रोजगारी भी गँध : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये द्वा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी ईन्आमात के मुताबिक जिन्दगी गुजारिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, म-दनी काफ़िले की अेक म-दनी बहार आप के गोश गुजार की जाती है युनान्चे अेक ईस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरी अेक तरफ़ बे रोजगारी थी तो दूसरी तरफ़ जोड़ों के दर्द की पुरानी बीमारी थी, तंगदस्ती और शदीद दर्द के बाँस सप्त बेजारी थी, बहुत ईलाज करवाया मगर कुछ फ़ाअेदा न हुआ. किसी ईस्लामी भाई ने ईन्फ़िरादी कोशिश के जरीअे जेहून बना कर द्वा'वते ईस्लामी के आशिकाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब बना दी. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और आशिकाने रसूल की शफ़कत भरी सोहबत की ब-र-कत से मेरी भरसों पुरानी जोड़ों की बीमारी बिल्कुल सही हो गई. म-दनी काफ़िले से वापसी पर दूसरे ही दिन अेक ईस्लामी भाई आअे और उन्हों ने मुझे काम पर लगा कर मेरे रोजगार की तरकीब भी बना दी. येह बयान देते हुअे الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ अेक साल से ज़ियादा अर्सा गुजर चुका है मेरा काम अेक दिन भी बन्द नहीं हुआ और दर्द भी पलट कर नहीं आया.

जोड़ जोड़ आप के, हों अगर दुख रहे कर के हिम्मत यलें, काफ़िले में यलो

तंगदस्ती मिटे, रिज़क सुथरा मिले हर करम कें भुलें, काफ़िले में यलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

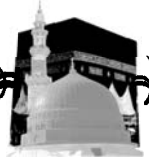
मुँदें को अरथण पडोस दो : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से जोड़ों का पुराना दर्द भी टला और रोजगार भी मिला. आशिकाने रसूल की सोहबत जहाँ जिन्दगी में रहमत दिलाती है, वहाँ मरने के बा'द



इरमाने मुस्तफ़ी ﷺ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अहमद)

भी राहत का सामान इराहम करती है. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िलों के सदके हमें मरने के बा'द आशिकाने रसूल का पड़ोस नसीब इरमाओ. मरने के बा'द मिलने वाली अख़ी सोहबत की ब-र-कत की जलक मुला-हजा हो युनान्ये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्वूआ 561 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "मल्कूआते आ'ला उजरत" (मुकम्मल) सफ़हा 270 पर है : अपने मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफ़न करो के इन की ब-र-कत के सबब उन पर अजाब नहीं किया जाता. هُمْ الْقَوْمُ لَا يَشْفَىٰ بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ या'नी येह ऐसी कौम है जिस का हम नशीन भी महरम नहीं रहता. व लिहाजा उदीस में इरमाया : اَذْفَنُوا مَوْتَكُمْ وَسَطَّ قَوْمٌ صَالِحِيْنَ अपने मुर्दों को नेकों के दरमियान दफ़न करो. (अल्फ़ुदूस بماأثور الخّطابج 1ص 102 حديث 337) आ'ला उजरत नेकों के दरमियान दफ़न करो. (अल्फ़ुदूस بماأثور الخّطابج 1ص 102 حديث 337) आ'ला उजरत इरमाते हैं :

गुलाब के इूल या अज़्दहों के मुंह ! : मैं ने उजरत मियां साहिब डिब्ला फ़ुदस सिरु को इरमाते सुना : एक जगह कोई क़भ्र जुल ग़ई और मुर्दा नज़र आने लगा. देखा के गुलाब की दो शाबें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो इूल उस के नथनों पर रभे हैं. उस के अजीजों ने इस भयाल से के यहां क़भ्र पानी के सदमे से जुल ग़ई, दूसरी जगह क़भ्र षोद कर उस में रभा, अब जो देखा तो दो अज़्दहे (या'नी दो बहुत बडे सांप) उस के बदन से लिपटे अपने इनों से उस का मुंह लम्भोड (या'नी नोय) रहे हैं, हैरान हुओ. किसी साहिबे दिल् से येह वाकिआ भयान किया, उन्हों ने इरमाया : यहां भी येह अज़्दहे ही थे मगर एक वलियुल्लाह के मज़ार का कुर्ब था, उस की ब-र-कत से वोह अजाब रहमत हो गया था, वोह अज़्दहे दरप्ते गुल की शकल हो गओ थे और उन के इन गुलाब के इूल. इस की (मय्यित की) भैरियत याहो तो वही ले जा कर दफ़न करो. वही ले जा कर रभा इर वोही दरप्ते गुल थे और वोही गुलाब के इूल.



इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (अलजान)

“गीबत अेक नासूर है” के यौदह दुइइ की निरबत से द्दवतों में की जाने वाली गीबतों की 14 मिसालें

❁ अद्लाह ने बहुत कुछ दिया है, पहले भेटे की शादी है मगर अर्य करने में लाथ पींय कर रभा है ❁ खाने की डिशें कम की हैं ❁ सजावट पर अर्य कम किया है ❁ अर्य अयाने के लिये मेहमान कम बुलाये हैं ❁ गोशत बूढे बैल का है जल्मी तो नहीं गला ❁ अकरे का गोशत डोना याहिये था येह कहां गरीब है ! ❁ पानी में अई ली नहीं डलवाया ! ❁ डेकोरेशन का सामान ली अस औसा ही मंगवाया है ! ❁ गरीब आदमी है कर्जे ले कर दुन्या को दिखाने के लिये ँतनी अडी द्दवत करने की क्या जरूरत थी ! ❁ खाना तो जरा अस्थे आवर्यी या “कियन” से बनवाया होता ❁ सस्ते “कियन” से इर खाना कैसा अनेगा ! ❁ उस ने मीठी डिश में सिई इरनी से गुजारा कर लिया है ❁ लर्दा ली डोना याहिये था ❁ अया हुवा खाना ईकने के अजाअे मद्रसे भेज कर कौन सी सखावत की है !

“गीबत जिना से सप्त तर है” के सोलह दुइइ की निरबत से भेटे के बारे में गीबत की 16 मिसालें

अपनी समजदार औलाद को सब के सामने बुरा लला कडते रहने से उन का दिल दुखता, ँस्लाह के अजाअे बिगाड अढता है, और बिला मस्लहते शर-ँ पीछे से खामियां अयान करने से गीबतों का गुनाह मिलता और औलाद को पता लग खाने की सूरत में उस का बागियाना जेहन अनता है. और दोनों खडान के नुक्सान व खुसरान का सामान पैदा होता है. लिडाजा औलाद की शइकत व डिक्मत के साथ तरबियत करनी याहिये. आ'ज मां आप मुंड लर कर औलाद की गीबतें किया करते हैं ँस के भे शुमार जुबलों में से नुमूनतन 16 मिसालें पेश की जाती हैं : ❁ सब से अडा भेटा ना इरमान ❁ जिदी और ❁ अद तमीज है ❁ मेरी ँज्जत नहीं करता ❁ कमा कर दोस्तों में उडा देता है ❁ घर का अेक ली काम नहीं करता ❁ दुकान पर वक्त नहीं देता ❁ रात बहुत देर से आता है और अपनी मां को रुलाता है



इरमाने मुस्तफ़ा عليه السلام : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुर्रद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शक़ाअत करूँगा. (अबुअल)

❖ हम को बहुत सताता है ❖ रात ढेर से सोता और इज में नहीं उठता ❖ छोटे बहन भाईयों को मारता है ❖ बीमार बाप की जबर नहीं लेता ❖ बाप को सामने जवाब देता है ❖ अपनी मां को डाँड देता है ❖ घर में सीधे मुँह किसी से बात नहीं करता ❖ बाहर तो सब से “जु जनाब” से बात करता है मगर घर में तू तडाक से.

“गीबत महब्बतें मिटाती है” के सतरह दुइइ की निस्बत से बाप के बारे में गीबत की 17 मिसालें

❖ मेरी मां को मारते हैं ❖ पूरी जर्खी नहीं देते ❖ सुना है जूआ की लत पड गई है ❖ मां के जेवरात बेय कर आ लिये हैं ❖ बुरी सोहबत की वजह से रात ढेर से घर में आते हैं और फिर उगडते हैं और सब की नींदें जराब करते हैं ❖ सारा दिन सिगरेट इंकते रहते हैं ❖ घर को कभी घर नहीं समझा ❖ घर में गन्दी गन्दी गालियां निकालते हैं जवान बेटी का ली लिहाज नहीं करते ❖ हम भाई बहन जवान हो गये हैं हमारी शादी की तरकीब क्या करेंगे, इस की तो बात सुनने के लिये ली तय्यार नहीं ❖ जवान बहुत यलाते हैं इस लिये जानदान में सब से बिगडी दुई है ❖ जुमुआ की ली नमाज नहीं पढते ❖ दीन की बिडकुल समझ नहीं ❖ पक्के दुन्यादार हैं ❖ दा'वते इस्लामी वालों को अश्रफ़ नहीं समझते ❖ मुझे दा'वते इस्लामी से रोकते हैं कडते हैं मैं तुम को मौलवी नहीं बनने दूँगा ❖ मेरा हमामा छुपा दिया था बडी मुश्किल से अम्मी ने दूँड कर दिया है ❖ मुझे इजतिमाअ से मन्अ करते हैं वगैरा.

वस्वसा : बाप इजतिमाअ से रोके, दाढी और हमामा न बांधने दे वाकेई बे नमाजी और पक्का दुन्यादार हो फिर ली येह बातें सय सय बयान करना क्यूंकर गीबत हो गया ?

वस्वसे का जवाब : येह बातें सय हैं जल्मी बिला मस्लहत शर-ई पीछे से बयान करना गीबत है, इस तरह की बातों से आप के वालिद साहिब की इज्जत में कमी ली आयेगी और वोह लोगों की निगाहों में जलील होंगे, जब उन को पता यलेगा के



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर हुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहदारत है. (ابراهيم)

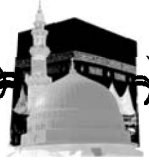
लोगों को आप येह सारी बातें बता देते हैं तो यकीनन वोह आप से जुश नहीं बल्के नाराज़ ही होंगे के तुम मुझे बढनाम कर रहे हो, इस तरह और पराबियां पैदा होंगी और घर में इसाद भडा होगा. बाप तो फिर बाप है उस के लुकूक से दुन्या में ओहदा भर आ होना मुम्किन नहीं. किसी और मुसल्मान के बारे में भी अगर आप कहेंगे के “वोह पक्का दुन्यादार आदमी है” “जुमुआ भी नहीं पढता” तो अगरये वोह वाकेई औसा ही हो फिर भी वोह पीठ थपक कर आप को शाबाश नहीं देगा बल्के यकीनन उस का हिल दुभेगा लिहाजा बिवा इजाजते शर-ई किसी भी मुसल्मान के बारे में कोई औसा लइज़ न बोला जाये जो उसे मा'लूम हो तो ना गवार गुजरे.

“गीबत की नुइसतें” के तेरह हुइइ की निस्बत से मां की तरइ से बेटी की गीबत की 13 मिसालें

❖ गुस्से की बहुत तेज़ है ❖ बहुत चिडचिड़ी और ❖ जिद्दी हो गई है ❖ मेरी बिल्कुल नहीं सुनती ❖ घर में जाडू पोये नहीं लगाती ❖ घोने पकाने में मेरा हाथ नहीं अटाती ❖ हर वक्त कंधी थोटी में लगी रहती है ❖ जरा कोई भलाई की बात कइं तो रोने बैठ जाती है ❖ हर बात में अपनी यलाती है ❖ दोनों बहनों की बिल्कुल नहीं बनती ❖ मेरी बिल्कुल इज़्जत नहीं करती ❖ बहुत जवान दराज है ❖ बात बात पर मुज़ से जगडती है.

“गीबत करने वाले दोज़भ के भौलते हुअे पानी व आग के दरमियान भौत मांगते दौडते फिरते होंगे” के सऽसऽ हुइइ की निस्बत से घरों में उमूमन जोले जाने वाले गीबतों के अल्ऽऽ की 67 मिसालें

❖ बुधू ❖ लयर ❖ अहमक ❖ बे वुकूइ ❖ बयकाना जेहन है ❖ बात जरा देर से समजता है ❖ कोई भाषा नहीं समजता ❖ घर में सब से लडता है ❖ मां को सताता है ❖ बाप को तंग कर के रख दिया है ❖ दिन को देर तक सोता रहता



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर हुरद पढो के तुम्हारा हुरद मुज तक पछोयता है. (ज़ुरीफ़)

है ✨ उस की बीवी बढ ज़बान है ✨ वोह अपनी बेगम से उरता है ✨ उस के घर में रोज रोज लडाई जगडे छोते हैं ✨ बडा बेटा ज़र्या नहीं देता ✨ बेटी ✨ या बेटा मेरी ईज़ज़त नहीं करता ✨ मेरा बेटा शादी के बा'द लड कर घर से अलग हो गया ✨ मेरा बेटा मेरा ना इरमान है ✨ बेटा सारा दिन घर में पडा रहता है ✨ निभडू ✨ निकम्मा ✨ नाकारा ✨ ढीला ✨ सुस्त ✨ कामयोर है ✨ चिडचिडा ✨ पर दिमाग ✨ गुस्से वाला ✨ दिमाग का गर्म ✨ मज्ज का तीषा है ✨ अडियल ✨ अडीबाज़ ✨ हटीला ✨ जिद्दी है ✨ शोर मचाता ✨ भौंकता ✨ छाउ छाउ करता है ✨ ना शुका ✨ बे सभ्रा ✨ वहमी ✨ ला उबाली ✨ गन्यल ✨ लडाकू ✨ घर घुसडू ✨ घर घुसना ✨ हर वक्त भाता रहता है ✨ आवारा ✨ मवाली ✨ ला परवाह है ✨ सझाई नहीं रभता ✨ उस का कोई ढंग धडा नहीं ✨ किसी की नहीं सुनता ✨ बस अपनी मन मानी करता है ✨ घर की बात बाहर बोल आता है ✨ युप युप ! वोह आ रहा है, सुन लेगा तो बाहर झूंक आयेगा ✨ कान का कय्या ✨ पेट का हलका है ✨ ईस के पेट में कोई बात नहीं समाती ✨ ढोल है ✨ ढंडोरा पीट देता है ✨ B.B.C है ✨ कुलां का बेटा किसी लडकी के यक्कर में है ✨ ईस के बय्ये बहुत शरारती हो गये हैं ✨ बय्यों को बिगाड रभा है ✨ अपने बाल बय्यों का जयाल नहीं रभता ✨ बाहर लीगी बिल्ली बन कर रहता है मगर घर में शेर है.

“कुजूल गुफ़त-गू से बयिये” के पन्टरह हुरद की निरबत से माती मुआ-मलात के कुजूल सुवालात की 15 मिसालें

बा'ज लोगों की आदत छोती है के धरेलू मुआ-मलात की टोह में लगे रहते और जैसे जैसे सुवालात करते हैं के आदमी शरमा जाता है, शर्म मगर उन को नहीं आती. सारे सुवालात अगर्जे गुनाहों भरे नहीं छोते मगर पूछने वाले से सुलजे हुये लोग बढजन छोते और बा'ज गैर मोहतात अइराद मुरुव्वतन जूट या गीबत के गुनाह में जा पडते हैं. जैसे जानगी मुआ-मलात के कुजूल सुवालात की 15 मिसालें मुला-हजा हों :

✨ क्या काम करते हो ? ✨ तन-ज्वाह कितनी है ? ✨ सेठ सहीह



करमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर दस भरतभा दुरहे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रहभते नाजिल करमाता है. (طبرانی)

आदमी है या नहीं ? (बिला एजाजते शर-ए येह सुवाल गुनाह भरा है और सामने वाले को गुनाह में डाल सकता है) ❀ कितने भाई बहन हो ? ❀ इन में कौन कौन शादी शुदा है ? ❀ आप के बच्चे कितने हैं ? ❀ बड़े बच्चे की कितनी उम्र है ? ❀ ओहो ! येह जवान हो गया है ❀ इस की शादी कब करवा रहे हो ? ❀ मकान जाती है या किराये का ? ❀ आप की उम्र कहीं हो गई है, शादी में क्या रुकावट है ? ❀ बड़ी बहन घर में क्यों बैठी हुई है ? ❀ आप की बेटी ﷻ जवान हो गई है रिश्ता क्यों नहीं कर रहे ? ❀ बड़ा भाई कहां नोकरी करता है ? ❀ घर में भी पैसे देता है या नहीं ? (येह सुवाल भी बिला मस्लहतते शर-ए हो तो गुनाह भरा है और सामने वाले को गुनाह में डाल सकता है)

“गीबत डराम व गुनाह है” के पन्टरह हुर्रफ़ की निरुबत से पानदान के मु-तअल्लिक गीबत की 15 मिसालें

किसी मुसल्मान के हसब नसब की कमजोरी का बिला एजाजते शर-ए बतौरे औब तजकिरा करना भी गीबत है, इस की 15 मिसालें मुला-हजा हों : ❀ उस का बाप यपरासी (PEON) है ❀ उस का दादा मोयी है ❀ वोह पानदानी मीरासी है ❀ उस का दादा पेशावर बिकारी था ❀ येह भले पढा लिखा है मगर येह लोग पानदानी हजाम हैं ❀ येह अइसर बन गया है मगर इस का बाप दइतर में जाडपूछ करता और गन्ट कयरा उठाता था ❀ इस की दादी गाय का गोबर उठा कर लाती और उपले थाप कर बेयती थी ❀ येह जो अरब साहिब हैं, अस्ली अ-रबी नहीं इन के बाप दादा हिन्दी (सिन्धी या बलूची या पंजाबी) हैं ❀ वोह नौ जवान जो अभी गुजरा उस की मां तवाईफ़ थी ❀ उस का वालिद शादियों की तकरीबों में नायने का पेशा करता था ❀ हुलां का घटिया पानदान से तअल्लुक है ❀ उस की बिरादरी पास मुअज़्जज नहीं मानी जाती ❀ उस का वालिद मालिश्या था (या'नी लोगों की तेल मालिश करने का काम करता था) ❀ वोह यरवाहे का बेटा है ❀ येह जो सय्यिद कहलाता है, इस से इस का नसब नामा पूछ लो, मैं इन लोगों को जानता हूँ, पानदानी इकीर हैं.



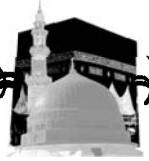
इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

“गीबत में आभिरत की बरबादी है” के छक्कीस हुर्रुफ़ की निरबत से परेशान हालों के मु-तअल्लिक गीबत की 21 मिसालें

✽ उस का दीवालिया निकल गया है ✽ बहुत कर्ज़ ले लिया था अब इंस गया है और मुंह छुपाता फिरता है ✽ कर्ज़ ज्वाहों से पीछा छुडाने के लिये घर से भाग गया है ✽ कर्ज़ अदा नहीं किया तो उस पर कर्ज़ ज्वाह ने केस कर दिया है ✽ कुलां को पोलीस पकड कर ले गई है ✽ लोकअप या जेल में बन्द हो गया है ✽ उस की धम्बाक का नीलाम होने वाला है ✽ उस की धम्बाक जप्त हो गई हैं ✽ उस की मंगनी टूट गई है ✽ उस को कोई रिश्ता नहीं दे रहा ✽ वोह तलाकन या तलाकडी ✽ या मुतल्लक ✽ या तलाक शुदा है ✽ वोह बांज है ✽ उस की लडकी भाग गई है ✽ उस के बेटे ने कोर्ट में जा कर अपनी पसन्द की शादी कर ली है ✽ उस को सुसराल वालों ने धक्के मार कर घर से निकाला ✽ उस बढ मआश के आगे जभान खलाने की क्या जरूरत थी, उस ने उठा कर धूसा दे मारा और इस के दांत तोड डाले ✽ कैसा अकडी दिभाता था, आभिर सवा सैर टकरा ही गया और उस ने इस का सर झड डाला ✽ मेरे मन्अ करने के बा वुजूद आधी रात को कीमती मोबाईल फोन ले कर निकला, डकू ने छीन लिया, अब नाक कटी तो बैठा.

“गीबत की नुहूसत” के ग्यारह हुर्रुफ़ की निरबत से मरीजों की गीबतों की 11 मिसालें

✽ शूगर का मरीज है मगर मौसिम में इस को द्रो आम खाडिअें ✽ पूब आम खाता है फिर झोडे हो जाते हैं ✽ इस को ठन्डा पानी और जटाई नहीं खलती मगर मानता नहीं है फिर डर वक्त खांसता रहता है ✽ इस का पेट जराब रहता है क्यूंके वज़्नी गिजाओं से बाज नहीं आता ✽ पूब पेट निकला हुवा है मगर नाश्ते (या स-डरी) में पराठे खाता है ✽ वोह मोटापे से अगर्ये बेजार है मगर आम, मिठाई, कबाज समोसे और ठन्डी ओतलें छोडने के लिये तय्यार नहीं ✽ उस ने वक्त बे वक्त जा जा कर मेअ्दा तबाह कर दिया है मगर अब ली डट कर खाने से बाज



इरमाने मुस्तफ़ी : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइरे पाक न पड़े. (१७)

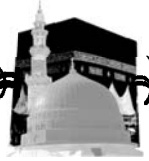
नहीं आता ❀ एक बार इस को हिल का दौरा पड युका है मगर फिर भी इस को नाशते में मस्का बन याहिये ❀ इस का कोलेस्ट्रोल हाई रहता है मगर पिउजे पराठे का शैदाई है ❀ इस को दाईमी कब्ज की शिकायत है मगर मुज से कल रखा था, परहेजी कौन करे ❀ इस को डोक्टर ने रोजाना पैदल चलने की ताकीद की है मगर सुस्ती करता है.

“गीबत हुआ की कबूलियत में रुकावट है” के पय्यीस हुरइ की निरबत से मरने वाले मुसल्मान की गीबत की 25 मिसालें

❀ आदमी सहीह नहीं था ❀ मेरी रकम जा गया था ❀ उस ने फुदकुशी की ❀ कुलां की बह हुआ लग गई और कुत्ते की मौत मरा ❀ गन्दे नाले (या गटर) में डूब मरा येह उस के गुनाहों की सजा थी ❀ बैतुल जला में मरा (अगर कोई मुरतद बैतुल जला में मरे तो ईब्रत के लिये तजक़िरा करने में हरज नहीं अलबत्ता मुसल्मान के साथ इस तरह का हादिसा हो तो उस का पर्दा रफना जरूरी है) ❀ कुलां को कफ़न तक नसीब न हुवा के ज़ालिम ज़ो था ❀ मरने के बा'द भी उस के मुंह पर नुहूसत बरस रही थी ❀ रिश्वत खोर था ❀ सूदखोर था ❀ मां बाप का गुस्ताख था ❀ पोलीस मुकाबले में कुत्ते की मौत मारा गया ❀ दूध में मिलावट किया करता था ❀ हेरोईन्धी ❀ यरसी ❀ शराबी ❀ जूआरी ❀ जानी था ❀ मन्शियात इरोश था ❀ हराम कमाता और खाता था ❀ मुंह काला करने के दौरान ही उसे मौत ने आ लिया ❀ उस का कुलां के साथ यक्कर था ❀ अपने पीछे हरामी औलाद छोड गया है ❀ महल्ले के लोग उस से ईतनी नइरत करते हैं के उस के जनाजे में भी शामिल नहीं हुअे ❀ अख़्श हुवा मर गया, जमीन पर जोज था.

“गीबत से नइरत बढती है” के सत्तरह हुरइ की निरबत से डोक्टर के बारे में गीबत की 17 मिसालें

❀ ना तजरिबा कार है ❀ इस ने बीमारी को समजा ही नहीं ❀ बहुत गर्म दवाओं दे दीं ❀ पैसे बहुत लेता है ❀ गलत ईन्जेक्शन लगा दिया है ❀ ईन्जेक्शन

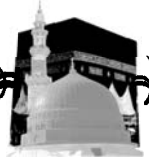


ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જિસ ને મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દો સો બાર દુરૂદે પાક પઢા ઉસ કે દો સો સાલ કે ગુનાહ મુઆફ હોંગે. (કુબ્રા)

લગાને મેં ઉસ કા હાથ ભારી હૈ ✨ સેમ્પલ કી દવાએં બેય ડાલતા હૈ ✨ ઓપરેશન ગલત કર દિયા હૈ ✨ બે રહ્મ હૈ ✨ એસી દવાએં દે દી કે મેરા મેઅૂદા તબાહ હો ગયા હૈ ✨ બહુત મહંગી દવાએં લિખ દેતા હૈ જિસ સે આરિઝી તૌર પર મરીઝ ખડા તો હો જાતા હૈ મગર બા'દ મેં તક્લીફ મઝીદ બઢ જાતી હૈ ✨ બાત બાત પર TEST લિખ દેતા હૈ ✨ મરઝ કો ખ્વાહ મ ખ્વાહ ગમ્મીર બતા કર ઓપરેશન કર દિયા ✨ ઉસ સે ઓપરેશન કરવાયા થા, ફેલ હો ગયા ✨ ફુલાં ને ગલત ઓપરેશન કર દિયા ✨ જબ દેખો ઓપરેશન હી કી બાત કરતા હૈ મક્સૂદ સિર્ફ પૈસે ખીયના હૈ ઓર ✨ હમ કો દો લાખ રૂપૈ કે ખર્ચે મેં ઉતાર દિયા હૈ ! વગૈરા વગૈરા.

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! બેશક બા'ઝ ડોક્ટર બદ ઉન્વાન ભી હોતે હૈં, અગર એસે ડોક્ટર સે કિસી મરીઝ કો બચાના મક્સૂદ હો ઓર ઇસ કી વજહ સે કિસી મખ્સૂસ ડોક્ટર કી કમઝોરી યા ખામી સિર્ફ ઉસ કે આગે બચાન કી જિસ કો બતાના ઝરૂરી થા તો ગુનહગાર નહીં મગર અક્સર લોગ બિલા હાજત ગીબત કરતે ઓર ગુનહગાર હોતે હૈં. યેહ ઝેહન મેં રહે કે કમ્પની વાલે તશહીર કી ગરઝ સે ડોક્ટરોં કો જો દવાએં મરીઝોં કો મુફત દેને કે લિયે દેતે હૈં ઉન પર NOT FOR SALE લિખા હોતા હૈ, ડોક્ટર ઉન દવાઓં કા માલિક નહીં સિર્ફ “વકીલ” (યા'ની નાઈબ) હોતા હૈ. લિહાઝા એસી દવાએં બેચના ઓર મા'લૂમ હોને કે બા વુજૂદ ખરીદના ગુનાહ હૈ. નીઝ ફલાહી ઇદારોં યા માલદારોં કી તરફ સે બીમારોં કે લિયે અતિય્થે (DONATION) મેં મિલી હુઈ દવાએં બેચ કર ખા જાને વાલે ગુનહગાર ઓર અઝાબે નાર કે હકદાર હૈં.

ડોક્ટરોં કી રહનુમાઈ કે લિયે : ઇસ્લામ સે મહબ્બત રખને ઓર અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે ડરને વાલે ડોક્ટરોં કી રહનુમાઈ કે લિયે દા'વતે ઇસ્લામી કે દારુલ ઇફ્તા અહલે સુનનત સે જારી કર્દા એક ઇન્તિહાઈ મા'લૂમાતી ફતવા પેશે ખિદમત હૈ. અલ જવાબ : ડોક્ટરોં કો દવાઓં કી કમ્પની કી જાનિબ સે તોહફતન જો દવાએં, ઘડી, કલમ ઓર પેડ વગૈરા મિલતે હૈં વોહ ઉમૂમન મા'મૂલી હોતે હૈં ઓર કમ્પની યેહ અશ્યા અપની મશૂરી કે લિયે દેતી હૈ ક્યૂંકે અક્સર અવકાત ઉન પર કમ્પની કા નામ ભી મૌજૂદ



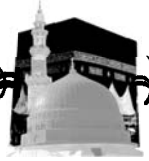
इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुऒ पर दुऒद शरीफ़ पढो अवलाह उऒुऒ तुम पर रऒमत भेजेगा. (अऒऒऒ)

डोता है जैसा के बहुत से धंदारे सालाना अपनी डायरी जारी करते हैं और मुफ्तलिफ़ लोगों को मुफ़्त देते हैं. लिडाऒा धस मुआ-मले पर उई जारी डोने की वजह से धन मा'भूली अश्या का लेना और कम्पनी का उन्हे देना जाधऒ है और येह रिशवत के जुभरे में नडीं.

दवा की कम्पनियों की तरफ़ से डॉक्टरों को रिशवत : धस के धलावा कार, A.C. और दीगर मुमालिक के सफ़र के लिये टिकट वगैरा उभूमन कम्पनी की जानिभ से तोडूफ़तन नडीं दिया जाता क्यूंके डॉक्टर जो दवाध लिभ कर दे रहा है वोह तो उस का काम है और वोह धलाज की रकम भी वुसूल करता है. कम्पनी के लिये उस ने जुदागाना कोध अैसा काम नडीं किया जिस की उजरत बनती डो लिडाऒा शरअन येह कमीशन या उजरत नडीं. डां अगर रिशवत डी को कमीशन कहे तो और बात है जैसा के येह भी डुमारे उई डी में है के भा'ऒ अवकात जब पोलीस किसी का काम करवा देती है तो उस पर रिशवत लेती है मगर उसे रिशवत कडने के बजाअे अपने डक या अपने कमीशन का नाम देती है तो अैसा कमीशन भी रिशवत डी है. कम्पनी के मुफ्तलिफ़ यीऒें देने का मकसद सिर्फ़ अपनी भेडीसीन (दवाअें) ऒियादा से ऒियादा भिकवाना डोता है तो काम निकलवाने के लिये देना रिशवत है लिडाऒा डॉक्टर कमीशन का मुता-लभा करे तो रिशवत का मुता-लभा है और अगर मुता-लभा न भी करे तब भी सरा-डतन या दला-डतन तै डोने की (या'नी भुले लडूऒों में या जो अलामत से ऒाडिर डो, UNDERSTOOD डो उस) सूऒत में रिशवत डी है और रिशवत डराम है.

रिशवत किसे कडते हैं ? : सय्यिदी आ'ला डऒरत, मुजद्विदे दीनो मिल्लत, शाड धमाम अडमद रऒा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن धशाद इरमाते हैं : रिशवत लेना मुतलकन डराम है किसी डालत में जाधऒ नडीं जो पराया डक दडाने के लिये दिया जाअे रिशवत है यूडीं जो अपना काम बनाने के लिये डाकिम को दिया जाअे रिशवत है लेकिन अपने डीपर से दइअे जुड्म के लिये जो कुध दिया जाअे देने वाले के डक में रिशवत नडीं, येह दे सकता है (अलबत्ता) लेने वाले के डक में वोह भी रिशवत है और उसे लेना डराम.

(इतावा २-ऒविय्या, जि. 23, स. 597)

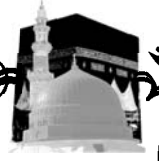


इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो भेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भा.मि.)

रिश्वत की अेक सूरत : अपना काम बनाने के लिये जो डाकिम को दिया जाये सिर्फ़ वोही रिश्वत नहीं बल्के डाकिम के धलावा को भी अगर अपना काम बनाने के लिये कुछ दिया जाये तो वोह रिश्वत ही है. जैसा के “जौहरअे नय्यरह” में है : अगर भीवियों में से कोई अपना हक अपनी सोकन के लिये छोडने पर राजी हो गई तो जाईज है और उसे रुजूअ का हक भी है इस लिये के उस ने वोह हक साकित किया है जो अभी साबित नहीं हुवा था तो गोया येह तभरुअ हुवा और तभरुअ (या’नी अेहसान) के मुआ-मले में धन्सान पर जध्र नहीं. और अगर किसी भीवी ने शोहर को इस लिये माल दिया ताके वोह उस का डिस्सा दूसरी भीवियों की निस्बत जियादा करे या शोहर ने भीवी को माल दिया ताके वोह अपनी बारी का दिन अपनी सोकन के लिये कर दे तो येह ना जाईज है और माल उसी को वापस किया जायेगा जिस ने दिया है इस लिये के येह रिश्वत है और रिश्वत हराम है. (जोहरे ज २ व ३)

रिश्वत लेने देने वाले पर ला’नत : हजरते सय्यिदुना सौबान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रिश्वत देने वाले, रिश्वत लेने वाले और धन दोनों के दरमियान मुआ-मला करवाने वाले पर ला’नत इरमाई है. (मुस्निआम अहमद ज ८ व ३२७ حديث २२६६२)

अगर कम्पनी वाले डोकटर को तोहफ़ा कड कर दें तो ? : अगर कम्पनी वाले येह कडें के हम भतौरे तोहफ़ा डोकटर को येह अश्या देते हैं लिहाजा इस में कोई हरज नहीं होना याहिये तो इस का जवाब येह है के तोहफ़ा और रिश्वत में अेक बहुत वाजेह इफ़ है और वोह येह है के रिश्वत इस शर्त के साथ दी जाती है के जिस को दी गई है वोह देने वाले का कोई काम करेगा जब के तोहफ़ा बिगैर किसी शर्त के दिया जाता है और सूरते मस्जिला (या’नी पूछी गई सूरत) में इसी शर्त पर दिया जाता है के डोकटर इसी कम्पनी की दवाओं लिभे, जो डोकटर इस कम्पनी की दवाओं नहीं लिभता उन्हें “येह भास तहाईफ़” नहीं दिये जाते. “इत्हुल कदीर” में है : أَلْفَرُّقُ بَيْنَ الرِّشْوَةِ وَالْهَدِيَّةِ أَنَّ الرِّشْوَةَ يُعْطِيهِ بِشَرْطٍ أَنْ يُعِينَهُ وَالْهَدِيَّةُ لَا شَرْطَ مَعَهَا



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज्ज पर अेक हुइरुद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अेक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

रिश्वत और तोडके में इर्क येह है के रिश्वत इस शर्त पर दी जाती है के जिसे रिश्वत दी गइ वोह देने वाले की मदद करेगा जब के तोडके के साथ ऐसी कोइ शर्त नहीं छोती.

(فتح القدير ج ٧ ص ٢٥٤)

बिला हाजत टेस्ट या दवा लिख देना भियानत है : डॉक्टर के बकिय्या दीगर मुआ-मलात, के जिस दवाइ या टेस्ट की हाजत नहीं और उसे लिख दिया येह भियानत है और बिला वजह मरज को बढ़ा यढा कर बता कर मरीज और उस के घर वालों को तश्वीश में डालना इन्सानी और अप्लाकी और इस्लामी उसूलों के खिलाफ़ है और जूट होने की सूरत में जूट का गुनाह जुदा. दीन जैर ज्वाही का नाम है और मुसल्मान की परेशानी दूर करने वाले की परेशानियां अल्लाह तआला क्रियामत के दिन दूर करेगा. इन उमूर में जो अकराद, कम्पनियां, लेबोरेटरियां शरीक हों वोह अपने तआवुन व शिर्कत की ब कदर जुर्म में शरीक शुमार की जाऐगी. (इतवा यहां मुकम्मल हुवा)

रिश्वत से तौबा का तरीका : डॉक्टर इस्लामी भाईयो ! जिन्दगी यन्द रोज़ा है, नफ़स की लीला बाजियों में पड कर “रिश्वत” को हाथ मत लगाइये अगर रिश्वत ली है तो तौबा ली कीजिये और जिस से ली है उसी को लौटा दीजिये वोह हुन्या में न रहा हो तो उस के वारिसों को दे दीजिये वोह ली न रहे हों या याद ही न हो के किस किस से रिश्वत ली है तो इकीर को दे दीजिये. याद रभिये ! ખाली तौबा काई नहीं. अगर तौबा और उस के तकाजे पूरे किये बिगैर मौत आ गइ तो क्या बनेगा ! अगर खुदा ﷻ नाराज हुवा, भीठे भीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रुठ गऐ तो अजाब सहा न जा सकेगा. आप की तप्वीइ (या’नी उराने) के लिये अेक लरजा जैज डिकायत अर्ज करता हूं :

कभ्र का भयानक सियाह कुता : अेक शप्स जो के हज का नुमायन्दा बना और मालदार हो गया मरने के बा’द उस की कभ्र खुलने का दिल् डिहा देने वाला वाकिआ दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 853 सईहात पर मुश्तमिल किताब, “जल्न्नम में ले जाने वाले आ’माल” सईहा 70 में अेक शप्स के



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुददे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (अहमद)

हवाले से कुछ यूँ है के जब हम ने अेक मुर्दे को दफ़नाने के लिये उस के करीब क़ब्र षोदी तो ईत्तिफ़ाक से उस की क़ब्र खुल गई हम ने उस की क़ब्र में अेक बहुत बडी ज़त्थर देयी, अेक बहुत बडा सियाह कुत्ता उस ज़त्थर में उस के साथ बंधा हुवा उस के सर पर बडा था और उसे अपने पन्जों और नाभुनों से थीरना फ़ाडना याहता था, हम येह षतरनाक मन्जर देष कर बहुत ज़ियादा षौफ़जदा हुअे और जल्दी जल्दी उस की क़ब्र को मिट्टी से ढांप दिया.

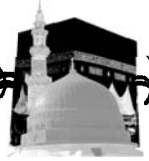
कर ले तौबा रब की रहमत है बडी
क़ब्र में वरना सजा होगी कडी

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ
تُوبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهُ
صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

“राहे हलाकत” के आठ दुरुददे की निरूषत से
द्राघवर की गीबत की 8 मिसालें

❁ गाडी बहुत रफ़ यलाता है ❁ सिग्नल तोड देता है ❁ हुलां बस वाला ओवर टेकिंग बहुत करता है ❁ उस को गाडी यलाना कहां आती है ❁ वोह द्राघवर ट्रक यलाते यलाते सो जाता है ❁ बिगैर द्राघविंग लाईसन्स के स्कूटर यलाता है ❁ बस में लेड बकरियों की तरह सुवारियां भरता है ❁ लम्बे रूट पर येह बस वाला हुलां डोटल पर बस रोक देता है क्यूंके यहां ईस को डोटल से मुफ़्त षाना मिलता है वगैरा.

लम्बे रूट की बस वगैरा के द्राघवरों और डोटल वालों को गुनाहों से बयाने के ज़ज्बे के तहत् द्वा'वते ईस्लामी के द्दारुल ईफ़ता अहले सुन्नत का अेक मा'लूमाती इतवा पेशे षिदमत है पढिये और इफ़के आषिरत में कुढिये :



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جَسَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अव्वलाह उरुओ (उस पर दस रलमतें बेजता है. (म.)

लम्बे रूट की बसें और मप्सूस डोटलें

सुवाल : बडे रूट की जो बसें और वेगनें वगैरा मप्सूस डोटलों पर तरकीब के मुताबिक रुके ताके सुवारियां वहां जायें पियें और डोटल की बिकरी हो और इस के एवज ड्राएवर, कन्डेक्टर वगैरा को मुफ्त में जाना या कमीशन मिल जाये येह सूरत कैसी है ? इस तरह बिलाना और जाना या रकम का लैन दैन हलाल या हराम ? **يَبْتَرُوا نَوَجْرُوا** (बयान इरमाओ अज पाओ)

जवाब : सूरते मखीला (या'नी पूछी गई सूरत) में ड्राएवर और कन्डेक्टर को डोटल वालों का मुफ्त बिलाना और इन का मुफ्त जाना ना जाईज व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है क्यूंके येह रिश्वत है. डोटल वाले उन को इस लिये मुफ्त जाना दे रहे हैं ताके येह आयन्दा भी बस इसी डोटल पर रोकें. डोटल वाले अपना काम निकलवाने के लिये येह जाना वगैरा देते हैं और येही रिश्वत है. हु-कडाओ किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام इरमाते हैं : रिश्वत और तोहफे में इर्क येह है के रिश्वत इस शर्त पर दी जाती है के जिसे रिश्वत दी गई वोह देने वाले की मदद करेगा जब के तोहफे के साथ ऐसी कोई शर्त नहीं डोती. (فتح القدير ج ٧ ص ٢٠٤) से रिवायत है : रसूलुल्लाह ﷺ ने रिश्वत देने वाले, रिश्वत लेने वाले और इन दोनों के दरमियान मुआ-मला करवाने वाले पर ला'नत इरमाई है. (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٨ ص ٣٢٧ حديث ٢٢٤٦٢)

लुकमअे हराम की नुहूसत : दा'वते इस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 480 सईहात पर मुशतमिल किताब, "बयानाते अत्तारिय्या" हिरसअे अव्वल के सईहा 211 पर है : मुका-श-इतुल कुलूब में है : आदमी के पेट में जब लुकमअे हराम पडा तो जमीन व आस्मान का हर किरिश्ता उस पर ला'नत करेगा जब तक उस के पेट में रहेगा और अगर इसी हालत में (या'नी पेट में हराम लुकमे की मौजू-दगी में) मौत आ गई तो दाबिले जहन्नम डोगा. (مكاشفة القلوب ص ١٠)

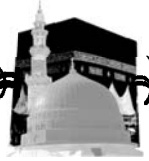


इरमाने मुस्तफ़ा عيسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढ़ा तलकीक वोह बहद आप्त हो गया. (हंज़ल)

“आभिरत बयाईये” के दस दुर्रह की निरबत से रेल्वे का सफ़र और मु-तवक्कअ 10 गीबतें

✽ रेल्वे का हुलां अफ़सर घपले बाज़ है ✽ इस ने रेल्वे का निज़ाम तबाह कर के रभ दिया है ✽ नअे डिब्बे बेय कर भा गया है और ✽ पुराने घिसे पिटे डिब्बे साथ लगवा दिये हैं ✽ हुलां कुली पडले से टिकटें ले कर रभ लेता और ब्लेक में बेयता है ✽ पैसे निकलवाने के लिये रश का बडाना करता है इस को ✽ जाईद रकम दो तो सीट भी मिल जायेगी और बर्थ भी ✽ उस अफ़सर के छोते हुअे हमारी रेल्वे का भुदा ही डाङ्गिज़ है ✽ हमारी रेल्वे का वज़ीर योर है योर ✽ टिकट क्लकटर अपनी जेबे भरता है सरकारी जज़ाने में कहां जम्अ करवाता होगा !

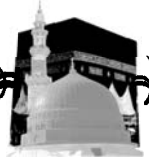
अेक डेरोईन्धी की आपबीती : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से डर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी ईन्आमात के मुताबिक जिन्दगी के शओ रोज़ बसर कीजिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काङ्गिलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरि सफ़र कीजिये, आप की तरगीब व तहरीस के लिये अेक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं युनान्धे बाबुल मदीना करायी के अलाके “कोरंगी” के अेक ईस्लामी त्माई ने जो कुछ डक्खिया (या'नी कसम भा कर) बयान दिया उस का भुलासा अर्ज करता हूं : तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, “दा'वते ईस्लामी” के कोरंगी में डोने वाले तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे ईजतिमाअ का वाङ्गिआ है. कोरंगी का आभिरी ईजतिमाअ था उस के भा'द येह ईजतिमाअ महीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में मुन्तकिल कर दिया गया. हम यन्द् दोस्त रस्मी तौर पर ईजतिमाअ में डाङ्गिर तो हो गअे मगर बयानात की ब-रकात छोड कर रात ईजतिमाअ गाह के बाहर अेक जगह बैठ कर भूब सिगरेट के कश और गपशप लगाने में मशगूल हुअे इसी में जिन्न व भूत के सन्सनी भैज वाङ्गिआत भी छिड गअे, जिस की बिना पर कुछ डरावना सा माहोल बन गया. ईतने में सब्ज ईमामे वाले अेक



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर अेक बार दुर्रहे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रइमतें बेजता है. (स)

अधेउ उअ्र के ईस्लामी त्माई ने करीब आ कर उमें सलाम किया और इरमाने लगे : अगर ईज्जत हो तो कुछ अर्ज करूं ! हम ने कहा : इरमाईये ! उन्हों ने बडे हमददना लइजे में कहा : आप हजरात के ईज्जतिमाअ में शिर्कत का अन्दाज देष कर मुजे अपनी पिछली जिन्दगी याद आ गई ! मैं ने सोया के अपनी आपबीती गोश गुजार करूं के शायद आप लोगों को ईस में कुछ ईअ्रत के म-दनी इूल मिल जाअें. फिर उन्हों ने अपनी दास्ताने खिदायत निशान कुछ ईस तरह बयान करनी शुरूअ की : पहले पहल मेरी सिगरेट नोशी की आदत पडी और फिर बुरे दोस्तों की सोहबत की नुहूसत ने मुजे यरस और डेरोईन जैसे मोहलिक नशे का आदी बना दिया, आह ! मैं सोलह साल तक नशे का आदी रहा. येह बताते हुअे उन की आवाज त्भर्रा गई, मगर बयान ज़री रअते हुअे कहा : मेरी बुरी आदतों से बेजार हो कर मुजे घर से निकाल दिया गया. मैं इटपाथ पर सोता और क्यरे के ढेर से उठा कर या मांग कर आता. आप को शायद यकीन न आअे के मैं ने अेक ही लिबास में सोलह साल गुजार दिये ! मेरी कैफ़ियत बिल्कुल अेक पागल की तरह हो चुकी थी !

अेक मुक़दस रात का किस्सा है, गालिबन वोह र-मजानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब थी. मैं ईसी गन्दी हालत में बह मस्त अेक गली के कोने में क्यरा कूडी के पास लैटा हुवा था के सलाम की आवाज पर यौंका ! जब आंभें भलते हुअे देखा तो मेरे सामने सब्ज सब्ज ईमामा सज्जअे दो ईस्लामी त्माई बडे मुस्कुरा रहे थे, उन्हों ने बडी महब्बत से मेरा नाम पूछा, शायद जिन्दगी में पहली बार किसी ने ईतनी महब्बत से मुजे मुआतब किया था. फिर ईन्डिरादी कोशिश करते हुअे उन्हों ने शबे कद्र की अ-अमत से मु-तअद्विक बडी प्यारी प्यारी बातें बताई. मैं उन के अपनाईयत वाले अन्दाज और हुस्ने अप्लाक की बिना पर वैसे ही मु-तअस्सिर हो चुका था, मज़ीद उन की शइद से त्मी मीठी मीठी म-दनी गुइत-गू तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई, मैं उन के साथ मस्जिद की तरफ़ यल पडा. मस्जिद के गुस्ल खाने में अपना मैला चिक्कट लिबास उतारा और गुस्ल कर के साइ सुथरे कपडे पहन कर 16 साल बा'द जब पहली बार मस्जिद में दाखिल हो कर नमाज के लिये मैं ने



इरमाने मुस्तफा ﷺ : على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

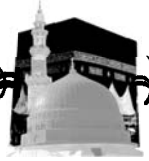
नियत बांधी तो अपने आंसू न रोक सका, रो रो कर मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गया. ﷻ घर वालों ने मुझे वापस ले लिया. मैं कादिरिय्या र-जविय्या सिक्सिले में दाभिल हो कर हुजूर गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ का मुरीद बन गया. मैं ने येह नियत कर ली के अब हर कीमत पर नशे की आदत छुडाउंगी. इस के लिये मुझे बडी आजमाईशों से गुजरना पडा, मैं तकलीफ के बाईस थीभता, बुरी तरह तडपता, घर वाले मेरी येह डालत देख कर रो पडते. बा'ज लोग भश्वरा देते के हेरोईन का ओक आध सिगरेट ही पी लो ! मगर मैं ने औसा न किया के इस तरह तो मैं फिर इस नुडूसत में गिरिफ्तार हो जाउंगी बल्के घर वालों से कडता के जइरतन मुझे यारपाई से बांध दिया करो. ﷻ आडिस्ता आडिस्ता बेडतरी आने लगी और मुझे नशे से मुकम्मल तौर पर नजात मिल गई और मैं आज दा'वते ईस्लामी का ओक अदना सा मुबद्लिग हूं. उन की दास्ताने ईब्रत निशान सुन कर हम सब अशकबार हो गये, हम ने साबिका गुनाहों से तौबा की और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गये. मैं येह बयान देते वक्त ﷻ बाबुल मदीना करायी के ओक डिवीजन के म-दनी ईन्आमात के जिम्मेदार की हैसियत से नेकी की दा'वत की धूमें मयाने की कोशिश कर रहा हूं.

छोड़ें बढ मस्तियां, और नशे बाजियां जामे उल्फत पियें, काडिले में यलो
औ शराभी तू आ, आ जूआरी तू आ सब सुधरने यलें, काडिले में यलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“नेकियां बयाईये” के बारह हुर्रुफ की निरबत से मि'मार
व मजदूर की मु-तवक्कअ गीबतों की 12 मिसालें

❖ कुलां ने हम्माम में ढलवान (SLOPE) सहीड नहीं बनाया ❖ वोह
मिस्तरी अनाडी था ❖ इनिशिंग सहीड नहीं की ❖ रंग यूना बराबर नहीं किया
❖ सिमेन्ट में बजरी जियादा डाली है ❖ मजदूरी पूरी ली मगर काम पूरा नहीं किया



इरमाने मुस्तफ़ा : **عَنْ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढ़ा तलकीक वोह अद अफ्त हो गया. (हृदय)

❖ ज़िद कर के तै शुदा मज़दूरी से ज़ियादा रकम ले गया ❖ काम बराबर नहीं ज़ानता
❖ पलस्तर सहीड नहीं किया ❖ देर से आता और जल्दी भागने की करता है ❖ खाने में वक्त ज़ियादा लगा देता है ❖ कोई चीज़ लेने बेजो तो काफ़ी वक्त निकाल कर आता है.

“मुर्दों के गोश्त से बचिये” के सत्तरह हुर्रफ़ की निस्बत से होटल वाले की मु-तवक्कअ गीबत की 17 मिसालें

❖ उस का खाना टेस्टी नहीं था ❖ मसाले वगैरा घटिया इस्ति'माल करता है
❖ कढ़ी बिदकुल पानी जैसी थी ❖ आलू गलाअे नहीं थे ❖ सज़ी बासी लग रही थी
❖ गोश्त बहुत बूढ़े खानवर का था ❖ कन्जूस है ठन्डा पानी भी नहीं रखता
❖ में ने गरेबी मांगी तो ज़ाड दिया था ❖ इस को तो दाल भी पकाना नहीं आती
❖ येह कोरमा बहुत महंगा देता है ❖ अस लूटमार भया रभी है ❖ पकाने में इस का हाथ सहीड नहीं, कभी भिर्य कम तो कभी नमक ज़ियादा ❖ इस के होटल में सफ़ाई नहीं होती ❖ इस की याय बेकार होती है ❖ अस जो इस के नसीब अख़्फ़े हैं इतना रफ़ खाना होने के बा वुजूद भीड लगी रहती है ❖ इस की नहारी में दम नहीं था ❖ इस की नहारी ग़िंट के गोश्त की होती है.

“अबरदार ! गीबत का बाज़ार गर्म न करें” के छब्बीस हुर्रफ़ की निस्बत से ताजियों के मु-तअल्लिक 26 गीबतें

❖ येह इराडी आदमी है ❖ गाहक इंसाना तो कोई इस से सीजे ❖ भातों का ज़ादूगर है ❖ धोकेबाज़ है ❖ इसे माल बेचना नहीं आता ❖ माल की पहचान नहीं कर पाता ❖ गाहक तो उसे उल्लू बना जाते हैं ❖ बोतल पिला के उन की खाल उतार लेता है ❖ जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी, मौजूद होने के बा वुजूद मन्अ कर देता है ❖ कभी (रकम का) खुला नहीं देता ❖ जूट बहुत बोलता है ❖ “टोपियां” पहनाता है ❖ हराम कमाता है ❖ मत्लबी है ❖ बहुत महंगा बेचता है ❖ दो नम्बर माल रखा हुआ है ❖ नकली को अस्वी अता कर बेचता है ❖ काम की चीज़ तो



इरमाने मुस्तफ़ी : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम हुइदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (म.अ.अ.उ.)

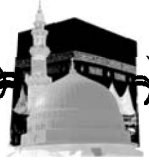
उस के पास मिलती ही नहीं ❀ अब येह मेरी रोज़ी पर ली लात मारेगा ❀ इस को क्या तकलीफ़ थी अपनी दुकान पर येह माल रखने की ❀ मेरे गाहकों को मेरे बिलाफ़ भउकाता है ❀ मेरे माल की बुराईयां बयान करता है ❀ उस ने ज़दू करवा कर मेरे गाहक अपनी तरफ़ कर लिये ❀ टेक्स की चोरी करता है ❀ बिजली चोर है ❀ पोलीस को भत्ता देता है.

“गीबत मत कर” के आठ हुइइ की निरबत से सेठ और मुलाजिम की अेक दूसरे के मु-तअल्लिक गीबतों की 8 मिसालें

❀ सेठ साहिब अडे सप्त मिज़ाज हैं ❀ काम लेते वक्त मिनट मिनट का हिसाब रखते हैं पैसे देते वक्त उन्हें भौत पडती है ❀ किसी की मजबूरी का बयाल नहीं करते ❀ जुद तो A.C में बैठे हैं यहां आ कर देभें तो पता चले ❀ हुलां मुलाजिम वक्त पर नहीं आता ❀ काम में अडा सुस्त है ❀ दिल लगा कर काम नहीं करता ❀ हुलां पक्का कामचोर है.

“अपनी आबिरत बयाईये” के चौदह हुइइ की निरबत से मुप्तलिइ कारीगरों के मु-तअल्लिक गीबतों की 14 मिसालें

❀ अनाडी है ❀ अख़ल पुर्जे निकाल कर दो नम्बर के लगा देता है ❀ थोडे काम को बहुत लम्बा कर देता है ❀ जान बूझ कर बराबियां बढाता है ❀ जूटा और दगाबाज़ है ❀ मैं इस के पास बेकार ले आया अब धक्के खाने पड रहे हैं ❀ वोह दरज़ी बया हुवा कपडा रख के उस की टोपियां बना के बेचता है ❀ बिल ज़ियादा बना देता है ❀ दो नम्बर बिल दे कर ज़ियादा पैसे ले लिये ❀ उस की कढाई में सफ़ाई नहीं ❀ सिलाई साइ नहीं ❀ टाईम ज़अेअ करता है ❀ वा'दे के मुताबिक काम कर के नहीं देता.



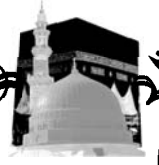
ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ न पढा उस ने जफ़ा की. (مهارات)

“જહન્નમ મેં લે જાને વાલા કામ” કે બીસ હુરૂફ કી નિસ્બત સે દફ્તર કે ખાદિમ કે મુ-તઅલ્લિક ગીબતોં કી 20 મિસાલેં

❖ મેરી જગહ કી સફાઈ અચ્છી નહીં કરતા ❖ હાથ માર કર ચલા જાતા હૈ સફાઈ કહાં કરતા હૈ ❖ પાંચ મિનટ મેં સફાઈ મુકમ્મલ કર લી, સોચો ક્યા સફાઈ કી હોગી ! ❖ દીવારોં કે કોને અક્સર છોડ દેતા હૈ ❖ દિલ લગા કર સફાઈ કરે તો યેહ હાલ ન હો ❖ અગલે હિસ્સે કી સફાઈ કરતા હૈ, પિછલા હિસ્સા વૈસે હી ગન્દા રહતા હૈ ❖ સફાઈ કરને બહુત દેર સે આતા હૈ ❖ મુઝ સે ચાય ઓર ખાને કા જાન બૂઝ કર નહીં પૂછતા ❖ નખરે બહુત બઢ ગએ હૈં ❖ ચાપલૂસ હૈ ❖ કામચોર હૈ ❖ પૈસે ખા જાતા હૈ ❖ દો કી ચાય તીન કો પિલા કર બાકી રકમ જેબ મેં ❖ અપને લિયે ચાય, ખાના બચા લેતા હૈ ❖ મુઝે ખુદ ખાના દેને નહીં આતા ❖ જો પૈસે દે ઉસ કી બડી ઈઝ્ઝત કરતા હૈ ❖ દેર સે આતા ઓર જલ્દી ચલા જાતા હૈ ❖ ચીઝેં ચુરાતા હૈ ❖ ઈસે માંગને કી આદત હૈ ❖ ડ્યૂટી મેં કોતાહી કર કે હરામ કી રોઝી ખાતા હૈ.

“કુફલે મદીના લગા લીજિયે” કે સોલહ હુરૂફ કી નિસ્બત સે મકાન વ સાહિબે મકાન કી ગીબત કી 16 મિસાલેં

❖ ઉન કે મકાન (યા કારખાને યા દુકાન યા હોટલ) મેં બઢબૂ ફૈલી હુઈ થી યા સફાઈ નહીં થી ❖ ઉન કા હમ્મામ (યા લેટ્રીન) ગન્દા થા ❖ વોહ અપને મકાન (યા દુકાન) પર રંગ યા ❖ મરમ્મત નહીં કરવાતા ❖ ઘર હૈ યા કબાડ ખાના ! ❖ નિહાયત બે ઢંગા મકાન બનાયા હુવા હૈ ❖ ઈસ કા કમરા હૈ યા કબ્ર ? ❖ ઉસ કા મકાન હવાદાર નહીં હૈ ❖ મિટ્ટી કે ગારે સે બના લિયા સિમેન્ટ સે ચુનાઈ નહીં કરાઈ ❖ ઉસ કે ઘર કા પલસ્તર જગહ જગહ સે ઉખડા હુવા થા ❖ ઉસ કે ઘર કા પંખા “ખડ ખડ” બોલ રહા થા ❖ ઉસ કા A.C. કાફી પુરાના મા’લૂમ હોતા થા. ઠન્ડક (COOLING) બરાબર નહીં દે રહા થા ❖ ઈતના માલદાર હૈ મગર ઘર મેં A.C. નહીં લગવાયા ❖ ઈસ કંગલે કે ઠાઠ તો દેખો ઘર પર A.C. લગવા લિયા હૈ ❖ ઈસ કે પાસ ઈતની રકમ કહાં ! કિસી પાર્ટી સે A.C. કી તરકીબ બનાઈ હોગી ❖ ઈસ ને ઈતના



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा. (क़ुरआन)

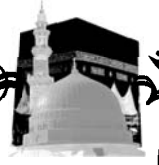
बडा मकान कैसे बनवा लिया ? कैसे कहां से आये होंगे !

“दर्टनाक अजाब से बयिये” के सोलह हुज़्ज़ की निस्बत से किरायादार के बारे में की जाने वाली गीबतों की 16 मिसालें

❖ मेरे घर की दीवारें और इर्श ज़राब कर दिया ❖ मेरा किराया जा गया
❖ कहीं महीनों से किराया नहीं दिया ❖ येह किरायादार सहीह आदमी नहीं ❖ मेरे
घर पर कब्ज़ा करना याहता है ❖ मालिक बन बैठा है ❖ मुज से ले कर किसी और
को किराये पर बिठा दिया है ❖ मेरे मकान को कबाड जाना बना दिया है ❖ मकान
की गटर लाईन तबाह कर डाली है ❖ जिधर देओ दीवारों में कीलें ठोक दी हैं ❖ मेरा
घर ज़ाली नहीं करता ❖ धमकी देता है के तुम से जो छो सके कर लो ❖ मुझे बहुत
तक्लीफ़ में डाल दिया है ❖ जब भी घर ज़ाली करने की बात करूं तड़ियां देता है
❖ पड़ोसी मुज से इस की शिकायत करते हैं मगर मेरी येह सुनता कब है ❖ मेरे
किरायेदारों को मेरे खिलाफ़ तडकाता है.

“अपनी ईस्लाह के लिये म-दनी ईन्-आमात पर अमल कीजिये” के पैंतीस हुज़्ज़ की निस्बत से सियासी तब्सिरों में की जाने वाली गीबत की 35 मिसालें

❖ धांदली कर के ईन्तिजाब ज़ता है ❖ इस ने बहुत सारे आदमी मरवाये
हैं ❖ लुग्या ❖ लइंगा ❖ गुन्डा ❖ लोटा ❖ राशी ❖ पैदागीर ❖ दादागीर
❖ टेढा ❖ फ़ोछडा ❖ तडीबाज ❖ बढ मआश ❖ दहशत गर्द ❖ ज़ालिम
(सरकश) ❖ ज़लील ❖ कमीना ❖ बढ जात ❖ पाज्ज है ❖ यलता पुर्जा ❖ बिकाउ
माल (जिधर पैसा देभता है उधर लुढक ज़ता) है ❖ मतलबी ❖ फ़ुद गरज ❖ थाली
का भेंगन ❖ मझाद परस्त ❖ पैसों का भूका है ❖ अपनी बढ उन्वानियां छुपाने के
लिये हुकूमत से ज़ा मिला है ❖ इन्ड गरीबों को देने के बजाये फ़ुद जा गया है ❖ वोट
लेने के वक्त पीछे पीछे फिरता है ❖ अब घास नहीं डालता ❖ इस ने अपने मन
पसन्द लोगों को ही नोकरियां दिल्वाई हैं ❖ सरकारी ज़ाने पर अैश कर रहा है



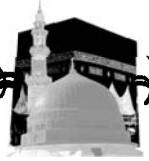
इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर हुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत
है. (अबुल्लै)

✿ हम ने एसे वोट दिये मगर उस ने हमारे लिये कुछ नहीं किया ✿ अन्दर पाते
हुवां पार्टी से मिला हुवा है ✿ वतन का गद्दार है.

“वक्त कीमती दौलत है” के यौदह हुइइ की निरबत से कुजूल जुमलों की 14 मिसालें

अइसोस सद अइसोस ! आज कल अखी सोलबतें कम्पाब हैं. कई “अखे”
नजर आने वाले भी बढ किस्मती से बलाई की बातें बताने के बजाये कुजूल बातें
सुनाने में मशगूल नजर आ रहे हैं. काश ! हम सिई रब्बे कायेनात عَزَّوَجَلَّ ही की
भातिर लोगों से मुलाकात करें और हमारा मिलना सिई जइरत की बात करने की उद
तक हो. मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे हिदायत, नोशअे बजमे जन्नत, मब्बअे
जूदो सभावत, सरापा इजलो रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आइय्यत निशान
है : “आदमी के इस्लाम की अख्ठाई में से येह है के लाया’नी यीज छोड दे.”

(مَوْطًا امام مالك ج ٢ ص ٤٠٣ حديث ١٧١٨) सदरुशरीअह, बहरतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना
मुइती मुहम्मद अमजद अली आ’जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي येह उदीसे पाक नकल करने के
बा’द इरमाते हैं : या’नी जो यीज कारआमद न हो उस में न पडे, जभान व दिल व
जवारेह (या’नी आ’जा) को बेकार बातों की तरइ मु-तवज्जेह न करे. (बहारे शरीअत,
हिस्सा : 16, स. 163) याद रहे ! कुजूल बातें करना गुनाह नहीं अलबत्ता एन से बयना
मुनासिब है युनान्ये हुज्जतुल इस्लाम उजरते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद
गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इरमाते हैं : “बे इअेदा बातों में मसइइ होना या इअेदा
मन्द गुइत-गू में जइरत से जियादा अइफ़ाज मिला लेना हराम या गुनाह नहीं
अलबत्ता एसे छोडना बहुत बेहतर है.” (احياء العلوم ج ٣ ص ١٤٣) गैर जइरी बातें करते
करते “गुनाहों बरी” बातों में ज़ पडने का कवी एम्कान रहता है लिहाजा जामोशी
ही में बलाई है. हमारे मुआ-शरे में आज कल बिला हाजत ऐसे ऐसे सुवालात भी
किये जाते हैं के सामने वाला शरमिन्दा हो जाता है और अगर जवाब में अेइतियात
से काम न ले तो जूट के गुनाह में भी पड सकता है. बसा अवकात एस तरह के
सुवालात उजरतन भी किये जाते हैं अगर ऐसा है तो कुजूल न हुअे. एस तरह के

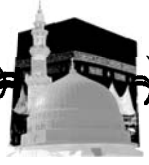


इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (मुरा)

सुवालात की 14 मिसालें पेशे फ़िदमत हैं अगर ज़रूरत है तो ठीक और इस के बिगैर काम चल सकता है तो मुसल्मानों को शरमिन्दगी या गुनाहों के फ़दशात से बयाईये. म-सलन ❀ हां भई क्या हो रखा है ! ❀ यार ! आज कल दुआ पुआ नहीं करते ! ❀ अरे भाई ! नाराज़ हो क्या ? ❀ यार ! लगता है आप को मज़ा नहीं आया ! ❀ येह गाडी कितने में भरीदी ? ❀ किस साल का मोडल है ? ❀ आप के अलाके में मकान का क्या भाव चल रहा है ? ❀ यार ! महंगाई बहुत ज़ियादा है ❀ इलां जगह पर मौसिम कैसा है ? ❀ उफ़ ! छतनी गरमी ! ❀ आज कल तो कड-कडाती सर्दी है ❀ न जाने येह बारिश अब रुकेगी भी या नहीं ! ❀ जरा बारिश आई के बिजली गई ! ❀ आप के यहां बिजली थी या नहीं वगैरा वगैरा. उमूमन मु-तजक्करा कलिमात और इस तरह के बे शुमार फ़िकरात बिवा ज़रूरत बोले जाते हैं. ताहम इस तरह के जुम्ले बोलने वाले के मु-तअद्लिक कोई बुरी राय काईम न की जाये, बल्के दुस्ने उन ही से काम लिया जाये के हो सकता है जो बात इज्जल लग रही है इस में काईल की कोई मस्लहत हो जो मैं नहीं समज सका. बिलफ़र्ज वोह सुवाल या जुम्बा इज्जल भी हो तब भी काईल गुनहगार नहीं.

थोक बन्द गीबतों की यार मिसालें

अगर किसी ग्रूप, आबादी, या मद्कमे की बुराई की और इस से उस कौम वगैरा के हर हर इर्द की बुराई करना मक़सूद हो तो गोया बुराई करने वाले ने अक़ ही जुम्ले में उस कौम की ता'दाद के बराबर गीबतें कर डालीं, अब अगर उस कौम में 10 हजार अफ़राद हैं तो 10 हजार गीबतों का गुनाह हुवा. इस की यार मिसालें पेश की जाती हैं : ❀ हमारा सारा ही फ़ानदान (या सारा गाँव) गुमराह हो गया है अक़ में ही बया हुवा हूँ (उमूमन अैसा नहीं होता, बडे बूढे, जवातीन और बच्चे अक़सर महइज़ होते हैं) ❀ हमारे सारे ही सरकारी अफ़सर रिश्वत पोर हैं ❀ इलेक्ट्रिक सपलाय वाले सब के सब भद मआश हैं (الله) ❀ हुकूमत में सब के सब योर तारे हैं वगैरा. अलबत्ता बा'ज अवकात अैसा होता है के किसी जुम्ले में "कुल या इस से मिलता जुलता" कोई लइज़ होता है लेकिन वहां उईन तमाम लोग नहीं बल्के अक़सर अफ़राद मुराद होते हैं तो अगर काईल या'नी कइने वाले ने हर हर इर्द मुराद न लिया हो तो अैसी जगह पर तमाम लोगों की गीबत का हुकम नहीं होगा लेकिन येह



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतो नाज़िल फरमाता है. (ज़रान)

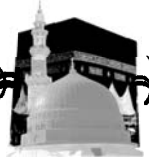
याद रखें के आम लोगों के लिये इस तरह के जुम्हलों में ईर्क समजना और कांठ मरभना मुश्किल होता है लिहाजा आइय्यत इसी में है के जैसे अल्फाज से बिल्कुल गुरेज किया जाये जिस में हज़ारों गीबतों में पउ जाने का अन्देशा हो.

“अै काश ! लग जाये कुइले मदीना” के उन्नीस हुर्रुफ़ की निस्बत से बकर ईद पर किये जाने वाले हुजूल सुवालात की 19 मिसालें

बकर ईद के मौकअ पर बिगैर लेने देने के किये जाने वाले हुजूल सुवालात की 19 मिसालें : ❀ गाय लेने कब जाअेंगे ? ❀ आज कल तो मन्दी तेज हो गई होगी ! ❀ हां भई ! गाय कितने में लाअे ? ❀ यार ! गाय है तो बडी जानदार ! ❀ कितने दांत की है ? ❀ टक्कर तो नहीं मारती ? ❀ यला कर लाअे या सूजूकी में ? ❀ सूजूकी वाले ने कितना किराया लिया ? ❀ कब कटेगी ? ❀ कस्साब वक्त पर आया या नहीं ? ❀ कस्साब धुरी डेर कर यला गया डिर बडी ढेर से आया ❀ हां यार ! कस्साब लोग लटका देते हैं ❀ हुलां की गाय कस्साब के हाथ से छूट कर भाग भडी हुई, भडा मजा आया ! ❀ हां यार ! कस्साब अनाडी था ! (ईस जुम्हे में गीबत, तोहमत, हिल आज़ारी, भद गुमान्नी और भद अल्काभी वगैरा गुनाहों की भदभू है अलबत्ता अगर वाकेई वोह कस्साब अनाडी हो और जिस को बताया उस को उस से बयाना मकसूद हो तो ईस जुम्हे में हरज नहीं) ❀ आप का बकरा कितने दांत का है ? ❀ कितने में मिला ? ❀ ओहो ! भडा महंगा मिला ❀ यलता भी है या नहीं ? ❀ कितनी कटाई लगी ? वगैरा वगैरा.

“जूट हलाकत भैज है” के चौदह हुर्रुफ़ की निस्बत से जूट पर मजबूर करने वाले सुवालात की 14 मिसालें

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! भा'ज अवकात लोग जैसे सुवालात कर देते हैं के जवाब देने में बे अेहतियाती और मुरुव्वत की वजह से आदमी के मुंह से जूट निकल सकता है अगर्ये सुवाल करने वाला गुनहगार नहीं ताहम मुसल्मानों को गुनाहों से बयाने के लिये बिना ज़रूरत ईस तरह के सुवालात से ईजतिनाब (या'नी परहेज) करना मुनासिब है. सुवालात की 14 मिसालें हाज़िर हैं : ❀ हमारा घर ढूंउने में कोई

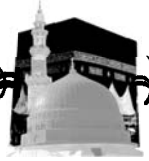


इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

परेशानी तो नहीं हुई ? ❀ हमारे घर का जाना पसन्द आया ? ❀ मेरे हाथ की याय कैसे थी ? ❀ हमारा घर आप को अच्छा लगा ? ❀ मेरे लिये दुआ करते हैं या नहीं ? ❀ मैं ने अभी जो बयान किया आप को कैसा लगा ? ❀ मैं ने जो ना'त शरीफ़ पढी थी इस में आप को मेरी आवाज कैसी लगी ? ❀ मेरी बात आप को बुरी तो नहीं लगी ? ❀ मेरे आने से आप को तकलीफ़ तो नहीं हुई ? ❀ मेरी वजह से आप को बोरियत तो नहीं हो रही ? ❀ मैं आ कर आप की बातों में कहीं मुजिल तो नहीं हो गया ? ❀ आप मुज से नाराज तो नहीं ? ❀ आप मुज से जुश हैं ना ? ❀ मेरे बारे में आप का दिल तो साफ़ है ना ? वगैरा.

सब से पतरनाक अबुल कुज़ूल : भा'ज लोग तो बडे ही अजब होते हैं, बात बात पर ज्वाह म ज्वाह इस तरह ताईद तलब करते हैं : ❀ हां भई क्या समजे ? ❀ मेरी बात का मतलब समज गये ना ? अलबत्ता जरूरतन शागिर्दों या मा तहूतों से उस्ताज या बुजुर्गों वगैरा का पूछना कभी मुझीद भी होता है ताके किसी को समज में न आया हो तो समजाया जा सके. जैसे मौकअ पर समज में न आने की सूरत में सामने वाले को याहिये के जूटभूट हां में हां न मिलाये ❀ क्यूं भई ! ठीक है ना ! ❀ “मैं गलत तो नहीं कह रहा ?” ❀ “क्या जयाल है आप का ?” अब बात लाभ ना काबिले कबूल हो या गीबत पर मुश्तमिल हो मगर बसा अवकात मुरुव्वत में हां में हां मिला कर बारहा जूट और गीबत की ताईद के गुनाह करने पडते हैं. जैसे अबुल कुज़ूल और बातूनी लोगो की इस्लाह की हिम्मत न पडती हो तो फिर इन से कोसों दूर रहने ही में आइय्यत है के इन की गीबतों और तोहमतों वगैरा गुनाहों भरी बातों में भी हां में हां मिलाना कहीं जहन्नम में न पहुंचा दे ! यहां तक के इस तरह के बकवासी लोग कभी तो गुमराही की बातें बल्के **كُذِّبَتْ بِكَ مِنْ أَعْيَادِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** कुझिय्यात बक कर भी हस्बे आहत ताईद हासिल करने के लिये : “क्यूं ज़ ठीक कह रहा हूं ना ?” कह कर सामने वाले से हां कहलवा कर भा'ज अवकात उस का भी इमान बरबाद करवा देते हैं.

क्यूंके डोश व हवास के साथ कुझ की ताईद भी कुझ है. **أَعْيَادُ بِاللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ**



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज़ पर दुइडे पाक न पड़े. (१७)

अै काश ! ज़रत के सिवा कुछ भी न भोवूं

अव्लाह ज़बां का हो अता कुइले महीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इोन पर की जाने वाली इज्जूल बातों की 5 मिसालें

❖ क्या कर रहे हो ? ❖ कहां हो ? ❖ गाडी में इोन आया तो सामने से सुवाल होगा इस वक्त आप के पास कौन कौन है ? ❖ किधर से गुजर रहे हो ? ❖ कहां तक पहुंचे ? वगैरा. हां जो जो सुवाल ज़रतन किया जाये वोह इज्जूल नहीं कहलायेगा मगर बा'ज सुवालात आदमी को शरमिन्दा कर के जूट पर मजबूर कर सकते हैं म-सलन हो सकता है के पहले तीन सुवालात का जवाब वोह दुरुस्त न दे पाये क्यूंके वोह नहीं याहता के किसी को पता यले के क्या कर रहा है या कहां है या उस के पास कौन कौन है. बस काम की बात वोह भी हस्बे ज़रत करने ही में दोनों जहानों की आइय्यत है.

“गीबत नुकसान देह है” के तेरह हुरइ की निरबत से

इोन करने के हवाले से गीबत की 13 मिसालें

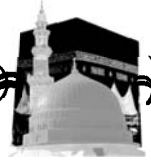
इोन, S.M.S., इन्टरनेट पर येटिंग और बर्की डाक (या'नी E-MAIL) के जरीओं से भी गीबतों, बह गुमानियों और तोइमतों का सिव्सिला हो सकता है. आप ने किसी को यन्द बार बहके 100 बार भी इोन या SMS या ई मेईल किया हो और जवाब न मिला हो तब भी अपने मुसल्मान भाई के साथ हुस्ने ज़न से काम ले कर उम्दा इबादत का सवाब कमा लिया करें जैसा के सुल्ताने हो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ या'नी हुस्ने ज़न से उम्दा का इरमाने अ-ज़मत निशान है : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ : (सुन अबुदावुद ज ६ व ३८७ हदित ६९९३) युनान्थे हुस्ने ज़न काईम कीजिये, के इबादत से है.



इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अमाल)

जवाब न देने में उस की कोई न कोई मजबूरी होगी नीज़ इस मस्यले पर भी नज़र रबिये के बिलफ़र्ज किसी ने ज़ान बूज़ कर भी फ़ोन वुसूल नहीं किया या आप के sms या ई मेईल का जवाब नहीं दिया तो शरअन उस का गुनहगार होना ज़रूरी नहीं, वरना तो जिस जिस के पास फ़ोन होगा वोह बार बार गुनहगार होता रहेगा, ખુદ आप भी तो हर किसी का हर हर फ़ोन वुसूल नहीं इरमाते होंगे. मगर अइसोस ! फ़ोन का जवाब न मिलने पर शैतान बा'ज़ लोगों को बसा अवकात सब कुछ लुला कर गुस्से से भावला बना देता है, लिहाज़ा ठन्डे दिमाग से काम लीजिये, अगर आप गुस्से में बे सभ्रे हो गये तो इस तरह के गीबतों, तोइमतों और बढ गुमानियों से भरपूर गुनाहों भरे जुम्ले मुंह से निकल सकते हैं : ❀ वोह बडा बे दई है ❀ सुस्त आदमी है ❀ पता नहीं मेरा फ़ोन क्यूं नहीं उठाता ❀ मुज पर ખार ખाता है ❀ ईतनी बार फ़ोन किये मगर ज़ान बूज़ कर वुसूल (ATTEND) नहीं किये ❀ अपने आप को कुछ समझता है ❀ मैं ने उस के साथ हूलां हूलां अेहसानात किये हैं मगर येह अेहसान इरामोश है ❀ मतलबी शप्स है ❀ बे वफ़ा है ❀ वायडा (या'नी टेढा) है ❀ किसी की मजबूरी का उस को अेहसास ही नहीं ❀ मेरा फ़ोन दानिस्ता मसइफ़ (Busy) कर देता है (हालां के निज़ाम (System) की मसइफ़ियत या खराबी की बिना पर भी अैसा हो सकता है) ❀ (सुब्ह के वक्त फ़ोन वुसूल न होने पर) अभी तक नहीं उठा, आपिर कितना सोअेगा. वगैरा.

फ़ोन वुसूल कर के सवाब कमाईये : भीढे भीढे ईस्लामी लाईयो ! बेशक हर किसी का फ़ोन वुसूल करना वाजिब न सही, मगर मुसल्मान की हिलजूई और उसे गीबतों, तोइमतों और बढ गुमानियों वगैरा गुनाहों से बयाने की अख़ी अख़ी निय्यतों के साथ हाथों हाथ फ़ोन वुसूल कर लीजिये और SMS का जवाब दे दीजिये, येह भी हो सकता है के फ़ोन करने वाले को कोई ईमरजन्सी दरपेश हो, आप अगर सप्त मजबूरी की वजह से उस वक्त फ़ोन वुसूल न कर सके तो बा'द में ખुद उसे फ़ोन



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुज़ पर कसरत से दुर्रहे पाक पढो भेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रहे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (मूज़)

में थी तो रोज़ फ़ोन करता था अब हमें घास भी नहीं उलता ❀ एसे एतनी तौफ़ीक़ ही कहां की फ़ोन करे, जब भी किया है मैं ने ही किया है ❀ (मां कहे) सुसराल में अगर द्यो दिन फ़ोन न करे तो बेथैन हो जाता है ❀ और अपने घर महीनों गुज़र जायें कोई फ़िक़ ही नहीं होती ❀ (मां बाप कहें) दूसरों को फ़ोन करने के लिये उस के पास वक्त भी है और पैसे भी, हमारे लिये उस के पास टाइम ही नहीं ❀ शादी के बा'द हमें बिल्कुल ही भूल गया है ❀ जान भूज़ कर फ़ोन नहीं करता.

“जबान संभालो!” के ग्यारह दुर्रह की निरबत से किसी को फ़ोन करते द्येभ कर की जाने वाली गीबतों की 11 मिसालें

❀ पेकेज करवाया होगा वरना एस कन्जूस मज्भी यूस के पास एतना दिल् कहां के रकम भर्य करे ❀ एस ने फ़ोन पर ज़रूर मेरी युग्लियां की होंगी ❀ (सास कहे) अपने मयके वालों से हमारी बुराईयां कर रही होगी ❀ मेरे भिलाफ़ मेरे बेटे के कान भर रही होगी ❀ (बहू कहे) अपने बेटे को मेरे भिलाफ़ भडका रही होगी ❀ (मुलाजिमीन कहे) सेठ साहिब रिश्वत का रेट फ़ाईनल कर रहे होंगे ❀ (अफ़सर कहे) ठीपर मेरी शिकायत लगा रहा होगा ❀ मुज्जालिफ़ ग्रूप को हमारे राज़ बता रहा होगा ❀ बडा इल रहा है के मेरी इलां अफ़सर/सेठ/M.N.A./M.P.A./सूबाई वज़ीर/वफ़ाकी वज़ीर से बात हो रही है ❀ ज्वाह म ज्वाह हर वक्त फ़ोन पर लगा रहता है ❀ द्येभ तो कैसे यीभ यीभ कर बात कर रहा है.

“गीबत से भयिये” के दस दुर्रह की निरबत से SMS के हवाले से की जाने वाली गीबतों की 10 मिसालें

❀ एस बुध्दू को sms लिखना ही नहीं आता ❀ एस का कोई धन्दा ही नहीं, जब द्येभो sms ही लिखता रहता है हता के यलते यलते भी sms लिखने से नहीं रुकता ❀ बहुत कन्जूस है सिर्फ़ sms से ही काम यलाता है ❀ जोर sms भेजता है



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હૈ અવ્લાહ ઉસ કે લિયે એક કીરાત અજ લિખતા હૈ ઓર કીરાત ઉહુદ પહાડ જિતના હૈ. (અહમદ)

❖ ઈસે તો રોમન લિખની હી નહીં આતી ઈસ લિયે ઉર્દૂ મેં લિખતા હૈ ❖ ઈંગ્લિશ મેં sms લિખતે વક્ત બહુત ગ-લતિયાં કરતા હૈ ❖ કિસી કા sms ચુરા કે અપને નામ સે ભેજતા હૈ ❖ ફુલાં sms કર કર કે મુઝે તંગ કરતા રહતા હૈ ❖ સલામ તક નહીં લિખતા ❖ બેહૂદા sms કરતા હૈ.

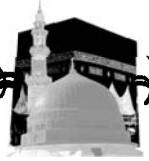
CHATTING કે હવાલે સે કી જાને વાલી ગીબતોં કી 3 મિસાલેં :

❖ ચેટિંગ કે ઈલાવા ઈસ કા કોઈ કામ હી નહીં હોતા ❖ ચેટિંગ કે દૌરાન બહુત ઝૂટ બોલતા હૈ ❖ હમેં તો ચેટિંગ સે મન્અ કરતા હૈ ઓર ખુદ બાઝ નહીં આતા.

INTERNET કે હવાલે સે કી જાને વાલી ગીબતોં કી 5 મિસાલેં :

❖ યેહ નેટ કે ઝરીએ દૂસરોં કે કમ્પ્યુટર મેં ઘુસ કર ઉન કા મવાદ ચોરી કરતા હૈ ❖ ઈસ ને અપના કનેક્શન કહાં લિયા હોગા ! ચોરી કા ઈસ્તિ'માલ કર રહા હોગા ❖ ન જાને ક્યા ક્યા દેખતા હૈ ❖ ભાઈ યેહ તો ફુરસતી હૈ, હર વક્ત નેટ પર હી બૈઠા રહતા હૈ ❖ બહુત પૈસા ઝાએઝ કરતા હૈ.

ચોક દર્સ કી બહાર આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા દીદાર : ગીબત કરને સુનને કી આદત નિકાલને, નમાઝોં ઓર સુન્નતોં પર અમલ કી આદત ડાલને કે લિયે દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે હર દમ વાબસ્તા રહિયે, મ-દની ઈન્આમાત કે મુતાબિક ઝિન્દગી કે અથ્યામ ગુઝારિયે, સુન્નતોં કી તરબિયત કે લિયે મ-દની કાફિલોં મેં આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં ભરા સફર કીજિયે, ઓર ખૂબ ખૂબ દર્સે ફેઝાને સુન્નત દીજિયે ઓર સુનિયે ઓર ઈસ કી બ-ર-કતે લૂટિયે, તરગીબ કે લિયે એક મ-દની બહાર આપ કે ગોશ ગુઝાર કરતા હૂં : બાંદ્રા (બમ્બઈ, હિન્દ) કે એક ઈસ્લામી ભાઈ ને જો કુછ બતાયા ઉસ કા ખુલાસા હૈ કે 2000 સિ.ઈ. મેં અલાકે કે અન્દર હોને વાલે ચોક દર્સ મેં એક દિન મુઝે શિર્કત કી સઆદત મિલી, દર્સ કે બા'દ મુલાકાત કરતે હુએ એક ઈસ્લામી ભાઈ ને મુઝે દા'વતે ઈસ્લામી કે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ કી દા'વત પેશ કી.

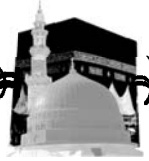


इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुर्रहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये ईस्तिज़्कार करते रहेंगे. (उज़्ज़)

मैंं एजतिमाअ में हाज़िर हुवा, वहां मुबल्लिगे दा'वते ईस्लामी दुर्रहे पाक की इज़ीलत बयान इरमा रहे थे ईस का कुछ ऐसा असर हुवा के اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ में ने रोजाना 313 मर्तबा दुर्रहे पाक पढने का मा'भूल बना लिया. यन्द ही दिनोँ बा'द अेक रात जब सोया तो सोई हुई किरमत अंगडाई ले कर ज़ाग उठी, मैंं ने ज्वाब में देखा के कोई कल रहा है : इलां जगह पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ तशरीफ़ इरमा हैं. ये ल सुन कर मैंं आलमे दीवानगी में ज़ियारत की निथ्यत से दौडा तो आगे लोगोँ का अेक हुजूम था, सीधे हाथ की तरफ़ वाकेअ अेक घर से नूर निकल रहा था, मैंं उस में दाबिल हो गया वहां देखा के अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे पुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمَ तशरीफ़ इरमा हैं, मैंं ने उन से अर्ज़ की : सरकारे दो जहां. صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ कहां तशरीफ़ इरमा हैं? आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمَ ने मुजे अन्दर ज़ाने का ईशारा इरमाया, मैंं मज़ीद अन्दर की तरफ़ गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ रसूलोँ के सरदार, मदीने के ताजदार, हम गरीबोँ के गम गुसार, शईअे रोजे शुमार, जनाबे अहमदे मुफ्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ अेक बुलन्द जगह जल्वा अइरोज़ थे. मैंं ने सलाम अर्ज़ किया, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने जवाब ईशाद इरमाया और मुज़ से मुसा-इहा किया, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعालٰی عَلٰیهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का येइरअे मुबारक गुलाब के इल की तरह पिला हुवा था और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعालٰی عَلٰیهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ के येइरअे अन्वर से ज़ो नूर निकल रहा था वोह पूरे घर को रोशन कर रहा था. سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ. उस वक्त से मैंं दा'वते ईस्लामी से वाबस्ता हूं और ईस के म-दनी माडोल की ब-र-कते लूट रहा हूं.

ऐसी किरमत भुले, देपने को मिले जल्वअे मुस्तफ़ा, काइले में यलो
शौक उज का है गर, और आका का दर तुम को है देपना, काइले में यलो
सबज़ गुम्बद का नूर, देपने का सुउर पाओगे आयो ना, काइले में यलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے مومنوں پر ایک بار دھڑکے پاک پڑا ابدلایا۔ (اس پر دس راتوں میں) (ص ۱)

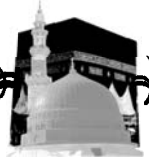
દા'વતે ઇસ્લામી દુરુદો સલામ કે જામ પિલાતી હૈ

سُبْحَانَ اللَّهِ ! سُبْحَانَ اللَّهِ ! سُبْحَانَ اللَّهِ ! કેસે ખુશ બખ્ત ઇસ્લામી ભાઈ હૈં કે આતે હી રહમતોં સે ઝોલી ભર ગઈ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِ وَسَلَّمَ. દા'વતે ઇસ્લામી આશિકાને રસૂલ કી સુન્નતોં ભરી તહરીક હૈ ઓર ભર ભર કર દુરુદો સલામ કે જામ પિલા રહી હૈ ઓર આ આ કર પ્યાસે સૈરાબ હો રહે હૈં ઓર મુકદર વાલે જલ્વએ મુસ્તફા ﷺ સે ફૈઝયાબ હો રહે હૈં

કોઈ આયા પા કે ચલા ગયા કોઈ ઉમ્મ ભર ભી ન પા સકા

મેરે મોલા તુઝ સે ગિલા નહીં યેહ તો અપના અપના નસીબ હૈ

नूर मुस्तफ़ा ﷺ की जल्वा सामानियां : ખ્વાબ દેખને વાલે ને યેહરએ અન્વર કે નૂર સે ઘર રોશન દેખા, سُبْحَانَ اللَّهِ ! ક્યૂં ન હો કે રબબે ગફૂર عزوجل કી અતા સે મેરે હુઝૂર, “સરાપા નૂર” હૈં જૈસા કે દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કા મત્બૂઆ 48 સફહાત પર મુશ્તમિલ રિસાલા, “સિયાહ ફામ ગુલામ” સફહા 8 ઓર 9 પર હૈ : “શિફા શરીફ” મેં હૈ : જબ રહમતે આલમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે બની આદમ ﷺ સલ્વે મુસ્કુરાતે થે તો દરો દીવાર રોશન હો જાતે. (الشفا ص ۶۱) ઉમ્મુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિ-દતુના આઈશા સિદીકા રિવાયત ફરમાતી હૈં : મેં સ-હરી કે વક્ત ઘર મેં કપડે સી રહી થી કે અયાનક સૂઈ હાથ સે ગિર ગઈ ઓર સાથ હી ચરાગ ભી બુઝ ગયા, ઇતને મેં મદીને કે તાજદાર, મમ્બએ અન્વાર ﷺ ઘર મેં દાખિલ હુએ ઓર સારા ઘર મદીને કે તાજવર ﷺ કે યેહરએ અન્વર કે નૂર સે રોશન વ મુનવ્વર હો ગયા ઓર ગુમશુદા સૂઈ મિલ ગઈ. (القول النبوي ص ۳۰۲) ﷺ બલકે આપ ﷺ સલ્વે ﷺ ને ઓક બાર મેરે તો કાસિમે નૂર હૈં જિસે યાહે પુરનૂર કર દે યુનાન્યે ઇસી રિસાલે સિયાહ ફામ ગુલામ સફહા 6 પર હૈ : હઝરતે સય્યિદુના અસીદ બિન અબી ઉનાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં : મદીને કે તાજદાર, શહન્શાહે આલી વકાર ﷺ ને ઓક બાર મેરે યેહરે ઓર સીને પર અપના દસ્તે પુર અન્વાર ફૈર દિયા, ઇસ કી બ-ર-કત યેહ



इरमाने मुस्तफा : عسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

जाहिर हुँ के मैं जब भी किसी अंधेरे घर में दाखिल होता वोह घर रोशन हो जाता.

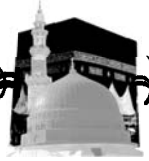
(الخصائص الكبرى للسيوطي ج ٢ ص ١٤٢، تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٢٠ ص ٢١)

यमक तुज से पाते हैं सब पाने वाले

मेरा दिल भी यमका दे यमकाने वाले

“गीबत गुनाहे कबीरा और मुर्दा भाई का गोशत पाने के बराबर है,
गीबत करने वाला तौबा कर ले तब भी सब से आबिर में जन्त में
जायेगा” के जानवे हुर्रु की निरबत से दोस्तों में की जाने
वाली गीबतों की 92 मिसालें

❖ लम्बी करता है ❖ चिकनी करता है ❖ चिकना घडा है ❖ लिप-लिपिया
है ❖ मुँह इट ❖ बातूनी ❖ बउ बोला ❖ बउ-बउिया ❖ बकवासी ❖ कुजूल गो
है ❖ येह आता है तो मुजे तो बडी कोइत होती है ❖ ओर करता है ❖ आता है तो
फिर जान नहीं छोडता ❖ दिमाग जा जाता है ❖ मज्ज की “दही” है ❖ इस का तो
कुत्ते, या ❖ लोहे का भेजा है ❖ अपने आप को कुछ समजता है ❖ फुद को बडा
डोशियार समजता है ❖ बहुत सियाना बनता है ❖ शो बाजी करता है ❖ डेढ
डोशियार है ❖ मुजे बे वुकूफ़, या ❖ उल्लू बना रहा था ❖ ले ! मेरे को बिल्कुल मामा
समज रहा है ! ❖ प्वाह म प्वाह का रो'ब जडता है ❖ किसी को जातिर में ही नहीं
लाता ❖ शो बाज ❖ बोल बयनी ❖ यालबाज ❖ ढोंगी है ❖ बढ अप्लाक ❖ बढ
तमीज ❖ बढ जमान ❖ तुन्द मिजाज ❖ उलटी जोपडी का ❖ बे मरुव्वत ❖ बे शर्म
❖ बे हया ❖ ढोर है ❖ इस का मुँह हर वक्त यढा, या ❖ सूजा, या ❖ झूला हुवा
रहता है ❖ भरियल टकू ❖ मुर्दार ❖ उरपोक ❖ बुजदिल है ❖ इस में दम कहां है !
❖ जगडालू ❖ लडाकू ❖ झितना ❖ झितने की जउ ❖ इंडेबाज है ❖ “गन्द” करता है
❖ जाओ ❖ पेटू ❖ जाता बहुत है ❖ माल जाओ ❖ पेट भरू ❖ मुईत पोरा



इरमाने मुस्तफ़ा عيسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढ़ा तलकीक वोह बदे अप्त हो गया. (उंअ)

❖ नकटा है ❖ बिल्कुल अन्धी यला रभी है ❖ शैभी बघारता ❖ पाली भातें बनाता ❖ अइवाहें उडाता ❖ बडी बडी भातें करता ❖ ईंकू ❖ गप्पी ❖ डीगिया है ❖ ईंकता ❖ ठोकता ❖ छोडता ❖ हांकता ❖ “हवाएँ झायर” करता है ❖ आंटियां भारता ❖ यक्कर देता ❖ गोल गोल भातें करता है ❖ निय्यत पाराब है, या ❖ आदमी सहीह नहीं ❖ बहाने बाज ❖ हीले बाज ❖ आंटी बाज¹ ❖ जूटा ❖ 420 ❖ इराडी ❖ नम्बरी ❖ ठग, या ❖ चीटर है ❖ पारबाज ❖ मेरी तरक्की देष नहीं सकता ❖ मुज पर पार पाता है ❖ इस की जब सूँध अटक्ती है तो फिर इस को कोँई नहीं समजा सकता.

“अपने सर पर वबाल न लीजिये” के उन्नीस दुर्रइ की निरुगत से मुसन्निफ़ के बारे की जाने वाली गीबतों की 19 मिसालें

किताबों के मुसन्निफ़ीन की पाभियां और कमजोरियां सहीह मक्सद के तइत बयान करना ज़रूज है, अलबत्ता ज्वाह म ज्वाह जुराई करना गीबत है यहां मु-तवक्कअ गीबतों और तोइमतों की 19 मिसालें बयान की जाती हैं : ❖ एन्शा परदाजी के इन में कोरा है ❖ इस की तहरीर ओरियत कुन होती है ❖ जरा सी ता'रीफ़ होने पर झूल गया है ❖ जुद को तहरीर के इन का एमाम समजता है ❖ उर्दू की यन्द किताबें पढ कर मुसन्निफ़ बन बैठा है ❖ किसी का मवाद योरी कर के अपने नाम से मन्सूब कर लिया है ❖ दूसरों की किताब का यरबा उतार लेता है ❖ एसे किताब पर अपना नाम अल्काबात के साथ लगवाने का बडा शौक है ❖ इस की तहरीर जानदार नहीं ❖ इस ने किताब में मौजूअ से हट कर मवाद बहुत डाल दिया है ❖ उर्दू जुम्ले दुरुस्त नहीं ❖ जुम्लों में रब्त नहीं ❖ एसे उर्दू अदब की अलिफ़ बे नहीं आती ❖ इस मौजूअ पे लिखने की क्या ज़रूरत थी ❖ इस का अपना अक भी

1. किसी की टांग में अपनी टांग अडा कर गिरा देने को “आंटी देना” कहते हैं मगर हमारे यहां येह लफ़्ज अतौरे मुहा-वरा भी एस्ति'माल होता है, या'नी जो उलटी सीधी दलीलें दे कर सामने वाले को बेबस कर दे या उलज्ज में डाल दे उस को “आंटी बाज” बोलते हैं यूँके येह लफ़्ज शरीफ़ आदमी के लिये नहीं बोला जाता और जिस के लिये बोला जाअे मा'ना समजने की सूरत में उस को ना गवार मा'लूम होता है एस लिये एस को गीबत की मिसालों में शामिल किया है.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुज पर अेक बार दुरइ पाक पढा अवलाह عزوجل (उस पर दस रइमतें बेजता है. (س))

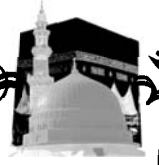
जुम्हा नहीं होता ❀ काम किसी से करवा कर अपने नाम से छाप देता है ❀ इतनी रद्दी किताब, इस से अच्छा था के न ही लिखता ❀ इस से अच्छा तो मैं खुद लिख सकता हूँ ❀ आता जाता कुछ है नहीं किताबें लिखने बैठ गया.

वेबसाईट के मु-तअद्विक मु-तवक्कअ 5 गीबतें

उभूमन साईट्स इंदारों की होती हैं या अइराद की हों तो अक्सरो बेशतर साईट का मालिक मुअय्यन व मा'लूम आदमी नहीं होता लिहाजा गीबत जल्मी होगी जब के मुअय्यन व मा'लूम इर्द या अइराद की की जाये. हां अगर मा'लूम है के येह वेबसाईट कुलां मुसल्मान की है और बिवा इजाजते शर-ई बुराई बयान की नीज जिस के सामने बुराई बयान की वोह भी समज रहा है के कुलां की बुराई हो रही है तो अब गुनाह भरी गीबत है. इस काईदे को पेशे नजर रखते हुअे वेबसाईट्स के मु-तअद्विक गीबत की 5 मिसालें मुला-हजा इरमाईये : ❀ कुलां ने क्या बेकार वेबसाईट बनाई है ❀ बहुत देर से पुलती है ❀ क्लर और डीजाईनिंग अच्छी नहीं की ❀ लोगो (LOGO) युरा कर अपना बना लिया है ❀ “ई होस्टिंग” पर बनाता है कन्जूस है, अपने पैसे भर्य नहीं करता.

“गीबत से भय” के आठ हुइइ की निरुबत से इस्तिन्जा जाने की लाघन में गीबत की 8 मिसालें

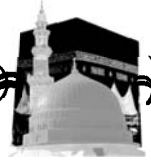
सइरे मदीना के दौरान उ-रमैने तय्यिबैन व मिना शरीफ वगैरा में नीज मदारिस व मसाजिद के इस्तिन्जा जानों पर भीउ के मौकअ पर सभ्र कीजिये, आवाजें लगाने, बार बार दरवाजा बजाने और कितार में भडे हुअे लोगों के आगे अन्दर गअे हुअे शप्स के मु-तअद्विक जभान यलाने की सूरत में दिल् आजारी और गीबत वगैरा से भयना मुश्किल हो जायेगा, अैसे मौकअ पर की जाने वाली गीबत की 8 मिसालें मुला-हजा हों : ❀ अन्दर जा कर बैठ गया है ❀ पाअे यढाअे हें ❀ इस को दूसरों का भयाल रभना याहिये ❀ अरे ! येह कहां अन्दर यला गया, यार ! इस को तो बडी देर लगती है ❀ वोह जल्दी नहीं निकलता ❀ पता नहीं अन्दर जा कर क्या करता है ! ❀ अन्दर सो तो नहीं गया ❀ गन्द कर के यला जाता है ठीक से पानी भी नहीं बहाता.



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے مومنوں پر ایک بار دھڑکے پاક پڑا اذلالہ و عجز (उस पर दस
रहमतें बेजता है. (س))

“गीबतें करने वाला तांभे के नाभुनों से येहरे और सीने को भार भार छील रहा था” के अहावण हुर्रुफ़ की निस्बत से जिस्मानिय्यत में गीबत की 58 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! बिला मस्लहतते शर-ई किसी के जिस्म का औंभ
बयान करना भी गीबत है. लिहाजा किसी “कमजोर” को भी कमजोर कहते हुअे
कहने की मस्लहत पर गौर कर लेना जरूरी है के इस को “कमजोर” क्यूं कह रहा है !
अगर बतौरे बुराई कह रहा है तो येह गीबत है. जिस्मानिय्यत के मु-तअद्लिक
गीबत की मजीद 58 मिसालें मुला-हजा हों : ❀ मरियल घोडा है ❀ इतना पतला है
के झूंक मारो तो उउ जाअे ❀ मोटा है ❀ पेट निकला हुवा है ❀ बे डोल जिस्म वाला
है ❀ लम्बा ❀ लम्बू ❀ ठिंट ❀ टावर ❀ बांस है ❀ नाटा ❀ ठिगू ❀ ठिगना
है ❀ भेंगा ❀ युन्धा ❀ काना ❀ अन्धा है ❀ कोढी ❀ येयक के दाग वाला है
❀ लूला ❀ लंगडा ❀ कुबडा है ❀ औरतों जैसी याल है ❀ मुभन्नस ❀ डीजडा
❀ नामद है ❀ भूरा ❀ काला ❀ कल्वा जल्वा है ❀ इस की नाक यपटी है
❀ तोतला ❀ हकला ❀ नाक में से बोलता है ❀ बढ सूरत है ❀ बूढा भूसट है
❀ कभ्र में पाणिं लटक गअे हैं ❀ गन्जा ❀ अेरपोर्ट है ❀ दन्तू ❀ दन्ता
❀ दन्तीला है ❀ इस के मुंह से या बदन से या कपडों से पसीने की बढभू आती है
❀ बहारा है ❀ रेल्वे का पुराना इन्जन (या’नी बहुत काला) है ❀ इस में कोई नक्स
है जभी तो अब तक कोई बग्या पैदा नहीं हुवा ❀ मोटी भेंस है ❀ लम्बी नाक
❀ लम्बे मुंह वाला है ❀ उस के नाभुनों में मैल भरी हुई थी ❀ उस के कानों से मैल
की बू आ रही थी ❀ वोह कटी नाक वाला ! ❀ उस के दांत ड्रेकूला जैसे हैं ❀ पान
गुटका भा भा कर दांत भराभ कर दिये हैं ❀ इतनी जोर से हंसता है के डरा देता है
❀ जब देभो उस का मुंह पागलों की तरह खुला ही रहता है ❀ उस के हाथ पाणिं पर
बहुत मैल जमा हुवा था ❀ भा भा कर मोटा हो गया है ❀ सोते में इतने जोर से
भरटि लेता है के किसी को सोने नहीं देता.



इरमाने मुस्तफा : عن النبي صلى الله عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

“गीबत सूद से भी बडा जुर्म है” के बीस हुर्रुफ़ की निरबत से घबादात के बारे में गीबत की 20 मिसालें

❖ इज्ज में कहां उठता है ! ❖ नमाज जल्दी जल्दी पढता है ❖ उस से हुर्रुफ़ की अस्ल मफारिज से अदाअेगी नहीं होती ! ❖ बे नमाजी है ❖ र-मजान के रोजे नहीं रभता ❖ जकात नहीं देता ❖ जकात लेने जाओ तो धक्के भिलाता है ❖ यन्दा देने में कन्जूसी करता है ❖ नमाज या रोजे या जकात के मसाधल नहीं जानता ❖ हज र्ज़ हो युका है मगर नहीं जाता क्यूंके इस को कारोबार से कुरसत नहीं ❖ लोगो पर कस्ते घबादात का सिक्का जमाने के लिये तलजहुद पढता है ❖ दूसरे इस्लामी भाई हों तो ही इशराक व याशत पढता है अकेले में नहीं पढता ❖ इस को र-मजानुल मुबारक में भी तिलावत की तौफ़ीक नहीं ❖ अस्र व इशा की सुन्नते गैर मुअक्कदा तो कभी पढता ही नहीं ❖ नमाज के आ'द जल्दी भागने की करता है, इतिहासे सानी के लिये रुकता ही नहीं ❖ तस्बीह हाथ में पकड कर जाली होंट खिलाता रहता है पढता वढता कुछ नहीं ❖ लोगो को दिभाने के लिये तस्बीह हाथ में रभता है ❖ माथे पर सजदे का निशान बनाने के लिये जमीन पर ખૂब सर रगडता है ❖ रोजा रभ कर भी इल्में डिरामे देभता है ❖ बडा नमाजी बनता है तरावीह तक तो जमाअत से नहीं पढता.

“गीबत भद भला है” के ग्यारह हुर्रुफ़ की निरबत से हाइजे कुरआन की गीबतों की 11 मिसालन

❖ हुलां हाइज पैसों की भातिर तरावीह पढता है ❖ हाइज साहिब ने सामेअ (या'नी तरावीह सुनने वाले हाइज) से कोई तरकीब बना रभी है इसी लिये तो वोह इन की ग-लतियां नहीं निकालता ❖ इस की मन्जिल कय्यी है (कुरआने पाक लिफ़्ज़ कर के लुला देना गुनाह है लिहाजा जो कोई थोडा सा भी भूल जाअे वोह बिला इजाजते शर-ई किसी और को न बताअे क्यूंके गुनाह का इजहार भी गुनाह है) ❖ वोह लिफ़्ज़ कर



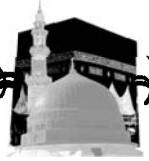
इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (ह्र्र्र)

के भूल गया है ❀ तरावीह पढाते हुअे ँस को कुछ जियादा ही मु-तशा-बहात¹ लग जाते हैं ❀ ँस हाकिम को तरावीह में “लुकमे” बहुत देने पडते हैं ❀ वोह तो ખाली नाम का हाकिम है ❀ सारा साल कुरआने पाक ખोल कर नहीं देખता ँस लिये मन्जिल कय्यी हो जाती है, बस र-मजानुल मुबारक में वोह भी मुसल्ला सुनाने और पैसे कमाने के लिये दौर करता है ❀ अगर कोई गरीब कुरआन प्वानी की दा'वत दे तो हमारे हाकिम जो के पास मसइकियत का उर्र मौजूद होता है हां कोई मालदार ખत्म शरीफ़ पर बुलाअे तो वहां आगे आगे नजर आते हैं ❀ वोह हाकिम जो बहुत शररती हैं कहीं ँस लिये तो नहीं जैसा के अवाभी मुहा-वरा है के हाकिम की अक रग जियादा होती है (याद रहे ! येह मुहा-वरा बिल्कुल गलत है) ❀ हाकिमे कुरआन हो कर तूट बोलता है.

“अ कसरत गीबत करने वाले की दुआ कबूल नहीं होती” के योंतीस हुइइ की निरबत से सइरे हज के बारे में की जाने वाली 34 गीबतें

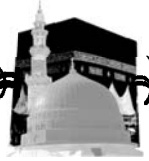
❀ इलां ट्रेवल अेजन्सी वाले ने मुझे धोका दिया ❀ कारवां वाले ने कहा था के रिहाईश हरम शरीफ़ के करीब होगी पर यहां आ कर मा'लूम हुआ के सिर्फ़ बहलावा था ❀ ँस ने जिन सडूलतों के वा'दे किये थे वोह कहां हैं ? ❀ वतन में तो “जो जनाब” से बात करता रहा और जब वहां पछोंये तो कारवां वाले ने पूछा तक नहीं ❀ वोह कारवां वाला तो बस जो अल्लाह के मेहमानों को लूटता है ❀ येह मौलवी जो हर साल हज पर जाता है पूछो तो सही ँतनी रकम कहां से लाता है ? ❀ अरे भई, तुम को क्या ખबर ! ँस की पार्टियों से बडी तरकीब है उन्हीं से हज के अप्पराजत निकलवाता होगा ❀ इलां जो हर बरस हज करता है ना, वोह दर अस्ल “कैरा” लगाता है, ખर्य भी निकाल लेता है और बयत भी हो जाती है ❀ वोह हाजो तो हज के मसाईल से बिल्कुल ही कोरा है ❀ अरे उस को देਖो ! अेहराम कितना गलत बांधा है ❀ उस को अेहराम दुरुस्त बांधना नहीं आता ❀ मैं ने मन्अ

1. मु-तशाबह की जम्अ. मु-तशाबह लगना या'नी मिलती जुलती आयत होने की वजह से हाकिम साहिब का कहीं का कहीं पढ जाना.



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुबरे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुअरुफ़)

किया फिर भी वोह तवाफ़ में धर उधर देખता था ✽ उस ने सअ्य के सात डैरों का तरीका ही नहीं समजा 14 डैरे लगा डाले फिर थकन से हांप रहा था ✽ उस ने मक्के शरीफ़ में अपने हज की अेक ग-लती बता कर मुज से मस्अला पूछा, मैं ने कहा, आप पर दम वाजिब हो गया तो जोर से हंस कर कहने लगा, अल्हाड मुआफ़ करेगा ✽ वोह यूं तो सिद्धत मन्द है मगर भीड की वजह से डर कर अेक दिन भी रभिये ज-मरात (या'नी शैतान को कंकरियां मारने) के लिये नहीं गया, किसी और को कंकरियां मारने का वकील कर दिया, मैं ने इस से दम वाजिब होने न होने की सूरतें बयान कीं मगर उस ने सुनी अन सुनी कर दी क्यूंके उस पर दम वाजिब हो रहा था ✽ मैं ने आंभों से देखा उस ने हज की कुरबानी में दूम्बे का बहुत छोटा बय्या जब्ड किया, मैं ने जब शर-ध मस्अला बता कर कहा के आप की येह कुरबानी दुरुस्त नहीं दूसरी करनी होगी येह सुनते ही वोह आग बगोला हो गया ✽ वोह हाज साहिब जो हाथ युमवा रहे हैं बिल्कुल ही ज़ाहिल हैं, धन को हज का मस्अला अेक भी नहीं आता ✽ वोह हाज साहिब पक्के रियाकार हैं, देभो घर कैसा सजाया हुवा है और हज मुबारक का बोर्ड भी यढा रखा है (हाज का आते जाते अखी अखी निय्यतों के साथ घर सजाना हज मुबारक का बोर्ड लगाना ज़रूज है) ✽ वोह हाज बहुत बडा रियाकार है अेक अेक को पकड कर कह रहा था के मेरा येह बारहवां हज है (अखी अखी निय्यतों के साथ बल्के वैसे ही कोध अपने हज की ता'दाद बताअे उस को दरगिज गुनहगार नहीं कहा जा सकता, बिवा दलील उस को रियाकार कहने वाला तोहमत के और अगर दलील हो तो गीबत के गुनाह में गिरिफ़्तार व अज़ाबे नार का हकदार है) ✽ वोह मस्जिदैने करीमैन में टिक कर कहां बैठता था ✽ बस बाजारों में धूमता रहता था ✽ उस हाज ने ખૂब शोपिंग की है अब जद्दा शरीफ़ के मतार पर वज़्न के लिये जगडे करेगा और ✽ वतन के कस्टम ओफ़ीसर को रिश्वत दे कर बाहर निकलेगा ✽ वतन में ना'ते सुन कर बहुत रोता था मगर अब मदीना शरीफ़ पहाँय कर इस की आंभों के कूंअें ही ખुश्क हो गअे हैं ✽ हमारे काइले का वोह हाज जब देभो सोया



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (महारज़ान)

रहता है ❁ न उम्रे करता है ❁ न ही नफ़ली तवाफ़ ❁ मैं जब भी यलने को कहता हूँ बीमारी का ज़हाना कर देता है ❁ हां जाने के वक़्त सहीह हो जाता है और सब से पहले थोड़ी मार कर दस्तर ज़वान पर बैठ जाता है ❁ इस मोटे हाथ को देखो रमल करते हुए कैसा लग रहा है ❁ वोह शुर्ती (या'नी पोलीस वाला) जो सामने खड़ा है उस ने कल मुझे ज़वाह म ज़वाह ज़ाड दिया था ❁ वोह दोनों हाथ जब देखो हरम शरीफ़ के बाहर बैठ कर बातें करते रहते हैं, यहां आ कर इन को खूब धबादत करनी चाहिये, अल्हाड ۞ इन को खिदायत दे ❁ मैं ने तो कहा था मगर इस ने हज़ की किताब नहीं पढ़ी अब सब को मस्अले पूछता फिरता है ❁ कुलां हाथ कैसा बढ नसीब है, उस ने सुस्ती की वजह से मस्जिदे न-अवी में 40 नमाज़ें अदा नहीं कीं.

“सुनो ! अक युप सो सुभ” के तेरह हुरइ की निरबत से हज से लौटने वाले से कुज़ूल सुवालात की 13 मिसालें

येह 13 कुज़ूल सुवालात अगर्ये ना ज़र्रज नहीं ताहम पूछने से पहले इन की मस्लहत पर गौर कर लीजिये, अगर हाज़त न हो तो न पूछिये क्यूंके इन में बा'ज सुवालात हाथ को शरमिन्दा करने वाले, बा'ज तरदुद में डालने वाले और बा'ज के ज़वाबात में अगर अहतियात न की गई तो जूट के गुनाह में इंसाने वाले हैं. लिहाज़ा “अक युप हज़ार सुभ” ❁ सइर में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ? ❁ भीड तो बहुत होगी ! ❁ महंगाई तो नहीं थी ? ❁ मकान सहीह मिला या नहीं ? ❁ घर हरम से दूर था या करीब ? ❁ यहां मौसिम कैसा था ? ❁ ज़ियादा गरमी तो नहीं थी ? ❁ रोज़ाना कितने तवाफ़ करते थे ? ❁ कितने उम्रे किये ? ❁ मक्के में मेरे लिये खूब दुआओं मांगी या नहीं ? ❁ मिना में आप का ज़ैमा ज-मरात से करीब था या दूर ? ❁ मदीने में कितने दिन मिले ? ❁ मदीने में मेरा नाम ले कर सलाम कहा या नहीं ?



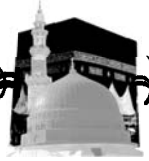
ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરુંગા. (ક્રમીન)

“ગીબત કર કે નેક્રિયાં બરબાદ ન કરે” કે પચ્ચીસ હુરુફ કી નિસ્બત સે ના’ત ખ્વાન કે બારે મેં ગીબત કે અલ્ફાઝ કી 25 મિસાલેં

❖ મીરાસી હૈ ❖ ઈસ કો ના’ત પઢને કા ઢંગ નહીં આતા ❖ ઈસ કી આવાઝ બસ એસી હી હૈ ❖ ઈસ કી આવાઝ બે સુરી હૈ ❖ ફટે હુએ ઢોલ જૈસી આવાઝ હૈ ❖ દૂસરે ના’ત ખ્વાનોં કી તર્જે ચુરાતા હૈ ❖ દૂસરોં કે શે’ર ચુરા કર ખુદ શાઈર બન બૈઠા હૈ ❖ પૈસોં કે લિયે ના’ત પઢતા હૈ ❖ યેહ તો પ્રોફેશનલ ના’ત ખ્વાન હૈ ❖ સિર્ફ બડી પાર્ટિયોં કી મહફિલોં મેં જાતા હૈ ❖ ઈસ મેં ઈખ્લાસ નહીં હૈ ❖ ઝિયાદા લોગ હોં યા ❖ ઈકો સાઉન્ડ હો જભી પઢતા હૈ ❖ જબ આતા હૈ માઈક નહીં છોડતા ❖ દૂસરોં કી બારી હી નહીં આને દેતા ❖ જાન બૂઝ કર રોને જૈસી આવાઝ નિકાલતા હૈ ❖ આહા ! બડા મહંગા સૂટ પહન રખા હૈ ઝરૂર ના’ત ખ્વાની કરવાને વાલોં ને લે કર દિયા હોગા ❖ ઈસ કી અદાએં દેખો ! લગતા હૈ ગાના ગા રહા હૈ ❖ ઈસ કી આંખેં નીંદ સે ભરી પડી હૈં ફિર ભી પૈસોં કે લાલચ મેં ના’ત પઢને આ ગયા હૈ ❖ જિસ શે’ર પર નોટૈં આના શુરૂઅ હો જાએં બાર બાર ઉસી શે’ર કો પઢતા રહતા હૈ ❖ બસ કિસી જગહ મહફિલ કા પતા ચલ જાએ, યેહ વહાં પૈસોં કે લાલચ મેં બિન બુલાએ ભી પહોંચ જાતા હૈ ❖ રાત ગએ તક ના’તેં પઢતા હૈ, ફજ મસ્જિદ મેં જમાઅત સે નહીં પઢતા ❖ અબ ઈસ કે પાસ ટાઈમ કહાં હોગા ઈસ કે તો સીઝન કે દિન હૈં, બડે નોટ દિખાઓ તો આએગા ❖ પિછલી બાર શાયદ પૈસે કમ મિલે થે તભી ઈસ બાર નહીં આયા ❖ અપના કેસિટ નિકલવાને કે લિયે કમ્પની વાલોં કી બડી ચાપલૂસી કરતા હૈ.

“ગીબત સે હમ કો બચા, યા ઈલાહી” કે ઉન્નીસ હુરુફ કી નિસ્બત સે ના’ત ખ્વાની/જલ્સે યા ઇજતિમાઅ મેં હોને વાલી ગીબત કી 19 મિસાલેં

❖ યેહ મુબલ્લિગ (યા મૌલાના યા ના’ત ખ્વાન) કહાં ખડા હો ગયા અબ તો યેહ માઈક નહીં છોડેગા ❖ ઉસ કી આવાઝ અચ્છી હૈ ઈસ લિયે કિરાઅત સુન કર લોગ દાદ દેતે હૈં વૈસે તજવીદ કી કાફી ગ-લતિયાં કરતા હૈ ❖ ઈસ કે તલફ્ફુઝ ગલત હોતે હૈં ❖ ઈસ કો તકરીર કરની ❖ યા ના’ત પઢની હી કહાં આતી હૈ ❖ ચલો !



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابوعلى)

यलो ! अब येह लम्बी करेगा ❀ नोटें यलती हैं तो इस की आवाज पुल जाती है ❀ हमारे शहर में आने के लिये तो इस ने उवाँ जहाज का रीटर्न टिकट मांगा था ❀ इस ना'त प्वान का मिजाज तो आस्मान पर रहता है ❀ इस को तो बस अक ही तर्ज आती है ❀ येह तो दूसरे ना'त प्वानों की तर्जें युराता है ❀ इस ने बयान की तय्यारी नहीं की एधर उधर की बातें कर के वक्त गुजार रहा है ❀ आयतें तो पढता नहीं बस किस्से कलानियां सुनाता है ❀ उस मुकर्रर की आवाज अखी है मगर उस की तकरीर में पास मवाद नहीं होता ❀ जिताब बडा जोशीला था मगर दलाँल में दम नहीं था ❀ हमारे ખतीब साहिब अपने बयान में सुन्नत अक नहीं बताते बस लठ ले कर बढ मज्जुबों के पीछे पडे रहते हैं ❀ आज ખतीब साहिब के बयान में मजा नहीं आया ❀ वोह मौलाना साहिब जस्से में देर से आने के आदी हैं ❀ हुलां की तकरीर में बस जोश ही जोश होता है अपने पल्ले कुछ ली नहीं पडता.

ला उबाली नौ जवान : गीबत करने सुनने की आदत निजालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत उालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से डर दम वाबस्ता रहिये, अपनी जिन्दगी "म-दनी इन्आमात" के सांये में ढालिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काङ्किलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों लरा सङ्गर कीजिये, और इङ्तावार सुन्नतों लरे इजतिमाअ में अव्वल ता आखिर शिर्कत कीजिये. सुन्नतों लरे इजतिमाअ की ब-र-कत का अन्दाजा इस म-दनी बहार से लगाएये जैसा के मुलतान रोड (मर्कजुल औलिया लाहोर) के अक इस्लामी लाई ने कुछ इस तरह की तहरीर लेज्ज के मैं ला उबाली और शौष तबीअत का मालिक था, अपनी मस्ती में मस्त, दुन्या की महब्बत के नशे में धुत, गुनाहों और गङ्गतों की वादियों में गुम था. टिङ्गन बज्ज कर बख्यों वाले गीत गाने और कव्वालों की नकलें उतारने के मुआ-मले में पानदान लर में मशहूर था. शाही व दीगर तकरीबात में मुजाहिया युटकुले और इ्लमी गजलें सुनाना, गाने गाना, बे ढंगे अन्दाज में नाय दिपाना और तरह तरह के नपूरों से लोगों को हंसाना मेरा महबूब मशगला था, स्कूल का जमाना था, अक बा इमामा इस्लामी लाई अक्सर बडे लाईजान से मिलने

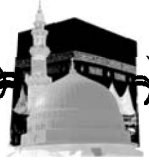


इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पहुँचता है. (ग़ुरान)

आया करते थे. अक दिन भाईजान ने मेरा तआरुफ़ करवाया तो उन्हीं ने मुझे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ की दा'वत पेश की. मैं उन की दा'वत पर जुमा'रात को सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में जा पहुँचा, मुझे बहुत अख़्श लगा. यूँ मैं ने पाबन्दी से ज़ाना शुरुअ कर दिया और दीगर क्लास इेलोज़ को भी दा'वत पेश की जिस पर वोह भी आने लगे. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरुअ कर दी. आहिस्ता आहिस्ता ईमामा शरीफ़ भी सज़ गया, जिस पर घर के बा'ज अफ़राद ने सप्तती के साथ मुभा-लइत की हत्ता के बसा अवकात مَدَامُ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ईमामा शरीफ़ भींच कर उतार दिया जाता. दर्स देने से रोका जाता, सुह्रें रभीं तो घर वालों ने ज़बर दस्ती कटवा दीं, दाढी अभी निकली नहीं थी मगर सज़ाने की निख्यत कर ली थी. इन तमाम आजमाईशों के बा वुजूद म-दनी माडोल की कशिश और आशिकाने रसूल का हुस्ने सुलूक मुझे दा'वते ईस्लामी के करीब से करीब तर करता यला गया. मक-त-बतुल मदीना से ज़री डोने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनने से ढारस बंधी और डौसला मिलता यला गया. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता घर में भी म-दनी माडोल बन गया. वोह घर वाले जो सुन्नतों भरे ईजतिमाअ और म-दनी काइले में सफ़र की ईजज़त नहीं देते थे उन्हीं ने मुझे यकमुश्त बारह माह सफ़र की ईजज़त दे दी. घर में ईस्लामी बहनों का ईजतिमाअ शुरुअ हो गया. वालिद साहिब ने दाढी सज़ ली. येह बयान देते वक्त الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी की अक "मजलिस" की तन्जीमी तौर पर सूबाई सत्ह पर जिम्मादारी मिली हुई है.

गर्ये इनकार हो, काइले में यलो गो गुलूकार हो, काइले में यलो
पुहद दरकार हो, काइले में यलो इज़ले गफ़र हो, काइले में यलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جیس نے मुज पर दस मरतबा दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाजिल फरमाता है. (طبرانی)

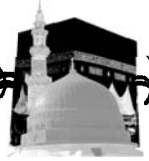
गुनाह की दस नुहूसतें : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! दा'वते ईस्लामी का म-दनी माहोल किस कदर ईन्किलाबी है, इस के सुन्नतों तरे ईजतिमाआत में शिर्कत की सआदत और म-दनी काफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बसा अवकात बडे से बडा बिगडा हुवा शप्स ली राहे रास्त पर आ जाता, गुनाहों से पीछा छुडाता, सुन्नतें अपनाता और आ'माल नामे में भूब नेकियां बढाता है. वाकेई गुनाह छोड डी देने याहिअें, ખુદા કી કસમ ! गुनाह व मा'सियत में नुहूसत डी नुहूसत है, दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “आंसूओं का दरिया” सफ़हा 48 ता 49 पर है : अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर बिन अत्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फरमाया के तुम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के इस फरमान से हरगिज धोके में न पडना :

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرٌ तर-ज-मअे क-जुल ईमान : जो अेक नेकी लाअे तो उस के लिये उस जैसी दस हें और जो बुराई लाअे तो उसे बढला न मिलेगा मगर उस के बराबर.

أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا (پ ۱۸۱ الانعام: ۱۶۰)

क्यूंके गुनाह अगर्गे अेक डी डो अपने साथ दस बुरी ખस्लतें ले कर आता है :

- 1) बन्दा गुनाह कर के अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को गजब दिलाता है और वोह एउसे पूरा करने पर कुदरत रખता है
- 2) वोह (या'नी गुनाह करने वाला) ईवलीसे मलउिन को ખुश करता है
- 3) जन्नत से दूर डो जाता है
- 4) जहन्नम के करीब आ जाता है
- 5) वोह अपनी सभ से प्यारी थीज या'नी अपनी जान को तकलीफ़ देता है
- 6) वोह अपने बातिन को नापाक कर बैकता है डालां के वोह पाक डोता है
- 7) आ'माल लिखने वाले ફिरिशतों या'नी किरामन कातिबीन को ईजा देता है
- 8) वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रौजअे मुबा-रका में रन्जुदा कर देता है
- 9) जमीन व आस्मान और तमाम मख्लूक को अपनी ना फरमानी पर गवाह बना लेता है
- 10) वोह तमाम ईन्सानों से ખियानत और रब्बुल आ-लमीन عَزَّ وَجَلَّ की ना फरमानी करता है.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (अहमद)

“गीबतें करने वाले क्रियामत में कुत्ते की शकल में उठेंगे” के यावीस दुर्रद की निरुबत से ना’त प्वानों के माजैन होने वाली गीबतों की 40 मिसालें

“ना’त प्वानी” निहायत उम्हा इबादत है, सुरीली आवाज बेशक रब्बुल इज़्ज़त وَعَزَّوَجَلَّ की इनायत है मगर इस में इम्तिहान बहुत सप्त है, जिसे इप्लास मिल गया वोही काम्याब है. आ’ज ना’त प्वान مَا تَكَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ مِنْكُمْ अजर दस्त आशिके रसूल छोते हैं जो के बिगैर किसी दून्यवी लालच के आंभें बन्द क्रिये इशके रसूल में डूब कर ना’त शरीफ़ पढते हैं और सामिधन के दिलों को तडपा कर रभ देते हैं जब के आ’ज वा उबाली यन्थल और इन्तिहाइ गैर सन्जुदा छोते हैं, इस तरह के ना’त प्वानों में जिन बद् नसीबों का दिल पौड़े फुदा وَعَزَّوَجَلَّ से ખाली होता है, वोह पीछे से अेक दूसरे पर ज़ुत्तर कर तन्कीदें करते, पूब पूब गीबतें करते, आवाजों की नकलें उतार कर ठीकठाक मजाक उडाते और उीपर से जोरदार कड़कहे लगाते हैं. अद्लालु रइमान وَعَزَّوَجَلَّ इकीकी म-दनी ना’त प्वान इजरते सय्यिदुना इस्सान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके उन्हें भी इशके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में रोने रुलाने वाला मुप्लिस ना’त प्वान बनाअे. اَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ. अैसे ना’त प्वानों की इस्लाह के जजबे के तहत इन के दरमियान होने वाली मु-तवक्कअ गीबतों की 40 मिसालें अर्ज करता हूं :

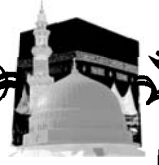
- ❖ पता नहीं येह मौलवी माईक पर कहां से आ गया के इतनी लम्बी तकरीर शुर्अ कर दी है !
- ❖ लोग उकता कर उठ उठ कर ज़ा रहे हैं मगर येह है के माईक ही नहीं छोडता
- ❖ भानिये मइज़िल ने लाईट का इन्तिजाम ठीक नहीं करवाया
- ❖ मन्थ (स्टेज) पर डेकोरेशन कम थी
- ❖ इस ने ना’त प्वानों को गरमी में मार दिया अेक पेड स्टिल फ़ेन ही रभ दिया होता
- ❖ यार ! येह साउन्ड वाला भी बिदकुल बेकार साउन्ड लाया है
- ❖ कोर्डलेस (Cordless) माईक की तरकीब भी ठीक नहीं थी
- ❖ उस ना’त प्वान ने सारा वक्त ले लिया इमारी बारी ही नहीं आने दी मुजे तापीर से मौकअ दिया
- ❖ मुजे कम वक्त दिया
- ❖ यार ! येह ना’त प्वान माईक पर नहीं आना चाहिये था, इस ने रुलाने वाली ना’त पढ कर मइज़िल का रुभ ही बढल डाला, लोग तो जुमाने वाली तर्ज पर नोटें लुटाया करते हैं !
- ❖ यार ! इस ना’त प्वान ने नया



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदुहे पाक न पढे. (१७)

कलाम सुना कर बडी यालाकी से जेबे जाली करवा ली हें हमारे लिये कुछ नहीं बया !

❁ अरे ! इस को माईक कहां दे दिया ! अेक तो आवाज बे सुरी है और ठीपर से लम्बी करता है लोग उठ जाते हें, हम किस के सामने ना'त पढेंगे ? ❁ आ'ला हजरत का कलाम पढना नहीं आता ❁ पुरानी तर्ज में पढता है ❁ पुरसोज तर्जे ठीक से नहीं पढ पाता ❁ इस को जुमाने वाले कलाम पढने नहीं आते ❁ अ-रबी कलाम नहीं पढ पाता ❁ येह ना'त प्वान तर्जे बिगाड कर पढता है ❁ हुलां ना'त प्वान जहां माल जियादा हो वहीं जाता और वहां के हिसाब से कलाम पढता है ❁ वोह जब ना'त पढता है तो उस का मुंह कैसा बन जाता है ! ❁ अरे उस के ना'त पढने का अन्दाज देखा है अैसा टेढा मुंह कर के गला झड कर सुर बनाता है के हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है ❁ बानिये महझिल बडा कन्जूस है, जेब में हाथ ही नहीं डालता था ❁ हुलां की आवाज जरा अख्ठी है तो मगइर हो गया है ❁ वोह तो भई बहुत बडा ना'त प्वान है, हम जैसे छोटे ना'त प्वानों को तो लिफ्ट भी नहीं करवाता ❁ मन्य (स्टेज) पर मालदारों को बिठा रखा था ❁ इस के नपरे बहुत हो गअे हें ❁ तर्ज कलाम के मुताबिक नहीं थी ❁ ठीको साउन्ड पर इस का गला जियादा काम करता है ❁ इस को नजराने मिलने पर कैसा जोश यढता है ❁ जियादा लोगों में जियादा खुलता है ❁ हुलां ना'त प्वान यूंके झरिग है, इस लिये नई नई तर्जे बनाता रहता है ❁ भई ! वोह तो जैसे बहुत बडा ना'त प्वान हो महझिल में अपनी बारी के वक्त ही आता और कलाम पढ कर यला जाता है ❁ इस और उस ना'त प्वान की जोडी है येह दानों किसी को घास नहीं डालते ❁ बार बार अेक ही कलाम पढता है ❁ हुलां ना'त प्वान की नक्काली करता है ❁ न जाने किस शाईर का कलाम उठा लाया था ❁ बानिये महझिल ने सना प्वानों की कोई बिदमत ही नहीं की ❁ बानिये महझिल ने मुजे टेकसी का किराया तक नहीं दिया, बहुत कन्जूस निकला ❁ गला झड झड कर जाना सारा हजूम हो गया, आ'द को मा'लूम हुवा के बानिये महझिल ने सना प्वानों के लिये जाने का कोई इन्तिजाम ही नहीं किया था ❁ कल जिस के यहां महझिल थी वोह बडा दिलेर था, क्वर जोला तो 1200 रुपै थे ! मगर आज वाला बानिये महझिल कन्जूस है 100 रुपल्ली थमा दी !



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ ह्योगे. (अल-अहज़ल)

“गीबत नुकसान देह है” के तेरह हुरइ की निस्बत से एको साउन्ड वालों और केमेरा मेन के मु-तअल्लिक गीबतों की 13 मिसालें

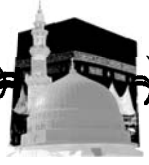
✽ इस का एको साउन्ड पुराना है ✽ आवाज़ की मिर्किंसग ठीक तरह नहीं करता ✽ एको कम ખोलता है ✽ ठीक तरह यलाना नहीं आता ✽ आवाज़ के उतार यढाव के साथ साउन्ड की आवाज़ कम या ज़ियादा नहीं करता ✽ बय्ये को त्मेज दिया और ખुद कहीं और यला गया ✽ पेउल पे काम यला दिया मिक्सर જાન બૂઝ कर नहीं लाया ✽ स्पीकर छोटे और पुराने हैं ✽ स्टेन्ड जंग आलूद थे ✽ ना'त ज्वां को मज़ा नहीं आया ✽ मूवी वाला જાન बूज़ कर देर से आया था ✽ अय्य़ा केमेरा नहीं लाया ✽ एसे तो केमेरा पकडना ठीक तरह नहीं आता, मूवी ખाक बनायेगा !

“गीबत न करें” के दस हुरइ की निस्बत से मुबल्लिगीन व मुकर्रिरीन के मु-तअल्लिक गीबतों की 10 मिसालें

✽ बयान के लिये वक्त देते वक्त नपरे बहुत करता है ✽ ज्वाह म ज्वाह अपनी वेत्यू बढाता है ✽ हुलां मौलाना बहुत पैसे लेता है एस लिये हमारी पछोंय से बाहर है ✽ बिगैर रकम लिये ખिताब ही नहीं करता, सुवारी का मुता-लबा अलग करता है ✽ बयान की तय्यारी कर के नहीं आता ✽ रिसाला पढ के सुना दिया ✽ बयान में अपने औसाफ़ ज़रूर बतायेगा ✽ निगरान की एज्जत के बिगैर बयान करने यला જાता है ✽ निगरान को तो कुछ समज़ता ही नहीं ✽ बनावटी सोज़ और रिक्कत पैदा करता है.

“सुन लो ! गीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जायेगा” के सैंतीस हुरइ की निस्बत से एमाम व ખतीब के बारे में की जाने वाली मु-तवक्कअ गीबतों की 37 मिसालें

✽ एमाम साहब की शकल अय्य़ी नहीं है ✽ क्या तुम्हें कोई दूसरा एमाम नहीं मिला था जो एसे उठा लाये ! ✽ एमाम साहब मोडर्न जेह्न के हैं सादा लिबास



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : मुन्न पर दुर्रद शरीफ़ पढो अव्वलाह उरुम तुम पर ररुमत भेजेगा. (अन सदी)

नहीं पहनते ❀ ईमाम साहिब के बाल बड़े अज्जब लगते हैं ❀ सर के बालों और दाढ़ी में तेल तक नहीं लगाते ❀ ईमाम साहिब को ढंग से ईमामा बांधना भी नहीं आता ❀ अक्सर नमाज़ में टाईम पर नहीं पहुँचते ❀ आप टाईम पर आते हैं आप से पहले वाले झुलां ईमाम साहिब शायद ही किसी नमाज़ में टाईम पर पहुँचें हों ❀ तकबीर कहते वक्त ईमाम साहिब ठीक तरह से हाथ सीधे नहीं करते ❀ तकबीर कहने के बाद हाथ नीचे लटका कर फिर बांधते हैं, सुन्नत के मुताबिक हाथ बांधना भी नहीं आता ❀ ईमाम साहिब की किराअत मज्ददार नहीं ❀ इज्ज में बहुत लम्बी किराअत कर जाते हैं ❀ किराअत में अक्सर भूल जाते हैं ❀ उस दिन उलटी तरतीब से सूरतें पढ़ावलीं, इन का हाज़िज़ा कमज़ोर है ❀ इन की आवाज़ में गूँज नहीं है ❀ ईमाम साहिब नमाज़ पढाते वक्त सर उंचा रखते हैं ऐसा लगता है जैसे याद को देख रहे हों ❀ नमाज़ पढते वक्त आंखें घुमा कर उधर उधर देखते हैं ❀ दौराने कियाम नज़र सज्दे की जगह पर नहीं रखते ❀ रुकूअ में जाते वक्त ठीक तरह जुकते नहीं ❀ ईमाम साहिब को पता नहीं क्या जवानी यढ़ी है बहुत जल्द नमाज़ खत्म कर देते हैं ❀ ईमाम साहिब नमाज़ पढा कर हुज़रे में जा बैठते हैं नमाज़ियों से मिलने के लिये नहीं रुकते ❀ पता है आज इज्ज की नमाज़ मुअज़्ज़िन ने पढाई, नमाज़ के बाद मैं हुज़रे में गया तो ईमाम साहिब सोए पड़े थे, मैं ने उठा दिया वरना शायद आज उन की इज्ज ही कज़ा हो जाती ❀ उन का जेहन्न म-दनी नहीं ❀ म-दनी कामों में बिल्कुल तआवुन नहीं करते ❀ आज ईमाम साहिब बिगैर ईमामे के घूम रहे थे येह कैसे दा'वते ईस्लामी वाले हैं ! ❀ ईजतिमाअ में हल्ले में नहीं आते ❀ म-दनी काफ़िले में कभी सफ़र नहीं किया ❀ अन्दाजे गुफ़्त-गू दा'वते ईस्लामी वाला नहीं ❀ नमाज़ियों के नाम तक याद नहीं रखते ❀ ईतने दुबले पतले हैं के मिम्बर पर बैठे हुअे बड़े अज्जब दिखते हैं ❀ बहुत मोटे ताजे हैं ❀ पेट निकला हुआ है ❀ पर्दे में पर्दा नहीं करते ❀ बहुत देर से बयान शुरुअ करते हैं ❀ अन्दाजे बयान अस ऐसा ही है ❀ जोशीला बयान नहीं करते ❀ बिजली चले जाने की वजह से स्पीकर बन्द हो तो इन का गला बैठ जाता है.



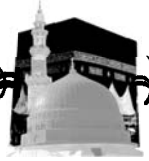
इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुर्रहे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रहे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (अहमद)

“उई अहले मस्जिद की गीबत ! !” के पन्टरह दुर्रुफ़ की निरबत से मस्जिद छन्तिआमिया के मु-तअल्लिक की जाने वाली गीबतों की 15 मिसालें

❁ येह तो बस नाम का सद्र है अस्ल हुक्म किसी और का यलता है ❁ ऐसा सद्र होगा तो मस्जिद का येही हाल होगा ❁ जुद तो यन्दा करता नहीं मुजे ही कलता रहता है ❁ एमाम को तो तन-ज्वाह पडले दे देता है मेरे (या'नी मुअज़्जिन के) साथ पता नहीं क्या दुश्मनी है ❁ अपनी बात साबित करने के लिये दलाएल देना शुरुअ कर देता है किसी और की सुनना तो गवारा ही नहीं करता ❁ एस का हिमाग अत्मी बयकाना है ❁ सोय समज कर बात नहीं करता बस जो मुंह में आया बोल देता है ❁ किसी की परेशानी का अहसास ही नहीं करता ❁ हूं ! 200 रुपै जैर ज्वाही के पकडा दिये एस से मेरा क्या बनेगा ❁ जादिम उस का दोस्त है ना ! एसि लिये उस से काम की पूछगछ नहीं करता मैं (मुअज़्जिन) अक बार गैर हाज़िर हो जाउं तो पकड लेता है ❁ जुद अपना घर एतने पैसों में यला के दिजाअे देजता हूं अक्ल ठिकाने आती है या नहीं ❁ एतने सालों से यहां हूं अक पल में बोल दिया के तुम यहां क्यूं पिस रहे हो कोई और काम कर लो ❁ बडा सद्र बना फिरता है इज्ज में तो आता नहीं ❁ किसी एमाम या ખतीब को टिकने नहीं देता ❁ एस मस्जिद का मु-तवल्ली बडा अडियल आदमी है.

“अबरदार ! गीबत करने वाला अजाबे कब्र में गिरिफ़तार होगा और उस को जहन्नम में मुद्दर ली जाना पडेगा” के अडसठ दुर्रुफ़ की निरबत से मज़्हबी तब्के में की जाने वाली गीबतों की 68 मिसालें

अद्लाह جلاله में शैताने अय्यार व मक्कार से हर हम पनाह में रहे, येह दीनदार तब्के को ली जूब जूब गीबतें करवाता और गुनाहों के गडरे गार में गिराता है, एस मरदूद ने मज़्हबी लोगों में गीबत के जैसे जैसे अद्व्ज़ा राईज कर दिये हें के येह अक्सर गीबत कर जाते हें और एन्हें कानों कान एस की अबर ली नहीं छोटी !



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर अक हुइइ शरीफ़ पढता है अव्लाह उरस के लिये अक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुइ पहाउ जितना है. (अज़)

ईस जिम्न में 68 मिसालें अर्ज करने की कोशिश करता हूं जिन का बिला ईजाजते शर-ई ईस्ति'माल या तो गीबत है या तोहमत या बद् गुमानी या युगली वगैरा.

❖ हुलां का जेह्न मज़्जबी नहीं है ❖ वोह शर-अ शरीअत में कहां समजता है

❖ हमारी मस्जिद के ईमाम की क्या बात करते हो वोह तो तन-ज्वाह दार मौलवी है

❖ हमारा मुअज़्जिन (या हुलां) पैसे वालों से तरकीबें बनाता रहता है ❖ वोह बे

अमल है ❖ दीनी मा'लूमात से कोरा है ❖ उस को नमाज भी नहीं आती ❖ ईस से

तो हुलां जियादा बा अमल है ❖ हुन्या को नसीहत करता है और घर वालों को छोड

रखा है जन्मी तो उस की बेटी या बहन या बीवी बे पर्दा घूमती है ❖ ईस से तो अख्छे

अख्छे पडे हें ❖ "मैं मैं" करता है ❖ अपने मुंह मियां मिहू बनता है ❖ अपनी

ता'रीफ़ सुनने का बडा शौक है ❖ अपने नाम की पडी है ❖ नाम के लिये करता है

❖ अपनी वाह वाह याहता है ❖ जुशामद् पसन्द है ❖ बहुत झैल गया है

❖ आगे आगे बैठने का बडा शौक है ❖ उस को मूवी में आने का बहुत जज्बा है

❖ युगुल पोर ❖ दो रुभा ❖ दोगला ❖ धोकेबाज ❖ वा'दा भिलाफ़ है ❖ उस ने

गीबत की ❖ तोहमत लगाई ❖ बद् गुमानी की ❖ जूट बोला ❖ गलत काम किया

❖ लोफ़र ❖ जूआरी ❖ शराबी ❖ नशई ❖ यरसी ❖ लंगडी ❖ हेरोईन्धी

❖ अफ़यूनी ❖ बद् यलन ❖ बद् मस्त सांड ❖ जानी ❖ ईग्लाम बाज है

❖ लडकियों को ताडता है ❖ ईस की जेह्नियत गन्दी है. मेरा बाप हलाल हराम

रोज़ी की परवाह नहीं करता ❖ बडा ल्माई बे नमाज़ी है ❖ बहन बे पर्दा है ❖ मेरे

वालिटैन आपस में लडते रहते हें ❖ घर में कोई ल्मी कुरआन नहीं पढा हुवा

❖ छोटा ल्माई इल्म डिरामे देभता है ❖ बातें तो बडी सूफ़ियाना करता है ❖ नमाज

अक नहीं पढता ❖ पार्टियों के आगे पीछे घूमता है ❖ कल तक तो ईस के पास याय

पीने के पैसे नहीं डोते थे आज ईस के पास महंगी गाडी न जाने कहां से आ गई !

❖ ऊइर मस्जिद (या मद्रसे) के यन्दे पर लाथ मारा डोगा ! ❖ मुफ़्त का माल प्पा प्पा कर

पेट बढा रखा है ❖ तकरीर में पडले अपने कसीदे पढेगा फिर मौजूअ पर आयेगा

❖ येह तो दूसरे मुक़र्रीन का वक्त ल्मी प्पा जाता है ❖ बडे जल्से (या ईजतिमाअ) में तो

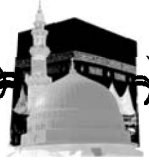


इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज़ पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़ार करते रहेंगे. (अः३)

भूष गरजता बरसता है, अपनी मस्जिद में इस की आवाज़ नहीं निकलती ❀ कोई इस के हाथ न यूमे तो नाराज़ हो जाता है ❀ इस को नज़राना न दिया या जाना अख़्ग़ा न भिलाया तो अगली मर्तबा नहीं आयेगा ❀ येह उन्ही का यार है जो इस की छां में छां भिलाते हैं, जो ज़रा इप्तिदाफ़ करे उसे जूती की नोक पर रखता है ❀ भुशामद पसन्द है ❀ यार तकरीरें रट रपी हैं जहां जाता येही बयान करता है ❀ भुद को बडा अद्लामा समज़ता है ❀ कुलां ली कोई आलिम है ! ❀ इस के मदरसे में वोही मुफ़्ती रह सकता है जो इस के मन पसन्द इतवे दे ❀ यार किताबें पढ ली हैं तो इस का हिमाग आस्मान पर यढ गया है ❀ जुमुआ जुमुआ आठ दिन नहीं हुअे तन्जीम में शामिल हुअे और हमें नसीहतें करना शुअ़अ कर दी हैं !

“गीबत में ऐसी भू छोती है के अगर समुन्दर में डाल दी जाये तो उसे ली बढबूदार कर देगी” के साठ दुइइ की निरबत से गीबत की मु-तइर्रक 60 मिसालें

❀ हुन्यादार ❀ नइस का बन्दा है ❀ बीवी पर जुल्म करता है ❀ कर्ज़ा दबा लिया है ❀ योर ❀ भाँन ❀ बढ दिया नत ❀ धपले बाज़ ❀ ले भागू ❀ पैसे पा गया है ❀ भुशक मिजाज ❀ सप्त हिल ❀ बे वइा ❀ इस का तो माले मुफ़्त हिले बे रहूम वाला हिसाब है ❀ अउसान इरामोश है ❀ इटीयर ❀ लगोडा ❀ आवला ❀ पगला ❀ धन यककर ❀ अकल का अन्धा है ❀ इस की अकल घास यरने गई है ❀ इस के हिमाग में लूसा लरा हुवा है ❀ शककी मिजाज ❀ वस्वसिया है ❀ ज्यूटी पूरी नहीं देता ❀ हराम का माल खाता है ❀ मग़र ❀ अकड ई है ❀ इस का हिमाग हर वक्त आस्मान पर रहता है ❀ लालयी ❀ हरीस ❀ बपील ❀ इस की तो लई ! यमडी जाये मगर दमडी न जाये ❀ कन्जूस मक़्पी यूस है ❀ किसी की यलने नहीं देता ❀ किसी को आगे नहीं आने देता ❀ अपनी लीडरी यमकाता है ❀ अपने नम्बर बनाता है ❀ यौधराहट जमा रपी है ❀ नपरे बाज़ ❀ “गले पडू” ❀ ढीट ❀ यलता पुर्ज़ा ❀ बिकाउ माल ❀ जिधर पैसा देयता



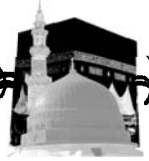
ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुज पर अेक बार हुइदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमते बेजता है. (म)

હે ઉધર લુઢક જાતા હૈ ❀ લાર્ડ સાહિબ ❀ યા નવાબ સાહિબ હૈ ❀ માલ સે મહબ્બત કરતા હૈ ❀ ગરીબોં કો ઘાસ ભી નહીં ડાલતા ❀ પેટ કા બન્દા હૈ ❀ મસ્કે બાઝ ❀ ચાપલૂસ ❀ બટર પાલિશ કરને વાલા ❀ ખુશા-મદી હૈ ❀ હર મુઆ-મલે મેં ટાંગ અડાતા હૈ ❀ બડા બે હયા હૈ, આજ ફિર નમાઝ મેં ઈસ કા મોબાઈલ બજ રહા થા ❀ ખુદ કો બડા અક્લ મન્દ સમઝતા હૈ ❀ પક્કા મત્લબી હૈ ❀ મફાદ પરસ્ત હૈ.

“યુપ રહો સલામત રહોગે” કે પન્દરહ હુરૂફ કી નિસ્બત સે વક્ફ કે અજુરોં કે મુ-તઅલ્લિક ગીબતોં કી 15 મિસાલેં

❀ લેટ આતા હૈ મગર પૈસે બયાને કે લિયે હાઝિરી બર વક્ત આને કી લગાતા હૈ ❀ ઈજારે કે વક્ત ઈધર ઉધર કી બાતોં મેં વક્ત ઝિયાદા ઝાએઅ કરતા હૈ ❀ ઉર્ફ કે ખિલાફ ઝાતી કામ કરને કે બા વુજૂદ ભી કટૌતી નહીં કરવાતા ❀ શો'બા ઝિમ્મેદાર કા ચહીતા હૈ તભી વોહ ઈસે કુછ નહીં કહતા ❀ મેરી તરક્કી કી રાહ મેં રુકાવટ હૈ ❀ મુઝે ઝિમ્માદારી મિલ જાની થી ઈસ ને નહીં મિલને દી ❀ યેહ કાબિલિયત મેં મુઝ સે બહુત કમ હૈ પર તન-પ્વાહ મેરે બરાબર કી લે રહા હૈ ❀ શો'બા ઝિમ્મેદાર બસ એવઈ હૈ ઈસે કાબિલિયત ઔર સલાહિયત કે મુતાબિક કામ લેના નહીં આતા ❀ ઈસે કામ ન દેના, લટકા દેગા ❀ ઈસે ઠીક સે પઢાના નહીં આતા ❀ કામ મેં ગ-લતિયાં બહુત કરતા હૈ ❀ હવાલે નિકાલને મેં બહુત દેર લગા દેતા હૈ ❀ રદી તરજમા કરતા હૈ ❀ કામ મુકમ્મલ કરને મેં બહુત દિન લગા દેતા હૈ ❀ થોડા સા કામ થા ઈતને દિન લગા દિયે.

બગલ મેં કેન્સર કે ગુદૂદ : ગીબત કરને સુનને કી આદત નિકાલને, નમાઝોં ઔર સુન્નતોં પર અમલ કી આદત ડાલને કે લિયે દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે હર દમ વાબસ્તા રહિયે, સુન્નતોં કી તરબિયત કે લિયે મ-દની કાફિલોં મેં આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં ભરા સફર કીજિયે, મ-દની ઈન્આમાત કે મુતાબિક અપની ઝિન્દગી કે શબો રોઝ ગુઝારિયે, આપ કી તરગીબ વ તહરીસ કે લિયે એક મ-દની



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

बहार गोश गुजार की जाती है, बाबुल मदीना करायी के अलाके नयाआबाद की अक
 इस्लामी बहन का कुछ यूं कलना है के मुजे बगल में गुदूह हो गये और डोक्टरों ने
 केन्सर करार दे दिया. येह सुन कर मेरे पैरों तले से जमीन निकल गई, बे बसी का
 आलम था मैं कर भी क्या सकती थी, रो धो कर युप हो रही, डालत दिन ब दिन
 बिगडती जा रही थी, यहां तक के तीन तीन दिन तक उल्टियां करती रहती थी, अक
 इस्लामी बहन ने इन्फिरादी कोशिश करते हुअे जूनागढ डॉल (नयाआबाद) में हर
 बुध को होने वाले तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक
 दा'वते इस्लामी के इफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ की दा'वत पेश की और दिलासा
 देते हुअे इरमाया : اِنَّ اِلٰهَآ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से आप की परेशानी दूर हो
 जायेगी. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस्लामी बहनों के इजतिमाअ में जब शिकत की तो इस की
 ब-र-कत से हैरत अंगेज तौर पर न सिर्फ़ बगल के गुदूह गाईब हो गये बल्के केन्सर
 का मरज भी जाता रहा. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अब मैं सिद्धत मन्ह हूं, और इस पर डोक्टरों
 भी हैरान हैं. वाह ! सुन्नतों भरे इजतिमाअ की क्या बात है के इस की ब-र-कत से
 मेरी केन्सर जैसी मोलविक बीमारी ખत्म हो गई है !

पउे आ के केंसी भी उफ़ताह¹ तुम पर न धबराना लेगा बया म-दनी माडोल

अै भीमारे इस्या² तू आ जा यहां पर गुनाहों की देगा दवा म-दनी माडोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

“या रब ! इल्म की ब-र-कतों से महरूम न कर” के छब्बीस हुर्रुफ़ की
 निस्बत से त-लभा में की जाने वाली गीबतों की 26 मिसालें

❁ इलां पढाई में कमजोर है ❁ इस के तलफ़ुज गलत होते हैं ❁ इस के
 मभारिज दुरुस्त नहीं ❁ इस का डाइजा कमजोर है ❁ ठोठ ❁ कुन्ह जेहन
 دینہ

1. या'नी आइत 2. गुनाहों का मरीज

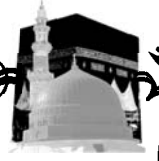


इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदह पाक न पढा तलकीक वोह बढे अप्त हो गया। (हंन)

✿ ज़ाहिल ✿ अनपढ है ✿ बात ज़रा देर से समज़ता है ✿ इस की अकल मोटी है ✿ गुल्ले मारता है ✿ नकलें मार कर ✿ रिश्वत दे कर ✿ सोर्स लगा कर ✿ इम्तिहान पास किया है ✿ मैं ने बहुत मेहनत से तय्यारी की थी, इलां मुन्तहिन (या'नी इम्तिहान लेने वाले) ने ना इन्साफ़ी की के इलां जो के पढाई में मुझ से कमज़ोर है उस को ज़ियादा नम्बर दे दिये ! ✿ मद्रसे की इन्तिज़ामिया का सदर या इलां रुकन जुशामद पसन्द (या ना इन्साफ़ या ज़ाहिल) है उस लउके का कुसूर ज़ियादा था मगर मेरा नाम खारिज कर दिया ✿ इस बेयारे को बे कुसूर निकाल दिया है हमारी इन्तिज़ामिया के इलां रुकन ने तो बिल्कुल अन्धी यला रपी है. ✿ नाज़िम बावर्ची को यीज़ें भी बराबर नहीं देता तो खाना कहां से अच्छा बनेगा ✿ नाज़िम साहिब को जब देओ अपने कमरे में बैठे रहते हैं, कभी हमारे कमरे में आ कर हमारी खस्ता हाली तो देभें ✿ इन्तिज़ामिया (या मजलिस) को खाली यन्दा जम्न करने से मत्वब है हम पर खर्च करने का कोई खयाल नहीं ! ✿ इतना बढे मज़ा खाना ! हमारा बावर्ची भी यूल्हे पर खाना रख कर सो जाता है ! अफ़सोस की बात तो येह है के नाज़िम भी इस को कुछ नहीं कहता ! ✿ सर परस्त साहिब ने यन्दे के माल से घर बना लिया, गाडी खरीद ली. मगर हमारे कमरे के पंखे तक ठीक करवा कर नहीं दिये ✿ मद्रसे (या ज़ामिया) में आने वाले बकरे इस तरह नाज़िमे आ'ला के घर पछोंया दिये जाते हैं के किसी को कानों कान खबर नहीं होती ✿ हमारे मुहाफ़िज़े कुतुब (या'नी लायब्रेरियन) के डिभाग में लगता है बस बरा हुआ है जिस किताब के बारे में पूछो इन्कार में सर हिला देते हैं ✿ इलां इतनी लम्बी छुट्टी कर के आया उस को तो द-रजे में बिठा लिया, मैं ने दो दिन छुट्टी की तो मद्रसे से नाम खारिज कर दिया, आखिर इन्साफ़ भी कोई यीज़ होती है !

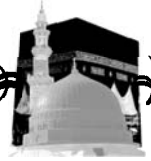
“उस्ताज़ तो इहानी बाप होता है” के बाईस दुइदह की निस्बत से असातिज़ा की गीबतों की 22 मिसालें

इल्मे दीन पढाने वाला उस्ताज़ इन्तिहाई काबिले ऐहतिराम होता है मगर बा'ज़ नादान त-लबा अपने असातिज़ा के नाम बिगाडते, मज़ाक उडाते हुअे नकलें



इरमाने मुस्तक़ा على الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज़ पर अेक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रइमतें बेजता है. (مسلم)

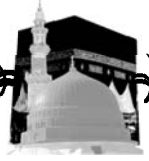
उतारते, तोहूमते लगाते, बढ गुमानियां और गीबते करते हैं, उन की इस्लाह की खातिर असातिजा की गीबतों की 22 मिसालें लाज़िर की हैं : ❀ आज उस्ताज़ साहिब का मूड ओड़ है लगता है घर से लड कर आये हैं ❀ येह इलां मद्रसे में पढाते थे ❀ वहां तन-ज्वाह कम थी, ज़ियादा तन-ज्वाह के लिये हमारे मद्रसे में तशरीफ़ लाये हैं ❀ तौबा ! तौबा ! हमारे उस्ताज़ (या कारी साहिब) बालिगात को ट्यूशन पढाने उन के घर जाते हैं ❀ उस्ताज़ साहिब पढाने में मुज़ गरीब पर कम मगर इलां मालदार के लडके पर ज़ियादा तवज्जोह देते हैं ❀ हमारे उस्ताज़ साहिब जब देजो मुजे जलील करते रहते हैं ❀ त-लबा पर बिला वजह सप्ती करते हैं ❀ पढाना आता नहीं, उस्ताज़ बन बैठे हैं ! ❀ देखा ! आज उस्ताज़ साहिब मेरे सुवाल पर कैसे इंसे ! ❀ उस्ताज़ साहिब को क़िताब के लाशिये से मु-तअद्लिक कोर्ष सुवाल पूछ लो तो आअें बाअें शाअें करने लगते हैं ❀ उस्ताज़ साहिब ने इस सुवाल का जवाब गलत दिया है, आओ में तुम्हें क़िताब दिखाता हूं ❀ उस्ताज़ साहिब को फ़ुद इबारत पढनी नहीं आती इस लिये हम से पढवाते हैं ❀ उस्ताज़ साहिब को तो ढंग से तरजमा करना भी नहीं आता ❀ उस्ताज़ साहिब सबक को ज्वाह म ज्वाह लम्बा कर देते हैं ❀ इलां उस्ताज़ से तो मैं मजबूरन पढ रहा हूं, मेरा बस यले तो इन से पीरियड (या सबक) ले कर किसी और को दे दूं या इनहें मद्रसे ही से निकाल दूं ❀ इलां उस्ताज़ तो “बाबाअे उर्दू शुइहात” हैं, उर्दू शर्ह से तय्यारी कर के आते हैं, जब तक उर्दू शर्ह न पढ लें सबक नहीं पढा सकते ❀ आज उस्ताज़ साहिब सबक तय्यार कर के नहीं आये थे इसी लिये उधर उधर की बातों में वक्त गुज़ार दिया ❀ जब येह जेरे ता'लीम थे तो पढाई में इतने कमज़ोर थे के रोज़ाना अपने उस्ताज़ से डांट खाते थे ❀ मैं हैरान हूं के इलां तालिबे इल्म की पोज़ीशन कैसे आ गई ! ज़रूर उस्ताज़ साहिब ने इस को परये के सुवालात बताअे होंगे ❀ इलां उस्ताज़ (या कारी साहिब) का जेहन म-दनी नहीं है उन्हों ने क़भी द-रजे में म-दनी कामों के बारे में अेक लफ़्ज़ नहीं बोला ❀ इलां इलां उस्ताज़ की आपस में बनती नहीं जब देजो अेक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें करते रहते हैं ❀ हमारे उस्ताज़ (या कारी साहिब) आज कल इलां अम्रद में बडी दिल यस्पी ले रहे हैं.



इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

“दा’वते ईस्लामी का म-दनी मकसद है, “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्लाह की कोशिश करनी है” के सदसठ हुर्रफ की निरभत से म-दनी माहोल में की जाने वाली गीबत की 67 मिसालें

मक्कअे मुकर्रमा व मदीनअे मुनव्वरह إِذْ أَذْهَبَ اللَّهُ شِرْقًا وَتَغَطَّيْنَا, मस्जिदैनै करीमैन, मिना, मुज्दलिफा और अ-रफात वगैरा वगैरा मुकदस मकामात पर भी शैतान गुनाह करवा देता है, न हज वालों को छोडता है न उम्रे वालों को, ईसी तरह दा’वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से मुन्सलिक ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहनें भी “गुनाह प्रूफ़” नहीं, एन को भी ईस तरह गीबतें करवाता है के एन्हें कानों कान ખબर तक नहीं डोती लिहाजा भास म-दनी माहोल में की जाने वाली गीबतों की 67 मिसालें पेश की जाती हैं ताके एन से और एन जैसे दीगर कलिमात व इकिरात से बयने की तरकीब की जा सके ❀ वोह म-दनी मर्कज की एताअत नहीं करता ❀ उस का तन्कीदी जेह्न है ❀ उस का अल्मी तक जेह्न नहीं बना ❀ वोह जिम्मादारान से उलजता रहता है ❀ वोह बात बात पर ऐ’तिराज करता है ❀ म-दनी काम बिद्कुल नहीं करता मगर आगे आगे आने का बहुत शौक है ❀ कल रुकने शूरा के सामने टाईट एमामा बांध कर आ गया था ❀ सारा दिन एमामा नहीं बांधता ❀ बहुत मिन्नतें की मगर वोह उस को तो एमामा बांधना भी नहीं आता हुलां से बंधवाता है ❀ वोह क्या दर्स देगा पहले दर्स सुनने तो बैठे ❀ वोह एजतिमाअ में देर से आने का आदी है ❀ उस ने तो आज तक म-दनी काइले में सइर ही नहीं किया ❀ लाभ समजाया मगर वोह म-दनी एन्आमात का रिसाला जम्अ नहीं करवाता ❀ वोह एशराक याशत के नवाइल नहीं पढता ❀ لِحَمْدِ اللَّهِ हमारे अलाके की मस्जिद में तहज्जुद बा जमाअत डोती है मगर हमारा जैली निगरान तआवुन नहीं करता ❀ उस का बयान तन्जीमी नहीं डोता ❀ उस का बयान तो मौलवियों वाला डोता है, ❀ वोह तो उर्दू नहीं पढा हुवा दर्स कहां से देगा ❀ वोह सदाअे मदीना क्या लगाअेगा पहले येह तो पूछो के इज में उठता भी है या नहीं ! ❀ हमारे निगरान ने अस अेक से जोडी बना रपी है और उसी की सुनता है ❀ वोह जभान (या आंभों या पेट) का कुइले मदीना नहीं लगाता ❀ वोह दीवाना नहीं



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रहे पाक न पढ़ा तलकीक वोह बढे अप्त हो गया. (हदीस)

सियाना है ❀ उस का म-दनी जेहून कहां है ❀ मेरा बाप या बडा भाई (या कुलां) दुन्यादार है ❀ मुझे इजतिमाअ में नहीं आने देता ❀ सुन्नतों भरे बयान की केसिटें भी नहीं सुनने देता ❀ इस को सुन्नतों का जजबा नहीं ❀ इस के बयान में कहां दम है ! ❀ इस से तो कुलां इस्लामी भाई अच्छा मुबल्लिग है ❀ इस के बयान में मजा नहीं आया ❀ बयान में लम्बी बहुत करता है ❀ अपने बयान पर खुद तो अमल करता नहीं है ❀ रियाकार है ❀ सब को दिभाने के लिये रोता है ❀ आंसू निकालने के लिये जोर जोर से आंभें बियता है ❀ दुआ (मुनाज्जत या ना'त) में ज्ञान बूझ कर रोने जैसी आवाज निकालता है ❀ ढोंग करता है ❀ डिरामा बाज है ❀ अकिंटग करता है ❀ लोगों के सामने ही इस को "वजह" आता है ! ❀ छुप छुप कर किल्में डिरामे देभता है ❀ गाने बाजे का शौकीन है ❀ अम्रदों से दोस्ती करता है ❀ इस को लोगों की लाईन लगवा कर मुलाकात करने का बडा शौक है ❀ हमारा निगरान हर दूसरे इजतिमाअ में खुद बयान करने जडा हो जाता है ❀ मुझे बयान नहीं देता के कहीं आगे न निकल जाउं ❀ निगरान ने बडी रात के "इजतिमाअे जिको ना'त" में बे सुरे ना'त प्वानों को बिठा दिया हम जैसे तजरिबा कारों को मन्य पर कदम तक नहीं रपने दिया ❀ हमारा निगरान अपनी शप्सियत बनाता है ❀ इस्लामी भाईयों को म-दनी मर्कज़ की महबूबत या इताअत का जेहून नहीं देता ❀ निगरान ने क्नेन्ड सर्कल बना रपा है, नअे इस्लामी भाईयों पर तवज्जोह नहीं देता ❀ किसी को आगे नहीं बढ़ने देता ❀ पुराने इस्लामी भाईयों को साईड पर कर रखा है ❀ कुलां ने निगरान की ग-वती निकाली तो निगरान ने तो इन्तिकामन बेयारे का पत्ता ही काट दिया ❀ आज दुआ करवाने वाला मुबल्लिग लगता है घडी देभना भूल गया था जभी इतनी लम्बी दुआ करवाई, हमारे तो हाथ थक गअे ❀ आज फिर अे'लानात करने वाले इस्लामी भाई ने जल्दी ज्ञान नहीं छोडी ❀ भाई ! सारे उसूल हमारे लिये हैं येह जो याहे करे ❀ हमारी शहर मुशा-वरत का निगरान मेरी सलाहियतों से भौइजदा है जभी तो मुझे इजतिमाअ में बयान का कत्मी मौकअ नहीं दिया ❀ इस की निगराने पाक से तरकीब है इस लिये बडी रात का बयान इसे मिला, मुझे पूछा तक नहीं ❀ जहां कोई नहीं जाता वहां बयान के लिये मुझे भेज देता है ❀ हमें कलता है के

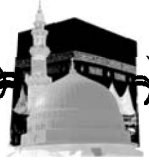


ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ੀ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (مهارات)

❖ ਪਿਠਲੀ ਭਾਰ ਪਕਾਨੇ ਵਾਲਾ ਈਸ ਕੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਮੇਂ ਗਨੀਮਤ ਥਾ ❖ ਢਾਠ ਨੇਕੀ ਕੀ ਢਾ'ਵਤ ਮੇਂ ਘਬਰਾਹਟ ਕੀ ਵਯਹ ਸੇ ਕੁਝ ਗ-ਲਤਿਆਂ ਕਰ ਗਯਾ ਥਾ ❖ ਵੋਹ ਦੁਕਾਨਦਾਰ ਭਠਾ ਸਪੁਤ ਢਿਲ ਹੈ ❖ ਢਮ ਨੇਕੀ ਕੀ ਢਾ'ਵਤ ਢੇਨੇ ਜਾਤੇ ਹੈਂ ਤੋ ਲਿਫ਼ਟ ਢੀ ਨਹੀਂ ਕਰਵਾਤਾ ❖ ਈਸ ਮਸ੍ਜਿਦ ਕੇ ਈਮਾਮ ਕਾ ਮੁੰਡ ਢਮ ਸੇ "ਝੂਲਾ" ਰਹਤਾ ਹੈ ਔਰ ❖ ਖ਼ਾਰਭਾਝੀ ਕੀ ਵਯਹ ਸੇ ਢਸੌ ਭਯਾਨ ਮੇਂ ਭੀ ਨਹੀਂ ਭੈਠਤਾ ❖ ਢਾਂ ਯਾਰ ! ਪਿਠਲੀ ਭਾਰ ਤੁਮ ਨਹੀਂ ਥੇ ਈਸ ਈਮਾਮ ਨੇ ਤੋ ਮੁਭਲਿਗ ਕੋ ਖ਼ਵਾਢ ਮ ਖ਼ਵਾਢ ਝਾਡ ਢਿਯਾ ਥਾ ❖ ਈਸ ਮਸ੍ਜਿਦ ਕਾ ਮੁ-ਤਵਲੀ ਭੀ ਭਸ ਔਸਾ ਢੀ ਹੈ ❖ ਮ-ਢਨੀ ਕਾਝਿਲਾ ਆਤਾ ਹੈ ਤੋ ਖ਼ੁਸ਼ ਨਹੀਂ ਢੋਤਾ ❖ ਭਨਤਿਆਂ ਪਾਂਘੇ ਯਲਾਔ ਤੋ ਕੁਡ ਕੁਡ ਕਰਤਾ ਹੈ ❖ ਢਰਿਆਂ ਰਖ਼ਨੇ ਭਿਠਾਨੇ ਔਰ ਢੀਗਰ ਮੁਆ-ਮਲਾਤ ਮੇਂ ਟੋਕਤਾ ਰਹਤਾ ਹੈ ਯੇਢ ਤੋ ਝੂਲਾਂ ਸੇ ਢਮਾਰੀ ਟਰਕੀਭ ਅਝਠੀ ਹੈ ਔਰ ਮੁ-ਤਵਲੀ ਓਸ ਕੇ ਰੋ'ਭ ਮੇਂ ਹੈ ❖ ਵਰਨਾ ਢਮੇਂ ਯਢਾਂ ਕਾਝਿਲਾ ਠਢਰਾਨੇ ਭੀ ਨ ਢੇਤਾ ❖ ਝੂਲਾਂ ਯੂੰ ਤੋ ਢਰ ਟੀਸ ਢਿਨ ਮੇਂ ਟੀਨ ਢਿਨ ਮ-ਢਨੀ ਕਾਝਿਲੇ ਮੇਂ ਸਝਰ ਕਰਤਾ ਹੈ ਮਗਰ ਭਾਕੀ ਢਿਨੌਂ ਮੇਂ ਢਾ'ਵਤੇ ਈਸਲਾਮੀ ਕਾ ਕੋਠ ਕਾਮ ਨਹੀਂ ਕਰਤਾ ਭਲਕੇ ❖ ਨਮਾਝ ਕੇ ਮੁਆ-ਮਲੇ ਮੇਂ ਭੀ ਕਮਝੋਰ ਹੈ ❖ ਢਰ ਅਸਲ ਈਸ ਕਾ ਸੇਠ ਢਾ'ਵਤੇ ਈਸਲਾਮੀ ਕਾ ਯਾਢਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ, ਵੋਢ ਈਸ ਕੋ ਮ-ਢਨੀ ਕਾਝਿਲੇ ਮੇਂ ਸਝਰ ਕੇ ਅਖ਼ਰਾਜ਼ਾਤ ਭੀ ਢੇਤਾ ਹੈ ਔਰ ਟਨ-ਖ਼ਵਾਢ ਭੀ ਨਹੀਂ ਕਾਟਤਾ ਤੋ ਭਾਠ ਭਸ ਮਾਲੇ ਮੁਝੁਤ ਢਿਲੇ ਭੇ ਰਝਮ ਵਾਲਾ ਮੁਆ-ਮਲਾ ਹੈ ❖ ਝੂਲਾਂ ਨੇ ਭੀ ਮ-ਢਨੀ ਕਾਝਿਲੇ ਮੇਂ ਸਝਰ ਕਰਨਾ ਥਾ ਮਗਰ ਔਨ ਵਕਤ ਪਰ ਭਢਾਨਾ ਕਰ ਕੇ ਜਾਨ ਝੁਠਾ ਲੀ ❖ ਝੂਲਾਂ ਕੋ ਮਸ੍ਜਿਦ ਮੇਂ ਆਨੇ ਕੀ ਢਾ'ਵਤ ਢੀ ਥੀ ਤੋ ਕੈਸੇ ਸੀਨੇ ਪਰ ਢਾਥ ਰਖ਼ ਕਰ ਸਰ ਝੁਕਾ ਕਰ ਵਾ'ਢਾ ਕ੍ਰਿਯਾ ਥਾ ਮਗਰ ਵਾ'ਢਾ ਖ਼ਿਲਾਝੀ ਕਰ ਗਯਾ ਔਰ ਨਹੀਂ ਆਯਾ ❖ ਆਝ ਝੂਲਾਂ ਮੁਭਲਿਗ ਨੇ ਭਯਾਨ ਭਢੁਤ ਲਭਭਾ ਕਰ ਢਿਯਾ ਥਾ ❖ ਈਸ ਅਲਾਕੇ ਕੇ ਝੂਲਾਂ ਝੂਲਾਂ ਆਢਮੀ ਭਢੁਤ ਖ਼ੁਸ਼ਕ ਹੈਂ ਕਿਤਨੀ ਢੀ ਢਾ'ਵਤ ਢੋ ਮਸ੍ਜਿਦ ਕਾ ਰੁਖ਼ ਨਹੀਂ ਕਰਤੇ.

ਮ-ਢਨੀ ਮਾਢੋਲ ਸੇ ਝੁਠੇ ਝੂਔ ਕੋ ਮਨਾਨੇ ਕੇ ਗੀਭਤੌਂ ਭਰੇ ਅ-ਢਾਝ ਕਾ ਝੌਰੀ ਖ਼ਾਕਾ

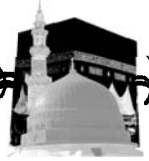
ਜਬ ਕੋਠ ਈਸਲਾਮੀ ਭਾਠ ਝੁਠ ਜਾਔ ਯਾ ਕਿਸੀ ਵਯਹ ਸੇ ਮ-ਢਨੀ ਮਾਢੋਲ ਸੇ ਢੂਰ ਢੋ ਜਾਔ ਤੋ ਈਸ ਮੁਆ-ਮਲੇ ਮੇਂ ਭਲਾਠ ਯਾਢਨੇ ਵਾਲੌਂ ਕੋ ਭੀ ਸੈਤਾਨ ਨਹੀਂ ਝੋਢਤਾ, ਵੋਢ ਢਮਢਢੀ ਢੀ ਢਮਢਢੀ ਮੇਂ ਗੀਭਤੌਂ ਕੇ ਕੀਯੜ ਮੇਂ ਸਰ ਟਾ ਪਾ ਲਤਪਤ ਢੋ ਜਾਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਓਨ੍ਢੇ ਕਾਨੌਂ ਕਾਨ ਖ਼ਭਰ ਟਕ ਨਹੀਂ ਢੋਤੀ ! ਔਸੇ ਮੌਕਅ ਪਰ ਮੁ-ਤਵਕਕਅ ਗੀਭਤੌਂ ਭਰੀ ਗੁਝੁਤ-ਗੂ



इरमाने मुस्तफ़ा عيسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा. (क़ुरआन)

का इर्ज़ाभाका : (गीबतों को वावैन ("")) डाल कर वाजेह किया है) जैद ने बक़ से पूछा : आज कल वलीद ँजतिमाअ में नज़र नहीं आ रहा भैरियत तो है? बक़ ने जवाब देते हुअे कहा : आप को मा'लूम नहीं उस ने हमारे निगराने पाक से ❀ "गुस्ताभाना गुफ़्त-गू" की थी और ❀ "गुस्से" में ❀ "चीभता" था ! जैद : ❀ अख़्श अख़्श येह बात है जल्मी मैं ने परसों सलाम किया तो उस ने "जवाब नहीं दिया" ❀ उस का "मुंह फूला हुवा था" ❀ वाकेँह बन्दा है "बडा अडियल." मगर यार उस को ज़ाअेअ नहीं करना चाहिये. बक़ : ❀ मेरे से तो "सीधे मुंह बात ली नहीं करता " ❀ पता नहीं "अपने आप को क्या समज़ता है !" जैद : ❀ मैं मानता हूँ के ❀ "बहुत वायडा (या'नी टेढा) है" ❀ "बात करने की ली तमीज़ नहीं" ❀ "समज़ता ली ज़रा देर में है" ❀ ँस की अेक वजह येह ली के "अनपढ" है. कुछ ली है ँस को बया लेना चाहिये वरना ❀ नमाज़ेँ छोड देगा ❀ दाढी मुंडवा देगा और ❀ इल्में डिरामे देअने लगेगा. आओ यार दोनों यलते हैं, ँस को समज़ाते हैं.

अइसोस ! हमें बात करनी ही नहीं आती : भीठे भीठे ँस्लामी ल्माँयो ! देआ आप ने ! शैतान दीन का काम करने वालों से किस तरह भेलता है !!! जैद व बक़ साहिबान हमददी की रौ में बह कर 13 अदद गीबतें और आभिर में तीन बद गुमानियां कर के गुनाहों का गठर गरदन पर लाद कर वलीद को "म-दनी माहोल" में दोबारा लाने के लिये यले !!!! येह तो हलकी सी जलक पेश करने की सख़्य की है वरना येह 13 गीबतें और तीन बद गुमानियां बहुत कम हैं अगर आज कल की जाने वाली सिर्ई पांय मिनट की गैर मोहतात गुफ़्त-गू का कोँह "म-दनी अद्व्रा साउन्ड" करने वाला हो तो शायद उस में से कितनी ही मुना-इ-कतेँ, गीबतें, तोहमतें, जूटे मुबा-लगे, दिल आज़ार इँकरे, बद गुमानियां, औब दरियां, रिया कारियां, और न जाने क्या क्या आहिर कर के रभ दे ! अइसोस ! हमारी जिन्दगी गुज़र गई मगर बात करने का ढंग न आया. काश ! सद करोड काश !!! हमें हकीकी मा'नों में ज़बान का कुँले मदीना नसीब हो जाता आह !



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर हुज़दे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابويعلى)

कहीं ऐसा न हो के हमारी ईबादतें और रियाज़तें धरी की धरी रह जायें और ज़बान की कारस्तानियां ज़हन्नम में पड़ोया हें. औ अल्लाह तुज़ से तेरी रहमत का सुवाल है !

बे सबब बपश हे न पूछ अमल नाम रहमान है तेरा या रब !

औंभ मेरे न जोल महशर में नाम सत्तार है तेरा या रब !

ना ज़ाईज गुफ़्त-गू ज़हन्नम में गिरायेगी : हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन ज़बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है इरमाते हैं के मैं ने अर्ज़ की : “औ अल्लाह के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम लोग ज़बान से जो बातें करते हैं इस पर हमारी गिरिफ़्त होगी ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : “औ मुआज़ ! तेरी मां तुज़ पर रोये, लोगो को उन के मुंह के बल आग में गिराने वाली इसी ज़बान की बातें होंगी.” (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٢٨٠ حديث ٢٦٢٥) **मुफ़रिसरे शहीर हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़ती अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हदीसे पाक के तद्दत इरमाते हैं : ज़बान से कुफ़, शिर्क, गीबत, युगली, बोहतान सब कुछ होते हैं जो दोज़्भ में ज़िल्लतो प्वारी के साथ इँके जाने का जरीआ हैं. (मिरआत, जि. 1, स. 53)

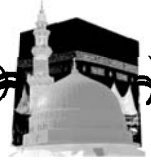
मुआफ़ इजलो करम से हो हर पता या रब हो मग़िरत पये सुस्ताने अम्बिया या रब

बिला हिसाब हो जन्नत में दाबिला या रब पडोस भुल्द में सरवर का हो अता या रब

पहले ईजतिमाअ में आता था अब नहीं आता उसे समजाने के

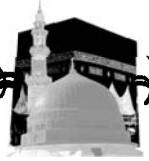
मु-तअद्लिक मु-तवक्कअ 14 गुनाहों भरे ज़ुम्बे और गीबतें

कोई ईस्लामी भाई पहले सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में आता था मगर अब कम आता है या नहीं आता उस की हमददी करने वालों को भी शैतान बसा अवकात वोह गुल बिलाता है के अल अमान वल हज़ीज़ ! जैसे मौकअ पर मु-तवक्कअ गुनाहों भरी गुफ़्त-गू का इर्ज़ी पाका : (गीबतों वगैरा को वावें (“”)) डाल कर वाजेह कर दिया है) जैद व अक बाहम कुछ यूं गुफ़्त-गू करते हैं, जैद पूछता है : आज कल वलीद ईजतिमाअ वगैरा में कम नज़र आता है क्या मस्मला है ? अक जवाब देता है :



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पहुँचता है. (मुरान)

❖ “जरा माल भीयने के यक्कर में पड गया है.” मंगनी की भी तरकीब बन रही है मुज से “उरते उरते” कह रहा था के ❖ घर वाले दाढी कटवाने का कह रहे हैं “क्यूंके लडकी वालों का” ❖ “दाढी साफ़ करवाने” और ❖ “म्यूज़ीकल इंकशन रખवाने का मुता-लबा है,” ❖ यार ! “मेरा भी वहीँ शादी करने का दिल है हो सकता है उन के मुता-लबे पूरे करने पड जायें !” जैद : हां यार ! ❖ मेरा भी येही जयाल था के “वलीद थोडा पैसों का लालची हो गया है,” येह भी सुनने में आया था के ❖ “किसी लडकी के यक्कर में पड गया है” आप की बातों से भी तस्दीक हो रही है. और हां ❖ “येह भी सुना था के छुप छुप कर घर में T.V. पर झिल्में भी देखने लगा है. जैद ने मजीद बयान जारी रખते हुअे कहा : अक ईस्लामी भाई बता रहे थे के वलीद ने उस दिन हेडफोन लगाया हुवा था मैं ने पूछा तो ❖ “जूटमूट कह दिया के ना’तें सुन रहा हूं” मगर मैं ने तरकीब से ❖ उस का हेडफोन भीय कर अपने कानों पर लगा लिया ! भुदा की पनाह ! तौबा ! तौबा ! “बहुत गन्दा गाना बज रहा था !” वलीद मेरी ईस ह-र-कत पर सप्त नाराज हुवा ❖ और “उस के मुंह से गालियां निकल गईं” भैर मैं ने उस को ठन्डा कर लिया. जैद : यार ! बात तो तश्वीश नाक है. मगर बन्दा काम का है, ईस का म-दनी माहोल में रहना हमारे लिये मुझीद है, आओ दोनों यल कर उस को समजाते हैं, उस को बोलेंगे, ❖ भाई ! भले दाढी मुंडवा दो, शादी के बा’द रખ लेना ❖ शादी में म्यूज़ीकल इंकशन भी OK कर दो ❖ घर वालों के जाईज ना जाईज सब मुता-लबे पूरे कर लो मगर म-दनी माहोल मत छोडना क्यूंके हम को पता है के म-दनी माहोल से जो अलग हो जाता है वोह बहुत गुनाहों में पड जाता है ! आओ यलते हैं और समजाते हैं येह कह कर गीबतों, बह गुमानियों, औब दरियों और भियानतों के गुनाहों के टोकरे सर पर रખ कर दाढी मुंडवाने, म्यूज़ीकल इंकशन करने और घर वालों के ना जाईज मुता-लबात मान लेने के मश्वरे देने की बुरी बुरी निय्यतों के साथ दोनों ईस्लामी भाई वलीद को समजाने की नेकी कमाने के लिये रवाना होते हैं.

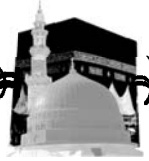


फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुर्रहे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाज़िल फ़रमाता है. (ज़रान)

भात अमानत छोने का करीना : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस “इर्ज़ा पाके”

से सिर्फ़ समझाना मकसूद है सभी अगर्ये इस तरह के गुनाह नहीं करते मगर भा'ज नादान कुछ न कुछ गुनाहों में पड ही जाते हैं. जैद व अक़ दोनों की बातों में गीबतों के धलावा दीगर गुनाह भी शामिल हैं म-सलन गीबत सुनना, उयूब उधालना, उरते उरते राजदारी में कही हुँई भात का पर्दा फ़ाश करना वगैरा. जब जुद तस्लीम किया है के उरते उरते भात की थी इस से दला-लतन वोह भात अमानत साबित होती है, फिर औबों से भी भरपूर थी लिहाज़ा पीछे से बयान कर देने में गीबत के साथ साथ भियानत का जुर्म भी लागू हुवा, भात के अमानत छोने के लिये येह शर्त नहीं के कलने वाला सरा-हतन (या'नी साफ़ लफ़्ज़ों में) मन्अ करे के किसी को मत बताना, अल्डे अगर वोह भात करते हुअे इस तरह धर उधर देभे के कोई सुन तो नहीं रहा ! येह भी बिहकुल वाज़ेह करीना है के येह भात अमानत है. युनान्हे सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ईशदि अमानत बुन्याह है :

“जब कोई आदमी भात कर के धर उधर देभे तो वोह भात अमानत है.” (सुन्न तिरमिडी ज ३ व ३१६ हदिथ १९६६) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हदीसे पाक के तहत्त फ़रमाते हैं : या'नी अगर कोई शप्स तुम से अकेले में कोई भात कहे और भात के दौरान या भात के दरमियान में धर उधर देभे के कोई सुन न ले तो वोह अगर्ये मुंह से न कहे के येह किसी से न कलना मगर उस की येह ह-र-कत बताती है के वोह राज की भात है लिहाज़ा उसे अमानत समजो, उस का राज जाहिर न करो, किसी से येह भात न कलो. (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 6, स. 629) सुधरने की जिदो जहूद जारी रभिये : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गीबतों और गुनाहों की आदतों से तौबा कीजिये और सुधरने के लिये भूब जिदो जहूद फ़रमाईये और सुधरने की दुआ से भी हरगिज़ न उक्ताईये और यूं भी दिल् थोडा मत कीजिये के मैं तो ईतना अर्सा हुवा म-दनी माखोल से वाबस्ता हो युका हूं, भूब



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

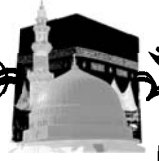
दुआओं भी मांगता हूँ मगर मेरी सहीह मा'नों में इस्लाह नहीं हो पाती. झोरी तौर पर तौबा की कबूलियत के आसार जाहिर हो जायें येह कोई जरूरी नहीं, तौबा करने से हरगिज न उक्ताओं हर दम तौबा किये जायें, **إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जरूर जरूर करम होगा. नेक बन्दे उम्र भर बारगाहे जुदा वन्दी **عَزَّوَجَلَّ** में गिड-गिडाते रहते थे, कभी भी नहीं उक्ताते थे युनान्ये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सइहा 41 ता 43 पर है : हजरते सय्यिदुना शौभ अबू इस्हाक अस्फ़राईनी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى** इरमाते हैं : मैं ने तीस बरस अल्लाह तआला से तौ-बतुन्नसूह नसीब होने की इस्तिजा की, तीस बरस के बा'द मैं अपने दिल में मु-तअज्जिब हुवा और दरबारे जुदा वन्दी **عَزَّوَجَلَّ** में अर्ज की : "अै परवई गार (**عَزَّوَجَلَّ**) ! मुझे तीस बरस हो चुके हैं तुज से सिई अेक हाजत के लिये इस्तिजा करते हुअे लेकिन तूने अब तक वोह भी पूरी नहीं इरमाई." जब मैं सोया तो ज्वाब में अेक शप्स देया जो मुझे कह रहा था : तू अपनी तीस सालह दुआ पर तअज्जिब करता है ! तुजे येह मा'लूम नहीं के तू कितनी बडी खीज का मुता-लबा कर रहा है ? तू उस खीज का मुता-लबा कर रहा है के अल्लाह तआला तुजे अपना दोस्त बना ले, क्या तूने अल्लाह तआला का येह इशाई नहीं सुना के :

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : बेशक अल्लाह पसन्द रअता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रअता है सुथरों को.

السُّطَّهِرِينَ (प २२२ बफ़रे)

तो क्या तू तौबा को मा'मूली शै जयाल करता है ? : हुज्जतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** इरमाते हैं : अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है के अन्करीब गुनाहों पर इस्सार करने के मरज का तुम्हारे दिल से कलअ कम्म (या'नी जातिमा) हो जाये और गुनाहों की नुहूसत का बोज तुम्हारी गरदन से उतर जाये. और गुनाहों की वजह से जो कसावते कलबी (या'नी दिल की सप्ती) पैदा होती है इस से हरगिज बे भौइ न हो. बल्के हर वक्त



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (१७)

अपने दिल पर निगाह रभो, क्यूंके बा'ज साविहीन رَحْمَةُ اللهِ الْبَيِّنَاتِ ने इरमाया है : बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है, और दिल की सियाही की अलामत येह होती है के गुनाहों से घबराहट नहीं होती, ताअत (या'नी एबाहत) के लिये मौकअ नहीं मिलता, नसीहत से कोई इअेदा नहीं होता (या'नी नसीहत व बयान सुन कर दिल पर असर नहीं होता). ओ अजीज़ ! किसी गुनाह को मा'भूली न भयाल कर और कबीरा गुनाहों पर इस्सार करने के बा वुजूद अपने आप को ताईब (या'नी तौबा करने वाला) गुमान न कर.

मुहीत दिल पे हुवा हाअे नइसे अम्मारा दिमाग पर मेरे इब्लीस एग गया या रभ में कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं डकीकी तौबा का कर दे शरफ़ अता या रभ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

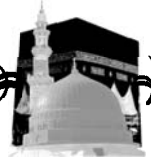
تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“गीबत भडी तबाहकार है” के सोलह हुरइ की निरबत से
“मजलिस” के बारे में की जाने वाली गीबतों की 16 मिसालें

❖ निगरान ने मजलिस में सिई भुशा-मदी इस्लामी त्वाईयों को लिया है

❖ मजलिस के किसी भी इई की आपस में नहीं बनती ❖ पता नहीं क्या देष कर इस को येह जिम्मेदारी दे दी गई है ❖ मैं इतना पुराना हूं निगरान ने इर भी मजलिस में नहीं लिया और उसे म-दनी माहोल में आअे जुमुआ जुमुआ आठ दिन हुअे हें मजलिस में ले लिया ❖ मजलिस में रहना है तो बस इस की हां में हां मिलाते जाओ ❖ मजलिस के इलां इलां रुकन इजतिमाअ के दौरान मक्तब में बैठे गए हांक रहे थे ❖ इकामत हो गई इर भी इलां इलां अपने मक्तब से निकल कर बा जमाअत नमाज के लिये अन्दरने मस्जिद नहीं आअे ❖ सूअे इत्तिहाक, के “मजलिस” के सारे ही अराकीन बडे रइ हें ❖ इलां मजलिस का निगरान बिडकुल अेक्टिव (ACTIVE) नहीं बस ❖ शो पीस है ❖ इलां मजलिस का निगरान अपना मक्तब साइ नहीं रभता और ❖ वहां यीअें भी इधर उधर बिभरी रहती हें ❖ हमारी मजलिस के इलां रुकन को इन्डिरादी कोशिश करना ही नहीं



इरमाने मुस्तफ़ी : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अमाल)

आती ❁ अक नअे इस्लामी भाई से उलज बैठा था वोह तो मैं पछोंय गया और तरकीब बन गई मगर नया इस्लामी भाई सप्त बढ ज़न हो युका था ❁ हुलां जिम्मेदार तो है मगर इम्बूआल नहीं दर अस्ल इस को रभना मजबूरी है इरिग करेगे तो ग्रूप बनायेगा और तंग करेगा ❁ हुलां के निगरान का जेहन हडा हूडी वाला है.

“वक्त की बरबादी” के ग्यारह हुरइ की निरबत से मजलिस बराजे इजतिमाअ और मु-तवक्कअ 11 गीबतें

हइतावार सुन्नतों बरे इजतिमाअ के लिये म-सलन किसी ने आप से कहा के इस बार हुलां मुबल्लिग को बयान का मौकअ दे दिया जाअे तो आप की तरफ़ से जवाब मिला : मा'जिरत प्वाह हूं, उन को बयान नहीं दे सकूंगा. इतना जवाब काफ़ी था मगर अब आगे जो कुछ कहा जाअेगा वोह गुनाहों बरा है म-सलन कहा : इस की वजह येह है ❁ येह लटका देता है ❁ बहुत लेट आता है ❁ इस के बयान में दम नहीं होता ❁ इस का बयान ठन्डा होता है ❁ लोग इस के बयान में उठ उठ कर यले जाते हैं ❁ बयान की तय्यारी कर के नहीं आता ❁ इस के तलफ़इज गलत हैं ❁ बहुत लम्बी करता है ❁ काफ़ी चिकनी करता है ❁ माईक नहीं छोडता ❁ इस को बयान करना कहां आता है ! वगैरा वगैरा. अगर कोई पूछे के उस को बयान क्यूं नहीं देते तब भी जवाबन मुबल्लिग की पोलें भोलने की ज़रत नहीं और येह भी न कहिये के “कुछ कहूंगा तो गीबत हो जाअेगी” के येह भी गीबत ही की अक सूरत है अगर्ये आप ने उस का कोई मप्सूस अैब जाहिर नहीं किया मगर इस जुम्बे के जरीअे येह ज़र इजहार कर दिया के “उस में कुछ जामियां मौजूद हैं.” सिर्फ़ शुरुअ वाला जुम्बा ही जो गीबत से पाक था वोह दोहरा दीजिये के “मा'जिरत प्वाह हूं, उन को बयान नहीं दे सकूंगा.” मज़ीद कहिये के अगर वोह मुबल्लिग जुद पूछेंगे तो मुफ़िना सूरत में उन को वुजूहात अर्ज कर दूंगा. अब अगर वोह मुबल्लिग आ जाअें और उन में वाकेई जामियां हों तो तन्हाई में अहसन तरीके पर समजा दीजिये. इस तरह इल्लैह गीबत वगैरा की आइत से काफ़ी हिफ़ाजत रहेगी, म-दनी माहोल का तक़दुस भी बर करार रहेगा और आपस में महब्बतों के रिशते उस्तुवार रहेंगे. बस येह जेहन में बिठा लीजिये : न गीबत करूंगा न गीबत सुनूंगा. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुन्न पर दुइद शरीफ़ पढो अव्वलाह एउउउ तुम पर रउमत भेजेगा. (अनसरी)

सुनूं न इंडुश क्लामी न गीबतो युगली तेरी पसन्द की बातें इकत सुना या रब करें न तंग भयावाते बह कल्मी, कर हे शुओरो इिक को पाकीजगी अता या रब सिनेमा घर के मालिक की तौबा : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपनी जिन्दगी "म-दनी इन्-आमात" के सांघे में ढालिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और इफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में अव्वल ता आभिर शिकत कीजिये. आप की तरगीब के लिये अक म-दनी बहार पेश की जाती है युनान्घे आबुल इस्लाम सिन्घ के मशहूर शहर हैदरआबाद के अक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बताया के गालिबन येह 1991 ई. के किसी इफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ वाली रात की बात है, मेरी मुलाकात अक सिनेमा घर के मालिक से हुई जे के शराबी और गुनाहों का आदी था. मैं ने इन्किरादी कोशिश करते हुअे उसे तप्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ की दा'वत पेश की, कुछ पसो पेश के बा'द वोह मेरे हमराह यल पडा. इफ़्तितामी दुआ के दौरान सिनेमा घर के मालिक की हालत गैर हो गई. हत्ता के दुआ ખत्म होने के बा'द भी उस का खियकियों के साथ रोना बन्द न हुवा. बा'द में उस ने बताया के मैं ने जब दुआ के लिये हाथ उठाये और आंघें बन्दी कीं तो अैसा लगा जैसे दुआ की ब-र-कत से मेरे दिल की सप्ती दूर हो रही है, मुझे अपने किये हुअे गुनाह याद आने, उन का अन्जाम डराने और भौंके ખुदा عزوجل में रुलाने लगा. इसी दौरान जिस वक्त के मेरी आंघें बन्द थीं मैं ने अपने आप को मदीनअे मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में सभ्ज सभ्ज गुम्बद के रू बरू पाया, हर तरफ़ नूर फैला हुवा था और लीनी लीनी ખुशबू से इजा मलक रही थी. मैं काई देर तक सभ्ज गुम्बद के जल्वों से अपने दिल को मुनव्वर करता और रोता रहा. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने साबिका गुनाहों से तौबा कर ली है.



इरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगिरेत है. (भा. १)

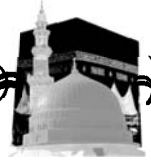
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ वोह मेरे साथ पाबन्दी से इजतिमाअ में आने लगे, पन्ज वक्ता नमाज भी शुरुअ कर दी. अक दिन जब मैं मुलाकात के लिये पड़ोया तो उन्हों ने बताया के मेरे भा'ज वोह दोस्त जिन्हों ने बढकारी के मुआ-मलात से आज तक मुजे नहीं रोका बल्के मेरे साथ शराब व रबाब की मडङ्गिलों में हमेशा आगे आगे रहते थे, मेरी इजतिमाअ में शिर्कत और नेकियों की तरङ्ग रज्जत का सुन कर मेरे पास आ पड़ोये. उन में जो अकाईदे अडले सुन्नत से मुत्तङ्गिक नहीं था वोह मुजे समजाते हुअे कडने लगा : "तुम जिन के इजतिमाअ में जाते हो येह लोग तो बढ अकीदा हैं के औलियाअे किराम की नियाज दिवाते हैं, या रसूलव्वाह पुकारते हैं, इन के साथ मत जाया करो." सिनेमा घर के मालिक का कडना है मैं ने उस से कडा के मैं ने दा'वते इस्लामी का म-दनी माडोल सिर्फ सुन कर नहीं बल्के देख कर अपनाया है, मैं ने तो दा'वते इस्लामी के सुन्नतों तरे इजतिमाअ में शिर्कत की और वहां मुजे इस इस तरह मदीनअे मुनव्वरह رَزَاكَاہَا اللّٰهُ شَرَفًاوَتَعْظِيْمًا की जियारत हुई, अब तुम बताओ जिन आशिकाने रसूल के इजतिमाआत में गुम्बदे ञजरा के जल्वे नजर आते हों येह किस तरह गलत हो सकते हैं? मेरा तो मश्वरा है के तुम भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माडोल में शामिल हो जाओ. **पुढा की कसम!** अब तो कोई मेरे बख्यों के गलों पर धुरी डेर दे तब भी मैं दा'वते इस्लामी का म-दनी माडोल नहीं छोड सकता.

अडले सुन्नत का है भेडा पार अस्हाबे हुजूर

नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुव्वाह की

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

इजतिमाअे जिक में गुनडगार भी बप्शे जाते हैं : मीठे मीठे इस्लामी लाईयो !
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों तरे इजतिमाआत में मुआ-शरे के अक से अक बिगडे हुअे अङ्ग्राह आते हैं और अपनी बिगडी बनाते हैं और भा'ज पुश नसीब तो हाथों हाथ रहमतों की बरसात के जल्वे भी देख लेते हैं, पैर जल्वे नजर



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उर उर के लिये अक कीरात अज्ज लिपता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (ज़िज़)

आना न आना अपने अपने मुकदर की बात है. येह जेह्न में रहे के किसी एजतिमाअ वगैरा में सिर्फ़ अय्शा ज्वाअ नजर आ जाना ही उस के हक पर होने की यकीनी दलील नहीं मगर **الله عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी अहले सुन्नत की सुन्नतों लरी तहरीक है और अहले सुन्नत अहले हक और सय्ये आशिकाने रसूल हैं, इन के अकाईद ऐन कुरआनो सुन्नत के मुताबिक हैं. **الله عَزَّوَجَلَّ** आशिकाने रसूल की सोहबत में जिके **पुढा व मुस्तफ़ा** **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** करने की तो क्या बात है. दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक-त-अतुल मदीना** की मत्बूआ 743 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "जन्नत में ले जाने वाले आ'माल" सइहा 418 ता 419 पर है : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के कुए इरिशते धूम इर कर जिक की मजलिस तलाश करते हैं. जब वोह कोई ऐसी मजलिस देपते हैं जिस में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का जिक हो रहा हो तो उन लोगों के साथ जा कर बैठ जाते हैं और अक दूसरे को अपने परो से ढांप लेते हैं, यहां तक के आस्मान तक का भला पुर हो जाता है. जब वोह मजलिस **मु-तइरिंक** (या'नी मुन्तशिर) होती है तो इरिशते आस्मान की तरफ़ परवाज कर जाते हैं. इर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन से पूछता है **हलां के वोह जियादा जानने वाला है, तुम कहां से आये हो ? तो वोह अर्ज करते हैं :** **हम जमीन से तेरे बन्दों के पास से आ रहे हैं वोह तेरी पाकी और बडाई बयान कर रहे थे, तेरा कलिमा पढते और तेरी ता'रीफ़ करते थे और तुज से सुवाल करते थे. रब तआला इरमाता है : वोह क्या मांगते थे ? इरिशते अर्ज करते हैं : तुज से तेरी जन्नत मांग रहे थे. अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरमाता है : **क्या उन्हों ने मेरी जन्नत को देखा है ? इरिशते अर्ज करते हैं : नहीं. रब** **عَزَّوَجَلَّ** इरमाता है : **अगर वोह उसे देष लेते तो क्या करते ? इर इरिशते अर्ज करते हैं : और वोह तेरी पनाह तलब कर रहे थे. अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरमाता है : **किस चीज से पनाह याहते थे ? अर्ज करते हैं : अँ अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ ! जहन्नम से. रब तआला इरमाता है : क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा है ? इरिशते अर्ज करते हैं : नहीं. अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरमाता है : **अगर वोह उसे देष लेते तो क्या करते ? इर इरिशते अर्ज करते हैं : वोह तुज से मइरित याहते थे. रब** **عَزَّوَجَلَّ**



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुज़ पर हुज़्दे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (उज़्ज़)

इरमाता है : मैं ने उन की मग्दिरत इरमा दी और उन की मुराद उन्हें अता इरमा दी और जिस से वोह पनाह याहते थे उन्हें उस से पनाह अता इरमा दी. वोह अर्ज़ करते हैं : या रब् عَزَّوَجَلَّ ! उन में हुलां शप्स भी है जो बहुत गुनहगार है वोह वहां से गुज़र रहा था और उन के साथ बैठ गया. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरमाता है : मैं ने उस को भी बप्श दिया क्यूंके येह औसी कौम है जिस का हम नशीन (या'नी हम सोहबत) भी महरूम नहीं रहता.

(صحيح مسلم ص ٤٤٤ احاديث ٢٦٨٩)

बरसता नहीं देष कर अब्रो रहमत

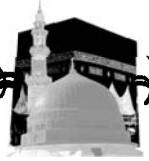
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

“जलन्म का भौलता हुवा पानी पीने और आग में जलने से बयें” के घकतालीस हुज़्द की निरबत से हारिसीन व जादिमीन के बारे में की जाने वाली गीबतों की 41 मिसालें

दा'वते ईस्लामी के म-दनी मर्कज़ में और आ'ज़ जिम्मेदारान के पास डालात की नज़ाकत के पेशे नज़र डिफ़ाज़ती ईन्तिज़ामात रभे गअे हें, मुसल्लह गार्ड के लिये “हारिसीन” और गैर मुसल्लह के लिये “जादिमीन” की ईस्तिवाह दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल में बोली जाती है. मुसल्लह हारिसीन की अक्सरियत का तअल्लुक ता हमे तहरीर मह-क-मअे पोलीस से है, ईस्लामी भाईयों को इन की गीबतों से और भुद इन हारिसीन व जादिमीन को आपसी गीबतों से बयाने के मुकदस जजबे के तहत मु-तवक्कअ गीबत की 41 मिसालें पेश की जाती हैं :

- ❖ ड्यूटी के दौरान उधिता है
- ❖ ड्यूटी अख़्ठी नहीं करता
- ❖ ड्यूटी के दौरान बातों में मसरूफ़ रहता है
- ❖ ड्यूटी पर हमेशा तापीर से आता है
- ❖ छुट्टियां बहुत करता है
- ❖ अेजन्सी का मुप्बिर लगता है
- ❖ वफ़ादार नहीं लगता
- ❖ हम्ला हुवा तो फिरार हो जाअेगा
- ❖ अेलर्ट नहीं है
- ❖ गन बराबर पकडना नहीं आती
- ❖ रस्मी येकिंग करता है
- ❖ जान पहचान वाले की येकिंग नहीं करता
- ❖ ढीला है
- ❖ रिश्वत की याट पड गई है
- ❖ मा'भूली सी यीज़

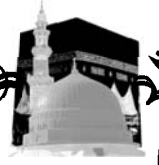


इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर अेक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (मु)

भी जेब से नहीं भरीदता, मांग लेता है ❀ इस को हलाक हराम की तभीज ही कहां है
 ❀ दूसरे हारिसीन से बना कर नहीं रभता ❀ मुन्शी के साथ तआवुन नहीं करता
 ❀ मुन्शी के भिलाइ गलत प्रोपेगन्डा करता है ❀ लगता है इस को मुन्शी बनना है
 ❀ डिफ़ाजती उमूर की मजलिस की भामियां निकालता रहता है ❀ डिफ़ाजती उमूर
 वालों के नाक में दम कर दिया है ❀ अपने आप को कुछ समजता है ❀ हारिसीन से
 लडता रहता है ❀ बहुत बे रहूम शप्स है ❀ किसी को जाड देना ❀ दिल दुभा देना
 इस के लिये कोई मस्अला ही नहीं ❀ एतना बोलता हूं मगर नमाज नहीं पढता
 ❀ र-मजानुल मुबारक में रोजे नहीं रभता ❀ तरावीह नहीं पढता ❀ बहुत जवाली
 है ❀ भर भोपडी है ❀ मेरे से तो सीधे मुंह बात भी नहीं करता ❀ अपने आप को पता
 नहीं क्या समजता है ❀ मजलिस वालों के कान भरता है ❀ अलाके में दादागीरी करता
 है ❀ भादिमीन पर ओईर यलाता है ❀ मजलिसे डिफ़ाजती उमूर में अेक भी बन्दा
 सहीह नहीं ❀ निगराने मजलिस ने उस हारिस की बढली गलत करवाई है ❀ नया
 वाला हारिस तो बिडकुल अेवई है ❀ है, अ-दार मगर थोडा अडियल.

“युप रहो सलामत रहोगे” के पन्टरह हुरइ की निस्बत से म-दनी येनल के मु-तअल्लिक गीबत की 15 मिसालें

الحمد لله عزوجل दा'वते इस्लामी का हर दिल अजीज म-दनी येनल सुन्नतों की
 पूब धूमें मया रहा है और इसे अैन शरीअत के मुताबिक यलाया जा रहा है. इस में
 नमाजें, एजतिमाआत, और बा'ज दीगर सिब्सिले बराहे रास्त भी दिभाअे जाते
 हें, म-सलन रोजाना बराहे रास्त बा जमाअत नमाजे तहज्जुद इर रिक्त अंगेज
 हुआ व मन्जूम मुनाज्जत, अजान व नमाजे इज्ज, इस के बा'द म-दनी हल्का जिस में
 दर्से इैजाने सुन्नत, तीन आयाते कुरआनी की तिलावत मअ तर-ज-मअे कन्जुल
 इमान व तफ़सीरे अजाइनुल इरफ़ान, बा'दुहू श-ज-रअे कादिरिय्या र-जविय्या पढा
 जाता है इस के बा'द बा जमाअत नमाजे इशराक व याशत के नवाइल दिभाअे जाते
 हें. सेंकड़ों इस्लामी भाई इस में शरीक छोते हें. मरदूद शैतान जे के मुसल्मान को अैन
 डालते नमाज में भी वस्वसों का शिकार बनाता है वोह लला घर घर जा कर इस्लाम



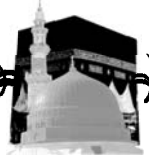
इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

का पैगाम आम करने वाले इस अछूते म-दनी येनल पर नज़र आने वालों और नाज़िरीन (या'नी देखने वालों) को क्यूं छोड़ेगा ! लिहाज़ा इन्हें भी ખૂબ गीबतों पर उकसाता है युनान्ये म-दनी येनल के जिन्न में मु-तवक्कअ गीबत की 15 मिसालें पेश की जाती हैं : ❀ अरे इलां ! पहले तो आज़िरी सफ़ में होता था और अब म-दनी येनल पर आने के लिये ज़ल्दी ज़ल्दी पहली सफ़ में आ कर बैठ जाता है ❀ इलां पहले तो समजाने से भी ज़ल्दी नहीं आता था और अब म-दनी येनल की वजह से इजतिमाअ में सब से आगे होता है ❀ उस को देखो म-दनी येनल की जातिर कैसा “टाईट ईमामा” बांध कर बैठा है ❀ वोह यूं तो यादर को हाथ भी नहीं लगाता मगर म-दनी येनल की जातिर कैसा यादर ओढ कर बैठा है ❀ उस को देखो म-दनी येनल में नज़र आने के लिये ना'तों में कैसा ज़ूमता है ❀ वोह जो म-दनी येनल में मुनाज़ात में रोता है ना ! मैं उस को जानता हूं, पक्का ढोंगी है ❀ इलां को तो ईमामा शरीफ़ बांधना भी नहीं आता मगर म-दनी येनल पर आने के लिये दूसरे से ईमामा बंधवा कर ખૂब सलीके से सफ़ेद यादर ओढ कर आगे आ कर बैठ जाता है ❀ जब म-दनी येनल पर बयान करना हो, यादर ओढ लेता है, आगे पीछे यादर न जाने कहां होती है ❀ मजलिस के निगरान को इलां के साथ न जाने क्या पार है उसे मौकअ ही नहीं देता ❀ इलां इलां मुबल्लिग को आता जाता कुछ नहीं, देख कर बयानात करते हैं ❀ मजलिस के मुबल्लिग ने बे सुरे ना'त प्वानों को ईक़्वा कर रखा है ❀ मजलिस के निगरान ने अनाडी केमेरा मेन रभे लुअे हैं ❀ इस ने इलां “सिल्लिला” तो ज़ाली टाईम पास करने के लिये रखा हुवा है ❀ इस से तो पहले वाला मुबल्लिग अच्छे अन्दाज़ में येह “सिल्लिला” कर रहा था, इसे तो ठीक से बोलना भी नहीं आता ❀ म-दनी येनल पर आने वाले इलां इलां रियाकार हैं.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें बेजता है. (स्)

સુવાલ : અગર વોહ બાત ઉસ મેં મૌજૂદ હો તો ?

જવાબ : જભી તો ગીબત હૈ અગર મૌજૂદ ન હો ફિર ભી એસી બાત ઉસ કી તરફ મન્સૂબ કર દી તબ તો યેહ ગીબત સે ભી બડા ગુનાહ હો ગયા જિસ કો બોહૂતાન (ઇલ્લામ, તોહમત) કહતે હૈં.

સુવાલ : યુગલી કિસે કહતે હૈં ?

જવાબ : લોગોં મેં ફસાદ કરવાને કે લિયે ઉન કી બાતેં એક દૂસરે તક પહોંચાના યુગલી હૈ. (شرح مُسْلِمْ لِلنَّوَوِي ج ٢ ص ١١٢) શારેહે બુખારી હઝરતે અલ્લામા બદરુદ્દીન એની લિખતે હૈં કે જમ્હૂર ઇસી તા'રીફ કે કાઈલ હૈં.

(عُمدَةُ القَارِي ج ١٥ ص ٢٠٩)

સુવાલ : કિસી પર “એબ ખોલના” કબ કહલાએગા ?

જવાબ : કિસી કા એબ એસે શખ્સ કો બતાના જિસ કો પહલે સે મા'લૂમ ન હો.

સુવાલ : જો પહલે હી સે આગાહ હો ઉસ કે આગે ઉસી એબ કા તઝકિરા કરને મેં કોઈ હરજ તો નહીં ?

જવાબ : ક્યૂં હરજ નહીં ! બિલા ઇજાઝતે શર-ઈ તઝકિરા કિયા ગયા તો યેહ ભી ગીબત મેં શુમાર હોગા ! યેહ થોડે હી હૈ કે જિસ કી એક બાર કિસી મુઆ-મલે મેં ગીબત કર લી બસ અબ ઝિન્દગી ભર છુટ્ટી હો ગઈ ઓર આયન્દા કે લિયે ઉસ બાત મેં ઉસ કી ગીબત કરના જાઈઝ હો ગયા !

સુવાલ : દો અફરાદ ને આપસ મેં કિસી કી ગીબત કી અબ ઉસ ખામી કા આપસ મેં આયન્દા દોબારા તઝકિરા કરેં તો ક્યા વોહ ભી ગીબત હૈ ?

જવાબ : ક્યૂં નહીં ! અગર એક હી બુરાઈ કા દોનોં આપસ મેં હઝાર બાર તઝકિરા કરેંગે તો યેહ એક હઝાર ગીબતેં હોંગી.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس میرا لیک لہوا اور اس نے مجھ پر دڑدے پاک نہ پढا
तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (हंन)

जाँठ समज कर सुन ले फिर पता चले के येह ना जाँठ गीबत थी तो..?

सुवाल : किसी ने गीबत शुरू की और सुनने वाला समजा के येह जाँठ सूरत है लिहाजा वोह तवज्जोह से सुनता रहा मगर बा'द को पता चला के वोह तो यूं ही "भडास" निकाल रहा था, या'नी वोह गुनाह भरी गीबत थी क्या सुनने वाला भी गुनहगार हो गया ?

जवाब : अगर करारन व सियाके गुफ्त-गू या'नी बातचीत के अन्दाज वगैरा से "जाँठ गीबत" होना समज में आ रहा था इस लिये सुन ली थी तब तो सुनने वाला गुनहगार नहीं और अगर करारन से गुनाह भरी गीबत होना जाहिर था मगर सुनता रहा तो गुनहगार है, और अगर जाँठ ना जाँठ का फ़ैसला नहीं कर पा रहा था तब भी सुनना मन्हूअ के आज कल बातचीत में की जाने वाली गीबतों का राजेह या'नी गालिब पहलू गुनाहों भरा ही होता है. तो या तो येह सूरत बनेगी के कुछ गीबतें जाँठ वाली होंगी और कुछ ना जाँठ वाली तो नतीजा येही निकलेगा के गुनहगार बहर हाल हो जायेंगे और या "शक" की सूरत बनेगी या'नी या जाँठ है या ना जाँठ है यूं दोनों तरफ़ बराबर बराबर जेहन जा रहा होगा, बहर हाल जहां जाँठ व ना जाँठ का फ़ैसला न हो पा रहा हो वहां भी गीबत सुनना मन्हूअ ही रहेगा के यहां कम से कम द-र-जअे मुश-तबिहात (या'नी मश्कू खीजों) का बनता है और हदीसे पाक में इस से भी बयने का हुकम इरमाया गया है के जिस ने अपने आप को मुश-तबिहात (या'नी शुब्हे वाली खीजों) से बया लिया उस ने अपनी ईज़्जत और दीन को बया लिया.

अवाम जाँठ व ना जाँठ गीबत में कैसे तमीज करें ?

सुवाल : अक्सर अवाम के पास ईतना ईल्म ही नहीं होता के वोह "जाँठ व ना जाँठ" गीबत में तमीज कर सकें, जैसे में क्या किया जाये ?

जवाब : आसान और मोहतात तरीका समजाने की मैं ने कोशिश की है और मैं येही कर सकता हूं, गीबत के सारे अहकाम घोल कर पिला नहीं सकता, हुन्या का हर इन सीबने से आता है लोग जब कोशिश करते हैं तो मुश्किल से मुश्किल



इरमाने मुस्तफ़ी ﷺ : जिस ने मुज पर दस भरतभा सुब्ह और दस भरतभा शाम दुइदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मिशक़ुत)

इन भी सीप ही लेते हैं और इन को सीपने के लिये मुल्क ब मुल्क का सफ़र भी करना पडे तो करते हैं तो वोह गीबत जिस के ज़री अहकाम सीपना इर्ज़ है उस के लिये भी भूष कोशिश करनी होगी, अगर इँजाने सुन्नत जिल्द 2 का भाब “गीबत की तबाह कारियां” बार बार गौर से पढ़ेंगे तो **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** काफ़ी हद तक इस “इर्ज़ एल्म” को भी हासिल कर लेंगे और **अद्लाह** ने याहा तो फिर “जाँज व ना जाँज” गीबत में तमीज़ करना भी आ जायेगा.

घर में गीबत से किस तरह बये ?

सुवाल : आज कल घरों का माहोल कौन नहीं जानता, बहुत कम घर जैसे होंगे जहां गीबतें न होती हों और हर इस्लामी भाई की बात का अपने घर में इतना वज़न भी नहीं होता के वोह घर वालों को गीबतों से रोक सके, ऐसी सूरत में क्या किया जाये ?

जवाब : वाकेई हावात ना गुफ़्तह बिह हें, बिलइर्ज़ दूसरों को बयाना मुम्किन नहीं तब भी जुद को तो बयाने की तरकीब की जा सकती है, घर में गीबतें हो रही हैं इस लिये मजबूरी समज़ कर दिल् यस्पी के साथ जुद भी शरीक हो गया तो गुनहगार होगा. लिहाज़ा जो रोकने पर कादिर हो उस के लिये ज़री है के रोके और जो कुदरत नहीं रभता, वोह जैसे मौकअ पर वहां से हट जाये, अगर कभी ऐसा इंस गया के हट भी नहीं सकता तो बात बदलने की कोशिश करे, इस की भी तरकीब मुम्किन नहीं और भी कोई सूरत भलासी की नज़र नहीं आती तो दिल् में बुरा जाने और गीबतों की तरफ़ से तवज्जुह हटाने की भरपूर कोशिश करे. घर में म-दनी माहोल बनाने के लिये इँजाने सुन्नत जिल्द 2 के भाब “गीबत की तबाह कारियां” के दर्स का सिव्सिला **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** भेहद मुफ़ीद रहेगा. जब घर वाले गीबत की तबाह कारियों से बा भबर होंगे तो **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बयने का जेहून बनेगा और इस तरह अक नहीं हज़ार क़ितनों से **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** महकूज़ हो कर घर अम्न का गहवारा बन जायेगा.



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِسْمِ كَيْفَ تَجْعَلُهَا لِيَوْمِ الْحُجَّةِ أَوْ لِيَوْمِ الْبُرْءِ شَرِيكَ نَافِئًا أَوْ لِيَوْمِ الْبُرْءِ شَرِيكَ نَافِئًا (مَنْزِلَةُ)

દા'વતે ઈસ્લામી કો જાહિલોં કા ટોલા કહના કેસા ?

સુવાલ : એક શખ્સ ને મુઝ સે કહા કે દા'વતે ઈસ્લામી મેં મત જાઓ યેહ જાહિલોં કા ટોલા હૈ ! ઉસ શખ્સ ને યેહ કહ કર ગીબત કી યા નહીં ?

જવાબ : ગીબત મુ-તઅય્યન વ મા'લૂમ શખ્સ યા અશખાસ મેં મૌજૂદ ઐબ યા બુરાઈ કો પીઠ પીછે બયાન કરને કો કહતે હૈં. લિહાઝા મઝકૂરા જુમ્લા ગીબત નહીં કહલાએગા ક્યૂંકે ઈસ મેં મુઅય્યન ફર્દ યા અફરાદ કા તઝકિરા નહીં હૈ. હાં અગર કાઈલ કી નિયત દા'વતે ઈસ્લામી કે હર ફર્દ કો જાહિલ કહને કી હૈ તો અલબત્તા ગીબત હુઈ ઔર એક ફર્દ કી નહીં ઉન તમામ મુસલ્માનોં કી હુઈ જો જાહિલ હૈં ઔર ઈસ મેં શામિલ હૈં. ચૂંકે હર હર ફર્દ કો જાહિલ કહા ગયા હૈ ઔર ફિલ હકીકત દા'વતે ઈસ્લામી જાહિલોં કા ટોલા નહીં હૈ કે ઈસ મેં હઝારોં ઉ-લમાએ કિરામ كَثْرُهُمُ اللهُ تَعَالَى (યા'ની અલ્લાહ جَزَّ وَجَلَّ ઐસોં કી કસરત ફરમાએ. આમીન) ભી શામિલ હૈં તો અગર ઉસ ને યેહ જાનતે હુએ ભી હર હર ફર્દ કો જાહિલ કહને કી નિયત સે દા'વતે ઈસ્લામી કો જાહિલોં કા ટોલા કહા હૈ તો ઉન ઉ-લમાએ કિરામ કી તૌહીન ભી હુઈ ઔર ઉન પર જહાલત કી તોહૂમત ભી. શખ્સે મઝકૂર કા યેહ કહના કે દા'વતે ઈસ્લામી મેં મત જાઓ અગર બિલા કિસી મસ્લહતે શર-ઈ હૈ તો યેહ નેકી સે રોકના હૈ ઔર રોકને વાલા ઈસ હુકમે કુરઆની : (ب ٢٩ القلم: ١٢) مَاءٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ (તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : ભલાઈ સે બઝા રોકને વાલા હદ સે બઢને વાલા ગુનહગાર) મેં દાખિલ હૈ.

બહુત સારે મુસલ્માનોં કી ઈકઠ્ઠી ઈઝા

સુવાલ : દા'વતે ઈસ્લામી કો જાહિલોં કા ટોલા કહને વાલે કી નિયત અગર મા'લૂમ ન હો કે આયા ઉસ ને એક એક ફર્દ કો જાહિલ કહા હૈ યા ક્યા, ઔર અગર ઉસ પર ગીબત કા હુકમ નહીં લગેગા તો ક્યા ઈસ તરહ કા જુમ્લા કહના જાઈઝ હૈ ?

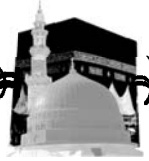
જવાબ : ગીબત કી એક મખ્સૂસ તા'રીફ હૈ લિહાઝા જો કલિમા યા ઈશારા વગેરા ઉસ તા'રીફ કે તહૂત દાખિલ હો વોહી ગીબત હૈ મગર જો બાત ગીબત નહીં હૈ ઉસ કા બે ગુબાર હોના ઝરૂરી ભી નહીં. મઝકૂરા જુમ્લે મેં ઈઝાએ મુસ્લિમ કા પહલૂ નુમાયાં હૈ મગર ઈસ કી બા'ઝ સૂરતે હૈં મ-સલન (1) અગર દા'વતે



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جئى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ पढेगा में डियामत के दिन उस की शफाअत करेगा. (अहवाल)

ईस्लामी के दो मुखाविझीन या दा'वते ईस्लामी से गैर मु-तअद्लिका दो अफ़राद आपस में बैठे येह जुम्मे कइते हैं तो यहां ईजा रसानी का गुनाह नहीं डोगा लेकिन ईस में बा अमल मुसल्मानों के अक बहुत बडे तफ़के के बारे में जूट या तोहमत या तहकीर व ईस्तिहज़ा (या'नी उन को हकीर समजने और उन का मजाक उडाने) का पहलू ली मौजूद है और येह सभ उमूर हुराम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं लिहाजा येह जुम्मा या ईस से मिलते जुलते जुम्मे कइने वाले और सुन कर ताईद करने वाले अपनी आभिरत की ज़रूर ज़रूर ज़रूर झिक करें (2) कोई दा'वते ईस्लामी वाला या दा'वते ईस्लामी का मुखिब (या'नी अहले महब्बत) मौजूद है और उस के सामने कहा के दा'वते ईस्लामी जाहिलों का टोला है तो येह उस दा'वते ईस्लामी वाले या अहले महब्बत की दिल् आज़ारी है और (3) अगर दस ईस्लामी भाई या सो ईस्लामी भाई बैठे हुअे थे और उन से येह जुम्मा कहा और सभ को ईत्तिलाअ हुई तो सभ की ईजा रसानी और दिल् आज़ारी का गुनाह हुवा और बेशक मुसल्मान की तहकीर (या'नी उस को हकीर जानना) या उस का मजाक उडाना और दिल् दुखाना हुराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. बहरो बर के बादशाह, दो आलम के शहन्शाह, साहिबे मजदो जाह, उम्मत के ખैर ख्वाह, आमिना के महरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईब्रत निशान है : مَنْ أَدَى مُسْلِمًا فَقَدْ أَدَانِي وَمَنْ أَدَانِي فَقَدْ أَدَى اللَّهَ : (अल्मज्म अल औसतु लिलख़िब्रानि ज 2 व 386 حديث 3607)

ईजतिमाई दिल् आज़ारियों के 12 जुम्लों की मिसालें : बयान कर्दा सूरतों की रोशनी में अक या बहुत सारे मुसल्मानों के लिये ईजा का बाईस बन सकने वाले जुम्लों की 12 मिसालें मुला-हजा हों : ❀ पोलीस वाले रिश्वत खोर डोते हैं ❀ पोलीस वाले अपने बाप को ली नहीं बख़्शते ❀ हुलां कभीले वालों का पेशा डी खोरियां करना है ❀ हुलां जात के लोग सूदखोर डोते हैं ❀ हुलां खानदान के अफ़राद



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُؤَاجَزَةً عَلَى كَسْرَتِ كَرِيهِ بِشَاكٍ يَهْلِكُ تُمْبَارَهُ لِيَهِيَ تَحَارَتُ لَيْلَةٍ . (ابويعلى)

નીચ (યા'ની કમીને) હોતે હેં ❀ ફુલાં બિરાદરી વાલે બુઝદિલ હોતે હેં ❀ મ-દની ચેનલ બસ એસા હી હૈ ❀ ફુલાં મદ્રસે યા ફુલાં ઈદારે કે મદારિસ કા મે'યારે તા'લીમ સહીહ નહીં ❀ ફુલાં કબીલે કે લોગ ઝગડાલૂ હોતે હેં ❀ ઈન્કમ ટેક્સ કે ઓફીસર્ઝ રિશવત કે બિગૈર કાબૂ નહીં આતે ❀ ફુલાં કૌમ વાલોં સે તઅલ્લુકાત મત બઢાના યેહ ફરાડી હોતે હેં ❀ મારવાડ (હિન્દ) કે બાશિન્દે કન્જૂસ હોતે હેં જત્ની તો યેહ મુહા-વરા બના : “ફુલાં કન્જૂસ મારવાડી હૈ.”

સુવાલ કરને વાલે કે ભૂલને પર હંસના

સુવાલ : મ-દની મુઝા-કરે યા મદ્રસે કે દ-રજે મેં એક ઈસ્લામી ભાઈ સુવાલ પૂછને કે લિયે ખડે હુએ મગર ઘબરા ગએ ઔર સુવાલ કા કુછ હિસ્સા ભૂલ ગએ ઈસ પર બા'ઝોં કો હંસી આને લગી મગર ઉન્હોં ને એક દમ ખુદ પર કાબૂ પા લિયા, બા'ઝ બે ઈખ્તિયાર હંસ પડે, બા'ઝ હંસ હંસ કર લુત્ફ અન્દોઝ હો રહે થે, ઔર સાઈલ કે પીછે બૈઠને વાલોં મેં સે એક ને મુસ્કુરા કર દૂસરે કી તરફ દેખા ઔર સાઈલ કી તરફ કુછ ઈસ તરહ આંખોં સે ઈશારા કિયા કે દેખો તો કેસા પરેશાન હો રહા હૈ ! ઈસ પર દૂસરે ને ભી મુસ્કુરા કર ઈસી તરહ કા ઈશારા કિયા. ઈન સબ કે બારે મેં ક્યા હુકમ હૈ ?

જવાબ : જિન્હોં ને હંસી રોકી વોહ બહુત અચ્છે રહે, જો બે ઈખ્તિયાર હંસ પડે વોહ ભી બે કુસૂર હેં, કસ્દન હંસને ઔર લુત્ફ અન્દોઝ હોને વાલે જાન બૂઝ કર સાઈલ કી દિલ આઝારી કા બાઈસ બને ઔર પીછે સે આંખોં હી આંખોં મેં તન્જિયા ઈશારે કરને વાલોં ને ગીબત કા ઈરતિકાબ કિયા. જાન બૂઝ કર દિલ આઝારી કા બાઈસ બનને વાલે તૌબા કે સાથ સાથ સાઈલ સે મુઆફ ભી કરવાએ, ગીબત કરને વાલે તૌબા કરે ઔર અગર તૌબા સે પહલે હી સાઈલ કો પતા ચલ ગયા હો તો ઉસ સે મુઆફ ભી કરવાએ.

ઈસ કિતાબ કે બારે મેં વસ્વસા

સુવાલ : બ કસરત લોગ ગુનાહોં ઔર બુરાઈયોં સે ઈસ ખૌફ કી વજહ સે બચ જાતે હેં કે દેખને વાલા ક્યા કહેગા યા યેહ કિસી ઔર કો જા કર બતા દેગા, યા લોગોં



इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है. (ग़रान)

में येह बात झैल जाअेगी तो मेरी बे एज़्ज़ती होगी. झैजाने सुन्नत जिहद 2 का बाब “गीबत की तबाह कारियां” आम हो जाने में कहीं अैसा न हो के छुप कर गुनाह करने वालों का हिल जुल जाअे के मेरे गुनाह पर मुत्तलअ होने वाला अब तो किसी से जा कर मेरी गीबत करेगा ही नहीं और यूं वोह उस गुनाह को मुस्तकिलन एप्तिवार न कर लें या अपनी एस्लाह की कोशिश में सुस्ती न करें या सिरे से कोशिश ही तर्क न कर दें, क्या एस तरह गुनाहों में हिलेरी बढ नहीं जाअेगी ? म-सलन अगर कोई अपनी जौजा को बिगैर एजाजते शर-ए मारने पीटने का आदी हो और वोह एस्लामी बहन गीबत के उर से किसी से तजकिरा न करे तो क्या येह शोहर “आलिम” से “अज़्लम” (या’नी बहुत जियादा जुल्म करने वाला) नहीं बन जाअेगा ? या कोई एस्लामी भाई जमाअत वाजिब होने के बा वुजूद घर में नमाज पढ लेता हो और उसे येह पता हो के मेरा भाई किसी और के सामने मेरा अैब नहीं षोलेगा तो क्या वोह घर पर नमाज पढने ही को अपनी आदते सानिया नहीं बना लेगा ?

जवाब : अव्वल तो येह बात जेहन में रबिये के “गीबत की मजम्मत” दा’वते एस्लामी वालों की एजाह नहीं, एस की तो पिछली शरीअतों में भी मुमा-न-अत थी नीज कुरआने करीम व अहादीसे मुबा-रका में भी एस की मुषा-लइत ब शिदत मौजूद है, गीबत के ज़ररी अहकाम जानना हर आकिल बालिग मुसल्मान पर इर्जे अैन है, जो नहीं जानता वोह गुनहगार और नारे दोज़ब का हकदार है. गीबत के मसाएल में काई तफ़सील है. मुत्लकन या’नी किसी भी सूरत में किसी का अैब षोल ही नहीं सकते अैसा नहीं, गीबत की जाएज सू-रतें भी मौजूद हैं जिन का पीछे बयान गुजर युका. कहीं अैब और अैबी की नौएय्यत का अे’तिबार है तो कहीं अैब षोलने वाले की निय्यत पर हुकमे शर-ए का एन्हिसार है. अब म-सलन शोहर वाकेई जुल्म करता है और बीवी एस से नजात पाने की निय्यत से सिई अैसे इद से उस जुल्म का तजकिरा करती है जो उसे जुल्म से छुडा सकता है तो येह “जाएज

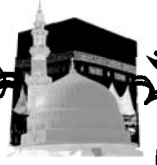


फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाज़िल फ़रमाता है. (ज़रान)

गीबत” है. इसी तरह बिला उज़र बिगैर जमाअत नमाज़ पढने वाले का भाई अगर उसे समझाने पर कादिर नहीं और किसी कुदरत रखने वाले से इस निथ्यत से जिक करता है के वोह इस को समझाये या इस निथ्यत से किसी पर एजहार करता है ताके भाई शरमिन्दा हो कर तर्के जमाअत के गुनाह से भाज आ जाये तो येह भी “जाईज गीबत” बल्के सवाब का इकदार बनाने वाली गीबत है.

बद गुमानी मत कीजिये : बाकी रही येह बात के गीबत न करने वाले की वजह से भा’ज लोग गुनाहों पर दितेर हो जायेंगे तो येह शैतानी वस्वसा ही है और इस की वजह से शर-ई अहकाम से मुसल्मानों को जालिल नहीं रखा जा सकता बल्के **मुअय्यन** मुसल्मानों के बारे में कराईने वाजेहा (या’नी साफ़ साफ़ अलामात) न होने के बा वुजूह अगर येह जेहून बना लिया के कुलां कुलां अब गुनाहों पर दितेर हो जायेगा तो येह बद गुमानी है जो के हराम है.

इतावा र-जविय्या में अेक वस्वासी की गोश-माली : मेरे आका आ’ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने’मत, अजीमुल भ-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्मे रिसालत, मुजदिदे दीनो भिद्वलत, डामिये सुन्नत, माडिये भिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, भाईसे भैरो भ-र-कत, हजरते अद्लामा मौलाना अलहाज अल डाईज अल कारी शाह ईमाम अहमद रजा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाहे आलीशान में अेक अैसे शप्स के बारे में सुवाल हुवा जो के कहता था के मैं तो आज कल की दा’वतों में नहीं जाता क्यूंके अकसर दा’वतें दिभावे और रियाकारी की होती हैं और लोग रिज़क या’नी जाने की भी काफ़ी बे हुरमती करते हैं. आ’ला हजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इस सुवाल का जो कुछ जवाब ईशाद फ़रमाया उस का लुब्बे लुबाब है : कबूले दा’वत सुन्नत है. किसी मुअय्यन या’नी मप्सूस मुसल्मान के लिये बिगैर कराईने वाजेहा के (या’नी साफ़ साफ़ अलामतों के बिगैर) येह समज लेना के इस ने



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीक न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

नाम-वरी और रिया के लिये येह दा'वत की है औसी भद गुमानी हरामे कर्ह है. अगर कहीं हुबूबे तआम (या'नी खाने के दानों और गिजा के अजजा) की बे अ-दबी होती भी है तो इस शप्स को याहिये के बे अ-दबी करने वालों को समजाअे अगर वोह लोग न मानें तो वबाल उन्हीं लोगो पर है. हजरते सय्यिहुना इमाम अबुल कासिम सफ़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَعَّارُ इरमाते हैं: "मैं आज कल दा'वत में जाने की कोइ नियत नहीं कर पाता सिवाअे इस के के नमक दानी रोटी पर से उठाउंगा." आ'ला हजरत "इतावा हिन्दिह्या" के हवाले से मज़ीद इरमाते हैं: रोटी और यपाती पर पियालों का रभना दुरुस्त (या'नी मुनासिब) नहीं है। मज़ीद इरमाते हैं: अगर येह शप्स عَنْ الْفُكْرِ या'नी भुराई से मन्अ करने की नियत से जाअेगा तो सवाब पाअेगा. (तफ़सील के लिये देपिये इतावा र-अविय्या, जि. 21, स. 672 ता 674)

दा'वत में जाने के लिये अख़ी अख़ी नियतें कर लेनी याहिये: रोटी पर से नमक दानी उठाने की नियत से जाने वाले भुजुर्ग के अमल से येह सीपने को मिला के दा'वत में जाने के लिये इस तरह की अख़ी अख़ी नियतें की जा सकती हैं के वहां अगर किसी को खाना जाअेअ करता या कोइ काम खिलाई सुन्नत करता पाउंगा तो नेकी की दा'वत देने का सवाब कमाउंगा और येह भी मा'लूम हुवा के रोटी पर नमक दानी, चाट मसा-लहे की शीशी, सालन या रायते का पियाला या अयार यटनी की पियाली रभनी मुनासिब नहीं. दा'वत में जाने न जाने की बा'ज सूरतें भी हैं म-सलन मा'लूम है के वहां गाने बाजे होंगे और इस के जाने से न येह बन्द होंगे न ही येह उन को रोक सकता है तो अब दा'वत में जाने की शरीअत में इजाजत नहीं. (तफ़सीलात खानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मल्बूआ 312 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 31 ता 38 पर "वलीमा और जियाइत का बयान" पढ लीजिये या कम अज कम सफ़हा 35 से मस्अला नम्बर 1,2,3 मुला-हजा इरमा लीजिये)



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज़ पर दुइइहे पाक न पड़े. (१७)

सिर्फ़ लोगों के डर से गुनाह छोड़ने का नुक़सान : लोगों से डर कर गुनाह छोड़ना भी अग़र्ये मुइइद है के गुनाह के इरतिकाब से बय ज़ायेगा ताहम अल्लाह ख़ुद से डर कर गुनाह से कनारा कशी का ज़ेह्न बनाना चाहिये. दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक़-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 480 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "मुका-श-इतुल कुलूब" के सफ़हा 267 पर है अेक बुज़ुर्ग़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इरमाते हैं : इन्सान जितना तंगदस्ती से डरता है अग़र उतना जहन्नम से डरता तो दोनों से नज़ात पा लेता, और जितनी इसे दौलत से महब्बत है अग़र जन्नत से उतनी महब्बत होती तो दोनों को पा लेता, और जितना ज़ाहिर में लोगों से डरता है अग़र उतना बातिन में अल्लाह तआला से डरता तो दोनों जहानों की सआदतें पा लेता. (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص 129) अग़र जौइके फ़ुदा ख़ुद के बज़ाये सिर्फ़ लोगों के डर से ही गुनाह छोड़ने का ज़ज़्बा रखा तो ज़ो गुनाह लोगों में बाइसे शर्म नहीं होंगे उन पर बेबाकी और ज़ुरअत बढती यली ज़ायेगी और आज कल इस के नज़्ज़ारे आम हैं म-सलन बे नमाज़ी होना अब मुसल्मानों में إِنَّا لِلَّهِ وَأِنَّا إِلَيْهِ رَاغِبُونَ बाइसे शर्म व आर नहीं रखा तो डालत येह हो युकी है के गालिबन दुन्या के 95 ईसद मुसल्मान नमाज़ नहीं पढते और ज़ो पढते है उन में शायद 99 ईसद को दुरुस्त नमाज़ पढनी नहीं आती और सीपने की ज़हमत भी कम ही करते हैं !! अइसोस सद करोड अइसोस ! के नमाज़ों के अवकात में मुसल्मानों के दुन्यवी कारोबार धूम धउक़े से ज़री रहते हैं. नमाज़ के मुकाबले में २-मज़ानुल मुबारक में "रोज़ा" न रपना मुसल्मानों में ज़ाहिर अब भी कदरे मा'यूब समज़ा जाता है लिहाज़ा ज़ो रोज़ा नहीं रपते उन में के अक़सर लोग इस का इज़हार नहीं होने देते और दिन के वक्त छुप कर पाना पाते हैं. काश ! हर अमल अल्लाह ख़ुद के लिये करने का म-दनी ज़ेह्न बन ज़ाये. मेरे आका आ'ला डज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ उदाइके बफ़्शिश शरीफ़ में इरमाते हैं :



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अजाल)

धुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह भबरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देष सर पे तलवार है क्या होना है
काम जिन्दा¹ के किये और हमें शौके गुलजार है क्या होना है
ईस कडी धूप को क्यूंकर जेवें शो'ला उन नार है क्या होना है
उन को रद्म आये तो आये वरना वोह कडी मार है क्या होना है
मुंड दिवाने का नहीं और सहर² आम दरबार है क्या होना है

वे वोह डाकिम के सिपाडी आये

सुब्ह ईजहार है क्या होना है

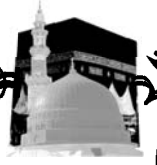
गीबत से बयने की तरबियत किस तरह डसिल हो ?

सुवाल : “गीबत की तबाह कारियां” पढ कर येह अहसास हुवा के वाकेई मुआ-शरे की अक्सरियत गीबत की लपेट में है, तकरीबन आवे का आवा ही बिगडा हुवा है, उमूमन तवज्जोह भी नहीं छोती और कई गीबतें अपनी नुहूसतें लुटा चुकी छोती हैं. जैसे डोशरुबा डालात में मुआ-शरे के अन्दर ईन्सान केसे गुजारा करे ? घर, दुकान, बाजार, महल्ला, दोस्त अडबाब की बैठकें जिधर जायें अक्सर गीबतें ही गीबतें ! गीबत से बयने की तरबियत केसे डसिल हो ? मुआ-मला बहुत ही मुश्किल मा'लूम हो रहा है !

जवाब : देपिये ! दस्तूर येही है के हर काम सीपने से आता है अगर किसी काम के बारे में पहले ही से जेहन बना लिया जाये के येह बहुत मुश्किल है ! तो फिर नफ़िसयाती तौर पर ईस का असर येह होता है के वोह वाकेई मुश्किल बन जाता है. अगर ज़बान पर कुईले मदीना लगा रहे, अख़ी बुरी सोडबत की तमीज़ आ जाये, तन्हाई में दिल लगाने की मशक कर ली

ادبیتہ

1. कैदपाना 2. सुब्ह



जाओ तो एक गीबत ही क्या मज्जीद बे शुमार गुनाहों से भी जान छूट सकती है. किसी चीज को सीखने के लिये उस की धुन होनी जरूरी है, म-सलन ड्राइविंग ही को ले लीजिये, वाकेई एस का सीखना इन्तिहाई दुश्वार अम्र है येह तसव्वुर ही कितना भौइनाक है के जान छथेली पर ले कर गाडी यलानी होगी जरा भी यूकेंगे तो हाथ पैर तुडवा बैठेंगे या जान ही यली जाओगी ! ड्राइविंग की तरबियत लेने वाला पडले पडल तो स्टेरिंग पर हाथ रभते ही कांप जाता होगा. क्यूंके उसे येह बताया जाता है के दो पाउं से एक साथ क्लच, ब्रेक और अक्सीलेटर (clutch, break, Accelerator) को संभालना है, फिर दो हाथों से स्टेरिंग के साथ साथ गीअर (gear) को भी हस्बे जरूरत बदलते रहना है, साथ ही गाडी यलाते हुअे ईन दो आंणों से आगे, पीछे, दाअें और बाअें भी देभना है, तरबियत लेने वाले को एस बात का भी भयाल रभना है के न मुज से किसी को नुक्सान पछोंये और न ही मुजे कोई नुक्सान हो. आभिरे कार तरबियत लेते लेते वोह गाडी यलाना सीभ ही जाता है. सारी गाडियों में रेलगाडी यलाना शायद सब से मुश्किल काम है, येही वजह है के तय्यारा उडाने वाला (PILOT) आप को नौ जवान मिल जाओगा मगर रेलगाडी का ड्राइवर सिर्फ उधेउ उम्र ही का मिलेगा क्यूंके एस के लिये इतनी तवील मुद्दत तक मश्क करनी पडती है के जवानी ही रुप्सत हो जाती है ! एस के बा वुजूद रेलगाडी के ड्राइवरों की भी एक ता'दाद दुन्या में मौजूद है.

हमारी अक्सरियत को बात करना ही नहीं आती : बहर हाल हमें बात करने की भी तरबियत लेनी होगी और एस की अेइतियातें भी सीखनी होंगी, ज हां अन्दजे गुफ्त-गू को यक्सर बदल कर एस पर आजिजी व नरमी का पानी यढाना और हुस्ने अप्लाक की मुलम्मअ कारी और भूभ पोलिश करनी होगी. यकीन मानिये आज हमारी गालिब अक्सरियत को शरीअत व सुन्नत के मुताबिक बातचीत करना ही नहीं आती, मा'मूली सा भिलाई मिजाज मुआ-मला होते ही अर्र्हा भासा



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुज़ पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (भाषा)

मज़़ुबी वज़्अ कत्अ का आदमी भी अेक दम ज़रिखाना अन्दाज़ पर उतर आता है ! अेक गीबत ही नहीं, तोहमत, युगली, बढ गुमानी, जूटा मुभा-लगा, दिल् आज़ारी और ँजाअे मुस्लिम के तअल्लुक से बहुरत सारी यीज़ें आज कल की जाने वाली अकसर गुफ़्त-गू का डिस्सा डोती हैं. लिहाज़ा दिल् बरदाश्ता हुअे बिगैर अव्वलन ँस बात को तस्लीम कर लीजिये के डमें दुरुस्त बोलना ही नहीं आता मगर जिस तरड पैडम कोशिश के बा'द ँन्सान अेक अख़ा ड्राँवर बन जाता है, डम भी मुसल्सल जिदो जडूद करेंगे तो ﷻ शरीअत व सुन्नत के मुताबिक बात करना सीप ही ज़ांगे.

गीबत के ज़रूरी अडकाम सीपना इर्ज़ है : गाडी यलाने के लिये बदन के अकसर आ'ज़ा म-सलन दिमाग, आंभें, कान, डथ, पाँउ वगैरा अेक ही वक़्त में सरगमें अमल (ACTIVE) रभे ज़ा सकते हैं तो आबिर गीबत से बयने के लिये डम योकन्ने क्यूं नहीं रड सकते ! गाडी यलाने में भता की सूरत में माली व ज़ानी नुक़सानात का अन्देशा है लेकिन गीबत का ँलाज वगैरा न सीपने में जडन्म में ज़ा पडने का बढशा है. याद रभिये ! ज़े ड्राँविंग नहीं ज़ानता वोड मा'भूली सा भी गुनडगार नहीं ज़ब के गीबत ज़े के मोडलिकात (या'नी डलाक करने वाली यीज़ें) में से है, ँस के ज़रूरी अडकाम ज़ानना डर मुसल्मान आकिल बालिग पर इर्ज़े अैन है और गीबत के बारे में ज़रूरी मसाँल न ज़ानने वाला गुनडगार और जडन्म का डकडार है.

गीबत कड़ंगा न सुनूंगा : भीठे भीठे ँस्लामी भाँयो ! “गीबत” से बयने की तदबीर करते रहिये ﷻ ज़रूर करम डोगा और ँस से बयना भी आसान डो ज़ाअेगा. किसी जिम्मेदार ँस्लामी भाँय का बयान है के अेक दिन मेरे पास ज़ुदा ज़ुदा वक़्त में डो ँस्लामी भाँय कुँ ँस अन्दाज़ से आअे के मैं समज़ गया के अब गीबत की नुडूसत में इंसे ही इंसे, मैं ने अपने सीने पर सज़ा हुवा वोड कार्ड डोनों को पढा दिया जिस पर जली हुडूफ़ में लिप़ा था : गीबत कड़ंगा न सुनूंगा (ﷻ) ँस की ब-र-क़त येड ज़ाडिर डुँ के अेक तो युप साध गया ज़ब के दूसरे ने भूब संभल



इरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुज पर ओक दुर्रद शरीफ पढता है अल्लाह उरस के लिये ओक कीरात अज्ज लिफता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अज्ज)

कर गुफ्त-गू की और वोह भी इकत दो मिनट. (कार्ड दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना से लदिय्यतन तलब किया जा सकता है)

क्या शिकायत सुन ली नहीं सकते ? : देबिये ! बिदकुल ऐसा भी नहीं है के हर हर बात गुनाहों त्बरी गीबत ही हो, तन्जीमी मसा'ल के लल के लिये शिकायत भी सुनी जा सकती हैं और इस का लल भी पेश किया जा सकता है मगर कुछ अलतियाती तदाबीर इप्तियार की जाओं म-सलन जो गीबत के इप्तिवा का भौफ महसूस करे वोह आने वाले को इप्तिदाअन मु-तज्करा जिम्मेदार की तरह कार्ड पढा दे या ज्बानी ही कह दे : **إِنَّ الْبُيُوتَ الْأَقْدَمَ لَأَكْبَرُ** गीबत करुंगा न सुनुंगा. "गीबत की ता'रीफ" बता दे, गीबत पर अजाब की ओक आध वईद सुना दे और दर-ज्वास्त करे के सिर्फ हस्बे जरुरत ही शिकायत कीजिये नीज जैसे मौकअ पर इस बात का भास जयाल रभा जाओ के ओक भी गैर जरुरी इद गुफ्त-गू में शरीक न होने पाओ. दा'वते इस्लामी की मर्कजी मजलिसे शूरा की तरफ से इनायत कर्दा म-दनी मश्वरों में पढ कर सुनाने वाले **19 म-दनी इूलों में** की येह तहरीर हो सके तो डिफुज कर लीजिये. **إِنَّ الْبُيُوتَ الْأَقْدَمَ لَأَكْبَرُ** गीबत वगैरा गुनाहों से बयने में बहुत महद मिलेगी. वोह तहरीर येह है : आइये हाथों हाथ कुछ अच्छी अच्छी निय्यतें भी किये लेते हैं : **إِنَّ الْبُيُوتَ الْأَقْدَمَ لَأَكْبَرُ** गीबत करुंगा न सुनुंगा **✽** युगली नहीं जाउंगा **✽** किसी जिन्दा या (मुदा) मुसल्मान के अन्दर मौजूद जामी या बुराई को बिला इजाजते शर-ई पीठ पीछे बयान कर के गीबत, मुंह पर बयान कर के हिल आजारी और जिस ने बुराई न की हो इस के बा वुजूद उस की तरफ बुराई मन्सूब कर के तोहमत का गुनाह नहीं करुंगा. सरकारे मदीना मुस्तफा ﷺ का इरमाने इब्रत निशान है : "गीबत करने वालों, युगुल जोरों और पाकबाज लोगों के औब तलाश करने वालों को अल्लाह उरस (कियामत के दिन) कुत्तों की शकल में उठाओगा." (अल-तरगीब व-ल-तर्हीब ज ३ व ३२० हदीथ १०) **युगली की ता'रीफ :** किसी की बात जरर (या'नी नुक्सान) पड़ोयाने के इरादे से दूसरों को



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये ईस्तिग़ार करते रहेंगे. (उज़र)

पड़ोयाना युगली है. (عُمدَةُ القارى ج ٢ ص ٥٩٤ تحت الحديث ٢١٦) ❀ किसी के बारे में दिल में बुरा यकीन कर लेने से बयूंगा के येह बढ गुमानी है. आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ نكَل इरमाते हैं : ખબીસ ગુમાન (યા'ની બદ ગુમાની) ખબીસ દિલ से निकलता है. (इतावा र-उविख्या जि. 20, स. 231) ❀ जूटी मुभा-लगा आराई, जुशामद, जुद पसन्दी (या'नी अपनी राय को ही दुरुस्त समजने) से बयूंगा.

काश ! हमारा येह जेह्न बन जाये के जूं ही किसी मुसल्मान का “भन्ही तजकिरा” निकले झौरन ખબરदार હો જાએ ઔર ગौर करें, अगर वोह गीबत हो तो झौरन इस से बाज आ जाये कोई और येह गुफ्त-गू करने लगा हो तो उस को मुनासिब तरीके पर रोक दें, अगर वोह बाज न आये तो वहां से उठ जाये, या बात बढल दें. अगर उसे रोकना या अपना वहां से उटना मुम्किन न हो तो उस गुफ्त-गू में दिल यस्पी न लें बल्के दिल में बुरा जानें.

अप्लाक हों अखे मेरा किरदार हो सुथरा

महबूब के सढके में मुजे नेक बना दे

तन्जीमी मसाईल का हल और गीबत : शैतान गीबतें करवा कर दीन के म-दनी काम का ली बहुत नुकसान करवाता है. लिहाजा अगर आप किसी ईस्लामी भाई में बुराई पाये तो बिदा ईजाजते शर-ई दूसरों पर ईजहार कर के गीबत का कबीरा गुनाह करने के बजाये बराहे रास्त उसी को अकेले में नरमी के साथ समजाईये अगर नाकामी हो तो ખામોશી ईप्तिયार इरमाईये और उस के लिये दुआ कीजिये. अगर दीनी नुकसान का अन्देशा हो तो अपने जैली मुशा-वरत के निगरान को तन्हाई में बता कर या लिख कर उस का तआवुन हासिल कीजिये जब के वोह मस्अला हल कर सकता हो. वरना शरीअत के दाअरे में रहते हुअे मजीद आगे म-सलन हल्का मुशा-वरत के निगरान से रुजूअ कीजिये, यहां ली बात न बने तो ब तदरीज (या'नी तरतीब वार) ओपर वाले जिम्मेदार से तरकीब बनाईये. याद रबिये ! अगर शर-ई मस्लहत के बिगैर किसी ऐक से ली ज्वाह वोह कितना ही बडा



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरेदे पाक पढा अदलाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रइमतें बेजता है. (म)

तन्जीमी जिम्मेदार हो उस ईस्लामी त्माई की बुराई बयान की तो आप गुनहगार व अजाबे नार के हकदार हो जाअेंगे. अगर आप ने बात आम कर दी और गीबतों, तोहमतों, बह गुमानियों, अैब दरियों और हिल आजारियों के गुनाहों का दरवाजा खुल गया, अलाके में तन्जीमी मसाईल षडे हो गअे और सुन्नतों तरे म-दनी कामों को भी नुकसान पड़ोया तो येह सब मुआ-मलात आप की आभिरत के लिये सप्त नुकसान देह साबित हो सकते हैं.

इतने इैलाने की वईदें : जो बह नसीब लोग मुसल्मानों में बुरे यर्ये जगाते और इतने उहाते हैं उन को उर जाना याहिये के पारह 18 सू-रतुन्नूर आयत नम्बर 19 में अदलाह عَزَّوَجَلَّ का इरमाने ईअ्रत निशान है :

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
 तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : वोह लोग जो याहते हैं के मुसल्मानों में बुरा यर्या इैले उन के लिये दर्दनाक अजाब है दुन्या और आभिरत में.

बा'ज लोग बहुत ही जगडावू तभीअत के मालिक होते हैं, ज्वाह म ज्वाह गीबतें करते, युग्लियां षाते, तन्कीदें करते, बाल की षाल उतारते, बात बात पर इसादात बरपा करते और मुसल्मानों के लिये ईजा का बाईस बनते रहते हैं, अैसे लोगों को उर जाना याहिये के पारह 30 सू-रतुल बुरज की दसवीं¹⁰ आयते मुबा-रका में रब्बुल ईबाद عَزَّوَجَلَّ का ईशदई ईअ्रत बुन्याद है :

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ
 तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : बेशक जिन्हों ने ईजा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को इर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अजाब है और उन के लिये आग का अजाब.



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جئى الله تعالى عليه و آله وسلم : جئى شاپس मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

इतना जगाने वाले पर ला'नत : उदीसे पाक में है : “इतना सोया हुआ होता है उस पर अल्वाह्द الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّبُطَى ص ३७० حديث ०११० की ला'नत जो इस को बेदार करे.”

अगर मीजां पे पेशी हो गई तो छाओ ! बरबादी !! गुनाहों के सिवा क्या मेरे नामे में भला निकले !
करम से उस घडी सरकार पर्दा आप रभ लेना सरे महशर मेरे औंओं का जिस दम तजकिरा निकले

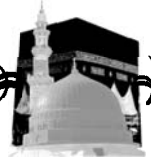
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

धन्किरादी कोशिश के गलत अन्दाज का इर्जी मुका-लमा : धन्किरादी कोशिश करने में सुवालात से परहेज करना बहुत मुनासिब है क्यूंके बा'ज सुवालात सामने वाले को मुरुव्वत में जूट भुलवा सकते हैं, “धन्किरादी कोशिश” के गलत अन्दाज को इर्जी मुका-लमे की सूरत में पेश करने की सअ्य करता हूं : बाबुल मदीना के किसी मुबद्लिग और जैद की मुलाकात हुई, सलाम हुआ के बा'द मुबद्लिग ने धन्किरादी कोशिश करते हुआ सुवाल किया : इफ्तावार इजतिमाअ में आते हैं या नहीं ?

जैद ने शिर्कत से महइमी के बा वुजूद येह सोचते हुआ के बाबुल मदीना में होने वाले इजारों के इजतिमाअ में मेरे आने न आने का इस “मुबद्लिग” को पता चलने से रहा लिहाजा मुरुव्वत में कह दिया : ज हां.

मुबद्लिग ने अपने जो'म (या'नी जयाल) में काम पक्का करने के लिये पूछा : क्या पाबन्दी से आते हैं ?

जैद जो के अेक बार जूट बोल चुका था उस से इन्कार न बन पडा इस लिये कह दिया : क्यूं नहीं.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (हंन)

मुबद्लिग : अख़्श जल्दी आ जाते हैं या देर से ?

जैद जो के पहली बार जूट बोल कर इंस युका था और दूसरी बार भी जूट बोल दिया था यूं दिल् भी जूट के हवाले से जुलने लगा था लिहाजा बोल उठा : में तो जल्दी जल्दी आ कर बैठ जाता हूं.

मुबद्लिग : ﷺ! अख़्श येह तो बताईये सारी रात रुकते हैं या नहीं? तलज्जुद के लिये उठते हैं या नहीं? वहीं बा जमाअत नमाजे इज्ज अदा करते हैं या नहीं? इर म-दनी हल्ले में शिर्कत करते हैं या नहीं? एशराक व याशत के नवाइल और एज्जितामी सलातो सलाम पढ कर ही घर जाते हैं ना ?

जैद ने मुरुव्वत में : हां हां, क्यूं नहीं, ज़, बेशक कलते हुअे हर सुवाल की तौसीक कर दी और जान छुडाने के लिये जूं ही पल्टा के मुबद्लिग ने कन्हे पर हाथ रभते हुअे कहा : अख़्श येह तो बताते जाईये ! एस साल तीन रोज़ा एज्जतिमाअ में मुल्तान शरीफ़ भी आअे थे ना ?

जैद जो के बिदकुल नया ईस्लामी भाई था एस ने सोया के अगर “ना” कलूंगा तो येह मुबद्लिग नाराज हो जाअेगा और लेक्यर सुनाअेगा, लाभों के एज्जतिमाअ में किस को पता के कौन आया था और कौन नहीं लिहाजा यहां भी जूट का सडारा लेते हुअे उस ने कल दिया : आया था.

मुबद्लिग : पहले दिन आअे थे या आभिरी दिन ?

जैद : पहले ही दिन से आ गया था.

मुबद्लिग : अख़्श येह तो बताईये के अकेले आअे थे या दोस्तों को भी साथ लाअे थे ?

जैद : हम यार दोस्त मिल कर आअे थे.

मुबद्लिग : भाई ! वहां से आप यारों ने हाथों हाथ म-दनी काइलों में सइर भी किया या नहीं ?



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے مومنوں پر ایک بار دھڑکے پاક پڑا اذلالاہ عزوجل (اس پر دس رولمرتوں بےજતા છે. (س)

ઝેદ : જી હાં, ક્યૂં નહીં. અચ્છા મેં ચલતા હું.....

મુબલ્લિગ : અરે ભાઈ ઝરા ઠહરિયે ! યેહ તો બતાઈયે કે મ-દની ચેનલ દેખતે હેંં યા નહીં ?

ઝેદ ને મુરુવ્વત મેં યહાં ભી ઝૂટઘૂટ “હાં” કહ કર જાન છુડાઈ. (મગર અભી જાન કહાં છૂટી થી મુબલ્લિગ નેં મઝીદ એક ઔર સુવાલ જડ દિયા)

મુબલ્લિગ : અચ્છા યેહ તો બતાઈયે દૂસરોં કો મ-દની ચેનલ દેખને કી દા’વત ભી દેતે હેંં યા નહીં ?

ઝેદ : (જો કે 13 અદદ ઝૂટ બોલ ચુકા થા, યહાં ભી ઉસ ને ઝૂટ બોલ દિયા) ક્યૂં નહીં મેં ને તો સારે ખાનદાન વાલોં મેં મ-દની ચેનલ કી તશહીર કર દી છે. અચ્છા મુઝે ઈજાઝત દીજિયે.

દેખા આપ ને ! મુબલ્લિગ અગર્યે મઝકૂરા સુવાલાત કર કે ગુનહગાર ન હુવા તાહમ ઈસ કે ઈન્ફિરાદી કોશિશ કે ગલત અન્દાઝ કે સબબ ઝેદ ઝૂટ કે 15 અદદ ગુનાહોં મેં ફંસા. બેશક ઝેદ હી ગુનહગાર હુવા કે યહાં કોઈ ઈકરાહ કી સૂરત ન થી યા’ની સચ બોલને મેં જાન ચલી જાને યા શદીદ પિટાઈ હોને યા કિસી ઉઝ્વ કે બેકાર કર દિયે જાને વગૈરા કા અન્દેશા નહીં થા ઔર ન હી ઝૂટ કી ઈજાઝત કા કોઈ દૂસરા સબબ પાયા જા રહા થા, મુરુવ્વત મેં ઝૂટ બોલે થે જિન કી શરીઅત મેં ઈજાઝત ન થી.

ઈન્ફિરાદી કોશિશ મ-દની કામોં કી જાન છે : ઈન્ફિરાદી કોશિશ મ-દની કામોં કી જાન છે, દા’વતે ઈસ્લામી કા તકરીબન 99 % મ-દની કામ ઈન્ફિરાદી કોશિશ સે હી હો રહા છે. ઈન્ફિરાદી કોશિશ કી રૂહ મિલન-સારી છે, ઈન્ફિરાદી કોશિશ વાલે કે લિયે મુખાતબ (યા’ની જિસ સે બાત કર રહા છે ઉસ) કી નફિસયાત પરખ્ના બેહદ ઝરૂરી છે. ગફલત વ બે એહતિયાતી કા દૌર છે આજ કલ અક્સર બિલા તકલ્લુફ ઝૂટ બોલા જાને લગા છે ઈસ લિયે સખ્ત એહતિયાત કી હાજત છે, હમ જબ કે મુસલ્માનોં કો નેક બનાને કે મુસ્તહબ કામ કી કોશિશ મેં લગે હેંં તો



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عن النبي صلى الله عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

आभिर येह कहां की समजदारी है के किसी को नेक बनाने के लिये उस को गुनाहों में धकेलने वाले अन्दाज इप्तिवार किये जाअें हमारी तो येह कुढन हो के हर मुसल्मान को गुनाहों से बचाया जाअे लिहाजा इन्किरादी कोशिश हो या म-दनी काइला या इजतिमाअ के सुन्नतों तरे हलके हों या दीन दुन्या कोई सा मुआ-मला कहीं भी किसी अेक इर्द से बराहे रास्त ईसी तरह के सुवालात न किये जाअें, जिस की वजह से उस के जूट में मुभ्तला होने का भतरा पैदा हो अलबत्ता म-दनी मश्वरे जिन में जिम्मेदारान से कारकईगी ली जाती है उन में ज़रतन सुवालात करने में हरज नहीं. ईसी तरह मदारिस में तरबियत के लिये असातिजा त-लबा से सुवालात करते हैं इस में भी कोई मुआ-यका नहीं.

आप नमाज पढते हैं या नहीं ? : बा'ज नादान इस्लामी त्माई इन्किरादी कोशिश करते हुअे येह तक सुवाल कर देते हैं : त्माई नमाज पढते हैं या नहीं ? नमाजी होने की सूरत में बा'ज अवकात येह सुवाल उस को ना गवार गुजरता है के क्या सिर्ई येह "भौलाना साहिब" ही नमाज पढते हैं ! और अगर बे नमाजी हुवा तो इन्कार कर देता है और इस तरह वोह तर्के नमाज के गुनाह के साथ साथ गुनाह के इजहार के गुनाह में भी इंस जाता है, जो हां बिला मस्व-हते शर-ई गुनाह का इजहार भी गुनाह है. म-सलन बिला इजजते शर-ई येह कलना गुनाह है के मैं नमाज नहीं पढता, मैं तो बे नमाजी हूं या था, मैं र-मजानुल मुबारक के रोजे नहीं रभता इतने रोजे नहीं रभे. मैं इज की नमाज नहीं पढता, मैं इल्में डिआमे देभता हूं, गाने बाजे सुनता हूं, बढ निगाही से नहीं बयता, मैं गीबतों, युग्लियों वगैरा गुनाहों में मुभ्तला हूं या था या कहा मैं योर, डकू, शराबी, जूआरी हूं या था वगैरा वगैरा. अगर कोई द्वा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में आ कर इस्लाह पजीर हुवा और उस ने इस नियत से अपने साबिका गुनाहों का इजहार किया ताके लोग गुनाहों से ताईब हों और द्वा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की तरई माईल हों इस में हरज नहीं. वोह लोग यकीनन गुनहगार होते हैं जो के बिला इस्लाहे नियत प्वाह म प्वाह अपना रो'ब डालने या लोगों को हैरत में डालने या उन की तवज्जोह और हमदर्दी हासिल करने के लिये जराईम का इजहार



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह भद भप्त हो गया. (हदीस)

करते रहते हैं के मैं तो पहले डांसर था, दहशत गर्दी करता था, मैं ने लोगों पर छुरियां यलाई हैं, लोगों को भौंझटा करने के लिये ખૂબ ફાયરिंग करता था, ઇतने ઇતने કતલ કિયે હેં, કાતિલ હૂં, ડકૈતિયોં મેં માહિર થા, જૂઆ કા અડા ચલાતા થા વગૈરા. નીઝ બિલા ઇજાઝતે શર-ઈ કિસી આકિલ બાલિગ મુસલમાન સે યેહ સુવાલ કરના હી ગલત હૈ કે આપ નમાઝ પઢતે હેં યા નહીં? આપ ફજ કે લિયે ઉઠતે હેં યા નહીં? વગૈરા. ક્યૂંકે અગર ઇસ સુવાલ સે સામને વાલે કે તર્કે નમાઝ કી મા'લૂમાત હાસિલ કરના મકસૂદ હૈ તો યેહ ગુનાહ કી ટોહ (યા'ની તલાશ) મેં લગના હૈ ઓર કુરઆને પાક મેં ઇસ સે સાફ સાફ મન્અ કિયા ગયા હૈ યુનાન્હે પારહ 26 સૂ-રતુલ હુજુરાત આયત નમ્બર 12 મેં ઇશાદ હોતા હૈ : **وَلَا تَجَسُوسُوا** (તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઇમાન : ઓર એબ ન ઢૂંઢો) ઓર અગર ગુનાહ કી મા'લૂમાત કા તજસ્સુસ મકસૂદ નહીં હૈ તબ ભી યેહ સુવાલ સામને વાલે કે લિયે ઇઝહારે ગુનાહ કા સબબ હો સકતા હૈ. બહર હાલ “ઈન્ફિરાદી કોશિશ” મેં સુવાલાત કે બજાએ કોઈ ફઝીલત સુના દીજિયે ઓર નમાઝ કી તરગીબ ઇસ અન્દાઝ મેં દિલાઈયે કે વોહ નમાઝી હો તબ ભી ઉસ કો બુરા ન લગે ઓર બે નમાઝી હો તબ ભી બોલ ન પડે કે મેં બે નમાઝી હૂં, નીઝ ઉસ કે અલાકે કી ઉસ મસ્જિદ મેં નમાઝ કી દર-ખ્વાસ્ત કીજિયે જહાં દા'વતે ઇસ્લામી કા મ-દની કામ હો રહા હો.

સુવાલાત કે બજાએ તરગીબાત સે કામ લીજિયે : ઇજતિમાઅ ઓર મ-દની કાફિલે મેં સફર વગૈરા કે લિયે ઇન્ફિરાદી કોશિશ મેં સપ્ત ઝરૂરત કે બિગૈર સુવાલાત કર કે કિસી કો શરમિન્દા કરને, મુરુવ્વતન ઝૂટ બોલ દેને યા ગુનાહ કા ઇઝહાર કર બૈઠને કે ખતરાત મેં ડાલને કે બજાએ તરગીબી અન્દાઝ ઇખ્તિયાર કીજિયે ઓર ઇજતિમાઅ વ મ-દની કાફિલે કી બ-ર-કતે ઓર ફઝીલતે બયાન કીજિયે. અગર સામને વાલા “સિઈ હાં” કહે તો ઉસ સે **إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ** ભી કહલવા લીજિયે. ઓર મુખ્કિના સૂરત મેં યેહ ભી કહ દીજિયે કે હમેં મા'ના પર નઝર રખતે હુએ **إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ** કહને કી આદત ડાલની ચાહિયે **إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ** કે મા'ના હેં “અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ને ચાહા તો” ઓર વાકેઈ અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** કે ચાહે બિગૈર હમ કુછ ભી નહીં કર સકતે. મ-દની કાફિલે મેં સફર કી તારીખ લે લીજિયે, નામ વ પતા, ફોન નમ્બર વગૈરા અપને પાસ મહફૂઝ કર લીજિયે. ઓર ઉસ



इरमाने मुस्तफ़ी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मिशक़ुह)

वक्त तक राबिता करते रहिये, जब तक सफ़र मुकम्मल कर लेने की सआदत हासिल न कर ले. और बा'द में भी उस से भरबूत (या'नी राबिते में) रहिये यहां तक के वोह म-दनी माडोल में रय बस कर दूसरों को म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर बनाने वाला न बन जाये.

वा'दा करने के अल्फ़ाज : जब भी किसी से एजतिमाअ में शिक़त या म-दनी काफ़िले में सफ़र वगैरा का वा'दा लें तो والله لا يوفى عهده (और जो मा'ना न जानता हो उस से “अल्लाह لا يوفى عهده ने याहा तो”) ज़रूर क़हलवा लिया करें, के इस तरह वा'दा भिलाई के गुनाह से बयत रहेगी. क्यूंके अगर हिल में वा'दा पूरा करने की निय्यत न होने के बा वुजूह अगर उस ने जान छुडाने के लिये म-सलन क़ह दिया : मैं वा'दा करता हूं इलां दिन म-दनी काफ़िले में सफ़र क़रूंगा” तो वोह वा'दा भिलाई के गुनाह में पड जायेगा. हां अगर उस ने लफ़ज “वा'दा” नहीं बोला बल्के म-सलन इस तरह के अल्फ़ाज क़हे : “मैं इलां दिन म-दनी काफ़िले में सफ़र क़रूंगा” तो ज़रूरी नहीं के येह वा'दा ही हो मइज़ एतिलाअ भी हो सकती है. एतिलाअ का मतलब होता है “किसी को किसी काम के करने या न करने की ખबर देना.” एतिलाअ देते वक्त निय्यत का बहर डाल अे'तिबार है, म-सलन ખबर देने की निय्यत से नहीं सिर्फ़ जान छुडाने के लिये क़ह दिया के इस जुमा'रात को एजतिमाअ में आउंगे या इलां दिन म-दनी काफ़िले में सफ़र क़रूंगा मगर हिल में निय्यत येही हो के एजतिमाअ में नहीं जाउंगे, उस दिन सफ़र नहीं क़रूंगा तो येह अगर्ये वा'दा भिलाई न हुए मगर जूट हुवा. वा'दा येह है के किसी से बा काएदा वा'दे के तौर पर तै किया के “इलां काम क़रूंगा या इलां काम नहीं क़रूंगा” अगर लफ़ज “वा'दा” न क़हा मगर अन्दाज व अल्फ़ाज के जरीअे अपनी बात को **मुअक्क़द** किया या'नी उस बात की ताकीद जाहिर की तब भी “वा'दा” है म-सलन “म-दनी काफ़िले” में सफ़र क़रूंगा के साथ “वा'दा करता हूं” क़हा, या येह क़हने के बजाअे क़हा : **बिल्कुल पक्की** बात क़ह रहा हूं या क़हा : **यकीन मानिये**, या क़हा : **बिल्कुल तै है** के, या क़हा : **नहीं नहीं आप मुत्मईन रहिये** के, या क़हा : **बस अब तै हो गया के...** वगैरा. इस की मिसाल यूं हूं जैसा के “मंगनी” के येह वा'दा है अगर्ये इस में “वा'दे” का लफ़ज नहीं बोला जाता मगर बा काएदा लउकी वालों से तै किया जाता है और यहां “तै करना” ही वा'दा है.



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुर्रद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مبارکات)

“वा’दा नहीं ँरादा कर लीजिये” कडलवाना कैसा ? : बा’ज लोग येड जुम्ला बोलते हैं : “यलिये वा’दा नहीं करते तो ँरादा ही कर लीजिये” हो सकता है के ँस तरड ँरादा या नय्यत करवाना भी बहुत सों को गुनाहों में मुत्तला कर देता हो. जू हां, दल में ँरादा (या’नी नय्यत) न होने के बा वुजूद म-सलन कलसी ने कड दलया के “में ँरादा (या नय्यत) करता हूं 12 माह (या 30 दलन या तीन दलन) के म-दनी काङ्कले में सङ्गर कड़ंगा.” तो येड सरीह (या’नी जुला) जूट है. ललहाजा जब भी कलसी से ँरादा करवाअें साथ में **إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** भी कडलवा ललया करें तो अगर दलल में ँरादा न भी हुवा अगला गुनाह से बय जअेगा.

“कोशलश कड़ंगा” कडलवाना : “कोशलश कड़ंगा” कडने में भी गुनाह में पडने का भतरा भौजूद है या’नी दलल में नय्यत न होने के बा वुजूद जअन ह्युडाने के ललये कड दलया “कोशलश कड़ंगा”, तो येड भी जूट है ललहाजा यूं कडलवाँये : “में **إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कोशलश कड़ंगा या अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने याहा तो कोशलश कड़ंगा.” येड जुम्ला, “कोशलश कड़ंगा” हमारे यहां बहुत ही आम है कडने वाले को पडले अपनी नय्यत पर गौर कर लेना याहलये. अगर “कोशलश कड़ंगा” कडने के साथ में “**إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**” कडने की आदत पड गँ तो **إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आङ्कल्यत ही आङ्कल्यत है. **إِن شَاءَ اللَّهُ** कडते वक्त ँस के मा’ना पर भी नजर रभी जअे, **إِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** के मा’ना हें : “अद्लाह ने याहा तो” अकसर लोग ँस का तलङ्कल गलत अदा करते हें, सहीह अदाअेगी की पूब भश्क कीजलये : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ**

إِن شَاءَ اللَّهُ कड कर भी बात को नलभाँये : भीठे भीठे ँस्वामी भाँयो ! भलन कुदले वुजूह (या’नी हर डाल में) जुद भी भोडतात जुम्ले बोलने की कोशलश इरमाँये और दूसरों से भी भोडतात जुम्ले कडलवाँये. ँङ्कलरादी कोशलश के दौरान ज्वाह कलसी से वा’दा लें, ँरादा करवाअें या कोशलश कड़ंगा



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुअ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत कइंगे। (क़ुरआन)

कहलवाओं साथ में **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कहलवाना न भूलें, ईसी तरह आप भी अपने लिये **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कहने की आदत बनाईये. मगर इस तरह के जुम्हों को भी निभाना ही मुनासिब होता है वरना अवाम बढ जन छोते और बसा अवकात गीबतों वगैरा पर उतर आते हैं के हुलां ने हमारे साथ वा'दा भिलाई की वगैरा.

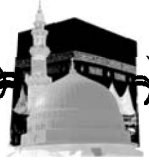
बढ गुमानी मत कीजिये : देबिये ! यहां आप ने भुद को बढ गुमानियों से बयाना और हुस्ने जन निभाना है या'नी कराईने वाजेहा के बिगैर किसी के बारे में येह जेहन नहीं बनाना के हुलां ने गलत वा'दा कर के या कोशिश कइंगे या ईरादा करता हूं कह कर जान छुडा ली, आप उस को सख्या ही तसव्वुर कीजिये.

हां में सर हिला देना : किसी को आयन्दा के लिये कुछ करने या ईजतिमाअ वगैरा में आने का कहा जाये तो उमूमन जान छुडाने के लिये ईस्बात (या'नी हां) में सर हिला देते हैं मगर दिल में तै छोता है के येह जो कुछ कह रहा है मैं इस के मुताबिक अमल नहीं कइंगे। येह भी भा'ज सूरतों में जूट और भा'ज सूरतों में वा'दा भिलाई है. औसों की रहनुमाई और उम्मत की भलाई की अख़री अख़री निख्यतों से यन्द रिवायात व म-दनी हिदायात मुला-हज़ा इरमा लीजिये. **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बे धन्तिहा झायेदा डोगा.

पारह 15 सूरअे बनी ईस्राईल आयत नम्बर 34 में ईशादि रब्बुल ईबाद **عَزَّوَجَلَّ** है :

إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : बेशक अह्द से सुवाल डोना है.

वा'दा भिलाई मुनाफ़िक की निशानियों में से है : अल्लाह के महबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईअ्रत निशान है : मुनाफ़िक की तीन निशानियां हैं : जब बात करे जूट कहे, जब वा'दा करे भिलाई करे और जब उस के पास अमानत रपी जाये भियानत करे. (صحيح بخارى ج ١ ص ٢٤ حديث ٣٣)



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (भुरान)

वा'दा पूरा करने की नियत न हो मगर इतिफाकन पूरा हो जाये तो.....:

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़्ती अहमद यार ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَمَان ફરમાते हैं : हदीस का मतलब येह है के अगर वा'दा करने वाला पूरा करने का इरादा रखता हो मगर किसी उज़ूर या मजबूरी की वजह से पूरा न कर सके तो वोह गुनाहगार नहीं, यूं ही अगर किसी की नियत वा'दा ખिलाई की हो मगर इतिफाकन पूरा कर दे तो गुनाहगार है उस बद् नियती की वजह से. हर वा'दे में नियत का बडा दफ़्ल है.

(मिरआत, ज़ि. 6, स. 492)

शर-ई क़बाहत हो तो वा'दा पूरा न करे : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे

मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिससा 16 सफ़हा 295 पर सदरुशशरीअह हजरते मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद

अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَمِي लिखते हैं : वा'दा किया मगर उस को पूरा करने में कोई शर-ई क़बाहत (या'नी शर-ई बुराई) थी इस वजह से पूरा नहीं किया तो

उस को वा'दा खिलाई नहीं क़हा जायेगा और वा'दा खिलाई का जो गुनाह है इस सूरत में नहीं होगा अगर्ये वा'दा करते वक्त उस ने इस्तिस्ना न किया हो के यहां

शरीअत की तरफ़ से इस्तिस्ना मौजूद है, इस को ज़बान से क़हने की ज़रूरत नहीं म-सलन वा'दा किया था के “मैं कुलां जगह पर आगिंगा और वहां बैठ कर तुम्हारा

इन्तिज़ार करूंगा.” मगर जब वहां गया तो देखाता है के नायरंग और शराब नोशी वगैरा में लोग मसड़क़ हैं, (लिहाज़ा) वहां से चला आया तो येह वा'दा खिलाई नहीं

है, या उस का इन्तिज़ार करने का वा'दा किया और इन्तिज़ार कर रहा था के नमाज़ का वक्त आ गया येह चला आया (तो येह) वा'दे के खिलाई नहीं हुवा. (बहारे शरीअत)

मुफ़्तये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली : गीबत करने सुनने की आदत

निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काइलों में



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

हुवा हो, तक्फ़ीन के वक्त सर पर रखा जाने वाला सज़ सज़ एमामा शरीफ़ आप के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लुटा रहा था, एमामे शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़दीक आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जुल्फ़ों का कुछ हिस्सा अपनी बहारें दिभा रहा था, पेशानी नूरानी थी और येहरा मुबारक भी किब्ला रुष था. मुफ़्तये दा'वते इस्लामी की क़भ्र मुबारक से जुशू की ऐसी लपटें आ रही थीं के हमारे मशामे ज़ां मुअत्तर हो गये. क़भ्र में बारिश का पानी उतर जाने की वजह से येह एम्कान था के क़भ्र मज़ीद धंस जाये और सिलें मईम के वुजूदे मसूद को सहमा पड़ोयाओं लिहाजा इस वाकिअे के तकरीबन दस रोज़ बा'द या'नी शबे बुध 6 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1430 हि. (28-7-2009) अ शुभूल मुफ़्तियाने किराम व उ-लमाअे एजाम हज़ारहा इस्लामी भाईयों का कसीर मजमअ हुवा, गुलाम ज़ादा अबू उसैद हाज्ज उबैद रज़ा एब्ने अत्तार म-दनी سَلْمَةُ اللَّهِ الْعَبْدِي पडले से मौजूद शिगाफ़ के ज़रीअे क़भ्र के अन्दर उतरे ताके येह अन्दाज़ा लगाओं के आया मुन्ताकिली के लिये जिस्मे मुबारक बाहर निकालने की हाजत है या अन्दर रहते हुअे भी क़भ्र शरीफ़ की ता'भीरे नौ मुम्किन है. उन्हों ने अन्दर का ज़ाँजा लिया और अन्दर ही से दा'वते इस्लामी के "दारुल इफ़ता अहले सुन्नत" के मुफ़्ती साहिब को सूरते हाल बयान की, उन्हों ने बदन मुबारक बाहर न निकालने का हुक़म इरमाया, गुलाम ज़ादा हाज्ज उबैद रज़ा को मूवी केमेरा दिया गया युनान्ये पुरानी क़भ्र के अन्दरनी माहोल और डीपर से मिट्टी वगैरा गिरने के आ वुजूद اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने एमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और जुल्फ़ों के बा'ज हिस्से की काभ्याब मूवी बना ली, ज़ो के कुछ ही देर के बा'द "सहराअे मदीना" में लगाअे गये मुप्तलिक़ स्कीनों पर हज़ारों इस्लामी भाईयों को दिभा दी गइ, उस वक्त लोगों के जज़बात दी-दनी थे, येह इह परवर मन्ज़र देभ कर बे शुमार इस्लामी भाई अशक़बार हो गये. उस के बा'द आने वाली रात या'नी बुध और ज़ुमा'रात की दरमियानी शब 7 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1430 हि. (29-7-2009) को दा'वते इस्लामी के म-दनी येनल पर बराहे रास्त "जुसूसी म-दनी मुका-लमा" नशर किया गया जिस में हुन्या के मुप्तलिक़ मुमालिक के लाभों नाज़िरीन को केमरे के अन्दर महफ़ूज़ कर्दा क़भ्र का अन्दरनी मन्ज़र और मुफ़्तये दा'वते इस्लामी قَدَسَ سِرُّهُ النَّسَامِي की तकरीबन साढे तीन साल पुरानी सहीह



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (१७)

सलामत लाश मुबारक के एमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और गेसू मुबारक के कुछ बालों की ज़ियारत करवाई गई। यूँके येह खबर हर तरफ़ जंगल की आग की तरह फैल चुकी थी। लिहाज़ा मुप्तलिक़ शहरों के जुदा जुदा अलाकों के इस्लामी भाईयों के बयानात का लुब्धे लुबाध है के **जुसूसी म-दनी मुका-लमे** के दौरान कई गलियां और बाज़ार इस तरह सूने हो गये थे जिस तरह मुसल्मानों के अलाकों में **र-मजानुल मुबारक** में इफ़तार के वक्त होते हैं और T.V. पर घर घर से “जुसूसी म-दनी मुका-लमे” की आवाज़ सुनाई दे रही थी। डोटलों, नाई की दुकानों वगैरा में जहां जहां T.V. सेट भौजूद थे वहां अवाम हुजूम दर हुजूम जम्भ हो कर **म-दनी येनल** पर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قَدَسَ سِرُّهُ النَّسَامِي की म-दनी बहारों के नज़्ज़ारे कर रहे थे। अक इत्तिलाअ के मुताबिक म-दनी येनल पर “जुसूसी म-दनी मुका-लमा” सुन कर और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قَدَسَ سِرُّهُ النَّسَامِي की तकरीबन साढे तीन साल पुरानी मुबारक लाश की रुह परवर जलकियां देष कर अक गैर मुस्लिम मुशरफ़ ब इस्लाम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना ने इस सिव्सिले में शबे बराअत 1430 हि. के मुबारक भौकअ पर अक तारीफी V.C.D बनाम “मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब कब्र खुली” जारी कर दी। ता दमे तारीफ़ हज़ारों V.C.Ds इरोप्त हो चुकी हैं।

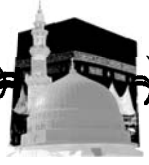
जर्नी मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता

गुलामाने मुहम्मद का कफ़न मैला नहीं होता

अद्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िरत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अल-अजाल)

નિગરાન કી તબ્દીલી પર તશ્વીશ ન ક્રિયા કરેં

સુવાલ : હમારે અલાકાઈ મુશા-વરત કે નિગરાન કો ફારિગ કર દિયા ગયા ઈસ સે બા'ઝ ઈસ્લામી ભાઈયોં કો તશ્વીશ હૈ. અબ હમારે અલાકે કા મ-દની કામ કેસે હોગા ?

જવાબ : દા'વતે ઈસ્લામી મેં મ-દની કામોં કી ઝિમ્મેદારી કિસી કો ભી ઉમ્ર ભર કે લિયે નહીં દી જાતી, હર ઝિમ્મેદાર કી મુદત 12 માહ મુકર્રર હૈ, ઈસ કે બા'દ યા તો તજદીદ કર કે ઉસે બર કરાર રખા જાતા હૈ યા તબ્દીલ કર દિયા જાતા હૈ, નીઝ દા'વતે ઈસ્લામી કે અઝીમ તર મફાદ કે પેશે નઝર અહકામે શરીઅત કે દાઅરે મેં રહતે હુએ કિસી ભી વક્ત કિસી ભી ઝિમ્મેદાર કો ફારિગ ક્રિયા જા સકતા હૈ. મીઆદ કે મુતાબિક હોને વાલે તબાદિલે યા તન્જીમી મસાલેહ કી બિના પર કિસી કી ફરાગત પર તશ્વીશ હો તો ઈસ કો દબા દેના આપ કે ઔર દા'વતે ઈસ્લામી કે હક મેં બેહતર હૈ, સભી કો અપને ઝિમ્મેદારાન કે મુ-તઅદલિક યેહ હુસ્ને ઝન રખના યાહિયે કે યેહ તન્જીમી મફાદાત કો હમ સે ઝિયાદા બેહતર સમઝતે હૈં, ઉન્હોં ને જો ભી ફૈસલા ક્રિયા હોગા સોચ સમઝ કર હી ક્રિયા હોગા. યેહ ઝેહન રખના હરગિઝ મુનાસિબ નહીં કે ફુલાં ચલા ગયા તો અબ મ-દની કામ નહીં હોગા ! બરાએ કરમ ! નઝર “સબબ” પર નહીં “મુસબ્બિબ” યા'ની સબબ બનાને વાલે રબ ﷻ પર રખિયે. અદલાહ ﷻ મુસબ્બિબુલ અસ્બાબ હૈ, વોહ જિસ સે યાહેગા કામ લે લેગા. અગર વોહ કિસી સે મઝીદ કામ લેના ન યાહેગા તો જિસ ને મ-દની કામોં કી ધૂમેં મયા રખી હૈં વોહી સુસ્ત પડ જાએગા યા કોઈ ભી સબબ હો જાએગા જિસ સે કામ ટૂટ જાએગા. બે શુમાર ઉ-લમાએ રબ્બાનિય્હીન رَحْمَةُ اللهِ السَّيِّئِينَ દુન્યા મેં તશરીફ લાએ દીને ઈસ્લામ કા ખૂબ કામ ક્રિયા ઔર પદા ફરમા ગએ લેકિન ચમને ઈસ્લામ અભી તક હરા ભરા લહૂલહા રહા હૈ. અગર નિગરાન કી મૌકૂફી બહાલી પર બહસેં કરતે રહેંગે તો જો થોડા બહુત કામ રહા હોગા વોહ ભી ખત્મ હો સકતા હૈ. લિહાઝા આપ સબ મ-દની કામ કરતે રહિયે ﷻ ખૂબ ખૂબ મ-દની બહારેં આએંગી. દા'વતે ઈસ્લામી કી મર્કઝી મજલિસે શૂરા કે નિગરાન મહૂમ હાજી મુશ્તાક અત્તારી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي

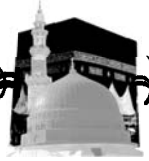


इरमाया करते थे : हमें दा'वते इस्लामी में शप्सिख्यत को नहीं "सिस्टम" (या'नी निऱाम) को मऱभूत करना है.

हमें निगरान का कुसूर बताया जाये

सुवाल : जो इतने अर्से से म-दनी काम कर रहा था उस को जब मा'जूल किया है तो यलिये उस का कोई कुसूर होगा, वोह कुसूर ही बता दिया जाये ताके अलाके के इस्लामी भाईयों की बेयैनी दूर हो.

जवाब : देभिये मा'जूली और है और तब्दीली और, 12 माह की मुदत पूरी हो जाने के बा'द जिस की तब्दीली अमल में आई उस का कुसूर वार होना हरगिऱऱ जऱरी नहीं, इस बात को इस भिसाल से समऱिये जैसे आप ने 12 माह में भाली कर देने के मुआ-हदे पर दुकान किराये पर ली, मुदत पूरी हो जाने के बा'द मालिक ने दुकान वापस ले ली इस पर उस से इस का सभभ पूछने का येह मऱल (या'नी भौकऱ) ही नहीं क्युंके येह तो पहले ही से तै था, इसी पर दोबारा जिम्मेदारी न भिलने को कियास कर लीजिये. हां मुदत पूरी होने से कऱ्व अमल में आने वाली मा'जूली के अस्बाभ हो सकते हैं म-सलन भुद अपनी मजभूरी के बाईस मुस्ता'ई हो जाना, निऱ मस्ऱुकियात के बाईस वक्त न दे पाना, तन्जीमी तरीके कार के मुताभिक म-दनी काम न करना, म-दनी मर्कऱ की इताअत न करना वगैरा, नीऱ बा'ऱ अस्बाभ येह भी हैं म-सलन किसी जिम्मेदार का **मुअरिंभे** अऱ्वलाक सरगर्भियों में मुलव्वस होना, म-दनी अतिय्यात में भुई भुई करना, इोइश ह-र-कत में भुतला हो जाना वगैरा. सभभे मा'जूली की टोह में पऱना और "कुसूर" तलाशना गुनाहों में ऱल सकता है लिहाऱा मा'जूली की मा'लूमात न की जाये वरना कवी इम्कान है के जिस निगरान को मा'जूल किया गया उस के अैभों पर से पई उई, उस की सुस्तियों, कोताहियों वगैरा के तऱकिरे निकलें और यूं गीऱतों के दरवाऱे भुलें इर जवाभन भी किऱ्भ बयानियों, गीऱतों, बद गुमानियों, तोइमतों, बद अदकाभियों और दिल् आऱारियों वगैरा वगैरा गुनाहों का तूफान भऱा हो, दीन के म-दनी कामों का नुकसान हो और भरबादिये आभिरत का सामान हो.



इरमाने मुस्तफा ﷺ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मक़रत है. (मूह)

लिहाजा म-दनी इस्तिजा है के प्वाह किसी को भी उस की जिम्मेदारी से उटाया जाये या फुद आप की जिम्मेदारी को तब्दील किया जाये, अपनी मजलिस के मु-तअल्लिक हुस्ने उन रभते हुये जामोशी से सरे तस्लीम जम कर के महुज रिजाये इलाही क़ुर्रके लिये सुन्नतों की बिदमत जारी रभिये, इठ कर घर बैठ जाने में आप की अपनी महइमी है. याद रभिये ! वझा का इम्तिहान ओडदा दे कर नहीं ओडदा ले कर लिया जाता है. वोह शप्स किस कदर नादान है के जब तक उस के पास ओडदा हो, उस वक्त तो “म-दनी मर्कज के इरमान पर जान भी कुरबान है” के ना’रे लगाता हो और जूं ही ओडदा वापस ले लिया जाये अेक दम मुभा-लइत पर उतर आये, अब तक दा’वते इस्लामी की जिन “जूबियों” को बयान किया करता था वोह उस की नजर में यकसर “जामियों” में तब्दील हो जाये और अपना जुदागाना “ग्रूप” बना ले. कहीं इस का मतलब येह तो नहीं के येह आज तक दीन का काम महुज ओडदे की वजह से कर रहा था, रिजाये इलाही क़ुर्रक पेशे नजर न थी.

अल्लाह करे दिल में उतर जाये मेरी बात

जिस दिल अन्दर इशक न रयिया कुत्ते ओस तों यंगे
मालिक दे घर राभी टेंटे साबिर पम्भे नंगे
मालिक दा दरनई छड दे पावें मारो सो सो जुत्ते
उठ बुलिया यल यार मना ले नई ते बाजी ले गये कुत्ते

तमाम ओडदेदारान के लिये लाईके तकलीद मिसाल : उजरते सय्यिहुना जालिद बिन वलीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जिन का लकब سَيِّفٌ وَسَيْفٌ سَيُّوفِ اللَّهِ था लशकरे इस्लाम के सिपह सालार (या’नी अल्लाह की तलवारों में से तलवार) था लशकरे इस्लाम के सिपह सालार (या’नी कमान्डर इन्चीफ़) थे, इमामुल आदिलीन, मुतम्मिमुल अर-बईन उजरते अमीरुल मुअमिनीन, सय्यिहुना उमर इर्रके आ’उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से सिपह सालारी का ओडदा वापस ले लिया मगर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस इंसले



इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुअज़ पर ओक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उअज़ उस के लिये ओक कीरात अज्र लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (मिज़ाज़)

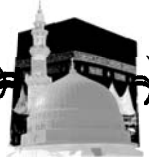
को कबूल करने से इन्कार किया न कोई मुभा-लफ़्त और न ही आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़ूबअे खिदमते इस्लाम में किसी डिस्म की कोई कमी आई. मन्सब यले जाने के बा'द भी आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ ओक आम सिपाही की तरह राहे फ़ुदा غَزْوَجَلٍّ में जिहाद इरमाते रहे और बहुत सी कुतूहाते इस्लामिय्या म-सलन दिमश्क, हम्स, मरअश, किन्नसरीन वगैरा में शरीक रहे. हज़रते सय्यिदुना ज़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ के राहे फ़ुदा غَزْوَجَلٍّ में कुरबानियों के ज़उबे का आलम ही निराला था फ़ुद ही इरमाते हैं : बिलफ़र्ज़ हर रात मुअे मेरी पसन्द की नई नवेली फ़ूब सूरत दुल्दन पेश की जाअे तब भी मेरे नज़दीक इस से ज़ियादा फ़्यारी वोह रात है जो सप्त ठन्डी हो, बई बारी भी हो रही हो और मैं किसी सरिय्या (या'नी झौंछ दस्ते) में हूँ और दुश्मन पर शबभून माइं या'नी रातों रात हम्ला कर दूं. अल्लाह उअज़ की उन पर रउमत हो और उन के सदके हमारी मफ़िरत हो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ज़िम्मेदारी सोंपने के लिये मा'लूमात

सुवाल : दा'वते इस्लामी की तहसील मुशा-वरत का निगरान किसी को तन्जीभी ज़िम्मेदारी देना याहता है अगर बिगैर मा'लूमात किये ज़िम्मेदार बना देता है तो तन्जीभी नुकसान का इम्कान है और अगर मा'लूमात के लिये किसी को पूछता है तो गीबतें सुनने का अन्देशा है क्या करे ?

जवाब : किसी को तन्जीभी ज़िम्मेदारी सोंपनी हो, मुलाजिम रफ़ना हो, किसी के यहाँ मुला-जमत करनी हो, तिज़रत वगैरा में शराक़त दार (PARTNER) बनना हो, माल उधार देना हो, किसी से किराअे पर मकान लेना हो, शादी करनी हो, किसी के साथ सफ़र करना हो वगैरा वगैरा ज़रूरिय्यात के मवाक़अ पर मा'लूमात हासिल करने में कोई मुअ़ा-यका नहीं बल्के तहकीक कर लेनी याहिये ताके धोका न भाना पडे. नीज़ जिस से मश्वरा लिया गया वोह "अमीन" है उस के लिये वाज़िब है के सहीह मश्वरा दे या'नी अगर वोह उस की औसी बुराई जानता है जिस से मश्वरा तलब करने वाले को नुकसान हो सकता है तो बताना ज़रूरी है



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے کیتاબ میں موجھ پر دھڑکے پاک لیا تو جب تک میرا نام
 उस में रहेंगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे. (अः)

हां ऐसी बुराईयां जाहिर न करे जिस की छाजत नहीं. दा'वते ईस्लामी के
 ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल
 किताब, "बछारे शरीअत" छिस्सा 16 सफ़हा 177 पर है : जिस से किसी बात
 का मश्वरा लिया गया वोह अगर उस शप्स का औब व बुराई जाहिर करे जिस
 के मु-तअद्विक मश्वरा (लिया गया) है, येह गीबत नहीं. हदीस में है : "जिस
 से मश्वरा लिया जाअे वोह अभीन है." लिछाजा उस की बुराई जाहिर न करना
 भियानत है, म-सलन किसी के यछां अपना या अपनी औलाह वगैरा का निकाह
 करना याहता है, दूसरे से ईस के मु-तअद्विक तजक़िरा किया के मेरा ईराद अैसा
 है तुम्हारी क्या राय है ? उस शप्स को जो कुछ मा'लूमात हैं बयान कर देना
 गीबत नहीं. ईसी तरह किसी के साथ तिज्जरत वगैरा में शिक़्त करना याहता है
 या उस के पास कोई चीज अमानत रभना याहता है या किसी के पड़ोस में सुकूनत
 (या'नी रिछाईश ईप्तियार) करना याहता है और उस के मु-तअद्विक दूसरे से
 मश्वरा लेता है येह शप्स (या'नी जिस से मश्वरा लिया गया वोह) उस की बुराई
 बयान करे (येह) गीबत नहीं. (रुद़ा'लमुहत्तार 9 ص 170)

नेक कामों में गैर छाजिर रहने वालों का पूछना

सुवाल : जो पहले ईजतिमाअ वगैरा में आता था और अब नहीं आता उस के बारे
 में किसी से येह पूछना कैसा के हुलां आज कल नजर नहीं आता ? अैसे में
 गीबत सुनने से बयना बहुत मुशक़िल लगता है के जवाब में अकसर गीबतें
 सुनने को मिलती हैं.

जवाब : पूछने में कोई हरज नहीं, हां जिस को पूछा वोह अगर ज्वाह म ज्वाह
 गीबतों पर उतर आअे तो उस को झैरन रोक दिया जाअे. आइथ्यत ईसी
 में है के मुम्किना सूरत में बराहे रास्त उसी से मिल लिया जाअे. जो गैर
 छाजिर रहने लगा है उस पर ईन्फ़िराही कोशिश करने में भी येह अन्देशा
 मौजूद है के वोह किसी जिम्मेदार के बारे में गीबतें और गिले शिकवे शुअ्रअ
 कर दे. अब अगर सुल्ह करवाना आप के बस में नहीं है तो उस को गीबत



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरुदे पाक पढा अद्लाह उंस पर दस रहमतें बेजता है. (५)

से भाज रभते हुअे कोशिश कर के मु-तअद्लिका जिम्मेदार से मिलवा कर फुद हट जाईये. बहर डाल तब्लीग व ईस्लाह की नियत से मा'लूमात करने में कोई हरज नहीं बल्के जितनी अखी अखी नियतें जियादा होंगी उतना ही सवाब भी जियादा मिलेगा. ईस्लाह के उवाले से मा'लूमात करना हमारे बुजुर्गों का तरीका रहा है युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बडारे शरीअत" जिह्द अव्वल सफ़हा 578 पर है : अभीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर फ़ाउके आ'जम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुब्ह की नमाज में सुलैमान बिन अभी हसमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ को नहीं देषा, बाजार तशरीफ़ ले गअे, रास्ते में सुलैमान (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ) का घर था, उन की मां (सय्यि-दतुना) शिफ़ा (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ) के पास तशरीफ़ ले गअे और इरमाया के सुब्ह की नमाज में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया, उन्हों ने कहा : रात में नमाज पढते रहे फिर नींद आ गई, इरमाया के सुब्ह की नमाज जमाअत से पढ़ूं, येह मेरे नजदीक ईस से बेहतर है के रात में कियाम (या'नी नफ़ली एबादत) करूं. (मोटा امام मालक ج ۱ ص ۱۳۴ حدیث ۳۰۰).

अद्लाह उंस पर रहमत डो और उन के स-दके हमारी मग़्फ़िरत डो.

गीबत के भिलाइ अे'लाने जंग : आह ! "गीबत" ने उम्मत की अक्सरियत को निहायत ही शिदत के साथ अपनी हिरासत में लिया हुवा है, शैतान गीबत के जरीअे भरपूर तरीके पर लोगों को जहन्नम की तरफ़ धकेलता यला जा रहा है. डोश में आईये ! गीबत के भिलाइ अे'लाने जंग कर के अेक दम मोरये पर डट जाईये ! जिस जिस ने अब तक जिस कदर गीबतें की हों उन की तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी में लग जाअे, अज़्मे मुसम्मम कीजिये के "न गीबत करेंगे न सुनेंगे" अफ़सोस सद् करोड अफ़सोस ! गीबत हमारे म-दनी माहोल को दीमक की तरह याट रही है लिहाज दा'वते ईस्लामी के तमाम जिम्मेदार ईस्लामी भाईयों और ईस्लामी बहनों की भिदमतों में मेरी हाथ जोड कर "म-दनी इत्तिजा" है के गीबत के भिलाइ अे'लाने जंग के जिन्न में गीबतों के दरवाजों पर ताले लगाते यले जाईये, अब तक जो भी आप की जिम्मेदारी



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुअ पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोड जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

के दौरान म-दनी माडोल से दूर हुअे, उन के मुआ-मले में 112 बार गौर कर लीजिये के कहीं ऐसा तो नहीं के उन्हों ने आप की गीबतें की हों और आप को गुस्सा आ जाने की वजह से या भुद आप ने उन की गीबतें की हों इस सबब से वोड दिल् बदर्शिता हो कर घर जा बैठे हों. अगर ऐसा है तो अख्शी अख्शी नियतें कर के बराअे रिजाअे रब्बे अकबर عَزَّوَجَلَّ कौरन से पेशतर मगर बुला कर नहीं, उन के पास भुद जा कर हाथ जोड कर पाउं पकड कर औ काश ! रो रो कर मुआफ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राजी कर के गले लगा लीजिये. बढे हर बिछडे हुअे को तलाश कर के उन के पास भी भुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नत व समाजत कर के उन्हें दोबारा म-दनी माडोल में ले आईये और ईन्फ़िरादी कोशिश के जरीअे उन सबों को फिर से सुन्नतों की बिदमतों में मसइफ़ कर दीजिये.” (जिन पर तन्जीमी जिम्मेदारी नहीं वोड भी ईसी तरह करें, हां जिन पर तन्जीमी पाबन्दी लगी हो उन को न छोड़ें, उन के बारे में बडे जिम्मेदारान जो तन्जीमी इंसला करें उन पर अमल करें)

औं पासअे पासाने रुसुल वकते हुआ है उम्मत पे तेरी आ के अजब वक्त पडा है
छोटों में ईताअत है न शककत है बडों में ध्यारों में मडब्बत है न यारों में वफ़ा है
जो कुछ हें वोड सब अपने ही हाथों के हें करतूत शिकवा है जमाने का न किस्मत का गिला है
देभे हें येड दिन अपनी ही गक़लत की ब दौलत सय है के बुरे काम का अन्जाम बुरा है
डम नेक हें या भद फिर आभिर हें तुम्हारे निरबत बहुत अख्शी है अगर डाल बुरा है
तदबीर संभलने की डमारे नहीं कोई
हां अेक हुआ तेरी के मकबूले भुदा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत के बारे में सुवाल जवाब

महीनतुल मुनव्वरहे

मस्कुतुल मुकदमहे



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (हॉन)

ईस्लामी बहनों के म-दनी येनल देपने का शर-ई मस्अला

म-दनी येनल की बहनों के क्या कहने ! الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी येनल देप कर भा'ज कुफ़र को तो ईमान की दौलत ही नसीब हो गई ! नीज न जाने कितने ही बे नमाज़ी नमाज़ी बन गये, मु-तअद्विद अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों त्परी जिन्दगी का आगाज कर दिया. الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी येनल सो ई सदी ईस्लामी येनल है, न ईस में मूसीकी है न ही औरत की नुमाईश. म-दनी येनल में क्या है ? ईस में ईजाने कुरआन, ईजाने हदीस, ईजाने अम्बिया, ईजाने सहाबा और ईजाने औलिया है. ईस में तिलावतें, ना'ते, मन्कबतें हैं, दुआ व मुनाजत में ईल्लाह व ज़ारी के दिल् खिला देने वाले और ईशके रसूल में रोने, रुलाने और तडपाने वाले रिक्त अंगेज मनाज़िर हैं, दारुल ईफ़ता अहले सुन्नत, इरानी तिब्बी ईलाज, सुन्नतों त्परे म-दनी ईल, आभिरत बेहतर बनाने वाली पूब म-दनी बहारे हैं. अल गरज म-दनी येनल अक ऐसा येनल है के ईस के ज़रीअे ईन्सान घर बैठे अश्रफ़ा फ़ासा ईल्मे दीन सीप सकता है ! हां ईस्लामी बहनों को म-दनी येनल देपने से पहले 112 बार गौर कर लेना याहिये क्यूंके म-दनी येनल में अक्सर नौ जवानों ही के मनाज़िर होते हैं और औरत नाज़ुक शीशी है और ईसे मा'भूली सी ठेस ही काफ़ी. कहीं مَعَادَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ वोड भद निगाही के गुनाह में न जा पडे. सदरुशरीअह, भदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي मक-त-बतुल मदीना की मत्भूआ बहारे शरीअत डिस्सा 16 सईहा 86 पर इरमाते हैं : औरत का मर्दे अजनबी की तरफ़ नज़र करने का वोही हुकम है जो मर्द का मर्द की तरफ़ नज़र करने का है और येह उस वक्त है के औरत को यकीन के साथ मा'लूम हो के उस की तरफ़ नज़र करने से शहूवत नहीं पैदा होगी और अगर ईस का शुबा भी हो तो हरगिज नज़र न करे. (عالمگیری ج ٥ ص ٣٢٧)

आका की उया से जुकी रहती थीं निगाहें

आंभों पे मेरी बहन लगा कुंले मदीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मस्कुतुल मुकदमहे

यून्नतुल अकीरअ

महीनतुल मुनव्वरहे

यून्नतुल अकीरअ

બા'ઝ મઝામીન કી “ગીબત કી
તબાહ કારિયાં” સે મુના-સબત
કે સબબ તરમીમ વ ઈઝાફે કે
સાથ યેહ રિસાલા યહાં શામિલ
ક્રિયા ગયા હૈ

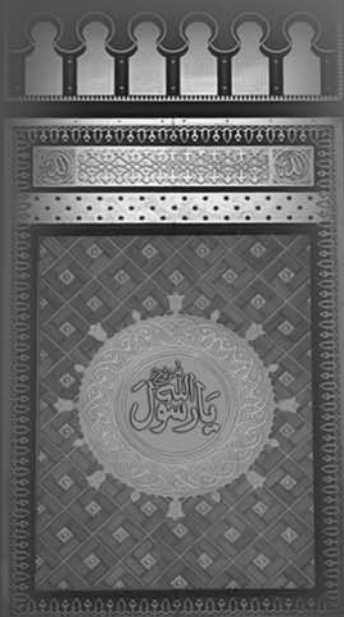


વરક ઉલટિયે.....

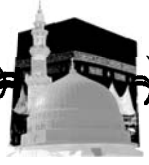
અફવો દર ગુઝર ક્રી ફઝીલત મઝ એક અહમ મ-દની વસિયત



- ❖ ફતાવા ર-ઝવિયા શરીફ સે અહમ ઇકતિબાસાત
- ❖ દા'વતે ઇસ્લામી સે બિછડને વાલોં કે લિયે ઇત્મામે હુજજત



- ❖ યા અલ્લાહ તૂ ગવાહ રહના
- ❖ ગીબત કે ખિલાફ એ'લાને જંગ
- ❖ મુઆફી તલાફી કર લીજિયે
- ❖ મ-દની ઇલ્તિજા



इरमाने मुस्तफा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्द और दस भरतबा शाम दुरदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (अहमद)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अइवो दर गुजर की इजिलत

भअ

अेक अहम म-दनी वसियत

दुरद शरीफ की इजिलत : सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अ-र-कत निशान है : अै लोगो ! बेशक अरोअे कियामत
 उस की दहशतो और हिसाअ किताअ से जल्द नजात पाने वाला शप्स वोह होगा जिस ने
 तुम में से मुज पर दुन्या के अन्दर अ कसरत दुरद शरीफ पढे होंगे.

(ألفردوس بمأثور الخطاب ج ٥ ص ٣٧٥ حديث ٨٢١٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

म-दनी आका : उजरते सय्यिदुना
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का अइवो दर गुजर : उजरते सय्यिदुना
 عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ, रउकुर्रहीम, रउकुर्रहीम, रउकुर्रहीम, रउकुर्रहीम
 के अमराह यल रहा था और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अेक नजरानी यादर ओढे
 हुअे थे जिस के कनारे मोटे और पुरदरे थे. अेक दम अेक अदवी (या'नी अरअ शरीफ
 के देहाती) ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की यादर मुबारक को पकड कर धतने उजर
 दस्त उटके से भीया के सुलताने उमन, महुअूअे रअे उल मिनन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 मुबारक गरदन पर यादर के कनार से अराश आ गध, वोह कअने लगा अदलाह
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का जो माल आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के पास है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 हुकम दीजिये के उस में से मुअे कुअ मिल जाअे. रअमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल्लै)

करे उसे मुआफ़ कर दो और जो येह याडे के उम्र में दराज़ी और रिज़क में कुशा-दगी हो, वोह अपने रिश्तेदारों के साथ सिलअे रेहूमी (या'नी अख़्ण सुलूक) करे.”

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٥ ص ٢٢٤ حديث ٧٣٦٧)

मुआफ़ करो मुआफ़ी पाओ : सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक़अे मुक़र्रमा

का इरमाने आलीशान है : “रहूम किया करो तुम पर रहूम किया जायेगा और मुआफ़ करना इप्तिहार करो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआफ़ इरमा देगा.”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٢ ص ٦٨٢ حديث ٧٠٦٢)

हम ने भता में न की तुम ने अता में न की

कोई कमी सरवरा तुम पे करोडों दुर्रह

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मुआफ़ करने वालों की बे हिसाब मग्फ़िरत : हज़रते सय्यिदुना अनस

से मरवी है के हज़ूर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशारे इरमाया : कियामत के रोज़ अे'लान किया जायेगा : जिस का अज्ज अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के

जिम्मअे करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाखिल हो जाये. पूछा जायेगा : किस के लिये अज्ज है ? वोह मुनादी (या'नी अे'लान करने वाला) कहेगा : “उन लोगों के लिये जो

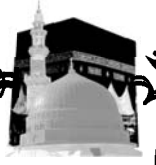
मुआफ़ करने वाले हैं.” तो हज़ारों आदमी भडे होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाखिल हो जायेंगे.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٥٤٢ حديث ١٩٩٨)

कातिलाना हम्ले की कोशिश करने वाले को मुआफ़ इरमा दिया : दा'वते

इस्लामी के इशाअती इदारे मक़-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 862 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “सीरते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” सफ़हा 604 ता 605 पर

है : अेक सफ़र में नबिय्ये मुअज़्जम, रसूले मोहतरम, सरापा जूदो करम



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (بخاری)

आराम इरमा रहे थे के गौरस बिन हारिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को शहीद करने के इरादे से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ले कर नियाम से भीय ली, जब सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ नीद से बेदार हुअे तो गौरस कहने लगा : “अै मुहम्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) अब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को मुज से कौन बया सकता है ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “अद्लाह.” नुबुव्वत की हैबत से तलवार उस के हाथ से गिर पडी और सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने तलवार हाथ मुबारक में ले कर इरमाया : अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बयाने वाला है ?” गौरस गिडगिडा कर कहने लगा : आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही मेरी जान बयाईये. रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उस को छोड दिया और मुआइ इरमा दिया. युनान्ये गौरस अपनी कौम में आ कर कहने लगा के अै लोगो ! मैं अैसे शप्स के पास से आया हूं जो दुन्या के तमाम ईन्सानों में सब से बेहतर है.

(الشَّفَاح ۱ ص ۱۰۶)

सलाम उस पर के जिस ने भूं के प्यासों को कबाअें दीं

सलाम उस पर के जिस ने गालियां सुन कर हुआअें दीं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

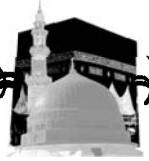
जुल्म करने वाले के लिये हुआअे खिदायत : गजवअे उहुद में जब मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक दन्दान को शहीद और येहरअे अन्वर को जप्मी कर दिया गया मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन लोगों के लिये इस के सिवा कुछ भी न इरमाया के اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ के इरमाया के क्यूंके येह लोग मुजे जानते नहीं.

(الشَّفَاح ۱ ص ۱۰۰)

सोया किये ना-बकार बन्दे

रोया किये जार जार आका

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ढस भरतभा दुरहे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रढमते नाजिल इरमाता है. (ज़रान)

जहू करने वाले से ढर गुजर : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आढम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर लबीढ बिन आ'सम ने जहू किया तो रढमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ढस का बढला नहीं लिया. नीज उस यडूढिय्या को भी मुआइ इरमा ढिया जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जहर ढिया था.

(المَوَاهِبُ الدِّيْنِيَّةُ لِلْقُسَطَلَانِي ج ٢ ص ٩١)

क्यूं मेरी ढताओं की तरइ ढेढ रहे ढो

जिस को है मेरी लाज वोढ लजपाल बडा है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शाने मुस्तफ़ा : उम्मुल मुअमिनीन ढजरते सय्यि-ढतुना आढशा सिदीका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाती हैं के मेरे सरताज, साढिबे मे'राज, मढबूबे रढबे बे नियाज न तो आढतन बुरी ढाते करते थे और न तकल्लुइन और न ढाजारों में शोर करने वाले थे और न ढी बुराढ का बढला बुराढ से ढेते थे बढके आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुआइ करते और ढर गुजर इरमाया करते थे.

(سُنَنِ تَرْمِذِي ج ٣ ص ٤٠٩ حديث ٢٠٢٣)

रोजाना 70 बार मुआइ करो : अेक शप्स ढारगाढे रिसालत में ढाजिर हुवा और अरु की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! ढम ढाढिम को कितनी ढार मुआइ करें ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ढामोश रहे. उस ने इर वोढ सुवाल ढोढराया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इर ढामोश रहे, जढ तीसरी ढार सुवाल किया तो ढशाढ इरमाया : "रोजाना सत्तर ढार."

(سُنَنِ تَرْمِذِي ج ٣ ص ٣٨١ حديث ١٩٥٦)

मुइस्सिरे शढीर ढकीमुल उम्मत ढजरते मुइती अढमढ यार ढान عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمَانِ यह ढान ढाढोश रहे. उस ने इर वोढ सुवाल ढोढराया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इर ढामोश रहे, जढ तीसरी ढार सुवाल किया तो ढशाढ इरमाया : "रोजाना सत्तर ढार."



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्धूस तरीन शप्स है. (तर्हीब)

डोता है या'नी हर दिन उसे बहुत दइअ मुआफ़ी दो, येह इस सूरत में डो के गुलाम से खताअन ग-लती डो जाती है खभासते नइस से न डो और कुसूर भी मालिक का जाती डो शरीअत का या कौमी व मुल्की कुसूर न डो के येह कुसूर मुआफ़ नहीं डिये जाते. (मिरआत, जि. 5, स. 170)

गालियों तरे खुतूत पर आ'ला डजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का अइवो ढर गुजर :

काश ! डमारे अन्हर येह जजभा पैदा डो जाअे के डम अपनी जात और अपने नइस की खतिर गुस्सा करना डी डोड डें. जैसा के डमारे बुजुर्गो का जजभा डोता था के उन पर कोई डितना डी जुल्म करे येह डजरत उस खलिम पर भी शइकत डी इरमाते थे.

युनान्ये "डयाते आ'ला डजरत" में है, मेरे आका आ'ला डजरत, डमामे अडले सुन्नत, मौलाना शाड डमाम अडमद रजा खान رَحْمَةُ الرَّحْمَن عَلَيْهِ كِي खिदमत में अेक डार जब डक पेश की गई तो डा'ज खुतूत मुगल्लजात (या'नी गन्दी गालियों) से त्रपूर थे. मो'तकिदीन डरडम (गुस्से) डुअे के डम डन लोगो के खिलाइ मुकदमा

दाडर करेंगे. डमामे अडले सुन्नत मौलाना शाड डमाम अडमद रजा खान مَدِينَةُ الْمُنَوَّوَرَةِ ने डशाद इरमाया : "जे लोग ता'रीफी खुतूत लिखते हैं पडले उन को जगीरें तकसीम कर दो, इर गालियां लिखने वालो पर मुकदमा दाडर कर दो."

(डयाते आ'ला डजरत, जि. 1, स. 143 मुलखसन) मतलब येह के जब ता'रीफ़ करने वालो को तो डन्आम डेते नहीं इर डुराई करने वालो से डदला क्यूं लें !

अडमद रजा का ताजा गुलिस्तां है आज भी

खुरशीडे डल्म उन का डरखशां है आज भी

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

تُوبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ




इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पड़े. (५७)

अेक अलम म-दनी वसियत : भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मेरी उम्र ता दमे तहरीर तकरीबन 60 बरस हो चुकी है, मौत लम्हा ज लम्हा करीज आ रही है, न जाने कब आंभ बन्द हो जाये. अल्लाहु रलमान ﷻ के दरबारे वाला शान में सला-मतिये इमान और नज़्म व कब्रो हशर में अम्नो अमान, बे हिसाब बज्शिश और जन्नतुल फिरदौस में म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जवार का तलब गार हूं. मैं ने अपनी मुप्तसर सी जिन्दगी में दुनिया के बहुत नशेबो इराज देभे हैं, इप्लास कम और दिभावा कसीर, वफ़ा कम और ખुशामद ખतीर (या'नी जियादा) है, इस से बढ कर भी क्या बे वफ़ाई डोगी के वोह मां बाप जिन्हीं ने हज़ार अेहसानात किये डोते हैं मगर उन की कोई अेक मा'भूली सी बात भी ना गवार गुजर जाती है तो सारे अेहसानात तुला कर, ना खलइ औलाद उन को लात मार देती है ! आह ! मक़ार व अय्यार शैतान ने कुलूब व अज़्दान में बहुत जियादा खराबियां डाल दी हैं. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी में लाभो लाभ मुसल्मान शामिल हैं जैसा के उमूमन तन्जीमों में लोगो का आना जाना रहता है इसी तरह दा'वते इस्लामी से भी इठ टूट कर कुछ अइराद को अलग डोते पाया है, म-दनी माडोल से दूरी के बा'द बा'जों की बे अ-मलियो का सिखिला भी सामने आया है, बा'ज नाराज इस्लामी भाईयो ने अपना अपना जुदागाना "ग्रूप" भी बनाया है, बा'जो ने मेरे खिलाइ बहुत कुछ कडा, लिखा और दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की भी ज़र कर मुखा-ल-इतों की हैं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह अल्लाज लिखने तक दा'वते इस्लामी बराबर तरक़ी की मनाजिल तै कर रही है और कोई भी ग्रूप ज़ाहिर अब तक दा'वते इस्लामी से आगे बढना कुज्ज बराबरी भी नहीं करने पाया. मैं ने तन्जीमी कामों में जिन्दगी का काई हिस्सा गुजारा है, लिहाजा अपने तजरिबात की रोशनी में तमाम इस्लामी भाईयो और इस्लामी बहनों की खिदमतों में मइज़ आपिरत की बलाई के पेशे नज़र हाथ जोड कर **म-दनी वसियत** करता हूं : मेरी येह बात हमेशा के लिये गिरेह में बांध लीजिये के मेरे ज़ते ज़ भी और मेरे मरने के बा'द भी दा'वते इस्लामी में अेक बार शुभूलियत कर लेने के बा'द दा'वते इस्लामी का तशख्खुस (म-सलन सल्ल इमामा शरीफ़ वगैरा) रખते हुअे तरीकअे कार से हट कर हरगिज़ किसी किस्म का "मु-तवाज़ी ग्रूप" मत बनाईयेगा,



इरमाने मुस्तफा صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे. (अहमद)

दीन के काम के हवाले से भी अगर आप ने अपना कोई अलग सिक्सिला शुरुअ किया तो गीबतों, तोहमतों, बढ गुमानियों, दिल् आजारियों, आपस की दुश्मनियों, बाहमी नफरतों वगैरा वगैरा से भुद को बयाना करीब करीब ना मुम्किन हो जायेगा बल्के हो सकता है के बे शुमार मुसल्मान इस तरह की आइतों की लपेट में आ जायें. अगर कोई येह समझे के दा'वते इस्लामी से जुदा होने के बा'द अलग ग्रूप बना कर मैं ने तो इलां इलां दीन का बहुत भारी काम सर अन्जाम दिया है, तो मैं उस की तवज्जोह इस तरह दिलाया यादूंगा के वोह येह भी गौर कर ले के जुदा होने के बाईस कहीं गीबतों वगैरा गुनाहों की नुडूसतों में तो नहीं इंसा था? अगर नहीं इंसा था तो सद करोड मुबारक! और अगर इंसा था तो फिर जमीर ही से पूछ ले के मेरे इलां इलां मुस्तहब दीनी कामों का वज्ज न जियादा या इन दीनी कामों के जिम्न में जिन गीबतों वगैरा हराम चीजों का सुदूर हुवा उन का वज्ज जाईद? अगर दिल् भौंके भुदा عَزَّ وَجَلَّ का हामिल हुवा, इल्मे दीन का इंजान रहा और जमीर जिन्दा पाया तो येही जवाब मिलेगा के यकीनन जिन्दगी भर के मुस्तहब कामों के मुकाबले में सिर्फ अक बार की हुई गुनाह भारी गीबत ही जियादा वज्जनी है के मुस्तहब काम न करने पर अजाब की कोई वईद नहीं जब के गीबत पर अजाब का इस्तिह्काक है. मा'लूम हुवा अक बार दा'वते इस्लामी में शामिल हो जाने के बा'द निकलने या निकाले जाने पर जुदागाना ग्रूप बनाने में مِنْ حَيْثُ الْمَجْمُوعِ (या'नी मजमूई हैसियत से) नुक्सान ही का पहलू गालिब है.

इतावा र-जविय्या के अहम इकितबासात : अगर सय पूछिये तो ऐसा दीनी काम जिस से मुसल्मानों में नफरत की कैफियत जनम लेने लगे और उस का करना इर्ज, वाजिब या सुन्नते मुअककदा न हो तो उस काम को तर्क करना ही मुनासिब है अगर्चे अइजल व मुस्तहब हो.  युनान्चे अक मकाम पर मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुसल्मानों के इत्तिहाद की अहमियत को उजागर करने के लिये नकल इरमाते हैं: "लोगों की तालीके कल्मी (या'नी दिल्जूई) और उन को मुजतमअ (मुत्तहिद) रखने के लिये अइजल को तर्क करना इन्सान के लिये जाईज है ताके लोगों को नफरत न हो जाये जैसा के नबिय्ये करीम,



इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर हुइइ शरीफ़ पढो अल्लाह उजल तुम पर रइमत भेजेगा.

(अइवो)

रउइरुईम عليه أفضل الصلوة والتسليم ने भैतुल्लाह शरीफ़ की इमारत को इस लिये अइले कुरैश की बुन्यादों पर काईम रखा ताके जो लोग नअे नअे इस्लाम लाअे वोइ किसी गलत इइमी में मुतला न हो जअे. (इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 7, स. 680 मुलभभसन)

❁ तन्हीरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों को नइरत में मुतला करने) से भयने के लिये उइरतन मुस्तलभ को तर्क कर देने का हुकम है. जैसा के मेरे आका आ'ला उजरत رحمة الله تعالى عليه मुसल्मानों के दरमियान प्यार व मइभत की इजा काईम रखने का अेक म-दनी उसूल भयान करते हुअे इरमाते हैं : "इतयाने मुस्तलभ व तर्क गैरे औला पर मुदाराते भल्क व मुराआते कुलूभ को अइम जाने और इतना व नइरत व इजा व वइशत का भाईस होने से अइत भये." (इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 528) ❁ मेरे आका आ'ला उजरत رحمة الله تعالى عليه शरीअते मुतइइरा का काईदा भयान करते हुअे इरमाते हैं : ذُرِّ الْمَفَاسِدِ أَمُّ مِنْ جَلْبِ الْمَصَالِحِ या'नी भराभियों के अस्बाभ दूर करना भूभियों के अस्बाभ इसिल करने से अइम है. (इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 9, स. 551)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जिस ने तशभ्भुस तढील कर लिया ! : रइे वोइ उजरत जो दा'वते इस्लामी का तशभ्भुस तर्क कर युके और भिला इजाउते शर-ई दा'वते इस्लामी की किसी क्स्म की मुभा-लइत भी नही करते और गीभतों, तोइमतों और भद गुमानियों वगैरा में पडे भिगैर अपनी तरकीभ से दीनी भिदमात अन्जाम दे रइे हैं, अल्लाह तआला उन की काविशों को कभूल इरमाअे. मगर वोइ जो तशभ्भुस तढील कर के अलग ग्रूप बनाने के बा'द भिला इजाउते शर-ई दा'वते इस्लामी की मुभा-लइत कर के नेकी की दा'वत आम करने वाली इस म-दनी तइरीक को कमजोर करने की मज्भूम कोशिशों में मइइइ हों, इस मकसद के लिये गीभतों, तोइमतों, भोइतान तराशियों, भद गुमानियों, भैभ दरियों, भुरे यर्यों, इल्लाम तराशियों और युग्लियों को अपना इथियार बना लें और इसे अपने जो'भे इंसिद में दीन की अइत भडी भिदमत तसव्वुर करे, अैसों को संभल जाना याइये के येइ दीन की भिदमत नही, इन्तिलार्इ द-रजे की मज्भूम उ-र-कत है अइके शरअन इन ना जइउ कामों का इरतिकाभ कर के अपने नामअे आ'माल को गुनाहों से



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगिफरत है. (भा. ११)

पुर करना है. यूँही जो तशब्बुस बर करार रभते हुअे भी बिला इजाजते शर-ई द्दा'वते इस्लामी की मुभा-लइत करेगा और लोगों को मु-तनफिफर कर के (या'नी नफरत दिला कर) द्दा'वते इस्लामी और इस के तरीकअे कार को नुकसान पहुंचाना उस का मकसद होगा वोह भी इ'ले ना जाईज का मु-तकिब ठहरेगा.

बुरा यर्या करना इराम है : देखा येह गया है के जब कोई शप्स किसी की मुभा-लइत पर उतर आता है तो प्वाह म प्वाह उस पर तन्कीदें करता, बाल की पाल उतारता और उस की पामियों या पताओं का बुरा यर्या करता फिरता है (भगर जिसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बयाअे). जब उन की आपस में बनती थी तो इसे गोया उस के पसीने में से भी पुशबू आती थी अब नाराजी के बा'द उस का इत्र भी बढबूदार लगता है. याद रभिये ! किसी मुबल्लिग बिल पुसूस सुन्नी आलिम की किसी पामी या पता को बिला मस्लहतते शर-ई किसी पर जाहिर करना या लोगों में उस का बुरा यर्या करना नेकी की द्दा'वत और इस्लाम की तब्लीग के काम के मुआ-मले में बहुत, बहुत और बहुत नुकसान देह और आभिरत में बाईसे अजाब है, मेरे आका आ'ला इजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-जविय्या जिल्द 29 सइहा 594 पर इरमाते हैं : "और अहले सुन्नत से ब तकदीरे इलाही जो ऐसी लज्जिशे इाहिश वाकेअ हो उस का इफ्फा (या'नी धुपाना) वाजिब है के مَعَادَ اللَّهِ लोग उन से बढ अे'तिकाद होंगे तो जो नइअ उन की तकरीर और तहरीर से इस्लाम व सुन्नत को पहुंचता था उस में पलल वाकेअ होगा. इस की इशाअत, इशाअते इाहिश (या'नी बुरा यर्या करना) है. और इशाअते इाहिश ब नस्से कुरआने अजीम इराम, قَالَ اللَّهُ تَعَالَى : (या'नी अल्लाह तआला इरमाता है)

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ
فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : वोह लोग जो याहते हैं के मुसल्मानों में बुरा यर्या इ'ले उन के लिये दईनाक अजाब है दुन्या और आभिरत में.

(प 18 तुर 19)

(इतावा र-जविय्या, जि. 29, स. 594)



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर अक दुरुद शरीफ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज लिपता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (अहमद)

दा'वते ईस्लामी से बिछडने वालों के लिये ईत्नामे हुज्जत : जो आज तक

मुज से नाराज हो कर या मर्कजी मजलिसे शूरा से इठ कर जुदा हो गये, उन में से जिन जिन की मेरी वजह से हिल आजारी या किसी किस्म की हक त-लफ़ी हुँ हो उन

से हाथ जोड कर मुआफ़ी का तलब गार हूँ, दोनों गुलाम जादे और निगरान व अराकीने शूरा भी मुआफ़ी मांग रहे हैं, मुझे और इन्हें फुदा व मुस्तफ़ा

के लिये मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ इरमा दे. हम सब ने भी रिजाअे फुदा व मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के लिये मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ इरमा दे. हम सब ने

भी रिजाअे फुदा व मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के लिये उन सब को जिन्हों ने हक त-लफ़ियां की हों उन को मुआफ़ किया. नाराज हो कर या इप्तिलाफ़ कर के जिन्हों

ने अपनी अपनी तन्जीमें काईम कीं, जुदागाना ग्रूप बनाअे उन सभी को फुले हिल से दा'वत देता हूँ के अल्लाह व रसूल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का वासिता सुलह

इरमा लें, मइज रिजाअे इलाही عز وجل की फातिर, मैं इर नाराज मुसल्मान से गैर मशरूत तौर पर भी सुलह के लिये तय्यार हूँ. हां जो तन्जीमी इप्तिलाफ़त को मुजा-करात

के जरीअे हल कर के सुलह करना याहते हैं उन के लिये भी दरवाजे फुले हैं, जल्दी राबिता कीजिये और मर्कजी मजलिसे शूरा के साथ बैठ जाईये. अगर आप हुकम

इरमाअेंगे तो मुफ़िना सूरत में إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ शूरा के साथ साथ मैं भी बैठ जाउँगा. आईये, आ जाईये, अल्लाहु रब्बुल इज्जत عز وجل की रहमत और ताजदारे रिसालत

की निगाहे इनायत से मुतहिए हो कर शैतान के हथकन्डों को नाकाम बनाते हैं, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मिलजुल कर दीन का फूब म-दनी काम करेंगे.

अगर आप दा'वते ईस्लामी के साथ काम करना नहीं याहते तो.....: अगर कोई नाराज ईस्लामी भाई दा'वते ईस्लामी के साथ मिल कर म-दनी काम नहीं

करना याहता तो कम अज कम ना राजियां ही दूर कर के हमें मुआफ़ी से नवाज दे और ईस पर हमें मुतलअ कर के मुसल्मान का हिल फुश करने के सवाब का हकदार बने के

ईस तरह إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ नइरतें मिटेंगी, फ़ासिले सिमटेंगे और शैतान मरदूद का मुंज काला और मुआफ़ करने वाले का मुंज उज्याला होगा. अक बार फिर ईस हदीसे पाक का वासिता दे कर हम मुआफ़ी मांगते हैं जिस में हमारे मक्की म-दनी आका भीठे भीठे



इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अहमद)

मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशादि इरमाया है : “जो कोई अपने मुसल्मान भाई से मा'जिरत करे और वोह (बिला इजाजते शर-ई) उस का उज़र कबूल न करे तो उसे डौजे कौसर पर लाजिर होना नसीब न होगा.” (५२९० हदीथ ३७६ व ४ ص ۴ ط ۴) याद रखिये ! इस तरह की बात करना हरगिज मुनासिब नहीं के इत्यास को हमारे पास भुद आना याहिये अगर भुद नहीं आ सकता तो निगराने शूरा या किसी रुकने शूरा ही को हमारे पास या हमारे हुलां “बरे” के पास भेज दे. इस तरह की बातें करने वाले के बारे में येह वस्वसे आ सकते हैं के येह सुलह करना नहीं याहते इस लिये टालम टोल से काम ले रहे हैं, जब हम ने तहरीर की सूरत में पहल कर ही दी है तो मुज्लिसीन के लिये रुकावट किस चीज की है ! हर नाराज इस्लामी भाई को याहिये के रिजाअे इलाही عَزَّوَجَلَّ की खातिर आगे बढे और गले लग जाअे. अगर आ कर मिलना नहीं याहता तो किसी भी रुकने शूरा से कम अज कम झोन ही पर राबिता कर ले.

अल्लाह करे दिल में उतर जाअे मेरी बात

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

या अल्लाह तू गवाह रहना : या रब्बे मुस्तफा عَزَّوَجَلَّ ! तू गवाह रहना में ने अपने बिछोडे हुअे इस्लामी भाईयों के लिये सुलह का पैगाम मुशतहर कर दिया है. औ मेरे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे नाराज इस्लामी भाईयों के दिलों में मुज मिस्कीन के लिये रहम डाल दे के वोह मुजे मुआफी की लीक दे कर मुज से सुलह कर लें, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे दिल के डाल से बा फबर है के इस सुलह की दर-प्वास्त में मेरा अस्ल मकसद सिई सिई और सिई उप्परी मझाद है, मैं मरने से पहले पहले इकत तेरी रिजा के लिये हर नाराज मुसल्मान से सुलह करना और अपने रुठे हुअे इस्लामी भाईयों को मना लेना याहता हूं. या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी भुइया तदबीर से बहुत डरता हूं, औ मेरे प्यारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! तू कभी भी मुज से नाराज न होना, मेरे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मेरा इमान अक लम्हे के



इरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुज पर एक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रकमतें भेजता है. (مسلم)

करोडवें हिस्से के लिये भी कभी मुज से जुदा न हो, या अल्लाह عزوجل ! मेरी और मेरे रुके हुअे तमाम ईस्लामी भाईयों समेत हर दा'वते ईस्लामी वाले और वाली की बे हिसाब बज्जिश इरमा. या अल्लाह عزوجل ! अपने प्यारे हबीब ﷺ के सदके सारी उम्मत की मङ्गिरत इरमा. या अल्लाह عزوجل ! हमारी सफ़ों में इत्तिहाद पैदा इरमा. या अल्लाह عزوجل ! हमें जेहन्नी हम आहंगी नसीब इरमा, या अल्लाह عزوجل ! हमें बिला त-लबे मन्सब अेक साथ मिल कर इज्वास के साथ तेरे दीन की बिदमत की सआदत इनायत इरमा.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सुन्नतें आम करें दीन का हम काम करें

नेक हो जअें मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत के बिलाइ अे'लाने जंग : आह ! "गीबत" ने उम्मत की अक्सरियत को निहायत शिदत के साथ अपनी हिरासत में लिया हुवा है, शैतान गीबत के जरीअे भरपूर तरीके पर लोगों को जहन्नम की तरफ़ धकेलता यला जा रहा है. होश में आईये ! गीबत के बिलाइ अे'लाने जंग कर के अेक हम मोरये पर डट जाईये ! जिस जिस ने अब तक जिस कदर गीबतें की हों उन की तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी में लग जाअे, अज़्मे मुसम्मम कीजिये के "न गीबत करेंगे न सुनेंगे" (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) अइसोस सद करोड अइसोस ! गीबत हमारे म-दनी माहोल को दीमक की तरह याट रही है लिहाजा दा'वते ईस्लामी के तमाम जिम्मेदार ईस्लामी भाईयों और ईस्लामी बहनों की बिदमतों में मेरी हाथ जोड कर "म-दनी इल्तिजा" है के गीबत के बिलाइ अे'लाने जंग के जिम्न में गीबतों के दरवाजों पर ताले लगाते यले जाईये, अब तक जो भी



इरमाने मुस्तफा : عسى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

आप की जिम्मेदारी के दौरान म-दनी माडोल से दूर हुअे, उन के मुआ-मले में 112 बार गौर कर लीजिये के कहीं औसा तो नहीं के उन्हों ने आप की गीबतें की हों और आप को गुस्सा आ जाने की वजह से या भुद आप ने उन की गीबतें की हों इस सबब से वोह हिल भरदाशता हो कर घर जा बैठे हों. अगर औसा है तो अख्शी अख्शी निख्यतें कर के बराअे रिजाअे रब्बे अकबर بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ इौरन से पेशतर मगर बुला कर नहीं, भुद उन के पास जा कर हाथ जोड कर पाउं पकड कर औ काश ! रो रो कर मुआफी तलाफी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राजी कर के गले लगा लीजिये. बल्के हर बिछडे हुअे को तलाश कर के उन के पास भी भुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नत व समाजत कर के उन्हें दोबारा म-दनी माडोल में ले आइये और इन्किरादी कोशिश के जरीअे उन सबों को फिर से सुन्नतों की भिदमतों में मस्रुफ कर दीजिये. (जिन पर तन्जीमी जिम्मेदारी नहीं वोह भी इसी तरह करें, हां जिन पर तन्जीमी पाबन्दी लगी हो उन को मत छोडिये, उन के बारे में बडे जिम्मेदारान जो तन्जीमी हैसला करें उन पर अमल कीजिये)

औं भासाअे भासाने रुसुल वकते हुआ है	उम्मत पे तेरी आ के अजब वकत पडा है
छोटों में इताअत है न शकत है बडों में	प्यारों में महब्बत है न यारों में वफा है
जो कुछ है वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत	शिकवा है जमाने का न किस्मत का गिला है
दोषे हैं येह दिन अपनी ही गइलत की बदौलत	सय है के बुरे काम का अन्जाम बुरा है
हम नेक हैं या बद हैं फिर आभिर हैं तुम्हारे	निस्बत बहुत अख्शी है अगर डाल बुरा है

तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोइ
हां अेक हुआ तेरी के मकभूले भुदा है

मैं ने इल्यास कादिरि को मुआइ किया : तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त अस्ता आजिजाना अर्ज करता हूं के अगर मैं ने नीज गुलाम जादों और



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا جیک હુવા ઓર ઉસ ને મુઝ પર દુરદે પાક ન પઢા તહકીક વોહ બદ બખ્ત હો ગયા. (હા)।

નિગરાન વ અરાકીને મર્કઝી મજલિસે શૂરા મેં સે જિસ જિસ ને આપ મેં સે કિસી કી ગીબત કી હો, તોહ્મત ધરી હો, ડાંટ પિલાઈ હો, કિસી તરહ સે દિલ આઝારી કી હો મુઝે ઓર ઉન્હે મુઆફ મુઆફ ઓર મુઆફ ફરમા દીજિયે. જાન વ માલ, અહલો ઇયાલ ઓર ઇઝ્ઝત આબરૂ મેં દુન્યા કે અન્દર જો છોટે સે છોટે ઓર બડે સે બડે હુકૂલ ઇબાદ (યા'ની બન્દો કે હુકૂક) તસવ્વુર કિયે જા સકતે હૈં, ફર્ઝ કીજિયે કે વોહ હુકૂક મેં ને, ગુલામ ઝાદોં ઓર નિગરાન વ અરાકીને શૂરા ને આપ કે તલફ (યા'ની ઝાએઅ) કર દિયે હૈં, ઉન તમામ હુકૂક કો ઝેહ્ન મેં રખતે હુએ હમારે સબબ સે તલફ શુદા હુકૂક મુઆફ મુઆફ ઓર મુઆફ ફરમા કર સવાબે અઝીમ કે હકદાર બનિયે. હાથ બાંધ કર મ-દની ઇલ્તિજા હૈ કે કમ અઝ કમ એક બાર દિલ કી ગહરાઈ કે સાથ કહ દીજિયે : “મેં ને અલ્લાહ ﷻ કે લિયે મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી, ગુલામ ઝાદોં ઓર નિગરાન વ અરાકીને શૂરા કો મુઆફ કિયા.” હમ સબ ને ભી હમારી તમામ છોટી બડી હક ત-લફિયાં કરને વાલોં કો અલ્લાહ વ રસૂલ ﷺ કી ખાતિર મુઆફ કિયા.

કર્ઝ ખ્વાહોં સે મ-દની ઇલ્તિજા : જિસ કા મુઝ પર કર્ઝ આતા હો યા મેં ને કોઈ ચીઝ આરિય્યતન લી હો ઓર વાપસ ન લૌટાઈ હો તો વોહ દા'વતે ઇસ્લામી કી મર્કઝી મજલિસે શૂરા કે નિગરાન યા ગુલામ ઝાદોં સે રુજૂઅ કરે, અગર વુસૂલ કરના નહીં ચાહતા તો અલ્લાહ ﷻ કી રિઝા કે લિયે મુઆફી કી ભીક સે નવાઝ કર સવાબે આખિરત કા હકદાર બને. જો લોગ મેરે મકરૂઝ હૈં, ઉન કો મેં ને અપને તમામ ઝાતી કર્ઝે મુઆફ કિયે. યા ઇલાહી !

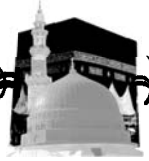
તૂ બે હિસાબ બખ્શ કે હૈં બે શુમાર જુમ

દેતા હૂં વાસિતા તુઝે શાહે હિજાઝ કા

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रलमतें बेजता है. (स्)

गूंगी बोल उठी !

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, इफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दी से शिकत इरमाईये, सुन्नतों की तरबिखत के लिये म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सइर कीजिये, काम्याब जिन्दगी गुजारने और आभिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमत के मुताबिक अमल कर के रोजाना इिके मदीना के जरीअे रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्भ करवाईये आप की तरगीब व तहरीस के लिये अेक म-दनी बहार पेश की जाती है. युनान्ये जिलअ जुशाब (पाकिस्तान) के किसी गाँव में अेक इस्लामी बहन की यकायक जभान बन्द हो गई, किसी इलाज से इाअेदा न हुवा, अ ग-रजे इलाज उन्हे बाबुल मदीना (कराची) लाया गया, यहाँ ली डोक्टरी इलाज कारगर न हुवा, उन की जभान बन्द हुअे तकरीबन 6 माह गुजर चुके थे, उन को तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज इैजाने मदीना के तलभाने में हर इतवार को दो पहर तकरीबन ढाई बजे होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ में डाजिरी की सआदत हासिल हुई. वहाँ अेक इस्लामी बहन ने इन्किरादी कोशिश करते हुअे मुसल्लल 12 इजतिमाअ के अन्दर डाजिरी देने के लिये उन को राजी किया, तरतीब वार शिकत करते हुअे 8 र-मजानुल मुबारक 1430 हि. को उन का छटा इजतिमाअ था, इस इजतिमाअ के इप्तिताम पर पढे जाने वाले सलातो सलाम के दौरान اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अयानक वोड गूंगी इस्लामी बहन बोल उठी !

हरते शब्बीरो शब्बर के तुईल

टाल हर आइत अै नानाअे हुसैन

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

تُوبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (अन)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है” के बाईस दुइइ की निरुबत से दर्स ईजाने सुन्नत के 22 म-दनी इूल



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जो शप्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी भात पड़ोयाअे ताके उस से सुन्नत काईम की जाअे या उस से भद मजलबी दूर की जाअे तो वोड जन्नती है.” (جَلْبَةَ الْأَوْلِيَاءِ ج ١٠ ص ٤٥ رقم ١٤٤٦٦)



सरकारे मदीना : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : “अद्लाड उअे उस को तरो ताजा रभे जो मेरी इदीस को सुने, याद रभे और दूसरों तक पड़ोयाअे.” (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٢٩٨ حديث ٢٦٦٥)



इउरते सय्यिदुना ईदरीस : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नामे मुबारक की अेक इिकमत येड भी है के कुतुबे ईलाइय्येड की कस्रते दर्सो तदरीस के बाईस आप (تفسير كبير ج ٧ ص ٥٥٠، تفسير الحسنات ج ٤ ص ٤٨). ईदरीस इुवा. ईदरीस के नाम ईदरीस इुवा. (تفسير كبير ج ٧ ص ٥٥٠، تفسير الحسنات ج ٤ ص ٤٨).



डुजुरे गौसे पाक इरमाते : رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ : हैं : “अद्लाड उअे ईलम का दर्स लिया यइं तक के मकामे कुतुबियत पर इाईज हो गया. (कसीदअे गौसिय्या) इैजाने सुन्नत से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का अेक म-दनी काम है. धर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कोलेज, थौक वगैरा में वक्त मुकरर कर के रोजाना दर्स के जरीअे भूब भूब सुन्नतों के म-दनी इूल लुटाईये और देरों सवाब कमाईये.



इैजाने सुन्नत से रोजाना कम अज कम दो² दर्स देने या सुनने की सआदत इासिल कीजिये. (इन दो में अेक “धर दर्स” जइर हो)



पारड 28 सू-रतुतइरीम की छटी आयत में ईशाई होता है :

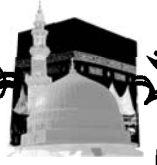


يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ

तर-ज-मअे कजुल ईमान : अै ईमान वालो ! अपने जानों और अपने धर वालों को उस आग से बयाओ जिस के ईधन आदमी और पथर हैं.

نَارًا أَوْ قُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

अपने आप को और अपने धर वालों को दोजभ की आग से बयाने का अेक जरीआ इैजाने सुन्नत का दर्स भी है. (दर्स के ईलावा दा'वते इस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी



इरमाने मुस्तफ़ी : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज़ पर दस भरतभा सुब्ह और दस भरतभा शाम दुरदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (मिशक़)

मुज़ा-करे की अेक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाईये)



जिम्मेदार घडी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना यौकदर्स का अेहतिमाम करें.

म-सलन : रात 9 बजे मदीना यौक (साढे नव बजे) बग़दादी यौक में वगैरा.

छुट्टी वाले दिन अेक से ज़ियादा मक़ामात पर यौक दर्स का अेहतिमाम कीजिये.

(मगर हुकूके आम्मा तलफ़ न हों म-सलन आप की वजह से मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)



दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तअब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें.



दर्स वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक़बीरे उला के साथ भा ज़माअत अदा इरमाईये.



मेहराब से उट कर (सेइन् वगैरा में) कोई अैसी जगह दर्स के लिये मप्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दृश्वारी न हो.



जैली मुशा-वरत के निगरान को याहिये के अपनी मस्जिद में दौ भैर प्वाह मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौकअ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को करीब करीब बिठाअें.



पहें में पर्दा किये दौ² जानू बैठ कर दर्स दीजिये. अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो भडे हो कर या माईक पर देने में भी हरज नहीं ज़ब के किसी अेक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वगैरा को तश्वीश न हो.



आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिडकुल आहिस्ता, उतल इम्कान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये के सिर्फ़ हाज़िरीन सुन सकें. इस भात की हमेशा अेहतियात इरमाईये के दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोअे हुअे या किसी नमाज़ी या मशगूले तिलावत वगैरा को तक़लीफ़ न हो.



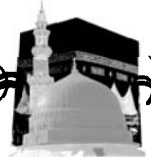
दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये.



जो कुछ दर्स देना है पहले उस का कम अज़ कम अेक बार मुता-लआ कर लीजिये ताके ग-लतियां न हों.



इंजाने सुन्नत के मुअर्रब अल्फ़ाज अे'राब के मुताबिक़ ही अदा कीजिये इस तरह



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરુંગા. (કુઆલ)

ફિર ઇસ તરહ કહિયે, મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! કરીબ કરીબ આ કર દર્સ કી તા'ઝીમ કી નિયત સે હો સકે તો દો ઝાનૂ બૈઠ જાઈયે અગર થક જાએ તો જિસ તરહ આપ કો આસાની હો ઉસી તરહ બૈઠ કર નિગાહેં નીચી કિયે તવજજોહ કે સાથ રિઝાએ ઇલાહી કે લિયે ઇલ્મે દીન હાસિલ કરને કી નિયત સે ફેઝાને સુન્નત કા દર્સ સુનિયે કે લા પરવાહી કે સાથ ઇધર ઉધર દેખતે હુએ, ઝમીન પર ઉંગલી સે ખેલતે હુએ, લિબાસ બદન યા બાલોં વગૈરા કો સહલાતે હુએ સુનને સે ઇસ કી બ-ર-કતેં ઝાઈલ હોને કા અન્દેશા હૈ. (બયાન કે આગાઝ મેં ભી ઇસી અન્દાઝ મેં રબત દિલાઈયે ઔર અચ્છી અચ્છી નિયતેં ભી કરવાઈયે) યેહ કહને કે બા'દ ફેઝાને સુન્નત સે દેખ કર એક દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત બયાન કીજિયે. ફિર કહિયે :

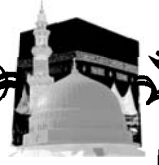
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

જો કુછ લિખા હુવા હૈ વોહ પઢ કર સુનાઈયે. આયાત વ અ-રબી ઇબારાત કા સિર્ફ તરજમા પઢિયે. કિસી ભી આયાત યા હદીસ કા અપની રાય સે હરગિઝ ખુલાસા મત કીજિયે.

દર્સ કે આખિર મેં ઇસ તરહ તરગીબ દિલાઈયે

(હર મુબલ્દિગ કો યાહિયે કે ઝબાની યાદ કર લે ઔર દર્સો બયાન કે આખિર મેં બિલા કમી બેશી ઇસી તરહ તરગીબ દિલાયા કરે)

تَبْلِيغِ تَحْمَدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક દા'વતે ઇસ્લામી કે મહકે મહકે મ-દની માહોલ મેં બ કસરત સુન્નતેં સીખી ઔર સિખાઈ જાતી હેં, હર જુમા'રાત ઇશા કી નમાઝ કે બા'દ આપ કે શહર મેં હોને વાલે દા'વતે ઇસ્લામી કે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઇજતિમાઅ મેં રિઝાએ ઇલાહી કે લિયે અચ્છી અચ્છી નિયતોં કે સાથ સારી રાત ગુઝારને કી મ-દની ઇલ્તિજા હૈ. આશિકાને રસૂલ કે મ-દની કાફિલોં મેં બ નિયતે સવાબ સુન્નતોં કી તરબિયત કે લિયે સફર ઔર રોઝાના ફિકે મદીના કે ઝરીએ મ-દની ઇન્આમાત કા રિસાલા પુર કર કે હર મ-દની માહ કે ઇબ્તિદાઈ દસ દિન કે અન્દર અન્દર અપને યહાં કે ઝિમ્માદાર કો જમ્અ કરવાને કા મા'મૂલ બના લીજિયે, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ઇસ કી બ-ર-કત સે પાબન્દે સુન્નત બનને, ગુનાહોં સે નફરત કરને ઔર ઇમાન કી હિફાઝત કે લિયે કુઢને કા ઝેહન બનેગા.



इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रहे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (ابويعلى)

हर ईस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाये के “मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगो की ईस्लाह की कोशिश करनी है. **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**” अपनी ईस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी ईन्आमात पर अमल और सारी दुन्या के लोगो की ईस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी काइलो में सफ़र करना है. **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

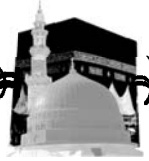
अल्लाह करम अैसा करे तुज पे जहां में
अै दा'वते ईस्लामी ! तेरी धूम मयी हो

आभिर में पुशूओ पुजूओ (या'नी जिस्म व दिल की आजिजी) और कबूलियत के यकीन के साथ दुआ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुअे बिला कमी बेशी ईस तरह दुआ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्तफ़ा ! **عَزَّوَجَلَّ** तुझे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उमारी, उमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मज्दिरत इरमा. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! दर्स की ग-लतियां और तमाम गुनाह मुआफ़ इरमा, नेक अमल का जजबा दे, हमें परहेज गार और मांप का इरमां बरदार बना. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमें अपना और अपने म-दनी उबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का मुप्पिस आशिक बना. हमें गुनाहों की भीमारियों से शिफ़ा अता इरमा. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमें म-दनी ईन्आमात पर अमल करने, म-दनी काइलो में सफ़र करने और ईन्किरादी कोशिश के जरीअे दूसरों को भी म-दनी कामों की तरगीब दिलवाने का जजबा अता इरमा. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! मुसल्मानों को भीमारियों, कर्ज दारियों, बे रोजगारियों, बे औलादियों, बे ज़ा मुकदमा बाजियों और तरह तरह की परेशानियों से नज़ात अता इरमा. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! ईस्लाम का बोलबाला कर और दुश्मनाने ईस्लाम का मुंज काला कर. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमें दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल में ईस्तिकामत अता इरमा. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमें जेरे गुम्बदे अज़रा जल्वअे महुबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में शहादत, जन्नतुल अकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फिरदौस में अपने म-दनी उबीब का पदोस नसीब इरमा. या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! मदीने की पुशूदर ठन्डी ठन्डी उवाओ का वासिता उमारी ज़ाईज दुआअे कबूल इरमा.

1 : ईस्लामी बहन कहे : “घर के मर्दों को म-दनी काइलो में सफ़र करवाना है .”



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (मुरान)

કહતે રહતે હૈં દુઆ કે વાસિતે બન્દે તેરે
કર દે પૂરી આરઝુ હર બે કસો મજબૂર કી

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

શે'ર કે બા'દ યેહ આયતે મુબારક પઢિયે :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ (الاحزاب: ٥٦)

સબ દુરદ શરીફ પઢ લેં ફિર પઢિયે :

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعَزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٠﴾ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٢﴾ (٢٣٣ الضفت)

દર્સ કી કમાઈ પાને કે લિયે સવાબ કી નિચ્ચત કે સાથ (ખડે ખડે નહીં બલકે) બેઠ કર ખન્દા પેશાની કે સાથ લોગોં સે મુલાકાત કીજિયે, ચન્દ નએ ઈસ્લામી ભાઈયોં કો અપને કરીબ બિઠા લીજિયે ઓર ઈન્ફિરાદી કોશિશ કે ઝરીએ ખૂબ મુસ્કુરાતે હુએ ઉન્હેં મ-દની ઈન્આમાત ઓર મ-દની કાફિલોં કી બ-ર-કતેં સમજાઈયે. (બેઠ કર મિલને મેં હિકમત યેહ હે કે કુદુ ન કુદુ ઈસ્લામી ભાઈ હો સકતા હૈ આપ કે સાથ બેઠે રહેં વરના ખડે ખડે મિલને વાલે ઉમૂમન યલ પડતે હૈં યૂં ઈન્ફિરાદી કોશિશ કી સઆદત સે મહરૂમી હો સકતી હૈં)

તુમ્હેં એ મુબલ્લિગ યેહ મેરી દુઆ હેં

કિયે જાઓ તે તુમ તરક્કી કા ઝીના

દુઆએ અત્તાર : يا اهلللاذ عَزَّوَجَلَّ ! મુઝે ઓર પાબન્દી કે સાથ ફેઝાને સુન્નત સે રોઝાના કમ અઝ કમ દો² દર્સ એક ઘર મેં ઓર દૂસરા મસ્જિદ, ચૌક યા સ્કૂલ વગૈરા મેં દેને ઓર સુનને વાલે કી મગ્ફિરત ફરમા ઓર હમેં હુસ્ને અપ્લાક કા પૈકર બના.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

મુઝે દર્સે ફેઝાને સુન્નત કી તૌફીક

મિલે દિન મેં દો મરતબા યા ઈલાહી

ماخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعه / سال اشاعت
1	قرآن پاک	کلام الہی عزوجل	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور
2	ترجمہ کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	رضا اکیڈمی بمبئی ہند
3	تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۲ھ
4	تفسیر قرطبی	امام ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
5	تفسیر درمنثور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
6	تفسیرات احمدیہ	علماً محمد بن ابوسعید جوہری المعروف ملا جیون رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	پشاور
7	تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کوئٹہ
8	تفسیر خزائن العرفان	سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	رضا اکیڈمی بمبئی ہند
9	تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور
10	صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
11	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
12	سنن ترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۲ھ
13	سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
14	سنن ابوداؤد	امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
15	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
16	سنن کبریٰ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
17	سنن دارمی	امام عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینہ کراچی ۱۴۰۷ھ
18	سنن دارقطنی	امام حافظ علی بن عمر دارقطنی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۲۰ھ

19	تاریخ بغداد	امام ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
20	الجامع لاخلق الراوی	امام ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المعارف ۱۴۰۳ھ
21	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
22	مستدرک	امام محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
23	المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۱ھ
24	مسند ابی یعلیٰ	امام احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
25	الفردوس بمأثور الخطاب	امام شیرویہ بن شہر داردیلمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۰۶ھ
26	معجم کبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
27	معجم الاوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
28	شرح السنۃ	امام ابو محمد الحسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
29	الدعوات الکبیر	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کویت ۱۴۱۴ھ
30	مصنف عبدالرزاق	امام ابو بکر عبدالرزاق بن ہمام صنعانی	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
31	صریح السنۃ	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	
32	الاخوان	امام ابو بکر عبداللہ بن محمد المعروف ابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
33	زم الغیبۃ	امام ابو بکر عبداللہ بن محمد المعروف ابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
34	الزہد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالغد الحجد ید مصر ۱۴۲۶ھ
35	الزہد	امام عبداللہ بن مبارک مروزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
36	الاحادیث المختارۃ	امام ابو عبداللہ محمد بن عبد الواحد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارخضر بیروت ۱۴۲۰ھ
37	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	حافظ محمد بن حبان بن احمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
38	جمع الجوامع	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ

39	جامع صغير	امام جلال الدين سيوطي رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٥هـ
40	رياض الصالحين	علامه ابو بكر اليماني بن شرف نووي رحمه الله تعالى عليه	دار السلام ١٤٢٠هـ
41	كنز العمال	علامه علاء الدين علي متقي رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٩هـ
42	الترغيب والترهيب	علامه عبد العظيم بن عبد القوي منذري رحمه الله تعالى عليه	دار الفكر بيروت ١٤٢١هـ
43	حلية الاولياء	علامه ابو نعيم احمد بن عبد الله صفيهازي رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٨هـ
44	صفة الصفوة	علامه ابن جوزي رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٣هـ
45	شرح صحيح مسلم	علامه ابو بكر اليماني بن شرف نووي رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت
46	مرقاة المفاتيح	علامه ملا علي قاري رحمه الله تعالى عليه	دار الفكر بيروت ١٤١٢هـ
47	فيض القدير	علامه محمد عبدالرؤف مناوي رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت ١٤٢٢هـ
48	اشعة الممعات	شيخ عبدالحق محدث دهلوي رحمه الله تعالى عليه	كوتنه
49	مراة المناجح	مفتي احمد يارخان نعمي رحمه الله تعالى عليه	ضياء القرآن پبلي كيشنز مركز الاولياء لاهور
50	زينة القاري	مفتي محمد شريف الحق امجدى رحمه الله تعالى عليه	فريد بك اسٹال مركز الاولياء لاهور ١٤٢١هـ
51	منح الروض	علامه ملا علي قاري رحمه الله تعالى عليه	دار البشائر الاسلاميه بيروت ١٤١٩هـ
52	هدايه	علامه علي بن ابى بكر مرقيناني رحمه الله تعالى عليه	دار احياء التراث العربى بيروت
53	خلاصة الفتاوى	علامه طاہر بن عبد الرشيد بخارى رحمه الله تعالى عليه	كوتنه
54	مجمع الانهر	علامه عبدالرحمن بن محمد بن سليمان رحمه الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت ١٤١٩هـ
55	فتاوى عالمگیری	شيخ نظام وجماعة من علماء الهند رحمه الله تعالى عليهم	دار الفكر بيروت ١٤٠٣هـ
56	در مختار	علامه علاء الدين محمد بن علي حصكفي رحمه الله تعالى عليه	دار المعرفه بيروت ١٤٢٠هـ
57	رد المحتار	علامه ابن عابد بن محمد امين شامى رحمه الله تعالى عليه	دار المعرفه بيروت ١٤٢٠هـ
58	فتاوى رضويه	اعلى حضرت امام احمد رضا خان عليه رحمه الرحمن	رضافاؤنڈيشن مركز الاولياء لاهور

59	المسفوظ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
60	فتاویٰ امجدیہ	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ رضویہ باب المدینہ ۱۴۱۹ھ
61	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
62	تاریخ بغداد	علامہ احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
63	تاریخ دمشق	علامہ ابوالقاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
64	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
65	دلائل النبوة	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
66	الخیرات الحسان	علامہ شہاب الدین احمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۳ھ
67	المناقب	علامہ موفق بن احمد مکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کوئٹہ ۱۴۰۷ھ
68	تبصیر الصحیفۃ	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	پشاور
69	القول البدیع	امام حافظ محمد بن عبدالرحمن سخاوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مؤسسۃ الریان ۱۴۲۲ھ
70	رسالہ قشیریہ	امام ابوالقاسم عبدالکریم بن ہوازن قشیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
71	قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
72	تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرائی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
73	احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
74	منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
75	اتحاف السادة	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
76	حدیقہ ندیہ	علامہ عبدالغنی نابلسی حنفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	پشاور
77	سبع سنابل	علامہ میر عبدالواحد بلگرامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۰۲ھ
78	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین محمد عطار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	انتشارات گنجینہ تہران

79	روض الرياحين	عبد اللہ بن اسعد بن علی یافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
80	الروض الفائق	علامہ شعیب بن سعد عبد الکاظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
81	بحر الدموع	علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ دار الفجر دمشق ۱۴۲۲ھ
82	عیون الحکایات	علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
83	الزواجر عن اقتراف الکبائر	علامہ ابوالعباس احمد بن محمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
84	المختصر المحتاج الیہ	محمد بن احمد بن عثمان ذہبی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۵ھ
85	مصباح الظلام	امام ابو عبد اللہ محمد بن موسیٰ بن نعمان مزالی	دار المدینۃ المنورۃ
86	شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
87	تنبیہ الغافلین	فقیرہ ابواللیث محمد بن احمد سمرقندی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	پشاور ۱۴۲۰ھ
88	التوبخ والتنبیہ	امام عبد اللہ بن محمد بن جعفر بن حیان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ الفرقان قاہرہ مصر
89	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
90	نزہۃ المجالس	علامہ عبد الرحمن بن عبد السلام صفوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
91	مستطرف	علامہ شہاب الدین محمد بن ابوالاحمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
92	حیاۃ الحیوان الکبریٰ	علامہ کمال الدین محمد بن موسیٰ دیمیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
93	بوستان سعدی	شیخ سعدی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کتاب خانہ ملی ایران
94	جاء الحق	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	نعیمی کتب خانہ گجرات 2007ء
95	سوانح کربلا	علامہ سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
96	کتاب التعریفات	علامہ سید شریف علی بن محمد جرجانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار المنار
97	تہذیب الاسماء واللغات	ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	
98	غیبیت کیا ہے	علامہ محمد عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ عارفین باب المدینہ کراچی 1978ء

મ-દની ચેનલ ને મ-દની બુરકઅ પહના દિયા !

દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની ચેનલ કી ભી ક્યા ખાત હૈ ! ઇસ કે ઝરીએ ભી મુસલમાનોં કી ઇસ્લાહ કા સામાન હો રહા હૈ, યુનાન્યે બાબુલ મદીના (કરાચી) કી એક ઇસ્લામી બહન કા કુછ ઇસ તરહ બયાન હૈ કે પહલે પહલ મેં પર્દા નહીં કરતી થી. ફિર હમેં દા'વતે ઇસ્લામી ને “મ-દની ચેનલ” કા અઝીમ તોહફા અતા ક્રિયા જિસે દેખને કી બ-ર-કત સે મેં ઓર મેરે બચ્ચોં કે અબ્બૂ નમાઝ કે પાબન્દ હો ગએ. એક દિન મ-દની ચેનલ પર “પર્દે કી અહમ્મિયત” કે મૌઝૂઅ પર સુન્નતોં ભરા બયાન જારી થા. મેરે બચ્ચોં કે અબ્બૂ ને જબ વોહ બયાન સુના તો ઇતને મુતઅસ્સિર હુએ કે મુઝે મ-દની બુરકઅ પહનને કી તરગીબ દિલાઈ ઓર બિલા ઝરૂરત બાઝાર વગૈરા જાને સે ભી મન્ઝૂ કર દિયા. **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** દા'વતે ઇસ્લામી કે મ-દની ચેનલ કી બ-ર-કત સે મુઝે બેપર્દગી સે તૌબા નસીબ હુઈ ઓર અબ મેં કોઈ દીદહ ઝૈબ, ગૈર મર્દોં કો મુ-તવજજેહ કરને વાલા યા **اَللّٰهُمَّ** નંગા સર રખને વાલા રસ્મી બુરકઅ નહીં બલ્કે શરઈ પર્દે કે મુતાબિક સિફ ઓર સિફ મ-દની બુરકઅ પહનતી હું.

મ-દની ચેનલ સુન્નતોં કી લાએગા ઘર ઘર બહાર

મ-દની ચેનલ દેખને વાલે બનેંગે પરહેઝગાર

હર ખાત પર એક સાલ કી ઈબાદત કા સવાબ

બારગાહે રબુલ અનામ **عَزَّوَجَلَّ** મેં હઝરતે સય્યિદુના મૂસા કલીમુલ્લાહ **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ને અઝ્ક કી : ઐ અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ! જો અપને ભાઈ કો નેકી કા હુકમ કરે ઓર બુરાઈ સે રોકે ઉસ કી જઝા ક્યા હૈ ? અલ્લાહ તબારક વ તઆલા ને ઈશાદ ફરમાયા : મેં ઉસ કે હર હર કલિમે કે બદલે એક એક સાલ કી ઈબાદત કા સવાબ લિખતા હું ઓર ઉસે જહન્નમ કી સઝા દેને મેં મુઝે હયા આતી હૈ.

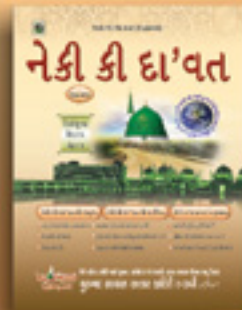
(મુકા-શ-ફતુલ કુલૂબ સ. 48)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَتَابَعُونَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِشَرِيفِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सुन्नत की जहारें

तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के मडके मडके म-दनी माडोल में अ कसरत सुन्नतें सीभी और सिभाई जती हें, हर जुमा'रात ईशा की नमाज के बा'द आप के शहर में छोने वाले दा'वते ईस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों बरे ईजतिमाअ में रिजाअे ईलाही के लिये अखी अखी निथतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी ईज्तिहा है. आशिकाने रसूल के म-दनी काईलों में अ निथते सवाअ सुन्नतों की तरबिथत के लिये सहर और रोजाना किंके मदीना के जरीअे म-दनी ईन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माड के ईज्तिहाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'भूल बना लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**, ईस की अ-र-कत से पाअन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नहरत करने और ईमान की डिफाजत के लिये कुहने का जेहन बनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाअे के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**" अपनी ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी काईलों" में सहर करना है. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**



मक-त-अतुल मदीना

दा'वते ईस्लामी



इज्जते मदीना, श्री कोनिया जगीये के सामने, मिर्जापुर, अहमदाबाद, गुजरात, इन्डिया
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net